
Ἡ ΚΑΙΝῊ
ΔΙΑΘΉΚΗ
Novum
TESTAMENTUM
TYPIS
BORTOLI.
Spiritus Omnia scrutatur. corinth

Ἡ ΚΑΙΝῊ ΔΙΑΘΗ'ΚΗ.

NOVUM TESTAMENTUM.



VENETIIS,
Apud ANTONIUM BORTOLI,
M. D C C X L V.
SUPERIORUM PERMISSU.

Π Ι' Ν Α Ξ

ΠΕΡΙΕ'ΧΩΝ ΤΑ'Σ Ε'Κ ΤΗ'Σ ΠΑΛΑΙΑ'Σ ΔΙΑΘΗ'ΚΗΣ

Παραληφθείσας εἰς τὴν καινὴν μαρτυρείας, ἀλλ' οὐ τὰς αὐτὰς λέξεις, μόνον δὲ τὴν αὐτὴν διάνοιαν ἐχούσας.

ΓΕ'ΝΕΣ. GENES.

1. 1. Πίστει νοοῦμεν κατηρτίσθαι τοὺς αἰῶνας. Ἑβρ. *Hebr.* 11. 3.

1. 1. Οὐρανοὶ ἦσαν ἔκπαλαι. 2 Πέτ. *Pet.* 3. 5.

1. 27. Ἀδὰμ πρῶτος ἐπλάσθη. 1. Τιμ. *Tim.* 2. 13.

1. 22. Οὐ γάρ ἐστιν ἀνὴρ ἐκ γυναικός. 1. Κορ. *Cor.* 11. 8.

3. 4. Ὁ ὄφις Εὔαν ἐξηπάτησεν ἐν τῇ πανουργίᾳ αὐτοῦ. 2. Κορ. *Cor.* 11. 3.

3. 6. Ἀδὰμ οὐκ ἠπατήθη. 1. Τιμ. *T.* 2. 14.

4. 4. Πίστει πλείονα θυσίαν Ἄβελ παρὰ Κάϊν προσήνεγκε τῷ Θεῷ. Ἑβρ. *Hebr.* 11. 4.

4. 8. Ἀπὸ τοῦ αἵματος Ἄβελ τοῦ δικαίου. Ματθ. *Matth.* 23. 35.

4. 8. Οὐ καθὼς Κάϊν ἐκ τοῦ πονηροῦ ἦν. 1. Ἰωάν. *Joan.* 3. 12.

4. 8. Οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι τῇ ὁδῷ τοῦ Κάϊν ἐπορεύθησαν. Ἰούδα, *Judæ* 11.

5. 24. Πίστει Ἐνὼχ μετετέθη. Ἑβρ. *Heb.* 11. 5.

6. 3. Ὅτε ἅπαξ ἐξεδέχετο ἡ τοῦ Θεοῦ μακροθυμία. 1. Πέτρ. *Petr.* 3. 20.

6. 13. Πίστει χρηματισθεὶς Νῶε. Ἑβρ. *Hebr.* 11. 7.

7. 4. Ὥσπερ ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πρὸ τοῦ κατακλυσμοῦ. Ματθ. *Matt.* 24. 38.

7. 23. Ὄγδοον Νῶε δικαιοσύνης κήρυκα. 2. Πέτρ. *Petr.* 2. 5.

9. 6. Πάντες οἱ λαβόντες μάχαιραν, ἐν μαχαίρᾳ ἀπολοῦνται. Ματθ. *Matt.* 26. 52. Ἀποκ. *Apoc.* 13. 10.

12. 4. Πίστει καλούμενος Ἀβραάμ. Ἑβρ. *Heb.* 11. 8.

14. 18. Οὗτος γὰρ ὁ Μελχισεδέκ. Ἑβρ. *Heb.* 7. 1.

16. 15. Ἀβραὰμ δύο Υἱοὺς ἔσχεν, ἕνα ἐκ τῆς παιδίσκης. Γαλ. *Gal.* 4. 22.

17. 11. Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ διαθήκην περιτομῆς. Πράξ. *Act.* 7. 8. Ῥωμ. *Rom.* 4. 11.

18. 10. Πίστει καὶ αὐτὴ Σάῤῥα. Ἑβρ. *Heb.* 11. 11.

18. 12. Ὡς Σάῤῥα ὑπήκουσε τῷ Ἀβραάμ. 1. Πέτρ. *Petr.* 3. 6.

19. 25. Καὶ πόλεις Σοδόμων καὶ Γομόῤῥας. 2 Πέτρ. *Petr.* 2. 6.

19. 25. Ὡς Σόδομα καὶ Γόμοῤῥα. Ἰούδα. *Judæ* 7.

19. 26. Μνημονεύετε τῆς γυναικὸς Λώτ. Λουκ. *Luc.* 17. 32.

19. 26. Ὡ'μοίως ϗ ὡς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Λώτ· ἤσθιον, ἔπινον, ἠγόραζον. Λȣκ. *Luc* 17. 28.

21. 2. Α'βραὰμ Υἱὸν ἔχεν ἐκ τῆς ἐλευθέρας. Γαλ. *Gal.* 4. 22.

22. 10. Πίςει προσενήνοχεν Α'βραάμ. Ε'βρ. *Heb.* 11. 17.

22. 10. Α'βραὰμ ἀνενέγκας τὸν Υἱὸν αὐτοῦ ἐπὶ τὸ θυσιαςήειον. Ι'άκ. *Jac.* 2. 21.

22. 16. Καθὼς ἐλάλησε πρὸς τȣς Πατέρας ἡμῶν. Λȣκ. *Luc.* 1. 55.

25. 22. Ρ'εβέκκα ἐξ ἑνὸς κοίτην ἔχουσα Ι'σαάκ. Ρ'ωμ. *Rom.* 9. 10.

25. 33. Μή τις πόρνος ἢ βέβηλος ὡς Ἡ'σαῦ, ὃς ἀντὶ βρώσεως μιᾶς ἀπέδοτο τὰ πρωτοτόκια. Ε'βρ. *Heb* 12. 16.

27. 28. Πίςει περὶ μελλόντων εὐλόγησεν. Ε'βρ. *Heb.* 11. 20.

48. 15. Πίςει Ι'ακὼβ ἀποθνήσκων. Ε'βρ. *Heb.* 11. 21.

49. 10. Ο'ν ἔγραψε Μωσῆς ἐν τῷ νόμῳ. Ι'ωάν. *Joan.* 1. 46.

50. 24. Πίςει Ι'ωσὴφ τελευτῶν. Ε'βρ. *Heb.* 11. 22.

Ε'ΞΟΔ. EXOD.

2. 2. Πίςει Μωσῆς γεννηθείς. Ε'βρ. *Heb.* 11. 23.

2. 11. Πίςει Μωσῆς μέγας γενόμενος. Ε'βρ. *Heb.* 11. 24.

2. 11. Μωσῆς ἰδών τινα ἀδικȣ́μενον. Πράξ. *Actor.* 7. 24.

3. 2. Καὶ πληρωθέντων ἐτῶν τεσσαράκοντα. Πράξ *Act.*7. 30.

12. 11. Πίστει πεποίηκε τὸ Πάσχα. Ἑβρ. *Heb.*11. 28.

14. 22. Εἰς τὸν Μωσῆν ἐβαπτίσαντο. 1. Κορ. *Cor.*10. 2.

14. 22. Πίστει διέβησαν τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν. Ἑβρ. *Heb.*11. 29.

16. 15. Οἱ Πατέρες ὑμῶν ἔφαγον τὸ μάννα. Ἰωάν *Joan.*6. 49.

16. 15. Ἄρτον ἐκ τοῦ Οὐρανοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν. Ἰωάν *Joan.*6. 31.

16. 15. Πάντες τὸ αὐτὸ βρῶμα Πνευματικόν. 1. Κορ. *Cor.* 10. 3.

17. 6. Ἔπινον γὰρ ἐκ Πνευματικῆς ἀκολουθούσης Πέτρας. 1. Κορ. *Cor.*10. 4.

19. 6. Ἔθνος ἅγιον, λαὸς εἰς περιποίησιν. 1. Πέτρ. *Petr.*2. 9.

19. 13. Κἂν θηρίον θίγῃ τοῦ Ὄρους. Ἑβρ. *Heb.*12. 20.

19. 16. Οὐ γὰρ προσεληλύθατε. Ἑβρ. *Heb.*12. 18.

24. 8. Λαληθείσης γὰρ πάσης ἐντολῆς. Ἑβρ. *Heb.*9. 19.

26. 36. Σκηνὴ κατεσκευάσθη ἡ πρώτη. Ἑβρ. *Heb.*9. 2.

32. 6. Μηδὲ εἰδωλολάτραι γίνεσθε. 1. Κορ. *Cor.*10. 7.

ΛΕΥΙΤ. LEVIT.

12. 3. ἘΝ Σαββάτῳ περιτέμνετε ἄνθρωπον. Ἰωάν. *Joan.*7. 22.

12. 3. Ὅτε ἐπλήσθησαν ἡμέραι ὀκτώ. Λουκ. *Luc.*2. 21.

12. 4. Ο῎τε ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τȣ͂ καθαρισμȣ͂. Λȣκ. *Luc* 2. 22.

12. 6. Καὶ τȣ͂ δȣ͂ναι θυσίαν, κατὰ τὸ εἰρημένον ἐν νόμῳ. Λȣκ. *Luc*.2.24.

14. 4. Προσένεγκε τὸ δῶρον ὃ προσέταξε Μωσῆς. Ματθ. *Matth*.8.4. Μάρκ. *Marc*.1. 44.

16. 14. Εἰ γὰρ τὸ αἷμα ταύρων καὶ τράγων. Ε῾βρ. *Heb*.9 13.

16. 17. Καὶ πᾶν τὸ πλῆθος τȣ͂ λαȣ͂ ἦν προσευχόμενον ἔξω. Λȣκ. *Luc*.1.10.

19. 15. Μὴ ἐν προσωποληψίαις. Ι᾿άκ. *Jac*.2. 1.

19. 17. Ε᾿ὰν ἁμαρτήσῃ εἰς σὲ ὁ ἀδελφός σȣ. Ματθ. *Matth*. 18. 15. Λουκ. *Luc*.17. 3.

20. 10. Ε᾿ν δὲ τῷ νόμῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετείλατο τὰς τοιαύτας λιθοβολεῖσθαι. Ι᾿ωάν. *Joan*.8. 5.

Α᾿ΡΙΘΜΟΙ᾿. NUMER.

8. 16. ΠΑ͂ν ἄρσεν διανοῖγον μήτραν. Λȣκ. *Luc*.2. 23.

9. 18. Πατέρες ἡμῶν πάντες ὑπὸ τὴν νεφέλην. 1.Κορ. *Cor*.10. 1.

11. 7. Α῎ρτον ἐκ τȣ͂ Ο᾿υρανȣ͂ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν. Ι᾿ωάν. *Joan*.6. 31.

12. 7. Ω῾ς καὶ Μωσῆς ἐν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτȣ͂. Ε῾βρ. *Heb*.3. 2

14, 37. Ω῟ν τὰ κῶλα ἔπεσεν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Ε῾βρ. *Heb*.3. 17

14. 36. Μηδὲ γογγύζετε, καθὼς καί τινες αὐτῶν. 1.Κορ. *Cor*.10. 10.

16. 1. Τῇ ἀντιλογίᾳ τῦ Κορὲ ἀπώλοντο. Ἰέδα. *Judæ* 11.

19. 3. Ὧν γὰρ εἰσφέρεται ζώων τὸ αἷμα. Ἑβρ *Heb.* 13. 11.

20. 10. Ἔπινον γὰρ ἐκ πνευματικῆς ἀκολεθέσης πέτρας. 1. Κορ. *Cor.* 10. 4.

21. 5. Μηδὲ ἐκπειράζωμεν τὸν Χειςὸν. 1. Κορ. *Cor.* 10. 9.

21. 9. Καθὼς Μωσῆς ὕψωσε τὸν ὄφιν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Ἰωάν. *Joan.* 3. 14.

22. 23. Ὑποζύγιον ἄφωνον ἐν ἀνθρώπε φωνῇ φθεγξάμενον. 2. Πέτρ. *Petr.* 2. 16.

22. 39. Τῇ πλάνῃ τῦ Βαλαὰμ μισθῦ ἐξεχύθησαν. 2. Πέτρ. *Petr.* 2. 15. Ἰέδα. *Judæ* 11.

24. 14. Διδαχὴν Βαλαὰμ, ὃς ἐδίδασκε τὸν Βαλάκ. Ἀποκ. *Apoc.* 2. 14.

25. 6. Μηδὲ πορνεύωμεν, καθώς τινες αὐτῶν ἐπόρνευσαν. 1. Κορ. *Cor.* 10. 8.

26. 64. Κατεςρώθησαν ἐν τῇ ἐρήμῳ. 1. Κορ. *Cor.* 10. 5.

28. 9. Σάββασιν οἱ Ἱερεῖς ἐν τῷ Ἱερῷ τὸ Σάββατον βεβηλῦσιν. Ματθ. *Matt.* 12. 5.

ΔΕΥΤΕΡ. DEUTER.

1. 16. 17. ΜΗ' ἐν προσωποληψίαις ἔχετε. Ἰάκ. *Jacob* 2. 1. 9.

10. 17. Οὐ γάρ ἐςι προσωποληψία παρὰ τῷ Θεῷ. Ῥωμ *Rom.* 2. 11. Πράξ. *Act.* 10. 34. Κολ. *Col.* 3. 25. Ἐφεσ. *Eph* 6. 9.

17. 6. Ἀθετήσας τὶς νόμον. Ἑβρ. *Hebr.* 10. 28.

18. 1. Οὐκ οἴδατε ὅτι οἱ τὰ Ἱερὰ ἐργαζόμενοι, ἐκ τοῦ Ἱεροῦ ἐσθίουσιν; 1. Κορ. *Cor.* 9. 13.
24. 1. Ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα. Ματθ. *Matth.* 5. 31. & 19. 9. Μάρκ. *Marc.* 10. 4.

ΙΗΣΟΥΣ. JOSUE.

2. 1. ΟΜοίως δὲ καὶ Ῥαὰβ ἡ πόρνη. Ἰάκ. *Jac.* 2. 25.
6. 20. Πίστει τὰ τείχη Ἱεριχὼ ἔπεσε. Ἑβρ. *Hebr.* 11. 30.
6. 22. Πίστει Ῥαὰβ ἡ πόρνη. Ἑβρ. *Hebr.* 11. 31.

ΣΑΜΟΥΗΛ. SAMUEL. I.

21. 6. ΟΥκ ἀνέγνωτε τί ἐποίησε Δαβὶδ, ὅτε ἐπείνασε. Ματ. *Matt.* 12. 3. Μάρκ. *Marc.* 2. 25. *Luc.* 6. 3.

ΣΑΜΟΥΗΛ. SAMUEL. II.

7. 14. ΕΓὼ ἔσομαι αὐτῷ εἰς Πατέρα 1. 5.

ΒΑΣΙΛΕΙΩΝ. REGUM I.

2. 10. ΕΞὸν εἰπεῖν μετὰ παῤῥησίας πρὸς ὑμᾶς περὶ τοῦ Πατριάρχου Δαβίδ. Πράξ. *Act.* 2. 29. & 13. 36.
10. 1. Βασίλισσα νότου. Ματθ. *Matth.* 12. 42. Λουκ. *Luc.* 11. 31.

17. 1. Ε'κλείσθη ὁ Οὐρανὸς ἐπὶ ἔτη τρία. Λυκ. *Luc.*4. 25.
17. 1. Η'λίας ἄνθρωπος ἦν ὁμοιοπαθὴς ἡμῖν. Ι'άκ. *Jac.*5. 17.

ΒΑΣΙΛΕΙΩ'Ν. REGUM II.

4. 29. ΜΗδένα κατὰ τὴν ὁδὸν ἀσπάσησθε. *Luc.*10. 4.
5. 13. Πολλοὶ λεπροὶ ἦσαν. Λυκ. *Luc.*4. 27.

ΠΑΡΑΛΕΙΠ. PARAL. I.

22. 10. ΔΑβὶδ ᾐτήσατο. Πράξ. *Actor.* 7. 46.
23. 13. Καὶ οὐχ ἑαυτῷ τις λαμβάνει τὴν τιμὴν, ἀλλ' ὁ καλούμενος. Ε'βρ. *Hebr.*5. 4.

Ι' Ω' Β. JOB.

1. 21. ΟΥ'δὲν εἰσηνέγκαμεν εἰς τὸν κόσμον. Τιμ. *Tim.*6. 7.
5. 17. Μακάριος ἀνὴρ ὃς ὑπομένει πειρασμόν. Ι'άκ. *Jac.*1. 12.
34. 19. Οὐκ ἔστι προσωπολήπτης ὁ Θεός. Πράξ. *Act.*10. 34.

ΨΑΛΜ. PSALM.

2. 7. ΥΙ'ός μου εἶ σύ. Ε'βρ. *Hebr.*1. 5. & 5. 5.
5. 10. Τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν. Ρ'ωμ. *Rom.*3. 13.
8. 5. Τί ἐστιν ἄνθρωπος, &c. Ε'βρ. *Heb.*2. 6.
10. 7. Ω'ν τὸ στόμα ἀρᾶς καὶ πικρίας γέμει. Ρ'ωμ. *Rom.*3. 14.

14. 1. 2. 3. Οὐκ ἔστι δίκαιος. Ῥωμ. *Rom.* 3. 10. 11. 12.

18. 3. Ἐγὼ ἔσομαι πεποιθὼς ἐπ' αὐτῷ. Ἑβρ. *Hebr.* 2. 13.

18. 50. Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν ἔθνεσι. Ῥωμ. *Rom.* 15. 9.

19. 5. Εἰς πᾶσαν τὴν γῆν ἐξῆλθεν ὁ φθόγγος αὐτῶν. Ῥωμ. *Rom.* 10. 18.

22. 23. Ἀπαγγελῶ τὸ ὄνομά σου. Ἑβρ. *Heb.* 2. 12.

36. 2. Οὐκ ἔστι φόβος Θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν. Ῥωμ. *Rom.* 3. 18.

40. 7. Θυσίαν καὶ προσφορὰν οὐκ ἠθέλησας. Ἑβρ. *Hebr.* 10. 5.

41. 10. Ὁ μὲν Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑπάγει. Ματθ. *Matth.* 26. 24. Μάρκ. *Marc.* 14. 21. Λουκ. *Luc.* 22. 22.

44. 23. Ἕνεκά σου θανατούμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν. Ῥωμ. *Rom.* 8. 36.

45. 7. Ὁ θρόνος σου, ὁ Θεὸς, εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Ἑβρ. *Heb.* 1. 8.

51. 6. Ὅπως ἂν δικαιωθῇς. Ῥωμ. *Rom.* 3. 4

62. 13. Ὃς ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ. Ῥωμ. *Rom.* 2. 6.

69. 10. Οἱ ὀνειδισμοὶ τῶν ὀνειδιζόντων σε, ἐπέπεσον ἐπ' ἐμέ. Ῥωμ. *Rom.* 15. 3.

69. 23. 24. Ἡ τράπεζα αὐτῶν εἰς παγίδα. Ῥωμ. *Rom.* 11. 9.

78. 13. Διὰ τῆς θαλάσσης διῆλθον. 1. Κορ. *Cor.* 10. 1.

14. Πάντες ὑπὸ τὴν νεφέλην ἦσαν. 1. Κορ. *Cor.* 10. 1.

15. Ἀκολουθούσης Πέτρας. 1. Κορ. *Cor.* 10. 4.

144. 3. Τί ἐςιν ἄνθρωπος, &c. Ἑβρ. *Heb*.2. 6.

ΠΑΡΟΙΜΙ'ΑΙ. PROVERB.

3. 11. 12. ΥΙ'έ μου, μὴ ὀλιγώρει παιδείας Κυρίου. Ἑβρ. *Heb*.12 5.

11. 31. Εἰ ὁ δίκαιος μόλις σώζεται. 1. Πέτρ. *Petr*.4. 18.

17. 27. Ἔςω πᾶς ἄνθρωπος ταχὺς εἰς τὸ ἀκοῦσαι, βραδὺς εἰς τὸ λαλῆσαι. Ἰάκ *Jac*.1. 19.

20. 9. Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι ἁμαρτίαν οὐκ ἔχομεν. 1. Ἰωάν. *Joan*.1. 8.

24. 23. Μὴ ἐν προσωποληψίαις. Ἰάκ. *Jac*.2. 1.

25. 6. Μὴ κατακλιθῇς εἰς τὴν πρωτοκλισίαν. Λουκ. *Luc*.14. 8.

Ἡ Σ Α Ι' Α Σ. E S A I.

1. 9. ΩΣ Σόδομα ἂν ἐγεννήθημεν. Ῥωμ. *Rom*.9. 29.

5. 21. Φρόνιμοι παρ' ἑαυτοῖς. Ῥωμ. *Rom*. 12. 16.

8. 14. Ἰδοὺ οὗτος κεῖται εἰς πτῶσιν, καὶ ἀνάςασιν. Λουκ *Luc*.2. 34.

14. 15. Λίθον προσκόμματος. Ῥωμ. *Rom*. 9. 33.

18. Ἰδοὺ ἐγὼ καὶ τὰ παιδία ἅ μοι ἔδωκεν ὁ Θεός. Ἑβρ. *Heb*.2. 13.

10. 22. Ἐὰν ᾖ ὁ ἀριθμὸς, &c. Ῥωμ. *Rom*.9. 27.

13. 10. Εὐθέως μετὰ τὴν θλίψιν τῶν ἡμερῶν ἐκείνων ὁ ἥλιος σκοτισθήσεται. Ματ. *Matt*.24.29. Μάρκ. *Mar*.13.24. 27.

27. 11. Α'φέλωμαι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν · Ρ'ωμ. Rom.11.27.
28. 16. Λίθον προσκόμματος. Ρ'ωμ. Rom. 9.33. Πᾶς ὁ πιστεύων ἐπ' αὐτῷ, &c. Ρ'ωμ. Rom.10.11.
29. 10. Πνεῦμα κατανύξεως, ὀφθαλμοὺς τοῦ μὴ βλέπειν. Ρ'ωμ. Rom.11.8.
41. 8. Α'ντελάβετο Ι'σραὴλ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ. Λουκ. Luc.1.54.
45. 9. Μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα. Ρ'ωμ. Rom. 9.20.
23. Ε'μοὶ κάμψει πᾶν γόνυ, &c. Ρ'ωμ. Rom.14.11. Φιλ. Philipp.2.10.
52. 5. Ο'νομα τοῦ Θεοῦ βλασφημεῖται. Ρ'ωμ. Rom.2.24.
52. 7. Ω'ς ὡραῖοι οἱ πόδες. Ρ'ωμ. Rom. 10.15.
53. 1. Τίς ἐπίστευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν; Ρ'ωμ. Rom.10.16.
54. 1. Μακάριοι αἱ στεῖραι. Λουκ. Luc.23.29.
58. 7. Ε'πείνασα γὰρ, καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν. Ματθ. Matth.25.35.
59. 7.8. Ο'ξεῖς οἱ πόδες. Ρ'ωμ. Rom.3.15.16 17.
59. 20. Η"ξει ἐκ Σιὼν ὁ ῥυόμενος. Ρ'ωμ. Rom.11.26.
63. 2. Περιβεβλημένος ἱμάτιον βεβαμμένον αἵματι. Α'ποκ. Apoc.19.13.
65. 1. Εὑρέθην τοῖς ἐμὲ μὴ ζητοῦσιν. Ρ'ωμ. 10.20.
2. Ο'λην τὴν ἡμέραν ἐξεπέτασα τὰς χεῖράς μου. Ρ'ωμ. Rom.10.21.

ΙΈΡΕΜΙΌΥ. JEREM.

2. 21. Ἄνθρωπός τις ἦν οἰκοδεσπότης. Ματθ. *Matth.* 21. 33 Μάρκ. *Marc.* 12. 1. Λουκ. *Luc.* 20. 9.

18. 6. Ἢ οὐκ ἔχει ἐξουσίαν ὁ κεραμεὺς. Ῥωμ. *Rom.* 9. 21.

31. 31. 32. 33. 34. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, &c. Ἑβρ. *Heb.* 8. 8. 9. 10. 11. 12. & 10. 16. 17.

ΙΈΖΕΚΙΗΛ. EZECH.

12. 21. Ποῦ ἐστιν ἡ ἐπαγγελία τῆς παρουσίας αὐτοῦ. 2. Πέτρ. *Petr.* 3. 4.

18. 7. Ἐπείνασα, καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν. Ματθ. *Mxtth.* 25. 35.

20. 11. Ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος. Ῥωμ. *Rom.* 10. 5.

36. 23. Ὄνομα τοῦ Θεοῦ βλασφημεῖται. Ῥωμ. *Rom.* 2. 24.

39. 2. Καὶ ὅταν τελεσθῇ τὰ χίλια ἔτη. Ἀποκ. *Apoc.* 20. 7.

ΔΑΝΙΗΛ. DANIEL.

7. 10. Καὶ χιλιάδες χιλιάδων. Ἀποκ. *Apoc.* 5. 11.

12. 7. Καὶ ὁ Ἄγγελος ὃν εἶδον ἑστῶτα ἐπὶ τῆς θαλάσσης. Ἀποκ. *Apoc.* 10. 5.

ὩΣΗΕ. OSEÆ.

1. 10. Τὸν οὐ λαόν μου, λαόν μου. Ῥωμ. *Rom.* 9. 25. 26.

13. 14. Ἵνα διὰ τοῦ θανάτου καταργήσῃ τὸν, &c. Ἑβρ. *Heb.* 2. 14.

14. 2. Καρπὸν χειλέων. Ἑβρ. *Heb.* 13. 15.

Ἰ Ω Η' Λ. JOEL.

2.32. ΟΣ ἂν ἐπικαλέσηται τὸ ὄνομα Κυρίου. Ῥωμ. *Rom.* 10. 13.
3. 15. Ὁ ἥλιος σκοτισθήσεται. Ματ. *Matt.* 24. 29. Μάρκ. *Marc.* 13. 24.

Α' Μ Ω' Σ. AMOS.

5. 15. ἈΠοςυγοῦντες τὸ πονηρὸν, &c. Ῥωμ. *Rom.* 12. 9.

ΜΙΧΑΙ'ΟΥ. MICH.

2. 10. ΟΥ'κ ἔχομεν ὧδε μένουσαν πόλιν. Ἑβρ. *Heb.* 13. 14.
4. 7. Βασιλεύσει ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰακώβ. Λουκ. *Luc.* 1. 33.

Α'ΒΒΑΚΟΥ'Μ. HABAKUK.

2. 3. 4. ΕΤι γὰρ μικρὸν, &c. Ἑβρ. *Heb.* 10. 37. 38.
4. Δίκαιος ἐκ πίςεως ζήσεται. Ῥωμ. *Rom.* 1. 17. Ἑβρ. *Heb.* 10. 38.

Α'ΓΓΑΙ'ΟΥ. AGGÆI.

2. 6. ΕΤι ἅπαξ ἐγὼ σείω, &c. Ἑβρ. *Heb.* 12. 26.

ΜΑΛΑΧΙ'ΟΥ. MALACH.

1. 2. 3. ἸΑκὼβ ἠγάπησα. Ῥωμ. *Rom.* 9. 13.

ΕΥ'ΑΓ-

ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ

ΚΑΤΑ ΜΑΤΘΑΙΟΝ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α΄. 1.

Βίβλον τὸ Πρῶτον Ἱστορεῖ Χριστοῦ γένος.
Ἄχθος τ' Ἰωσὴφ ἀγγελόφθεγκτον λύσιν.
Καὶ Μητρὸς ἐκτεχθέντα Παρθένου Λόγον.

1 ΒΙΒΛΟΣ Γενέσεως Ἰησοῦ
Χριστοῦ, Υἱοῦ Δαβίδ, Υἱοῦ
Ἀβραάμ.
2 Ἀβραὰμ ἐγέννησε τὸν Ἰ-
σαάκ· Ἰσαὰκ δὲ ἐγέννησε
τὸν Ἰακώβ· Ἰακὼβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰούδαν,
καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ.
3 Ἰούδας δὲ ἐγέννησε τὸν Φαρὲς καὶ τὸν
Ζαρὰ ἐκ τῆς Θάμαρ· Φαρὲς δὲ ἐγέννησε τὸν
Ἐσρώμ· Ἐσρὼμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀράμ.
4 Ἀρὰμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀμιναδάβ· Ἀ-
μιναδὰβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ναασσών· Ναασ-
σὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Σαλμών.
5 Σαλμὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Βοὸζ ἐκ τῆς
Ῥαχάβ· Βοὸζ δὲ ἐγέννησε τὸν Ὠβὴδ ἐκ
τῆς Ῥούθ· Ὠβὴδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰεσσαί.

6 Ι'εσσαὶ δὲ ἐγέννησε τὸν Δαβὶδ τὸν Βα-
σιλέα· Δαβὶδ δὲ ὁ Βασιλεὺς ἐγέννησε τὸν
Σολομῶντα ἐκ τῆς τοῦ Οὐρίου.
7 Σολομὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Ρ'οβοάμ·
Ρ'οβοὰμ δὲ ἐγέννησε τὸν Α'βιά· Α'βιὰ δὲ
ἐγέννησε τὸν Α'σά.
8 Α'σὰ δὲ ἐγέννησε τὸν Ι'ωσαφάτ. Ι'ω-
σαφὰτ δὲ ἐγέννησε τὸν Ι'ωράμ· Ι'ωρὰμ δὲ
ἐγέννησε τὸν Ο'ζίαν.
9 Ο'ζίας δὲ ἐγέννησε τὸν Ι'ωάθαμ· Ι'ωά-
θαμ δὲ ἐγέννησε τὸν Α"χαζ· Α"χαζ δὲ ἐ-
γέννησε τὸν Ε'ζεκίαν.
10. Ε'ζεκίας δὲ ἐγέννησε τὸν Μανασσῆ·
Μανασσῆς δὲ ἐγέννησε τὸν Α'μών· Α'μὼν δὲ
ἐγέννησε τὸν Ι'ωσίαν.
11 Ι'ωσίας δὲ ἐγέννησε τὸν Ι'εχονίαν, καὶ
τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ ἐπὶ τῆς μετοικεσίας Βα-
βυλῶνος.
12 Μετὰ δὲ τὴν μετοικεσίαν Βαβυλῶνος,
Ι'εχονίας ἐγέννησε τὸν Σαλαθιήλ· Σαλα-
θιὴλ δὲ ἐγέννησε τὸν Ζοροβάβελ.
13 Ζοροβάβελ δὲ ἐγέννησε τὸν Α'βιούδ.
Α'βιοὺδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ε'λιακείμ· Ε'λια-
κεὶμ δὲ ἐγέννησε τὸν Α'ζώρ.
14 Α'ζὼρ δὲ ἐγέννησε τὸν Σαδώκ· Σα-
δὼκ δὲ ἐγέννησε τὸν Α'χείμ· Α'χεὶμ δὲ
ἐγέννησε τὸν Ε'λιούδ.
15 Ε'λιοὺδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ε'λεάζαρ.
Ε'λεάζαρ δὲ ἐγέννησε τὸν Ματθάν· Ματ-
θὰν δὲ ἐγέννησε τὸν Ι'ακώβ.
16 Ι'ακὼβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ι'ωσήφ, τὸν
ἄνδρα Μαρίας, ἐξ ἧς ἐγεννήθη Ι'ησοῦς, ὁ
λεγόμενος Χριστός.
17 Πᾶσαι οὖν αἱ γενεαὶ ἀπὸ Α'βραὰμ
ἕως

ἕως Δαβὶδ, γενεαὶ δεκατέσαρες· καὶ ἀπὸ
Δαβὶδ ἕως τῆς μετοικεσίας Βαβυλῶνος,
γενεαὶ δεκατέσαρες· καὶ ἀπὸ τῆς μετοικεσίας
Βαβυλῶνος ἕως τοῦ Χριστοῦ, γενεαὶ δεκατέσ-
σαρες.

18 Τοῦ δὲ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἡ γέννησις οὕτως ἦν·
Μνηστευθείσης γὰρ τῆς μητρὸς αὐτοῦ Μαρίας
τῷ Ἰωσὴφ, πρὶν ἢ συνελθεῖν αὐτοὺς, εὑρέ-
θη ἐν γαστρὶ ἔχουσα ἐκ Πνεύματος Ἁγίου.

19 Ἰωσὴφ δὲ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, δίκαιος ὢν,
καὶ μὴ θέλων αὐτὴν παραδειγματίσαι, ἐβου-
λήθη λάθρα ἀπολῦσαι αὐτήν.

20 Ταῦτα δὲ αὐτοῦ ἐνθυμηθέντος, ἰδοὺ
Ἄγγελος Κυρίου κατ' ὄναρ ἐφάνη αὐτῷ, λέ-
γων· Ἰωσὴφ Υἱὸς Δαβὶδ, μὴ φοβηθῇς πα-
ραλαβεῖν Μαριὰμ τὴν γυναῖκά σου, τὸ γὰρ
ἐν αὐτῇ γεννηθὲν ἐκ Πνεύματός ἐστιν Ἁγίου.

21 Τέξεται δὲ Υἱὸν, καὶ καλέσεις τὸ ὄ-
νομα αὐτοῦ, ἸΗΣΟΥ͂Ν· αὐτὸς γὰρ σώ-
σει τὸν λαὸν αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτοῦ.

22 (Τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν, ἵνα πληρω-
θῇ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ Προφή-
του, λέγοντος·

23 Ἰδοὺ ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ ἕξει, καὶ τέ-
ξεται Υἱὸν, καὶ καλέσουσι τὸ ὄνομα αὐτοῦ
ἘΜΜΑΝΟΥΗ͂Λ· ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον,
μεθ' ἡμῶν ὁ Θεός.)

24 Διεγερθεὶς δὲ ὁ Ἰωσὴφ ἀπὸ τοῦ ὕπ-
νου, ἐποίησεν ὡς προσέταξεν αὐτῷ ὁ Ἄγγε-
λος Κυρίου, καὶ παρέλαβε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ.

25 Καὶ οὐκ ἐγίνωσκεν αὐτὴν, ἕως οὗ ἔτεκε
τὸν Υἱὸν αὐτῆς, τὸν πρωτότοκον, καὶ ἐκάλε-
σε τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἸΗΣΟΥ͂Ν.

ΕΥ'ΑΓΓΕ'ΛΙΟΝ, Β'.

Ἐν δευτέρῳ δὲ προσκυνοῦντας τοὺς Μάγους·
Ὄψει, Λόγον φεύγοντα, καὶ βρεφῶν φόνον.

1 ΤΟΥ δὲ Ἰησοῦ γεννηθέντος ἐν Βηθλεὲμ τῆς Ἰουδαίας, ἐν ἡμέραις Ἡρώδου τοῦ Βασιλέως, ἰδοὺ μάγοι ἀπὸ ἀνατολῶν παρεγένοντο εἰς Ἱεροσόλυμα, λέγοντες·

2 Ποῦ ἐστιν ὁ τεχθεὶς Βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; εἴδομεν γὰρ αὐτοῦ τὸν ἀστέρα ἐν τῇ ἀνατολῇ, καὶ ἤλθομεν προσκυνῆσαι αὐτῷ.

3 Ἀκούσας δὲ Ἡρώδης ὁ Βασιλεὺς ἐταράχθη, καὶ πᾶσα Ἱεροσόλυμα μετ' αὐτοῦ.

4 Καὶ συναγαγὼν πάντας τοὺς Ἀρχιερεῖς καὶ Γραμματεῖς τοῦ λαοῦ, ἐπυνθάνετο παρ' αὐτῶν, ποῦ ὁ Χριστὸς γεννᾶται.

5 Οἱ δὲ εἶπαν αὐτῷ· Ἐν Βηθλεὲμ τῆς Ἰουδαίας· οὕτω γὰρ γέγραπται διὰ τοῦ Προφήτου.

6 Καὶ σὺ Βηθλεέμ, γῆ Ἰούδα, οὐδαμῶς ἐλαχίστη εἶ ἐν τοῖς ἡγεμόσιν Ἰούδα· ἐκ σοῦ γάρ μοι ἐξελεύσεται ἡγούμενος, ὅστις ποιμανεῖ τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραήλ.

7 Τότε Ἡρώδης λάθρα καλέσας τοὺς μάγους, ἠκρίβωσε παρ' αὐτῶν τὸν χρόνον τοῦ φαινομένου ἀστέρος.

8 Καὶ πέμψας αὐτοὺς εἰς Βηθλεέμ, εἶπε· Πορευθέντες, ἀκριβῶς ἐξετάσατε περὶ τοῦ παιδίου· ἐπὰν δὲ εὕρητε, ἀπαγγείλατέ μοι, ὅπως κἀγὼ ἐλθὼν προσκυνήσω αὐτῷ.

9 Οἱ δὲ ἀκούσαντες τοῦ Βασιλέως, ἐπορεύθησαν· καὶ ἰδοὺ, ὁ ἀστὴρ, ὃν εἶδον ἐν τῇ

ἀνα-

ἀνατολῇ, προῆγεν αὐτοὺς, ἕως ἐλθὼν ἔστη
ἐπάνω οὗ ἦν τὸ παιδίον.
10 Ἰδόντες δὲ τὸν ἀστέρα, ἐχάρησαν χα-
ρὰν μεγάλην σφόδρα.
11 Καὶ ἐλθόντες εἰς τὴν οἰκίαν, εὗρον τὸ
παιδίον μετὰ Μαρίας τῆς μητρὸς αὐτοῦ· καὶ
πεσόντες προσεκύνησαν αὐτῷ· καὶ ἀνοίξαντες
τοὺς θησαυροὺς αὐτῶν· προσήνεγκαν αὐτῷ δῶ-
ρα, χρυσὸν, καὶ λίβανον, καὶ σμύρναν.
12 Καὶ χρηματισθέντες κατ' ὄναρ μὴ ἀνα-
κάμψαι πρὸς Ἡρώδην, δι' ἄλλης ὁδοῦ ἀνε-
χώρησαν εἰς τὴν χώραν αὐτῶν.
13 Ἀναχωρησάντων δὲ αὐτῶν, ἰδοὺ, Ἄγ-
γελος Κυρίου φαίνεται κατ' ὄναρ τῷ Ἰωσὴφ,
λέγων· Ἐγερθεὶς παράλαβε τὸ παιδίον καὶ
τὴν Μητέρα αὐτοῦ, καὶ φεῦγε εἰς Αἴγυπτον· καὶ
ἴσθι ἐκεῖ ἕως ἂν εἴπω σοι. μέλλει γὰρ Ἡρώ-
δης ζητεῖν τὸ παιδίον, τοῦ ἀπολέσαι αὐτό.
14 Ὁ δὲ ἐγερθεὶς παρέλαβε τὸ παιδίον,
καὶ τὴν Μητέρα αὐτοῦ νυκτὸς, καὶ ἀνεχώρησεν
εἰς Αἴγυπτον.
15 Καὶ ἦν ἐκεῖ ἕως τῆς τελευτῆς Ἡρώ-
δου· ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Κυρίου
διὰ τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Ἐξ Αἰγύπτου
ἐκάλεσα τὸν Υἱόν μου.
16 Τότε Ἡρώδης ἰδὼν ὅτι ἐνεπαίχθη
ὑπὸ τῶν μάγων, ἐθυμώθη λίαν· καὶ ἀπο-
στείλας ἀνεῖλε πάντας τοὺς παῖδας τοὺς ἐν
Βηθλεὲμ, καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις αὐτῆς.
ἀπὸ διετοῦς καὶ κατωτέρω, κατὰ τὸν χρόνον ὃν
ἠκρίβωσε παρὰ τῶν μάγων.
17 Τότε ἐπληρώθη τὸ ῥηθὲν ὑπὸ Ἱερε-
μίου τοῦ Προφήτου, λέγοντες·
18 Φωνὴ ἐν Ῥαμᾷ ἠκούσθη, θρῆνος καὶ
κλαυ-

κλαυθμὸς καὶ ὀδυρμὸς πολὺς, Ῥαχὴλ
κλαίουσα τὰ τέκνα αὐτῆς· καὶ οὐκ ἤθελε πα-
ρακληθῆναι, ὅτι οὐκ εἰσί.
19 Τελευτήσαντος δὲ τοῦ Ἡρώδου, ἰδοὺ,
Ἄγγελος Κυρίου κατ᾽ ὄναρ φαίνεται τῷ Ἰω-
σὴφ ἐν Αἰγύπτῳ.
20 Λέγων· Ἐγερθεὶς παράλαβε τὸ παι-
δίον καὶ τὴν Μητέρα αὐτοῦ, καὶ πορεύου εἰς
γῆν Ἰσραήλ· τεθνήκασι γὰρ οἱ ζητοῦντες
τὴν ψυχὴν τοῦ παιδίου.
21 Ὁ δὲ ἐγερθεὶς παρέλαβε τὸ παιδίον
καὶ τὴν Μητέρα αὐτοῦ, καὶ ἦλθεν εἰς γῆν
Ἰσραήλ.
22 Ἀκούσας δὲ ὅτι Ἀρχέλαος Βασιλεύει
ἐπὶ τῆς Ἰουδαίας ἀντὶ Ἡρώδου τοῦ Πατρὸς
αὐτοῦ, ἐφοβήθη ἐκεῖ ἀπελθεῖν, χρηματι-
σθεὶς δὲ κατ᾽ ὄναρ, ἀνεχώρησεν εἰς τὰ μέρη
τῆς Γαλιλαίας.
23 Καὶ ἐλθὼν κατῴκησεν εἰς πόλιν λε-
γομένην Ναζαρέτ. ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν
διὰ τῶν Προφητῶν, ὅτι Ναζωραῖος κληθή-
σεται.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ΄. 3.

Τρίτον δὲ Βαπτίζοντα Πρόδρομον φέρει,
Χριστόντε Βαπτισθέντα δουλικῷ τρόπῳ.

1 ἘΝ δὲ ταῖς ἡμέραις ἐκείναις παρα-
γίνεται Ἰωάννης ὁ Βαπτιστὴς, κη-
ρύσσων ἐν τῇ ἐρήμῳ τῆς Ἰουδαίας.
2 Καὶ λέγων· Μετανοεῖτε· ἤγγικε γὰρ
Βασιλεία τῶν Οὐρανῶν.
3 Οὗτος γάρ ἐστιν ὁ ῥηθεὶς ὑπὸ Ἡσαΐου
τοῦ

τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Φωνὴ βοῶντες ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους αὐτοῦ.

4 Αὐτὸς δὲ ὁ Ἰωάννης εἶχε τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ ἀπὸ τριχῶν καμήλου, καὶ ζώνην δερματίνην περὶ τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ· ἡ δὲ τροφὴ αὐτοῦ ἦν ἀκρίδες καὶ μέλι ἄγριον.

5 Τότε ἐξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν Ἱεροσόλυμα, καὶ πᾶσα ἡ Ἰουδαία, καὶ πᾶσα ἡ περίχωρος τοῦ Ἰορδάνου·

6 Καὶ ἐβαπτίζοντο ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ὑπ' αὐτοῦ, ἐξομολογούμενοι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν.

7 Ἰδὼν δὲ πολλοὺς τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων ἐρχομένους ἐπὶ τὸ βάπτισμα αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Γεννήματα ἐχιδνῶν, τίς ὑπέδειξεν ὑμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλούσης ὀργῆς;

8 Ποιήσατε οὖν καρποὺς ἀξίους τῆς μετανοίας.

9 Καὶ μὴ δόξητε λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Πατέρα ἔχομεν τὸν Ἀβραάμ· λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι δύναται ὁ Θεὸς ἐκ τῶν λίθων τούτων ἐγεῖραι τέκνα τῷ Ἀβραάμ.

10 Ἤδη δὲ καὶ ἡ ἀξίνη πρὸς τὴν ῥίζαν τῶν δένδρων κεῖται. πᾶν οὖν δένδρον μὴ ποιοῦν καρπὸν καλὸν, ἐκκόπτεται, καὶ εἰς πῦρ βάλλεται.

11 Ἐγὼ μὲν βαπτίζω ὑμᾶς ἐν ὕδατι εἰς μετάνοιαν· ὁ δὲ ὀπίσω μου ἐρχόμενος, ἰσχυρότερός μου ἐστὶν, οὗ οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς τὰ ὑποδήματα βαστάσαι· αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσει ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ καὶ πυρί.

12 Οὗ τὸ πτύον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ διακαθαριεῖ τὴν ἅλωνα αὐτοῦ, καὶ συνάξει τὸν

σῖτον αὐτοῦ εἰς τὴν ἀποθήκην, τὸ δὲ ἄχυρον
κατακαύσει πυρὶ ἀσβέστῳ.
13 Τότε παραγίνεται ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τῆς
Γαλιλαίας ἐπὶ τὸν Ἰορδάνην πρὸς τὸν Ἰωάν-
νην, τοῦ βαπτισθῆναι ὑπ' αὐτοῦ.
14 Ὁ δὲ Ἰωάννης διεκώλυεν αὐτὸν, λέ-
γων· Ἐγὼ χρείαν ἔχω ὑπὸ σοῦ βαπτισθῆναι,
καὶ σὺ ἔρχῃ πρός με;
15 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς αὐ-
τόν· Ἄφες ἄρτι· οὕτω γὰρ πρέπον ἐστὶν ἡμῖν
πληρῶσαι πᾶσαν δικαιοσύνην· Τότε ἀφίη-
σιν αὐτόν.
16 Καὶ βαπτισθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἀνέβη εὐθὺς
ἀπὸ τοῦ ὕδατος. καὶ ἰδοὺ ἀνεῴχθησαν αὐτῷ οἱ
Οὐρανοὶ, καὶ εἶδε τὸ πνεῦμα τοῦ Θεοῦ καταβαῖ-
νον ὡσεὶ περιστερὰν, καὶ ἐρχόμενον ἐπ' αὐτόν.
17 Καὶ ἰδοὺ, φωνὴ ἐκ τῶν Οὐρανῶν, λέ-
γουσα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱός μου ὁ ἀγαπητὸς,
ἐν ᾧ εὐδόκησα.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

Ἐν τετάρτῳ δ' ἤλεγξε πειραστὴν Λόγος,
Κηρύγματ' ἄρχει, προσκαλεῖ τε δὶς δύο.

1 ΤΟτε ὁ Ἰησοῦς ἀνήχθη εἰς τὴν ἔρη-
μον ὑπὸ τοῦ Πνεύματος, πειρα-
σθῆναι ὑπὸ τοῦ διαβόλου.
2 Καὶ νηστεύσας ἡμέρας τεσσαράκοντα, καὶ
νύκτας τεσσαράκοντα, ὕστερον ἐπείνασε.
3 Καὶ προσελθὼν αὐτῷ ὁ πειράζων, εἶ-
πεν· Εἰ Υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, εἰπὲ ἵνα οἱ λί-
θοι οὗτοι ἄρτοι γένωνται.
4 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε· Γέγραπται,
Οὐκ

Οὐκ ἐπ' ἄρτῳ μόνῳ ζήσεται ἄνθρωπος, ἀλλ'
ἐπὶ παντὶ ῥήματι ἐκπορευομένῳ διὰ στόμα-
τος Θεοῦ.
5 Τότε παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ διάβολος
εἰς τὴν Ἁγίαν πόλιν, καὶ ἵστησιν αὐτὸν ἐπὶ
τὸ πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ.
6 Καὶ λέγει αὐτῷ· Εἰ Υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ,
βάλε σεαυτὸν κάτω· γέγραπται γάρ· Ὅτι
τοῖς Ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντελεῖται περὶ σοῦ, καὶ
ἐπὶ χειρῶν ἀροῦσί σε, μήποτε προσκόψῃς
πρὸς λίθον τὸν πόδα σου.
7 Ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· πάλιν γέγραπ-
ται. Οὐκ ἐκπειράσεις Κύριον τὸν Θεόν σου.
8 Πάλιν παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ διάβο-
λος εἰς ὄρος ὑψηλὸν λίαν, καὶ δείκνυσιν αὐ-
τῷ πάσας τὰς Βασιλείας τοῦ Κόσμου, καὶ
τὴν δόξαν αὐτῶν.
9 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ταῦτα πάντα σοὶ
δώσω, ἐὰν πεσὼν προσκυνήσῃς μοι.
10 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὕπαγε
Σατανᾶ· γέγραπται γάρ. Κύριον τὸν Θεόν
σου προσκυνήσεις, καὶ αὐτῷ μόνῳ λατρεύσεις.
11 Τότε ἀφίησιν αὐτὸν ὁ διάβολος· καὶ
ἰδοὺ, Ἄγγελοι προσῆλθον, καὶ διηκόνουν αὐτῷ.
12 Ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι Ἰωάννης πα-
ρεδόθη, ἀνεχώρησεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν.
13 Καὶ καταλιπὼν τὴν Ναζαρὲτ, ἐλ-
θὼν κατῴκησεν εἰς Καπερναοὺμ τὴν παραθα-
λασσίαν ἐν ὁρίοις Ζαβουλὼν καὶ Νεφθαλείμ.
14 Ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου
τοῦ Προφήτου, λέγοντος·
15 Γῆ Ζαβουλὼν καὶ γῆ Νεφθαλεὶμ, ὁδὸν
θαλάσσης, πέραν τοῦ Ἰορδάνου, Γαλιλαία
τῶν ἐθνῶν.

16 Ὁ λαὸς ὁ καθήμενος ἐν σκότει, εἶδε φῶς μέγα· καὶ τοῖς καθημένοις ἐν χώρᾳ καὶ σκιᾷ θανάτου, φῶς ἀνέτειλεν αὐτοῖς.

17 Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς κηρύσσειν, καὶ λέγειν· Μετανοεῖτε· ἤγγικε γὰρ ἡ Βασιλεία τῶν Οὐρανῶν.

18 Περιπατῶν δὲ ὁ Ἰησοῦς παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας, εἶδε δύο ἀδελφοὺς, Σίμωνα τὸν λεγόμενον Πέτρον, καὶ Ἀνδρέαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, βάλλοντας ἀμφίβληστρον εἰς τὴν θάλασσαν· (ἦσαν γὰρ ἁλιεῖς.)

19 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Δεῦτε ὀπίσω μου, καὶ ποιήσω ὑμᾶς ἁλιεῖς ἀνθρώπων.

20 Οἱ δὲ εὐθέως ἀφέντες τὰ δίκτυα, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

21 Καὶ προβὰς ἐκεῖθεν, εἶδεν ἄλλους δύο ἀδελφοὺς, Ἰάκωβον τὸν τοῦ Ζεβεδαίου, καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῷ πλοίῳ μετὰ Ζεβεδαίου τοῦ Πατρὸς αὐτῶν, καταρτίζοντας τὰ δίκτυα αὐτῶν· καὶ ἐκάλεσεν αὐτούς.

22 Οἱ δὲ εὐθέως ἀφέντες τὸ πλοῖον καὶ τὸν Πατέρα αὐτῶν, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

23 Καὶ περιῆγεν ὅλην τὴν Γαλιλαίαν ὁ Ἰησοῦς, διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν, καὶ κηρύσσων τὸ Εὐαγγέλιον τῆς Βασιλείας, καὶ θεραπεύων πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν Μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ.

24 Καὶ ἀπῆλθεν ἡ ἀκοὴ αὐτοῦ εἰς ὅλην τὴν Συρίαν· καὶ προσήνεγκαν αὐτῷ πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας, ποικίλαις νόσοις καὶ βασάνοις συνεχομένους, καὶ δαιμονιζομένους, καὶ σεληνιαζομένους, καὶ Παραλυτικούς· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς.

25 Καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ

ἀπὸ

ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας καὶ Δεκαπόλεως καὶ Ἱε-
ροσολύμων καὶ Ἰουδαίας, καὶ Πέραν τοῦ
Ἰορδάνου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

Πέμπτῳ Μαθητὰς φθέγγεται μακαρτάτους,
Ἅλας τε, καὶ φῶς. καὶ διορθοῖ τὸν βίον,
Ὀργὴν, ὄρεξιν, καὶ διάζευξιν γάμου,
Ὅρκον, δίκην, μῖσός τε εἰς Υἱῶν θέσιν.

1 ἸΔὼν δὲ τοὺς ὄχλους, ἀνέβη εἰς τὸ
ὄρος· καὶ καθίσαντος αὐτοῦ, προσῆλ-
θον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
2 Καὶ ἀνοίξας τὸ στόμα αὐτοῦ, ἐδίδασ-
κεν αὐτοὺς, λέγων·
3 Μακάριοι οἱ πτωχοὶ τῷ Πνεύματι·
ὅτι αὐτῶν ἐστιν ἡ Βασιλεία τῶν Οὐρανῶν.
4 Μακάριοι οἱ πενθοῦντες· ὅτι αὐτοὶ πα-
ρακληθήσονται.
5 Μακάριοι οἱ πρᾳεῖς· ὅτι αὐτοὶ κληρο-
νομήσουσι τὴν γῆν.
6 Μακάριοι οἱ πεινῶντες, καὶ διψῶντες
τὴν δικαιοσύνην· ὅτι αὐτοὶ χορτασθήσονται.
7 Μακάριοι οἱ ἐλεήμονες· ὅτι αὐτοὶ ἐ-
λεηθήσονται.
8 Μακάριοι οἱ καθαροὶ τῇ καρδίᾳ· ὅτι
αὐτοὶ τὸν Θεὸν ὄψονται.
9 Μακάριοι οἱ εἰρηνοποιοί· ὅτι αὐτοὶ
Υἱοὶ Θεοῦ κληθήσονται.
10 Μακάριοι οἱ δεδιωγμένοι ἕνεκεν δι-
καιοσύνης· ὅτι αὐτῶν ἐστιν ἡ Βασιλεία τῶν
Οὐρανῶν.
11 Μακάριοί ἐστε, ὅταν ὀνειδίσωσιν ὑμᾶς,

ϗ διώξωσι, καὶ εἴπωσι πᾶν πονηρὸν ῥῆμα
καθ' ὑμῶν, ψευδόμενοι, ἕνεκεν ἐμοῦ.
12 Χαίρετε ϗ ἀγαλλιᾶσθε· ὅτι ὁ μισθὸς
ὑμῶν πολὺς ἐν τοῖς Οὐρανοῖς· οὕτω γὰρ ἐ-
δίωξαν τοὺς Προφήτας, τοὺς πρὸ ὑμῶν.
13 Ὑμεῖς ἐστε τὸ ἅλας τῆς γῆς· ἐὰν δὲ
τὸ ἅλας μωρανθῇ, ἐν τίνι ἁλισθήσεται; εἰς
οὐδὲν ἰσχύει ἔτι, εἰ μὴ βληθῆναι ἔξω, καὶ
καταπατεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων.
14 Ὑμεῖς ἐστε τὸ φῶς τοῦ κόσμου· οὐ δύνα-
ται πόλις κρυβῆναι ἐπάνω ὄρους κειμένη.
15 Οὐδὲ καίουσι λύχνον, ϗ τιθέασιν αὐ-
τὸν ὑπὸ τὸν μόδιον, ἀλλ' ἐπὶ τὴν λυχνίαν,
ϗ λάμπει πᾶσι τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ.
16 Οὕτω λαμψάτω τὸ φῶς ὑμῶν ἔμπρο-
σθεν τῶν ἀνθρώπων, ὅπως ἴδωσιν ὑμῶν τὰ
καλὰ ἔργα, ϗ δοξάσωσι τὸν Πατέρα ὑ-
μῶν, τὸν ἐν τοῖς Οὐρανοῖς.
17 Μὴ νομίσητε, ὅτι ἦλθον καταλῦσαι
τὸν νόμον, ἢ τοὺς Προφήτας· οὐκ ἦλθον κα-
ταλῦσαι, ἀλλὰ πληρῶσαι.
18 Ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἕως ἂν πα-
ρέλθῃ ὁ Οὐρανὸς ϗ ἡ γῆ, ἰῶτα ἓν, ἢ μία
κεραία οὐ μὴ παρέλθῃ ἀπὸ τοῦ νόμου, ἕως
ἂν πάντα γένηται.
19 Ὃς ἐὰν οὖν λύσῃ μίαν τῶν ἐντολῶν τούτων
τῶν ἐλαχίστων, ϗ διδάξῃ οὕτω τοὺς ἀνθρώπους,
ἐλάχιστος κληθήσεται ἐν τῇ Βασιλείᾳ τῶν οὐ-
ρανῶν· ὃς δ' ἂν ποιήσῃ ϗ διδάξῃ, οὗτος μέγας
κληθήσεται ἐν τῇ Βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν.
20 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἐὰν μὴ περισ-
σεύσῃ ἡ δικαιοσύνη ὑμῶν πλεῖον τῶν Γραμ-
ματέων ϗ Φαρισαίων, οὐ μὴ εἰσέλθητε εἰς
τὴν Βασιλείαν τῶν Οὐρανῶν.

21 Ἠκούσατε ὅτι ἐῤῥέθη τοῖς ἀρχαίοις· Οὐ φονεύσεις· ὃς δ' ἂν φονεύσῃ, ἔνοχος ἔσται τῇ κρίσει.

22 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὁ ὀργιζόμενος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ εἰκῇ, ἔνοχος ἔσται τῇ κρίσει· ὃς δ' ἂν εἴπῃ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ῥακὰ, ἔνοχος ἔσται τῷ συνεδρίῳ· ὃς δ' ἂν εἴπῃ μωρὲ, ἔνοχος ἔσται εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός.

23 Ἐὰν οὖν προσφέρῃς τὸ δῶρόν σου ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, κἀκεῖ μνησθῇς, ὅτι ὁ ἀδελφός σου ἔχει τί κατὰ σοῦ·

24 Ἄφες ἐκεῖ τὸ δῶρόν σου ἔμπροσθεν τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ὕπαγε, πρῶτον διαλλάγηθι τῷ ἀδελφῷ σου, καὶ τότε ἐλθὼν πρόσφερε τὸ δῶρόν σου.

25 Ἴσθι εὐνοῶν τῷ ἀντιδίκῳ σου ταχὺ, ἕως ὅτου εἶ ἐν τῇ ὁδῷ μετ' αὐτοῦ· μήποτέ σε παραδῷ ὁ ἀντίδικος τῷ κριτῇ, καὶ ὁ κριτής σε παραδῷ τῷ ὑπηρέτῃ, καὶ εἰς φυλακὴν βληθήσῃ.

26 Ἀμὴν λέγω σοι, οὐ μὴ ἐξέλθῃς ἐκεῖθεν, ἕως ἂν ἀποδῷς τὸν ἔσχατον κοδράντην.

27 Ἠκούσατε ὅτι ἐῤῥέθη τοῖς ἀρχαίοις· Οὐ μοιχεύσεις.

28 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὁ βλέπων γυναῖκα πρὸς τὸ ἐπιθυμῆσαι αὐτῆς, ἤδη ἐμοίχευσεν αὐτὴν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ.

29 Εἰ δὲ ὁ ὀφθαλμός σου ὁ δεξιὸς σκανδαλίζει σε, ἔξελε αὐτὸν, καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· συμφέρει γάρ σοι, ἵνα ἀπόληται ἓν τῶν μελῶν σου, καὶ μὴ ὅλον τὸ σῶμά σου βληθῇ εἰς γέενναν.

30 Καὶ εἰ ἡ δεξιά σου χεὶρ σκανδαλίζει σε, ἔκκοψον αὐτὴν, καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· συμφέρει γάρ σοι, ἵνα ἀπόληται ἓν τῶν μελῶν σου, καὶ μὴ ὅλον τὸ σῶμά σου βληθῇ εἰς γέενναν.

31 Ἐῤῥέθη δὲ ὅτι ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν
γυναῖκα αὐτοῦ, δότω αὐτῇ ἀποστάσιον.

32 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὃς ἂν ἀπο-
λύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, παρεκτὸς λόγου
πορνείας, ποιεῖ αὐτὴν μοιχᾶσθαι· καὶ ὃς ἐὰν
ἀπολελυμένην γαμήσῃ, μοιχᾶται.

33 Πάλιν ἠκούσατε ὅτι ἐῤῥέθη τοῖς ἀρ-
χαίοις· Οὐκ ἐπιορκήσεις, ἀποδώσεις δὲ τῷ
Κυρίῳ τοὺς ὅρκους σου.

34 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, μὴ ὀμόσαι ὅ-
λως· μήτε ἐν τῷ Οὐρανῷ, ὅτι θρόνος ἐστὶ
τοῦ Θεοῦ·

35 Μήτε ἐν τῇ γῇ, ὅτι ὑποπόδιόν ἐστι
τῶν ποδῶν αὐτοῦ· μήτε εἰς Ἱεροσόλυμα,
ὅτι πόλις ἐστὶ τοῦ μεγάλου Βασιλέως·

36 Μήτε ἐν τῇ κεφαλῇ σου ὀμόσῃς, ὅτι
οὐ δύνασαι μίαν τρίχα λευκὴν ἢ μέλαιναν
ποιῆσαι.

37 Ἔστω δὲ ὁ λόγος ὑμῶν, Ναὶ, ναί, Οὒ,
οὔ· τὸ δὲ περισσὸν τούτων, ἐκ τοῦ πονηροῦ ἐστιν.

38 Ἠκούσατε ὅτι ἐῤῥέθη· Ὀφθαλμὸν
ἀντὶ ὀφθαλμοῦ, καὶ ὀδόντα ἀντὶ ὀδόντος.

39 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, μὴ ἀντιστῆναι
τῷ πονηρῷ· ἀλλ' ὅστις σε ῥαπίσει ἐπὶ τὴν δε-
ξιάν σου σιαγόνα, στρέψον αὐτῷ καὶ τὴν ἄλλην.

40 Καὶ τῷ θέλοντί σοι κριθῆναι, καὶ τὸν
χιτῶνά σου λαβεῖν, ἄφες αὐτῷ καὶ τὸ ἱμάτιον.

41 Καὶ ὅστις σε ἀγγαρεύσει μίλιον ἓν,
ὕπαγε μετ' αὐτοῦ δύο.

42 Τῷ αἰτοῦντί σε δίδου, καὶ τὸν θέλοντα
ἀπὸ σοῦ δανείσασθαι, μὴ ἀποστραφῇς.

43 Ἠκούσατε ὅτι ἐῤῥέθη· Ἀγαπήσεις
τὸν πλησίον σου, καὶ μισήσεις τὸν ἐχθρόν σου.

44 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ἀγαπᾶτε τοὺς

ἐχ-

ἐχθρὺς ὑμῶν, εὐλογεῖτε τὺς καταρωμένους
ὑμᾶς, καλῶς ποιεῖτε τὺς μισῦντας ὑμᾶς,
καὶ προσεύχεσθε ὑπὲρ τῶν ἐπηρεαζόντων ὑμᾶς
καὶ διωκόντων ὑμᾶς.

45 Ὅπως γένησθε Υἱοὶ τῦ Πατρὸς ὑμῶν
τῦ ἐν Οὐρανοῖς, ὅτι τὸν ἥλιον αὐτοῦ ἀνα-
τέλλει ἐπὶ πονηρὺς καὶ ἀγαθὺς, καὶ βρέχει
ἐπὶ δικαίυς καὶ ἀδίκυς.

46 Ἐὰν γὰρ ἀγαπήσητε τὺς ἀγαπῶντας
ὑμᾶς, τίνα μισθὸν ἔχετε; ὐχὶ καὶ οἱ τελῶ-
ναι τὸ αὐτὸ ποιῦσι.

47 Καὶ ἐὰν ἀσπάσησθε τὺς ἀδελφὺς ὑμῶν
μόνον, τί περισσὸν ποιεῖτε; ὐχὶ καὶ οἱ τελῶ-
ναι ὕτω ποιῦσιν;

48 Ἔσεσθε ὖν ὑμεῖς τέλειοι, ὥσπερ ὁ Πα-
τὴρ ὑμῶν, ὁ ἐν τοῖς Οὐρανοῖς τέλειός ἐστι.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ. ς'. 6.

Πτωχοῖς ἐν ἔκτῳ νυθετεῖ χορηγέειν,
Κρύβδην Θεῷ λαλεῖν τε, νηστεύειν θ' ἅμα.
Ἄνω τε πλυτεῖν, μὴ μεριμνᾶν τῶν κάτω,
Κληρυχίαν τε τὴν Θεῦ ζητεῖν μόνην.

1 ΠΡοσέχετε τὴν ἐλεημοσύνην ὑμῶν
μὴ ποιεῖν ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώ-
πων, πρὸς τὸ θεαθῆναι αὐτοῖς· εἰ δὲ μή-
γε, μισθὸν ὐκ ἔχετε παρὰ τῷ Πατρὶ ὑμῶν,
τῷ ἐν τοῖς Οὐρανοῖς.

2 Ὅταν ὖν ποιῇς ἐλεημοσύνην, μὴ σαλπί-
σῃς ἔμπροσθέν σῦ, ὥσπερ οἱ ὑποκριταὶ ποιῦ-
σιν ἐν ταῖς συναγωγαῖς, καὶ ἐν ταῖς ῥύμαις,
ὅπως δοξασθῶσιν ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων· ἀμὴν
λέγω ὑμῖν, ἀπέχυσι τὸν μισθὸν αὐτῶν.

3 Σοῦ δὲ ποιοῦντος ἐλεημοσύνην, μὴ γνώ-
τω ἡ ἀριστερά σου τί ποιεῖ ἡ δεξιά σου.
4 Ὅπως ᾖ σου ἡ ἐλεημοσύνη ἐν τῷ κρυπ-
τῷ· καὶ ὁ Πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπ-
τῷ, αὐτὸς ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.
5 Καὶ ὅταν προσεύχῃ, οὐκ ἔσῃ ὥσπερ οἱ
ὑποκριταί· ὅτι φιλοῦσιν ἐν ταῖς συναγωγαῖς,
καὶ ἐν ταῖς γωνίαις τῶν πλατειῶν ἑστῶτες προ-
σεύχεσθαι, ὅπως ἂν φανῶσι τοῖς ἀνθρώποις·
ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἀπέχουσι τὸν μισθὸν αὐτῶν.
6 Σὺ δὲ ὅταν προσεύχῃ, εἴσελθε εἰς τὸ
ταμιεῖόν σου, καὶ κλείσας τὴν θύραν σου, πρόσ-
ευξαι τῷ Πατρί σου, τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ·
καὶ ὁ Πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ, ἀ-
ποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.
7 Προσευχόμενοι δὲ μὴ βαττολογήσητε,
ὥσπερ οἱ ἐθνικοί· δοκοῦσι γὰρ ὅτι ἐν τῇ πο-
λυλογίᾳ αὐτῶν εἰσακουσθήσονται.
8 Μὴ οὖν ὁμοιωθῆτε αὐτοῖς· οἶδε γὰρ ὁ
Πατὴρ ὑμῶν ὧν χρείαν ἔχετε, πρὸ τοῦ ὑμᾶς
αἰτῆσαι αὐτόν.
9 Οὕτως οὖν προσεύχεσθε ὑμεῖς· ΠΑ'-
ΤΕΡ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς Οὐρανοῖς· ἁγιασθήτω
τὸ ὄνομά σου.
10 Ἐλθέτω ἡ Βασιλεία σου· γενηθήτω τὸ
θέλημά σου, ὡς ἐν Οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς.
11 Τὸν ἄρτον ἡμῶν τὸν ἐπιούσιον δὸς ἡμῖν
σήμερον.
12 Καὶ ἄφες ἡμῖν τὰ ὀφειλήματα ἡμῶν,
ὡς καὶ ἡμεῖς ἀφίεμεν τοῖς ὀφειλέταις ἡμῶν.
13 Καὶ μὴ εἰσενέγκῃς ἡμᾶς εἰς πειρασ-
μόν, ἀλλὰ ῥῦσαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ· ὅτι
σοῦ ἐστιν ἡ Βασιλεία, καὶ ἡ δύναμις, καὶ ἡ δό-
ξα εἰς τοὺς αἰῶνας· Ἀμήν.

14 Ἐὰν

14 Ἐὰν γὰρ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, ἀφήσει καὶ ὑμῖν ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ Οὐράνιος.

15 Ἐὰν δὲ μὴ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, οὐδὲ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ἀφήσει τὰ παραπτώματα ὑμῶν.

16 Ὅταν δὲ νηστεύητε, μὴ γίνεσθε ὥσπερ οἱ ὑποκριταί, σκυθρωποί· ἀφανίζουσι γὰρ τὰ πρόσωπα αὐτῶν, ὅπως φανῶσι τοῖς ἀνθρώποις νηστεύοντες· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἀπέχουσι τὸν μισθὸν αὐτῶν.

17 Σὺ δὲ νηστεύων, ἄλειψαί σου τὴν κεφαλήν, καὶ τὸ πρόσωπόν σου νίψαι·

18 Ὅπως μὴ φανῇς τοῖς ἀνθρώποις νηστεύων, ἀλλὰ τῷ Πατρί σου τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ· καὶ ὁ Πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ, ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.

19 Μὴ θησαυρίζετε ὑμῖν θησαυροὺς ἐπὶ τῆς γῆς, ὅπου σὴς καὶ βρῶσις ἀφανίζει, καὶ ὅπου κλέπται διορύσσουσι καὶ κλέπτουσι.

20 Θησαυρίζετε δὲ ὑμῖν θησαυροὺς ἐν οὐρανῷ, ὅπου οὔτε σὴς οὔτε βρῶσις ἀφανίζει, καὶ ὅπου κλέπται οὐ διορύσσουσιν, οὐδὲ κλέπτουσιν.

21 Ὅπου γάρ ἐστιν ὁ θησαυρὸς ὑμῶν, ἐκεῖ ἔσται καὶ ἡ καρδία ὑμῶν.

22 Ὁ λύχνος τοῦ σώματός ἐστιν ὁ ὀφθαλμός· ἐὰν οὖν ὁ ὀφθαλμός σου ἁπλοῦς ᾖ, ὅλον τὸ σῶμά σου φωτεινὸν ἔσται.

23 Ἐὰν δὲ ὁ ὀφθαλμός σου πονηρὸς ᾖ, ὅλον τὸ σῶμά σου σκοτεινὸν ἔσται· εἰ οὖν τὸ φῶς τὸ ἐν σοί, σκότος ἐστί, τὸ σκότος πόσον;

24 Οὐδεὶς δύναται δυσὶ κυρίοις δουλεύειν, ἢ γὰρ τὸν ἕνα μισήσει, καὶ τὸν ἕτερον ἀγαπήσει· ἢ ἑνὸς ἀνθέξεται, καὶ τοῦ ἑτέρου καταφρο-

νήσει. ὐ δύνασθε Θεῷ δουλεύειν καὶ μαμμωνᾷ.
25 Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, μὴ μεριμνᾶτε
τῇ ψυχῇ ὑμῶν, τί φάγητε, καὶ τί πίητε·
μηδὲ τῷ σώματι ὑμῶν, τί ἐνδύσησθε. ὐχὶ
ἡ ψυχὴ πλεῖόν ἐστι τῆς τροφῆς, καὶ τὸ σῶμα
τοῦ ἐνδύματος;
26 Ἐμβλέψατε εἰς τὰ πετεινὰ τοῦ Οὐρα-
νοῦ, ὅτι ὐ σπείρουσιν, ὐδὲ θερίζουσιν, οὐδὲ
συνάγουσιν εἰς ἀποθήκας, καὶ ὁ Πατὴρ ὑμῶν
ὁ Οὐράνιος τρέφει αὐτά· ὐχ ὑμεῖς μᾶλλον
διαφέρετε αὐτῶν;
27 Τίς δὲ ἐξ ὑμῶν μεριμνῶν δύναται
προσθεῖναι ἐπὶ τὴν ἡλικίαν αὐτοῦ πῆχυν ἕνα;
28 Καὶ περὶ ἐνδύματος τί μεριμνᾶτε;
καταμάθετε τὰ κρίνα τοῦ ἀγροῦ πῶς αὐξά-
νει· ὐ κοπιᾷ, ὐδὲ νήθει·
29 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι ὐδὲ Σολομὼν ἐν
πάσῃ τῇ δόξῃ αὐτοῦ περιεβάλετο ὡς ἓν τούτων.
30 Εἰ δὲ τὸν χόρτον τοῦ ἀγροῦ, σήμερον ὄν-
τα, καὶ αὔριον εἰς κλίβανον βαλλόμενον, ὁ
Θεὸς οὕτως ἀμφιέννυσιν, οὐ πολλῷ μᾶλλον
ὑμᾶς, ὀλιγόπιστοι;
31 Μὴ οὖν μεριμνήσητε, λέγοντες· Τί φά-
γωμεν, ἢ τί πίωμεν, ἢ τί περιβαλώμεθα;
32 Πάντα γὰρ ταῦτα τὰ ἔθνη ἐπιζητεῖ·
οἶδε γὰρ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ Οὐράνιος ὅτι χρή-
ζετε τούτων ἁπάντων.
33 Ζητεῖτε δὲ πρῶτον τὴν Βασιλείαν τοῦ
Θεοῦ, καὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, καὶ ταῦτα
πάντα προστεθήσεται ὑμῖν.
34 Μὴ οὖν μεριμνήσητε εἰς τὴν αὔριον·
ἡ γὰρ αὔριον μεριμνήσει τὰ ἑαυτῆς. ἀρκε-
τὸν τῇ ἡμέρᾳ ἡ κακία αὐτῆς.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ΄ΛΑΙΟΝ, Ζ΄. 7.

Ἐν ἑβδόμῳ δὲ μή τινα κρίνειν μάτην,
Καὶ μὴ τὰ σεπτὰ τοῖς ἀναξίοις δόμεν.
Θαῤῥοῦντας αἰτεῖν, καὶ στενὴν βαίνειν πύλην.
Ψευδοπροφητῶν φεύγεμεν κακουργίας·
Ἔργοις τε καὶ λόγοισι Πίστιν ἱδρύειν.

1 ΜΗ΄ κρίνετε, ἵνα μὴ κριθῆτε.
2 Ἐν ᾧ γὰρ κρίματι κρίνετε, κρι-
θήσεσθε· καὶ ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε, ἀντιμετρη-
θήσεται ὑμῖν.
3 Τί δὲ βλέπεις τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφ-
θαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου, τὴν δὲ ἐν τῷ ὀφθαλ-
μῷ δοκὸν οὐ κατανοεῖς;
4 Ἢ πῶς ἐρεῖς τῷ ἀδελφῷ σου· Ἄφες
ἐκβάλω τὸ κάρφος ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου·
καὶ ἰδοὺ ἡ δοκὸς ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου;
5 Ὑποκριτά, ἔκβαλε πρῶτον τὴν δοκὸν
ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου, καὶ τότε διαβλέψεις ἐκ-
βαλεῖν τὸ κάρφος ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ τοῦ ἀδελ-
φοῦ σου.
6 Μὴ δῶτε τὸ ἅγιον τοῖς κυσί, μηδὲ βά-
λητε τοὺς μαργαρίτας ὑμῶν ἔμπροσθεν τῶν χοί-
ρων· μήποτε καταπατήσωσιν αὐτοὺς ἐν τοῖς
ποσὶν αὐτῶν, καὶ στραφέντες ῥήξωσιν ὑμᾶς.
7 Αἰτεῖτε, καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ζητεῖτε,
καὶ εὑρήσετε· κρούετε, καὶ ἀνοιγήσεται ὑμῖν.
8 Πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶν λαμβάνει, καὶ ὁ ζη-
τῶν εὑρίσκει, καὶ τῷ κρούοντι ἀνοιγήσεται.
9 Ἢ τίς ἐστιν ἐξ ὑμῶν ἄνθρωπος, ὃν
ἐὰν αἰτήσῃ ὁ Υἱὸς αὐτοῦ ἄρτον, μὴ λίθον
ἐπιδώσει αὐτῷ;

10 Καὶ ἐὰν ἰχθὺν αἰτήσῃ, μὴ ὄφιν ἐπι-
δώσει αὐτῷ;
11 Εἰ οὖν ὑμεῖς, πονηροὶ ὄντες, οἴδατε
δόματα ἀγαθὰ διδόναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν,
πόσῳ μᾶλλον ὁ Πατὴρ ὑμῶν, ὁ ἐν τοῖς Οὐ-
ρανοῖς, δώσει ἀγαθὰ τοῖς αἰτοῦσιν αὐτόν;
12 Πάντα οὖν ὅσα ἂν θέλητε ἵνα ποιῶσιν
ὑμῖν οἱ ἄνθρωποι, οὕτω καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐ-
τοῖς· οὗτος γάρ ἐστιν ὁ νόμος, καὶ οἱ Προφῆται.
13 Εἰσέλθετε διὰ τῆς στενῆς πύλης· ὅτι
πλατεῖα ἡ πύλη, καὶ εὐρύχωρος ἡ ὁδὸς ἡ ἀ-
πάγουσα εἰς τὴν ἀπώλειαν, καὶ πολλοί εἰσιν
οἱ εἰσερχόμενοι δι᾽ αὐτῆς.
14 Ὅτι στενὴ ἡ πύλη, καὶ τεθλιμμένη ἡ
ὁδὸς ἡ ἀπάγουσα εἰς τὴν ζωὴν, καὶ ὀλίγοι
εἰσὶν οἱ εὑρίσκοντες αὐτήν.
15 Προσέχετε δὲ ἀπὸ τῶν Ψευδοπροφη-
τῶν, οἵτινες ἔρχονται πρὸς ὑμᾶς ἐν ἐνδύμασι
προβάτων, ἔσωθεν δέ εἰσι λύκοι ἅρπαγες.
16 Ἀπὸ τῶν καρπῶν αὐτῶν ἐπιγνώσεσθε
αὐτούς· μήτι συλλέγουσιν ἀπὸ ἀκανθῶν στα-
φυλὴν, ἢ ἀπὸ τριβόλων σῦκα;
17 Οὕτω πᾶν δένδρον ἀγαθὸν καρποὺς
καλοὺς ποιεῖ· τὸ δὲ σαπρὸν δένδρον καρποὺς
πονηροὺς ποιεῖ.
18 Οὐ δύναται δένδρον ἀγαθὸν καρποὺς
πονηροὺς ποιεῖν, οὐδὲ δένδρον σαπρὸν καρ-
ποὺς καλοὺς ποιεῖν.
19 Πᾶν δένδρον μὴ ποιοῦν καρπὸν καλὸν,
ἐκκόπτεται, καὶ εἰς πῦρ βάλλεται.
20 Ἄραγε ἀπὸ τῶν καρπῶν αὐτῶν ἐπι-
γνώσεσθε αὐτούς.
21 Οὐ πᾶς ὁ λέγων μοι, Κύριε Κύριε,
εἰσελεύσεται εἰς τὴν Βασιλείαν τῶν Οὐρα-
νῶν.

νῶν. ἀλλ' ὁ ποιῶν τὸ θέλημα τȣ̃ Πατρός
μȣ τȣ̃ ἐν Οὐρανοῖς.
22 Πολλοὶ ἐρȣ̃σί μοι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ· Κύριε Κύριε, ȣ̓ τῷ σῷ ὀνόματι προεφητεύσαμεν, καὶ τῷ σῷ ὀνόματι δαιμόνια ἐξεβάλομεν, καὶ τῷ σῷ ὀνόματι δυνάμεις πολλὰς ἐποιήσαμεν;
23 Καὶ τότε ὁμολογήσω αὐτοῖς, ὅτι οὐδέποτε ἔγνων ὑμᾶς· ἀποχωρεῖτε ἀπ' ἐμȣ̃ οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν.
24 Πᾶς ȣ̃ν ὅςις ἀκȣ́ει μȣ τȣ̀ς λόγȣς τȣ́τȣς, καὶ ποιεῖ αὐτȣ̀ς, ὁμοιώσω αὐτὸν ἀνδρὶ φρονίμῳ, ὅςις ᾠκοδόμησε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἐπὶ τὴν πέτραν.
25 Καὶ κατέβη ἡ βροχὴ, καὶ ἦλθον οἱ ποταμοὶ, καὶ ἔπνευσαν οἱ ἄνεμοι, καὶ προσέπεσον τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, καὶ ȣ̓κ ἔπεσε· τεθεμελίωτο γὰρ ἐπὶ τὴν πέτραν.
26 Καὶ πᾶς ὁ ἀκȣ́ων μȣ τȣ̀ς λόγȣς τούτȣς, καὶ μὴ ποιῶν αὐτȣ̀ς, ὁμοιωθήσεται ἀνδρὶ μωρῷ, ὅςις ᾠκοδόμησε τὴν οἰκίαν αὐτȣ̃ ἐπὶ τὴν ἄμμον.
27 Καὶ κατέβη ἡ βροχὴ, καὶ ἦλθον οἱ ποταμοὶ, καὶ ἔπνευσαν οἱ ἄνεμοι, καὶ προσέκοψαν τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἔπεσε· καὶ ἦν ἡ πτῶσις αὐτῆς μεγάλη.
28 Καὶ ἐγένετο ὅτε συνετέλεσεν ὁ Ἰησȣ̃ς τȣ̀ς λόγȣς τȣ́τȣς, ἐξεπλήσσοντο οἱ ὄχλοι ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτȣ̃.
29 Ἦν γὰρ διδάσκων αὐτȣ̀ς ὡς ἐξȣσίαν ἔχων, καὶ ȣ̓χ ὡς οἱ Γραμματεῖς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

Λέπραν καθάρας, πίστιν αἰνεῖ δ' ὀγδόῳ
Κεντυρίωνος. πενθερὰν σώζει Πέτρου.
Κλύδωνα παύει, φῶτε λυσσῶται δύο.
Ἀδμῆτας εἰς χοίρους τε δαίμονας τρέπει.

1 ΚΑταβάντι δὲ αὐτῷ ἀπὸ τοῦ ὄρους,
ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί.
2 Καὶ ἰδοὺ λεπρὸς ἐλθὼν προσεκύνει αὐ-
τῷ, λέγων· Κύριε, ἐὰν θέλῃς, δύνασαί
με καθαρίσαι.
3 Καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα, ἥψατο αὐτοῦ ὁ
Ἰησοῦς, λέγων· Θέλω, καθαρίσθητι. Καὶ
εὐθέως ἐκαθαρίσθη αὐτοῦ ἡ λέπρα.
4 Καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅρα μηδε-
νὶ εἴπῃς· ἀλλὰ ὕπαγε, σεαυτὸν δεῖξον τῷ ἱε-
ρεῖ, καὶ προσένεγκε τὸ δῶρον ὃ προσέταξε Μω-
σῆς, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.
5 Εἰσελθόντι δὲ τῷ Ἰησοῦ εἰς Καπερ-
ναοὺμ, προσῆλθεν αὐτῷ ἑκατόνταρχος πα-
ρακαλῶν αὐτόν,
6 Καὶ λέγων· Κύριε, ὁ παῖς μου βέβλη-
ται ἐν τῇ οἰκίᾳ Παραλυτικὸς, δεινῶς βα-
σανιζόμενος.
7 Καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ ἐλ-
θὼν θεραπεύσω αὐτόν.
8 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἑκατόνταρχος, ἔφη·
Κύριε, οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς ἵνα μου ὑπὸ τὴν στέ-
γην εἰσέλθῃς· ἀλλὰ μόνον εἰπὲ λόγον, καὶ
ἰαθήσεται ὁ παῖς μου.
9 Καὶ γὰρ ἐγὼ ἄνθρωπός εἰμι ὑπὸ ἐξου-
σίαν, ἔχων ὑπ' ἐμαυτὸν στρατιώτας· καὶ λέ-

γω

γω τούτῳ, πορεύθητι, καὶ πορεύεται· καὶ ἄλλῳ· ἔρχου, καὶ ἔρχεται· καὶ τῷ δούλῳ μου, ποίησον τοῦτο, καὶ ποιεῖ.

10 Ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς, ἐθαύμασε, καὶ εἶπε τοῖς ἀκολουθοῦσιν· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐδὲ ἐν τῷ Ἰσραὴλ τοσαύτην πίστιν εὗρον.

11 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ δυσμῶν ἥξουσι, καὶ ἀνακλιθήσονται μετὰ Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ ἐν τῇ Βασιλείᾳ τῶν Οὐρανῶν.

12 Οἱ δὲ Υἱοὶ τῆς Βασιλείας ἐκβληθήσονται εἰς τὸ σκότος τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

13 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τῷ ἑκατοντάρχῳ· ὕπαγε, καὶ ὡς ἐπίστευσας, γενηθήτω σοι. Καὶ ἰάθη ὁ παῖς αὐτοῦ ἐν τῇ ὥρᾳ ἐκείνῃ.

14 Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν οἰκίαν Πέτρου, εἶδε τὴν πενθερὰν αὐτοῦ βεβλημένην καὶ πυρέσσουσαν.

15 Καὶ ἥψατο τῆς χειρὸς αὐτῆς, καὶ ἀφῆκεν αὐτὴν ὁ πυρετός· καὶ ἠγέρθη, καὶ διηκόνει αὐτοῖς.

16 Ὀψίας δὲ γενομένης προσήνεγκαν αὐτῷ δαιμονιζομένους πολλούς· καὶ ἐξέβαλε τὰ πνεύματα λόγῳ, καὶ πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας ἐθεράπευσεν.

17 Ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Αὐτὸς τὰς ἀσθενείας ἡμῶν ἔλαβε, καὶ τὰς νόσους ἐβάστασεν.

18 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς πολλοὺς ὄχλους περὶ αὐτὸν, ἐκέλευσεν ἀπελθεῖν εἰς τὸ πέραν.

19 Καὶ προσελθὼν εἷς Γραμματεὺς, εἶπεν αὐτῷ· Διδάσκαλε, ἀκολουθήσω σοι ὅπου ἐὰν ἀπέρχῃ.

20 Καὶ

20 Καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Αἱ ἀλώ-
πεκες φωλεοὺς ἔχουσι, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ Οὐρα-
νοῦ κατασκηνώσεις· ὁ δὲ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
οὐκ ἔχει ποῦ τὴν κεφαλὴν κλίνῃ.
21 Ἕτερος δὲ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶπεν
αὐτῷ· Κύριε, ἐπίτρεψόν μοι πρῶτον ἀπελ-
θεῖν, καὶ θάψαι τὸν Πατέρα μου.
22 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἀκολούθει
μοι, καὶ ἄφες τοὺς νεκροὺς θάψαι τοὺς ἑαυτῶν νεκρούς.
23 Καὶ ἐμβάντι αὐτῷ εἰς τὸ πλοῖον,
ἠκολούθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.
24 Καὶ ἰδοὺ, σεισμὸς μέγας ἐγένετο ἐν
τῇ θαλάσσῃ, ὥστε τὸ πλοῖον καλύπτεσθαι
ὑπὸ τῶν κυμάτων, αὐτὸς δὲ ἐκάθευδε.
25 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
ἤγειραν αὐτὸν, λέγοντες· Κύριε, σῶσον ἡ-
μᾶς, ἀπολλύμεθα.
26 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τί δειλοί ἐστε, ὀ-
λιγόπιστοι; Τότε ἐγερθεὶς ἐπετίμησε τοῖς
ἀνέμοις καὶ τῇ θαλάσσῃ· καὶ ἐγένετο γαλήνη
μεγάλη.
27 Οἱ δὲ ἄνθρωποι ἐθαύμασαν, λέγον-
τες· Ποταπός ἐστιν οὗτος, ὅτι καὶ οἱ ἄνεμοι,
καὶ ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν αὐτῷ;
28 Καὶ ἐλθόντι αὐτῷ εἰς τὸ πέραν εἰς τὴν
χώραν τῶν Γεργεσηνῶν, ὑπήντησαν αὐτῷ
δύο δαιμονιζόμενοι, ἐκ τῶν μνημείων ἐξερ-
χόμενοι, χαλεποὶ λίαν, ὥστε μὴ ἰσχύειν
τινὰ παρελθεῖν διὰ τῆς ὁδοῦ ἐκείνης.
29 Καὶ ἰδοὺ ἔκραξαν, λέγοντες· Τί ἡμῖν
καὶ σοὶ, Ἰησοῦ Υἱὲ τοῦ Θεοῦ; ἦλθες ὧδε πρὸ
καιροῦ βασανίσαι ἡμᾶς;
30 Ἦν δὲ μακρὰν ἀπ' αὐτῶν ἀγέλη χοί-
ρων πολλῶν βοσκομένη.

31 Οἱ δὲ δαίμονες παρεκάλουν αὐτὸν, λέγοντες· Εἰ ἐκβάλλεις ἡμᾶς, ἐπίτρεψον ἡμῖν ἀπελθεῖν εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων.
32 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὑπάγετε. Οἱ δὲ ἐξελθόντες ἀπῆλθον εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων. Καὶ ἰδοὺ, ὥρμησε πᾶσα ἡ ἀγέλη τῶν χοίρων κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἀπέθανον ἐν τοῖς ὕδασιν.
33 Οἱ δὲ βόσκοντες ἔφυγον. καὶ ἀπελθόντες εἰς τὴν πόλιν, ἀπήγγειλαν πάντα, καὶ τὰ τῶν δαιμονιζομένων.
34 Καὶ ἰδοὺ, πᾶσα ἡ πόλις ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν τῷ Ἰησοῦ· καὶ ἰδόντες αὐτὸν, παρεκάλεσαν ὅπως μεταβῇ ἀπὸ τῶν ὁρίων αὐτῶν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Θ'. 9.

Διττὴν δ' ἀλιτροῦ ἐννάτῳ σφίγγει λύσιν·
Ματθαῖον ἕλκει, σὺν τελώναις ἐσθίει·
Νήστεις ἐλέγχει, ἐκδικεῖ δ' Ἀποστόλους.
Κόρην ἀνιστᾷ· ῥοῦν συνιστᾷ κρασπέδῳ.
Δύο τυφλοὺς φώτισε· δαιμονῶντά τε
Κωφὸν στομώσας, συκοφαντεῖται γόης.

1 ΚΑὶ ἐμβὰς εἰς τὸ πλοῖον, διεπέρασε, καὶ ἦλθεν εἰς τὴν ἰδίαν πόλιν.
2 Καὶ ἰδοὺ, προσέφερον αὐτῷ Παραλυτικὸν ἐπὶ κλίνης βεβλημένον· καὶ ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς τὴν πίστιν αὐτῶν, εἶπε τῷ Παραλυτικῷ: Θάρσει τέκνον, ἀφέονταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου.
3 Καὶ ἰδοὺ, τινὲς τῶν Γραμματέων εἶπον ἐν ἑαυτοῖς· Οὗτος βλασφημεῖ.
4 Καὶ ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς τὰς ἐνθυμήσεις αὐτῶν,

των, εἶπεν· Ἵνα τί ὑμεῖς ἐνθυμεῖσθε πονηρὰ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;

5 Τί γάρ ἐστιν εὐκοπώτερον, εἰπεῖν· Ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι· ἢ εἰπεῖν· Ἔγειραι καὶ περιπάτει;

6 Ἵνα δὲ εἰδῆτε, ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφιέναι ἁμαρτίας· (τότε λέγει τῷ Παραλυτικῷ·) Ἐγερθεὶς ἆρόν σου τὴν κλίνην, καὶ ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου.

7 Καὶ ἐγερθεὶς, ἀπῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ.

8 Ἰδόντες δὲ οἱ ὄχλοι ἐθαύμασαν, καὶ ἐδόξασαν τὸν Θεὸν, τὸν δόντα ἐξουσίαν τοιαύτην τοῖς ἀνθρώποις.

9 Καὶ παράγων ὁ Ἰησοῦς ἐκεῖθεν, εἶδεν ἄνθρωπον καθήμενον ἐπὶ τὸ τελώνιον, Ματθαῖον λεγόμενον· καὶ λέγει αὐτῷ· Ἀκολούθει μοι. Καὶ ἀναστὰς, ἠκολούθησεν αὐτῷ.

10 Καὶ ἐγένετο αὐτοῦ ἀνακειμένου ἐν τῇ οἰκίᾳ, καὶ ἰδοὺ, πολλοὶ τελῶναι καὶ ἁμαρτωλοὶ ἐλθόντες, συνανέκειντο τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ.

11 Καὶ ἰδόντες οἱ Φαρισαῖοι, εἶπον τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Διατί μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐσθίει ὁ διδάσκαλος ὑμῶν;

12 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀκούσας, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ χρείαν ἔχουσιν οἱ ἰσχύοντες ἰατροῦ, ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες.

13 Πορευθέντες δὲ μάθετε τί ἐστιν· Ἔλεον θέλω, καὶ οὐ θυσίαν· οὐ γὰρ ἦλθον καλέσαι δικαίους, ἀλλ' ἁμαρτωλοὺς εἰς μετάνοιαν.

14 Τότε προσέρχονται αὐτῷ οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου, λέγοντες· Διατὶ ἡμεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι

ρισαῖοι νηστεύομεν πολλὰ, οἱ δὲ μαθηταί σου
οὐ νηστεύουσι;

15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ δύ-
νανται οἱ Υἱοὶ τοῦ νυμφῶνος πενθεῖν, ἐφ' ὅ-
σον μετ' αὐτῶν ἐστιν ὁ νυμφίος; ἐλεύσονται δὲ
ἡμέραι ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ' αὐτῶν ὁ νυμφίος,
καὶ τότε νηστεύσουσιν.

16 Οὐδεὶς δὲ ἐπιβάλλει ἐπίβλημα ῥά-
κους ἀγνάφου ἐπὶ ἱματίῳ παλαιῷ· αἴρει γὰρ
τὸ πλήρωμα αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ἱματίου, καὶ χεῖ-
ρον σχίσμα γίνεται.

17 Οὐδὲ βάλλουσιν οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς
παλαιούς· εἰ δὲ μήγε, ῥήγνυνται οἱ ἀσκοὶ,
καὶ ὁ οἶνος ἐκχεῖται, καὶ οἱ ἀσκοὶ ἀπολοῦνται·
ἀλλὰ βάλλουσιν οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς καινοὺς,
καὶ ἀμφότεροι συντηροῦνται.

18 Ταῦτα αὐτοῦ λαλοῦντος αὐτοῖς, ἰδοὺ,
ἄρχων ἐλθὼν προσεκύνει αὐτῷ, λέγων· Ὅτι
ἡ θυγάτηρ μου ἄρτι ἐτελεύτησεν· ἀλλὰ ἐλθὼν,
ἐπίθες τὴν χεῖρά σου ἐπ' αὐτὴν, καὶ ζήσεται.

19 Καὶ ἐγερθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἠκολούθησεν αὐ-
τῷ, καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

20 (Καὶ ἰδοὺ, γυνὴ αἱμοῤῥοοῦσα δώδεκα
ἔτη, προσελθοῦσα ὄπισθεν, ἥψατο τοῦ κρα-
σπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ·

21 Ἔλεγε γὰρ ἐν ἑαυτῇ· Ἐὰν μόνον ἅ-
ψωμαι τοῦ ἱματίου αὐτοῦ, σωθήσομαι.

22 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐπιστραφεὶς, καὶ ἰδὼν αὐ-
τὴν, εἶπε· Θάρσει θύγατερ· ἡ πίστις σου
σέσωκέ σε. Καὶ ἐσώθη ἡ γυνὴ ἀπὸ τῆς ὥ-
ρας ἐκείνης.)

23 Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν οἰκίαν
τοῦ ἄρχοντος, καὶ ἰδὼν τοὺς αὐλητὰς, καὶ τὸν
ὄχλον θορυβούμενον,

24 Λέ-

24 Λέγει αὐτοῖς· Ἀναχωρεῖτε· οὐ γὰρ ἀπέθανε τὸ κοράσιον, ἀλλὰ καθεύδει. Καὶ κατεγέλων αὐτοῦ.

25 Ὅτε δὲ ἐξεβλήθη ὁ ὄχλος, εἰσελθὼν ἐκράτησε τῆς χειρὸς αὐτῆς· καὶ ἠγέρθη τὸ κοράσιον.

26 Καὶ ἐξῆλθεν ἡ φήμη αὕτη εἰς ὅλην τὴν γῆν ἐκείνην.

27 Καὶ παράγοντι ἐκεῖθεν τῷ Ἰησοῦ, ἠκολούθησαν αὐτῷ δύο τυφλοὶ, κράζοντες, καὶ λέγοντες· Ἐλέησον ἡμᾶς Υἱὲ Δαβίδ.

28 Ἐλθόντι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, προσῆλθον αὐτῷ οἱ τυφλοὶ, καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πιστεύετε ὅτι δύναμαι τοῦτο ποιῆσαι; Λέγουσιν αὐτῷ· Ναὶ Κύριε.

29 Τότε ἥψατο τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν, λέγων· Κατὰ τὴν πίστιν ὑμῶν γενηθήτω ὑμῖν.

30 Καὶ ἀνεῴχθησαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοί· καὶ ἐνεβριμήσατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Ὁρᾶτε μηδεὶς γινωσκέτω.

31 Οἱ δὲ ἐξελθόντες διεφήμισαν αὐτὸν ἐν ὅλῃ τῇ γῇ ἐκείνῃ.

12 Αὐτῶν δὲ ἐξερχομένων, ἰδοὺ προσήνεγκαν αὐτῷ ἄνθρωπον κωφὸν δαιμονιζόμενον.

33 Καὶ ἐκβληθέντος τοῦ δαιμονίου, ἐλάλησεν ὁ κωφός· καὶ ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι, λέγοντες· Ὅτι οὐδέποτε ἐφάνη οὕτως ἐν τῷ Ἰσραήλ.

34 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἔλεγον· Ἐν τῷ ἄρχοντι τῶν δαιμονίων ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια.

35 Καὶ περιῆγεν ὁ Ἰησοῦς τὰς πόλεις πάσας, καὶ τὰς κώμας, διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν, καὶ κηρύσσων τὸ Εὐαγγέλιον τῆς Βασιλείας, καὶ θεραπεύων πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ.

36 Ἰδὼν δὲ τοὺς ὄχλους, ἐσπλαγχνίσθη
περὶ αὐτῶν, ὅτι ἦσαν ἐκλελυμένοι καὶ ἐῤῥιμ-
μένοι ὡσεὶ πρόβατα μὴ ἔχοντα ποιμένα.
37 Τότε λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ. Ὁ
μὲν θερισμὸς πολὺς, οἱ δὲ ἐργάται ὀλίγοι.
38 Δεήθητε οὖν τοῦ Κυρίου τοῦ θερισμοῦ, ὅπως
ἐκβάλλῃ ἐργάτας εἰς τὸν θερισμὸν αὐτοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ι'. 10.

Τῷ δὶς δὲ πέμπτῳ πρὸς τὸ κηρύττειν ἀπο
Στέλλει Μαθητὰς, νουθετήσας τὸν λόγον.

1 ΚΑὶ προσκαλεσάμενος τοὺς δώδεκα
μαθητὰς αὐτοῦ, ἔδωκεν αὐτοῖς
ἐξουσίαν κατὰ Πνευμάτων ἀκαθάρτων, ὥστε
ἐκβάλλειν αὐτὰ, καὶ θεραπεύειν πᾶσαν νό-
σον καὶ πᾶσαν μαλακίαν.
2 Τῶν δὲ δώδεκα Ἀποστόλων τὰ ὀνό-
ματά ἐστι ταῦτα· Πρῶτος, Σίμων ὁ λεγό-
μενος Πέτρος, καὶ Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς αὐ-
τοῦ. Ἰάκωβος ὁ τοῦ Ζεβεδαίου, καὶ Ἰωάννης ὁ
ἀδελφὸς αὐτοῦ.
3 Φίλιππος, καὶ Βαρθολομαῖος· Θωμᾶς,
καὶ Ματθαῖος ὁ τελώνης. Ἰάκωβος ὁ τοῦ Ἀλ-
φαίου, καὶ Λεββαῖος ὁ ἐπικληθεὶς Θαδδαῖος.
4 Σίμων ὁ Κανανίτης, καὶ Ἰούδας ὁ Ἰσ-
καριώτης, ὁ καὶ παραδοὺς αὐτόν.
5 Τούτους τοὺς δώδεκα ἀπέστειλεν ὁ Ἰησοῦς,
παραγγείλας αὐτοῖς, λέγων· Εἰς ὁδὸν ἐθ-
νῶν μὴ ἀπέλθητε, καὶ εἰς πόλιν Σαμαρει-
τῶν μὴ εἰσέλθητε.
6 Πορεύεσθε δὲ μᾶλλον πρὸς τὰ πρόβατα
τὰ ἀπολωλότα οἴκου Ἰσραήλ.

7 Πορευόμενοι δὲ κηρύσσετε, λέγοντες·
Ὅτι ἤγγικεν ἡ Βασιλεία τῶν Οὐρανῶν.
8 Ἀσθενοῦντας θεραπεύετε, λεπροὺς καθα-
ρίζετε, νεκροὺς ἐγείρετε, δαιμόνια ἐκβάλλε-
τε. δωρεὰν ἐλάβετε, δωρεὰν δότε.
9 Μὴ κτήσησθε χρυσὸν, μηδὲ ἄργυρον,
μηδὲ χαλκὸν εἰς τὰς ζώνας ὑμῶν.
10 Μὴ πήραν εἰς ὁδὸν, μηδὲ δύο χιτῶ-
νας, μηδὲ ὑποδήματα, μηδὲ ῥάβδους· ἄξιος
γὰρ ὁ ἐργάτης τῆς τροφῆς αὐτοῦ ἐστιν.
11 Εἰς ἣν δ' ἂν πόλιν ἢ κώμην εἰσέλθη-
τε, ἐξετάσατε τίς ἐν αὐτῇ ἄξιός ἐστι. κἀκεῖ
μείνατε ἕως ἂν ἐξέλθητε.
12 Εἰσερχόμενοι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, ἀσπά-
σασθε αὐτήν.
13 Καὶ ἐὰν μὲν ᾖ ἡ οἰκία ἀξία, ἐλθέτω
ἡ εἰρήνη ὑμῶν ἐπ' αὐτήν· ἐὰν δὲ μὴ ᾖ ἀξία,
ἡ εἰρήνη ὑμῶν πρὸς ὑμᾶς ἐπιστραφήτω.
14 Καὶ ὃς ἐὰν μὴ δέξηται ὑμᾶς, μηδὲ ἀ-
κούσῃ τοὺς λόγους ὑμῶν, ἐξερχόμενοι τῆς οἰ-
κίας ἢ τῆς πόλεως ἐκείνης, ἐκτινάξατε τὸν
κονιορτὸν τῶν ποδῶν ὑμῶν.
15 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀνεκτότερον ἔσται
γῇ Σοδόμων καὶ Γομόῤῥων ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως,
ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ.
16 Ἰδοὺ, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς ὡς πρόβα-
τα ἐν μέσῳ λύκων· γίνεσθε οὖν φρόνιμοι ὡς οἱ
ὄφεις, καὶ ἀκέραιοι ὡς αἱ περιστεραί.
17 Προσέχετε δὲ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων·
παραδώσουσι γὰρ ὑμᾶς εἰς συνέδρια, καὶ ἐν
ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν μαστιγώσουσιν ὑμᾶς.
18 Καὶ ἐπὶ ἡγεμόνας δὲ καὶ Βασιλεῖς
ἀχθήσεσθε ἕνεκεν ἐμοῦ, εἰς μαρτύριον αὐ-
τοῖς καὶ τοῖς ἔθνεσιν.

19 Ο'ταν δὲ παραδιδῶσιν ὑμᾶς, μὴ με-
ριμνήσητε πῶς ἢ τί λαλήσητε· δοθήσεται
γὰρ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ τί λαλήσετε.
20 Οὐ γὰρ ὑμεῖς ἐστε οἱ λαλοῦντες, ἀλλὰ
τὸ Πνεῦμα τοῦ Πατρὸς ὑμῶν, τὸ λαλοῦν ἐν ὑμῖν.
21 Παραδώσει δὲ ἀδελφὸς ἀδελφὸν εἰς
θάνατον, καὶ Πατὴρ τέκνον· καὶ ἐπαναστήσον-
ται τέκνα ἐπὶ γονεῖς, καὶ θανατώσουσιν αὐτούς.
22 Καὶ ἔσεσθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων διὰ
τὸ ὄνομά μου· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος,
οὗτος σωθήσεται.
23 Ο'ταν δὲ διώκωσιν ὑμᾶς ἐν τῇ πόλει
ταύτῃ, φεύγετε εἰς τὴν ἄλλην. Α'μὴν γὰρ
λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ τελέσητε τὰς πόλεις τοῦ
Ι'σραὴλ ἕως ἂν ἔλθῃ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.
24 Οὐκ ἔστι μαθητὴς ὑπὲρ τὸν διδάσκα-
λον, οὐδὲ δοῦλος ὑπὲρ τὸν Κύριον αὐτοῦ.
25 Α'ρκετὸν τῷ μαθητῇ ἵνα γένηται ὡς ὁ
διδάσκαλος αὐτοῦ, καὶ ὁ δοῦλος ὡς ὁ Κύριος
αὐτοῦ· εἰ τὸν οἰκοδεσπότην Βεελζεβοὺλ ἐκά-
λεσαν, πόσῳ μᾶλλον τοὺς οἰκιακοὺς αὐτοῦ;
26 Μὴ οὖν φοβηθῆτε αὐτούς· οὐδὲν γάρ ἐστι
κεκαλυμμένον, ὃ οὐκ ἀποκαλυφθήσεται, καὶ
κρυπτὸν, ὃ οὐ γνωσθήσεται.
27 Ο' λέγω ὑμῖν ἐν τῇ σκοτίᾳ, εἴπα-
τε ἐν τῷ φωτί. καὶ ὃ εἰς τὸ οὖς ἀκούετε, κη-
ρύξατε ἐπὶ τῶν δωμάτων.
28 Καὶ μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ τῶν ἀποκτεινόν-
των τὸ σῶμα, τὴν δὲ ψυχὴν μὴ δυναμένων
ἀποκτεῖναι· φοβήθητε δὲ μᾶλλον τὸν δυνά-
μενον καὶ ψυχὴν καὶ σῶμα ἀπολέσαι ἐν γεέννῃ.
29 Οὐχὶ δύο στρουθία ἀσσαρίου πωλεῖται;
καὶ ἓν ἐξ αὐτῶν οὐ πεσεῖται ἐπὶ τὴν γῆν,
ἄνευ τοῦ Πατρὸς ὑμῶν;

30 Υ῾μῶν δὲ καὶ αἱ τρίχες τῆς κεφαλῆς πᾶσαι ἠριθμημέναι εἰσί.

31 Μὴ οὖν φοβηθῆτε· πολλῶν στρουθίων διαφέρετε ὑμεῖς.

32 Πᾶς οὖν ὅστις ὁμολογήσει ἐν ἐμοὶ ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, ὁμολογήσω κἀγὼ ἐν αὐτῷ ἔμπροσθεν τοῦ Πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς.

33 Ο῟στις δ᾽ ἂν ἀρνήσηταί με ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, ἀρνήσομαι αὐτὸν κἀγὼ ἔμπροσθεν τοῦ Πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς.

34 Μὴ νομίσητε ὅτι ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην ἐπὶ τὴν γῆν· οὐκ ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην, ἀλλὰ μάχαιραν.

35 Ἦλθον γὰρ διχάσαι ἄνθρωπον κατὰ τοῦ Πατρὸς αὐτοῦ, καὶ θυγατέρα κατὰ τῆς Μητρὸς αὐτῆς, καὶ νύμφην κατὰ τῆς πενθερᾶς αὐτῆς.

36 Καὶ ἐχθροὶ τοῦ ἀνθρώπου, οἱ οἰκιακοὶ αὐτοῦ.

37 Ο῾ φιλῶν Πατέρα ἢ Μητέρα ὑπὲρ ἐμὲ, οὐκ ἔστι μου ἄξιος· καὶ ὁ φιλῶν Υἱὸν ἢ θυγατέρα ὑπὲρ ἐμὲ, οὐκ ἔστι μου ἄξιος.

38 Καὶ ὃς οὐ λαμβάνει τὸν Σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἀκολουθεῖ ὀπίσω μου, οὐκ ἔστι μου ἄξιος.

39 Ο῾ εὑρὼν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ἀπολέσει αὐτήν· καὶ ὁ ἀπολέσας τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἕνεκεν ἐμοῦ, εὑρήσει αὐτήν.

40 Ο῾ δεχόμενος ὑμᾶς, ἐμὲ δέχεται· καὶ ὁ ἐμὲ δεχόμενος, δέχεται τὸν ἀποστείλαντά με.

41 Ο῾ δεχόμενος Προφήτην εἰς ὄνομα Προφήτου, μισθὸν Προφήτου λήψεται· καὶ ὁ δεχόμενος δίκαιον εἰς ὄνομα δικαίου, μισθὸν δικαίου λήψεται.

42 Καὶ ὃς ἐὰν ποτίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν τού-
των ποτήριον ψυχροῦ μόνον, εἰς ὄνομα μα-
θητοῦ, Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀπολέσῃ
τὸν μισθὸν αὐτοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

Τὸ πρὸς δέκα πρῶτόν γε πρεσβείαν ἔχει
Πρώτου Προφητῶν, καὶ ζυγὸν χρυσοῦ νόμου.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς
διατάσσων τοῖς δώδεκα μαθηταῖς
αὐτοῦ, μετέβη ἐκεῖθεν, τοῦ διδάσκειν καὶ κη-
ρύσσειν ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτῶν.
2 Ὁ δὲ Ἰωάννης ἀκούσας ἐν τῷ δεσμω-
τηρίῳ τὰ ἔργα τοῦ Χριστοῦ, πέμψας δύο τῶν
μαθητῶν αὐτοῦ,
3 Εἶπεν αὐτῷ· Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ
ἕτερον προσδοκῶμεν;
4 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς·
Πορευθέντες ἀπαγγείλατε Ἰωάννῃ ἃ ἀκού-
ετε καὶ βλέπετε.
5 Τυφλοὶ ἀναβλέπουσι, καὶ χωλοὶ περι-
πατοῦσι, λεπροὶ καθαρίζονται, καὶ κωφοὶ
ἀκούουσι, νεκροὶ ἐγείρονται, καὶ πτωχοὶ εὐαγ-
γελίζονται.
6 Καὶ μακάριός ἐστιν ὃς ἐὰν μὴ σκαν-
δαλισθῇ ἐν ἐμοί.
7 Τούτων δὲ πορευομένων, ἤρξατο ὁ Ἰη-
σοῦς λέγειν τοῖς ὄχλοις περὶ Ἰωάννου· Τί
ἐξήλθετε εἰς τὴν ἔρημον θεάσασθαι; κά-
λαμον ὑπὸ ἀνέμου σαλευόμενον;
8 Ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν; ἄνθρωπον ἐν
μαλακοῖς ἱματίοις ἠμφιεσμένον; ἰδοὺ, οἱ

τὰ μαλακὰ φοροῦντες, ἐν τοῖς οἴκοις τῶν βα-
σιλέων εἰσίν.
9 Ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν; Προφήτην;
ναί, λέγω ὑμῖν, καὶ περισσότερον Προφήτου.
10 Οὗτος γάρ ἐστι περὶ οὗ γέγραπται·
Ἰδού, ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρὸ
προσώπου σου, ὃς κατασκευάσει τὴν ὁδόν σου
ἔμπροσθέν σου.
11 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐκ ἐγήγερται ἐν
γεννητοῖς γυναικῶν μείζων Ἰωάννου τοῦ Βα-
πτιστοῦ· ὁ δὲ μικρότερος ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν
οὐρανῶν, μείζων αὐτοῦ ἐστιν.
12 Ἀπὸ δὲ τῶν ἡμερῶν Ἰωάννου τοῦ Βα-
πτιστοῦ ἕως ἄρτι ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν βιά-
ζεται, καὶ βιασταὶ ἁρπάζουσιν αὐτήν.
13 Πάντες γὰρ οἱ Προφῆται καὶ ὁ νόμος,
ἕως Ἰωάννου προεφήτευσαν.
14 Καὶ εἰ θέλετε δέξασθαι, αὐτός ἐστιν
Ἠλίας ὁ μέλλων ἔρχεσθαι.
15 Ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
16 Τίνι δὲ ὁμοιώσω τὴν γενεὰν ταύτην;
ὁμοία ἐστὶ παιδαρίοις ἐν ἀγοραῖς καθημέ-
νοις, καὶ προσφωνοῦσι τοῖς ἑταίροις αὐτῶν.
17 Καὶ λέγουσιν· Ηὐλήσαμεν ὑμῖν, καὶ
οὐκ ὠρχήσασθε· ἐθρηνήσαμεν ὑμῖν, καὶ οὐκ
ἐκόψασθε.
18 Ἦλθε γὰρ Ἰωάννης μήτε ἐσθίων,
μήτε πίνων, καὶ λέγουσι· Δαιμόνιον ἔχει.
19 Ἦλθεν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐσθίων καὶ
πίνων, καὶ λέγουσιν· Ἰδοὺ ἄνθρωπος φάγος
καὶ οἰνοπότης, τελωνῶν φίλος καὶ ἁμαρτω-
λῶν, καὶ ἐδικαιώθη ἡ σοφία ἀπὸ τῶν τέ-
κνων αὐτῆς.
20 Τότε ἤρξατο ὀνειδίζειν τὰς πόλεις,

ἐν αἷς ἐγένοντο αἱ πλεῖσαι δυνάμεις αὐτȣ̃, ὅτι ȣ̓ μετενόησαν.

21 Οὐαί σοι Χοραζὶν, ȣ̓αί σοι Βηθσαϊδαὶ, ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ ϗ Σιδῶνι ἐγένοντο αἱ δυνάμεις αἱ γενόμεναι ἐν ὑμῖν, πάλαι ἂν ἐν σάκκῳ ϗ σποδῷ μετενόησαν.

22 Πλὴν λέγω ὑμῖν Τύρῳ ϗ Σιδῶνι ἀνεκτότερον ἔσαι ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ ὑμῖν.

23 Καὶ σὺ Καπερναȣ̀μ, ἡ ἕως τȣ̃ ȣ̓ρανȣ̃ ὑψωθεῖσα, ἕως ᾅδȣ καταβιβασθήσῃ· ὅτι εἰ ἐν Σοδόμοις ἐγένοντο αἱ δυνάμεις αἱ γενόμεναι ἐν σοὶ, ἔμειναν ἂν μέχρι τῆς σήμερον.

24 Πλὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι γῇ Σοδόμων ἀνεκτότερον ἔσαι ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ σοί.

25 Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησȣ̃ς, εἶπεν· Ἐξομολογȣ̃μαί σοι, Πάτερ, Κύριε τȣ̃ ȣ̓ρανȣ̃ ϗ τῆς γῆς, ὅτι ἀπέκρυψας ταῦτα ἀπὸ σοφῶν ϗ συνετῶν, ϗ ἀπεκάλυψας αὐτὰ νηπίοις.

26 Ναὶ ὁ Πατὴρ, ὅτι ȣ̓́τως ἐγένετο εὐδοκία ἔμπροσθέν σȣ.

27 Πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τȣ̃ Πατρός μȣ· ϗ ȣ̓δεὶς ἐπιγινώσκει τὸν Υἱὸν, εἰ μὴ ὁ Πατήρ· ȣ̓δὲ τὸν Πατέρα τὶς ἐπιγινώσκει, εἰ μὴ ὁ Υἱὸς, ϗ ᾧ ἐὰν βȣ́ληται ὁ Υἱὸς ἀποκαλύψαι.

28 Δεῦτε πρός με πάντες οἱ κοπιῶντες ϗ πεφορτισμένοι, κἀγὼ ἀναπαύσω ὑμᾶς.

29 Ἄρατε τὸν ζυγόν μου ἐφ' ὑμᾶς, καὶ μάθετε ἀπ' ἐμȣ̃, ὅτι πρᾶός εἰμι, ϗ ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ· ϗ εὑρήσετε ἀνάπαυσιν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν.

30 Ὁ γὰρ ζυγός μȣ χρησὸς, ϗ τὸ φορτίον μȣ ἐλαφρόν ἐσιν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

Δὶς δ' ἕκτον ἐνδείκνυσι Σαββάτου λύσιν·
Τριβῇ σταχύων, καὶ χερὸς διαρτίᾳ.
Καὶ τυφλόκωφον ἐκδαιδεμονισμένον
Σώζει, φθονούντων συκοφαντίας λύων.
Σημεῖα δ' ἐξετοῦντας ἐκ φοβεῖ κρίσει,
Ἐπιστροφῇ τε δαιμόνων δυσηλάτων.
Καὶ Χριστάδελφους εὐσεβεῖς πάντας λέγει.

1 ἘΝ ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἐπορεύθη ὁ Ἰη-
σοῦς τοῖς Σάββασι διὰ τῶν σπορί-
μων· οἱ δὲ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπείνασαν, καὶ
ἤρξαντο τίλλειν στάχυας, καὶ ἐσθίειν.
2 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἰδόντες, εἶπον αὐ-
τῷ· Ἰδοὺ, οἱ μαθηταί σου ποιοῦσιν ὃ οὐκ ἔ-
ξεστι ποιεῖν ἐν Σαββάτῳ.
3 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ ἀνέγνωτε τί
ἐποίησε Δαβὶδ, ὅτε ἐπείνασεν αὐτὸς, καὶ
οἱ μετ' αὐτοῦ;
4 Πῶς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ,
καὶ τοὺς ἄρτους τῆς προθέσεως ἔφαγεν, οὓς οὐκ
ἐξὸν ἦν αὐτῷ φαγεῖν, οὐδὲ τοῖς μετ' αὐτοῦ,
εἰ μὴ τοῖς Ἱερεῦσι μόνοις;
5 Ἢ οὐκ ἀνέγνωτε ἐν τῷ νόμῳ, ὅτι τοῖς
Σάββασιν οἱ Ἱερεῖς ἐν τῷ Ἱερῷ τὸ Σάββα-
τον βεβηλοῦσι, καὶ ἀναίτιοί εἰσι;
6 Λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι τοῦ ἱεροῦ μείζων ἐστὶν
ὧδε.
7 Εἰ δὲ ἐγνώκειτε τί ἐστιν· ἔλεον θέλω καὶ
οὐ θυσίαν, οὐκ ἂν κατεδικάσατε τοὺς ἀναιτίους.
8 Κύριος γάρ ἐστι καὶ τοῦ Σαββάτου ὁ Υἱὸς
τοῦ ἀνθρώπου.

9 Καὶ

9 Καὶ μεταβὰς ἐκεῖθεν, ἦλθεν εἰς τὴν
συναγωγὴν αὐτῶν.
10 Καὶ ἰδοὺ, ἄνθρωπος ἦν τὴν χεῖρα ἔ-
χων ξηράν· καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν, λέγον-
τες· Εἰ ἔξεστι τοῖς Σάββασι θεραπεύειν;
ἵνα κατηγορήσωσιν αὐτοῦ.
11 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· τίς ἔσται ἐξ ὑμῶν
ἄνθρωπος, ὃς ἕξει πρόβατον ἓν, καὶ ἐὰν ἐμ-
πέσῃ τοῦτο τοῖς Σάββασιν εἰς βόθυνον, οὐχὶ
κρατήσει αὐτὸ καὶ ἐγερεῖ;
12 Πόσῳ οὖν διαφέρει ἄνθρωπος προβάτου;
ὥστε ἔξεστι τοῖς Σάββασι καλῶς ποιεῖν.
13 Τότε λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· Ἔκτεινον
τὴν χεῖρά σου, καὶ ἐξέτεινε· καὶ ἀποκατεστάθη
ὑγιὴς, ὡς ἡ ἄλλη.
14 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι συμβούλιον ἔλαβον
κατ᾽ αὐτοῦ ἐξελθόντες, ὅπως αὐτὸν ἀπο-
λέσωσιν.
15 Ὁ δὲ Ἰησοῦς γνοὺς ἀνεχώρησεν ἐκεῖ-
θεν· καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ,
καὶ ἐθεράπευσεν αὐτοὺς πάντας.
16 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτοῖς, ἵνα μὴ φα-
νερὸν αὐτὸν ποιήσωσιν.
17 Ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου
τοῦ Προφήτου, λέγοντος·
18 Ἰδοὺ, ὁ παῖς μου, ὃν ᾑρέτισα· ὁ ἀ-
γαπητός μου, εἰς ὃν εὐδόκησεν ἡ ψυχή μου·
θήσω τὸ Πνεῦμά μου ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ κρίσιν
τοῖς ἔθνεσιν ἀπαγγελεῖ.
19 Οὐκ ἐρίσει, οὐδὲ κραυγάσει, οὐδὲ ἀ-
κούσει τις ἐν ταῖς πλατείαις τὴν φωνὴν αὐτοῦ.
20 Κάλαμον συντετριμμένον οὐ κατεάξει,
καὶ λῖνον τυφόμενον οὐ σβέσει, ἕως ἂν ἐκβά-
λῃ εἰς νῖκος τὴν κρίσιν.

21 Καὶ ἐν τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ἔθνη ἐλπιοῦσι.
22 Τότε προσηνέχθη αὐτῷ δαιμονιζό-
μενος, τυφλὸς καὶ κωφός· καὶ ἐθεράπευσεν
αὐτὸν, ὥστε τὸν τυφλὸν καὶ κωφὸν καὶ λαλεῖν
καὶ βλέπειν.
23 Καὶ ἐξίσταντο πάντες οἱ ὄχλοι, καὶ
ἔλεγον· Μήτι οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς Δαβίδ;
24 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἀκούσαντες, εἶπον·
Οὗτος οὐκ ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια, εἰ μὴ ἐν
τῷ Βεελζεβοὺλ ἄρχοντι τῶν δαιμονίων.
25 Εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς τὰς ἐνθυμήσεις αὐ-
τῶν, εἶπεν αὐτοῖς· Πᾶσα βασιλεία μερι-
σθεῖσα καθ' ἑαυτῆς, ἐρημοῦται· καὶ πᾶσα
πόλις ἢ οἰκία μερισθεῖσα καθ' ἑαυτῆς, οὐ
σταθήσεται.
26 Καὶ εἰ ὁ σατανᾶς τὸν σατανᾶν ἐκβάλ-
λει, ἐφ' ἑαυτὸν ἐμερίσθη· πῶς οὖν σταθήσε-
ται ἡ βασιλεία αὐτοῦ;
27 Καὶ εἰ ἐγὼ ἐν Βεελζεβοὺλ ἐκβάλλω
τὰ δαιμόνια, οἱ Υἱοὶ ὑμῶν ἐν τίνι ἐκβάλ-
λουσι; διὰ τοῦτο αὐτοὶ ὑμῶν ἔσονται κριταί.
28 Εἰ δὲ ἐγὼ ἐν Πνεύματι Θεοῦ ἐκβάλ-
λω τὰ δαιμόνια, ἄρα ἔφθασεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ
Βασιλεία τοῦ Θεοῦ.
29 Ἢ πῶς δύναταί τις εἰσελθεῖν εἰς
τὴν οἰκίαν τοῦ ἰσχυροῦ, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ
διαρπάσαι, ἐὰν μὴ πρῶτον δήσῃ τὸν ἰσχυρόν,
καὶ τότε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ διαρπάσει;
30 Ὁ μὴ ὢν μετ' ἐμοῦ, κατ' ἐμοῦ ἐστι· καὶ
ὁ μὴ συνάγων μετ' ἐμοῦ, σκορπίζει.
31 Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν· Πᾶσα ἁμαρ-
τία καὶ βλασφημία ἀφεθήσεται τοῖς ἀνθρώ-
ποις· ἡ δὲ τοῦ Πνεύματος βλασφημία οὐκ
ἀφεθήσεται τοῖς ἀνθρώποις.

32 Καὶ ὃς ἂν εἴπῃ λόγον κατὰ τοῦ Υἱοῦ
τοῦ ἀνθρώπου, ἀφεθήσεται αὐτῷ· ὃς δ' ἂν
εἴπῃ κατὰ τοῦ Πνεύματος τοῦ ἁγίου, οὐκ ἀφε-
θήσεται αὐτῷ οὔτε ἐν τούτῳ τῷ αἰῶνι, οὔτε
ἐν τῷ μέλλοντι.
33 Ἢ ποιήσατε τὸ δένδρον καλὸν, καὶ
τὸν καρπὸν αὐτοῦ καλόν· ἢ ποιήσατε τὸ δέν-
δρον σαπρὸν, καὶ τὸν καρπὸν αὐτοῦ σαπρόν·
ἐκ γὰρ τοῦ καρποῦ τὸ δένδρον γινώσκεται.
34 Γεννήματα ἐχιδνῶν, πῶς δύνασθε ἀ-
γαθὰ λαλεῖν, πονηροὶ ὄντες; ἐκ γὰρ τοῦ
περισσεύματος τῆς καρδίας τὸ στόμα λαλεῖ.
35 Ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ ἀγαθοῦ
θησαυροῦ τῆς καρδίας ἐκβάλλει τὰ ἀγαθά·
καὶ ὁ πονηρὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ πονηροῦ θησαυ-
ροῦ ἐκβάλλει πονηρά.
36 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι πᾶν ῥῆμα ἀργὸν
ὃ ἐὰν λαλήσωσιν οἱ ἄνθρωποι, ἀποδώσουσι
περὶ αὐτοῦ λόγον ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως.
37 Ἐκ γὰρ τῶν λόγων σου δικαιωθήσῃ,
καὶ ἐκ τῶν λόγων σου καταδικασθήσῃ.
38 Τότε ἀπεκρίθησάν τινες τῶν Γραμμα-
τέων καὶ Φαρισαίων, λέγοντες· Διδάσκα-
λε, θέλομεν ἀπὸ σοῦ σημεῖον ἰδεῖν.
39 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Γε-
νεὰ πονηρὰ καὶ μοιχαλὶς σημεῖον ἐπιζητεῖ·
καὶ σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ, εἰ μὴ τὸ ση-
μεῖον Ἰωνᾶ τοῦ Προφήτου·
40 Ὥσπερ γὰρ ἦν Ἰωνᾶς ἐν τῇ κοιλίᾳ
τοῦ κήτους τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας· οὕτως
ἔσται ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ καρδίᾳ τῆς
γῆς τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας.
41 Ἄνδρες Νινευῗται ἀναστήσονται ἐν τῇ
κρίσει μετὰ τῆς γενεᾶς ταύτης, καὶ κατακρι-

νοῦσιν αὐτήν· ὅτι μετενόησαν εἰς τὸ κήρυγμα Ἰωνᾶ· καὶ ἰδοὺ, πλεῖον Ἰωνᾶ ὧδε.

42 Βασίλισσα νότου ἐγερθήσεται ἐν τῇ κρίσει μετὰ τῆς γενεᾶς ταύτης, καὶ κατακρινεῖ αὐτήν· ὅτι ἦλθεν ἐκ τῶν περάτων τῆς γῆς ἀκοῦσαι τὴν σοφίαν Σολομῶντος· καὶ ἰδοὺ, πλεῖον Σολομῶντος ὧδε.

43 Ὅταν δὲ τὸ ἀκάθαρτον Πνεῦμα ἐξέλθῃ ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, διέρχεται δι' ἀνύδρων τόπων, ζητοῦν ἀνάπαυσιν, καὶ οὐχ εὑρίσκει.

44 Τότε λέγει· Ἐπιστρέψω εἰς τὸν οἶκόν μου, ὅθεν ἐξῆλθον. Καὶ ἐλθὸν, εὑρίσκει σχολάζοντα, σεσαρωμένον, καὶ κεκοσμημένον.

45 Τότε πορεύεται, καὶ παραλαμβάνει μεθ' ἑαυτοῦ ἑπτὰ ἕτερα Πνεύματα πονηρότερα ἑαυτοῦ, καὶ εἰσελθόντα κατοικεῖ ἐκεῖ· καὶ γίνεται τὰ ἔσχατα τοῦ ἀνθρώπου ἐκείνου χείρονα τῶν πρώτων. Οὕτως ἔσται καὶ τῇ γενεᾷ ταύτῃ τῇ πονηρᾷ.

46 Ἔτι δὲ αὐτοῦ λαλοῦντος τοῖς ὄχλοις, ἰδοὺ, ἡ μήτηρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ εἱστήκεισαν ἔξω, ζητοῦντες αὐτῷ λαλῆσαι.

47 Εἶπε δέ τις αὐτῷ· Ἰδοὺ, ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἔξω ἑστήκασι, ζητοῦντές σοι λαλῆσαι.

48 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε τῷ εἰπόντι αὐτῷ· Τίς ἐστιν ἡ μήτηρ μου, καὶ τίνες εἰσὶν οἱ ἀδελφοί μου;

49 Καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, εἶπεν· Ἰδοὺ ἡ μήτηρ μου, καὶ οἱ ἀδελφοί μου.

50 Ὅστις γὰρ ἂν ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ Πατρός μου, τοῦ ἐν οὐρανοῖς, αὐτός μου ἀδελφὸς, καὶ ἀδελφὴ, καὶ μήτηρ ἐστίν.

ΚΕ-

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

Τὸ πρὸς δέκα τρίτον γε παραβολὴν σπόρου,
Ζιζανίων τε, καὶ σινήπεος φέρει,
Ζύμης τε, γάζης, μαργάρου, καὶ δικτύου,
Καὶ συμπολιτῶν τὴν κακὴν ἀπιστίαν.

1 ΕΝ δὲ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελθὼν
ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τῆς οἰκίας, ἐκά-
θητο παρὰ τὴν θάλασσαν.
2 Καὶ συνήχθησαν πρὸς αὐτὸν ὄχλοι
πολλοὶ, ὥστε αὐτὸν εἰς τὸ πλοῖον ἐμβάντα
καθῆσθαι· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἐπὶ τὸν αἰγια-
λὸν εἱστήκει.
3 Καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς πολλὰ ἐν πα-
ραβολαῖς, λέγων· Ἰδοὺ, ἐξῆλθεν ὁ σπεί-
ρων τοῦ σπείρειν.
4 Καὶ ἐν τῷ σπείρειν αὐτὸν, ἃ μὲν ἔ-
πεσε παρὰ τὴν ὁδόν· καὶ ἦλθε τὰ πετει-
νὰ, καὶ κατέφαγεν αὐτά.
5 Ἄλλα δὲ ἔπεσον ἐπὶ τὰ πετρώδη,
ὅπου οὐκ εἶχε γῆν πολλήν· καὶ εὐθέως ἐξα-
νέτειλε, διὰ τὸ μὴ ἔχειν βάθος γῆς.
6 Ἡλίου δὲ ἀνατείλαντος ἐκαυματίσθη,
καὶ διὰ τὸ μὴ ἔχειν ῥίζαν, ἐξηράνθη.
7 Ἄλλα δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὰς ἀκάνθας, καὶ
ἀνέβησαν αἱ ἄκανθαι, καὶ ἀπέπνιξαν αὐτά.
8 Ἄλλα δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν τὴν
καλὴν, καὶ ἐδίδου καρπὸν, ὃ μὲν ἑκατὸν,
ὃ δὲ ἑξήκοντα, ὃ δὲ τριάκοντα.
9 Ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
10 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ, εἶπον αὐ-
τῷ· Διατί ἐν παραβολαῖς λαλεῖς αὐτοῖς;

11 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Ὅ-
τι ὑμῖν δέδοται γνῶναι τὰ μυστήρια τῆς βα-
σιλείας τῶν οὐρανῶν, ἐκείνοις δὲ οὐ δέδοται.
12 Ὅστις γὰρ ἔχει, δοθήσεται αὐτῷ, καὶ
περισσευθήσεται· ὅστις δὲ οὐκ ἔχει, καὶ ὃ
ἔχει, ἀρθήσεται ἀπ' αὐτοῦ.
13 Διὰ τοῦτο ἐν παραβολαῖς αὐτοῖς λα-
λῶ, ὅτι βλέποντες οὐ βλέπουσι, καὶ ἀκούον-
τες οὐκ ἀκούουσιν, οὐδὲ συνιοῦσι.
14 Καὶ ἀναπληροῦται ἐπ' αὐτοῖς ἡ Προ-
φητεία Ἠσαΐου, ἡ λέγουσα· Ἀκοῇ ἀκού-
σετε, καὶ οὐ μὴ συνῆτε· καὶ βλέποντες βλέ-
ψετε, καὶ οὐ μὴ ἴδητε.
15 Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ
τούτου, καὶ τοῖς ὠσὶ βαρέως ἤκουσαν, καὶ τοὺς
ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἐκάμμυσαν, μήποτε ἴ-
δωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὠσὶν ἀκού-
σωσι, καὶ τῇ καρδίᾳ συνιῶσι, καὶ ἐπιστρέ-
ψωσι, καὶ ἰάσωμαι αὐτούς.
16 Ὑμῶν δὲ μακάριοι οἱ ὀφθαλμοὶ,
ὅτι βλέπουσι· καὶ τὰ ὦτα ὑμῶν, ὅτι ἀκούει.
17 Ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ
Προφῆται καὶ δίκαιοι ἐπεθύμησαν ἰδεῖν ἃ
βλέπετε, καὶ οὐκ εἶδον· καὶ ἀκοῦσαι ἃ ἀκούε-
τε, καὶ οὐκ ἤκουσαν.
18 Ὑμεῖς οὖν ἀκούσατε τὴν παραβολὴν
τοῦ σπείροντος.
19 Παντὸς ἀκούοντος τὸν λόγον τῆς βασι-
σιλείας, καὶ μὴ συνιέντος, ἔρχεται ὁ πονη-
ρὸς, καὶ ἁρπάζει τὸ ἐσπαρμένον ἐν τῇ καρδίᾳ
αὐτοῦ· οὗτός ἐστιν ὁ παρὰ τὴν ὁδὸν σπαρείς.
20 Ὁ δὲ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπαρεὶς, οὗ-
τός ἐστιν ὁ τὸν λόγον ἀκούων, καὶ εὐθὺς μετὰ
χαρᾶς λαμβάνων αὐτόν.

21 Οὐκ

21 Οὐκ ἔχει δὲ ῥίζαν ἐν ἑαυτῷ, ἀλλὰ πρόσκαιρός ἐστι· γενομένης δὲ θλίψεως ἢ διωγμοῦ διὰ τὸν λόγον, εὐθὺς σκανδαλίζεται.

22 Ὁ δὲ εἰς τὰς ἀκάνθας σπαρεὶς, οὗτός ἐστιν ὁ τὸν λόγον ἀκούων· καὶ ἡ μέριμνα τοῦ αἰῶνος τούτου, καὶ ἡ ἀπάτη τοῦ πλούτου συμπνίγει τὸν λόγον, καὶ ἄκαρπος γίνεται.

23 Ὁ δὲ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν καλὴν σπαρεὶς, οὗτός ἐστιν ὁ τὸν λόγον ἀκούων καὶ συνιών· ὃς δὴ καρποφορεῖ, καὶ ποιεῖ, ὁ μὲν ἑκατὸν, ὁ δὲ ἑξήκοντα, ὁ δὲ τριάκοντα.

24 Ἄλλην παραβολὴν παρέθηκεν αὐτοῖς, λέγων· Ὡμοιώθη ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ σπείραντι καλὸν σπέρμα ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ.

25 Ἐν δὲ τῷ καθεύδειν τοὺς ἀνθρώπους, ἦλθεν αὐτοῦ ὁ ἐχθρὸς, καὶ ἔσπειρε ζιζάνια ἀνὰ μέσον τοῦ σίτου, καὶ ἀπῆλθεν.

26 Ὅτε δὲ ἐβλάστησεν ὁ χόρτος, καὶ καρπὸν ἐποίησε, τότε ἐφάνη καὶ τὰ ζιζάνια.

27 Προσελθόντες δὲ οἱ δοῦλοι τοῦ οἰκοδεσπότου, εἶπον αὐτῷ· Κύριε, οὐχὶ καλὸν σπέρμα ἔσπειρας ἐν τῷ σῷ ἀγρῷ; πόθεν οὖν ἔχει τὰ ζιζάνια;

28 Ὁ δὲ ἔφη αὐτοῖς· Ἐχθρὸς ἄνθρωπος τοῦτο ἐποίησεν. Οἱ δὲ δοῦλοι εἶπον αὐτῷ· Θέλεις οὖν ἀπελθόντες συλλέξωμεν αὐτά;

29 Ὁ δὲ ἔφη· Οὔ· μήποτε συλλέγοντες τὰ ζιζάνια, ἐκριζώσητε ἅμα αὐτοῖς τὸν σῖτον.

30 Ἄφετε συναυξάνεσθαι ἀμφότερα μέχρι τοῦ θερισμοῦ· καὶ ἐν τῷ καιρῷ τοῦ θερισμοῦ ἐρῶ τοῖς θερισταῖς· Συλλέξατε πρῶτον

τὰ ζιζάνια, καὶ δήσατε αὐτὰ εἰς δέσμας πρὸς τὸ κατακαῦσαι αὐτά· τὸν δὲ σῖτον συναγάγετε εἰς τὴν ἀποθήκην μου.

31 Ἄλλην παραβολὴν παρέθηκεν αὐτοῖς, λέγων· Ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν κόκκῳ σινάπεως, ὃν λαβὼν ἄνθρωπος ἔσπειρεν ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ.

32 Ὃ μικρότερον μέν ἐστι πάντων τῶν σπερμάτων· ὅταν δὲ αὐξηθῇ, μεῖζον τῶν λαχάνων ἐστί· καὶ γίνεται δένδρον, ὥστε ἐλθεῖν τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατασκηνοῦν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ.

33 Ἄλλην παραβολὴν ἐλάλησεν αὐτοῖς· Ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ζύμῃ, ἣν λαβοῦσα γυνὴ ἐνέκρυψεν εἰς ἀλεύρου σάτα τρία, ἕως οὗ ἐζυμώθη ὅλον.

34 Ταῦτα πάντα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν παραβολαῖς τοῖς ὄχλοις, καὶ χωρὶς παραβολῆς οὐκ ἐλάλει αὐτοῖς·

35 Ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Ἀνοίξω ἐν παραβολαῖς τὸ στόμα μου· ἐρεύξομαι κεκρυμμένα ἀπὸ καταβολῆς κόσμου.

36 Τότε ἀφεὶς τοὺς ὄχλους, ἦλθεν εἰς τὴν οἰκίαν ὁ Ἰησοῦς· καὶ προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέγοντες· Φράσον ἡμῖν τὴν παραβολὴν τῶν ζιζανίων τοῦ ἀγροῦ.

37 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ὁ σπείρων τὸ καλὸν σπέρμα, ἐστὶν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.

38 Ὁ δὲ ἀγρὸς, ἐστὶν ὁ κόσμος· τὸ δὲ καλὸν σπέρμα, οὗτοί εἰσιν οἱ Υἱοὶ τῆς βασιλείας· τὰ δὲ ζιζάνια, εἰσὶν οἱ υἱοὶ τοῦ πονηροῦ·

39 Ὁ δὲ ἐχθρὸς ὁ σπείρας αὐτὰ, ἐστὶν ὁ διά-

ὁ διάβολος· ὁ δὲ θερισμὸς, συντέλεια τοῦ
αἰῶνός ἐστιν· οἱ δὲ θερισταὶ, ἄγγελοί εἰσιν.
40 Ὥσπερ οὖν συλλέγεται τὰ ζιζάνια,
καὶ πυρὶ κατακαίεται· οὕτως ἔσται ἐν τῇ συν-
τελείᾳ τοῦ αἰῶνος τούτου.
41 Ἀποστελεῖ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου τοὺς
ἀγγέλους αὐτοῦ, καὶ συλλέξουσιν ἐκ τῆς βασι-
λείας αὐτοῦ πάντα τὰ σκάνδαλα, καὶ τοὺς
ποιοῦντας τὴν ἀνομίαν.
42 Καὶ βαλοῦσιν αὐτοὺς εἰς τὴν κάμινον
τοῦ πυρός· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγ-
μὸς τῶν ὀδόντων.
43 Τότε οἱ δίκαιοι ἐκλάμψουσιν ὡς ὁ ἥ-
λιος ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Πατρὸς αὐτῶν· Ὁ
ἔχων ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
44 Πάλιν ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν
οὐρανῶν θησαυρῷ κεκρυμμένῳ ἐν τῷ ἀγρῷ,
ὃν εὑρὼν ἄνθρωπος ἔκρυψε, καὶ ἀπὸ τῆς χα-
ρᾶς αὐτοῦ ὑπάγει, καὶ πάντα ὅσα ἔχει, πω-
λεῖ, καὶ ἀγοράζει τὸν ἀγρὸν ἐκεῖνον.
45 Πάλιν ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν
οὐρανῶν ἀνθρώπῳ ἐμπόρῳ, ζητοῦντι καλοὺς
μαργαρίτας.
46 Ὃς εὑρὼν ἕνα πολύτιμον μαργαρί-
την, ἀπελθὼν πέπρακε πάντα ὅσα εἶχε,
καὶ ἠγόρασεν αὐτόν.
47 Πάλιν ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν
οὐρανῶν σαγήνῃ βληθείσῃ εἰς τὴν θάλασσαν,
καὶ ἐκ παντὸς γένους συναγαγούσῃ.
48 Ἣν, ὅτε ἐπληρώθη, ἀναβιβάσαν-
τες ἐπὶ τὸν αἰγιαλὸν, καὶ καθίσαντες, συ-
νέλεξαν τὰ καλὰ εἰς ἀγγεῖα, τὰ δὲ σαπρὰ
ἔξω ἔβαλον.
49 Οὕτως ἔσται ἐν τῇ συντελείᾳ τοῦ αἰῶ-
νος·

νος· ἐξελεύσονται οἱ ἄγγελοι, καὶ ἀφοριοῦσι
τοὺς πονηροὺς ἐκ μέσου τῶν δικαίων·
50 Καὶ βαλοῦσιν αὐτοὺς εἰς τὴν κάμινον
τοῦ πυρός· ἐκεῖ ἔσαι ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγ-
μὸς τῶν ὀδόντων.
51 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Συνήκατε
ταῦτα πάντα; Λέγουσιν αὐτῷ· Ναὶ Κύριε.
52 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Διὰ τοῦτο πᾶς
Γραμματεὺς μαθητευθεὶς εἰς τὴν βασι-
λείαν τῶν οὐρανῶν, ὅμοιός ἐσιν ἀνθρώπῳ οἰ-
κοδεσπότῃ, ὅσις ἐκβάλλει ἐκ τοῦ θησαυροῦ
αὐτοῦ καινὰ καὶ παλαιά.
53 Καὶ ἐγένετο, ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς
τὰς παραβολὰς ταύτας, μετῆρεν ἐκεῖθεν.
54 Καὶ ἐλθὼν εἰς τὴν πατρίδα αὐτοῦ,
ἐδίδασκεν αὐτοὺς ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν·
ὥσε ἐκπλήττεσθαι αὐτοὺς, καὶ λέγειν· Πό-
θεν τούτῳ ἡ σοφία αὕτη, καὶ αἱ δυνάμεις;
55 Οὐχ οὗτός ἐσιν ὁ τοῦ τέκτονος Υἱός;
οὐχὶ ἡ Μήτηρ αὐτοῦ λέγεται Μαριάμ, καὶ οἱ
ἀδελφοὶ αὐτοῦ Ἰάκωβος, καὶ Ἰωσῆς, καὶ Σί-
μων, καὶ Ἰούδας;
56 Καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ οὐχὶ πᾶσαι
πρὸς ἡμᾶς εἰσι; πόθεν οὖν τούτῳ ταῦτα
πάντα;
57 Καὶ ἐσκανδαλίζοντο ἐν αὐτῷ. Ὁ
δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ ἔσι Προφή-
της ἄτιμος, εἰ μὴ ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ,
καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.
58 Καὶ οὐκ ἐποίησεν ἐκεῖ δυνάμεις πολ-
λὰς, διὰ τὴν ἀπιςίαν αὐτῶν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΔ'. 14.

Ἐν τῷ δισεβδόμῳ δὲ κῆρα Προδρόμου.
Ἄρτοις τε πέντε ἡμιμυρίων κόρον.
Καὶ δυσπλοοῦσιν ἀθρόαν Χριστοῦ θέαν,
Δηλόν θ' ὑγρηβατοῦντα θαυμάσεις Πέτρον,
Πολλούς ἀφῇ τε κρασπέδου σεσωσμένους.

1 ἘΝ ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἤκουσεν Ἡρώ-
δης ὁ τετράρχης τὴν ἀκοὴν Ἰησοῦ.
2 Καὶ εἶπε τοῖς παισὶν αὐτοῦ· Οὗτός ἐ-
στιν Ἰωάννης ὁ Βαπτιστής· αὐτὸς ἠγέρθη ἀ-
πὸ τῶν νεκρῶν, καὶ διὰ τοῦτο αἱ δυνάμεις
ἐνεργοῦσιν ἐν αὐτῷ.
3 Ὁ γὰρ Ἡρώδης κρατήσας τὸν Ἰωάν-
νην, ἔδησεν αὐτὸν, καὶ ἔθετο ἐν φυλακῇ,
διὰ Ἡρωδιάδα τὴν γυναῖκα Φιλίππου τοῦ
ἀδελφοῦ αὐτοῦ.
4 Ἔλεγε γὰρ αὐτῷ ὁ Ἰωάννης· Οὐκ
ἔξεστί σοι ἔχειν αὐτήν.
5 Καὶ θέλων αὐτὸν ἀποκτεῖναι, ἐφοβήθη
τὸν ὄχλον, ὅτι ὡς Προφήτην αὐτὸν εἶχον.
6 Γενεσίων δὲ ἀγομένων τοῦ Ἡρώδου, ὠρ-
χήσατο ἡ θυγάτηρ τῆς Ἡρωδιάδος ἐν τῷ
μέσῳ· καὶ ἤρεσε τῷ Ἡρώδῃ.
7 Ὅθεν μεθ' ὅρκου ὡμολόγησεν αὐτῇ δοῦ-
ναι ὃ ἐὰν αἰτήσηται.
8 Ἡ δὲ προβιβασθεῖσα ὑπὸ τῆς μητρὸς
αὐτῆς, Δός μοι, φησὶν, ὧδε ἐπὶ πίνακι
τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.
9 Καὶ ἐλυπήθη ὁ βασιλεύς· διὰ δὲ
τοὺς ὅρκους καὶ τοὺς συνανακειμένους, ἐκέ-
λευσε δοθῆναι.

10 Καὶ πέμψας ἀπεκεφάλισε τὸν Ἰωάν-
νην ἐν τῇ φυλακῇ.
11 Καὶ ἠνέχθη ἡ κεφαλὴ αὐτοῦ ἐπὶ πί-
νακι, καὶ ἐδόθη τῷ κορασίῳ· καὶ ἤνεγκε τῇ
μητρὶ αὐτῆς.
12 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
ἦραν τὸ σῶμα, καὶ ἔθαψαν αὐτό· καὶ ἐλθόν-
τες ἀπήγγειλαν τῷ Ἰησοῦ.
13 Καὶ ἀκούσας ὁ Ἰησοῦς, ἀνεχώρησεν
ἐκεῖθεν ἐν πλοίῳ εἰς ἔρημον τόπον κατ'
ἰδίαν. Καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι, ἠκολού-
θησαν αὐτῷ πεζῇ ἀπὸ τῶν πόλεων.
14 Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς, εἶδε πολὺν
ὄχλον· καὶ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ' αὐτοῖς, καὶ ἐθε-
ράπευσε τοὺς ἀῤῥώστους αὐτῶν.
15 Ὀψίας δὲ γενομένης, προσῆλθον αὐ-
τῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέγοντες· Ἔρημός
ἐστιν ὁ τόπος, καὶ ἡ ὥρα ἤδη παρῆλθεν· ἀπό-
λυσον τοὺς ὄχλους, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς
κώμας, ἀγοράσωσιν ἑαυτοῖς βρώματα.
16 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ χρείαν
ἔχουσιν ἀπελθεῖν· δότε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν.
17 Οἱ δὲ λέγουσιν αὐτῷ· Οὐκ ἔχομεν
ὧδε εἰ μὴ πέντε ἄρτους καὶ δύο ἰχθύας.
18 Ὁ δὲ εἶπε· Φέρετέ μοι αὐτοὺς ὧδε.
19 Καὶ κελεύσας τοὺς ὄχλους ἀνακλιθῆ-
ναι ἐπὶ τοὺς χόρτους, καὶ λαβὼν τοὺς πέντε
ἄρτους καὶ τοὺς δύο ἰχθύας, ἀναβλέψας εἰς
τὸν οὐρανὸν, εὐλόγησε· καὶ κλάσας, ἔδωκε
τοῖς μαθηταῖς τοὺς ἄρτους, οἱ δὲ μαθηταὶ
τοῖς ὄχλοις.
20 Καὶ ἔφαγον πάντες, καὶ ἐχορτάσθη-
σαν· καὶ ἦραν τὸ περισσεῦον τῶν κλασμάτων
δώδεκα κοφίνους πλήρεις.

21 Οἱ

21 Οἱ δὲ ἐσθίοντες ἦσαν ἄνδρες ὡσεὶ πεν-
τακισχίλιοι, χωρὶς γυναικῶν καὶ παιδίων.
22 Καὶ εὐθέως ἠνάγκασεν ὁ Ἰησοῦς τοὺς
μαθητὰς αὐτοῦ ἐμβῆναι εἰς τὸ πλοῖον, καὶ
προάγειν αὐτὸν εἰς τὸ πέραν, ἕως οὗ ἀπολύ-
σῃ τοὺς ὄχλους.
23 Καὶ ἀπολύσας τοὺς ὄχλους, ἀνέβη
εἰς τὸ ὄρος κατ' ἰδίαν προσεύξασθαι. Ὀψίας
δὲ γενομένης, μόνος ἦν ἐκεῖ.
24 Τὸ δὲ πλοῖον ἤδη μέσον τῆς θα-
λάσσης ἦν, βασανιζόμενον ὑπὸ τῶν κυμά-
των· ἦν γὰρ ἐναντίος ὁ ἄνεμος.
25 Τετάρτῃ δὲ φυλακῇ τῆς νυκτὸς ἀπῆλθε
πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς, περιπατῶν ἐπὶ τῆς θαλάσσης.
26 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν οἱ μαθηταὶ ἐπὶ
τὴν θάλασσαν περιπατοῦντα, ἐταράχθησαν,
λέγοντες· Ὅτι φάντασμά ἐστι· καὶ ἀπὸ τοῦ
φόβου ἔκραξαν.
27 Εὐθέως δὲ ἐλάλησεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς,
λέγων· Θαρσεῖτε· ἐγώ εἰμι· μὴ φοβεῖσθε.
28 Ἀποκριθεὶς δὲ αὐτῷ ὁ Πέτρος, εἶ-
πε· Κύριε, εἰ σὺ εἶ, κέλευσόν με πρός σε
ἐλθεῖν ἐπὶ τὰ ὕδατα.
29 Ὁ δὲ εἶπεν· Ἐλθέ. Καὶ καταβὰς
ἀπὸ τοῦ πλοίου ὁ Πέτρος, περιεπάτησεν ἐπὶ
τὰ ὕδατα, ἐλθεῖν πρὸς τὸν Ἰησοῦν.
30 Βλέπων δὲ τὸν ἄνεμον ἰσχυρὸν, ἐφο-
βήθη· καὶ ἀρξάμενος καταποντίζεσθαι, ἔ-
κραξε, λέγων· Κύριε, σῶσόν με.
31 Εὐθέως δὲ ὁ Ἰησοῦς ἐκτείνας τὴν χεῖ-
ρα, ἐπελάβετο αὐτοῦ, καὶ λέγει αὐτῷ· Ὀ-
λιγόπιστε, εἰς τί ἐδίστασας;
32 Καὶ ἐμβάντων αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον,
ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος.

33 Οἱ δὲ ἐν τῷ πλοίῳ, ἐλθόντες προσεκύ-
νησαν αὐτῷ, λέγοντες· Ἀληθῶς Θεοῦ Υἱὸς εἶ.
34 Καὶ διαπεράσαντες, ἦλθον εἰς τὴν
γῆν Γεννησαρέτ.
35 Καὶ ἐπιγνόντες αὐτὸν οἱ ἄνδρες τοῦ
τόπου ἐκείνου, ἀπέστειλαν εἰς ὅλην τὴν πε-
ρίχωρον ἐκείνην, καὶ προσήνεγκαν αὐτῷ πάν-
τας τοὺς κακῶς ἔχοντας·
36 Καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα μόνον ἅ-
ψωνται τοῦ κρασπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· καὶ
ὅσοι ἥψαντο, διεσώθησαν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΕ'. 15.

Τὸ δὶς δὲ πέμπτον οὐ χερῶν, ἀπὰρ νόου
Κάθαρσιν αἰτεῖ· καὶ Χαναναίαν ὑπὲρ
Πίστιν παριστᾷ εἰσακουσθεῖσαν κόρης.
Ἄρτων δέ θ' ἑπτὰ τὴν νομὴν εἰς μυρίους.

1 ΤΟτε προσέρχονται τῷ Ἰησοῦ οἱ
ἀπὸ Ἱεροσολύμων Γραμματεῖς
καὶ Φαρισαῖοι, λέγοντες·
2 Διατί οἱ μαθηταί σου παραβαίνουσι τὴν
παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων; οὐ γὰρ νίπτον-
ται τὰς χεῖρας αὐτῶν, ὅταν ἄρτον ἐσθίωσιν.
3 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς·
Διατί καὶ ὑμεῖς παραβαίνετε τὴν ἐντολὴν
τοῦ Θεοῦ, διὰ τὴν παράδοσιν ὑμῶν;
4 Ὁ γὰρ Θεὸς ἐνετείλατο, λέγων·
Τίμα τὸν Πατέρα σου, καὶ τὴν Μητέρα· καὶ
ὁ κακολογῶν Πατέρα, ἢ Μητέρα, θα-
νάτῳ τελευτάτω.
5 Ὑμεῖς δὲ λέγετε· Ὃς ἂν εἴπῃ τῷ
Πατρὶ ἢ τῇ Μητρὶ, Δῶρον ὃ ἐὰν ἐξ ἐμοῦ
ὠφε-

ὠφεληθῇς· καὶ οὐ μὴ τιμήσῃ τὸν Πατέρα
αὐτοῦ, ἢ τὴν Μητέρα αὐτοῦ.
6 Καὶ ἠκυρώσατε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ
διὰ τὴν παράδοσιν ὑμῶν.
7 Ὑποκριταὶ, καλῶς προεφήτευσε περὶ
ὑμῶν Ἠσαΐας, λέγων·
8 Ἐγγίζει μοι ὁ λαὸς οὗτος τῷ στόματι
αὐτῶν, καὶ τοῖς χείλεσί με τιμᾷ· ἡ δὲ καρ-
δία αὐτῶν πόῤῥω ἀπέχει ἀπ᾽ ἐμοῦ.
9 Μάτην δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες
διδασκαλίας, ἐντάλματα ἀνθρώπων.
10 Καὶ προσκαλεσάμενος τὸν ὄχλον, εἶ-
πεν αὐτοῖς· Ἀκούετε καὶ συνίετε.
11 Οὐ τὸ εἰσερχόμενον εἰς τὸ στόμα κοινοῖ
τὸν ἄνθρωπον· ἀλλὰ τὸ ἐκπορευόμενον ἐκ τοῦ
στόματος, τοῦτο κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον.
12 Τότε προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ,
εἶπον αὐτῷ· Οἶδας, ὅτι οἱ Φαρισαῖοι ἀ-
κούσαντες τὸν λόγον, ἐσκανδαλίσθησαν;
13 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε· Πᾶσα φυ-
τεία, ἣν οὐκ ἐφύτευσεν ὁ Πατήρ μου ὁ οὐρά-
νιος, ἐκριζωθήσεται.
14 Ἄφετε αὐτούς· ὁδηγοί εἰσι τυφλοὶ τυ-
φλῶν· τυφλὸς δὲ τυφλὸν ἐὰν ὁδηγῇ, ἀμ-
φότεροι εἰς βόθυνον πεσοῦνται.
15 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐ-
τῷ· Φράσον ἡμῖν τὴν παραβολὴν ταύτην.
16 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἀκμὴν καὶ ὑμεῖς
ἀσύνετοί ἐστε;
17 Οὔπω νοεῖτε, ὅτι πᾶν τὸ εἰσπορευό-
μενον εἰς τὸ στόμα, εἰς τὴν κοιλίαν χωρεῖ,
καὶ εἰς ἀφεδρῶνα ἐκβάλλεται;
18 Τὰ δὲ ἐκπορευόμενα ἐκ τοῦ στόματος, ἐκ
τῆς καρδίας ἐξέρχεται, κἀκεῖνα κοινοῖ τὸν ἄν-
19 Ἐκ

19 Ἐκ γὰρ τῆς καρδίας ἐξέρχονται δια-
λογισμοὶ πονηροί, φόνοι, μοιχεῖαι, πορνεῖαι,
κλοπαί, ψευδομαρτυρίαι, βλασφημίαι.
20 Ταῦτά ἐστι τὰ κοινοῦντα τὸν ἄνθρωπον·
τὸ δὲ ἀνίπτοις χερσὶ φαγεῖν, οὐ κοινοῖ τὸν
ἄνθρωπον.
21 Καὶ ἐξελθὼν ἐκεῖθεν ὁ Ἰησοῦς, ἀνε-
χώρησεν εἰς τὰ μέρη Τύρου καὶ Σιδῶνος.
22 Καὶ ἰδού, γυνὴ Χαναναία ἀπὸ τῶν ὁ-
ρίων ἐκείνων ἐξελθοῦσα, ἐκραύγασεν, αὐτῷ
λέγουσα· Ἐλέησόν με Κύριε, Υἱὲ Δα-
βίδ, ἡ θυγάτηρ μου κακῶς δαιμονίζεται.
23 Ὁ δὲ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῇ λόγον.
Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἠρώ-
των αὐτόν, λέγοντες· Ἀπόλυσον αὐτήν,
ὅτι κράζει ὄπισθεν ἡμῶν.
24 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐκ ἀπε-
στάλην εἰ μὴ εἰς τὰ πρόβατα τὰ ἀπολωλότα
οἴκου Ἰσραήλ.
25 Ἡ δὲ ἐλθοῦσα προσεκύνει αὐτῷ,
λέγουσα· Κύριε, βοήθει μοι.
26 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐκ ἔστι
καλὸν λαβεῖν τὸν ἄρτον τῶν τέκνων, καὶ βα-
λεῖν τοῖς κυναρίοις.
27 Ἡ δὲ εἶπε· Ναὶ Κύριε· καὶ γὰρ τὰ
κυνάρια ἐσθίει ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν πιπτόν-
των ἀπὸ τῆς τραπέζης τῶν κυρίων αὐτῶν.
28 Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τῇ· Ὦ γύναι, μεγάλη σου ἡ πίστις· γε-
νηθήτω σοι ὡς θέλεις. Καὶ ἰάθη ἡ θυγά-
τηρ αὐτῆς ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης.
29 Καὶ μεταβὰς ἐκεῖθεν ὁ Ἰησοῦς, ἦλθε
παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας· καὶ ἀ-
ναβὰς εἰς τὸ ὄρος, ἐκάθητο ἐκεῖ.

30 Καὶ

30 Καὶ προσῆλθον αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ, ἔχοντες μεθ' ἑαυτῶν χωλοὺς, τυφλοὺς, κωφοὺς, κυλλοὺς, καὶ ἑτέρους πολλούς· καὶ ἔρριψαν αὐτοὺς παρὰ τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς·

31 Ὥστε τοὺς ὄχλους θαυμάσαι, βλέποντας κωφοὺς λαλοῦντας, κυλλοὺς ὑγιεῖς, χωλοὺς περιπατοῦντας, καὶ τυφλοὺς βλέποντας, καὶ ἐδόξασαν τὸν Θεὸν Ἰσραήλ.

32 Ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, εἶπε· Σπλαγχνίζομαι ἐπὶ τὸν ὄχλον, ὅτι ἤδη ἡμέρας τρεῖς προσμένουσί μοι, καὶ οὐκ ἔχουσι τί φάγωσι· καὶ ἀπολῦσαι αὐτοὺς νήστεις οὐ θέλω, μήποτε ἐκλυθῶσιν ἐν τῇ ὁδῷ.

33 Καὶ λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Πόθεν ἡμῖν ἐν ἐρημίᾳ ἄρτοι τοσοῦτοι, ὥστε χορτάσαι ὄχλον τοσοῦτον;

34 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πόσους ἄρτους ἔχετε; Οἱ δὲ εἶπον· Ἑπτὰ, καὶ ὀλίγα ἰχθύδια.

35 Καὶ ἐκέλευσε τοῖς ὄχλοις ἀναπεσεῖν ἐπὶ τὴν γῆν.

36 Καὶ λαβὼν τοὺς ἑπτὰ ἄρτους καὶ τοὺς ἰχθύας, εὐχαριστήσας, ἔκλασε, καὶ ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· οἱ δὲ μαθηταὶ τῷ ὄχλῳ.

37 Καὶ ἔφαγον πάντες, καὶ ἐχορτάσθησαν· καὶ ἦραν τὸ περισσεῦον τῶν κλασμάτων, ἑπτὰ σπυρίδας πλήρεις.

38 Οἱ δὲ ἐσθίοντες ἦσαν τετρακισχίλιοι ἄνδρες, χωρὶς γυναικῶν καὶ παιδίων.

39 Καὶ ἀπολύσας τοὺς ὄχλους, ἐνέβη εἰς τὸ πλοῖον, καὶ ἦλθεν εἰς τὰ ὅρια Μαγδαλά.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ιϛ'. 16.

Τὸ τεξάκις τέταρτον αἰτῦσιν τέρας,
Δίδωσ' Ἰωνᾶν· ἢ Φαρισαίων ζύμης
Λόγων ἀφιςᾶ, κὰκ θεηγόρυ Πέτρον
Κλειδῦχον Οὐρανοῖο· ἢ Θείυ Πάθυς
Α'γγελμα· ἢ Σταυροῖο πιςοῖς φορτίον.

1 ΚΑὶ προσελθόντες οἱ Φαρισαῖοι
καὶ Σαδδυκαῖοι, πειράζοντες
ἐπηρώτησαν αὐτὸν σημεῖον ἐκ τῦ οὐρανοῦ
ἐπιδεῖξαι αὐτοῖς.

2 Ο' δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς·
Ο'ψίας γενομένης λέγετε, Εὐδία· πυρ-
ράζει γὰρ ὁ ὐρανός.

3 Καὶ πρωΐ, Σήμερον χειμών· πυῤῥάζει
γὰρ ςυγνάζων ὁ ὐρανός. Υ'ποκριταὶ, τὸ μὲν
πρόσωπον τῦ οὐρανῦ γινώσκετε διακρίνειν,
τὰ δὲ σημεῖα τῶν καιρῶν ὐ δύνασθε;

4 Γενεὰ πονηρὰ καὶ μοιχαλὶς σημεῖον
ἐπιζητεῖ· ἢ σημεῖον ὐ δοθήσεται αὐτῇ, εἰ
μὴ τὸ σημεῖον Ἰωνᾶ τῦ Προφήτυ. Καὶ κα-
ταλιπὼν αὐτὺς, ἀπῆλθε.

5 Καὶ ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτῦ εἰς τὸ
πέραν, ἐπελάθοντο ἄρτυς λαβεῖν.

6 Ο' δὲ Ἰησῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ο'ρᾶτε
καὶ προσέχετε ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρι-
σαίων ἢ Σαδδυκαίων.

7 Οἱ δὲ διελογίζοντο ἐν ἑαυτοῖς, λέ-
γοντες· Ο'τι ἄρτυς ὐκ ἐλάβομεν.

8 Γνὺς δὲ ὁ Ἰησῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί
διαλογίζεσθε ἐν ἑαυτοῖς, ὀλιγόπιςοι, ὅτι
ἄρτυς ὐκ ἐλάβετε;

9 Οὔπω

9 Οὔπω νοεῖτε, οὐδὲ μνημονεύετε τοὺς
πέντε ἄρτους τῶν πεντακισχιλίων, καὶ πόσους
κοφίνους ἐλάβετε;
10 Οὐδὲ τοὺς ἑπτὰ ἄρτους τῶν τετρακισχι-
λίων, καὶ πόσας σπυρίδας ἐλάβετε;
11 Πῶς οὐ νοεῖτε, ὅτι οὐ περὶ ἄρτου εἶπον
ὑμῖν, προσέχειν ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρι-
σαίων καὶ Σαδδουκαίων;
12 Τότε συνῆκαν, ὅτι οὐκ εἶπε προσέχειν
ἀπὸ τῆς ζύμης τοῦ ἄρτου, ἀλλ' ἀπὸ τῆς διδα-
χῆς τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων.
13 Ἐλθὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς εἰς τὰ μέρη Και-
σαρείας τῆς Φιλίππου, ἠρώτα τοὺς μαθητὰς
αὐτοῦ, λέγων· Τίνα με λέγουσιν οἱ ἄνθρω-
ποι εἶναι, τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου;
14 Οἱ δὲ εἶπον· Οἱ μὲν, Ἰωάννην τὸν
Βαπτιστήν· ἄλλοι δὲ, Ἠλίαν· ἕτεροι δὲ,
Ἱερεμίαν, ἢ ἕνα τῶν Προφητῶν.
15 Λέγει αὐτοῖς· Ὑμεῖς δὲ τίνα με
λέγετε εἶναι;
16 Ἀποκριθεὶς δὲ Σίμων Πέτρος, εἶπε·
Σὺ εἶ ὁ Χριστὸς, ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος.
17 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τῷ· Μακάριος εἶ Σίμων βὰρ Ἰωνᾶ, ὅτι
σὰρξ καὶ αἷμα οὐκ ἀπεκάλυψέ σοι, ἀλλ' ὁ
Πατήρ μου ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.
18 Κἀγὼ δέ σοι λέγω, ὅτι σὺ εἶ Πέ-
τρος, καὶ ἐπὶ ταύτῃ τῇ πέτρᾳ οἰκοδομήσω
μου τὴν Ἐκκλησίαν· καὶ πύλαι ᾅδου οὐ κα-
τισχύσουσιν αὐτῆς.
19 Καὶ δώσω σοι τὰς κλεῖς τῆς βασιλείας
τῶν οὐρανῶν· καὶ ὃ ἐὰν δήσῃς ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσαι
δεδεμένον ἐν τοῖς οὐρανοῖς· καὶ ὃ ἐὰν λύσῃς ἐπὶ
τῆς γῆς, ἔσαι λελυμένον ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

20 Τότε διεστείλατο τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἵνα μηδενὶ εἴπωσιν, ὅτι αὐτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ Χριστός.

21 Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς δεικνύειν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ὅτι δεῖ αὐτὸν ἀπελθεῖν εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ πολλὰ παθεῖν ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων καὶ ἀρχιερέων, καὶ Γραμματέων, καὶ ἀποκτανθῆναι, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερθῆναι.

22 Καὶ προσλαβόμενος αὐτὸν ὁ Πέτρος, ἤρξατο ἐπιτιμᾷν αὐτῷ, λέγων· Ἵλεώς σοι Κύριε· οὐ μὴ ἔσται σοι τοῦτο.

23 Ὁ δὲ στραφεὶς, εἶπε τῷ Πέτρῳ· Ὕπαγε ὀπίσω μου Σατανᾶ, σκάνδαλόν μου εἶ· ὅτι οὐ φρονεῖς τὰ τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων.

24 Τότε ὁ Ἰησοῦς εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Εἴ τις θέλει ὀπίσω μου ἐλθεῖν, ἀπαρνησάσθω ἑαυτὸν, καὶ ἀράτω τὸν σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἀκολουθείτω μοι.

25 Ὃς γὰρ ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι, ἀπολέσει αὐτήν· ὃς δ' ἂν ἀπολέσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἕνεκεν ἐμοῦ, εὑρήσει αὐτήν.

26 Τί γὰρ ὠφελεῖται ἄνθρωπος, ἐὰν τὸν κόσμον ὅλον κερδήσῃ, τὴν δὲ ψυχὴν αὐτοῦ ζημιωθῇ; ἢ τί δώσει ἄνθρωπος ἀντάλλαγμα τῆς ψυχῆς αὐτοῦ;

27 Μέλλει γὰρ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεσθαι ἐν τῇ δόξῃ τοῦ Πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν Ἀγγέλων αὐτοῦ· καὶ τότε ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὴν πρᾶξιν αὐτοῦ.

28 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, εἰσί τινες τῶν ὧδε ἑστηκότων, οἵτινες οὐ μὴ γεύσωνται θανάτου, ἕως ἂν ἴδωσι τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν τῇ Βασιλείᾳ αὐτοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΖ'. 17.

Τὸ δ' ἕβδομόν τε πρὸς δέκα φρικτὴν θέαν·
Φαίνει Μαθηταῖς ἐν Θαβὼρ τοῦ Δεσπότου.
Κωφόν τε Πνεῦμα παιδὸς ἐκβάλλει Νέου.
Στατῆρά θ' ἕλκει ἐκ φάρυγγος ἰχθύος.

1 ΚΑὶ μεθ' ἡμέρας ἓξ παραλαμβά-
νει ὁ Ἰησοῦς τὸν Πέτρον, καὶ Ἰά-
κωβον, καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ· καὶ ἀ-
ναφέρει αὐτοὺς εἰς ὄρος ὑψηλὸν κατ' ἰδίαν.
2 Καὶ μετεμορφώθη ἔμπροσθεν αὐτῶν, καὶ
ἔλαμψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ὁ Ἥλιος, τὰ
δὲ ἱμάτια αὐτοῦ ἐγένετο λευκὰ ὡς τὸ φῶς.
3 Καὶ ἰδοὺ, ὤφθησαν αὐτοῖς Μωσῆς καὶ
Ἠλίας, μετ' αὐτοῦ συλλαλοῦντες.
4 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπε τῷ Ἰη-
σοῦ· Κύριε, καλόν ἐστιν ἡμᾶς ὧδε εἶναι· εἰ
θέλεις ποιήσωμεν ὧδε τρεῖς σκηνὰς, σοὶ
μίαν, καὶ Μωσῇ μίαν, καὶ μίαν Ἠλίᾳ.
5 Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος, ἰδοὺ νεφέλη φω-
τεινὴ ἐπεσκίασεν αὐτούς· καὶ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τῆς
νεφέλης, λέγουσα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱός μου ὁ
ἀγαπητὸς, ἐν ᾧ εὐδόκησα· αὐτοῦ ἀκούετε.
6 Καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταὶ, ἔπε-
σον ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν, καὶ ἐφοβήθησαν
σφόδρα.
7 Καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς, ἥψατο αὐ-
τῶν, καὶ εἶπεν· Ἐγέρθητε, καὶ μὴ φοβεῖσθε.
8 Ἐπάραντες δὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν,
οὐδένα εἶδον, εἰ μὴ τὸν Ἰησοῦν μόνον.
9 Καὶ καταβαινόντων αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους,
ἐνετείλατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Μηδενὶ

εἴπητε τὸ ὅραμα, ἕως οὗ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώ-
που ἐκ νεκρῶν ἀναστῇ.

10 Καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ, λέγοντες· Τί οὖν οἱ Γραμματεῖς
λέγουσιν, ὅτι Ἠλίαν δεῖ ἐλθεῖν πρῶτον;

11 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Ἠλίας μὲν ἔρχεται πρῶτον, καὶ ἀπο-
καταστήσει πάντα.

12 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι Ἠλίας ἤδη ἦλ-
θε· καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν αὐτόν· ἀλλ' ἐποίησαν
ἐν αὐτῷ, ὅσα ἠθέλησαν· οὕτω καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ
ἀνθρώπου μέλλει πάσχειν ὑπ' αὐτῶν.

13 Τότε συνῆκαν οἱ μαθηταὶ, ὅτι περὶ
Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ εἶπεν αὐτοῖς.

14 Καὶ ἐλθόντων αὐτῶν πρὸς τὸν ὄχλον,
προσῆλθεν αὐτῷ ἄνθρωπος, γονυπετῶν αὐτῷ,

15 Καὶ λέγων· Κύριε, ἐλέησόν μου τὸν
Υἱὸν, ὅτι σεληνιάζεται, καὶ κακῶς πά-
σχει· πολλάκις γὰρ πίπτει εἰς τὸ πῦρ, καὶ
πολλάκις εἰς τὸ ὕδωρ.

16 Καὶ προσήνεγκα αὐτὸν τοῖς μαθηταῖς
σου, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν αὐτὸν θεραπεῦσαι.

17 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ὦ
γενεὰ ἄπιστος καὶ διεστραμμένη, ἕως πότε ἔ-
σομαι μεθ' ὑμῶν; ἕως πότε ἀνέξομαι ὑ-
μῶν; φέρετέ μοι αὐτὸν ὧδε.

18 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, καὶ
ἐξῆλθεν ἀπ' αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον· καὶ ἐθερα-
πεύθη ὁ παῖς ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης.

19 Τότε προσελθόντες οἱ μαθηταὶ τῷ
Ἰησοῦ κατ' ἰδίαν, εἶπον· Διατί ἡμεῖς οὐκ
ἠδυνήθημεν ἐκβαλεῖν αὐτό;

20 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Διὰ τὴν
ἀπιστίαν ὑμῶν. Ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἐὰν

ἔχη-

ἔχητε πίςιν ὡς κόκκον σινάπεως, ἐρεῖτε τῷ
ὄρει τέτῳ· Μετάβηθι ἐντεῦθεν ἐκεῖ, ϗ με-
ταβήσεται· ϗ ἐδὲν ἀδιωατήσει ὑμῖν.
21 Τῦτο δὲ τὸ γένος ἐκ ἐκπορεύεται, εἰ
μὴ ἐν Προσευχῇ ϗ νηςείᾳ.
22 Ἀναςρεφομένων δὲ αὐτῶν ἐν τῇ Γα-
λιλαίᾳ, εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησῦς· Μέλλει
ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοσθαι εἰς
χεῖρας ἀνθρώπων.
23 Καὶ ἀποκτενῦσιν αὐτὸν, ϗ τῇ τρί-
τῃ ἡμέρᾳ ἐγερθήσεται. Καὶ ἐλυπήθησαν
σφόδρα.
24 Ἐλθόντων δὲ αὐτῶν εἰς Καπερναῦμ,
προσῆλθον οἱ τὰ δίδραχμα λαμβάνοντες
τῷ Πέτρῳ, ϗ εἶπον· Ὁ διδάσκαλος ὑ-
μῶν οὐ τελεῖ τὰ δίδραχμα,
25 Λέγει· Ναί. Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς
τὴν οἰκίαν, προέφθασεν αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς,
λέγων· Τί σοὶ δοκεῖ, Σίμων; οἱ Βασι-
λεῖς τῆς γῆς ἀπὸ τίνων λαμβάνεσι τέ-
λη, ἢ κῆνσον; ἀπὸ τῶν Υἱῶν αὐτῶν, ἢ
ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων;
26 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Ἀπὸ τῶν
ἀλλοτρίων. Ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησῦς· Ἄραγε
ἐλεύθεροί εἰσιν οἱ Υἱοί.
27 Ἵνα δὲ μὴ σκανδαλίσωμεν αὐτοὺς,
πορευθεὶς εἰς τὴν θάλασσαν, βάλε ἄγκι-
ςρον, ϗ τὸν ἀναβάντα πρῶτον ἰχθὺν ἆρον·
ϗ ἀνοίξας τὸ ςόμα αὐτοῦ, εὑρήσεις ςα-
τῆρα· ἐκεῖνον λαβὼν, δὸς αὐτοῖς ἀντὶ
ἐμοῦ ϗ σοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΗ'. 18.

Τὸ δὲ ζῖς ἔκτον Οὐρανοῖς μεῖζον βρέφος
Ι'ςησι, ἢ τὄγκλημα πόσον σκανδάλε.
Πόσηντε τιμὴ ἀρνὸς ὑξολωλότος.
Πεπτωκότας δὲ πῶς ἀνορθοιῶ, εἴδεον.
Ο'φειλέτυτε παρβολὴ τῶν μυρίων.

1 ΕΝ ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ προσῆλθον οἱ
μαθηταὶ τῷ Ι'ησοῦ, λέγοντες·
Τίς ἄρα μείζων ἐςὶν ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν
οὐρανῶν;
2 Καὶ προσκαλεσάμενος ὁ Ι'ησοῦς παι-
δίον, ἔςησεν αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῶν,
3 Καὶ εἶπεν· Α'μὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ
ςραφῆτε, ἢ γένησθε ὡς τὰ παιδία, ὀ μὴ εἰ-
σέλθητε εἰς τὴν βασιλείαν τῶν ὀρανῶν.
4 Ο'ςις οὖν ταπεινώσῃ ἑαυτὸν ὡς τὸ παι-
δίον τοῦτο, ὅτός ἐςιν ὁ μείζων ἐν τῇ βασι-
λείᾳ τῶν οὐρανῶν.
5 Καὶ ὃς ἐὰν δέξηται παιδίον τοιῶτον ἐν
ἐπὶ τῷ ὀνόματί μυ, ἐμὲ δέχεται.
6 Ο'ς δ᾽ ἂν σκανδαλίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν
τούτων, τῶν πιςευόντων εἰς ἐμὲ, συμφέρει
αὐτῷ, ἵνα κρεμασθῇ μύλος ὀνικὸς ἐπὶ τὸν
ζάχηλον αὐτῦ, ἢ καταποντισθῇ ἐν τῷ πε-
λάγει τῆς θαλάσσης.
7 Οὐαὶ τῷ κόσμῳ ἀπὸ τῶν σκανδάλων·
ἀνάγκη γάρ ἐςιν ἐλθεῖν τὰ σκάνδαλα·
πλὴν ὀαὶ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ, δἰ οὗ τὸ
σκάνδαλον ἔρχεται.
8 Εἰ δὲ ἡ χείρ σε, ἢ ὁ πῦς σε σκανδαλί-
ζει σε, ἔκκοψον αὐτὰ, ἢ βάλε ἀπὸ σοῦ·

κα-

καλόν σοι ἐςὶν εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν χω-
λὸν ἢ κυλλὸν, ἢ δύο χεῖρας ἢ δύο πόδας
ἔχοντα, βληθῆναι εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον.
9 Καὶ εἰ ὁ ὀφθαλμός σου σκανδαλίζει
σε, ἔξελε αὐτὸν, καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· καλόν
σοι ἐςὶ μονόφθαλμον εἰς τὴν ζωὴν εἰσελ-
θεῖν, ἢ δύο ὀφθαλμοὺς ἔχοντα βληθῆναι
εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός.
10 Ὁρᾶτε, μὴ καταφρονήσητε ἑνὸς τῶν
μικρῶν τούτων· λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι οἱ Ἄγ-
γελοι αὐτῶν ἐν οὐρανοῖς διὰ παντὸς βλέπουσι
τὸ πρόσωπον τοῦ Πατρός μου, τοῦ ἐν οὐρανοῖς.
11 Ἦλθε γὰρ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου σῶ-
σαι τὸ ἀπολωλός.
12 Τί ὑμῖν δοκεῖ; ἐὰν γένηταί τινι ἀν-
θρώπῳ ἑκατὸν πρόβατα, καὶ πλανηθῇ ἓν ἐξ
αὐτῶν, οὐχὶ ἀφεὶς τὰ ἐννενηκονταεννέα, ἐπὶ τὰ
ὄρη πορευθεὶς, ζητεῖ τὸ πλανώμενον;
13 Καὶ ἐὰν γένηται εὑρεῖν αὐτὸ, ἀμὴν λέ-
γω ὑμῖν, ὅτι χαίρει ἐπ' αὐτῷ μᾶλλον, ἢ ἐπὶ
τοῖς ἐννενηκονταεννέα, τοῖς μὴ πεπλανημένοις.
14 Οὕτως οὐκ ἔςι θέλημα ἔμπροσθεν τοῦ
Πατρὸς ὑμῶν, τοῦ ἐν οὐρανοῖς, ἵνα ἀπόλη-
ται εἷς τῶν μικρῶν τούτων.
15 Ἐὰν δὲ ἁμαρτήσῃ εἰς σὲ ὁ ἀδελφός
σου, ὕπαγε, καὶ ἔλεγξον αὐτὸν μεταξὺ σοῦ
καὶ αὐτοῦ μόνου· ἐάν σου ἀκούσῃ, ἐκέρδησας
τὸν ἀδελφόν σου.
16 Ἐὰν δὲ μὴ ἀκούσῃ, παράλαβε μετὰ
σοῦ ἔτι ἕνα ἢ δύο· ἵνα ἐπὶ ςόματος δύο
μαρτύρων ἢ τριῶν ςαθῇ πᾶν ῥῆμα.
17 Ἐὰν δὲ παρακούσῃ αὐτῶν, εἰπὲ τῇ ἐκ-
κλησίᾳ· ἐὰν δὲ τῆς ἐκκλησίας παρακούσῃ,
ἔςω σοι ὥσπερ ὁ ἐθνικὸς καὶ ὁ τελώνης.

18 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅσα ἐὰν δήσητε ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσαι δεδεμένα ἐν τῷ οὐρανῷ· καὶ ὅσα ἐὰν λύσητε ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσαι λελυμένα ἐν τῷ οὐρανῷ.

19 Πάλιν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐὰν δύο ὑμῶν συμφωνήσωσιν ἐπὶ τῆς γῆς περὶ παντὸς πράγματος, οὗ ἐὰν αἰτήσωνται, γενήσεται αὐτοῖς παρὰ τοῦ Πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς.

20 Οὗ γάρ εἰσι δύο ἢ τρεῖς συνηγμένοι εἰς τὸ ἐμὸν ὄνομα, ἐκεῖ εἰμι ἐν μέσῳ αὐτῶν.

21 Τότε προσελθὼν αὐτῷ ὁ Πέτρος, εἶπε· Κύριε, ποσάκις ἁμαρτήσει εἰς ἐμὲ ὁ ἀδελφός μου, καὶ ἀφήσω αὐτῷ; ἕως ἑπτάκις;

22 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Οὐ λέγω σοι, ἕως ἑπτάκις, ἀλλ᾽ ἕως ἑβδομηκοντάκις ἑπτά.

23 Διὰ τοῦτο ὡμοιώθη ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ βασιλεῖ, ὃς ἠθέλησε συνᾶραι λόγον μετὰ τῶν δούλων αὐτοῦ.

24 Ἀρξαμένου δὲ αὐτοῦ συναίρειν, προσηνέχθη αὐτῷ εἷς ὀφειλέτης μυρίων ταλάντων·

25 Μὴ ἔχοντος δὲ αὐτοῦ ἀποδοῦναι, ἐκέλευσεν αὐτὸν ὁ Κύριος αὐτοῦ πραθῆναι, καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ τὰ τέκνα, καὶ πάντα ὅσα εἶχε, καὶ ἀποδοθῆναι.

26 Πεσὼν οὖν ὁ δοῦλος προσεκύνει αὐτῷ, λέγων· Κύριε, μακροθύμησον ἐπ᾽ ἐμοί, καὶ πάντα σοι ἀποδώσω.

27 Σπλαγχνισθεὶς δὲ ὁ Κύριος τοῦ δούλου ἐκείνου, ἀπέλυσεν αὐτὸν, καὶ τὸ δάνειον ἀφῆκεν αὐτῷ.

28 Ἐξελθὼν δὲ ὁ δοῦλος ἐκεῖνος, εὗρεν ἕνα τῶν συνδούλων αὐτοῦ, ὃς ὤφειλεν αὐτῷ ἑκατὸν δηνάρια· καὶ κρατήσας αὐτὸν ἔπνιγε, λέγων· Ἀπόδος μοι, ὅ, τι ὀφείλεις.

29 Πεσὼν οὖν ὁ σύνδουλος αὐτοῦ εἰς τοὺς πόδας αὐτοῦ, παρεκάλει αὐτὸν, λέγων· Μακροθύμησον ἐπ' ἐμοὶ, καὶ πάντα ἀποδώσω σοι.

30 Ὁ δὲ οὐκ ἤθελεν· ἀλλ' ἀπελθὼν, ἔβαλεν αὐτὸν εἰς φυλακὴν, ἕως οὗ ἀποδῷ τὸ ὀφειλόμενον.

31 Ἰδόντες δὲ οἱ σύνδουλοι αὐτοῦ τὰ γενόμενα, ἐλυπήθησαν σφόδρα· καὶ ἐλθόντες διεσάφησαν τῷ Κυρίῳ αὐτῶν πάντα τὰ γενόμενα.

32 Τότε προσκαλεσάμενος αὐτὸν ὁ Κύριος αὐτοῦ, λέγει αὐτῷ· Δοῦλε πονηρὲ, πᾶσαν τὴν ὀφειλὴν ἐκείνην ἀφῆκά σοι, ἐπεὶ παρεκάλεσάς με.

33 Οὐκ ἔδει καὶ σὲ ἐλεῆσαι τὸν σύνδουλόν σου, ὡς καὶ ἐγώ σε ἠλέησα;

34 Καὶ ὀργισθεὶς ὁ Κύριος αὐτοῦ παρέδωκεν αὐτὸν τοῖς βασανισταῖς, ἕως οὗ ἀποδῷ πᾶν τὸ ὀφειλόμενον αὐτῷ.

35 Οὕτω καὶ ὁ Πατήρ μου ὁ ἐπουράνιος ποιήσει ὑμῖν, ἐὰν μὴ ἀφῆτε ἕκαστος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ἀπὸ τῶν καρδιῶν ὑμῶν τὰ παραπτώματα αὐτῶν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΘ. 19.

Τὸ δ' ἔννατον γάμοιο δεσμὸν πρὸς δέκα
Κυροῖ· καλέσας εὐλογεῖ δὲ τὰ βρέφη.
Νεανίᾳ τε προξένει πτωχὸν βίον.
Τοῖς γὰρ φιλοπτώχουσιν Οὐρανὸς γέρας.
Κἀνταῦθα πλοῦτος πολλαπλάσιος βίου.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τοὺς λόγους τούτους, μετῆρεν ἀπὸ

τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἦλθεν εἰς τὰ ὅρια τῆς Ἰουδαίας, πέραν τοῦ Ἰορδάνου.

2 Καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτοὺς ἐκεῖ.

3 Καὶ προσῆλθον αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι, πειράζοντες αὐτὸν, καὶ λέγοντες αὐτῷ· Εἰ ἔξεστιν ἀνθρώπῳ ἀπολῦσαι τὴν γυναῖκα αὐτοῦ κατὰ πᾶσαν αἰτίαν;

4 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ ἀνέγνωτε, ὅτι ὁ ποιήσας ἀπ' ἀρχῆς, ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν αὐτούς;

5 Καὶ εἶπεν, ἕνεκεν τούτου καταλείψει ἄνθρωπος τὸν Πατέρα, καὶ τὴν Μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται τῇ γυναικὶ αὐτοῦ· καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν·

6 Ὥστε οὐκ ἔτι εἰσὶ δύο, ἀλλὰ σὰρξ μία· ὃ οὖν ὁ Θεὸς συνέζευξεν, ἄνθρωπος μὴ χωριζέτω.

7 Λέγουσιν αὐτῷ· Τί οὖν Μωσῆς ἐνετείλατο δοῦναι βιβλίον ἀποστασίου, καὶ ἀπολῦσαι αὐτήν;

8 Λέγει αὐτοῖς· Ὅτι Μωσῆς πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἐπέτρεψεν ὑμῖν ἀπολῦσαι τὰς γυναῖκας ὑμῶν· ἀπ' ἀρχῆς δὲ οὐ γέγονεν οὕτω.

9 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, εἰ μὴ ἐπὶ πορνείᾳ, καὶ γαμήσῃ ἄλλην, μοιχᾶται· καὶ ὁ ἀπολελυμένην γαμήσας, μοιχᾶται.

10 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Εἰ οὕτως ἐστὶν ἡ αἰτία τοῦ ἀνθρώπου μετὰ τῆς γυναικὸς, οὐ συμφέρει γαμῆσαι.

11 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς. Οὐ πάντες χωροῦσι τὸν λόγον τοῦτον, ἀλλ' οἷς δέδοται.

12 Εἰ-

12 Εἰσὶ γὰρ εὐνοῦχοι, οἵτινες ἐκ κοι-
λίας Μητρὸς ἐγεννήθησαν οὕτω· καί εἰσιν εὐ-
νοῦχοι, οἵτινες εὐνουχίσθησαν ὑπὸ τῶν ἀν-
θρώπων· καί εἰσιν εὐνοῦχοι, οἵτινες εὐνούχι-
σαν ἑαυτοὺς διὰ τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν.
Ὁ δυνάμενος χωρεῖν, χωρείτω.

13 Τότε προσηνέχθη αὐτῷ παιδία, ἵνα
τὰς χεῖρας ἐπιθῇ αὐτοῖς, καὶ προσεύξηται·
οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπετίμησαν αὐτοῖς.

14 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἄφετε τὰ παι-
δία, καὶ μὴ κωλύετε αὐτὰ ἐλθεῖν πρός με·
τῶν γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν.

15 Καὶ ἐπιθεὶς αὐτοῖς τὰς χεῖρας, ἐπο-
ρεύθη ἐκεῖθεν.

16 Καὶ ἰδοὺ, εἷς προσελθὼν, εἶπεν αὐ-
τῷ· Διδάσκαλε ἀγαθὲ, τί ἀγαθὸν ποιή-
σω, ἵνα ἔχω ζωὴν αἰώνιον;

17 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Τί με λέγεις ἀ-
γαθόν; οὐδεὶς ἀγαθὸς, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός·
εἰ δὲ θέλεις εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν, τή-
ρησον τὰς ἐντολάς.

18 Λέγει αὐτῷ· Ποίας; Ὁ δὲ Ἰησοῦς
εἶπε· Τό· Οὐ φονεύσεις· Οὐ μοιχεύσεις·
Οὐ κλέψεις· Οὐ ψευδομαρτυρήσεις·

19 Τίμα τὸν Πατέρα σου, καὶ τὴν Μη-
τέρα· καί· Ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς
σεαυτόν.

20 Λέγει αὐτῷ ὁ νεανίσκος· Πάντα
ταῦτα ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός μου· τί ἔτι
ὑστερῶ;

21 Ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ θέλεις τέ-
λειος εἶναι, ὕπαγε, πώλησόν σου τὰ ὑπάρ-
χοντα, καὶ δὸς πτωχοῖς· καὶ ἕξεις θησαυρὸν
ἐν οὐρανῷ· καὶ δεῦρο, ἀκολούθει μοι.

22 Ἀκούσας δὲ ὁ νεανίσκος τὸν λόγον, ἀπῆλθε λυπούμενος· ἦν γὰρ ἔχων κτήματα πολλά.

23 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι δυσκόλως πλούσιος εἰσελεύσεται εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν.

24 Πάλιν δὲ λέγω ὑμῖν, εὐκοπώτερόν ἐστι κάμηλον διὰ τρυπήματος ῥαφίδος διελθεῖν, ἢ πλούσιον εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν.

25 Ἀκούσαντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐξεπλήσσοντο σφόδρα, λέγοντες· Τίς ἄρα δύναται σωθῆναι;

26 Ἐμβλέψας δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Παρὰ ἀνθρώποις τοῦτο ἀδύνατόν ἐστι, παρὰ δὲ Θεῷ πάντα δυνατά ἐστι.

27 Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος εἶπεν αὐτῷ· Ἰδοὺ, ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα, καὶ ἠκολουθήσαμέν σοι· τί ἄρα ἔσται ἡμῖν;

28 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὑμεῖς οἱ ἀκολουθήσαντές μοι, ἐν τῇ παλιγγενεσίᾳ, ὅταν καθίσῃ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ θρόνου δόξης αὐτοῦ, καθίσεσθε καὶ ὑμεῖς ἐπὶ δώδεκα θρόνους, κρίνοντες τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ.

29 Καὶ πᾶς ὃς ἀφῆκεν οἰκίας, ἢ ἀδελφοὺς, ἢ ἀδελφὰς, ἢ Πατέρα, ἢ Μητέρα, ἢ γυναῖκα, ἢ τέκνα, ἢ ἀγροὺς, ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός μου, ἑκατονταπλασίονα λήψεται, καὶ ζωὴν αἰώνιον κληρονομήσει.

30 Πολλοὶ δὲ ἔσονται πρῶτοι, ἔσχατοι· καὶ ἔσχατοι, πρῶτοι.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ. Κ'. 20.

Εἰκοστὸν αὖθις ἐργατῶν μισθαρνίαν
Ἴσην παρεισᾷ· καὶ προαγγέλλει πάθος.
Υἱῶν τε βροντῆς ἀπρεπῆ προεδρείαν.
Πιστῶν τε τυφλῶν τὴν ἀνάβλεψιν δύο.

1 Ὁ'Μοία γάρ ἐστιν ἡ βασιλεία τῶν
οὐρανῶν ἀνθρώπῳ οἰκοδεσπότῃ,
ὅστις ἐξῆλθεν ἅμα πρωῒ μισθώσασθαι ἐργά-
τας εἰς τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ.
2 Συμφωνήσας δὲ μετὰ τῶν ἐργατῶν ἐκ
δηναρίου τὴν ἡμέραν, ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς
τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ.
3 Καὶ ἐξελθὼν περὶ τὴν τρίτην ὥραν,
εἶδεν ἄλλους ἑστῶτας ἐν τῇ ἀγορᾷ ἀργούς·
4 Κἀκείνοις εἶπεν· Ὑπάγετε καὶ ὑμεῖς
εἰς τὸν ἀμπελῶνα· καὶ ὃ ἐὰν ᾖ δίκαιον,
δώσω ὑμῖν.
5 Οἱ δὲ ἀπῆλθον. Πάλιν ἐξελθὼν περὶ
ἕκτην καὶ ἐννάτην ὥραν, ἐποίησεν ὡσαύτως.
6 Περὶ δὲ τὴν ἑνδεκάτην ὥραν ἐξελθὼν,
εὗρεν ἄλλους ἑστῶτας ἀργοὺς, καὶ λέγει αὐτοῖς·
Τί ὧδε ἑστήκατε ὅλην τὴν ἡμέραν ἀργοί;
7 Λέγουσιν αὐτῷ· Ὅτι οὐδεὶς ἡμᾶς ἐμισθώ-
σατο. Λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε καὶ ὑμεῖς εἰς
τὸν ἀμπελῶνα· καὶ ὃ ἐὰν ᾖ δίκαιον, λήψεσθε.
8 Ὀψίας δὲ γενομένης λέγει ὁ Κύριος
τοῦ ἀμπελῶνος τῷ ἐπιτρόπῳ αὐτοῦ· Κάλεσον
τοὺς ἐργάτας, καὶ ἀπόδος αὐτοῖς τὸν μισθὸν,
ἀρξάμενος ἀπὸ τῶν ἐσχάτων, ἕως τῶν πρώτων.
9 Καὶ ἐλθόντες οἱ περὶ τὴν ἑνδεκάτην
ὥραν, ἔλαβον ἀνὰ δηνάριον.

10 Ἐλ-

10 Ε'λθόντες δὲ οἱ πρῶτοι, ἐνόμισαν
ὅτι πλείονα λήψονται· ϗ ἔλαβον ϗ αὐτοὶ
ἀνὰ δηνάριον.
11 Λαβόντες δὲ ἐγόγγυζον κατὰ τȣ͂ οἰ-
κοδεσπότȣ,
12 Λέγοντες· Ο'τι ȣ̃τοι οἱ ἔσχατοι μίαν
ὥραν ἐποίησαν, ϗ ἴσȣς ἡμῖν αὐτȣ̀ς ἐποίη-
σας, τοῖς βαςάσασι τὸ βάρος τῆς ἡμέ-
ρας, ϗ τὸν καύσωνα.
13 Ο' δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν ἑνὶ αὐτῶν·
Ε'ταῖρε, οὐκ ἀδικῶ σε· ȣ̓χὶ δηναρίȣ συνε-
φώνησάς μοι;
14 Α῏ρον τὸ σὸν, καὶ ὕπαγε. θέλω δὲ
τȣ́τῳ τῷ ἐσχάτῳ δοῦναι ὡς ϗ σοί.
15 Η῎ ȣ̓κ ἔξεςί μοι ποιῆσαι ὃ θέλω ἐν
τοῖς ἐμοῖς; ἢ ὁ ὀφθαλμός σȣ πονηρός ἐςιν,
ὅτι ἐγὼ ἀγαθός εἰμι;
16 Οὕτως ἔσονται οἱ ἔσχατοι, πρῶτοι· ϗ
οἱ πρῶτοι, ἔσχατοι· πολλοὶ γάρ εἰσι κλη-
τοὶ, ὀλίγοι δὲ ἐκλεκτοί.
17 Καὶ ἀναβαίνων ὁ Ι'ησȣ͂ς εἰς Ι'εροσό-
λυμα, παρέλαβε τȣ̀ς δώδεκα μαθητὰς κατ'
ἰδίαν ἐν τῇ ὁδῷ, ϗ εἶπεν αὐτοῖς·
18 Ι'δȣ̀, ἀναβαίνομεν εἰς Ι'εροσόλυμα,
ϗ ὁ Υἱὸς τȣ͂ ἀνθρώπȣ παραδοθήσεται τοῖς
Α'ρχιερεῦσι ϗ Γραμματεῦσι, ϗ κατακρινȣ͂-
σιν αὐτὸν θανάτῳ.
19 Καὶ παραδώσȣσιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσιν
εἰς τὸ ἐμπαῖξαι ϗ μαςιγῶσαι ϗ ςαυρῶσαι·
ϗ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναςήσεται.
20 Τότε προσῆλθεν αὐτῷ ἡ Μήτηρ τῶν
Υἱῶν Ζεβεδαίȣ, μετὰ τῶν Υἱῶν αὐτῆς,
προσκυνȣ͂σα, ϗ αἰτȣ͂σά τι παρ' αὐτȣ͂.
21 Ο' δὲ εἶπεν αὐτῇ· Τί θέλεις; Λέγει
αὐ-

αὐτῷ· Εἰπὲ ἵνα καθίσωσιν οὗτοι οἱ δύο
Υἱοί μου, εἷς ἐκ δεξιῶν σου, καὶ εἷς ἐξ εὐω-
νύμων ἐν τῇ βασιλείᾳ σου.
22 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· Οὐκ
οἴδατε τί αἰτεῖσθε. δύνασθε πιεῖν τὸ ποτή-
ριον, ὃ ἐγὼ μέλλω πίνειν, καὶ τὸ βάπτισ-
μα, ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθῆναι;
Λέγουσιν αὐτῷ· Δυνάμεθα.
23 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τὸ μὲν ποτήριόν
μου πίεσθε, καὶ τὸ βάπτισμα, ὃ ἐγὼ βαπτί-
ζομαι, βαπτισθήσεσθε· τὸ δὲ καθίσαι ἐκ δε-
ξιῶν μου καὶ ἐξ εὐωνύμων μου, οὐκ ἔστιν ἐμὸν δοῦ-
ναι, ἀλλ' οἷς ἡτοίμασται ὑπὸ τοῦ Πατρός μου.
24 Καὶ ἀκούσαντες οἱ δέκα, ἠγανάκτη-
σαν περὶ τῶν δύο ἀδελφῶν.
25 Ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος αὐ-
τοὺς, εἶπεν· Οἴδατε, ὅτι οἱ ἄρχοντες τῶν
ἐθνῶν κατακυριεύουσιν αὐτῶν, καὶ οἱ μεγάλοι
κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν.
26 Οὐχ οὕτως δὲ ἔσται ἐν ὑμῖν· ἀλλ' ὃς
ἐὰν θέλῃ ἐν ὑμῖν μέγας γενέσθαι, ἔστω ὑ-
μῶν διάκονος.
27 Καὶ ὃς ἐὰν θέλῃ ἐν ὑμῖν εἶναι πρῶ-
τος, ἔστω ὑμῶν δοῦλος.
28 Ὥσπερ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε
διακονηθῆναι, ἀλλὰ διακονῆσαι, καὶ δοῦναι
τὴν ψυχὴν αὐτοῦ λύτρον ἀντὶ πολλῶν.
29 Καὶ ἐκπορευομένων αὐτῶν ἀπὸ Ἱερι-
χὼ, ἠκολούθησεν αὐτῷ ὄχλος πολύς.
30 Καὶ ἰδοὺ, δύο τυφλοὶ καθήμενοι πα-
ρὰ τὴν ὁδὸν, ἀκούσαντες ὅτι Ἰησοῦς παρά-
γει, ἔκραξαν, λέγοντες· Ἐλέησον ἡμᾶς
Κύριε, Υἱὸς Δαβίδ.
31 Ὁ δὲ ὄχλος ἐπετίμησεν αὐτοῖς ἵνα

σιω-

σιωπήσωσιν· οἱ δὲ μεῖζον ἔκραζον, λέγοντες· Ἐλέησον ἡμᾶς Κύριε, Υἱὸς Δαβίδ.

32 Καὶ στὰς ὁ Ἰησοῦς ἐφώνησεν αὐτοὺς, καὶ εἶπε· Τί θέλετε ποιήσω ὑμῖν;

33 Λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἵνα ἀνοιχθῶσιν ἡμῶν οἱ ὀφθαλμοί.

34 Σπλαγχνισθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἥψατο τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν· καὶ εὐθέως ἀνέβλεψαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοὶ, καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΑ'. 21.

Πρῶτον δὲ καὶ εἰκοστὸν ἐστὶν βαίων,
Πωλοῦντες ὄττε Ἱερῶν ἐκ θριγγίων
Ἐξηλάθησαν· σὺν τυφλοῖς χωλοί θ' ἅμα
Ἐξιάθησαν· συκέη κατηράθη.
Βάπτισμα εἰς πρόβλημα κεῖται Προδρόμου.
Τέκνου τε μικροῦ παραβολὴ πειθηνίου,
Τοῦ τ' ἀμπελῶνος καὶ φονευτῶν γηπόνων,
Τοῦ τ' ἀκρογώνου εἰς δομουργίαν λίθου.
Ἐκ τ' Ἰσραὴλ δοθεῖσα εἰς Ἔθνη χάρις.

1 ΚΑὶ ὅτε ἤγγισαν εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ ἦλθον εἰς Βηθφαγῆ πρὸς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τότε ὁ Ἰησοῦς ἀπέστειλε δύο μαθητὰς,

2 Λέγων αὐτοῖς· Πορεύθητε εἰς τὴν κώμην, τὴν ἀπέναντι ὑμῶν· καὶ εὐθέως εὑρήσετε ὄνον δεδεμένην, καὶ πῶλον μετ' αὐτῆς· λύσαντες ἀγάγετέ μοι.

3 Καὶ ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ τι, ἐρεῖτε, ὅτι ὁ Κύριος αὐτῶν χρείαν ἔχει· εὐθέως δὲ ἀποστελεῖ αὐτούς.

4 Τοῦ-

4 Τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν, ἵνα πληρωθῇ
τὸ ῥηθὲν διὰ τοῦ Προφήτου, λέγοντος·
5 Εἴπατε τῇ θυγατρὶ Σιών· Ἰδού, ὁ
βασιλεύς σου ἔρχεταί σοι πραῢς, καὶ ἐπιβεβη-
κὼς ἐπὶ ὄνον, καὶ πῶλον υἱὸν ὑποζυγίου.
6 Πορευθέντες δὲ οἱ μαθηταὶ, καὶ ποιή-
σαντες καθὼς προσέταξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς,
7 Ἤγαγον τὴν ὄνον καὶ τὸν πῶλον, καὶ
ἐπέθηκαν ἐπάνω αὐτῶν τὰ ἱμάτια αὐτῶν,
καὶ ἐπεκάθισεν ἐπάνω αὐτῶν.
8 Ὁ δὲ πλεῖστος ὄχλος ἔστρωσαν ἑαυτῶν
τὰ ἱμάτια ἐν τῇ ὁδῷ· ἄλλοι δὲ ἔκοπτον κλά-
δους ἀπὸ τῶν δένδρων, καὶ ἐστρώννυον ἐν τῇ ὁδῷ.
9 Οἱ δὲ ὄχλοι οἱ προάγοντες καὶ οἱ ἀκολου-
θοῦντες, ἔκραζον, λέγοντες· Ὡσαννὰ τῷ
Υἱῷ Δαβίδ· εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν
ὀνόματι Κυρίου· Ὡσαννὰ ἐν τοῖς ὑψίστοις.
10 Καὶ εἰσελθόντος αὐτοῦ εἰς Ἱεροσόλυ-
μα, ἐσείσθη πᾶσα ἡ πόλις, λέγουσα·
Τίς ἐστιν οὗτος;
11 Οἱ δὲ ὄχλοι ἔλεγον· Οὗτός ἐστιν Ἰησοῦς
ὁ Προφήτης, ὁ ἀπὸ Ναζαρὲτ τῆς Γαλιλαίας.
12 Καὶ εἰσῆλθεν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ Ἱερὸν
τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐξέβαλε πάντας τοὺς πωλοῦντας
καὶ ἀγοράζοντας ἐν τῷ Ἱερῷ, καὶ τὰς τραπέ-
ζας τῶν κολλυβιστῶν κατέστρεψε, καὶ τὰς κα-
θέδρας τῶν πωλούντων τὰς περιστεράς.
13 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Γέγραπται· Ὁ
οἶκός μου, οἶκος προσευχῆς κληθήσεται· ὑ-
μεῖς δὲ αὐτὸν ἐποιήσατε σπήλαιον λῃστῶν.
14 Καὶ προσῆλθον αὐτῷ τυφλοὶ καὶ χω-
λοὶ ἐν τῷ Ἱερῷ· καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς.
15 Ἰδόντες δὲ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμμα-
τεῖς τὰ θαυμάσια ἃ ἐποίησε, καὶ τοὺς παῖ-

δας κράζοντας ἐν τῷ Ἱερῷ, καὶ λέγοντας·
Ὡσαννὰ τῷ Υἱῷ Δαβὶδ, ἠγανάκτησαν·
16 Καὶ εἶπον αὐτῷ· Ἀκούεις τί οὗτοι λέ-
γουσιν; Ὁ δὲ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· Ναί.
οὐδέποτε ἀνέγνωτε, Ὅτι ἐκ στόματος νη-
πίων καὶ θηλαζόντων κατηρτίσω αἶνον;
17 Καὶ καταλιπὼν αὐτοὺς, ἐξῆλθεν ἔξω
τῆς πόλεως εἰς Βηθανίαν· καὶ ηὐλίσθη ἐκεῖ.
18 Πρωΐας δὲ ἐπανάγων εἰς τὴν πόλιν,
ἐπείνασε.
19 Καὶ ἰδὼν συκῆν μίαν ἐπὶ τῆς ὁδοῦ,
ἦλθεν ἐπ' αὐτὴν, καὶ οὐδὲν εὗρεν ἐν αὐτῇ εἰ
μὴ φύλλα μόνον· καὶ λέγει αὐτῇ· Μηκέτι
ἐκ σοῦ καρπὸς γένηται εἰς τὸν αἰῶνα· Καὶ
ἐξηράνθη παραχρῆμα ἡ συκῆ.
20 Καὶ ἰδόντες οἱ μαθηταὶ, ἐθαύμα-
σαν, λέγοντες· Πῶς παραχρῆμα ἐξηράν-
θη ἡ συκῆ;
21 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν ἔχητε πίστιν,
καὶ μὴ διακριθῆτε, οὐ μόνον τὸ τῆς συκῆς ποιήσε-
τε, ἀλλὰ κἂν τῷ ὄρει τούτῳ εἴπητε· Ἄρθη-
τι, καὶ βλήθητι εἰς τὴν θάλασσαν, γενήσεται.
22 Καὶ πάντα ὅσα ἂν αἰτήσητε ἐν τῇ
Προσευχῇ, πιστεύοντες, λήψεσθε.
23 Καὶ ἐλθόντι αὐτῷ εἰς τὸ Ἱερὸν, προ-
σῆλθον αὐτῷ διδάσκοντι οἱ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ
Πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ, λέγοντες· Ἐν ποίᾳ
ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιεῖς; καὶ τίς σοι ἔδωκε τὴν
ἐξουσίαν ταύτην;
24 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Ἐρωτήσω ὑμᾶς κἀγὼ λόγον ἕνα·
ὃν ἐὰν εἴπητέ μοι, κἀγὼ ὑμῖν ἐρῶ ἐν ποίᾳ
ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ.

25 Τὸ Βάπτισμα Ἰωάννου πόθεν ἦν; ἐξ οὐρανοῦ, ἢ ἐξ ἀνθρώπων; Οἱ δὲ διελογίζοντο παρ' ἑαυτοῖς, λέγοντες· Ἐὰν εἴπωμεν, Ἐξ οὐρανοῦ, ἐρεῖ ἡμῖν· Διατί οὖν οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ;

26 Ἐὰν δὲ εἴπωμεν, Ἐξ ἀνθρώπων, φοβούμεθα τὸν ὄχλον· πάντες γὰρ ἔχουσι τὸν Ἰωάννην ὡς Προφήτην.

27 Καὶ ἀποκριθέντες τῷ Ἰησοῦ, εἶπον· Οὐκ οἴδαμεν. Ἔφη αὐτοῖς καὶ αὐτός· Οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ.

28 Τί δὲ ὑμῖν δοκεῖ; Ἄνθρωπος εἶχε τέκνα δύο, καὶ προσελθὼν τῷ πρώτῳ, εἶπε· Τέκνον, ὕπαγε, σήμερον ἐργάζου ἐν τῷ ἀμπελῶνί μου.

29 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐ θέλω· ὕστερον δὲ μεταμεληθεὶς, ἀπῆλθε.

30 Καὶ προσελθὼν τῷ δευτέρῳ, εἶπεν ὡσαύτως. Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἐγὼ Κύριε, καὶ οὐκ ἀπῆλθε.

31 Τίς ἐκ τῶν δύο ἐποίησε τὸ θέλημα τοῦ Πατρός; Λέγουσιν αὐτῷ· Ὁ Πρῶτος. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οἱ τελῶναι καὶ αἱ πόρναι προάγουσιν ὑμᾶς εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

32 Ἦλθε γὰρ πρὸς ὑμᾶς Ἰωάννης ἐν ὁδῷ δικαιοσύνης, καὶ οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ· οἱ δὲ τελῶναι καὶ αἱ πόρναι ἐπίστευσαν αὐτῷ· ὑμεῖς δὲ ἰδόντες οὐ μετεμελήθητε ὕστερον, τοῦ πιστεῦσαι αὐτῷ.

33 Ἄλλην παραβολὴν ἀκούσατε. Ἄνθρωπός τις ἦν οἰκοδεσπότης, ὅστις ἐφύτευσεν ἀμπελῶνα, καὶ φραγμὸν αὐτῷ περιέθηκε, καὶ ὤρυξεν ἐν αὐτῷ ληνὸν, καὶ ᾠκοδόμησε

πύρ-

πύργον· καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς, καὶ ἀπεδήμησεν.

34 Ὅτε δὲ ἤγγισεν ὁ καιρὸς τῶν καρπῶν, ἀπέστειλε τοὺς δούλους αὐτοῦ πρὸς τοὺς γεωργοὺς, λαβεῖν τοὺς καρποὺς αὐτοῦ·

35 Καὶ λαβόντες οἱ γεωργοὶ τοὺς δούλους αὐτοῦ, ὃν μὲν ἔδειραν, ὃν δὲ ἀπέκτειναν, ὃν δὲ ἐλιθοβόλησαν.

36 Πάλιν ἀπέστειλεν ἄλλους δούλους πλείονας τῶν πρώτων· καὶ ἐποίησαν αὐτοῖς ὡσαύτως.

37 Ὕστερον δὲ ἀπέστειλε πρὸς αὐτοὺς τὸν Υἱὸν αὐτοῦ, λέγων· Ἐντραπήσονται τὸν Υἱόν μου.

38 Οἱ δὲ γεωργοὶ ἰδόντες τὸν Υἱὸν, εἶπον ἐν ἑαυτοῖς· Οὗτός ἐστιν ὁ κληρονόμος, δεῦτε, ἀποκτείνωμεν αὐτὸν, καὶ κατάσχωμεν τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ.

39 Καὶ λαβόντες αὐτὸν ἐξέβαλον ἔξω τοῦ ἀμπελῶνος, καὶ ἀπέκτειναν.

40 Ὅταν οὖν ἔλθῃ ὁ Κύριος τοῦ ἀμπελῶνος, τί ποιήσει τοῖς γεωργοῖς ἐκείνοις;

41 Λέγουσιν αὐτῷ· Κακοὺς κακῶς ἀπολέσει αὐτούς· Καὶ τὸν ἀμπελῶνα ἐκδώσεται ἄλλοις γεωργοῖς, οἵτινες ἀποδώσουσιν αὐτῷ τοὺς καρποὺς ἐν τοῖς καιροῖς αὐτῶν.

42 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐδέποτε ἀνέγνωτε ἐν ταῖς γραφαῖς· Λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας· παρὰ Κυρίου ἐγένετο αὕτη, καὶ ἔστι θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν;

43 Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, ὅτι ἀρθήσεται ἀφ' ὑμῶν ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ, καὶ δοθήσεται ἔθνει ποιοῦντι τοὺς καρποὺς αὐτῆς.

44 Καὶ ὁ πεσὼν ἐπὶ τὸν λίθον τοῦτον, συνθλασθήσεται· ἐφ' ὃν δ' ἂν πέσῃ, λικμήσει αὐτόν.

45 Καὶ

45 Καὶ ἀκούσαντες οἱ Α᾿ρχιερεῖς καὶ οἱ
Φαρισαῖοι τὰς παραβολὰς αὐτοῦ, ἔγνωσαν
ὅτι περὶ αὐτῶν λέγει·
46 Καὶ ζητοῦντες αὐτὸν κρατῆσαι, ἐφο-
βήθησαν τοὺς ὄχλους, ἐπειδὴ ὡς Προφήτην
αὐτὸν εἶχον.

ΚΕΦΑ΄ΛΑΙΟΝ, ΚΒ΄. 22.

Εἰκοστὸν εἰς γάμους δὲ δεύτερον φέρει,
Ταύρους μὲν ἀξίους γε, κλητοὺς μνείους.
Δίλημμα κῆνσου· καὶ Σαδδουκαίων λύει
Γυναῖκα πολύζευκτον ἐν Α᾿ναστάσει,
Ε῎ναλμα πρῶτον· πῶς Δαβὶδ Χριστὸς γόνος.

1 ΚΑὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ι᾿ησοῦς, πάλιν
εἶπεν αὐτοῖς ἐν παραβολαῖς,
λέγων·
2 Ω῾μοιώθη ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀν-
θρώπῳ βασιλεῖ, ὅστις ἐποίησε γάμους τῷ
Υἱῷ αὐτοῦ.
3 Καὶ ἀπέστειλε τοὺς δούλους αὐτοῦ καλέ-
σαι τοὺς κεκλημένους εἰς τοὺς γάμους· καὶ οὐκ
ἤθελον ἐλθεῖν.
4 Πάλιν ἀπέστειλεν ἄλλους δούλους, λέ-
γων· Εἴπατε τοῖς κεκλημένοις· Ι᾿δοὺ, τὸ
ἄριστόν μου ἡτοίμασα, οἱ ταῦροί μου καὶ τὰ σι-
τιστὰ τεθυμένα, καὶ πάντα ἕτοιμα· δεῦτε εἰς
τοὺς γάμους·
5 Οἱ δὲ ἀμελήσαντες, ἀπῆλθον· ὁ μὲν
εἰς τὸν ἴδιον ἀγρὸν, ὁ δὲ εἰς τὴν ἐμπορείαν αὐτοῦ.
6 Οἱ δὲ λοιποὶ, κρατήσαντες τοὺς δούλους
αὐτοῦ, ὕβρισαν καὶ ἀπέκτειναν.
7 Α᾿κούσας δὲ ὁ Βασιλεὺς ὠργίσθη· καὶ
πέμ-

πέμψας τὰ στρατεύματα αὐτοῦ, ἀπώλεσε τοὺς
φονεῖς ἐκείνους, καὶ τὴν πόλιν αὐτῶν ἐνέπρησε.
8 Τότε λέγει τοῖς δούλοις αὐτοῦ· Ὁ μὲν
γάμος ἕτοιμός ἐστιν, οἱ δὲ κεκλημένοι οὐκ
ἦσαν ἄξιοι.
9 Πορεύεσθε οὖν ἐπὶ τὰς διεξόδους τῶν ὁδῶν,
καὶ ὅσους ἂν εὕρητε, καλέσατε εἰς τοὺς γάμους.
10 Καὶ ἐξελθόντες οἱ δοῦλοι ἐκεῖνοι εἰς
τὰς ὁδοὺς, συνήγαγον πάντας ὅσους εὗρον,
πονηρούς τε καὶ ἀγαθούς· καὶ ἐπλήσθη ὁ γάμος
ἀνακειμένων.
11 Εἰσελθὼν δὲ ὁ βασιλεὺς θεάσασθαι
τοὺς ἀνακειμένους, εἶδεν ἐκεῖ ἄνθρωπον οὐκ
ἐνδεδυμένον ἔνδυμα γάμου.
12 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ἑταῖρε, πῶς εἰσῆλθες
ὧδε μὴ ἔχων ἔνδυμα γάμου. Ὁ δὲ ἐφιμώθη.
13 Τότε εἶπεν ὁ βασιλεὺς τοῖς διακό-
νοις· Δήσαντες αὐτοῦ πόδας καὶ χεῖρας, ἄ-
ρατε αὐτὸν, καὶ ἐκβάλετε εἰς τὸ σκότος τὸ
ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγ-
μὸς τῶν ὀδόντων.
14 Πολλοὶ γάρ εἰσι κλητοὶ, ὀλίγοι δὲ
ἐκλεκτοί.
15 Τότε πορευθέντες οἱ Φαρισαῖοι,
συμβούλιον ἔλαβον ὅπως αὐτὸν παγιδεύσω-
σιν ἐν λόγῳ.
16 Καὶ ἀποστέλλουσιν αὐτῷ τοὺς μαθητὰς
αὐτῶν μετὰ τῶν Ἡρωδιανῶν, λέγοντες· Δι-
δάσκαλε, οἴδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ, καὶ τὴν
ὁδὸν τοῦ Θεοῦ ἐν ἀληθείᾳ διδάσκεις, καὶ οὐ
μέλει σοι περὶ οὐδενός· οὐ γὰρ βλέπεις εἰς
πρόσωπον ἀνθρώπων.
17 Εἰπὲ οὖν ἡμῖν, τί σοι δοκεῖ; ἔξεστι
δοῦναι κῆνσον Καίσαρι, ἢ οὔ;

18 Γνοὺς

18 Γνοὺς δὲ ὁ Ἰησοῦς τὴν πονηρίαν αὐτῶν,
εἶπε· Τί με πειράζετε ὑποκριταί;
19 Ἐπιδείξατέ μοι τὸ νόμισμα τοῦ κήνσου.
Οἱ δὲ προσήνεγκαν αὐτῷ δηνάριον.
20 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τίνος ἡ εἰκὼν αὕ-
τη καὶ ἡ ἐπιγραφή;
21 Λέγουσιν αὐτῷ· Καίσαρος. Τότε λέ-
γει αὐτοῖς· Ἀπόδοτε οὖν τὰ Καίσαρος,
Καίσαρι· καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ, τῷ Θεῷ.
22 Καὶ ἀκούσαντες ἐθαύμασαν· καὶ ἀ-
φέντες αὐτὸν ἀπῆλθον.
23 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ προσῆλθον αὐ-
τῷ Σαδδουκαῖοι, οἱ λέγοντες μὴ εἶναι ἀνά-
στασιν· καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν,
24 Λέγοντες· Διδάσκαλε, Μωσῆς εἶ-
πεν· Ἐάν τις ἀποθάνῃ μὴ ἔχων τέκνα, ἐπι-
γαμβρεύσει ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐ-
τοῦ, καὶ ἀναστήσει σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.
25 Ἦσαν δὲ παρ' ἡμῖν ἑπτὰ ἀδελφοί· καὶ ὁ
πρῶτος, γαμήσας ἐτελεύτησε· καὶ μὴ ἔχων σπέρ-
μα, ἀφῆκε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.
26 Ὁμοίως καὶ ὁ δεύτερος, καὶ ὁ τρίτος,
ἕως τῶν ἑπτά.
27 Ὕστερον δὲ πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ γυνή.
28 Ἐν τῇ οὖν ἀναστάσει, τίνος τῶν ἑπτὰ
ἔσται γυνή; πάντες γὰρ ἔσχον αὐτήν.
29 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Πλανᾶσθε, μὴ εἰδότες τὰς γραφὰς,
μηδὲ τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ.
30 Ἐν γὰρ τῇ ἀναστάσει οὔτε γαμοῦσιν,
οὔτε ἐκγαμίζονται, ἀλλ' ὡς ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ
ἐν οὐρανῷ εἰσι.
31 Περὶ δὲ τῆς ἀναστάσεως τῶν νεκρῶν οὐκ ἀνέ-
γνωτε τὸ ῥηθὲν ὑμῖν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, λέγοντος·

32 Ε'γώ εἰμι ὁ Θεὸς Α'βραὰμ, καὶ ὁ Θεὸς Ι'σαὰκ, καὶ ὁ Θεὸς Ι'ακὼβ; οὐκ ἔστιν ὁ Θεὸς, Θεὸς Νεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων

33 Καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι, ἐξεπλήσσοντο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ.

34 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι, ἀκούσαντες ὅτι ἐφίμωσε τοὺς Σαδδουκαίους, συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτό·

35 Καὶ ἐπηρώτησεν εἷς ἐξ αὐτῶν νομικὸς, πειράζων αὐτὸν, καὶ λέγων·

36 Διδάσκαλε, ποία ἐντολὴ μεγάλη ἐν τῷ Νόμῳ;

37 Ο' δὲ Ι'ησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Α'γαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐν ὅλῃ τῇ καρδίᾳ σου, καὶ ἐν ὅλῃ τῇ ψυχῇ σου, καὶ ἐν ὅλῃ τῇ διανοίᾳ σου.

38 Αὕτη ἐστὶ πρώτη καὶ μεγάλη ἐντολή.

39 Δευτέρα δὲ ὁμοία αὐτῇ· Α'γαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτόν.

40 Ε'ν ταύταις ταῖς δυσὶν ἐντολαῖς ὅλος ὁ νόμος καὶ οἱ Προφῆται κρέμανται.

41 Συνηγμένων δὲ τῶν Φαρισαίων, ἐπηρώτησεν αὐτοὺς ὁ Ι'ησοῦς,

42 Λέγων· Τί ὑμῖν δοκεῖ περὶ τοῦ Χριστοῦ, τίνος Υἱός ἐστι; λέγουσιν αὐτῷ, τοῦ Δαβίδ.

43 Λέγει αὐτοῖς· Πῶς οὖν Δαβὶδ ἐν Πνεύματι Κύριον αὐτὸν καλεῖ, λέγων·

44 Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθου ἐκ δεξιῶν μου, ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου;

45 Εἰ οὖν Δαβὶδ καλεῖ αὐτὸν Κύριον, πῶς Υἱὸς αὐτοῦ ἐστι;

46 Καὶ οὐδεὶς ἐδύνατο αὐτῷ ἀποκριθῆναι λόγον· οὐδὲ ἐτόλμησέ τις ἀπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἐπερωτῆσαι αὐτὸν οὐκέτι.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΓ'. 23.

Εἰκοσὸν Οὐαὶ Γραμματεῦσι τὸ τρίτον,
Ὑποκριταῖς τε Φαρισαίοις πλειςάκις·
Ἀπειλέει τε τῇ θεοκτόνῳ πόλει.

1 ΤΟ'τε ὁ Ἰησοῦς ἐλάλησε τοῖς ὄχ-
λοις καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ,
2 Λέγων· Ἐπὶ τῆς Μωσέως καθέδρας
ἐκάθισαν οἱ Γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι·
3 Πάντα οὖν ὅσα ἂν εἴπωσιν ὑμῖν τηρεῖν,
τηρεῖτε καὶ ποιεῖτε· κατὰ δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν
μὴ ποιεῖτε· λέγουσι γὰρ, καὶ οὐ ποιοῦσι.
4 Δεσμεύουσι γὰρ φορτία βαρέα καὶ δυσ-
βάςακτα, καὶ ἐπιτιθέασιν ἐπὶ τοὺς ὤμους τῶν
ἀνθρώπων· τῷ δὲ δακτύλῳ αὐτῶν οὐ θέλου-
σι κινῆσαι αὐτά.
5 Πάντα δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν ποιοῦσι πρὸς
τὸ θεαθῆναι τοῖς ἀνθρώποις. πλατύνουσι
δὲ τὰ φυλακτήρια αὐτῶν, καὶ μεγαλύνουσι
τὰ κράσπεδα τῶν ἱματίων αὐτῶν.
6 Φιλοῦσί τε τὴν πρωτοκλισίαν ἐν τοῖς
δείπνοις, καὶ τὰς πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς
συναγωγαῖς,
7 Καὶ τοὺς ἀσπασμοὺς ἐν ταῖς ἀγοραῖς,
καὶ καλεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, Ῥαββὶ,
Ῥαββί.
8 Ὑμεῖς δὲ μὴ κληθῆτε Ῥαββί· εἷς
γάρ ἐςιν ὑμῶν ὁ καθηγητὴς, ὁ Χριςός·
πάντες δὲ ὑμεῖς, ἀδελφοί ἐςε.
9 Καὶ Πατέρα μὴ καλέσητε ὑμῶν ἐπὶ
τῆς γῆς· εἷς γάρ ἐςιν ὁ Πατὴρ ὑμῶν, ὁ
ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

10 Μηδὲ κληθῆτε καθηγηταί· εἷς γὰρ ὑμῶν ἐστιν ὁ καθηγητὴς, ὁ Χριστός.

11 Ὁ δὲ μείζων ὑμῶν, ἔσαι ὑμῶν διάκονος.

12 Ὅστις δὲ ὑψώσει ἑαυτὸν, ταπεινωθήσεται· καὶ ὅστις ταπεινώσει ἑαυτὸν, ὑψωθήσεται.

13 Οὐαὶ δὲ ὑμῖν Γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι κλείετε τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων· ὑμεῖς γὰρ οὐκ εἰσέρχεσθε, οὐδὲ τοὺς εἰσερχομένους ἀφίετε εἰσελθεῖν.

14 Οὐαὶ ὑμῖν Γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι κατεσθίετε τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν, καὶ προφάσει μακρὰ προσευχόμενοι· διὰ τοῦτο λήψεσθε περισσότερον κρίμα.

15 Οὐαὶ ὑμῖν Γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι περιάγετε τὴν θάλασσαν καὶ τὴν ξηρὰν, ποιῆσαι ἕνα προσήλυτον· καὶ ὅταν γένηται, ποιεῖτε αὐτὸν Υἱὸν γεέννης διπλότερον ὑμῶν.

16 Οὐαὶ ὑμῖν ὁδηγοὶ τυφλοὶ, οἱ λέγοντες· Ὃς ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ Ναῷ, οὐδέν ἐστιν· ὃς δ' ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ χρυσῷ τοῦ ναοῦ, ὀφείλει.

17 Μωροὶ καὶ τυφλοί· τίς γὰρ μείζων ἐστὶν, ὁ χρυσὸς, ἢ ὁ Ναὸς ὁ ἁγιάζων τὸν χρυσόν;

18 Καί· Ὃς ἐὰν ὀμόσῃ ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, οὐδέν ἐστιν· ὃς δ' ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ δώρῳ τῷ ἐπάνω αὐτοῦ, ὀφείλει.

19 Μωροὶ καὶ τυφλοί· τί γὰρ μεῖζον; τὸ δῶρον, ἢ τὸ θυσιαστήριον τὸ ἁγιάζον τὸ δῶρον;

20 Ὁ οὖν ὀμόσας ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, ὀμνύει ἐν αὐτῷ καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἐπάνω αὐτοῦ.

21 Καὶ ὁ ὀμόσας ἐν τῷ Ναῷ, ὀμνύει ἐν αὐτῷ ϗ ἐν τῷ κατοικοῦντι αὐτόν.

22 Καὶ ὁ ὀμόσας ἐν τῷ οὐρανῷ, ὀμνύει ἐν τῷ Θρόνῳ τοῦ Θεοῦ, ϗ ἐν τῷ καθημένῳ ἐπάνω αὐτοῦ.

23 Οὐαὶ ὑμῖν Γραμματεῖς ϗ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι ἀποδεκατοῦτε τὸ ἡδύοσμον καὶ τὸ ἄνηθον ϗ τὸ κύμινον, καὶ ἀφήκατε τὰ βαρύτερα τοῦ νόμου, τὴν κρίσιν καὶ τὸν ἔλεον ϗ τὴν πίστιν· ταῦτα ἔδει ποιῆσαι, κἀκεῖνα μὴ ἀφιέναι.

24 Ὁδηγοὶ τυφλοὶ, οἱ διϋλίζοντες τὸν κώνωπα, τὴν δὲ κάμηλον καταπίνοντες.

25 Οὐαὶ ὑμῖν Γραμματεῖς ϗ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι καθαρίζετε τὸ ἔξωθεν τοῦ ποτηρίου ϗ τῆς παροψίδος, ἔσωθεν δὲ γέμουσιν ἐξ ἁρπαγῆς ϗ ἀκρασίας.

26 Φαρισαῖε τυφλὲ, καθάρισον πρῶτον τὸ ἐντὸς τοῦ ποτηρίου ϗ τῆς παροψίδος, ἵνα γένηται ϗ τὸ ἐκτὸς αὐτῶν καθαρόν.

27 Οὐαὶ ὑμῖν Γραμματεῖς ϗ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι παρομοιάζετε τάφοις κεκονιαμένοις, οἵτινες ἔξωθεν μὲν φαίνονται ὡραῖοι, ἔσωθεν δὲ γέμουσιν ὀστέων νεκρῶν καὶ πάσης ἀκαθαρσίας.

28 Οὕτω καὶ ὑμεῖς ἔξωθεν μὲν φαίνεσθε τοῖς ἀνθρώποις δίκαιοι, ἔσωθεν δὲ μεστοί ἐστε ὑποκρίσεως ϗ ἀνομίας.

29 Οὐαὶ ὑμῖν Γραμματεῖς ϗ Φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι οἰκοδομεῖτε τοὺς τάφους τῶν Προφητῶν, ϗ κοσμεῖτε τὰ μνημεῖα τῶν δικαίων.

30 Καὶ λέγετε· Εἰ ἦμεν ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν Πατέρων ἡμῶν, οὐκ ἂν ἦμεν κοινωνοὶ αὐτῶν ἐν τῷ αἵματι τῶν Προφητῶν.

31 Ὥςε μαρτυρεῖτε ἑαυτοῖς, ὅτι Υἱοί ἐςε τῶν φονδυσάντων τὺς Προφήτας.

32 Καὶ ὑμεῖς ἐπληρώσατε τὸ μέτρον τῶν Πατέρων ὑμῶν.

33 Ὄφεις, γεννήματα ἐχιδνῶν, πῶς φύγητε ἀπὸ τῆς κρίσεως τῆς γεέννης;

34 Διὰ τοῦτο, ἰδού, ἐγὼ ἀποςέλλω πρὸς ὑμᾶς Προφήτας, καὶ σοφὺς, καὶ Γραμματεῖς· καὶ ἐξ αὐτῶν ἀποκτενεῖτε καὶ ςαυρώσετε, καὶ ἐξ αὐτῶν μαςιγώσετε ἐν ταῖς συναγωγαῖς ὑμῶν, καὶ διώξετε ἀπὸ πόλεως εἰς πόλιν·

35 Ὅπως ἔλθῃ ἐφ' ὑμᾶς πᾶν αἷμα δίκαιον, ἐκχυνόμενον ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ τῦ αἵματος Ἄβελ τῦ δικαίυ, ἕως τοῦ αἵματος Ζαχαρίυ Υἱοῦ Βαραχίυ, ὃν ἐφονεύσατε μεταξὺ τῦ Ναῦ καὶ τῦ Θυσιαςηρίυ.

36 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἥξει ταῦτα πάντα ἐπὶ τὴν γενεὰν ταύτην.

37 Ἱερυσαλὴμ, Ἱερυσαλὴμ, ἡ ἀποκτείνυσα τὺς Προφήτας, καὶ λιθοβολῦσα τὺς ἀπεςαλμένυς πρὸς αὐτὴν, ποσάκις ἠθέλησα ἐπισυναγαγεῖν τὰ τέκνα συ, ὃν τρόπον ἐπισυνάγει ὄρνις τὰ νοσσία ἑαυτῆς ὑπὸ τὰς πτέρυγας, καὶ ὐκ ἠθελήσατε;

38 Ἰδού, ἀφίεται ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρημος.

39 Λέγω γὰρ ὑμῖν· Οὐ μή με ἴδητε ἀπ' ἄρτι, ἕως ἂν εἴπητε· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίυ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΔ'. 24.

Εἰκοσὸν οὖν τέταρτον ἡ καταστροφὴ
Ναοῦ τε καὶ πόλιος. ἡ τ᾽ ἐνδημία
Ψευδοπροφητῶν, ψευδοχρίστων τε πλανῶν.
Μάχαι τε, λοιμοὶ, καὶ φόνοι χριστωνύμοις,
Παγκόσμιον κήρυγμα, συντέλειά τε·
Μόρος τ᾽ ἀπροσδόκητος ἠμεληκόσι.

1 ΚΑὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἐπορεύετο ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ· καὶ προσῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπιδεῖξαι αὐτῷ τὰς οἰκοδομὰς τοῦ ἱεροῦ.

* 2 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ βλέπετε πάντα ταῦτα; ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀφεθῇ ὧδε λίθος ἐπὶ λίθον, ὃς οὐ μὴ καταλυθήσεται.

3 Καθημένου δὲ αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ ὄρους τῶν ἐλαιῶν, προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ κατ᾽ ἰδίαν, λέγοντες· Εἰπὲ ἡμῖν, πότε ταῦτα ἔσται, καὶ τί τὸ σημεῖον τῆς σῆς παρουσίας, καὶ τῆς συντελείας τοῦ αἰῶνος;

4 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Βλέπετε μήτις ὑμᾶς πλανήσῃ.

5 Πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, λέγοντες· Ἐγώ εἰμι ὁ Χριστός· καὶ πολλοὺς πλανήσουσι.

6 Μελλήσετε δὲ ἀκούειν πολέμους, καὶ ἀκοὰς πολέμων. ὁρᾶτε μὴ θροεῖσθε· δεῖ γὰρ πάντα γενέσθαι· ἀλλ᾽ οὔπω ἐστὶ τὸ τέλος.

7 Ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνος ἐπὶ ἔθνος, καὶ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν· καὶ ἔσονται λιμοὶ καὶ λοιμοὶ, καὶ σεισμοὶ κατὰ τόπους.

8 Πάντα δὲ ταῦτα ἀρχὴ ὠδίνων·
9 Τότε παραδώσουσιν ὑμᾶς εἰς θλίψιν,
καὶ ἀποκτενοῦσιν ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε μισούμενοι
ὑπὸ πάντων τῶν ἐθνῶν διὰ τὸ ὄνομά μου.
10 Καὶ τότε σκανδαλισθήσονται πολλοί·
καὶ ἀλλήλους παραδώσουσι, καὶ μισήσουσιν
ἀλλήλους.
11 Καὶ πολλοὶ ψευδοπροφῆται ἐγερθή-
σονται, καὶ πλανήσουσι πολλούς.
12 Καὶ διὰ τὸ πληθυνθῆναι τὴν ἀνο-
μίαν, ψυγήσεται ἡ ἀγάπη τῶν πολλῶν.
13 Ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, οὗτος σω-
θήσεται.
14 Καὶ κηρυχθήσεται τοῦτο τὸ Εὐαγγέλιον
τῆς βασιλείας ἐν ὅλῃ τῇ οἰκουμένῃ, εἰς μαρτύ-
ριον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι· καὶ τότε ἥξει τὸ τέλος.
15 Ὅταν οὖν ἴδητε τὸ βδέλυγμα τῆς
ἐρημώσεως, τὸ ῥηθὲν διὰ Δανιὴλ τοῦ Προ-
φήτου, ἑστὼς ἐν τόπῳ ἁγίῳ· (ὁ ἀναγινώ-
σκων νοείτω.)
16 Τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ φευγέτωσαν
ἐπὶ τὰ ὄρη.
17 Ὁ ἐπὶ τοῦ δώματος, μὴ καταβαινέτω
ἆραί τι ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ.
18 Καὶ ὁ ἐν τῷ ἀγρῷ, μὴ ἐπιστρεψάτω
ὀπίσω ἆραι τὰ ἱμάτια αὐτοῦ.
19 Οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχούσαις καὶ
ταῖς θηλαζούσαις ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.
20 Προσεύχεσθε δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυ-
γὴ ὑμῶν χειμῶνος, μηδὲ ἐν Σαββάτῳ.
21 Ἔσται γὰρ τότε θλίψις μεγάλη, οἵα
οὐ γέγονεν ἀπ' ἀρχῆς κόσμου ἕως τοῦ νῦν, οὐδ'
οὐ μὴ γένηται.
22 Καὶ εἰ μὴ ἐκολοβώθησαν αἱ ἡμέραι
ἐκεῖ-

ἐκεῖναι, οὐκ ἂν ἐσώθη πᾶσα σάρξ· διὰ δὲ
τοὺς ἐκλεκτοὺς κολοβωθήσονται αἱ ἡμέραι
ἐκεῖναι.
23 Τότε ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ· Ἰδοὺ, ὧδε
ὁ Χριστὸς ἢ ὧδε· μὴ πιστεύσητε.
24 Ἐγερθήσονται γὰρ ψευδόχριστοι καὶ
ψευδοπροφῆται, καὶ δώσουσι σημεῖα μεγάλα
καὶ τέρατα· ὥστε πλανῆσαι, εἰ δυνατὸν, καὶ
τοὺς ἐκλεκτούς.
25 Ἰδοὺ, προείρηκα ὑμῖν.
26 Ἐὰν οὖν εἴπωσιν ὑμῖν· Ἰδοὺ, ἐν τῇ
ἐρήμῳ ἐστί· μὴ ἐξέλθητε· ἰδοὺ, ἐν τοῖς τα-
μείοις μὴ πιστεύσητε.
27 Ὥσπερ γὰρ ἡ ἀστραπὴ ἐξέρχεται ἀπὸ
ἀνατολῶν, καὶ φαίνεται ἕως δυσμῶν, οὕτως
ἔσται καὶ ἡ παρουσία τοῦ Υἱοῦ ἀνθρώπου.
28 Ὅπου γὰρ ἐὰν ᾖ τὸ πτῶμα, ἐκεῖ συ-
ναχθήσονται οἱ ἀετοί.
29 Εὐθέως δὲ μετὰ τὴν θλίψιν τῶν ἡ-
μερῶν ἐκείνων ὁ Ἥλιος σκοτισθήσεται, καὶ ἡ
Σελήνη οὐ δώσει τὸ φέγγος αὐτῆς, καὶ οἱ ἀστέ-
ρες πεσοῦνται ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ αἱ δυνάμεις
τῶν οὐρανῶν σαλευθήσονται.
30 Καὶ τότε φανήσεται τὸ σημεῖον τοῦ Υἱοῦ
τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῷ οὐρανῷ· καὶ τότε κόψονται
πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς, καὶ ὄψονται τὸν
Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφελῶν
τοῦ οὐρανοῦ, μετὰ δυνάμεως καὶ δόξης πολλῆς.
31 Καὶ ἀποστελεῖ τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ μετὰ
σάλπιγγος καὶ φωνῆς μεγάλης· καὶ ἐπισυνά-
ξουσι τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέ-
μων, ἀπ' ἄκρων οὐρανῶν ἕως ἄκρων αὐτῶν.
32 Ἀπὸ δὲ τῆς συκῆς μάθετε τὴν πα-
ραβολήν· ὅταν ἤδη ὁ κλάδος αὐτῆς γένηται

ἁπαλὸς, καὶ τὰ φύλλα ἐκφύῃ, γινώσκετε
ὅτι ἐγγὺς τὸ θέρος.
33 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ἴδητε πάντα ταῦ-
τα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἐπὶ θύραις.
34 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ παρέλθῃ ἡ
γενεὰ αὕτη, ἕως ἂν πάντα ταῦτα γένηται.
35 Ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται. οἱ
δὲ λόγοι μου οὐ μὴ παρέλθωσι.
36 Περὶ δὲ τῆς ἡμέρας ἐκείνης, καὶ τῆς
ὥρας οὐδεὶς οἶδεν, οὐδὲ οἱ Ἄγγελοι τῶν οὐ-
ρανῶν, εἰ μὴ ὁ Πατήρ μου μόνος.
37 Ὥσπερ δὲ αἱ ἡμέραι τοῦ Νῶε, οὕτως
ἔσται καὶ ἡ παρουσία τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.
38 Ὥσπερ γὰρ ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς
πρὸ τοῦ κατακλυσμοῦ τρώγοντες καὶ πίνοντες,
γαμοῦντες καὶ ἐκγαμίζοντες, ἄχρι ἧς ἡμέ-
ρας εἰσῆλθε Νῶε εἰς τὴν Κιβωτόν·
39 Καὶ οὐκ ἔγνωσαν, ἕως ἦλθεν ὁ κατα-
κλυσμὸς, καὶ ἦρεν ἅπαντας· οὕτως ἔσται καὶ ἡ
παρουσία τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.
40 Τότε δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγρῷ· ὁ εἷς
παραλαμβάνεται, καὶ ὁ εἷς ἀφίεται.
41 Δύο ἀλήθουσαι ἐν τῷ μύλωνι· μία
παραλαμβάνεται, καὶ μία ἀφίεται.
42 Γρηγορεῖτε οὖν, ὅτι οὐκ οἴδατε ποίᾳ
ὥρᾳ ὁ Κύριος ὑμῶν ἔρχεται.
43 Ἐκεῖνο δὲ γινώσκετε, ὅτι εἰ ᾔδει ὁ
οἰκοδεσπότης ποίᾳ φυλακῇ ὁ κλέπτης ἔρ-
χεται, ἐγρηγόρησεν ἂν, καὶ οὐκ ἂν εἴασε
διορυχθῆναι τὴν οἰκίαν αὐτοῦ.
44 Διὰ τοῦτο καὶ ὑμεῖς γίνεσθε ἕτοιμοι· ὅτι
ᾗ ὥρᾳ οὐ δοκεῖτε, ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται.
45 Τίς ἄρα ἐστὶν ὁ πιστὸς δοῦλος καὶ φρό-
νιμος, ὃν κατέστησεν ὁ Κύριος αὐτοῦ ἐπὶ τῆς
θε-

θεραπείας αὐτοῦ, τοῦ διδόναι αὐτοῖς τὴν τρο-
φὴν ἐν καιρῷ;
46 Μακάριος ὁ δοῦλος ἐκεῖνος, ὃν ἐλθὼν
ὁ Κύριος αὐτοῦ, εὑρήσει ποιοῦντα οὕτως.
47 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ πᾶσι τοῖς
ὑπάρχουσιν αὐτοῦ καταστήσει αὐτόν.
48 Ἐὰν δὲ εἴπῃ ὁ κακὸς δοῦλος ἐκεῖνος
ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· Χρονίζει ὁ Κύριός μου
ἐλθεῖν.
49 Καὶ ἄρξηται τύπτειν τοὺς συνδούλους,
ἐσθίειν δὲ καὶ πίνειν μετὰ τῶν μεθυόντων.
50 Ἥξει ὁ Κύριος τοῦ δούλου ἐκείνου ἐν ἡμέ-
ρᾳ ᾗ οὐ προσδοκᾷ, καὶ ἐν ὥρᾳ ᾗ οὐ γινώσκει.
51 Καὶ διχοτομήσει αὐτὸν, καὶ τὸ μέρος
αὐτοῦ μετὰ τῶν ὑποκριτῶν θήσει· ἐκεῖ ἔσται ὁ
κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΕ'. 25.

Πέμπτον δὲ καὶ εἰκοστὸν ἐστὶ τῶν δέκα
Ἡ Παρθένων σύγκρισις· ἡ τ' εἰς οἰκέτας
Νομὴ ταλάντων· καὶ τελευταία κρίσις,
Στέψη δικαίων, καὶ κατακρίτων φλόγες.

1 ΤΌτε ὁμοιωθήσεται ἡ βασιλεία
τῶν οὐρανῶν δέκα Παρθένοις,
αἵτινες λαβοῦσαι τὰς λαμπάδας αὐτῶν,
ἐξῆλθον εἰς ἀπάντησιν τοῦ Νυμφίου.
2 Πέντε δὲ ἦσαν ἐξ αὐτῶν φρόνιμοι, καὶ
αἱ πέντε μωραί.
3 Αἵτινες μωραὶ, λαβοῦσαι τὰς λαμπά-
δας ἑαυτῶν, οὐκ ἔλαβον μεθ' ἑαυτῶν ἔλαιον.
4 Αἱ δὲ φρόνιμοι ἔλαβον ἔλαιον ἐν τοῖς
ἀγγείοις αὐτῶν μετὰ τῶν λαμπάδων αὐτῶν.

5 Χρονίζοντος δὲ τοῦ Νυμφίου, ἐνύσταξαν πᾶσαι, καὶ ἐκάθευδον.

6 Μέσης δὲ νυκτὸς κραυγὴ γέγονεν· Ἰδοὺ, ὁ Νυμφίος ἔρχεται, ἐξέρχεσθε εἰς ἀπάντησιν αὐτοῦ.

7 Τότε ἠγέρθησαν πᾶσαι αἱ Παρθένοι ἐκεῖναι, καὶ ἐκόσμησαν τὰς λαμπάδας αὐτῶν.

8 Αἱ δὲ μωραὶ ταῖς φρονίμοις εἶπον· Δότε ἡμῖν ἐκ τοῦ ἐλαίου ὑμῶν, ὅτι αἱ λαμπάδες ἡμῶν σβέννυνται.

9 Ἀπεκρίθησαν δὲ αἱ φρόνιμοι, λέγουσαι· Μήποτε οὐκ ἀρκέσῃ ἡμῖν καὶ ὑμῖν· πορεύεσθε δὲ μᾶλλον πρὸς τοὺς πωλοῦντας, καὶ ἀγοράσατε ἑαυταῖς.

10 Ἀπερχομένων δὲ αὐτῶν ἀγοράσαι, ἦλθεν ὁ Νυμφίος· καὶ αἱ ἕτοιμοι εἰσῆλθον μετ' αὐτοῦ εἰς τοὺς γάμους, καὶ ἐκλείσθη ἡ θύρα.

11 Ὕστερον δὲ ἔρχονται καὶ αἱ λοιπαὶ Παρθένοι, λέγουσαι. Κύριε, Κύριε, ἄνοιξον ἡμῖν.

12 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐκ οἶδα ὑμᾶς.

13 Γρηγορεῖτε οὖν, ὅτι οὐκ οἴδατε τὴν ἡμέραν οὐδὲ τὴν ὥραν ἐν ᾗ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται.

14 Ὥσπερ γὰρ ἄνθρωπος ἀποδημῶν ἐκάλεσε τοὺς ἰδίους δούλους, καὶ παρέδωκεν αὐτοῖς τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ.

15 Καὶ ᾧ μὲν ἔδωκε πέντε τάλαντα, ᾧ δὲ δύο, ᾧ δὲ ἕν· ἑκάστῳ κατὰ τὴν ἰδίαν δύναμιν· καὶ ἀπεδήμησεν εὐθέως.

16 Πορευθεὶς δὲ ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν, εἰργάσατο ἐν αὐτοῖς, καὶ ἐποίησεν ἄλλα πέντε τάλαντα.

17 Ω'σαύτως καὶ ὁ τὰ δύο, ἐκέρδησε καὶ αὐτὸς ἄλλα δύο.

18 Ο' δὲ τὸ ἓν λαβὼν, ἀπελθὼν ὤρυξεν ἐν τῇ γῇ, καὶ ἀπέκρυψε τὸ ἀργύριον τοῦ Κυρίου αὐτοῦ·

19 Μετὰ δὲ χρόνον πολὺν ἔρχεται ὁ Κύριος τῶν δούλων ἐκείνων, καὶ συναίρει μετ' αὐτῶν λόγον.

20 Καὶ προσελθὼν ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν, προσήνεγκεν ἄλλα πέντε τάλαντα, λέγων· Κύριε, πέντε τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε, ἄλλα πέντε τάλαντα ἐκέρδησα ἐπ' αὐτοῖς.

21 Ε'́φη δὲ αὐτῷ ὁ Κύριος αὐτοῦ· Εὖ, δοῦλε ἀγαθὲ καὶ πιστέ· ἐπὶ ὀλίγα ἦς πιστὸς, ἐπὶ πολλῶν σε καταστήσω· εἴσελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ Κυρίου σου.

22 Προσελθὼν δὲ καὶ ὁ τὰ δύο τάλαντα λαβὼν, εἶπε· Κύριε, δύο τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε, ἄλλα δύο τάλαντα ἐκέρδησα ἐπ' αὐτοῖς.

23 Ε'́φη αὐτῷ ὁ Κύριος αὐτοῦ· Εὖ, δοῦλε ἀγαθὲ καὶ πιστέ· ἐπὶ ὀλίγα ἦς πιστὸς, ἐπὶ πολλῶν σε καταστήσω· εἴσελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ Κυρίου σου.

24 Προσελθὼν δὲ καὶ ὁ τὸ ἓν τάλαντον εἰληφὼς, εἶπε· Κύριε, ἔγνων σε ὅτι σκληρὸς εἶ ἄνθρωπος, θερίζων ὅπου οὐκ ἔσπειρας, καὶ συνάγων ὅθεν οὐ διεσκόρπισας.

25 Καὶ φοβηθεὶς, ἀπελθὼν ἔκρυψα τὸ τάλαντόν σου ἐν τῇ γῇ· ἴδε, ἔχεις τὸ σόν.

26 Α'ποκριθεὶς δὲ ὁ Κύριος αὐτοῦ, εἶπεν αὐτῷ· Πονηρὲ δοῦλε καὶ ὀκνηρὲ, ᾔδεις ὅτι θερίζω ὅπου οὐκ ἔσπειρα, καὶ συνάγω ὅθεν οὐ διεσκόρπισα·

27 Ἔδει οὖν σε βαλεῖν τὸ ἀργύριόν μου
τοῖς τραπεζίταις· ϗ ἐλθὼν ἐγὼ ἐκομισά-
μην ἂν τὸ ἐμὸν σὺν τόκῳ.
28 Ἄρατε οὖν ἀπ' αὐτοῦ τὸ τάλαντον, ϗ
δότε τῷ ἔχοντι τὰ δέκα τάλαντα.
29 (Τῷ γὰρ ἔχοντι παντὶ δοθήσεται,
ϗ περισσευθήσεται· ἀπὸ δὲ τοῦ μὴ ἔχοντος,
ϗ ὃ ἔχει, ἀρθήσεται ἀπ' αὐτοῦ.)
30 Καὶ τὸν ἀχρεῖον δοῦλον ἐκβάλλετε εἰς
τὸ σκότος τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθ-
μὸς ϗ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.
31 Ὅταν δὲ ἔλθῃ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ, ϗ πάντες οἱ ἅγιοι Ἄγ-
γελοι μετ' αὐτοῦ, τότε καθίσει ἐπὶ θρόνου
δόξης αὐτοῦ.
32 Καὶ συναχθήσεται ἔμπροσθεν αὐτοῦ
πάντα τὰ ἔθνη· ϗ ἀφοριεῖ αὐτοὺς ἀπ' ἀλ-
λήλων, ὥσπερ ὁ ποιμὴν ἀφορίζει τὰ πρόβα-
τα ἀπὸ τῶν ἐρίφων.
33 Καὶ στήσει, τὰ μὲν πρόβατα ἐκ δε-
ξιῶν αὐτοῦ, τὰ δὲ ἐρίφια ἐξ εὐωνύμων.
34 Τότε ἐρεῖ ὁ βασιλεὺς τοῖς ἐκ δεξιῶν
αὐτοῦ· Δεῦτε οἱ εὐλογημένοι τοῦ Πατρός
μου, κληρονομήσατε τὴν ἡτοιμασμένην ὑ-
μῖν βασιλείαν ἀπὸ καταβολῆς κόσμου.
35 Ἐπείνασα γὰρ, ϗ ἐδώκατέ μοι φα-
γεῖν· ἐδίψησα, καὶ ἐποτίσατέ με· ξένος
ἤμην, ϗ συνηγάγετέ με.
36 Γυμνὸς, ϗ περιεβάλετέ με· ἠσθένη-
σα, ϗ ἐπεσκέψασθέ με· ἐν φυλακῇ ἤμην,
ϗ ἤλθετε πρός με.
37 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ οἱ δίκαιοι,
λέγοντες· Κύριε, πότε σε εἴδομεν πεινῶντα,
ϗ ἐθρέψαμεν; ἢ διψῶντα, ϗ ἐποτίσαμεν;
38 Πό-

38 Πότε δέ σε εἴδομεν ξένον, καὶ συνηγά-
γομεν; ἢ γυμνὸν, καὶ περιεβάλομεν;
39 Πότε δέ σε εἴδομεν ἀσθενῆ, ἢ ἐν φυ-
λακῇ, καὶ ἤλθομεν πρός σε;
40 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς, ἐρεῖ
αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐφ᾽ ὅσον ἐποιή-
σατε ἑνὶ τούτων τῶν ἀδελφῶν μου τῶν ἐλαχί-
στων, ἐμοὶ ἐποιήσατε.
41 Τότε ἐρεῖ καὶ τοῖς ἐξ εὐωνύμων· Πο-
ρεύεσθε ἀπ᾽ ἐμοῦ οἱ κατηραμένοι εἰς τὸ πῦρ
τὸ αἰώνιον, τὸ ἡτοιμασμένον τῷ διαβόλῳ καὶ
τοῖς Ἀγγέλοις αὐτοῦ.
42 Ἐπείνασα γὰρ, καὶ οὐκ ἐδώκατέ μοι
φαγεῖν· ἐδίψησα, καὶ οὐκ ἐποτίσατέ με.
43 Ξένος ἤμην, καὶ οὐ συνηγάγετέ με·
γυμνὸς, καὶ οὐ περιεβάλετέ με· ἀσθενὴς, καὶ
ἐν φυλακῇ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψασθέ με.
44 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ καὶ αὐτοὶ,
λέγοντες· Κύριε, πότε σε εἴδομεν πεινῶν-
τα, ἢ διψῶντα, ἢ ξένον, ἢ γυμνὸν, ἢ
ἀσθενῆ, ἢ ἐν φυλακῇ, καὶ οὐ διηκονήσα-
μέν σοι;
45 Τότε ἀποκριθήσεται αὐτοῖς, λέγων·
Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐφ᾽ ὅσον οὐκ ἐποιήσατε
ἑνὶ τούτων τῶν ἐλαχίστων, οὐδὲ ἐμοὶ ἐποιήσατε.
46 Καὶ ἀπελεύσονται οὗτοι εἰς κόλασιν
αἰώνιον· οἱ δὲ δίκαιοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Κς'. 26.

Εἰκοστὸν ἕκτον τῇ μυρηχόῳ κλέος·
Συμφωνία τε τῷπιβούλῳ τῶν φίλων.
Σὺν τῷ τε Πάσχα μυσταγωγία ξένη.
Γεθσημανῇ τε σὺν κιτῇ λύπη Λόγου.
Ἐχθρὸν φίλημα, δεσμὰ, καὶ Πέτρου ξίφος·
Κατάκρισις, χλευασμὸς, ἄρνησις τρίτη.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς πάντας τοὺς λόγους τούτους, εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·

2 Οἴδατε ὅτι μετὰ δύο ἡμέρας τὸ Πάσχα γίνεται, καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται εἰς τὸ Σταυρωθῆναι.

3 Τότε συνήχθησαν οἱ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς καὶ οἱ Πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ἀρχιερέως τοῦ λεγομένου Καϊάφα.

4 Καὶ συνεβουλεύσαντο ἵνα τὸν Ἰησοῦν κρατήσωσι δόλῳ, καὶ ἀποκτείνωσιν.

5 Ἔλεγον δέ· Μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, ἵνα μὴ θόρυβος γένηται ἐν τῷ λαῷ.

6 Τοῦ δὲ Ἰησοῦ γενομένου ἐν Βηθανίᾳ ἐν οἰκίᾳ Σίμωνος τοῦ λεπροῦ,

7 Προσῆλθεν αὐτῷ γυνὴ ἀλάβαστρον μύρου ἔχουσα βαρυτίμου, καὶ κατέχεεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ἀνακειμένου.

8 Ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἠγανάκτησαν, λέγοντες· Εἰς τί ἡ ἀπώλεια αὕτη;

9 Ἠδύνατο γὰρ τοῦτο τὸ μύρον πραθῆναι πολλοῦ, καὶ δοθῆναι πτωχοῖς.

10 Γνοὺς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί

κο-

κόπους παρέχετε τῇ γυναικί; ἔργον γὰρ κα-
λὸν εἰργάσατο εἰς ἐμέ.
11 Πάντοτε γὰρ τοὺς πτωχοὺς ἔχετε μεθ'
ἑαυτῶν· ἐμὲ δὲ οὐ πάντοτε ἔχετε.
12 Βαλοῦσα γὰρ αὕτη τὸ μύρον τοῦτο ἐπὶ
τοῦ σώματός μου, πρὸς τὸ ἐνταφιάσαι με
ἐποίησεν·
13 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅπου ἐὰν κηρυχ-
θῇ τὸ Εὐαγγέλιον τοῦτο ἐν ὅλῳ τῷ κόσμῳ,
λαληθήσεται καὶ ὃ ἐποίησεν αὕτη, εἰς μνη-
μόσυνον αὐτῆς.
14 Τότε πορευθεὶς εἷς τῶν δώδεκα, ὁ
λεγόμενος Ἰούδας Ἰσκαριώτης, πρὸς τοὺς
Ἀρχιερεῖς,
15 Εἶπε· Τί θέλετέ μοι δοῦναι, κἀγὼ
ὑμῖν παραδώσω αὐτόν; Οἱ δὲ ἔστησαν αὐ-
τῷ τριάκοντα ἀργύρια.
16 Καὶ ἀπὸ τότε ἐζήτει εὐκαιρίαν ἵνα
αὐτὸν παραδῷ.
17 Τῇ δὲ πρώτῃ τῶν Ἀζύμων προσῆλθον
οἱ μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ, λέγοντες αὐτῷ· Ποῦ
θέλεις ἑτοιμάσωμέν σοι φαγεῖν τὸ Πάσχα;
18 Ὁ δὲ εἶπεν· Ὑπάγετε εἰς τὴν πόλιν
πρὸς τὸν δεῖνα, καὶ εἴπατε αὐτῷ· Ὁ διδά-
σκαλος λέγει· Ὁ καιρός μου ἐγγύς ἐστι,
πρὸς σὲ ποιῶ τὸ Πάσχα μετὰ τῶν μαθητῶν μου.
19 Καὶ ἐποίησαν οἱ μαθηταὶ ὡς συνέτα-
ξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· καὶ ἡτοίμασαν τὸ Πάσχα.
20 Ὀψίας δὲ γενομένης ἀνέκειτο μετὰ
τῶν δώδεκα.
21 Καὶ ἐσθιόντων αὐτῶν, εἶπεν· Ἀμὴν
λέγω ὑμῖν, ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν παραδώσει με.
22 Καὶ λυπούμενοι σφόδρα, ἤρξαντο λέγειν
αὐτῷ ἕκαστος αὐτῶν· Μήτι ἐγώ εἰμι, Κύριε;

23 Ὁ

23 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ὁ ἐμβά-
ψας μετ᾽ ἐμοῦ ἐν τῷ τρυβλίῳ τὴν χεῖρα, οὗ-
τός με παραδώσει.

24 Ὁ μὲν Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑπάγει,
καθὼς γέγραπται περὶ αὐτοῦ· οὐαὶ δὲ τῷ
ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ, δι᾽ οὗ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
παραδίδοται· καλὸν ἦν αὐτῷ, εἰ οὐκ ἐγεν-
νήθη ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος.

25 Ἀποκριθεὶς δὲ Ἰούδας, ὁ παραδιδοὺς
αὐτὸν, εἶπε· Μήτι ἐγώ εἰμι, Ῥαββί;
λέγει αὐτῷ· Σὺ εἶπας.

26 Ἐσθιόντων δὲ αὐτῶν, λαβὼν ὁ Ἰησοῦς
τὸν ἄρτον, καὶ εὐλογήσας, ἔκλασε, καὶ ἐδίδου
τοῖς μαθηταῖς. καὶ εἶπε· Λάβετε, φάγε-
τε· Τοῦτό ἐστι τὸ Σῶμά μου.

27 Καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον, καὶ εὐχαριστήσας,
ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων· Πίετε ἐξ αὐτοῦ πάντες.

28 Τοῦτο γάρ ἐστι τὸ αἷμά μου, τὸ τῆς και-
νῆς διαθήκης, τὸ περὶ πολλῶν ἐκχυνόμενον
εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν.

29 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι οὐ μὴ πίω ἀπ᾽ ἄρ-
τι ἐκ τούτου τοῦ γεννήματος τῆς ἀμπέλου, ἕως
τῆς ἡμέρας ἐκείνης, ὅταν αὐτὸ πίνω μεθ᾽ ὑ-
μῶν καινὸν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Πατρός μου.

30 Καὶ ὑμνήσαντες, ἐξῆλθον εἰς τὸ ὄρος
τῶν ἐλαιῶν.

31 Τότε λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πάντες
ὑμεῖς σκανδαλισθήσεσθε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκ-
τὶ ταύτῃ· Γέγραπται γάρ· Πατάξω τὸν
ποιμένα, καὶ διασκορπισθήσεται τὰ πρόβατα
τῆς ποίμνης.

32 Μετὰ δὲ τὸ ἐγερθῆναί με, προάξω ὑ-
μᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

33 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐ-

τῷ·

τῷ· Εἰ καὶ πάντες σκανδαλισθήσονται ἐν σοὶ, ἐγὼ οὐδέποτε σκανδαλισθήσομαι.

34 Ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω σοι, ὅτι ἐν ταύτῃ τῇ νυκτὶ, πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι, τρὶς ἀπαρνήσῃ με.

35 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Κἂν δέῃ με σὺν σοὶ ἀποθανεῖν, οὐ μή σε ἀπαρνήσομαι. Ὁμοίως καὶ πάντες οἱ μαθηταὶ εἶπον.

36 Τότε ἔρχεται μετ' αὐτῶν ὁ Ἰησοῦς εἰς χωρίον λεγόμενον Γεθσημανῆ. καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς. Καθίσατε αὐτοῦ, ἕως οὗ ἀπελθὼν προσεύξωμαι ἐκεῖ.

37 Καὶ παραλαβὼν τὸν Πέτρον καὶ τοὺς δύο υἱοὺς Ζεβεδαίου, ἤρξατο λυπεῖσθαι καὶ ἀδημονεῖν.

38 Τότε λέγει αὐτοῖς· Περίλυπός ἐστιν ἡ ψυχή μου ἕως θανάτου· μείνατε ὧδε, καὶ γρηγορεῖτε μετ' ἐμοῦ.

39 Καὶ προσελθὼν μικρὸν, ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ, προσευχόμενος, καὶ λέγων· Πάτερ μου, εἰ δυνατόν ἐστι, παρελθέτω ἀπ' ἐμοῦ τὸ ποτήριον τοῦτο· πλὴν οὐχ ὡς ἐγὼ θέλω, ἀλλ' ὡς σύ.

40 Καὶ ἔρχεται πρὸς τοὺς μαθητὰς, καὶ εὑρίσκει αὐτοὺς καθεύδοντας, καὶ λέγει τῷ Πέτρῳ· Οὕτως οὐκ ἰσχύσατε μίαν ὥραν γρηγορῆσαι μετ' ἐμοῦ;

41 Γρηγορεῖτε καὶ προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθητε εἰς πειρασμόν. τὸ μὲν Πνεῦμα πρόθυμον, ἡ δὲ σὰρξ ἀσθενής.

42 Πάλιν ἐκ δευτέρου ἀπελθὼν προσηύξατο, λέγων· Πάτερ μου, εἰ οὐ δύναται τοῦτο τὸ ποτήριον παρελθεῖν ἀπ' ἐμοῦ ἐὰν μὴ αὐτὸ πίω, γενηθήτω τὸ θέλημά σου.

43 Καὶ ἐλθὼν εὑρίσκει αὐτοὺς πάλιν καθεύ-

θεύ-

θεύδοντας· ἦσαν γὰρ αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοὶ
βεβαρημένοι.
44 Καὶ ἀφεὶς αὐτὺς, ἀπελθὼν πάλιν,
προσηύξατο ἐκ τρίτε, τὸν αὐτὸν λόγον εἰπών.
45 Τότε ἔρχεται πρὸς τὺς μαθητὰς αὐ-
τῦ, καὶ λέγει αὐτοῖς· Καθεύδετε τὸ λοι-
πὸν, ἢ ἀναπαύεσθε· ἰδὺ, ἤγγικεν ἡ ὥρα,
καὶ ὁ Υἱὸς τῦ ἀνθρώπυ παραδίδοται εἰς
χεῖρας ἁμαρτωλῶν.
46 Ἐγείρεσθε, ἄγωμεν· ἰδὺ, ἤγγικεν ὁ
παραδιδὺς με.
47 Καὶ ἔτι αὐτῦ λαλῦντος, ἰδοὺ, Ἰὺ-
δας εἷς τῶν δώδεκα ἦλθε, ἢ μετ' αὐτῦ ὄ-
χλος πολὺς μετὰ μαχαιρῶν ἢ ξύλων, ἀπὸ
τῶν Ἀρχιερέων ἢ Πρεσβυτέρων τῦ λαῦ.
48 Ὁ δὲ παραδιδὺς αὐτὸν, ἔδωκεν αὐ-
τοῖς σημεῖον, λέγων· Ὃν ἂν φιλήσω, αὐ-
τός ἐςι· κρατήσατε αὐτόν.
49 Καὶ εὐθέως προσελθὼν τῷ Ἰησῦ, εἶ-
πε· Χαῖρε Ῥαββί. Καὶ κατεφίλησεν αὐτόν.
50 Ὁ δὲ Ἰησῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἑταῖρε, ἐφ'
ᾧ πάρει; Τότε προσελθόντες ἐπέβαλον τὰς
χεῖρας ἐπὶ τὸν Ἰησῦν, ἢ ἐκράτησαν αὐτόν.
51 Καὶ ἰδὺ, εἷς τῶν μετὰ Ἰησῦ, ἐκτεί-
νας τὴν χεῖρα, ἀπέσπασε τὴν μάχαιραν αὐ-
τῦ· ἢ πατάξας τὸν δῦλον τῦ Ἀρχιερέως,
ἀφεῖλεν αὐτῦ τὸ ὠτίον.
52 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀπό-
ςρεψόν συ τὴν μάχαιραν εἰς τὸν τόπον αὐ-
τῆς· πάντες γὰρ οἱ λαβόντες μάχαιραν, ἐν
μαχαίρᾳ ἀπολοῦνται.
53 Ἢ δοκεῖς ὅτι ὐ δύναμαι ἄρτι παρα-
καλέσαι τὸν Πατέρα μυ, ἢ παραςήσει μοι
πλείυς ἢ δώδεκα λεγεῶνας Ἀγγέλων;
54 Πῶς

54 Πῶς οὖν πληρωθῶσιν αἱ Γραφαὶ, ὅτι οὕτω δεῖ γενέσθαι;

55 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τοῖς ὄχλοις· Ὡς ἐπὶ λῃστὴν ἐξήλθετε μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων συλλαβεῖν με. καθ' ἡμέραν πρὸς ὑμᾶς ἐκαθεζόμην διδάσκων ἐν τῷ Ἱερῷ, καὶ οὐκ ἐκρατήσατέ με.

56 Τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν, ἵνα πληρωθῶσιν αἱ Γραφαὶ τῶν Προφητῶν. Τότε οἱ μαθηταὶ πάντες, ἀφέντες αὐτὸν, ἔφυγον.

57 Οἱ δὲ, κρατήσαντες τὸν Ἰησοῦν, ἀπήγαγον πρὸς Καϊάφαν τὸν Ἀρχιερέα, ὅπου οἱ Γραμματεῖς καὶ οἱ Πρεσβύτεροι συνήχθησαν.

58 Ὁ δὲ Πέτρος ἠκολούθει αὐτῷ ἀπὸ μακρόθεν, ἕως τῆς αὐλῆς τοῦ Ἀρχιερέως, καὶ εἰσελθὼν ἔσω, ἐκάθητο μετὰ τῶν ὑπηρετῶν, ἰδεῖν τὸ τέλος.

59 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς, καὶ οἱ Πρεσβύτεροι καὶ τὸ συνέδριον ὅλον ἐζήτουν ψευδομαρτυρίαν κατὰ τοῦ Ἰησοῦ, ὅπως αὐτὸν θανατώσωσι,

60 Καὶ οὐχ εὗρον· καὶ πολλῶν ψευδομαρτύρων προσελθόντων, οὐχ εὗρον. ὕστερον δὲ προσελθόντες δύο ψευδομάρτυρες,

61 Εἶπον· Οὗτος ἔφη· Δύναμαι καταλῦσαι τὸν Ναὸν τοῦ Θεοῦ, καὶ διὰ τριῶν ἡμερῶν οἰκοδομῆσαι αὐτόν.

62 Καὶ ἀναστὰς ὁ Ἀρχιερεὺς, εἶπεν αὐτῷ· Οὐδὲν ἀποκρίνῃ; τί οὗτοί σου καταμαρτυροῦσιν;

63 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐσιώπα· Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἀρχιερεὺς, εἶπεν αὐτῷ· Ἐξορκίζω σε κατὰ τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος, ἵνα ἡμῖν εἴπῃς, εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς, ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

64 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Σὺ εἶπας. πλὴν λέγω ὑμῖν, ἀπ' ἄρτι ὄψεσθε τὸν Υἱὸν τοῦ ἀν-

θρώ-

θρώπου καθήμενον ἐκ δεξιῶν τῆς δυνάμεως,
καὶ ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ.
65 Τότε ὁ Ἀρχιερεὺς διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια
αὐτοῦ, λέγων· Ὅτι ἐβλασφήμησε· τί ἔτι
χρείαν ἔχομεν μαρτύρων; ἴδε, νῦν ἠκούσατε
τὴν βλασφημίαν αὐτοῦ.
66 Τί ὑμῖν δοκεῖ; Οἱ δὲ ἀποκριθέν-
τες, εἶπον· Ἔνοχος θανάτου ἐςί.
67 Τότε ἐνέπτυσαν εἰς τὸ πρόσωπον αὐ-
τοῦ, καὶ ἐκολάφισαν αὐτόν· οἱ δὲ ἐῤῥάπισαν,
68 Λέγοντες· Προφήτευσον ἡμῖν Χρι-
στὲ, τίς ἐςιν ὁ παίσας σε.
69 Ὁ δὲ Πέτρος ἔξω ἐκάθητο ἐν τῇ αὐλῇ·
καὶ προσῆλθεν αὐτῷ μία παιδίσκη, λέγου-
σα· Καὶ σὺ ἦσθα μετὰ Ἰησοῦ τοῦ Γαλιλαίου.
70 Ὁ δὲ ἠρνήσατο ἔμπροσθεν πάντων,
λέγων· Οὐκ οἶδα τί λέγεις.
71 Ἐξελθόντα δὲ αὐτὸν εἰς τὸν πυλῶνα,
εἶδεν αὐτὸν ἄλλη· καὶ λέγει τοῖς ἐκεῖ· Καὶ
οὗτος ἦν μετὰ Ἰησοῦ τοῦ Ναζωραίου.
72 Καὶ πάλιν ἠρνήσατο μεθ' ὅρκου· Ὅτι
οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον.
73 Μετὰ μικρὸν δὲ προσελθόντες οἱ ἑςῶ-
τες, εἶπον τῷ Πέτρῳ· Ἀληθῶς καὶ σὺ ἐξ
αὐτῶν εἶ· καὶ γὰρ ἡ λαλιά σου δῆλόν σε ποιεῖ.
74 Τότε ἤρξατο καταναθεματίζειν, καὶ
ὀμνύειν· Ὅτι οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον. Καὶ
εὐθέως ἀλέκτωρ ἐφώνησε.
75 Καὶ ἐμνήσθη ὁ Πέτρος τοῦ ῥήματος τοῦ
Ἰησοῦ, εἰρηκότος αὐτῷ· ὅτι πρὶν ἀλέκτορα
φωνῆσαι, τρὶς ἀπαρνήσῃ με. Καὶ ἐξελθὼν
ἔξω, ἔκλαυσε πικρῶς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΖ'. 27.

Εἰκοςὸν ἕβδομόν τε πρὸς βρόχον φέρει
Προδόντα, πρόκειτόν τε λῃςῶ Δεσπότε.
Νίψιν χειρῶν, μάςιγας, πορφύραν, ςέφος,
Σκῆπτρον, προσήλωσίν τε, δασμὸν εἱμάτων
Βλασφημίας τε, ἢ σκοτισμὸν Ἡλίε·
Ὄξες ποτισμὸν, ἢ πετάσματος σχύσιν·
Πέτρας ῥαγείσας, ἢ κλονεμένην χθόνα·
Τάφες ἀνοιχθέντας τε, κηδείαν Λόγε·
Καὶ μνήματος σφραγῖδα σὺν κεςωδίᾳ.

1 ΠΡωΐας δὲ γενομένης, συμβέλιον ἔλαβον πάντες οἱ Ἀρχιερεῖς ἢ οἱ Πρεσβύτεροι τῦ λαοῦ κατὰ τῦ Ἰησοῦ, ὥςε θανατῶσαι αὐτόν.
2 Καὶ δήσαντες αὐτὸν, ἀπήγαγον, καὶ παρέδωκαν αὐτὸν Ποντίῳ Πιλάτῳ τῷ ἡγεμόνι.
3 Τότε ἰδὼν Ἰούδας ὁ παραδιδὲς αὐτὸν, ὅτι κατεκρίθη, μεταμεληθεὶς, ἀπέςρεψε τὰ τριάκοντα ἀργύρια τοῖς Ἀρχιερεῦσι ἢ τοῖς Πρεσβυτέροις,
4 Λέγων· Ἥμαρτον, παραδὲς αἷμα ἀθῶον· Οἱ δὲ εἶπον· Τί πρὸς ἡμᾶς; σὺ ὄψει.
5 Καὶ ῥίψας τὰ ἀργύρια ἐν τῷ Ναῷ, ἀνεχώρησε· ἢ ἀπελθὼν, ἀπήγξατο.
6 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς λαβόντες τὰ ἀργύρια, εἶπον· Οὐκ ἔξεςι βαλεῖν αὐτὰ εἰς τὸν κορβανᾶν· ἐπεὶ τιμὴ αἵματός ἐςι.
7 Συμβέλιον δὲ λαβόντες, ἠγόρασαν ἐξ αὐτῶν τὸν ἀγρὸν τῦ κεραμέως, εἰς ταφὴν τοῖς ξένοις.

8 Διὸ

8 Διὸ ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς ἐκεῖνος, ἀγρὸς αἵματος, ἕως τῆς σήμερον.

9 (Τότε ἐπληρώθη τὸ ῥηθὲν διὰ Ἱερεμίου τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Καὶ ἔλαβον τὰ τριάκοντα ἀργύρια, τὴν τιμὴν τοῦ τετιμημένου, ὃν ἐτιμήσαντο ἀπὸ Υἱῶν Ἰσραήλ.

10 Καὶ ἔδωκαν αὐτὰ εἰς τὸν ἀγρὸν τοῦ κεραμέως, καθὰ συνέταξέ μοι Κύριος.)

11 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔστη ἔμπροσθεν τοῦ ἡγεμόνος, καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὸν ὁ ἡγεμὼν, λέγων· Σὺ εἶ ὁ Βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔφη αὐτῷ· Σὺ λέγεις.

12 Καὶ ἐν τῷ κατηγορεῖσθαι αὐτὸν ὑπὸ τῶν Ἀρχιερέων καὶ τῶν Πρεσβυτέρων, οὐδὲν ἀπεκρίνατο.

13 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Οὐκ ἀκούεις πόσα σου καταμαρτυροῦσι;

14 Καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ πρὸς οὐδὲ ἓν ῥῆμα· ὥστε θαυμάζειν τὸν ἡγεμόνα λίαν.

15 Κατὰ δὲ ἑορτὴν εἰώθει ὁ ἡγεμὼν ἀπολύειν ἕνα τῷ ὄχλῳ δέσμιον, ὃν ἤθελον.

16 Εἶχον δὲ τότε δέσμιον ἐπίσημον λεγόμενον Βαραββᾶν.

17 Συνηγμένων οὖν αὐτῶν, εἶπεν αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τίνα θέλετε ἀπολύσω ὑμῖν; Βαραββᾶν, ἢ Ἰησοῦν τὸν λεγόμενον Χριστόν;

18 Ἤδει γὰρ ὅτι διὰ φθόνον παρέδωκαν αὐτόν.

19 Καθημένου δὲ αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ βήματος, ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν ἡ γυνὴ αὐτοῦ, λέγουσα· Μηδὲν σοὶ καὶ τῷ δικαίῳ ἐκείνῳ· πολλὰ γὰρ ἔπαθον σήμερον κατ' ὄναρ δι' αὐτόν.

20 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Πρεσβύτεροι

ἔπει-

ἔπεισαν τοὺς ὄχλους, ἵνα αἰτήσωνται τὸν Βαραββᾶν, τὸν δὲ Ἰησοῦν ἀπολέσωσιν.

21 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἡγεμὼν, εἶπεν αὐτοῖς· Τίνα θέλετε ἀπὸ τῶν δύο ἀπολύσω ὑμῖν; Οἱ δὲ εἶπον, Βαραββᾶν.

22 Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τί οὖν ποιήσω Ἰησοῦν, τὸν λεγόμενον Χριστόν; Λέγουσιν αὐτῷ πάντες· Σταυρωθήτω.

23 Ὁ δὲ ἡγεμὼν ἔφη· Τί γὰρ κακὸν ἐποίησεν; Οἱ δὲ περισσῶς ἔκραζον, λέγοντες· Σταυρωθήτω.

24 Ἰδὼν δὲ ὁ Πιλάτος, ὅτι οὐδὲν ὠφελεῖ, ἀλλὰ μᾶλλον θόρυβος γίνεται, λαβὼν ὕδωρ, ἀπενίψατο τὰς χεῖρας ἀπέναντι τοῦ ὄχλου, λέγων· Ἀθῶός εἰμι ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ δικαίου τούτου· ὑμεῖς ὄψεσθε.

25 Καὶ ἀποκριθεὶς πᾶς ὁ λαὸς, εἶπε· Τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς, καὶ ἐπὶ τὰ τέκνα ἡμῶν.

26 Τότε ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸν Βαραββᾶν· τὸν δὲ Ἰησοῦν φραγελλώσας παρέδωκεν ἵνα Σταυρωθῇ.

27 Τότε οἱ στρατιῶται τοῦ ἡγεμόνος, παραλαβόντες τὸν Ἰησοῦν εἰς τὸ πραιτώριον, συνήγαγον ἐπ' αὐτὸν ὅλην τὴν σπεῖραν.

28 Καὶ ἐκδύσαντες αὐτὸν, περιέθηκαν αὐτῷ χλαμύδα κοκκίνην.

29 Καὶ πλέξαντες στέφανον ἐξ ἀκανθῶν, ἐπέθηκαν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ κάλαμον ἐπὶ τὴν δεξιὰν αὐτοῦ· καὶ γονυπετήσαντες ἔμπροσθεν αὐτοῦ, ἐνέπαιζον αὐτῷ, λέγοντες· Χαῖρε ὁ Βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων.

30 Καὶ ἐμπτύσαντες εἰς αὐτὸν, ἔλαβον τὸν κάλαμον, καὶ ἔτυπτον εἰς τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ.

31 Καὶ

31 Καὶ ὅτε ἐνέπαιξαν αὐτῷ, ἐξέδυσαν αὐτὸν τὴν χλαμύδα, καὶ ἐνέδυσαν αὐτὸν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ· καὶ ἀπήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ Σταυρῶσαι.

32 Ἐξερχόμενοι δὲ, εὗρον ἄνθρωπον Κυρηναῖον, ὀνόματι Σίμωνα· τοῦτον ἠγγάρευσαν ἵνα ἄρῃ τὸν Σταυρὸν αὐτοῦ.

33 Καὶ ἐλθόντες εἰς τόπον λεγόμενον Γολγοθᾶ, ὅς ἐστι λεγόμενος κρανίου τόπος,

34 Ἔδωκαν αὐτῷ πιεῖν ὄξος μετὰ χολῆς μεμιγμένον· καὶ γευσάμενος, οὐκ ἤθελε πιεῖν.

35 Σταυρώσαντες δὲ αὐτὸν, διεμερίσαντο τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, βάλλοντες κλῆρον· ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Προφήτου· Διεμερίσαντο τὰ ἱμάτιά μου ἑαυτοῖς, καὶ ἐπὶ τὸν ἱματισμόν μου ἔβαλον κλῆρον.

36 Καὶ καθήμενοι, ἐτήρουν αὐτὸν ἐκεῖ.

37 Καὶ ἐπέθηκαν ἐπάνω τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ τὴν αἰτίαν αὐτοῦ γεγραμμένην· ΟΥ͂ΤΟ'Σ ΕΣΤΙΝ ΙΗΣΟΥ͂Σ Ὁ ΒΑΣΙΛΕΥ'Σ ΤΩ͂Ν ΙΟΥΔΑΙ'ΩΝ.

38 Τότε σταυροῦνται σὺν αὐτῷ δύο λῃσταί· εἷς ἐκ δεξιῶν, καὶ εἷς ἐξ εὐωνύμων.

39 Οἱ δὲ παραπορευόμενοι ἐβλασφήμουν αὐτὸν κινοῦντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν·

40 Καὶ λέγοντες· Ὁ καταλύων τὸν Ναὸν καὶ ἐν τρισὶν ἡμέραις οἰκοδομῶν, σῶσον σεαυτόν· εἰ Υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, κατάβηθι ἀπὸ τοῦ Σταυροῦ.

41 Ὁμοίως δὲ καὶ οἱ Ἀρχιερεῖς, ἐμπαίζοντες μετὰ τῶν Γραμματέων καὶ Πρεσβυτέρων, ἔλεγον·

42 Ἄλλους ἔσωσεν, ἑαυτὸν οὐ δύναται

σῶ-

σῶσαι· εἰ Βασιλεὺς Ἰσραήλ ἐστι, καταβάτω νῦν ἀπὸ τοῦ Σταυροῦ, καὶ πιστεύσομεν αὐτῷ·

43 Πέποιθεν ἐπὶ τὸν Θεόν· ῥυσάσθω νῦν αὐτὸν εἰ θέλει αὐτόν· εἶπε γάρ· Ὅτι Θεοῦ εἰμι Υἱός.

44 Τὸ δ' αὐτὸ καὶ οἱ λῃσταὶ, οἱ συσταυρωθέντες αὐτῷ, ὠνείδιζον αὐτῷ.

45 Ἀπὸ δὲ ἕκτης ὥρας σκότος ἐγένετο ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν, ἕως ὥρας ἐννάτης.

46 Περὶ δὲ τὴν ἐννάτην ὥραν ἀνεβόησεν ὁ Ἰησοῦς φωνῇ μεγάλῃ, λέγων· Ἠλὶ, Ἠλὶ, λαμὰ Σαβαχθανί; τοῦτ' ἔστι, Θεέ μου, Θεέ μου, ἵνα τί με ἐγκατέλιπες;

47 Τινὲς δὲ τῶν ἐκεῖ ἑστώτων ἀκούσαντες, ἔλεγον· Ὅτι Ἠλίαν φωνεῖ οὗτος.

48 Καὶ εὐθέως δραμὼν εἷς ἐξ αὐτῶν, καὶ λαβὼν σπόγγον, πλήσας τε ὄξους, καὶ περιθεὶς καλάμῳ, ἐπότιζεν αὐτόν.

49 Οἱ δὲ λοιποὶ ἔλεγον· Ἄφες, ἴδωμεν εἰ ἔρχεται Ἠλίας σώσων αὐτόν.

50 Ὁ δὲ Ἰησοῦς, πάλιν κράξας φωνῇ μεγάλῃ, ἀφῆκε τὸ Πνεῦμα.

51 Καὶ ἰδοὺ, τὸ καταπέτασμα τοῦ Ναοῦ ἐσχίσθη εἰς δύο ἀπὸ ἄνωθεν ἕως κάτω· καὶ ἡ γῆ ἐσείσθη. καὶ αἱ πέτραι ἐσχίσθησαν·

52 Καὶ τὰ μνημεῖα ἀνεῴχθησαν· καὶ πολλὰ σώματα τῶν κεκοιμημένων ἁγίων ἠγέρθη.

53 Καὶ ἐξελθόντες ἐκ τῶν μνημείων μετὰ τὴν ἔγερσιν αὐτοῦ, εἰσῆλθον εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν, καὶ ἐνεφανίσθησαν πολλοῖς.

54 Ὁ δὲ ἑκατόνταρχος καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ, τηροῦντες τὸν Ἰησοῦν, ἰδόντες τὸν σεισμὸν καὶ τὰ γενόμενα, ἐφοβήθησαν σφόδρα, λέγοντες· Ἀληθῶς Θεοῦ Υἱὸς ἦν οὗτος.

55 Η'σαν δὲ ἐκεῖ γυναῖκες πολλαὶ, ἀπὸ μακρόθεν θεωρῦσαι· αἵτινες ἠκολύθησαν τῷ Ἰησῦ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας, διακονῦσαι αὐτῷ.

56 Ε'ν αἷς ἦν Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ, καὶ Μαρία ἡ τῦ Ἰακώβυ καὶ Ἰωσῆ Μήτηρ, καὶ ἡ Μήτηρ τῶν Υἱῶν Ζεβεδαίυ.

57 Ο'ψίας δὲ γενομένης, ἦλθεν ἄνθρωπος πλούσιος ἀπὸ Α'ριμαθαίας, τὔνομα Ἰωσὴφ, ὃς καὶ αὐτὸς ἐμαθήτευσε τῷ Ἰησῦ.

58 Οὗτος προσελθὼν τῷ Πιλάτῳ, ᾐτήσατο τὸ σῶμα τῦ Ἰησῦ. Τότε ὁ Πιλάτος ἐκέλευσεν ἀποδοθῆναι τὸ σῶμα.

59 Καὶ λαβὼν τὸ σῶμα ὁ Ἰωσὴφ, ἐνετύλιξεν αὐτὸ Σινδόνι καθαρᾷ.

60 Καὶ ἔθηκεν αὐτὸ ἐν τῷ καινῷ αὐτῦ μνημείῳ, ὃ ἐλατόμησεν ἐν τῇ πέτρᾳ. καὶ προσκυλίσας λίθον μέγαν τῇ θύρᾳ τοῦ μνημείυ, ἀπῆλθεν.

61 Η'ν δὲ ἐκεῖ Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ, καὶ ἡ ἄλλη Μαρία, καθήμεναι ἀπέναντι τῦ τάφυ.

62 Τῇ δὲ ἐπαύριον, ἥτις ἐςὶ μετὰ τὴν Παρασκευὴν, συνήχθησαν οἱ Α'ρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι πρὸς Πιλάτον,

63 Λέγοντες· Κύριε, ἐμνήσθημεν ὅτι ἐκεῖνος ὁ πλάνος εἶπεν, ἔτι ζῶν. Μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἐγείρομαι.

64 Κέλευσον οὖν ἀσφαλισθῆναι τὸν τάφον ἕως τῆς τρίτης ἡμέρας· μήποτε ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ νυκτὸς, κλέψωσιν αὐτὸν, καὶ εἴπωσι τῷ λαῷ· Η'γέρθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν· καὶ ἔςαι ἡ ἐσχάτη πλάνη χείρων τῆς πρώτης.

65 Ε'φη

65 Ε'φη δὲ αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Ε'χετε κȣςωδίαν· ὑπάγετε, ἀσφαλίσαϑε ὡς οἴδατε.

66 Οἱ δὲ πορδυθέντες ἠσφαλίσαντο τὸν τάφον, σφραγίσαντες τὸν λίϑον, μετὰ τῆς κȣςωδίας.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΗ'. 28.

Ε'ν ἐχάτῳ δὲ κλῦϑι σεισμὸν Α'γγέλȣ,
Ε'γέρσεώς τ' ἄγγελμα. ϗ μυροφόροις
Χειςȣ̃ προσαυδῶ. συκοφαντίαν τάφȣ.
Καὶ τοῖς Μαϑηταῖς εἰς ὄρος Χειςȣ̃ ϑέαν·
Βάπτισμα, ϗ σιωόντα εἰς τέλος Λόγον.

1 Ο'Ψὲ δὲ Σαββάτων, τῇ ἐπιφω-
σκȣ́σῃ εἰς μίαν Σαββάτων ἦλ-
ϑε Μαεία ἡ Μαγδαλωὴ, ϗ ἡ ἄλλη Μα-
εία, ϑεωρῆσαι τὸν τάφον.
2 Καὶ ἰδοὺ, σεισμὸς ἐγένετο μέγας·
Α'γγελος γὰρ Κυείȣ καταβὰς ἐξ οὐρανȣ̃,
προσελϑὼν ἀπεκύλισε τὸν λίϑον ἀπὸ τῆς
ϑύρας, ϗ ἐκάϑητο ἐπάνω αὐτȣ̃.
3 Η'ν δὲ ἡ ἰδέα αὐτȣ̃ ὡς ἀςραπὴ, ϗ
τὸ ἔνδυμα αὐτȣ̃ λδυκὸν ὡσεὶ χιών.
4 Α'πὸ δὲ τȣ̃ φόβȣ αὐτȣ̃ ἐσείσϑησαν οἱ
τηρȣ̃ντες, ϗ ἐγένοντο ὡσεὶ νεκροί.
5 Α'ποκειϑεὶς δὲ ὁ Α'γγελος, εἶπε ταῖς
γυναιξί· Μὴ φοβεῖσϑε ὑμεῖς· οἶδα γὰρ ὅτι
Ι'ησοῦν τὸν ἐςαυρωμένον ζητεῖτε.
6 Οὐκ ἔςιν ὧδε· ἠγέρϑη γὰρ, καϑὼς
εἶπε· δεῦτε, ἴδετε τὸν τόπον ὅπȣ ἔκειτο ὁ
Κύειος.
7 Καὶ ταχὺ πορδυϑεῖσαι, εἴπατε τοῖς

μαθηταῖς αὐτῦ, ὅτι ἠγέρθη ἀπὸ τῶν νε-
κρῶν· καὶ ἰδὺ, προάγει ὑμᾶς εἰς τὴν Γα-
λιλαίαν· ἐκεῖ αὐτὸν ὄψεσθε. ἰδὺ, εἶπον
ὑμῖν.
8 Καὶ ἐξελθῦσαι ταχὺ ἀπὸ τῦ μνημείυ
μετὰ φόβυ καὶ χαρᾶς μεγάλης, ἔδραμον
ἀπαγγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτῦ.
9 Ὡς δὲ ἐπορεύοντο ἀπαγγεῖλαι τοῖς
μαθηταῖς αὐτῦ, καὶ ἰδοὺ, ὁ Ἰησῦς ἀπήν-
τησεν αὐταῖς, λέγων· Χαίρετε. Αἱ δὲ
προσελθῦσαι ἐκράτησαν αὐτῦ τὺς πόδας,
καὶ προσεκύνησαν αὐτῷ.
10 Τότε λέγει αὐταῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ
φοβεῖσθε· ὑπάγετε, ἀπαγγείλατε τοῖς ἀ-
δελφοῖς μυ ἵνα ἀπέλθωσιν εἰς τὴν Γαλι-
λαίαν, κἀκεῖ με ὄψονται.
11 Πορευομένων δὲ αὐτῶν, ἰδὺ τινὲς τῆς
κυςωδίας ἐλθόντες εἰς τὴν πόλιν, ἀπήγ-
γειλαν τοῖς Ἀρχιερεῦσιν ἅπαντα τὰ γενόμενα.
12 Καὶ συναχθέντες μετὰ τῶν Πρεσβυ-
τέρων, συμβύλιόν τε λαβόντες, ἀργύρια
ἱκανὰ ἔδωκαν τοῖς ςρατιώταις,
13 Λέγοντες· Εἴπατε, Ὅτι οἱ μαθη-
ταὶ αὐτῦ νυκτὸς ἐλθόντες ἔκλεψαν αὐτὸν
ἡμῶν κοιμωμένων.
14 Καὶ ἐὰν ἀκυσθῇ τῦτο ἐπὶ τοῦ ἡγε-
μόνος, ἡμεῖς πείσομεν αὐτὸν, καὶ ὑμᾶς ἀ-
μερίμνυς ποιήσομεν.
15 Οἱ δὲ, λαβόντες τὰ ἀργύρια, ἐποίη-
σαν ὡς ἐδιδάχθησαν. καὶ διεφημίσθη ὁ λό-
γος ὗτος παρὰ Ἰυδαίοις μέχρι τῆς σήμερον.
16 Οἱ δὲ ἕνδεκα μαθηταὶ ἐπορεύθησαν
εἰς τὴν Γαλιλαίαν, εἰς τὸ ὄρος ὗ ἐτάξατο
αὐτοῖς ὁ Ἰησῦς.

17 Καὶ

17 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν, προσεκύνησαν
αὐτῷ· οἱ δὲ ἐδίστασαν.
18 Καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς, ἐλάλησεν
αὐτοῖς, λέγων· Ἐδόθη μοι πᾶσα ἐξουσία
ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς.
19 Πορευθέντες οὖν μαθητεύσατε πάντα
τὰ ἔθνη, βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνο-
μα τοῦ Πατρὸς, καὶ τοῦ Υἱοῦ, καὶ τοῦ ἁγίου
Πνεύματος.
20 Διδάσκοντες αὐτοὺς τηρεῖν πάντα ὅ-
σα ἐνετειλάμην ὑμῖν· καὶ ἰδοὺ, ἐγὼ μεθ'
ὑμῶν εἰμι πάσας τὰς ἡμέρας, ἕως τῆς συν-
τελείας τοῦ αἰῶνος. Ἀμήν.

ΕΥ'ΑΓΓΕ'ΛΙΟΝ

ΚΑΤΑ' ΜΑ'ΡΚΟΝ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

Πρῶτον Ζαχαείδα φέρει κήρυγμα. Θεόν τε Κλυζόμενον, νῆσιν, δίς τε καλοῦντα δύο. Πνᾶ διωκόμενον. Πέζου δ' ἐκυραντε, καὶ ἄλλους Νούσων σωζομένους, καὶ Λεπρὸν ἡμερόχρουν.

1 ἈΡΧΗ' τοῦ Εὐαγγελίου Ἰησοῦ
Χριστοῦ, Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.
2 Ὡς γέγραπται ἐν τοῖς
Προφήταις· Ἰδού, ἐγὼ ἀ-
ποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρὸ προσώπου σου,
ὃς κατασκευάσει τὴν ὁδόν σου ἔμπροσθέν σου.
3 Φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἑτοιμά-
σατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς
τρίβους αὐτοῦ.
4 Ἐγένετο Ἰωάννης βαπτίζων ἐν τῇ ἐρή-
μῳ, καὶ κηρύσσων βάπτισμα μετανοίας εἰς
ἄφεσιν ἁμαρτιῶν.
5 Καὶ ἐξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν πᾶσα ἡ Ἰου-
δαία χώρα, καὶ οἱ Ἱεροσολυμῖται· καὶ ἐβα-
πτίζοντο πάντες ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ποταμῷ ὑπ'
αὐτοῦ, ἐξομολογούμενοι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν.
6 Ἦν δὲ Ἰωάννης ἐνδεδυμένος τρίχας κα-
μήλου, καὶ ζώνην δερματίνην περὶ τὴν ὀσ-
φὺν αὐτοῦ· καὶ ἐσθίων ἀκρίδας καὶ μέλι ἄγριον.

7 Καὶ

7 Καὶ ἐκήρυσσε, λέγων· Ἔρχεται ὁ ἰσχυ-
ρότερός μου ὀπίσω μου, οὗ οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς κύ-
ψας λῦσαι τὸν ἱμάντα τῶν ὑποδημάτων αὐτοῦ.
8 Ἐγὼ μὲν ἐβάπτισα ὑμᾶς ἐν ὕδατι·
αὐτὸς δὲ βαπτίσει ὑμᾶς ἐν Πνεύματι ἁγίῳ.
9 Καὶ ἐγένετο ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις,
ἦλθεν Ἰησοῦς ἀπὸ Ναζαρὲτ τῆς Γαλι-
λαίας, καὶ ἐβαπτίσθη ὑπὸ Ἰωάννου εἰς τὸν
Ἰορδάνην.
10 Καὶ εὐθέως ἀναβαίνων ἀπὸ τοῦ ὕδα-
τος, εἶδε σχιζομένους τοὺς οὐρανοὺς, καὶ τὸ Πνεῦ-
μα ὡσεὶ περιστερὰν, καταβαῖνον ἐπ' αὐτόν.
11 Καὶ φωνὴ ἐγένετο ἐκ τῶν οὐρανῶν· Σὺ
εἶ ὁ Υἱός μου ὁ ἀγαπητὸς, ἐν ᾧ εὐδόκησα.
12 Καὶ εὐθὺς τὸ Πνεῦμα αὐτὸν ἐκβάλ-
λει εἰς τὴν ἔρημον.
13 Καὶ ἦν ἐκεῖ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἡμέρας τεσ-
σαράκοντα, πειραζόμενος ὑπὸ τοῦ Σατανᾶ·
καὶ ἦν μετὰ τῶν θηρίων· καὶ οἱ Ἄγγελοι διη-
κόνουν αὐτῷ.
14 Μετὰ δὲ τὸ παραδοθῆναι τὸν Ἰωάννην,
ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν Γαλιλαίαν, κηρύσ-
σων τὸ Εὐαγγέλιον τῆς Βασιλείας τοῦ Θεοῦ.
15 Καὶ λέγων· Ὅτι πεπλήρωται ὁ και-
ρὸς, καὶ ἤγγικεν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ· μετα-
νοεῖτε, καὶ πιστεύετε ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ.
16 Περιπατῶν δὲ παρὰ τὴν θάλασσαν
τῆς Γαλιλαίας, εἶδε Σίμωνα καὶ Ἀνδρέαν
τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ βάλλοντας ἀμφίβληστρον
ἐν τῇ θαλάσσῃ· (ἦσαν γὰρ ἁλιεῖς.)
17 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Δεῦτε ὀπί-
σω μου, καὶ ποιήσω ὑμᾶς γενέσθαι ἁλιεῖς ἀνθρώπων.
18 Καὶ εὐθέως ἀφέντες τὰ δίκτυα αὐτῶν,
ἠκολούθησαν αὐτῷ.

19 Καὶ προβὰς ἐκεῖθεν ὀλίγον, εἶδεν
Ἰάκωβον τὸν τοῦ Ζεβεδαίου, ϗ Ἰωάννην τὸν
ἀδελφὸν αὐτοῦ, ϗ αὐτοὺς ἐν τῷ πλοίῳ κα-
ταρτίζοντας τὰ δίκτυα.
20 Καὶ εὐθέως ἐκάλεσεν αὐτούς· ϗ ἀφέν-
τες τὸν Πατέρα αὐτῶν Ζεβεδαῖον ἐν τῷ πλοίῳ
μετὰ τῶν μισθωτῶν, ἀπῆλθον ὀπίσω αὐτοῦ.
21 Καὶ εἰσπορεύονται εἰς Καπερναούμ· ϗ
εὐθέως τοῖς Σάββασιν εἰσελθὼν εἰς τὴν
συναγωγὴν, ἐδίδασκε.
22 Καὶ ἐξεπλήσσοντο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐ-
τοῦ· ἦν γὰρ διδάσκων αὐτοὺς ὡς ἐξουσίαν ἔ-
χων, ϗ οὐχ ὡς οἱ Γραμματεῖς.
23 Καὶ ἦν ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν ἄνθρω-
πος ἐν Πνεύματι ἀκαθάρτῳ, ϗ ἀνέκραξε,
24 Λέγων· Ἔα, τί ἡμῖν ϗ σοὶ Ἰησοῦ
Ναζαρηνέ; ἦλθες ἀπολέσαι ἡμᾶς; οἶδά
σε τίς εἶ, ὁ ἅγιος τοῦ Θεοῦ.
25 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέ-
γων· Φιμώθητι, ϗ ἔξελθε ἐξ αὐτοῦ.
26 Καὶ σπαράξαν αὐτὸν τὸ Πνεῦμα τὸ
ἀκάθαρτον, ϗ κράξαν φωνῇ μεγάλῃ, ἐξῆλ-
θεν ἐξ αὐτοῦ.
27 Καὶ ἐθαμβήθησαν πάντες, ὥστε συ-
ζητεῖν πρὸς αὐτοὺς, λέγοντας· Τί ἐστι τοῦτο;
τίς ἡ διδαχὴ ἡ καινὴ αὕτη, ὅτι κατ' ἐξου-
σίαν ϗ τοῖς πνεύμασι τοῖς ἀκαθάρτοις ἐπι-
τάσσει, ϗ ὑπακούουσιν αὐτῷ;
28 Ἐξῆλθε δὲ ἡ ἀκοὴ αὐτοῦ εὐθὺς εἰς ὅ-
λην τὴν περίχωρον τῆς Γαλιλαίας.
29 Καὶ εὐθέως ἐκ τῆς συναγωγῆς ἐξελ-
θόντες, ἦλθον εἰς τὴν οἰκίαν Σίμωνος καὶ
Ἀνδρέου, μετὰ Ἰακώβου ϗ Ἰωάννου.
30 Ἡ δὲ πενθερὰ Σίμωνος κατέκειτο

πυρέσσουσα· καὶ εὐθέως λέγουσιν αὐτῷ περὶ
αὐτῆς.
31 Καὶ προσελθὼν ἤγειρεν αὐτὴν, κρα-
τήσας τῆς χειρὸς αὐτῆς· καὶ ἀφῆκεν αὐτὴν ὁ
πυρετὸς εὐθέως· καὶ διηκόνει αὐτοῖς.
32 Ὀψίας δὲ γενομένης, ὅτε ἔδυ ὁ Ἥ-
λιος, ἔφερον πρὸς αὐτὸν πάντας τοὺς κακῶς
ἔχοντας καὶ τοὺς δαιμονιζομένους.
33 Καὶ ἡ πόλις ὅλη ἐπισυνηγμένη ἦν
πρὸς τὴν θύραν.
34 Καὶ ἐθεράπευσε πολλοὺς κακῶς ἔχον-
τας ποικίλαις νόσοις· καὶ δαιμόνια πολλὰ
ἐξέβαλε, καὶ οὐκ ἤφιε λαλεῖν τὰ δαιμόνια,
ὅτι ᾔδεισαν αὐτόν.
35 Καὶ πρωῒ ἔννυχον λίαν ἀναστὰς ἐξῆλ-
θε· καὶ ἀπῆλθεν εἰς ἔρημον τόπον, κἀκεῖ
προσηύχετο.
36 Καὶ κατεδίωξαν αὐτὸν ὁ Σίμων καὶ
οἱ μετ᾽ αὐτοῦ.
37 Καὶ εὑρόντες αὐτὸν, λέγουσιν αὐτῷ·
Ὅτι πάντες ζητοῦσί σε.
38 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἄγωμεν εἰς τὰς
ἐχομένας κωμοπόλεις, ἵνα κἀκεῖ κηρύξω·
εἰς τοῦτο γὰρ ἐξελήλυθα.
39 Καὶ ἦν κηρύσσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς
αὐτῶν, εἰς ὅλην τὴν Γαλιλαίαν· καὶ τὰ
δαιμόνια ἐκβάλλων.
40 Καὶ ἔρχεται πρὸς αὐτὸν λεπρὸς,
παρακαλῶν αὐτὸν καὶ γονυπετῶν αὐτὸν, καὶ
λέγων αὐτῷ· Ὅτι, ἐὰν θέλῃς, δύνασαί
με καθαρίσαι.
41 Ὁ δὲ Ἰησοῦς σπλαγχνισθεὶς, ἐκτεί-
νας τὴν χεῖρα, ἥψατο αὐτοῦ, καὶ λέγει αὐ-
τῷ· Θέλω, καθαρίσθητι.

42 Καὶ εἰπόντος αὐτοῦ, εὐθέως ἀπῆλθεν
ἀπ' αὐτοῦ ἡ λέπρα, καὶ ἐκαθαρίσθη.
43 Καὶ ἐμβριμησάμενος αὐτῷ, εὐθέως
ἐξέβαλεν αὐτόν.
44 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ὅρα μηδενὶ μη-
δὲν εἴπῃς· ἀλλ' ὕπαγε, σεαυτὸν δεῖξον τῷ
Ἱερεῖ, καὶ προσένεγκε περὶ τοῦ καθαρισμοῦ
σου ἃ προσέταξε Μωσῆς, εἰς μαρτύριον
αὐτοῖς.
45 Ὁ δὲ ἐξελθὼν ἤρξατο κηρύσσειν πολ-
λὰ καὶ διαφημίζειν τὸν λόγον, ὥστε μηκέτι
δύνασθαι φανερῶς εἰς πόλιν εἰσελθεῖν· ἀλλ'
ἔξω ἐν ἐρήμοις τόποις ἦν, καὶ ἤρχοντο πρὸς
αὐτὸν πανταχόθεν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

Δεύτερον δ' αὖ Παράλυτον· ὁμοῦ Λευΐ τε
τελώνας.
Νήστεις μεμφομένους συμποσιαζομένων.
Παρβολίην τε ῥάκους, ἀσκῶν τε, καὶ αἴθο-
πος οἴνου.
Τρίψιν τ' ἐν Σαββάτῳ πειναλέαι σταχύων.

1 Καὶ πάλιν εἰσῆλθεν εἰς Καπερ-
ναοὺμ δι' ἡμερῶν. καὶ ἠκούσθη ὅτι
εἰς οἶκόν ἐστι.
2 Καὶ εὐθέως συνήχθησαν πολλοί· ὥ-
στε μηκέτι χωρεῖν μηδὲ τὰ πρὸς τὴν θύραν·
καὶ ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον.
3 Καὶ ἔρχονται πρὸς αὐτὸν, παραλυτι-
κὸν φέροντες αἰρόμενον ὑπὸ τεσσάρων.
4 Καὶ μὴ δυνάμενοι προσεγγίσαι αὐτῷ
διὰ τὸν ὄχλον, ἀπεστέγασαν τὴν στέγην ὅπου
ἦν·

ἦν· καὶ ἐξορύξαντες χαλῶσι τὸν κράββατον,
ἐφ᾽ ᾧ ὁ Παραλυτικὸς κατέκειτο.
5 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς τὴν πίστιν αὐτῶν,
λέγει τῷ Παραλυτικῷ· Τέκνον, ἀφέωνταί
σοι αἱ ἁμαρτίαι σου.
6 Ἦσαν δέ τινες τῶν Γραμματέων ἐκεῖ
καθήμενοι, καὶ διαλογιζόμενοι ἐν ταῖς καρ-
δίαις αὐτῶν.
7 Τί οὗτος οὕτω λαλεῖ βλασφημίας; τίς
δύναται ἀφιέναι ἁμαρτίας, εἰ μὴ εἷς ὁ Θεός;
8 Καὶ εὐθέως ἐπιγνοὺς ὁ Ἰησοῦς τῷ Πνεύ-
ματι αὐτοῦ, ὅτι οὕτως διαλογίζονται ἐν ἑαυ-
τοῖς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί ταῦτα διαλογίζεσθε
ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;
9 Τί ἐστιν εὐκοπώτερον, εἰπεῖν τῷ Πα-
ραλυτικῷ· Ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι· ἢ
εἰπεῖν· Ἔγειραι, καὶ ἆρόν σου τὸν κράββα-
τον, καὶ περιπάτει;
10 Ἵνα δὲ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ
Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀφιέναι ἐπὶ τῆς γῆς ἁ-
μαρτίας. (λέγει τῷ Παραλυτικῷ.)
11 Σοὶ λέγω, ἔγειραι, καὶ ἆρον τὸν κράβ-
βατόν σου, καὶ ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου.
12 Καὶ ἠγέρθη εὐθέως, καὶ ἄρας τὸν
κράββατον, ἐξῆλθεν ἐναντίον πάντων· ὥ-
στε ἐξίστασθαι πάντας, καὶ δοξάζειν τὸν Θεὸν,
λέγοντας· Ὅτι οὐδέποτε οὕτως εἴδομεν.
13 Καὶ ἐξῆλθε πάλιν παρὰ τὴν θά-
λασσαν· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἤρχετο πρὸς αὐτὸν,
καὶ ἐδίδασκεν αὐτούς.
14 Καὶ παράγων εἶδε Λευΐν τὸν τοῦ Ἀλ-
φαίου καθήμενον ἐπὶ τὸ τελώνιον· καὶ λέγει
αὐτῷ· Ἀκολούθει μοι. Καὶ ἀναστὰς ἠκολού-
θησεν αὐτῷ.

15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κατακεῖσθαι αὐτὸν ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ, καὶ πολλοὶ τελῶναι καὶ ἁμαρτωλοὶ συνανέκειντο τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ἦσαν γὰρ πολλοί, καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ.

16 Καὶ οἱ Γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἰδόντες αὐτὸν ἐσθίοντα μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν, ἔλεγον τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Τί ὅτι μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐσθίει καὶ πίνει;

17 Καὶ ἀκούσας ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Οὐ χρείαν ἔχουσιν οἱ ἰσχύοντες ἰατροῦ, ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες. οὐκ ἦλθον καλέσαι δικαίους, ἀλλὰ ἁμαρτωλοὺς εἰς μετάνοιαν.

18 Καὶ ἦσαν οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου καὶ οἱ τῶν Φαρισαίων νηστεύοντες· καὶ ἔρχονται καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Διατί οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου καὶ οἱ τῶν Φαρισαίων νηστεύουσιν, οἱ δὲ σοὶ μαθηταὶ οὐ νηστεύουσι;

19 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ δύνανται οἱ Υἱοὶ τοῦ νυμφῶνος, ἐν ᾧ ὁ νυμφίος μετ' αὐτῶν ἐστι, νηστεύειν; ὅσον χρόνον μεθ' ἑαυτῶν ἔχουσι τὸν Νυμφίον, οὐ δύνανται νηστεύειν.

20 Ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ' αὐτῶν ὁ Νυμφίος, καὶ τότε νηστεύσουσιν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.

21 Καὶ οὐδεὶς ἐπίβλημα ῥάκους ἀγνάφου ἐπιῤῥάπτει ἐπὶ ἱματίῳ παλαιῷ· εἰ δὲ μή, αἴρει τὸ πλήρωμα αὐτοῦ τὸ καινὸν τοῦ παλαιοῦ, καὶ χεῖρον σχίσμα γίνεται.

22 Καὶ οὐδεὶς βάλλει οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς παλαιούς· εἰ δὲ μή, ῥήσσει ὁ οἶνος ὁ νέος τοὺς ἀσκούς, καὶ ὁ οἶνος ἐκχεῖται, καὶ οἱ ἀσκοὶ ἀπολοῦνται· ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς καινοὺς βλητέον.

23 Καὶ ἐγένετο παραπορεύεσθαι αὐτὸν ἐν
τοῖς Σάββασι διὰ τῶν σποείμων, καὶ ἤρξαν-
το οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ὁδὸν ποιεῖν τίλλοντες
τοὺς στάχυας.

24 Καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἔλεγον αὐτῷ· Ἴδε,
τί ποιοῦσιν ἐν τοῖς Σάββασιν ὃ οὐκ ἔξεστι;

25 Καὶ αὐτὸς ἔλεγεν αὐτοῖς· Οὐδέποτε
ἀνέγνωτε τί ἐποίησε Δαβίδ, ὅτε χρείαν
ἔσχε, καὶ ἐπείνασεν αὐτὸς καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ;

26 Πῶς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ
ἐπὶ Ἀβιάθαρ τοῦ Ἀρχιερέως, καὶ τοὺς ἄρτους
τῆς προθέσεως ἔφαγεν, οὓς οὐκ ἔξεστι φαγεῖν
εἰ μὴ τοῖς Ἱερεῦσι, καὶ ἔδωκε καὶ τοῖς σὺν
αὐτῷ οὖσι;

27 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Τὸ Σάββατον
διὰ τὸν ἄνθρωπον ἐγένετο, οὐχ ὁ ἄνθρωπος
διὰ τὸ Σάββατον.

28 Ὥστε Κύριός ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώ-
που καὶ τοῦ Σαββάτου.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ. Γ'. 3.

Τὸ τρίτον αὖθις ἔχει ξηρὰν κατὰ Σάββα-
τα χεῖρα.
Καὶ κατὰ τοῦ Χειστοῦ Γραμματέας συνάγει.
Μύσων ἐκλογίζωντε· κατηγορίζωντε μαγείης.
Εὐσεβέας τε Λόγου συγγενέας καλέει.

1 ΚΑὶ εἰσῆλθε πάλιν εἰς τὴν συνα-
γωγήν· καὶ ἦν ἐκεῖ ἄνθρωπος
ἐξηραμμένην ἔχων τὴν χεῖρα.

2 Καὶ παρετήρουν αὐτὸν εἰ τοῖς Σάββασι
θεραπεύσει αὐτὸν, ἵνα κατηγορήσωσιν αὐτοῦ.

3 Καὶ λέγει τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἐξηραμμέ-

νην

τὴν ἔχοντι τὴν χεῖρα· Ἔγειραι εἰς τὸ μέσον.
4 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἔξεστι τοῖς Σάβ-
βασιν ἀγαθοποιῆσαι, ἢ κακοποιῆσαι; ψυ-
χὴν σῶσαι, ἢ ἀποκτεῖναι; Οἱ δὲ ἐσιώπων.
5 Καὶ περιβλεψάμενος αὐτοὺς μετ' ὀργῆς,
συλλυπούμενος ἐπὶ τῇ πωρώσει τῆς καρδίας
αὐτῶν, λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· Ἔκτεινον τὴν
χεῖρά σου· καὶ ἐξέτεινε· καὶ ἀποκατεστάθη ἡ
χεὶρ αὐτοῦ ὑγιὴς ὡς ἡ ἄλλη.
6 Καὶ ἐξελθόντες οἱ Φαρισαῖοι, εὐθέως
μετὰ τῶν Ἡρωδιανῶν συμβούλιον ἐποίουν
κατ' αὐτοῦ, ὅπως αὐτὸν ἀπολέσωσι.
7 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀνεχώρησε μετὰ τῶν μα-
θητῶν αὐτοῦ πρὸς τὴν θάλασσαν· καὶ πολὺ
πλῆθος ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ἠκολούθησαν
αὐτῷ, καὶ ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας,
8 Καὶ ἀπὸ Ἱεροσολύμων, καὶ ἀπὸ τῆς
Ἰδουμαίας, καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου· καὶ οἱ πε-
ρὶ Τύρον καὶ Σιδῶνα, πλῆθος πολὺ, ἀκού-
σαντες ὅσα ἐποίει, ἦλθον πρὸς αὐτόν.
9 Καὶ εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα
πλοιάριον προσκαρτερῇ αὐτῷ, διὰ τὸν ὄχ-
λον, ἵνα μὴ θλίβωσιν αὐτόν.
10 Πολλοὺς γὰρ ἐθεράπευσεν· ὥστε ἐπι-
πίπτειν αὐτῷ, ἵνα αὐτοῦ ἅψωνται, ὅσοι
εἶχον μάστιγας.
11 Καὶ τὰ Πνεύματα τὰ ἀκάθαρτα, ὅ-
ταν αὐτὸν ἐθεώρει, προσέπιπτεν αὐτῷ, καὶ ἔ-
κραζε, λέγοντα· Ὅτι σὺ εἶ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ.
12 Καὶ πολλὰ ἐπετίμα αὐτοῖς, ἵνα μὴ
αὐτὸν φανερὸν ποιήσωσι.
13 Καὶ ἀναβαίνει εἰς τὸ ὄρος, καὶ προσκα-
λεῖται οὓς ἤθελεν αὐτός· καὶ ἀπῆλθον πρὸς
αὐτόν.

14 Καὶ ἐποίησε δώδεκα, ἵνα ὦσι μετ'
αὐτȣ̃, ϗ ἵνα ἀποςέλλῃ αὐτȣ̀ς κηρύσσειν,
15 Καὶ ἔχειν ἐξȣσίαν θεραπεύειν τὰς νό-
σȣς, ϗ ἐκβάλλειν τὰ δαιμόνια.
16 Καὶ ἐπέθηκε τῷ Σίμωνι ὄνομα Πέτρον.
17 Καὶ Ἰάκωβον τὸν τȣ̃ Ζεβεδαίȣ, καὶ
Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν τοῦ Ἰακώβȣ· (καὶ
ἐπέθηκεν αὐτοῖς ὀνόματα Βοανεργὲς, ὅ ἐςιν,
Υἱοὶ βροντῆς.)
18 Καὶ Ἀνδρέαν, καὶ Φίλιππον, καὶ
Βαρθολομαῖον, ϗ Ματθαῖον, ϗ Θωμᾶν,
ϗ Ἰάκωβον τὸν τȣ̃ Ἀλφαίȣ, ϗ Θαδδαῖον,
ϗ Σίμωνα τὸν Κανανίτην,
19 Καὶ Ἰȣ́δαν Ἰσκαριώτην, ὃς ϗ πα-
ρέδωκεν αὐτόν.
20 Καὶ ἔρχονται εἰς οἶκον· ϗ συνέρχε-
ται πάλιν ὄχλος, ὥςε μὴ δύνασθαι αὐτȣ̀ς
μήτε ἄρτον φαγεῖν.
21 Καὶ ἀκȣ́σαντες οἱ παρ' αὐτȣ̃, ἐξῆλθον
κρατῆσαι αὐτόν· ἔλεγον γάρ· Ὅτι ἐξέςη.
22 Καὶ οἱ Γραμματεῖς οἱ ἀπὸ Ἱεροσο-
λύμων καταβάντες, ἔλεγον· Ὅτι Βεελζε-
βȣ̀λ ἔχει, ϗ ὅτι ἐν τῷ ἄρχοντι τῶν δαιμο-
νίων ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια.
23 Καὶ προσκαλεσάμενος αὐτοὺς, ἐν
παραβολαῖς ἔλεγεν αὐτοῖς· Πῶς δύναται
Σατανᾶς Σατανᾶν ἐκβάλλειν;
24 Καὶ ἐὰν βασιλεία ἐφ' ἑαυτὴν μερισθῇ,
ȣ̉ δύναται ςαθῆναι ἡ βασιλεία ἐκείνη.
25 Καὶ ἐὰν οἰκία ἐφ' ἑαυτὴν μερισθῇ, ȣ̉
δύναται ςαθῆναι ἡ οἰκία ἐκείνη.
26 Καὶ εἰ ὁ Σατανᾶς ἀνέςη ἐφ' ἑαυτὸν
καὶ μεμέρισαι, ȣ̉ δύναται ςαθῆναι, ἀλλὰ
τέλος ἔχει.

27 Οὐ

27 Οὐ δύναται οὐδεὶς τὰ σκεύη τοῦ ἰσχυροῦ,
εἰσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, διαρπάσαι,
ἐὰν μὴ πρῶτον τὸν ἰσχυρὸν δήσῃ· καὶ τότε τὴν
οἰκίαν αὐτοῦ διαρπάσει.
28 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι πάντα ἀφεθήσε-
ται τὰ ἁμαρτήματα τοῖς Υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων,
καὶ βλασφημίαι ὅσας ἂν βλασφημήσωσιν.
29 Ὃς δ' ἂν βλασφημήσῃ εἰς τὸ Πνεῦμα
τὸ ἅγιον, οὐκ ἔχει ἄφεσιν εἰς τὸν αἰῶνα, ἀλλ'
ἔνοχός ἐστιν αἰωνίου κρίσεως.
30 Ὅτι ἔλεγον· Πνεῦμα ἀκάθαρτον ἔχει.
31 Ἔρχονται οὖν οἱ ἀδελφοὶ καὶ ἡ Μήτηρ
αὐτοῦ· καὶ ἔξω ἑστῶτες ἀπέστειλαν πρὸς αὐ-
τὸν, φωνοῦντες αὐτόν.
32 Καὶ ἐκάθητο ὄχλος περὶ αὐτόν· εἶ-
πον δὲ αὐτῷ· Ἰδοὺ, ἡ Μήτηρ σου καὶ οἱ ἀ-
δελφοί σου ἔξω ζητοῦσί σε.
33 Καὶ ἀπεκρίθη αὐτοῖς, λέγων· Τίς
ἐστιν ἡ Μήτηρ μου ἢ οἱ ἀδελφοί μου;
34 Καὶ περιβλεψάμενος κύκλῳ τοὺς περὶ
αὐτὸν καθημένους, λέγει· Ἴδε ἡ Μήτηρ μου
καὶ οἱ ἀδελφοί μου.
35 Ὃς γὰρ ἂν ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ,
οὗτος ἀδελφός μου καὶ ἀδελφή μου καὶ Μήτηρ ἐστί.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

Κλῦθι δὲ παρβολίην τετράτῳ σπόρου. ἔνθα
τε κόκκου.
Νάπυος. εἶτα σάλου ῥήματι παυσαμένου.

1 ΚΑὶ πάλιν ἤρξατο διδάσκειν παρὰ
τὴν θάλασσαν· καὶ συνήχθη πρὸς
αὐτὸν ὄχλος πολὺς, ὥστε αὐτὸν ἐμβάντα εἰς

τὸ πλοῖον, καθῆσθαι ἐν τῇ θαλάσσῃ· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος πρὸς τὴν θάλασσαν ἐπὶ τῆς γῆς ἦν.

2 Καὶ ἐδίδασκεν αὐτοὺς ἐν παραβολαῖς πολλά, καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς ἐν τῇ διδαχῇ αὐτοῦ.

3 Ἀκούετε· Ἰδού, ἐξῆλθεν ὁ σπείρων τοῦ σπεῖραι.

4 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ σπείρειν, ὃ μὲν ἔπεσε παρὰ τὴν ὁδόν, καὶ ἦλθε τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατέφαγεν αὐτό.

5 Ἄλλο δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὸ πετρῶδες, ὅπου οὐκ εἶχε γῆν πολλήν· καὶ εὐθέως ἐξανέτειλε, διὰ τὸ μὴ ἔχειν βάθος γῆς.

6 Ἡλίου δὲ ἀνατείλαντος ἐκαυματίσθη, καὶ διὰ τὸ μὴ ἔχειν ῥίζαν, ἐξηράνθη.

7 Καὶ ἄλλο ἔπεσεν εἰς τὰς ἀκάνθας· καὶ ἀνέβησαν αἱ ἄκανθαι, καὶ συνέπνιξαν αὐτό, καὶ καρπὸν οὐκ ἔδωκε.

8 Καὶ ἄλλο ἔπεσεν εἰς τὴν γῆν τὴν καλήν· καὶ ἐδίδου καρπὸν ἀναβαίνοντα καὶ αὐξάνοντα. καὶ ἔφερεν, ἓν τριάκοντα, καὶ ἓν ἑξήκοντα, καὶ ἓν ἑκατόν.

9 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.

10 Ὅτε δὲ ἐγένετο καταμόνας, ἠρώτησαν αὐτὸν οἱ περὶ αὐτὸν σὺν τοῖς δώδεκα τὴν παραβολήν.

11 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὑμῖν δέδοται γνῶναι τὸ Μυστήριον τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ· ἐκείνοις δὲ τοῖς ἔξω, ἐν παραβολαῖς τὰ πάντα γίνεται·

12 Ἵνα βλέποντες βλέπωσι, καὶ μὴ ἴδωσι, καὶ ἀκούοντες ἀκούωσι, καὶ μὴ συνιῶσι· μήποτε ἐπιστρέψωσι, καὶ ἀφεθῇ αὐτοῖς τὰ ἁμαρτήματα.

13 Καὶ

13 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὐκ οἴδατε τὴν
παραβολὴν ταύτην; καὶ πῶς πάσας τὰς πα-
ραβολὰς γνώσεσθε;
14 Ὁ σπείρων, τὸν λόγον σπείρει.
15 Οὗτοι δέ εἰσιν οἱ παρὰ τὴν ὁδὸν, ὅ-
που σπείρεται ὁ λόγος· καὶ ὅταν ἀκούσωσιν,
εὐθέως ἔρχεται ὁ Σατανᾶς, καὶ αἴρει τὸν λό-
γον τὸν ἐσπαρμένον ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν.
16 Καὶ οὗτοί εἰσιν ὁμοίως οἱ ἐπὶ τὰ πετρώ-
δη σπειρόμενοι, οἳ, ὅταν ἀκούσωσι τὸν λό-
γον, εὐθέως μετὰ χαρᾶς λαμβάνουσιν αὐτόν.
17 Καὶ οὐκ ἔχουσι ῥίζαν ἐν ἑαυτοῖς, ἀλ-
λὰ πρόσκαιροί εἰσιν· εἶτα γενομένης θλί-
ψεως ἢ διωγμοῦ διὰ τὸν λόγον, εὐθέως
σκανδαλίζονται.
18 Καὶ οὗτοί εἰσιν οἱ εἰς τὰς ἀκάνθας σπει-
ρόμενοι, οὗτοί εἰσιν οἱ τὸν λόγον ἀκούοντες.
19 Καὶ αἱ μέριμναι τοῦ αἰῶνος τούτου, καὶ
ἡ ἀπάτη τοῦ πλούτου, καὶ αἱ περὶ τὰ λοιπὰ
ἐπιθυμίαι εἰσπορευόμεναι συμπνίγουσι τὸν
λόγον, καὶ ἄκαρπος γίνεται.
20 Καὶ οὗτοί εἰσιν οἱ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν κα-
λὴν σπαρέντες, οἵτινες ἀκούουσι τὸν λόγον,
καὶ παραδέχονται· καὶ καρποφοροῦσιν, ἓν τριά-
κοντα, καὶ ἓν ἑξήκοντα, καὶ ἓν ἑκατόν.
21 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Μήτι ὁ λύχνος
ἔρχεται ἵνα ὑπὸ τὸν μόδιον τεθῇ, ἢ ὑ-
πὸ τὴν κλίνην; οὐχ ἵνα ἐπὶ τὴν λυχνίαν
ἐπιτεθῇ;
22 Οὐ γάρ ἐστί τι κρυπτὸν ὃ ἐὰν μὴ φα-
νερωθῇ· οὐδὲ ἐγένετο ἀπόκρυφον, ἀλλ' ἵνα εἰς
φανερὸν ἔλθῃ.
23 Εἴ τις ἔχει ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
24 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Βλέπετε τί ἀ-
κού-

κέετε. ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε, μετρηθήσεται
ὑμῖν, καὶ προσεθήσεται ὑμῖν τοῖς ἀκέεσιν.
25 Ὃς γὰρ ἂν ἔχῃ, δοθήσεται αὐτῷ·
καὶ ὃς ἐκ ἔχει, καὶ ὃ ἔχει ἀρθήσεται ἀπ' αὐτε.
26 Καὶ ἔλεγεν· Οὕτως ἐςὶν ἡ Βασιλεία
τε Θεε, ὡς ἐὰν ἄνθρωπος βάλῃ τὸν σπόρον
ἐπὶ τῆς γῆς,
27 Καὶ καθεύδῃ, καὶ ἐγείρηται νύκτα καὶ
ἡμέραν· καὶ ὁ σπόρος βλαςάνῃ, καὶ μηκύνη-
ται ὡς ἐκ οἶδεν αὐτός.
28 Αὐτομάτη γὰρ ἡ γῆ καρποφορεῖ,
πρῶτον χόρτον, εἶτα ςάχυν, εἶτα πλήρη
σῖτον ἐν τῷ ςάχυϊ.
29 Ὅταν δὲ παραδῷ ὁ καρπὸς, εὐθέως
ἀποςέλλει τὸ δρέπανον, ὅτι παρέςηκεν ὁ
θερισμός.
30 Καὶ ἔλεγε· Τίνι ὁμοιώσωμεν τὴν
Βασιλείαν τε Θεε; ἢ ἐν ποίᾳ παραβολῇ
παραβάλωμεν αὐτήν;
31 Ὡς κόκκῳ σινάπεως, ὃς, ὅταν σπα-
ρῇ ἐπὶ τῆς γῆς, μικρότερος πάντων τῶν σπερ-
μάτων ἐςὶ τῶν ἐπὶ τῆς γῆς.
32 Καὶ ὅταν σπαρῇ, ἀναβαίνει, καὶ γίνε-
ται πάντων τῶν λαχάνων μείζων, καὶ ποιεῖ
κλάδες μεγάλες, ὥςε δύνασθαι ὑπὸ τὴν
σκιὰν αὐτε τὰ πετεινὰ τε ἐρανε κατασκηνεν.
33 Καὶ τοιαύταις παραβολαῖς πολλαῖς
ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον, καθὼς ἠδύναντο
ἀκούειν.
34 Χωρὶς δὲ παραβολῆς ἐκ ἐλάλει αὐ-
τοῖς· κατ' ἰδίαν δὲ τοῖς μαθηταῖς αὐτε
ἐπέλυε πάντα.
35 Καὶ λέγει αὐτοῖς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ,
ὀψίας γενομένης. Διέλθωμεν εἰς τὸ πέραν.
36 Καὶ

36 Καὶ ἀφέντες τὸν ὄχλον παραλαμβά-
νουσιν αὐτὸν ὡς ἦν ἐν τῷ πλοίῳ· καὶ ἄλλα
δὲ πλοιάρια ἦν μετ' αὐτοῦ·

37 Καὶ γίνεται λαῖλαψ ἀνέμου μεγά-
λη· τὰ δὲ κύματα ἐπέβαλεν εἰς τὸ πλοῖον,
ὥστε αὐτὸ ἤδη γεμίζεσθαι.

38 Καὶ ἦν αὐτὸς ἐπὶ τῇ πρύμνῃ ἐπὶ τὸ
προσκεφάλαιον καθεύδων· καὶ διεγείρουσιν
αὐτὸν, καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, οὐ
μέλει σοι ὅτι ἀπολλύμεθα;

39 Καὶ διεγερθεὶς ἐπετίμησε τῷ ἀνέ-
μῳ, καὶ εἶπε τῇ θαλάσσῃ· Σιώπα, πεφί-
μωσο· Καὶ ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος, καὶ ἐγένετο
γαλήνη μεγάλη.

40 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί δειλοί ἐστε
οὕτω; πῶς οὐκ ἔχετε πίστιν;

41 Καὶ ἐφοβήθησαν φόβον μέγαν, καὶ
ἔλεγον πρὸς ἀλλήλους· Τίς ἄρα οὗτός ἐστιν,
ὅτι καὶ ὁ ἄνεμος καὶ ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν
αὐτῷ;

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

Πέμπτον δ' εἰς ἀγέλην χοίρων λεγεῶνα
βυθίζει·
Αἱμόῤῥαν ἀκέει, ζωογονεῖτε κόρην.

1 ΚΑὶ ἦλθον εἰς τὸ πέραν τῆς θαλάσ-
σης, εἰς τὴν χώραν τῶν Γαδαρηνῶν.

2 Καὶ ἐξελθόντι αὐτῷ ἐκ τοῦ πλοίου,
εὐθέως ἀπήντησεν αὐτῷ ἐκ τῶν μνημείων
ἄνθρωπος ἐν πνεύματι ἀκαθάρτῳ.

3 Ὃς τὴν κατοίκησιν εἶχεν ἐν τοῖς μνημείοις,
καὶ οὔτε ἁλύσεσιν οὐδεὶς ἠδύνατο αὐτὸν δῆσαι.

4 Διὰ τὸ αὐτὸν πολλάκις πέδαις καὶ ἁ-
λύσεσι δεδέσθαι, καὶ διεσπᾶσθαι ὑπ' αὐτοῦ τὰς
ἁλύσεις, καὶ τὰς πέδας συντετρῖφθαι· καὶ
οὐδεὶς αὐτὸν ἴσχυε δαμάσαι.
5 Καὶ διὰ παντὸς νυκτὸς καὶ ἡμέρας ἐν
τοῖς ὄρεσι καὶ ἐν τοῖς μνήμασιν ἦν κράζων,
καὶ κατακόπτων ἑαυτὸν λίθοις.
6 Ἰδὼν δὲ τὸν Ἰησοῦν ἀπὸ μακρόθεν, ἔ-
δραμε, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ.
7 Καὶ κράξας φωνῇ μεγάλῃ, εἶπε· Τί
ἐμοὶ καὶ σοὶ Ἰησοῦ Υἱὲ τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑψίστου;
ὁρκίζω σε τὸν Θεόν, μή με βασανίσῃς.
8 (Ἔλεγε γὰρ αὐτῷ· Ἔξελθε τὸ Πνεῦ-
μα τὸ ἀκάθαρτον ἐκ τοῦ ἀνθρώπου.)
9 Καὶ ἐπηρώτα αὐτόν· Τί σοι ὄνομα;
Καὶ ἀπεκρίθη, λέγων· Λεγεὼν ὄνομά μοι·
ὅτι πολλοί ἐσμεν.
10 Καὶ παρεκάλει αὐτὸν πολλὰ, ἵνα μὴ
αὐτοὺς ἀποστείλῃ ἔξω τῆς χώρας.
11 Ἦν δὲ ἐκεῖ πρὸς τὰ ὄρη ἀγέλη χοί-
ρων μεγάλη βοσκομένη.
12 Καὶ παρεκάλεσαν αὐτὸν πάντες οἱ
δαίμονες, λέγοντες· Πέμψον ἡμᾶς εἰς
τοὺς χοίρους, ἵνα εἰς αὐτοὺς εἰσέλθωμεν.
13 Καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς εὐθέως ὁ Ἰη-
σοῦς· Καὶ ἐξελθόντα τὰ Πνεύματα τὰ ἀκά-
θαρτα, εἰσῆλθον εἰς τοὺς χοίρους· καὶ ὥρμη-
σεν ἡ ἀγέλη κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν θά-
λασσαν, (ἦσαν δὲ ὡς δισχίλιοι) καὶ ἐπνί-
γοντο ἐν τῇ θαλάσσῃ.
14 Οἱ δὲ βόσκοντες τοὺς χοίρους ἔφυγον,
καὶ ἀνήγγειλαν εἰς τὴν πόλιν καὶ εἰς τοὺς ἀ-
γρούς. Καὶ ἐξῆλθον ἰδεῖν τί ἐστι τὸ γεγονός.
15 Καὶ ἔρχονται πρὸς τὸν Ἰησοῦν, καὶ

θεω-

θεωροῦσι τὸν δαιμονιζόμενον καθήμενον καὶ
ἱματισμένον, καὶ σωφρονοῦντα τὸν ἐσχηκότα τὸν
λεγεῶνα· καὶ ἐφοβήθησαν.
16 Καὶ διηγήσαντο αὐτοῖς οἱ ἰδόντες, πῶς
ἐγένετο τῷ δαιμονιζομένῳ, καὶ περὶ τῶν χοίρων.
17 Καὶ ἤρξαντο παρακαλεῖν αὐτὸν ἀπελ-
θεῖν ἀπὸ τῶν ὁρίων αὐτῶν.
18 Καὶ ἐμβάντος αὐτοῦ εἰς τὸ πλοῖον, πα-
ρεκάλει αὐτὸν ὁ δαιμονισθεὶς ἵνα ᾖ μετ' αὐτοῦ.
19 Ὁ δὲ Ἰησοῦς οὐκ ἀφῆκεν αὐτὸν, ἀλλὰ
λέγει αὐτῷ· Ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου πρὸς
τοὺς σοὺς, καὶ ἀνάγγειλον αὐτοῖς ὅσα σοι ὁ Κύ-
ριος ἐποίησε, καὶ ἠλέησέ σε.
20 Καὶ ἀπῆλθε, καὶ ἤρξατο κηρύσσειν ἐν
τῇ Δεκαπόλει ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰη-
σοῦς· καὶ πάντες ἐθαύμαζον.
21 Καὶ διαπεράσαντος τοῦ Ἰησοῦ ἐν τῷ
πλοίῳ πάλιν εἰς τὸ πέραν, συνήχθη ὄχλος
πολὺς ἐπ' αὐτόν· καὶ ἦν παρὰ τὴν θάλασσαν.
22 Καὶ ἰδοὺ, ἔρχεται εἷς τῶν ἀρχισυνα-
γώγων, ὀνόματι Ἰάειρος· καὶ ἰδὼν αὐτὸν,
πίπτει πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ.
23 Καὶ παρεκάλει αὐτὸν πολλὰ, λέγων·
Ὅτι τὸ θυγάτριόν μου ἐσχάτως ἔχει, ἵνα ἐλ-
θὼν ἐπιθῇς αὐτῇ τὰς χεῖρας, ὅπως σωθῇ·
καὶ ζήσεται.
24 Καὶ ἀπῆλθε μετ' αὐτοῦ· καὶ ἠκολούθει
αὐτῷ ὄχλος πολὺς, καὶ συνέθλιβον αὐτόν.
25 (Καὶ γυνή τις οὖσα ἐν ῥύσει αἵματος
ἔτη δώδεκα,
26 Καὶ πολλὰ παθοῦσα ὑπὸ πολλῶν ἰα-
τρῶν, καὶ δαπανήσασα τὰ παρ' ἑαυτῆς πάν-
τα, καὶ μηδὲν ὠφεληθεῖσα, ἀλλὰ μᾶλλον εἰς
τὸ χεῖρον ἐλθοῦσα,

27 Ἀκού-

27 Ἀκούσασα περὶ τοῦ Ἰησοῦ, ἐλθοῦσα ἐν
τῷ ὄχλῳ ὄπισθεν, ἥψατο τοῦ ἱματίου αὐτοῦ·
28 Ἔλεγε γάρ· Ὅτι κἂν τῶν ἱματίων
αὐτοῦ ἅψωμαι, σωθήσομαι.
29 Καὶ εὐθέως ἐξηράνθη ἡ πηγὴ τοῦ αἵ-
ματος αὐτῆς· καὶ ἔγνω τῷ σώματι ὅτι ἴαται
ἀπὸ τῆς μάστιγος.
30 Καὶ εὐθέως ὁ Ἰησοῦς ἐπιγνοὺς ἐν ἑαυ-
τῷ τὴν ἐξ αὐτοῦ δύναμιν ἐξελθοῦσαν, ἐπι-
στραφεὶς ἐν τῷ ὄχλῳ, ἔλεγε· Τίς μου ἥψα-
το τῶν ἱματίων;
31 Καὶ ἔλεγον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
Βλέπεις τὸν ὄχλον συνθλίβοντά σε, καὶ λέ-
γεις· Τίς μου ἥψατο;
32 Καὶ περιεβλέπετο ἰδεῖν τὴν τοῦτο
ποιήσασαν.
33 Ἡ δὲ γυνὴ, φοβηθεῖσα καὶ τρέμουσα,
εἰδυῖα ὃ γέγονεν ἐπ' αὐτῇ, ἦλθε καὶ προσέπε-
σεν αὐτῷ, καὶ εἶπεν αὐτῷ πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν.
34 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· Θύγατερ, ἡ πί-
στις σου σέσωκέ σε· ὕπαγε εἰς εἰρήνην, καὶ
ἴσθι ὑγιὴς ἀπὸ τῆς μάστιγός σου.
35 Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος, ἔρχονται ἀπὸ τοῦ
ἀρχισυναγώγου, λέγοντες· Ὅτι ἡ θυγάτηρ σου
ἀπέθανε· τί ἔτι σκύλλεις τὸν διδάσκαλον;
36 Ὁ δὲ Ἰησοῦς, εὐθέως ἀκούσας τὸν λό-
γον λαλούμενον, λέγει τῷ ἀρχισυναγώγῳ·
Μὴ φοβοῦ, μόνον πίστευε.
37 Καὶ οὐκ ἀφῆκεν οὐδένα αὐτῷ συνακο-
λουθῆσαι, εἰ μὴ Πέτρον, καὶ Ἰάκωβον, καὶ
Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν Ἰακώβου.
38 Καὶ ἔρχεται εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀρχισυ-
ναγώγου, καὶ θεωρεῖ θόρυβον, κλαίοντας καὶ
ἀλαλάζοντας πολλά.

39 Καὶ εἰσελθὼν λέγει αὐτοῖς· Τί θορυβεῖσθε καὶ κλαίετε; τὸ παιδίον οὐκ ἀπέθανεν, ἀλλὰ καθεύδει.

40 Καὶ κατεγέλων αὐτοῦ. Ὁ δὲ, ἐκβαλὼν ἅπαντας, παραλαμβάνει τὸν Πατέρα τοῦ παιδίου καὶ Μητέρα, καὶ τοὺς μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ εἰσπορεύεται ὅπου ἦν τὸ παιδίον ἀνακείμενον.

41 Καὶ κρατήσας τῆς χειρὸς τοῦ παιδίου, λέγει αὐτῇ· Ταλιθὰ κοῦμι· ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον· Τὸ κοράσιον (σοὶ λέγω) ἔγειραι.

42 Καὶ εὐθέως ἀνέστη τὸ κοράσιον, καὶ περιεπάτει· ἦν γὰρ ἐτῶν δώδεκα· καὶ ἐξέστησαν ἐκστάσει μεγάλῃ.

43 Καὶ διεστείλατο αὐτοῖς πολλὰ ἵνα μηδεὶς γνῷ τοῦτο· καὶ εἶπε δοθῆναι αὐτῇ φαγεῖν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ϛ'. 6.

Ναζαρὲτ ἔκτον ἄπιστον· ἀποστέλλονταί τε Μύστας
Δώδεκα Χριστὸν ἔχει, καὶ Προδρόμαιο φόνον.
Πέντε κορεννυμένους τε ἀπείρονας ἄνδρας ἐπ᾽ ἄρτοις.
Ἐννύχιόν τε σάλον· καὶ θεραπευομένους.

1 ΚΑὶ ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν, καὶ ἦλθεν εἰς τὴν πατρίδα αὐτοῦ· καὶ ἀκολουθοῦσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

2 Καὶ γενομένου Σαββάτου ἤρξατο ἐν τῇ συναγωγῇ διδάσκειν. καὶ πολλοὶ ἀκούοντες ἐξεπλήσσοντο, λέγοντες· Πόθεν τούτῳ ταῦτα; καὶ τίς ἡ σοφία ἡ δοθεῖσα αὐτῷ, ὅτι καὶ δυνάμεις τοιαῦται διὰ τῶν χειρῶν αὐτοῦ γίνονται;

3 Οὐχ

3 Οὐχ οὗτός ἐστιν ὁ τέκτων, ὁ Υἱὸς Μα-
ρίας, ἀδελφὸς δὲ Ἰακώβου καὶ Ἰωσῆ, καὶ Ἰού-
δα, καὶ Σίμωνος; καὶ οὐκ εἰσὶν αἱ ἀδελφαὶ αὐ-
τοῦ ὧδε πρὸς ἡμᾶς; Καὶ ἐσκανδαλίζοντο ἐν
αὐτῷ.
4 Ἔλεγε δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι οὐκ ἔστι
Προφήτης ἄτιμος εἰ μὴ ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ,
καὶ ἐν τοῖς συγγενέσι, καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.
5 Καὶ οὐκ ἠδύνατο ἐκεῖ οὐδεμίαν δύναμιν
ποιῆσαι, εἰ μὴ ὀλίγοις ἀῤῥώστοις ἐπιθεὶς τὰς
χεῖρας, ἐθεράπευσε.
6 Καὶ ἐθαύμαζε διὰ τὴν ἀπιστίαν αὐτῶν.
Καὶ περιῆγε τὰς κώμας κύκλῳ, διδάσκων.
7 Καὶ προσκαλεῖται τοὺς δώδεκα, καὶ ἤρ-
ξατο αὐτοὺς ἀποστέλλειν δύο δύο· καὶ ἐδίδου
αὐτοῖς ἐξουσίαν τῶν Πνευμάτων τῶν ἀκαθάρτων.
8 Καὶ παρήγγειλεν αὐτοῖς ἵνα μηδὲν αἴ-
ρωσιν εἰς ὁδὸν, εἰ μὴ ῥάβδον μόνον· μὴ πή-
ραν, μὴ ἄρτον, μὴ εἰς τὴν ζώνην χαλκόν·
9 Ἀλλ' ὑποδεδεμένους σανδάλια· καὶ μὴ
ἐνδύσασθαι δύο χιτῶνας.
10 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὅπου ἐὰν εἰσέλ-
θητε εἰς οἰκίαν, ἐκεῖ μένετε ἕως ἂν ἐξέλ-
θητε ἐκεῖθεν.
11 Καὶ ὅσοι ἂν μὴ δέξωνται ὑμᾶς, μηδὲ
ἀκούσωσιν ὑμῶν, ἐκπορευόμενοι ἐκεῖθεν, ἐκ-
τινάξατε τὸν χοῦν τὸν ὑποκάτω τῶν ποδῶν ὑμῶν,
εἰς μαρτύριον αὐτοῖς. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀ-
νεκτότερον ἔσται Σοδόμοις ἢ Γομόῤῥοις ἐν ἡ-
μέρᾳ κρίσεως, ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ.
12 Καὶ ἐξελθόντες ἐκήρυσσον ἵνα μετα-
νοήσωσι.
13 Καὶ δαιμόνια πολλὰ ἐξέβαλον· καὶ
ἤλειφον ἐλαίῳ πολλοὺς ἀῤῥώστους, καὶ ἐθεράπευον.

14 Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἡρώδης, (φα-
νερὸν γὰρ ἐγένετο τὸ ὄνομα αὐτοῦ) καὶ ἔλεγεν·
Ὅτι Ἰωάννης ὁ βαπτίζων ἐκ νεκρῶν ἠγέρθη,
καὶ διὰ τοῦτο ἐνεργοῦσιν αἱ δυνάμεις ἐν αὐτῷ.
15 Ἄλλοι ἔλεγον· Ὅτι Ἠλίας ἐστίν·
ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Ὅτι Προφήτης ἐστὶν, ἢ
ὡς εἷς τῶν Προφητῶν.
16 Ἀκούσας δὲ ὁ Ἡρώδης, εἶπεν· Ὅτι
ὃν ἐγὼ ἀπεκεφάλισα Ἰωάννην, οὗτός ἐστιν,
αὐτὸς ἠγέρθη ἐκ νεκρῶν·
17 Αὐτὸς γὰρ ὁ Ἡρώδης, ἀποστείλας
ἐκράτησε τὸν Ἰωάννην, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν τῇ
φυλακῇ διὰ Ἡρωδιάδα τὴν γυναῖκα Φιλίπ-
που τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὅτι αὐτὴν ἐγάμησεν.
18 Ἔλεγε γὰρ ὁ Ἰωάννης τῷ Ἡρώδῃ·
Ὅτι οὐκ ἔξεστί σοι ἔχειν τὴν γυναῖκα τοῦ ἀ-
δελφοῦ σου.
19 Ἡ δὲ Ἡρωδιὰς ἐνεῖχεν αὐτῷ, καὶ ἤθε-
λεν αὐτὸν ἀποκτεῖναι· καὶ οὐκ ἠδύνατο.
20 Ὁ γὰρ Ἡρώδης ἐφοβεῖτο τὸν Ἰωάν-
νην, εἰδὼς αὐτὸν ἄνδρα δίκαιον καὶ ἅγιον· καὶ
συνετήρει αὐτόν· καὶ ἀκούσας αὐτοῦ, πολλὰ
ἐποίει, καὶ ἡδέως αὐτοῦ ἤκουε.
21 Καὶ γενομένης ἡμέρας εὐκαίρου, ὅτε
Ἡρώδης τοῖς γενεσίοις αὐτοῦ δεῖπνον ἐποίει
τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ καὶ τοῖς χιλιάρχοις καὶ
τοῖς πρώτοις τῆς Γαλιλαίας.
22 Καὶ εἰσελθούσης τῆς θυγατρὸς αὐτῆς
τῆς Ἡρωδιάδος, καὶ ὀρχησαμένης, καὶ ἀρε-
σάσης τῷ Ἡρώδῃ καὶ τοῖς συνανακειμένοις,
εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ κορασίῳ· Αἴτησόν με
ὃ ἐὰν θέλῃς, καὶ δώσω σοί.
23 Καὶ ὤμοσεν αὐτῇ· Ὅτι ὃ ἐάν με αἰτή-
σῃς, δώσω σοὶ, ἕως ἡμίσους τῆς βασιλείας μου.

24 Ἡ δὲ ἐξελθοῦσα, εἶπε τῇ μητρὶ αὐ-
τῆς· Τί αἰτήσομαι; Ἡ δὲ εἶπε· Τὴν κε-
φαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.
25 Καὶ εἰσελθοῦσα εὐθέως μετὰ σπουδῆς
πρὸς τὸν βασιλέα, ᾐτήσατο, λέγουσα· Θέ-
λω ἵνα μοι δῷς ἐξ αὐτῆς ἐπὶ πίνακι τὴν
Κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.
26 Καὶ περίλυπος γενόμενος ὁ Βασι-
λεὺς, διὰ τοὺς ὅρκους καὶ τοὺς συνανακειμένους
οὐκ ἠθέλησεν αὐτὴν ἀθετῆσαι.
27 Καὶ εὐθέως ἀποστείλας ὁ βασιλεὺς
σπεκουλάτωρα, ἐπέταξεν ἐνεχθῆναι τὴν κε-
φαλὴν αὐτοῦ.
28 Ὁ δὲ ἀπελθὼν ἀπεκεφάλισεν αὐτὸν
ἐν τῇ φυλακῇ· καὶ ἤνεγκε τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ
ἐπὶ πίνακι, καὶ ἔδωκεν αὐτὴν τῷ κορασίῳ· καὶ
τὸ κοράσιον ἔδωκεν αὐτὴν τῇ μητρὶ αὐτῆς.
29 Καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ,
ἦλθον καὶ ἦραν τὸ πτῶμα αὐτοῦ, καὶ ἔθηκαν
αὐτὸ ἐν μνημείῳ.
30 Καὶ συνάγονται οἱ Ἀπόστολοι πρὸς
τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ πάντα καὶ
ὅσα ἐποίησαν, καὶ ὅσα ἐδίδαξαν.
31 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Δεῦτε ὑμεῖς αὐτοὶ
κατ' ἰδίαν εἰς ἔρημον τόπον, καὶ ἀναπαύεσθε
ὀλίγον· Ἦσαν γὰρ οἱ ἐρχόμενοι καὶ οἱ ὑπά-
γοντες πολλοί· καὶ οὐδὲ φαγεῖν ηὐκαίρουν.
32 Καὶ ἀπῆλθον εἰς ἔρημον τόπον τῷ
πλοίῳ κατ' ἰδίαν.
33 Καὶ εἶδον αὐτοὺς ὑπάγοντας οἱ ὄχλοι·
καὶ ἐπέγνωσαν αὐτὸν πολλοί· καὶ πεζῇ ἀπὸ
πασῶν τῶν πόλεων συνέδραμον ἐκεῖ, καὶ
προῆλθον αὐτοὺς, καὶ συνῆλθον πρὸς αὐτόν.
34 Καὶ ἐξελθὼν εἶδεν ὁ Ἰησοῦς πολὺν

ὄχλον, ϗ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ' αὐτοῖς, ὅτι ἦ-
σαν ὡς πρόβατα μὴ ἔχοντα ποιμένα· ϗ ἤρ-
ξατο διδάσκειν αὐτοὺς πολλά.
35 Καὶ ἤδη ὥρας πολλῆς γενομένης, προ-
σελθόντες αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέγουσιν·
Ὅτι ἔρημός ἐστιν ὁ τόπος, ϗ ἤδη ὥρα πολλή·
36 Ἀπόλυσον αὐτοὺς, ἵνα ἀπελθόντες
εἰς τοὺς κύκλῳ ἀγροὺς ϗ κώμας, ἀγοράσωσιν
ἑαυτοῖς ἄρτους· τί γὰρ φάγωσιν οὐκ ἔχουσιν.
37 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Δό-
τε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν. Καὶ λέγουσιν αὐ-
τῷ· Ἀπελθόντες ἀγοράσωμεν διακοσίων
δηναρίων ἄρτους, ϗ δῶμεν αὐτοῖς φαγεῖν;
38 Ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· Πόσους ἄρτους
ἔχετε; ὑπάγετε καὶ ἴδετε. Καὶ γνόντες,
λέγουσι· Πέντε, ϗ δύο ἰχθύας.
39 Καὶ ἐπέταξεν αὐτοῖς ἀνακλῖναι πάντας
συμπόσια συμπόσια ἐπὶ τῷ χλωρῷ χόρτῳ.
40 Καὶ ἀνέπεσον πρασιαὶ πρασιαὶ, ἀνὰ
ἑκατὸν ϗ ἀνὰ πεντήκοντα.
41 Καὶ λαβὼν τοὺς πέντε ἄρτους καὶ τοὺς
δύο ἰχθύας, ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν,
εὐλόγησε, ϗ κατέκλασε τοὺς ἄρτους· ϗ ἐδί-
δου τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα παραθῶσιν αὐ-
τοῖς· ϗ τοὺς δύο ἰχθύας ἐμέρισε πᾶσι.
42 Καὶ ἔφαγον πάντες, ϗ ἐχορτάσθησαν.
43 Καὶ ἦραν κλασμάτων δώδεκα κοφίνους
πλήρεις, ϗ ἀπὸ τῶν ἰχθύων.
44 Καὶ ἦσαν οἱ φαγόντες τοὺς ἄρτους, ὡ-
σεὶ πεντακισχίλιοι ἄνδρες.
45 Καὶ εὐθέως ἠνάγκασε τοὺς μαθητὰς
αὐτοῦ ἐμβῆναι εἰς τὸ πλοῖον, καὶ προάγειν
εἰς τὸ πέραν πρὸς Βηθσαϊδὰν, ἕως αὐτὸς
ἀπολύσῃ τὸν ὄχλον.

46 Καὶ

46 Καὶ ἀποταξάμενος αὐτοῖς, ἀπῆλθεν
εἰς τὸ ὄρος προσεύξασθαι.

47 Καὶ ὀψίας γενομένης ἦν τὸ πλοῖον ἐν
μέσῳ τῆς θαλάσσης, καὶ αὐτὸς μόνος ἐπὶ τῆς γῆς.

48 Καὶ εἶδεν αὐτοὺς βασανιζομένους ἐν τῷ
ἐλαύνειν. (ἦν γὰρ ὁ ἄνεμος ἐναντίος αὐ-
τοῖς.) καὶ περὶ τετάρτην φυλακὴν τῆς νυκ-
τὸς ἔρχεται πρὸς αὐτοὺς, περιπατῶν ἐπὶ τῆς
θαλάσσης· καὶ ἤθελε παρελθεῖν αὐτούς.

49 Οἱ δὲ, ἰδόντες αὐτὸν περιπατοῦντα
ἐπὶ τῆς θαλάσσης, ἔδοξαν φάντασμα εἶναι,
καὶ ἀνέκραξαν·

50 (Πάντες γὰρ αὐτὸν εἶδον, καὶ ἐταράχ-
θησαν.) Καὶ εὐθέως ἐλάλησε μετ' αὐτῶν,
καὶ λέγει αὐτοῖς· Θαρσεῖτε, ἐγώ εἰμι, μὴ
φοβεῖσθε.

51 Καὶ ἀνέβη πρὸς αὐτοὺς εἰς τὸ πλοῖον·
καὶ ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος· καὶ λίαν ἐκ περισσοῦ
ἐν ἑαυτοῖς ἐξίσταντο, καὶ ἐθαύμαζον.

52 Οὐ γὰρ συνῆκαν ἐπὶ τοῖς ἄρτοις· ἦν
γὰρ ἡ καρδία αὐτῶν πεπωρωμένη.

53 Καὶ διαπεράσαντες ἦλθον ἐπὶ τὴν γῆν
Γεννησαρέτ· καὶ προσωρμίσθησαν.

54 Καὶ ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ τοῦ πλοίου,
εὐθέως ἐπιγνόντες αὐτὸν,

55 Περιδραμόντες ὅλην τὴν περίχωρον
ἐκείνην, ἤρξαντο ἐπὶ τοῖς κραββάτοις τοὺς κα-
κῶς ἔχοντας περιφέρειν, ὅπου ἤκουον ὅτι
ἐκεῖ ἐστι.

56 Καὶ ὅπου ἂν εἰσεπορεύετο εἰς κώμας,
ἢ πόλεις, ἢ ἀγροὺς, ἐν ταῖς ἀγοραῖς ἐτίθουν
τοὺς ἀσθενοῦντας, καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα κἂν
τοῦ κρασπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ ἅψωνται· καὶ
ὅσοι ἂν ἥπτοντο αὐτοῦ, ἐσώζοντο.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ζ'. 7.

Ε'βδόματον κραδίης ῥύπον, ἐδὴ σώματος εἶναι·
Παῖδα Χαναναίας· μογγιλάλον τε λάλον.

1 ΚΑὶ συνάγονται πρὸς αὐτὸν οἱ Φαρισαῖοι, καί τινες τῶν Γραμματέων, ἐλθόντες ἀπὸ Ἱεροσολύμων·
2 Καὶ ἰδόντες τινὰς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ κοιναῖς χερσὶ (τοῦτ᾽ ἔστιν ἀνίπτοις) ἐσθίοντας ἄρτους, ἐμέμψαντο.
3 (Οἱ γὰρ Φαρισαῖοι καὶ πάντες οἱ Ἰουδαῖοι, ἐὰν μὴ πυγμῇ νίψωνται τὰς χεῖρας, οὐκ ἐσθίουσι, κρατοῦντες τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων·
4 Καὶ ἀπὸ ἀγορᾶς, ἐὰν μὴ βαπτίσωνται, οὐκ ἐσθίουσι· καὶ ἄλλα πολλά ἐστιν ἃ παρέλαβον κρατεῖν, βαπτισμοὺς ποτηρίων καὶ ξεστῶν καὶ χαλκίων καὶ κλινῶν.)
5 Ἔπειτα ἐπερωτῶσιν αὐτὸν οἱ Φαρισαῖοι καὶ οἱ Γραμματεῖς· Διατί οἱ μαθηταί σου οὐ περιπατοῦσι κατὰ τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων, ἀλλὰ ἀνίπτοις χερσὶν ἐσθίουσι τὸν ἄρτον;
6 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι καλῶς προεφήτευσεν Ἡσαΐας περὶ ὑμῶν τῶν ὑποκριτῶν· ὡς γέγραπται· Οὗτος ὁ λαὸς τοῖς χείλεσί με τιμᾷ, ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόῤῥω ἀπέχει ἀπ᾽ ἐμοῦ·
7 Μάτην δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες διδασκαλίας, ἐντάλματα ἀνθρώπων.
8 Ἀφέντες γὰρ τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ, κρατεῖτε τὴν παράδοσιν τῶν ἀνθρώπων,

βα-

βαπτισμοὺς ξεστῶν καὶ ποτηρίων· καὶ ἄλλα παρόμοια τοιαῦτα πολλὰ ποιεῖτε.

9 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Καλῶς ἀθετεῖτε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ, ἵνα τὴν παράδοσιν ὑμῶν τηρήσητε.

10 Μωσῆς γὰρ εἶπε· Τίμα τὸν Πατέρα σου καὶ τὴν Μητέρα σου· καί· Ὁ κακολογῶν Πατέρα ἢ Μητέρα, θανάτῳ τελευτάτω.

11 Ὑμεῖς δὲ λέγετε· Ἐὰν εἴπῃ ἄνθρωπος τῷ Πατρὶ ἢ τῇ Μητρί· Κορβᾶν (ὅ ἐστι, δῶρον) ὃ ἐὰν ἐξ ἐμοῦ ὠφεληθῇς.

12 Καὶ οὐκέτι ἀφίετε αὐτὸν οὐδὲν ποιῆσαι τῷ Πατρὶ αὐτοῦ ἢ τῇ Μητρὶ αὐτοῦ·

13 Ἀκυροῦντες τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ τῇ παραδόσει ὑμῶν, ᾗ παρεδώκατε· καὶ παρόμοια τοιαῦτα πολλὰ ποιεῖτε.

14 Καὶ προσκαλεσάμενος πάντα τὸν ὄχλον, ἔλεγεν αὐτοῖς· Ἀκούετέ μου πάντες, καὶ συνίετε.

15 Οὐδέν ἐστιν ἔξωθεν τοῦ ἀνθρώπου εἰσπορευόμενον εἰς αὐτὸν, ὃ δύναται αὐτὸν κοινῶσαι· ἀλλὰ τὰ ἐκπορευόμενα ἀπ' αὐτοῦ, ἐκεῖνά ἐστι τὰ κοινοῦντα τὸν ἄνθρωπον.

16 Εἴτις ἔχει ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.

17 Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς οἶκον ἀπὸ τοῦ ὄχλου, ἐπηρώτων αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ περὶ τῆς παραβολῆς.

18 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὕτω καὶ ὑμεῖς ἀσύνετοί ἐστε; οὐ νοεῖτε ὅτι πᾶν τὸ ἔξωθεν εἰσπορευόμενον εἰς τὸν ἄνθρωπον, οὐ δύναται αὐτὸν κοινῶσαι;

19 Ὅτι οὐκ εἰσπορεύεται αὐτοῦ εἰς τὴν καρδίαν, ἀλλ' εἰς τὴν κοιλίαν· καὶ εἰς τὸν ἀφεδρῶνα ἐκπορεύεται, καθαρίζον πάντα τὰ βρώματα.

20 Ἔλεγε δὲ ὅτι τὸ ἐκ τοῦ ἀνθρώπου ἐκπορευόμενον, ἐκεῖνο κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον.

21 Ἔσωθεν γὰρ ἐκ τῆς καρδίας τῶν ἀνθρώπων οἱ διαλογισμοὶ οἱ κακοὶ ἐκπορεύονται, μοιχεῖαι, πορνεῖαι, φόνοι,

22 Κλοπαὶ, πλεονεξίαι, πονηρίαι, δόλος, ἀσέλγεια, ὀφθαλμὸς πονηρὸς, βλασφημία, ὑπερηφανία, ἀφροσύνη.

23 Πάντα ταῦτα τὰ πονηρὰ ἔσωθεν ἐκπορεύεται, καὶ κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον.

24 Καὶ ἐκεῖθεν ἀναστὰς ἀπῆλθεν εἰς τὰ μεθόρια Τύρου καὶ Σιδῶνος· καὶ εἰσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν, οὐδένα ἤθελε γνῶναι· καὶ οὐκ ἠδυνήθη λαθεῖν.

25 Ἀκούσασα γὰρ γυνὴ περὶ αὐτοῦ, ἧς εἶχε τὸ θυγάτριον αὐτῆς Πνεῦμα ἀκάθαρτον, ἐλθοῦσα προσέπεσε πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ·

26 (Ἦν δὲ ἡ γυνὴ Ἑλληνὶς, Συροφοίνισσα τῷ γένει.) καὶ ἠρώτα αὐτὸν ἵνα τὸ δαιμόνιον ἐκβάλλῃ ἐκ τῆς θυγατρὸς αὐτῆς.

27 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· Ἄφες πρῶτον χορτασθῆναι τὰ τέκνα. οὐ γάρ καλόν ἐστι λαβεῖν τὸν ἄρτον τῶν τέκνων, καὶ βαλεῖν τοῖς κυναρίοις.

28 Ἡ δὲ ἀπεκρίθη, καὶ λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε· καὶ γὰρ τὰ κυνάρια ὑποκάτω τῆς τραπέζης ἐσθίει ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν παιδίων.

29 Καὶ εἶπεν αὐτῇ· Διὰ τοῦτον τὸν λόγον ὕπαγε· ἐξελήλυθε τὸ δαιμόνιον ἐκ τῆς θυγατρός σου.

30 Καὶ ἀπελθοῦσα εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς, εὗρε τὸ δαιμόνιον ἐξεληλυθὸς, καὶ τὴν θυγατέρα βεβλημένην ἐπὶ τῆς κλίνης.

31 Καὶ πάλιν ἐξελθὼν ἐκ τῶν ὁρίων Τύ-

ρυ καὶ Σιδῶνος, ἦλθε πρὸς τὴν θάλασσαν
τῆς Γαλιλαίας, ἀνὰ μέσον τῶν ὁρίων Δε-
καπόλεως.
32 Καὶ φέρουσιν αὐτῷ κωφὸν μογιλάλον,
καὶ παρακαλοῦσιν αὐτὸν ἵνα ἐπιθῇ αὐτῷ τὴν
χεῖρα.
33 Καὶ ἀπολαβόμενος αὐτὸν ἀπὸ τοῦ ὄ-
χλου κατ' ἰδίαν, ἔβαλε τοὺς δακτύλους αὐτοῦ
εἰς τὰ ὦτα αὐτοῦ· καὶ πτύσας ἥψατο τῆς
γλώσσης αὐτοῦ.
34 Καὶ ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν, ἐστέ-
ναξε, καὶ λέγει αὐτῷ· Ἐφφαθὰ, ὅ ἐστι,
διανοίχθητι
35 Καὶ εὐθέως διηνοίχθησαν αὐτοῦ αἱ ἀ-
κοαί. καὶ ἐλύθη ὁ δεσμὸς τῆς γλώσσης αὐ-
τοῦ, καὶ ἐλάλει ὀρθῶς.
36 Καὶ διεστείλατο αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ εἴ-
πωσιν· ὅσον δὲ αὐτὸς αὐτοῖς διεστέλλετο,
μᾶλλον περισσότερον ἐκήρυσσον.
37 Καὶ ὑπερπερισσῶς ἐξεπλήσσοντο, λέ-
γοντες· Καλῶς πάντα πεποίηκε· καὶ τοὺς κω-
φοὺς ποιεῖ ἀκούειν, καὶ τοὺς ἀλάλους λαλεῖν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

Τετράκις αὖ χιλίους δὶς τέτρατον ἑπτὰ δ' ἄρτων
Πλῆσατο. καὶ φεύγειν ψευδοδιδασκαλίας.
Πτύσματι δ' ὀμματόει τυφλὸν πότε. Χειρισὸν ἀνάρχου
Ὡμολόγησε Πέτρος. Σταυρὸς ἅπασι βίος.

1 ΕΝ ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, παμ-
πόλλου ὄχλου ὄντος, καὶ μὴ ἐχόν-

των τί φάγωσι, προσκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς
τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, λέγει αὐτοῖς·
2 Σπλαγχνίζομαι ἐπὶ τὸν ὄχλον· ὅτι
ἤδη ἡμέρας τρεῖς προσμένουσί μοι, καὶ οὐκ
ἔχουσι τί φάγωσι.
3 Καὶ ἐὰν ἀπολύσω αὐτοὺς νήστεις εἰς οἶ-
κον αὐτῶν, ἐκλυθήσονται ἐν τῇ ὁδῷ· τινὲς
γὰρ αὐτῶν μακρόθεν ἥκουσι.
4 Καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ· Πόθεν τούτους δυνήσεταί τις ὧδε χορ-
τάσαι ἄρτων ἐπ᾽ ἐρημίας;
5 Καὶ ἐπηρώτα αὐτούς· Πόσους ἔχετε ἄρ-
τους; Οἱ δὲ εἶπον· Ἑπτά.
6 Καὶ παρήγγειλε τῷ ὄχλῳ ἀναπεσεῖν
ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ λαβὼν τοὺς ἑπτὰ ἄρτους, εὐ-
χαριστήσας ἔκλασε, καὶ ἐδίδου τοῖς μαθη-
ταῖς αὐτοῦ ἵνα παραθῶσι· καὶ παρέθηκαν τῷ
ὄχλῳ.
7 Καὶ εἶχον ἰχθύδια ὀλίγα· καὶ εὐλογή-
σας, εἶπε παραθεῖναι καὶ αὐτά.
8 Ἔφαγον δὲ, καὶ ἐχορτάσθησαν· καὶ ἦραν
περισσεύματα κλασμάτων, ἑπτὰ σπυρίδας.
9 Ἦσαν δὲ οἱ φαγόντες, ὡς τετρακισχί-
λιοι· καὶ ἀπέλυσεν αὐτούς.
10 Καὶ εὐθέως ἐμβὰς εἰς τὸ πλοῖον με-
τὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, ἦλθεν εἰς τὰ μέρη
Δαλμανουθά.
11 Καὶ ἐξῆλθον οἱ Φαρισαῖοι, καὶ ἤρ-
ξαντο συζητεῖν αὐτῷ, ζητοῦντες παρ᾽ αὐτοῦ
σημεῖον ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, πειράζοντες αὐτόν.
12 Καὶ ἀναστενάξας τῷ Πνεύματι αὐτοῦ,
λέγει· Τί ἡ γενεὰ αὕτη σημεῖον ἐπιζητεῖ;
Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, εἰ δοθήσεται τῇ γενεᾷ
ταύτῃ σημεῖον.

13 Καὶ

13 Καὶ ἀφεὶς αὐτοὺς, ἐμβὰς πάλιν εἰς τὸ πλοῖον, ἀπῆλθεν εἰς τὸ πέραν.

14 Καὶ ἐπελάθοντο λαβεῖν ἄρτους, καὶ εἰ μὴ ἕνα ἄρτον οὐκ εἶχον μεθ' ἑαυτῶν ἐν τῷ πλοίῳ.

15 Καὶ διεστέλλετο αὐτοῖς, λέγων· Ὁρᾶτε, βλέπετε ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρισαίων καὶ τῆς ζύμης Ἡρώδου.

16 Καὶ διελογίζοντο πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες· Ὅτι ἄρτους οὐκ ἔχομεν.

17 Καὶ γνοὺς ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Τί διαλογίζεσθε, ὅτι ἄρτους οὐκ ἔχετε; οὔπω νοεῖτε, οὐδὲ συνίετε; ἔτι πεπωρωμένην ἔχετε τὴν καρδίαν ὑμῶν;

18 Ὀφθαλμοὺς ἔχοντες οὐ βλέπετε; καὶ ὦτα ἔχοντες οὐκ ἀκούετε; καὶ οὐ μνημονεύετε;

19 Ὅτε τοὺς πέντε ἄρτους ἔκλασα εἰς τοὺς πεντακισχιλίους, πόσους κοφίνους πλήρεις κλασμάτων ἤρατε; Λέγουσιν αὐτῷ· Δώδεκα.

20 Ὅτε δὲ τοὺς ἑπτὰ εἰς τοὺς τετρακισχιλίους, πόσων σπυρίδων πληρώματα κλασμάτων ἤρατε; Οἱ δὲ εἶπον· Ἑπτά.

21 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Πῶς οὐ συνίετε;

22 Καὶ ἔρχεται εἰς Βηθσαϊδάν· καὶ φέρουσιν αὐτῷ τυφλὸν, καὶ παρακαλοῦσιν αὐτὸν ἵνα αὐτοῦ ἅψηται.

23 Καὶ ἐπιλαβόμενος τῆς χειρὸς τοῦ τυφλοῦ, ἐξήγαγεν αὐτὸν ἔξω τῆς κώμης· καὶ πτύσας εἰς τὰ ὄμματα αὐτοῦ, ἐπιθεὶς τὰς χεῖρας αὐτῷ, ἐπηρώτα αὐτὸν εἴ τι βλέπει.

24 Καὶ ἀναβλέψας, ἔλεγε· Βλέπω τοὺς ἀνθρώπους ὡς δένδρα περιπατοῦντας.

25 Εἶτα πάλιν ἐπέθηκε τὰς χεῖρας ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ ἐποίησεν αὐτὸν ἀνα-

βλέψαι· καὶ ἀποκατεστάθη, καὶ ἀνέβλεψε
τηλαυγῶς ἅπαντας.
26 Καὶ ἀπέστειλεν αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον αὐ-
τοῦ, λέγων· Μηδὲ εἰς τὴν κώμην εἰσέλ-
θῃς, μηδὲ εἴπῃς τινὶ ἐν τῇ κώμῃ.
27 Καὶ ἐξῆλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ εἰς τὰς κώμας Καισαρείας τῆς Φιλίπ-
που· καὶ ἐν τῇ ὁδῷ ἐπηρώτα τοὺς μαθητὰς
αὐτοῦ, λέγων αὐτοῖς· Τίνα με λέγουσιν οἱ
ἄνθρωποι εἶναι;
28 Οἱ δὲ ἀπεκρίθησαν· Ἰωάννην τὸν
Βαπτιστήν· καὶ ἄλλοι, Ἠλίαν· ἄλλοι δὲ,
ἕνα τῶν Προφητῶν.
29 Καὶ αὐτὸς λέγει αὐτοῖς· Ὑμεῖς δὲ
τίνα με λέγετε εἶναι; Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ
Πέτρος, λέγει αὐτῷ· Σὺ εἶ ὁ Χριστός.
30 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ
λέγωσι περὶ αὐτοῦ.
31 Καὶ ἤρξατο διδάσκειν αὐτοὺς ὅτι δεῖ
τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ παθεῖν, καὶ ἀ-
ποδοκιμασθῆναι ἀπὸ τῶν Πρεσβυτέρων καὶ
Ἀρχιερέων καὶ Γραμματέων, καὶ ἀποκτανθῆ-
ναι, καὶ μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἀναστῆναι.
32 Καὶ παῤῥησίᾳ τὸν λόγον ἐλάλει.
Καὶ προσλαβόμενος αὐτὸν ὁ Πέτρος, ἤρξα-
το ἐπιτιμᾶν αὐτῷ.
33 Ὁ δὲ ἐπιστραφεὶς, καὶ ἰδὼν τοὺς μαθη-
τὰς αὐτοῦ, ἐπετίμησε τῷ Πέτρῳ, λέγων·
Ὕπαγε ὀπίσω μου Σατανᾶ· ὅτι οὐ φρονεῖς
τὰ τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων.
34 Καὶ προσκαλεσάμενος τὸν ὄχλον σὺν
τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Ὅστις θέλει
ὀπίσω μου ἐλθεῖν, ἀπαρνησάσθω ἑαυτὸν, καὶ
ἀράτω τὸν Σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἀκολουθείτω μοι.

35 Ὅς

35 Ὃς γὰρ ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ
σῶσαι, ἀπολέσει αὐτήν· ὃς δ᾽ ἂν ἀπολέσῃ
τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἕνεκεν ἐμοῦ καὶ τοῦ Εὐαγγε-
λίου, οὗτος σώσει αὐτήν.
36 Τί γὰρ ὠφελήσει ἄνθρωπον, ἐὰν
κερδήσῃ τὸν κόσμον ὅλον, καὶ ζημιωθῇ τὴν
ψυχὴν αὐτοῦ;
37 Ἢ τί δώσει ἄνθρωπος ἀντάλλαγμα
τῆς ψυχῆς αὐτοῦ;
38 Ὃς γὰρ ἂν ἐπαισχυνθῇ με καὶ τοὺς ἐμοὺς
λόγους ἐν τῇ γενεᾷ ταύτῃ τῇ μοιχαλίδι καὶ
ἁμαρτωλῷ, καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπαι-
σχυνθήσεται αὐτὸν ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ τοῦ
Πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν Ἀγγέλων τῶν ἁγίων.

ΚΕΦΑ᾽ΛΑΙΟΝ, Θ. 9.

Ἔννατον ἐνδείκνυσι Λόγου ὑπερήλιον αἴγλην.
Καὶ κάτοχον σώζει δαίμονι νηπιόθεν.
Καὶ Πάθος ἀγγέλλει. Μύστων δ᾽ ἅμα τῦ-
φον ἐλαύνει.
Καὶ βρέφος ἀνταίρει σκάνδαλά τ᾽ ἀμφιτρέπει.

1 ΚΑὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω
ὑμῖν, ὅτι εἰσί τινες τῶν ὧδε ἑ-
στηκότων, οἵτινες οὐ μὴ γεύσωνται θανάτου,
ἕως ἂν ἴδωσι τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ἐλη-
λυθυῖαν ἐν δυνάμει.
2 Καὶ μεθ᾽ ἡμέρας ἓξ παραλαμβάνει ὁ
Ἰησοῦς τὸν Πέτρον καὶ τὸν Ἰάκωβον καὶ τὸν
Ἰωάννην, καὶ ἀναφέρει αὐτοὺς εἰς ὄρος ὑψη-
λὸν κατ᾽ ἰδίαν μόνους· καὶ μετεμορφώθη ἔμ-
προσθεν αὐτῶν.
3 Καὶ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἐγένετο στίλβοντα

λευκὰ λίαν ὡς χιὼν, οἷα γναφεὺς ἐπὶ τῆς
γῆς οὐ δύναται λευκᾶναι.

4 Καὶ ὤφθη αὐτοῖς Ἠλίας σὺν Μωσεῖ·
καὶ ἦσαν συλλαλοῦντες τῷ Ἰησοῦ.

5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος, λέγει τῷ
Ἰησοῦ· Ῥαββὶ, καλόν ἐστιν ἡμᾶς ὧδε εἶναι·
καὶ ποιήσωμεν σκηνὰς τρεῖς, σοὶ μίαν, καὶ
Μωσεῖ μίαν, καὶ Ἠλίᾳ μίαν.

6 Οὐ γὰρ ᾔδει τί λαλήσῃ· ἦσαν γὰρ
ἔκφοβοι·

7 Καὶ ἐγένετο νεφέλη ἐπισκιάζουσα αὐ-
τοῖς· καὶ ἦλθε φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης, λέγου-
σα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱός μου ὁ ἀγαπητὸς,
αὐτοῦ ἀκούετε.

8 Καὶ ἐξάπινα περιβλεψάμενοι, οὐκέ-
τι οὐδένα εἶδον, ἀλλὰ τὸν Ἰησοῦν μόνον μεθ'
ἑαυτῶν.

9 Καταβαινόντων δὲ αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους,
διεστείλατο αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ διηγήσωνται
ἃ εἶδον, εἰ μὴ ὅταν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
ἐκ νεκρῶν ἀναστῇ.

10 Καὶ τὸν λόγον ἐκράτησαν πρὸς ἑαυτοὺς,
συζητοῦντες τί ἐστι τὸ ἐκ νεκρῶν ἀναστῆναι;

11 Καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν, λέγοντες· Ὅ-
τι λέγουσιν οἱ Γραμματεῖς, ὅτι Ἠλίαν δεῖ
ἐλθεῖν πρῶτον.

12 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς·
Ἠλίας μὲν ἐλθὼν πρῶτον, ἀποκαθιστᾷ
πάντα· καὶ πῶς γέγραπται ἐπὶ τὸν Υἱὸν τοῦ
ἀνθρώπου, ἵνα πολλὰ πάθῃ, καὶ ἐξουδενωθῇ.

13 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν ὅτι καὶ Ἠλίας ἐλή-
λυθε, καὶ ἐποίησαν αὐτῷ ὅσα ἠθέλησαν,
καθὼς γέγραπται ἐπ' αὐτόν.

14 Καὶ ἐλθὼν πρὸς τοὺς μαθητὰς, εἶδεν
ὄχλον

ὄχλον πολὺν περὶ αὐτοὺς, καὶ Γραμματεῖς συζητοῦντας αὐτοῖς.

15 Καὶ εὐθέως πᾶς ὁ ὄχλος ἰδὼν αὐτὸν ἐξεθαμβήθη, καὶ προστρέχοντες ἠσπάζοντο αὐτόν.

16 Καὶ ἐπηρώτησε τοὺς Γραμματεῖς· Τί συζητεῖτε πρὸς αὐτούς;

17 Καὶ ἀποκριθεὶς εἷς ἐκ τοῦ ὄχλου, εἶπε· Διδάσκαλε, ἤνεγκα τὸν Υἱόν μου πρὸς σὲ, ἔχοντα Πνεῦμα ἄλαλον.

18 Καὶ ὅπου ἂν αὐτὸν καταλάβῃ, ῥήσσει αὐτὸν, καὶ ἀφρίζει, καὶ τρίζει τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ, καὶ ξηραίνεται· καὶ εἶπον τοῖς μαθηταῖς σου ἵνα αὐτὸ ἐκβάλωσι· καὶ οὐκ ἴσχυσαν.

19 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς αὐτῷ, λέγει· Ὦ γενεὰ ἄπιστος, ἕως πότε πρὸς ὑμᾶς ἔσομαι; ἕως πότε ἀνέξομαι ὑμῶν; φέρετε αὐτὸν πρός με.

20 Καὶ ἤνεγκαν αὐτὸν πρὸς αὐτόν· καὶ ἰδὼν αὐτὸν, εὐθέως τὸ Πνεῦμα ἐσπάραξεν αὐτόν· καὶ πεσὼν ἐπὶ τῆς γῆς, ἐκυλίετο ἀφρίζων.

21 Καὶ ἐπηρώτησε τὸν Πατέρα αὐτοῦ· Πόσος χρόνος ἐστὶν ὡς τοῦτο γέγονεν αὐτῷ; Ὁ δὲ εἶπε· Παιδιόθεν.

22 Καὶ πολλάκις αὐτὸν καὶ εἰς πῦρ ἔβαλε καὶ εἰς ὕδατα, ἵνα ἀπολέσῃ αὐτόν· ἀλλ' εἴ τι δύνασαι, βοήθησον ἡμῖν, σπλαγχνισθεὶς ἐφ' ἡμᾶς.

23 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Τὸ εἰ δύνασαι πιστεῦσαι, πάντα δυνατὰ τῷ πιστεύοντι.

24 Καὶ εὐθέως κράξας ὁ Πατὴρ τοῦ παιδίου, μετὰ δακρύων ἔλεγε· Πιστεύω Κύριε, βοήθει μου τῇ ἀπιστίᾳ.

25 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐπισυντρέχει ὄχλος, ἐπετίμησε τῷ Πνεύματι τῷ ἀκαθάρ-

τῳ,

τῳ, λέγων αὐτῷ· Τὸ Πνεῦμα τὸ ἄλαλον
καὶ κωφὸν, ἐγώ σοι ἐπιτάσσω· Ἔξελθε ἐξ αὐ-
τοῦ, καὶ μηκέτι εἰσέλθῃς εἰς αὐτόν.
26 Καὶ κράξαν, καὶ πολλὰ σπαράξαν αὐ-
τὸν, ἐξῆλθε· καὶ ἐγένετο ὡσεὶ νεκρὸς, ὥστε
πολλοὺς λέγειν ὅτι ἀπέθανεν.
27 Ὁ δὲ Ἰησοῦς κρατήσας αὐτὸν τῆς χει-
ρὸς, ἤγειρεν αὐτόν· καὶ ἀνέστη.
28 Καὶ εἰσελθόντα αὐτὸν εἰς οἶκον οἱ
μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπηρώτων αὐτὸν κατ' ἰδίαν·
Ὅτι ἡμεῖς οὐκ ἠδυνήθημεν ἐκβαλεῖν αὐτό;
29 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τοῦτο τὸ γένος ἐν
οὐδενὶ δύναται ἐξελθεῖν εἰ μὴ ἐν προσευχῇ
καὶ νηστείᾳ.
30 Καὶ ἐκεῖθεν ἐξελθόντες παρεπορεύοντο
διὰ τῆς Γαλιλαίας· καὶ οὐκ ἤθελεν ἵνα τὶς γνῷ.
31 Ἐδίδασκε γὰρ τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ,
καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὅτι ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώ-
που παραδίδοται εἰς χεῖρας ἀνθρώπων, καὶ
ἀποκτενοῦσιν αὐτόν. καὶ ἀποκτανθεὶς, τῇ
τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται.
32 Οἱ δὲ ἠγνόουν τὸ ῥῆμα, καὶ ἐφοβοῦντο
αὐτὸν ἐπερωτῆσαι.
33 Καὶ ἦλθεν εἰς Καπερναούμ· καὶ ἐν τῇ
οἰκίᾳ γενόμενος, ἐπηρώτα αὐτούς· Τί ἐν τῇ
ὁδῷ πρὸς ἑαυτοὺς διελογίζεσθε;
34 Οἱ δὲ ἐσιώπων· πρὸς ἀλλήλους γὰρ
διελέχθησαν ἐν τῇ ὁδῷ, τίς μείζων.
35 Καὶ καθίσας ἐφώνησε τοὺς δώδεκα, καὶ
λέγει αὐτοῖς· Εἴ τις θέλει πρῶτος εἶναι,
ἔσται πάντων ἔσχατος, καὶ πάντων διάκονος.
36 Καὶ λαβὼν παιδίον, ἔστησεν αὐτὸ ἐν
μέσῳ αὐτῶν. καὶ ἐναγκαλισάμενος αὐτὸ, εἶ-
πεν αὐτοῖς:

37 Ὃς ἐὰν ἓν τῶν τοιούτων παιδίων δέξη-
ται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμὲ δέχεται· καὶ ὃς
ἐὰν ἐμὲ δέξηται, οὐκ ἐμὲ δέχεται, ἀλλὰ
τὸν ἀποστείλαντά με.
38 Ἀπεκρίθη δὲ αὐτῷ ὁ Ἰωάννης, λέ-
γων· Διδάσκαλε, εἴδομέν τινα ἐν τῷ ὀνό-
ματί σου ἐκβάλλοντα δαιμόνια, ὃς οὐκ ἀκο-
λουθεῖ ἡμῖν· καὶ ἐκωλύσαμεν αὐτὸν, ὅτι οὐκ
ἀκολουθεῖ ἡμῖν.
39 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπε· Μὴ κωλύετε αὐ-
τόν· οὐδεὶς γάρ ἐστιν ὃς ποιήσει δύναμιν ἐπὶ
τῷ ὀνόματί μου, καὶ δυνήσεται ταχὺ κακο-
λογῆσαί με.
40 Ὃς γὰρ οὐκ ἔστι καθ' ἡμῶν, ὑπὲρ ἡ-
μῶν ἐστιν.
41 Ὃς γὰρ ἂν ποτίσῃ ὑμᾶς ποτήριον ὕ-
δατος ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὅτι Χριστοῦ ἐστε,
Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀπολέσῃ τὸν μι-
σθὸν αὐτοῦ.
42 Καὶ ὃς ἂν σκανδαλίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν
τῶν πιστευόντων εἰς ἐμὲ, καλόν ἐστιν αὐτῷ μᾶλ-
λον εἰ περίκειται λίθος μυλικὸς περὶ τὸν τρά-
χηλον αὐτοῦ, καὶ βέβληται εἰς τὴν θάλασσαν.
43 Καὶ ἐὰν σκανδαλίζῃ σε ἡ χείρ σου, ἀ-
πόκοψον αὐτήν· καλόν σοι ἐστὶ κυλλὸν εἰς τὴν
ζωὴν εἰσελθεῖν, ἢ τὰς δύο χεῖρας ἔχοντα ἀ-
πελθεῖν εἰς τὴν γέενναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἄσβεστον·
44 Ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ,
καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται.
45 Καὶ ἐὰν ὁ πούς σου σκανδαλίζῃ σε,
ἀπόκοψον αὐτόν· καλόν ἐστί σοι εἰσελθεῖν
εἰς τὴν ζωὴν χωλὸν, ἢ τοὺς δύο πόδας ἔ-
χοντα βληθῆναι εἰς τὴν γέενναν, εἰς τὸ πῦρ
τὸ ἄσβεστον·

46 Ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ, καὶ
τὸ πῦρ οὐ σβέννυται.
47 Καὶ ἐὰν ὁ ὀφθαλμός σου σκανδαλίζῃ
σε, ἔκβαλε αὐτόν· καλόν σοι ἐστὶ μονό-
φθαλμον εἰσελθεῖν εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ
Θεοῦ, ἢ δύο ὀφθαλμοὺς ἔχοντα βληθῆναι
εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός·
48 Ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ,
καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται.
49 Πᾶς γὰρ πυρὶ ἁλισθήσεται· καὶ πᾶ-
σα θυσία ἁλὶ ἁλισθήσεται.
50 Καλὸν τὸ ἅλας· ἐὰν δὲ τὸ ἅλας ἄνα-
λον γένηται, ἐν τίνι αὐτὸ ἀρτύσεται; ἔχετε
ἐν ἑαυτοῖς ἅλας, καὶ εἰρηνεύετε ἐν ἀλλήλοις.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ι', 10.

Δεσμὰ γάμου δέκατον θάλπει, καὶ νήπια
φράζει
Χρυσοφίλοισι Πόλου εἴσοδον ὡς ῥαφίδος·
Ἀγγέλλει πάθος αὖτε· προεδρεύειν τε πο-
θαιῶντας.
Βροντογόνους πλήττει· καὶ τυφλὸν ὀμματόει.

1 ΚΑ'κεῖθεν ἀναστὰς ἔρχεται εἰς τὰ
ὅρια τῆς Ἰουδαίας, διὰ τοῦ πέ-
ραν τοῦ Ἰορδάνου· καὶ συμπορεύονται πάλιν
ὄχλοι πρὸς αὐτόν· καὶ ὡς εἰώθει, πάλιν
ἐδίδασκεν αὐτούς.
2 Καὶ προσελθόντες οἱ Φαρισαῖοι, ἐπη-
ρώτησαν αὐτόν, εἰ ἔξεστιν ἀνδρὶ γυναῖκα ἀ-
πολῦσαι· πειράζοντες αὐτόν.
3 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί
ὑμῖν ἐνετείλατο Μωσῆς;

4 Οἱ δὲ εἶπον· Μωσῆς ἐπέτρεψε βι-
βλίον ἀποστασίου γράψαι, καὶ ἀπολῦσαι.
5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἔγρα-
ψεν ὑμῖν τὴν ἐντολὴν ταύτην·
6 Ἀπὸ δὲ ἀρχῆς κτίσεως, ἄρσεν καὶ θῆ-
λυ ἐποίησεν αὐτοὺς ὁ Θεός.
7 Ἕνεκεν τούτου καταλείψει ἄνθρωπος τὸν
Πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν Μητέρα, καὶ προσκολ-
ληθήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ.
8 Καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν·
ὥστε οὐκέτι εἰσὶ δύο, ἀλλὰ μία σάρξ·
9 Ὃ οὖν ὁ Θεὸς συνέζευξεν, ἄνθρωπος
μὴ χωριζέτω.
10 Καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ πάλιν οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ περὶ τοῦ αὐτοῦ ἐπηρώτησαν αὐτόν.
11 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὃς ἐὰν ἀπολύσῃ
τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ γαμήσῃ ἄλλην, μοι-
χᾶται ἐπ' αὐτήν.
12 Καὶ ἐὰν γυνὴ ἀπολύσῃ τὸν ἄνδρα αὐ-
τῆς, καὶ γαμηθῇ ἄλλῳ, μοιχᾶται.
13 Καὶ προσέφερον αὐτῷ παιδία, ἵνα
ἅψηται αὐτῶν· οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπετίμων
τοῖς προσφέρουσιν.
14 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ἠγανάκτησε, καὶ εἶ-
πεν αὐτοῖς· Ἄφετε τὰ παιδία ἔρχεσθαι πρός
με, καὶ μὴ κωλύετε αὐτά· τῶν γὰρ τοιούτων
ἐστὶν ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ.
15 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὃς ἐὰν μὴ δέξη-
ται τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ὡς παιδίον, οὐ
μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐτήν.
16 Καὶ ἐναγκαλισάμενος αὐτά, τιθεὶς
τὰς χεῖρας ἐπ' αὐτά, ηὐλόγει αὐτά.
17 Καὶ ἐκπορευομένου αὐτοῦ εἰς ὁδὸν,

προσ-

προσδραμὼν εἷς καὶ γονυπετήσας αὐτὸν ἐπηρώτα αὐτόν· Διδάσκαλε ἀγαθὲ, τί ποιήσω ἵνα ζωὴν αἰώνιον κληρονομήσω;

18 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Τί με λέγεις ἀγαθόν; οὐδεὶς ἀγαθὸς, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός.

19 Τὰς ἐντολὰς οἶδας· Μὴ μοιχεύσῃς· Μὴ φονεύσῃς· Μὴ κλέψῃς· Μὴ ψευδομαρτυρήσῃς· Μὴ ἀποστερήσῃς· Τίμα τὸν Πατέρα σου καὶ τὴν Μητέρα.

20 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Διδάσκαλε, ταῦτα πάντα ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός μου.

21 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐμβλέψας αὐτῷ, ἠγάπησεν αὐτὸν, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἕν σοι ὑστερεῖ· ὕπαγε, ὅσα ἔχεις πώλησον, καὶ δὸς τοῖς πτωχοῖς, καὶ ἕξεις θησαυρὸν ἐν οὐρανῷ· καὶ δεῦρο, ἀκολούθει μοι, ἄρας τὸν Σταυρόν.

22 Ὁ δὲ στυγνάσας ἐπὶ τῷ λόγῳ, ἀπῆλθε λυπούμενος· ἦν γὰρ ἔχων κτήματα πολλά.

23 Καὶ περιβλεψάμενος ὁ Ἰησοῦς λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Πῶς δυσκόλως οἱ τὰ χρήματα ἔχοντες εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελεύσονται;

24 Οἱ δὲ μαθηταὶ ἐθαμβοῦντο ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐτοῦ. Ὁ δὲ Ἰησοῦς πάλιν ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτοῖς· Τέκνα, πῶς δύσκολόν ἐστι τοὺς πεποιθότας ἐπὶ τοῖς χρήμασιν εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν;

25 Εὐκοπώτερόν ἐστι κάμηλον διὰ τῆς τρυμαλιᾶς τῆς ῥαφίδος διελθεῖν, ἢ πλούσιον εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν.

26 Οἱ δὲ περισσῶς ἐξεπλήσσοντο, λέγοντες πρὸς ἑαυτούς· Καὶ τίς δύναται σωθῆναι;

27 Ἐμβλέψας δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγει

Πα-

Παρὰ ἀνθρώποις ἀδύνατον, ἀλλ' ὁ παρὰ τῷ
Θεῷ· πάντα γὰρ δυνατά ἐςι παρὰ τῷ Θεῷ.
28 Καὶ ἤρξατο ὁ Πέτρος λέγειν αὐτῷ·
Ἰδοὺ, ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα, καὶ ἠκολου-
θήσαμέν σοι.
29 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἀ-
μὴν λέγω ὑμῖν, οὐδείς ἐςιν ὃς ἀφῆκεν οἰ-
κίαν, ἢ ἀδελφοὺς ἢ ἀδελφὰς, ἢ Πατέρα ἢ
Μητέρα, ἢ γυναῖκα ἢ τέκνα, ἢ ἀγροὺς,
ἕνεκεν ἐμοῦ καὶ τοῦ Εὐαγγελίου,
30 Ἐὰν μὴ λάβῃ ἑκατονταπλασίονα νῦν
ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ, οἰκίας, καὶ ἀδελφοὺς καὶ
ἀδελφὰς, καὶ Μητέρας καὶ τέκνα, καὶ ἀγροὺς,
μετὰ διωγμῶν, καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομέ-
νῳ ζωὴν αἰώνιον.
31 Πολλοὶ δὲ ἔσονται πρῶτοι, ἔσχατοι·
καὶ οἱ ἔσχατοι, πρῶτοι.
32 Ἦσαν δὲ ἐν τῇ ὁδῷ ἀναβαίνοντες εἰς
Ἱεροσόλυμα· καὶ ἦν προάγων αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς,
καὶ ἐθαμβοῦντο, καὶ ἀκολουθοῦντες ἐφοβοῦντο·
Καὶ παραλαβὼν πάλιν τοὺς δώδεκα, ἤρξατο
αὐτοῖς λέγειν τὰ μέλλοντα αὐτῷ συμβαίνειν.
33 Ὅτι ἰδοὺ, ἀναβαίνομεν εἰς Ἱεροσόλυ-
μα, καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδοθήσε-
ται τοῖς Ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς Γραμματεῦσι,
καὶ κατακρινοῦσιν αὐτὸν θανάτῳ, καὶ παραδώ-
σουσιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσι·
34 Καὶ ἐμπαίξουσιν αὐτῷ, καὶ μαστιγώσου-
σιν αὐτὸν, καὶ ἐμπτύσουσιν αὐτῷ, καὶ ἀποκτε-
νοῦσιν αὐτόν· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται.
35 Καὶ προσπορεύονται αὐτῷ Ἰάκωβος καὶ
Ἰωάννης οἱ Υἱοὶ Ζεβεδαίου, λέγοντες·
Διδάσκαλε, θέλομεν ἵνα ὃ ἐὰν αἰτήσω-
μεν ποιήσῃς ἡμῖν·
36 Ὁ.

36 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Τί θέλετε ποιῆσαί με ὑμῖν;

37 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Δὸς ἡμῖν ἵνα εἷς ἐκ δεξιῶν σου καὶ εἷς ἐξ εὐωνύμων σου καθίσωμεν ἐν τῇ δόξῃ σου.

38 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ οἴδατε τί αἰτεῖσθε. δύνασθε πιεῖν τὸ ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω, καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθῆναι;

39 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Δυνάμεθα. Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ μὲν ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω, πίεσθε· καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθήσεσθε·

40 Τὸ δὲ καθίσαι ἐκ δεξιῶν μου καὶ ἐξ εὐωνύμων μου, οὐκ ἔστιν ἐμὸν δοῦναι, ἀλλ᾽ οἷς ἡτοίμασται.

41 Καὶ ἀκούσαντες οἱ δέκα, ἤρξαντο ἀγανακτεῖν περὶ Ἰακώβου καὶ Ἰωάννου.

42 Ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος αὐτοὺς, λέγει αὐτοῖς· Οἴδατε ὅτι οἱ δοκοῦντες ἄρχειν τῶν ἐθνῶν, κατακυριεύουσιν αὐτῶν· καὶ οἱ μεγάλοι αὐτῶν, κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν.

43 Οὐχ οὕτω δὲ ἔσται ἐν ὑμῖν· ἀλλ᾽ ὃς ἐὰν θέλῃ γενέσθαι μέγας ἐν ὑμῖν, ἔσται διάκονος ὑμῶν·

44 Καὶ ὃς ἂν θέλῃ ὑμῶν γενέσθαι πρῶτος, ἔσται πάντων δοῦλος.

45 Καὶ γὰρ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε διακονηθῆναι, ἀλλὰ διακονῆσαι, καὶ δοῦναι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ λύτρον ἀντὶ πολλῶν.

46 Καὶ ἔρχονται εἰς Ἱεριχώ· καὶ ἐκπορευομένου αὐτοῦ ἀπὸ Ἱεριχὼ, καὶ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ ὄχλου ἱκανοῦ, Υἱὸς Τιμαίου Βαρτίμαιος ὁ τυφλὸς ἐκάθητο παρὰ τὴν ὁδὸν προσαιτῶν.

47 Καὶ

47 Καὶ ἀκέσας ὅτι Ἰησȣ̃ς ὁ Ναζωραῖός
ἐςιν, ἤρξατο κράζειν, καὶ λέγειν· Ὁ Υἱὸς
Δαβὶδ Ἰησȣ̃, ἐλέησόν με.
48 Καὶ ἐπετίμων αὐτῷ πολλοὶ ἵνα σιω-
πήσῃ· ὁ δὲ πολλῷ μᾶλλον ἔκραζεν· Υἱὲ
Δαβὶδ ἐλέησόν με.
49 Καὶ ςὰς ὁ Ἰησȣ̃ς, εἶπεν αὐτὸν φωνη-
θῆναι· καὶ φωνȣ̃σι τὸν τυφλὸν, λέγοντες αὐ-
τῷ· Θάρσει, ἔγειραι· φωνεῖ σε.
50 Ὁ δὲ ἀποβαλὼν τὸ ἱμάτιον αὐτȣ̃,
ἀνας ὰς ἦλθε πρὸς τὸν Ἰησȣ̃ν.
51 Καὶ ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησȣ̃ς·
Τί θέλεις ποιήσω σοι; Ὁ δὲ τυφλὸς εἶ-
πεν αὐτῷ· Ῥαββονὶ, ἵνα ἀναβλέψω.
52 Ὁ δὲ Ἰησȣ̃ς εἶπεν αὐτῷ· Ὕπαγε·
ἡ πίςις σȣ σέσωκέ σε· Καὶ εὐθέως ἀνέβλε-
ψε, καὶ ἠκολȣ́θει τῷ Ἰησȣ̃ ἐν τῇ ὁδῷ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

Ἑνδέκατον βαίων βασιλήϊον ἔλλαχε νίκην·
Καὶ συκῆς κατάραν, κἀμποεῖην τεμένȣς.
Πίςιν ὑπερθαύμαςον ὑπερφυέεσιν ἐν ἔρ-
γοις.
Κλῦσμά τε τὸ Προδρόμȣ εἰς λύσιν ἀντι-
δίκοις.

1 ΚΑὶ ὅτε ἐγγίζȣσιν εἰς Ἱερȣσαλὴμ,
εἰς Βηθφαγὴ καὶ Βηθανίαν πρὸς
τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, ἀποςέλλει δύο τῶν μα-
θητῶν αὐτȣ̃,
2 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε εἰς τὴν
κώμην τὴν κατέναντι ὑμῶν. καὶ εὐθέως εἰ-
σπορευόμενοι εἰς αὐτὴν, εὑρήσετε πῶλον
δεδε-

δεδεμένον, ἐφ' ὃν οὐδεὶς ἀνθρώπων κεκάθι-
κε· λύσαντες αὐτὸν ἀγάγετε.
3 Καὶ ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ· Τί ποιεῖτε
τοῦτο; εἴπατε· Ὅτι ὁ Κύριος αὐτοῦ χρείαν
ἔχει· καὶ εὐθέως αὐτὸν ἀποστελεῖ ὧδε.
4 Ἀπῆλθον δὲ καὶ εὗρον τὸν πῶλον δεδε-
μένον πρὸς τὴν θύραν ἔξω ἐπὶ τοῦ ἀμφόδου·
καὶ λύουσιν αὐτόν.
5 Καί τινες τῶν ἐκεῖ ἑστηκότων ἔλεγον αὐ-
τοῖς· Τί ποιεῖτε λύοντες τὸν πῶλον;
6 Οἱ δὲ εἶπον αὐτοῖς καθὼς ἐνετείλατο
ὁ Ἰησοῦς· καὶ ἀφῆκαν αὐτούς.
7 Καὶ ἤγαγον τὸν πῶλον πρὸς τὸν Ἰησοῦν,
καὶ ἐπέβαλον αὐτῷ τὰ ἱμάτια αὐτῶν· καὶ ἐ-
κάθισεν ἐπ' αὐτῷ.
8 Πολλοὶ δὲ τὰ ἱμάτια αὐτῶν ἔστρωσαν
εἰς τὴν ὁδόν· ἄλλοι δὲ στοιβάδας ἔκοπτον ἐκ
τῶν δένδρων, καὶ ἐστρώννυον εἰς τὴν ὁδόν.
9 Καὶ οἱ προάγοντες καὶ οἱ ἀκολουθοῦντες
ἔκραζον, λέγοντες· Ὡσαννά, εὐλογημέ-
νος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου.
10 Εὐλογημένη ἡ ἐρχομένη Βασιλεία ἐν
ὀνόματι Κυρίου, τοῦ Πατρὸς ἡμῶν Δαβίδ·
Ὡσαννὰ ἐν τοῖς ὑψίστοις.
11 Καὶ εἰσῆλθεν εἰς Ἱεροσόλυμα ὁ Ἰη-
σοῦς, καὶ εἰς τὸ Ἱερόν· καὶ περιβλεψάμενος
πάντα, ὀψίας ἤδη οὔσης τῆς ὥρας, ἐξῆλθεν
εἰς Βηθανίαν μετὰ τῶν δώδεκα.
12 Καὶ τῇ ἐπαύριον ἐξελθόντων αὐτῶν
ἀπὸ Βηθανίας, ἐπείνασε.
13 Καὶ ἰδὼν συκῆν μακρόθεν ἔχουσαν
φύλλα, ἦλθεν εἰ ἄρα εὑρήσει τι ἐν αὐτῇ·
καὶ ἐλθὼν ἐπ' αὐτὴν, οὐδὲν εὗρεν εἰ μὴ φύλ-
λα· οὐ γὰρ ἦν καιρὸς σύκων.
14 Καὶ

14 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῇ· Μηκέτι ἐκ σοῦ εἰς τὸν αἰῶνα οὐδεὶς καρπὸν φάγοι. ϗ ἤκουον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

15 Καὶ ἔρχονται εἰς Ἱεροσόλυμα· ϗ εἰσελθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ Ἱερὸν, ἤρξατο ἐκβάλλειν τοὺς πωλοῦντας ϗ ἀγοράζοντας ἐν τῷ Ἱερῷ· ϗ τὰς τραπέζας τῶν κολλυβιστῶν, ϗ τὰς καθέδρας τῶν πωλούντων τὰς περιστερὰς κατέστρεψε.

16 Καὶ οὐκ ἤφιεν ἵνα τὶς διενέγκῃ σκεῦος διὰ τοῦ Ἱεροῦ.

17 Καὶ ἐδίδασκε, λέγων αὐτοῖς· Οὐ γέγραπται· Ὅτι ὁ οἶκός μου, οἶκος προσευχῆς κληθήσεται πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν; ὑμεῖς δὲ ἐποιήσατε αὐτὸν σπήλαιον λῃστῶν.

18 Καὶ ἤκουσαν οἱ Γραμματεῖς ϗ οἱ Ἀρχιερεῖς, ϗ ἐζήτουν πῶς αὐτὸν ἀπολέσουσιν· ἐφοβοῦντο γὰρ αὐτὸν, ὅτι πᾶς ὁ ὄχλος ἐξεπλήσσετο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ.

19 Καὶ ὅτε ὀψὲ ἐγένετο, ἐξεπορεύετο ἔξω τῆς πόλεως.

20 Καὶ πρωῒ παραπορευόμενοι, εἶδον τὴν συκῆν ἐξηραμμένην ἐκ ῥιζῶν.

21 Καὶ ἀναμνησθεὶς ὁ Πέτρος, λέγει αὐτῷ· Ῥαββὶ ἴδε, ἡ συκῆ ἣν κατηράσω, ἐξήρανται.

22 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Ἔχετε πίστιν Θεοῦ·

23 Ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὃς ἂν εἴπῃ τῷ ὄρει τούτῳ· Ἄρθητι, ϗ βλήθητι εἰς τὴν θάλασσαν· ϗ μὴ διακριθῇ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, ἀλλὰ πιστεύσῃ ὅτι ἃ λέγει γίνεται· ἔσται αὐτῷ ὃ ἐὰν εἴπῃ.

24 Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, πάντα ὅσα ἂν προσευχόμενοι αἰτεῖσθε, πιστεύετε ὅτι λαμβάνετε· ϗ ἔσται ὑμῖν.

25 Καὶ ὅταν ϛήκητε προσευχόμενοι, ἀ-
φίετε εἴτι ἔχετε κατά τινος· ἵνα ϗ ὁ Πατὴρ
ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἀφῇ ὑμῖν τὰ παρα-
πτώματα ὑμῶν.
26 Εἰ δὲ ὑμεῖς οὐκ ἀφίετε, οὐδὲ ὁ Πατὴρ
ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἀφήσει τὰ παραπτώ-
ματα ὑμῶν.
27 Καὶ ἔρχονται πάλιν εἰς Ἱεροσόλυ-
μα· ϗ ἐν τῷ Ἱερῷ περιπατοῦντος αὐτοῦ, ἔρ-
χονται πρὸς αὐτὸν οἱ Ἀρχιερεῖς ϗ οἱ Γραμ-
ματεῖς ϗ οἱ Πρεσβύτεροι·
28 Καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Ἐν ποίᾳ ἐξου-
σίᾳ ταῦτα ποιεῖς; καὶ τίς σοι τὴν ἐξουσίαν
ταύτην ἔδωκεν ἵνα ταῦτα ποιῇς;
29 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Ἐπερωτήσω ὑμᾶς κἀγὼ ἕνα λόγον·
καὶ ἀποκρίθητέ μοι; καὶ ἐρῶ ὑμῖν ἐν ποίᾳ
ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ.
30 Τὸ Βάπτισμα Ἰωάννου ἐξ οὐρανοῦ ἦν,
ἢ ἐξ ἀνθρώπων; ἀποκρίθητέ μοι.
31 Καὶ ἐλογίζοντο πρὸς ἑαυτοὺς, λέγον-
τες· Ἐὰν εἴπωμεν, ἐξ οὐρανοῦ, ἐρεῖ· Δια-
τί οὖν οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ;
32 Ἀλλ' ἐὰν εἴπωμεν· Ἐξ ἀνθρώπων·
ἐφοβοῦντο τὸν λαόν· ἅπαντες γὰρ εἶχον τὸν
Ἰωάννην, ὅτι ὄντως Προφήτης ἦν.
33 Καὶ ἀποκριθέντες, λέγουσι τῷ Ἰη-
σοῦ· Οὐκ οἴδαμεν. Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκρι-
θεὶς, λέγει αὐτοῖς· Οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν
ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

Δωδέκατον δὲ φονῆας ἀμύνεται ἀμπελεῶνος.
Καίσαρι κῆνσοδοτεῖ. ἄζυγας ἀθανάτους.
Πρώτην ἐντολίην. Χριστὸν Δαβίδου γόνον ἔμμεν.
Γραμματέων τύφον. λεπτὰ γρεώς τε δύο.

1 ΚΑὶ ἤρξατο αὐτοῖς ἐν παραβολαῖς λέγειν· Ἀμπελῶνα ἐφύτευσεν ἄνθρωπος, καὶ περιέθηκε φραγμὸν, καὶ ὤρυξεν ὑπολήνιον, καὶ ᾠκοδόμησε πύργον, καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς· καὶ ἀπεδήμησε.

2 Καὶ ἀπέστειλε πρὸς τοὺς γεωργοὺς τῷ καιρῷ δοῦλον, ἵνα παρὰ τῶν γεωργῶν λάβῃ ἀπὸ τοῦ καρποῦ τοῦ ἀμπελῶνος·

3 Οἱ δὲ, λαβόντες αὐτὸν, ἔδειραν, καὶ ἀπέστειλαν κενόν.

4 Καὶ πάλιν ἀπέστειλε πρὸς αὐτοὺς ἄλλον δοῦλον· κἀκεῖνον λιθοβολήσαντες ἐκεφαλαίωσαν, καὶ ἀπέστειλαν ἠτιμωμένον.

5 Καὶ πάλιν ἄλλον ἀπέστειλε· κἀκεῖνον ἀπέκτειναν· καὶ πολλοὺς ἄλλους, τοὺς μὲν δέροντες, τοὺς δὲ ἀποκτείνοντες.

6 Ἔτι οὖν ἕνα Υἱὸν ἔχων ἀγαπητὸν αὐτοῦ, ἀπέστειλε καὶ αὐτὸν πρὸς αὐτοὺς ἔσχατον, λέγων· Ὅτι ἐντραπήσονται τὸν Υἱόν μου.
Ἐκεῖνοι δὲ οἱ γεωργοὶ εἶπον πρὸς ἑαυτούς·
7 Ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ κληρονόμος· δεῦτε, ἀποκτείνωμεν αὐτὸν, καὶ ἡμῶν ἔσται ἡ κληρονομία.

8 Καὶ λαβόντες αὐτὸν, ἀπέκτειναν, καὶ ἐξέβαλον ἔξω τοῦ ἀμπελῶνος.

9 Τί οὖν ποιήσει ὁ Κύριος τοῦ ἀμπελῶνος; Ἐλεύσεται καὶ ἀπολέσει τοὺς γεωργοὺς, καὶ δώσει τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις.

10 Οὐδὲ τὴν γραφὴν ταύτην ἀνέγνωτε· Λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας.

11 Παρὰ Κυρίου ἐγένετο αὕτη, καὶ ἔστι θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν.

12 Καὶ ἐζήτουν αὐτὸν κρατῆσαι· καὶ ἐφοβήθησαν τὸν ὄχλον· ἔγνωσαν γὰρ ὅτι πρὸς αὐτοὺς τὴν παραβολὴν εἶπε· καὶ ἀφέντες αὐτὸν ἀπῆλθον.

13 Καὶ ἀποστέλλουσι πρὸς αὐτὸν τινὰς τῶν Φαρισαίων καὶ τῶν Ἡρωδιανῶν, ἵνα αὐτὸν ἀγρεύσωσι λόγῳ.

14 Οἱ δὲ ἐλθόντες λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, οἴδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ, καὶ οὐ μέλει σοι περὶ οὐδενός· οὐ γὰρ βλέπεις εἰς πρόσωπον ἀνθρώπων, ἀλλ᾽ ἐπ᾽ ἀληθείας τὴν ὁδὸν τοῦ Θεοῦ διδάσκεις. Ἔξεστι κῆνσον Καίσαρι δοῦναι, ἢ οὔ; δῶμεν, ἢ μὴ δῶμεν;

15 Ὁ δὲ, εἰδὼς αὐτῶν τὴν ὑπόκρισιν, εἶπεν αὐτοῖς· Τί με πειράζετε; φέρετέ μοι δηνάριον, ἵνα ἴδω.

16 Οἱ δὲ ἤνεγκαν. Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τίνος ἡ εἰκὼν αὕτη καὶ ἡ ἐπιγραφή; Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Καίσαρος.

17 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἀπόδοτε τὰ Καίσαρος. Καίσαρι· καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ, τῷ Θεῷ. Καὶ ἐθαύμασαν ἐπ᾽ αὐτῷ.

18 Καὶ ἔρχονται Σαδδουκαῖοι πρὸς αὐτὸν, οἵτινες λέγουσιν ἀνάστασιν μὴ εἶναι· καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν, λέγοντες·

19 Διδάσκαλε, Μωσῆς ἔγραψεν ἡμῖν,

ὅτι ἐάν τινος ἀδελφὸς ἀποθάνῃ, καὶ καταλί-
πῃ γυναῖκα, καὶ τέκνα μὴ ἀφῇ, ἵνα λάβῃ
ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἐξα-
ναστήσῃ σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.
20 Ἑπτὰ οὖν ἀδελφοὶ ἦσαν· καὶ ὁ πρῶτος
ἔλαβε γυναῖκα, καὶ ἀποθνήσκων οὐκ ἀφῆκε
σπέρμα.
21 Καὶ ὁ δεύτερος ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ ἀ-
πέθανε, καὶ οὐδὲ αὐτὸς ἀφῆκε σπέρμα· καὶ ὁ
τρίτος ὡσαύτως.
22 Καὶ ἔλαβον αὐτὴν οἱ ἑπτὰ, καὶ οὐκ ἀφῆ-
καν σπέρμα· ἐσχάτη πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ γυνή.
23 Ἐν τῇ οὖν ἀναστάσει, ὅταν ἀναστῶσι,
τίνος αὐτῶν ἔσται γυνή; οἱ γὰρ ἑπτὰ ἔσχον
αὐτὴν γυναῖκα.
24 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Οὐ διὰ τοῦτο πλανᾶσθε, μὴ εἰδότες τὰς
γραφὰς, μηδὲ τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ;
25 Ὅταν γὰρ ἐκ νεκρῶν ἀναστῶσιν, οὔτε
γαμοῦσιν, οὔτε γαμίσκονται· ἀλλ᾽ εἰσὶν ὡς
Ἄγγελοι οἱ ἐν τοῖς Οὐρανοῖς.
26 Περὶ δὲ τῶν νεκρῶν, ὅτι ἐγείρονται, οὐκ
ἀνέγνωτε ἐν τῇ βίβλῳ Μωσέως, ἐπὶ τῆς βά-
του ὡς εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεὸς, λέγων· Ἐγὼ ὁ Θεὸς
Ἀβραὰμ καὶ ὁ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰακώβ;
27 Οὐκ ἔστιν ὁ Θεὸς νεκρῶν, ἀλλὰ Θεὸς
ζώντων· ὑμεῖς οὖν πολὺ πλανᾶσθε.
28 Καὶ προσελθὼν εἷς τῶν Γραμματέων,
ἀκούσας αὐτῶν συζητούντων, εἰδὼς ὅτι κα-
λῶς αὐτοῖς ἀπεκρίθη, ἐπηρώτησεν αὐτόν·
Ποία ἐστὶ πρώτη πασῶν ἐντολή;
29 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίθη αὐτῷ· Ὅτι
πρώτη πασῶν τῶν ἐντολῶν· Ἄκουε Ἰσραὴλ,
Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν, Κύριος εἷς ἐστι.

30 Καὶ ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου
ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυ-
χῆς σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς διανοίας σου, καὶ ἐξ
ὅλης τῆς ἰσχύος σου· αὕτη πρώτη ἐντολή.
31 Καὶ δευτέρα ὁμοία αὕτη· Ἀγαπή-
σεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτόν. μείζων τού-
των ἄλλη ἐντολὴ οὐκ ἔστι.
32 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Γραμματεύς· Κα-
λῶς, διδάσκαλε, ἐπ' ἀληθείας εἶπας, ὅτι
εἷς ἐστι Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἄλλος πλὴν αὐτοῦ.
33 Καὶ τὸ ἀγαπᾷν αὐτὸν ἐξ ὅλης τῆς
καρδίας, καὶ ἐξ ὅλης τῆς συνέσεως, καὶ ἐξ ὅλης
τῆς ψυχῆς, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ἰσχύος· καὶ τὸ ἀγα-
πᾷν τὸν πλησίον ὡς ἑαυτὸν, πλεῖόν ἐστι πάν-
των τῶν ὁλοκαυτωμάτων καὶ τῶν θυσιῶν.
* 34 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἰδὼν αὐτὸν ὅτι νουνε-
χῶς ἀπεκρίθη, εἶπεν αὐτῷ· Οὐ μακρὰν εἶ
ἀπὸ τῆς Βασιλείας τοῦ Θεοῦ. Καὶ οὐδεὶς οὐ-
κέτι ἐτόλμα αὐτὸν ἐπερωτῆσαι.
35 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἔλεγε, δι-
δάσκων ἐν τῷ ἱερῷ· Πῶς λέγουσιν οἱ Γραμ-
ματεῖς, ὅτι ὁ Χριστὸς Υἱός ἐστι Δαβίδ.
36 Αὐτὸς γὰρ Δαβὶδ εἶπεν ἐν τῷ Πνεύ-
ματι τῷ Ἁγίῳ· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ
μου· Κάθου ἐκ δεξιῶν μου, ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχ-
θρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου.
37 Αὐτὸς οὖν Δαβὶδ λέγει αὐτὸν Κύ-
ριον· καὶ πόθεν Υἱὸς αὐτοῦ ἐστι; Καὶ ὁ πο-
λὺς ὄχλος ἤκουεν αὐτοῦ ἡδέως.
38 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς ἐν τῇ διδαχῇ αὐ-
τοῦ· Βλέπετε ἀπὸ τῶν Γραμματέων τῶν θε-
λόντων ἐν στολαῖς περιπατεῖν, καὶ ἀσπασμοὺς
ἐν ταῖς ἀγοραῖς.
39 Καὶ πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς συνα-

γω-

συναγωγαῖς, καὶ πρωτοκλισίας ἐν τοῖς δείπνοις.

40 Οἱ κατεσθίοντες τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν, καὶ προφάσει μακρὰ προσευχόμενοι. οὗτοι λήψονται περισσότερον κρίμα.

41 Καὶ καθίσας ὁ Ἰησοῦς κατέναντι τοῦ γαζοφυλακίου, ἐθεώρει πῶς ὁ ὄχλος βάλλει χαλκὸν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον· καὶ πολλοὶ πλούσιοι ἔβαλλον πολλά.

42 Καὶ ἐλθοῦσα μία χήρα πτωχὴ ἔβαλε λεπτὰ δύο. ὅ ἐστι κοδράντης.

43 Καὶ προσκαλεσάμενος τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, λέγει αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἡ χήρα αὕτη ἡ πτωχὴ πλεῖον πάντων βέβληκε τῶν βαλόντων εἰς τὸ γαζοφυλάκιον.

44 Πάντες γὰρ ἐκ τοῦ περισσεύοντος αὐτοῖς ἔβαλον· αὕτη δὲ ἐκ τῆς ὑστερήσεως αὐτῆς πάντα ὅσα εἶχεν ἔβαλεν, ὅλον τὸν βίον αὐτῆς.

ΚΕΦΑ΄ΛΑΙΟΝ, ΙΓ΄. 13.

Ἐν δὲ τρίτῳ δεκάτῳ τε τέλος νηοῦ, πόλιός τε,
Γῆς τε· καὶ ἐξ ἀσεβῶν πήματα χειροφόροις,
Καὶ κρίσιν Ὑψιμέδοντος· Ἀνάστασιν ἡ δὲ θανέντων.
Ἄγνοιάν τε χρόνου· γρηγορέειν τε δέον·

1 Καὶ ἐκπορευομένου αὐτοῦ ἐκ τοῦ ἱεροῦ, λέγει αὐτῷ εἷς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ· Διδάσκαλε, ἴδε ποταποὶ λίθοι καὶ ποταπαὶ οἰκοδομαί.

2 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Βλέπεις ταύτας τὰς μεγάλας οἰκοδομάς; οὐ μὴ ἀφεθῇ λίθος ἐπὶ λίθῳ, ὃς οὐ μὴ καταλυθῇ.

3 Καὶ καθημένου αὐτοῦ εἰς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν
κατέναντι τοῦ ἱεροῦ, ἐπηρώτων αὐτὸν κατ' ἰδίαν
Πέτρος καὶ Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης καὶ Ἀνδρέας.
4 Εἰπὲ ἡμῖν πότε ταῦτα ἔσται, καὶ τί τὸ ση-
σημεῖον ὅταν μέλλῃ πάντα ταῦτα συντελεῖσθαι.
5 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς αὐτοῖς, ἤρξα-
το λέγειν· Βλέπετε μή τις ὑμᾶς πλανήσῃ.
6 Πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόμα-
τί μου, λέγοντες· Ὅτι ἐγώ εἰμι· καὶ πολ-
λοὺς πλανήσουσιν.
7 Ὅταν δὲ ἀκούσητε πολέμους καὶ ἀκοὰς
πολέμων, μὴ θροεῖσθε· δεῖ γὰρ γενέσθαι·
ἀλλ' οὔπω τὸ τέλος.
8 Ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνος ἐπὶ ἔθνος, καὶ
βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν. καὶ ἔσονται σεισμοὶ
κατὰ τόπους, καὶ ἔσονται λιμοὶ καὶ ταραχαί.
9 Ἀρχαὶ ὠδίνων ταῦτα. βλέπετε δὲ ὑ-
μεῖς ἑαυτούς. παραδώσουσι γὰρ ὑμᾶς εἰς συ-
νέδρια καὶ εἰς συναγωγάς· δαρήσεσθε, καὶ ἐπὶ
ἡγεμόνων καὶ βασιλέων σταθήσεσθε ἕνεκεν ἐ-
μοῦ, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.
10 Καὶ εἰς πάντα τὰ ἔθνη δεῖ πρῶτον κη-
ρυχθῆναι τὸ Εὐαγγέλιον.
11 Ὅταν δὲ ἀγάγωσιν ὑμᾶς παραδιδόν-
τες, μὴ προμεριμνᾶτε τί λαλήσητε, μηδὲ
μελετᾶτε· ἀλλ' ὃ ἐὰν δοθῇ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ
ὥρᾳ, τοῦτο λαλεῖτε· οὐ γάρ ἐστε ὑμεῖς οἱ λα-
λοῦντες, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον.
12 Παραδώσει δὲ ἀδελφὸς ἀδελφὸν εἰς
θάνατον, καὶ Πατὴρ τέκνον· καὶ ἐπαναστήσον-
ται τέκνα ἐπὶ γονεῖς, καὶ θανατώσουσιν αὐτούς.
13 Καὶ ἔσεσθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων διὰ
τὸ ὄνομά μου· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, οὗ-
τος σωθήσεται.

14 Ὅταν

14 Ὅταν δὲ ἴδητε τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως τὸ ῥηθὲν ὑπὸ Δανιὴλ τοῦ Προφήτου, ἑστὼς ὅπου οὐ δεῖ (ὁ ἀναγινώσκων νοείτω.) τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ φευγέτωσαν εἰς τὰ ὄρη.

15 Ὁ δὲ ἐπὶ τοῦ δώματος, μὴ καταβάτω εἰς τὴν οἰκίαν, μηδὲ εἰσελθέτω ἆραί τι ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ.

16 Καὶ ὁ εἰς τὸν ἀγρὸν ὢν, μὴ ἐπιστρεψάτω εἰς τὰ ὀπίσω, ἆραι τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ.

17 Οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχούσαις καὶ ταῖς θηλαζούσαις ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.

18 Προσεύχεσθε δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ ὑμῶν χειμῶνος.

19 Ἔσονται γὰρ αἱ ἡμέραι ἐκεῖναι θλίψις, οἵα οὐ γέγονε τοιαύτη ἀπ' ἀρχῆς κτίσεως ἧς ἔκτισεν ὁ Θεὸς, ἕως τοῦ νῦν, καὶ οὐ μὴ γένηται.

20 Καὶ εἰ μὴ Κύριος ἐκολόβωσε τὰς ἡμέρας, οὐκ ἂν ἐσώθη πᾶσα σάρξ· ἀλλὰ διὰ τοὺς ἐκλεκτοὺς οὓς ἐξελέξατο, ἐκολόβωσε τὰς ἡμέρας.

21 Καὶ τότε ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ· Ἰδοὺ, ὧδε ὁ Χριστός· ἤ· Ἰδοὺ ἐκεῖ· μὴ πιστεύσητε.

22 Ἐγερθήσονται γὰρ ψευδόχριστοι καὶ ψευδοπροφῆται· καὶ δώσουσι σημεῖα καὶ τέρατα, πρὸς τὸ ἀποπλανᾷν, εἰ δυνατὸν, καὶ τοὺς ἐκλεκτούς.

23 Ὑμεῖς δὲ βλέπετε· Ἰδοὺ, προείρηκα ὑμῖν πάντα.

24 Ἀλλ' ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, μετὰ τὴν θλίψιν ἐκείνην, ὁ ἥλιος σκοτισθήσεται, καὶ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φέγγος αὐτῆς.

25 Καὶ οἱ ἀστέρες τοῦ οὐρανοῦ ἔσονται ἐκπίπτοντες, καὶ αἱ δυνάμεις αἱ ἐν τοῖς οὐρανοῖς σαλευθήσονται.

26 Καὶ τότε ὄψονται τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώ-
που ἐρχόμενον ἐν νεφέλαις μετὰ δυνάμεως
πολλῆς καὶ δόξης.

27 Καὶ τότε ἀποστελεῖ τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ,
καὶ ἐπισυνάξει τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ ἐκ τῶν τεσσά-
ρων ἀνέμων. ἀπ' ἄκρου γῆς ἕως ἄκρου οὐρανοῦ.

28 Ἀπὸ δὲ τῆς συκῆς μάθετε τὴν παρα-
βολήν· ὅταν αὐτῆς ἤδη ὁ κλάδος ἁπαλὸς
γένηται, καὶ ἐκφύῃ τὰ φύλλα, γινώσκετε ὅτι
ἐγγὺς τὸ θέρος ἐστίν.

29 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ταῦτα ἴδητε γι-
νόμενα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἐπὶ θύραις.

30 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οὐ μὴ παρέλ-
θῃ ἡ γενεὰ αὕτη, μέχρις οὗ πάντα ταῦτα
γένηται.

31 Ὁ Οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται·
οἱ δὲ λόγοι μου οὐ μὴ παρέλθωσι.

32 Περὶ δὲ τῆς ἡμέρας ἐκείνης καὶ τῆς
ὥρας οὐδεὶς οἶδεν, οὐδὲ οἱ Ἄγγελοι οἱ ἐν οὐ-
ρανῷ, οὐδὲ ὁ Υἱός, εἰ μὴ ὁ Πατήρ.

33 Βλέπετε, ἀγρυπνεῖτε καὶ προσεύχε-
σθε· οὐκ οἴδατε γὰρ πότε ὁ καιρός ἐστιν.

34 Ὡς ἄνθρωπος ἀπόδημος ἀφεὶς τὴν
οἰκίαν αὐτοῦ, καὶ δοὺς τοῖς δούλοις αὐτοῦ τὴν
ἐξουσίαν, καὶ ἑκάστῳ τὸ ἔργον αὐτοῦ, καὶ τῷ
θυρωρῷ ἐνετείλατο ἵνα γρηγορῇ.

35 Γρηγορεῖτε οὖν· (οὐκ οἴδατε γὰρ πότε
ὁ Κύριος τῆς οἰκίας ἔρχεται, ὀψέ, ἢ με-
σονυκτίου, ἢ ἀλεκτοροφωνίας, ἢ πρωΐ.)

36 Μὴ ἐλθὼν ἐξαίφνης, εὕρῃ ὑμᾶς κα-
θεύδοντας.

37 Ἃ δὲ ὑμῖν λέγω, πᾶσι λέγω· Γρη-
γορεῖτε.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΔ'. 14.

Ε'ν τεξάτῳ δεκάτῳ τε μύρε Λόγον ὁ πλονίκτης
Πέπρακε. Πάχα νόμε, ἢ μέγα θῦμα νέε.
Ε'νθ' ἀρνησομένοιο προαγγελίlω φάθι Πέξε.
Καὶ δέος, ἠδ' ἀνίlω εὐχομένοις Λόγε.
Α'σπασμὸν προδότιο, πέδας, δολόεντας ἐλέγχες,
Σκώμματα, δυσκεισίας· Πέξου ἀπωμοσίας.

1 ΗΝ δὲ τὸ Πάχα ἢ τὰ ἄζυμα
μετὰ δύο ἡμέρας· ἢ ἐζήτεν οἱ
Α'ρχιερεῖς ἢ οἱ Γραμματεῖς πῶς αὐτὸν
ἐν δόλῳ κρατήσαντες ἀποκτείνωσιν.
2 Ε'λεγον δέ· Μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, μήποτε θόρυβος ἔςαι τε λαε.
3 Καὶ ὄντος αὐτε ἐν Βηθανίᾳ ἐν τῇ οἰ-
κίᾳ Σίμωνος τε λεπρε, κατακειμένε αὐτε,
ἦλθε γυνὴ ἔχεσα ἀλάβαςρον μύρε νάρδου
πιςικῆς πολυτελες· ἢ συντρίψασα τὸ ἀ-
λάβαςρον, κατέχεεν αὐτε κατὰ τῆς κεφαλῆς.
4 Ἦσαν δέ τινες ἀγανακτεντες πρὸς ἑαυ-
τὲς, ἢ λέγοντες· Εἰς τί ἡ ἀπώλεια αὕτη
τε μύρε γέγονεν;
5 Ἠδύνατο γὰρ τετο πραθlῶαι ἐπάνω
τριακοσίων δlωαρίων, ἢ δοθlῶαι τοῖς πτω-
χοῖς· Καὶ ἐνεβριμῶντο αὐτῇ.
6 Ὁ δὲ Ἰησες εἶπεν· Ἄφετε αὐτlὼ·
τί αὐτῇ κόπες παρέχετε; καλὸν ἔργον εἰρ-
γάσατο εἰς ἐμέ.
7 Πάντοτε γὰρ τὲς πτωχὲς ἔχετε μεθ'

ἑαυτῶν, ϗ ὅταν θέλητε, δύνασθε αὐτοὺς εὖ
ποιῆσαι· ἐμὲ δὲ ȣ πάντοτε ἔχετε.
8 Ο εἶχεν αὕτη, ἐποίησε· προέλαβε
μυρίσαι μȣ τὸ σῶμα εἰς τὸν ἐνταφιασμόν.
9 Αμὴν λέγω ὑμῖν, ὅπου ἂν κηρυχθῆ
τὸ Εὐαγγέλιον τȣ̃το εἰς ὅλον τὸν Κόσμον,
ϗ ὃ ἐποίησεν αὕτη, λαληθήσεται εἰς μνη-
μόσυνον αὐτῆς.
10 Καὶ ὁ Ιȣ́δας ὁ Ισκαριώτης, εἷς τῶν
δώδεκα, ἀπῆλθε πρὸς τȣ̀ς Αρχιερεῖς, ἵνα
παραδῷ αὐτὸν αὐτοῖς.
11 Οἱ δὲ ἀκȣ́σαντες ἐχάρησαν· καὶ ἐ-
πηγγείλαντο αὐτῷ ἀργύριον δȣ̃ναι· ϗ ἐζή-
τει πῶς εὐκαίρως αὐτὸν παραδῷ.
12 Καὶ τῇ πρώτῃ ἡμέρᾳ τῶν Αζύμων,
ὅτε τὸ Πάσχα ἔθυον, λέγȣσιν αὐτῷ οἱ μα-
θηταὶ αὐτȣ̃· Πȣ̃ θέλεις ἀπελθόντες ἑτοι-
μάσωμεν ἵνα φάγῃς τὸ Πάσχα;
13 Καὶ ἀποστέλλει δύο τῶν μαθητῶν αὐτȣ̃,
ϗ λέγει αὐτοῖς· Υπάγετε εἰς τὴν πόλιν,
ϗ ἀπαντήσει ὑμῖν ἄνθρωπος κεράμιον ὕδα-
τος βαστάζων· ἀκολȣθήσατε αὐτῷ.
14 Καὶ ὅπȣ ἐὰν εἰσέλθῃ, εἴπατε τῷ
οἰκοδεσπότῃ, Οτι ὁ Διδάσκαλος λέγει·
Πȣ̃ ἐστι τὸ κατάλυμα ὅπȣ τὸ Πάσχα μετὰ
τῶν μαθητῶν μȣ φάγω;
15 Καὶ αὐτὸς ὑμῖν δείξει ἀνώγεον μέγα
ἐστρωμένον, ἕτοιμον· ἐκεῖ ἑτοιμάσατε ἡμῖν.
16 Καὶ ἐξῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτȣ̃, καὶ
ἦλθον εἰς τὴν πόλιν, ϗ εὗρον καθὼς εἶπεν
αὐτοῖς· ϗ ἡτοίμασαν τὸ Πάσχα.
17 Καὶ ὀψίας γενομένης ἔρχεται μετὰ
τῶν δώδεκα.
18 Καὶ ἀνακειμένων αὐτῶν, ϗ ἐσθιόντων,
εἶπεν

εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι εἷς
ἐξ ὑμῶν παραδώσει με, ὁ ἐσθίων μετ' ἐμοῦ.
19 Οἱ δὲ ἤρξαντο λυπεῖσθαι, καὶ λέγειν
αὐτῷ εἷς καθ' εἷς· Μήτι ἐγώ; Καὶ ἄλλος·
Μήτι ἐγώ;
20 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Εἷς
ἐκ τῶν δώδεκα, ὁ ἐμβαπτόμενος μετ' ἐμοῦ
εἰς τὸ τρυβλίον.
21 Ὁ μὲν Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑπάγει,
καθὼς γέγραπται περὶ αὐτοῦ, οὐαὶ δὲ τῷ
ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ δι' οὗ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
παραδίδοται· καλὸν ἦν αὐτῷ, εἰ οὐκ ἐγεν-
νήθη ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος.
22 Καὶ ἐσθιόντων αὐτῶν, λαβὼν ὁ Ἰησοῦς
ἄρτον, εὐλογήσας ἔκλασε· καὶ ἔδωκεν αὐ-
τοῖς, καὶ εἶπε· Λάβετε, φάγετε, τοῦτό ἐστι
τὸ Σῶμά μου.
23 Καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον, εὐχαριστήσας
ἔδωκεν αὐτοῖς· καὶ ἔπιον ἐξ αὐτοῦ πάντες.
24 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τοῦτό ἐστι τὸ Αἷμά
μου τὸ τῆς καινῆς διαθήκης, τὸ περὶ πολλῶν
ἐκχυνόμενον.
25 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οὐκέτι οὐ μὴ
πίω ἐκ τοῦ γεννήματος τῆς ἀμπέλου, ἕως
τῆς ἡμέρας ἐκείνης, ὅταν αὐτὸ πίνω καινὸν
ἐν τῇ Βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.
26 Καὶ ὑμνήσαντες ἐξῆλθον εἰς τὸ Ὄ-
ρος τῶν ἐλαιῶν.
27 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι πάν-
τες σκανδαλισθήσεσθε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκτὶ
ταύτῃ· ὅτι γέγραπται· Πατάξω τὸν ποι-
μένα, καὶ διασκορπισθήσεται τὰ πρόβατα.
28 Ἀλλὰ μετὰ τὸ ἐγερθῆναί με, προάξω
ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

29 Ὁ

29 Ο' δὲ Πέτρος ἔφη αὐτῷ· Καὶ εἰ πάντες σκανδαλισθήσονται, ἀλλ' ἐκ ἐγώ.

30 Καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω σοι, ὅτι σήμερον ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ, πρὶν ἢ δὶς ἀλέκτορα φωνῆσαι, τρὶς ἀπαρνήσῃ με.

31 Ο' δὲ ἐκ περισσῦ ἔλεγε μᾶλλον. Ἐάν με δέῃ συναποθανεῖν σοι, ἐ μή σε ἀπαρνήσομαι. Ὡσαύτως δὲ καὶ πάντες ἔλεγον.

32 Καὶ ἔρχονται εἰς χωρίον ἕ τὸ ὄνομα Γεθσημανῆ. καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτῦ· Καθίσατε ὧδε ἕως προσεύξωμαι.

33 Καὶ παραλαμβάνει τὸν Πέτρον καὶ τὸν Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην μεθ' ἑαυτῦ· καὶ ἤρξατο ἐκθαμβεῖσθαι καὶ ἀδημονεῖν.

34 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Περίλυπός ἐστιν ἡ ψυχή μυ ἕως θανάτυ· μείνατε ὧδε, καὶ γρηγορεῖτε.

35 Καὶ προσελθὼν μικρὸν, ἔπεσεν ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ προσηύχετο ἵνα, εἰ δυνατόν ἐστι, παρέλθῃ ἀπ' αὐτῦ ἡ ὥρα.

36 Καὶ ἔλεγεν· Ἀββᾶ ὁ Πατὴρ, πάντα δυνατά σοι· παρένεγκε τὸ ποτήριον ἀπ' ἐμῦ τῦτο, ἀλλ' ἐ τί ἐγὼ θέλω, ἀλλὰ τί σύ.

37 Καὶ ἔρχεται καὶ εὑρίσκει αὐτὺς καθεύδοντας· καὶ λέγει τῷ Πέτρῳ· Σίμων, καθεύδεις; ἐκ ἴσχυσας μίαν ὥραν γρηγορῆσαι;

38 Γρηγορεῖτε καὶ προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθητε εἰς πειρασμόν· τὸ μὲν Πνεῦμα πρόθυμον, ἡ δὲ σὰρξ ἀσθενής.

39 Καὶ πάλιν ἀπελθὼν προσηύξατο, τὸν αὐτὸν λόγον εἰπών.

40 Καὶ ὑποστρέψας εὗρεν αὐτὺς πάλιν καθεύδοντας, (ἦσαν γὰρ οἱ ὀφθαλμοὶ

αὐ-

αὐτῶν βεβαρημένοι) ϗ οὐκ ᾔδεισαν τί αὐτῷ
ἀποκριθῶσι.
41 Καὶ ἔρχεται τὸ τρίτον, ϗ λέγει αὐ-
τοῖς· Καθεύδετε τὸ λοιπὸν ϗ ἀναπαύεσθε·
ἀπέχει, ἦλθεν ἡ ὥρα· ἰδοὺ, παραδίδοται
ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἁ-
μαρτωλῶν.
42 Ἐγείρεσθε, ἄγωμεν. ἰδοὺ, ὁ παρα-
διδούς με ἤγγικε.
43 Καὶ εὐθέως, ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος,
παραγίνεται Ἰούδας, εἷς ὢν τῶν δώδεκα·
ϗ μετ' αὐτοῦ ὄχλος πολὺς μετὰ μαχαιρῶν ϗ
ξύλων, παρὰ τῶν Ἀρχιερέων ϗ τῶν Γραμ-
ματέων ϗ τῶν Πρεσβυτέρων.
44 Δεδώκει δὲ ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν σύσ-
σημον αὐτοῖς, λέγων· Ὃν ἂν φιλήσω,
αὐτός ἐστι. κρατήσατε αὐτὸν, ϗ ἀπαγάγε-
τε ἀσφαλῶς.
45 Καὶ ἐλθὼν, εὐθέως προσελθὼν αὐ-
τῷ, λέγει· Ῥαββὶ, Ῥαββί· ϗ κατεφί-
λησεν αὐτόν.
46 Οἱ δὲ ἐπέβαλον ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας
αὐτῶν· ϗ ἐκράτησαν αὐτόν.
47 Εἷς δέ τις τῶν παρεστηκότων σπασάμε-
νος τὴν μάχαιραν, ἔπαισε τὸν δοῦλον τοῦ Ἀρ-
χιερέως, ϗ ἀφεῖλεν αὐτοῦ τὸ ὠτίον.
48 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Ὡς ἐπὶ λῃστὴν ἐξήλθετε μετὰ μαχαι-
ρῶν ϗ ξύλων συλλαβεῖν με;
49 Καθ' ἡμέραν ἤμην πρὸς ὑμᾶς ἐν τῷ
Ἱερῷ διδάσκων, ϗ οὐκ ἐκρατήσατέ με. ἀλλ'
ἵνα πληρωθῶσιν αἱ Γραφαί.
50 Καὶ ἀφέντες αὐτὸν πάντες ἔφυγον.
51 Καὶ εἷς τις νεανίσκος ἠκολούθει αὐτῷ,
περι-

περιβεβλημένος σινδόνα ἐπὶ γυμνῦ· καὶ κρατῦσιν αὐτὸν οἱ νεανίσκοι.

52 Ὁ δὲ καταλιπὼν τὴν σινδόνα, γυμνὸς ἔφυγεν ἀπ' αὐτῶν.

53 Καὶ ἀπήγαγον τὸν Ἰησοῦν πρὸς τὸν Ἀρχιερέα· καὶ συνέρχονται αὐτῷ πάντες οἱ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Πρεσβύτεροι καὶ οἱ Γραμματεῖς.

54 Καὶ ὁ Πέτρος ἀπὸ μακρόθεν ἠκολούθησεν αὐτῷ ἕως ἔσω εἰς τὴν αὐλὴν τῦ Ἀρχιερέως· καὶ ἦν συγκαθήμενος μετὰ τῶν ὑπηρετῶν, καὶ θερμαινόμενος πρὸς τὸ φῶς.

55 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς καὶ ὅλον τὸ συνέδριον ἐζήτυν κατὰ τῦ Ἰησῦ μαρτυρίαν, εἰς τὸ θανατῶσαι αὐτόν· καὶ ὐχ εὕρισκον.

56 Πολλοὶ γὰρ ἐψευδομαρτύρυν κατ' αὐτῦ· καὶ ἴσαι αἱ μαρτυρίαι ὐκ ἦσαν.

57 Καί τινες ἀναστάντες, ἐψευδομαρτύρυν κατ' αὐτῦ, λέγοντες· Ὅτι ἡμεῖς ἠκύσαμεν αὐτῦ λέγοντος·

58 Ὅτι ἐγὼ καταλύσω τὸν ναὸν τῦτον τὸν χειροποίητον, καὶ διὰ τριῶν ἡμερῶν ἄλλον ἀχειροποίητον οἰκοδομήσω.

59 Καὶ ὐδὲ ὕτως ἴση ἦν ἡ μαρτυρία αὐτῶν.

60 Καὶ ἀναστὰς ὁ Ἀρχιερεὺς εἰς τὸ μέσον, ἐπηρώτησε τὸν Ἰησοῦν, λέγων· Οὐκ ἀποκρίνῃ ὐδέν; τί ὗτοί συ καταμαρτυρῦσιν;

61 Ὁ δὲ ἐσιώπα, καὶ ὐδὲν ἀπεκρίνατο. Πάλιν ὁ Ἀρχιερεὺς ἐπηρώτα αὐτὸν, καὶ λέγει αὐτῷ· Σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τῦ εὐλογητῦ;

62 Ὁ δὲ Ἰησῦς εἶπεν· Ἐγώ εἰμι· καὶ ὄψεσθε τὸν Υἱὸν τῦ ἀνθρώπυ καθήμενον ἐκ δεξιῶν τῆς δυνάμεως, καὶ ἐρχόμενον μετὰ τῶν νεφελῶν τῦ ὐρανῦ.

63 Ὁ

63 Ο' δὲ Α'ρχιερεὺς, διαῤῥήξας τοὺς χιτῶνας αὐτοῦ, λέγει· Τί ἔτι χρείαν ἔχομεν μαρτύρων;

64 Η'κούσατε τῆς βλασφημίας· τί ὑμῖν φαίνεται; Οἱ δὲ πάντες κατέκριναν αὐτὸν εἶναι ἔνοχον θανάτου.

65 Καὶ ἤρξαντό τινες ἐμπτύειν αὐτῷ, καὶ περικαλύπτειν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ κολαφίζειν αὐτὸν, καὶ λέγειν αὐτῷ· Προφήτευσον· καὶ οἱ ὑπηρέται ῥαπίσμασιν αὐτὸν ἔβαλλον.

66 Καὶ ὄντος τοῦ Πέτρου ἐν τῇ αὐλῇ κάτω, ἔρχεται μία τῶν παιδισκῶν τοῦ Α'ρχιερέως.

67 Καὶ ἰδοῦσα τὸν Πέτρον θερμαινόμενον, ἐμβλέψασα αὐτῷ, λέγει· Καὶ σὺ μετὰ τοῦ Ναζαρηνοῦ Ι'ησοῦ ἦσθα.

68 Ο' δὲ ἠρνήσατο, λέγων· Οὐκ οἶδα, οὐδὲ ἐπίσταμαι τί σὺ λέγεις· Καὶ ἐξῆλθεν ἔξω εἰς τὸ προαύλιον· καὶ ἀλέκτωρ ἐφώνησε.

69 Καὶ ἡ παιδίσκη ἰδοῦσα αὐτὸν πάλιν, ἤρξατο λέγειν τοῖς παρεστηκόσιν· Ο'τι οὗτος ἐξ αὐτῶν ἐστιν.

70 Ο' δὲ πάλιν ἠρνεῖτο. Καὶ μετὰ μικρὸν πάλιν οἱ παρεστῶτες ἔλεγον τῷ Πέτρῳ· Α'ληθῶς ἐξ αὐτῶν εἶ· καὶ γὰρ Γαλιλαῖος εἶ, καὶ ἡ λαλιά σου ὁμοιάζει·

71 Ο' δὲ ἤρξατο ἀναθεματίζειν καὶ ὀμνύειν· Ο'τι οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον τοῦτον ὃν λέγετε.

72 Καὶ ἐκ δευτέρου ἀλέκτωρ ἐφώνησε· καὶ ἀνεμνήσθη ὁ Πέτρος τοῦ ῥήματος οὗ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ι'ησοῦς· Ο'τι πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι δὶς, ἀπαρνήσῃ με τρίς· Καὶ ἐπιβαλὼν, ἔκλαιε.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΕ'. 15.

Ἐν πέμπτῳ δεκάτῳ τε μάθῃς κρίνοντα Πιλάτον.
Ληστὴν Ζωοδότου φέρτερον ἀντιβίοις.
Καὶ Λόγον εὐθυνθέντα ἴδῃς μάστιξιν, ἀκάνθαις,
Σταυρῷ, ἐπιγραφίῃ, ὄξει, λοιδορίαις.
Καὶ σκότος Ἠελίοιο. πέτασμά τε ῥυχθὲν ἀτίμως.
Κεντυρίου τὸ σέβας, σὺν δὲ ταφέντα Λόγον.

1 ΚΑὶ εὐθέως ἐπὶ τὸ πρωῒ συμβού-
λιον ποιήσαντες οἱ Ἀρχιερεῖς
μετὰ τῶν Πρεσβυτέρων καὶ Γραμματέων,
καὶ ὅλον τὸ συνέδριον, δήσαντες τὸν Ἰη-
σοῦν ἀπήνεγκαν, καὶ παρέδωκαν τῷ Πι-
λάτῳ.
2 Καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὸν ὁ Πιλάτος·
Σὺ εἶ ὁ Βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; Ὁ δὲ ἀ-
ποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Σὺ λέγεις.
3 Καὶ κατηγόρουν αὐτοῦ οἱ Ἀρχιερεῖς
πολλά. αὐτὸς δὲ οὐδὲν ἀπεκρίνατο.
4 Ὁ δὲ Πιλάτος πάλιν ἐπηρώτησεν αὐ-
τὸν, λέγων· Οὐκ ἀποκρίνῃ οὐδέν; ἴδε πό-
σα σου καταμαρτυροῦσιν.
5 Ὁ δὲ Ἰησοῦς οὐκέτι οὐδὲν ἀπεκρίθη,
ὥστε θαυμάζειν τὸν Πιλάτον.
6 Κατὰ δὲ ἑορτὴν ἀπέλυεν αὐτοῖς ἕνα
δέσμιον, ὅνπερ ᾐτοῦντο.
7 Ἦν δὲ ὁ λεγόμενος Βαραββᾶς μετὰ
τῶν συστασιαστῶν δεδεμένος, οἵτινες ἐν τῇ
στάσει φόνον πεποιήκεισαν.

8 Καὶ ἀναβοήσας ὁ ὄχλος, ἤρξατο αἰ-
τεῖσθαι, καθὼς ἀεὶ ἐποίει αὐτοῖς.
9 Ὁ δὲ Πιλάτος ἀπεκρίθη αὐτοῖς, λέ-
γων· Θέλετε ἀπολύσω ὑμῖν τὸν Βασιλέα
τῶν Ἰουδαίων;
10 (Ἐγίνωσκε γὰρ ὅτι διὰ φθόνον πα-
ραδεδώκεισαν αὐτὸν οἱ Ἀρχιερεῖς.)
11 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς ἀνέσεισαν τὸν ὄχλον
ἵνα μᾶλλον τὸν Βαραββᾶν ἀπολύσῃ αὐτοῖς.
12 Ὁ δὲ Πιλάτος ἀποκριθεὶς, πάλιν
εἶπεν αὐτοῖς· Τί οὖν θέλετε ποιήσω ὃν λέ-
γετε Βασιλέα τῶν Ἰουδαίων;
13 Οἱ δὲ πάλιν ἔκραξαν· Σταύρωσον
αὐτόν.
14 Ὁ δὲ Πιλάτος ἔλεγεν αὐτοῖς· Τί
γὰρ κακὸν ἐποίησεν; Οἱ δὲ περισσοτέρως
ἔκραξαν· Σταύρωσον αὐτόν.
15 Ὁ δὲ Πιλάτος βουλόμενος τῷ ὄχλῳ
τὸ ἱκανὸν ποιῆσαι, ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸν
Βαραββᾶν· καὶ παρέδωκε τὸν Ἰησοῦν φρα-
γελλώσας, ἵνα σταυρωθῇ.
16 Οἱ δὲ στρατιῶται ἀπήγαγον αὐτὸν
ἔσω τῆς αὐλῆς, ὅ ἐστι πραιτώριον· καὶ συγ-
καλοῦσιν ὅλην τὴν σπεῖραν.
17 Καὶ ἐνδύουσιν αὐτὸν πορφύραν, καὶ
περιτιθέασιν αὐτῷ πλέξαντες ἀκάνθινον
στέφανον.
18 Καὶ ἤρξαντο ἀσπάζεσθαι αὐτόν· Χαῖ-
ρε Βασιλεῦ τῶν Ἰουδαίων.
19 Καὶ ἔτυπτον αὐτοῦ τὴν κεφαλὴν κα-
λάμῳ, καὶ ἐνέπτυον αὐτῷ, καὶ τιθέντες τὰ
γόνατα προσεκύνουν αὐτῷ.
20 Καὶ ὅτε ἐνέπαιξαν αὐτῷ, ἐξέδυσαν
αὐτὸν τὴν πορφύραν, καὶ ἐνέδυσαν αὐτὸν τὰ
ἱμά-

ἱμάτια τὰ ἴδια· καὶ ἐξάγουσιν αὐτὸν ἵνα σταυ-
ρώσωσιν αὐτόν.
21 Καὶ ἀγγαρεύουσιν παράγοντά τινα Σί-
μωνα Κυρηναῖον, (ἐρχόμενον ἀπ' ἀγροῦ, τὸν
Πατέρα Ἀλεξάνδρου καὶ Ῥούφου,) ἵνα ἄρῃ
τὸν Σταυρὸν αὐτοῦ.
22 Καὶ φέρουσιν αὐτὸν ἐπὶ Γολγοθᾶ τό-
πον· ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον, κρανίου τόπος.
23 Καὶ ἐδίδουν αὐτῷ πιεῖν ἐσμυρνισμέ-
νον οἶνον· ὁ δὲ οὐκ ἔλαβε.
24 Καὶ σταυρώσαντες αὐτὸν, διεμέριζον
τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, βάλλοντες κλῆρον ἐπ' αὐ-
τὰ, τίς τί ἄρῃ.
25 Ἦν δὲ ὥρα τρίτη, καὶ ἐσταύρωσαν αὐτόν.
26 Καὶ ἦν ἡ ἐπιγραφὴ τῆς αἰτίας αὐτοῦ
ἐπιγεγραμμένη. Ὁ ΒΑΣΙΛΕΥΣ
ΤΩΝ ἸΟΥΔΑΙΩΝ.
27 Καὶ σὺν αὐτῷ σταυροῦσι δύο λῃστάς·
ἕνα ἐκ δεξιῶν, καὶ ἕνα ἐξ εὐωνύμων αὐτοῦ.
28 Καὶ ἐπληρώθη ἡ γραφὴ ἡ λέγουσα·
Καὶ μετὰ ἀνόμων ἐλογίσθη.
29 Καὶ οἱ παραπορευόμενοι ἐβλασφήμουν
αὐτὸν, κινοῦντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ λέ-
γοντες· Οὐὰ, ὁ καταλύων τὸν ναὸν, καὶ ἐν
τρισὶν ἡμέραις οἰκοδομῶν·
30 Σῶσον σεαυτὸν, καὶ κατάβα ἀπὸ τοῦ
Σταυροῦ.
31 Ὁμοίως δὲ καὶ οἱ Ἀρχιερεῖς ἐμπαίζον-
τες πρὸς ἀλλήλους μετὰ τῶν Γραμματέων, ἔλε-
γον· Ἄλλους ἔσωσεν, ἑαυτὸν οὐ δύναται σῶσαι.
32 Ὁ Χριστὸς ὁ Βασιλεὺς τοῦ Ἰσραὴλ
καταβάτω νῦν ἀπὸ τοῦ Σταυροῦ, ἵνα ἴδωμεν
καὶ πιστεύσωμεν. Καὶ οἱ συνεσταυρωμένοι αὐ-
τῷ ὠνείδιζον αὐτόν.

33 Γενομένης δὲ ὥρας ἕκτης, σκότος ἐ-
γένετο ἐφ' ὅλην τὴν γῆν ἕως ὥρας ἐννάτης.
34 Καὶ τῇ ὥρᾳ τῇ ἐννάτῃ ἐβόησεν ὁ Ἰη-
σοῦς φωνῇ μεγάλῃ, λέγων· Ἐλωῒ, Ἐλωῒ,
λαμμᾶ Σαβαχθανί; ὅ ἐστι μεθερμηνευό-
μενον· Ὁ Θεός μου, ὁ Θεός μου, εἰς τί με
ἐγκατέλιπες;
35 Καί τινες τῶν παρεστηκότων ἀκούσαντες,
ἔλεγον· Ἰδοὺ, Ἠλίαν φωνεῖ.
36 Δραμὼν δὲ εἷς, καὶ γεμίσας σπόγγον
ὄξους, περιθείς τε καλάμῳ, ἐπότιζεν αὐ-
τὸν, λέγων· Ἄφετε ἴδωμεν εἰ ἔρχεται Ἠ-
λίας καθελεῖν αὐτόν.
37 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀφεὶς φωνὴν μεγάλην,
ἐξέπνευσε.
38 Καὶ τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐσχίσθη
εἰς δύο, ἀπὸ ἄνωθεν ἕως κάτω.
39 Ἰδὼν δὲ ὁ κεντυρίων ὁ παρεστηκὼς ἐξ
ἐναντίας αὐτοῦ, ὅτι οὕτω κράξας ἐξέπνευ-
σεν, εἶπεν· Ἀληθῶς ὁ ἄνθρωπος οὗτος
Υἱὸς ἦν Θεοῦ.
40 Ἦσαν δὲ καὶ γυναῖκες ἀπὸ μακρόθεν
θεωροῦσαι· ἐν αἷς ἦν καὶ Μαρία ἡ Μαγδα-
ληνὴ, καὶ Μαρία ἡ τοῦ Ἰακώβου τοῦ μικροῦ,
καὶ Ἰωσῆ Μήτηρ, καὶ Σαλώμη.
41 Αἳ καὶ ὅτε ἦν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ,
ἠκολούθουν αὐτῷ, καὶ διηκόνουν αὐτῷ· καὶ
ἄλλαι πολλαὶ αἱ συναναβᾶσαι αὐτῷ εἰς
Ἱεροσόλυμα.
42 Καὶ ἤδη ὀψίας γενομένης, (ἐπεὶ ἦν
παρασκευὴ, ὅ ἐστι προσάββατον.)
43 Ἦλθεν Ἰωσὴφ ὁ ἀπὸ Ἀριμαθαίας,
εὐσχήμων βουλευτὴς, ὃς καὶ αὐτὸς ἦν προσδε-
χόμενος τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, τολμήσας
εἰσῆλ-

εἰσῆλθε πρὸς Πιλάτον, καὶ ἠτήσατο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

44 Ὁ δὲ Πιλάτος ἐθαύμασεν εἰ ἤδη τέθνηκε· καὶ προσκαλεσάμενος τὸν κεντυρίωνα, ἐπηρώτησεν αὐτὸν εἰ πάλαι ἀπέθανε.

45 Καὶ γνοὺς ἀπὸ τοῦ κεντυρίωνος, ἐδωρήσατο τὸ σῶμα τῷ Ἰωσήφ.

46 Καὶ ἀγοράσας σινδόνα, καὶ καθελὼν αὐτὸν, ἐνείλησε τῇ σινδόνι· καὶ κατέθηκεν αὐτὸν ἐν μνημείῳ ὃ ἦν λελατομημένον ἐκ πέτρας· καὶ προσεκύλισε λίθον ἐπὶ τὴν θύραν τοῦ μνημείου.

47 Ἡ δὲ Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ Μαρία Ἰωσῆ ἐθεώρουν ποῦ τίθεται.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ις'. 16.

Μυροφόροισιν ἔγερσιν ἐν ἐσχάτῳ Ἄγγελος εἶπε.
Καὶ Λόγος ἐν πρώτοις ὀπτάνεται Μαρίῃ.
Καὶ δυσὶ δὲ ξυνόδευσε, καὶ ἕνδεκα τοῦτο ἔπειδον.
Οἷς λαλέων ἀνέβη σύνθρονος ᾧ Γενέτῃ.
Μύσαι δ' αὖ πυμάτοισιν ἐκηρύξαντο βροτοῖσοι,
Καὶ λόγον ἐπερέουν θαύμασι θεσπεσίοις.

1 ΚΑὶ διαγενομένου τοῦ Σαββάτου ἡ Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ Μαρία ἡ τοῦ Ἰακώβου καὶ Σαλώμη ἠγόρασαν ἀρώματα, ἵνα ἐλθοῦσαι ἀλείψωσιν αὐτόν.

2 Καὶ λίαν πρωῒ τῆς μιᾶς Σαββάτων ἔρχονται ἐπὶ τὸ μνημεῖον, ἀνατείλαντος τοῦ Ἡλίου.

3 Καὶ ἔλεγον πρὸς ἑαυτάς· Τίς ἀποκυλίσει ἡμῖν τὸν λίθον ἐκ τῆς θύρας τοῦ μνημείου;

4 Καὶ ἀναβλέψασαι θεωροῦσιν ὅτι ἀποκεκύλισται ὁ λίθος· ἦν γὰρ μέγας σφόδρα.

5 Καὶ εἰσελθοῦσαι εἰς τὸ μνημεῖον, εἶδον νεανίσκον καθήμενον ἐν τοῖς δεξιοῖς, περιβεβλημένον στολὴν λευκήν· καὶ ἐξεθαμβήθησαν.

6 Ὁ δὲ λέγει αὐταῖς· Μὴ ἐκθαμβεῖσθε· Ἰησοῦν ζητεῖτε τὸν Ναζαρηνὸν τὸν ἐσταυρωμένον· ἠγέρθη, οὐκ ἔστιν ὧδε· ἴδε, ὁ τόπος ὅπου ἔθηκαν αὐτόν.

7 Ἀλλ' ὑπάγετε, εἴπατε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, καὶ τῷ Πέτρῳ, ὅτι προάγει ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ἐκεῖ αὐτὸν ὄψεσθε, καθὼς εἶπεν ὑμῖν.

8 Καὶ ἐξελθοῦσαι ταχὺ, ἔφυγον ἀπὸ τοῦ μνημείου· εἶχε δὲ αὐτὰς τρόμος καὶ ἔκστασις· καὶ οὐδενὶ οὐδὲν εἶπον· ἐφοβοῦντο γάρ.

9 Ἀναστὰς δὲ πρωῒ πρώτῃ Σαββάτου, ἐφάνη πρῶτον Μαρίᾳ τῇ Μαγδαληνῇ, ἀφ' ἧς ἐκβεβλήκει ἑπτὰ δαιμόνια.

10 Ἐκείνη πορευθεῖσα ἀπήγγειλε τοῖς μετ' αὐτοῦ γενομένοις, πενθοῦσι καὶ κλαίουσι.

11 Κἀκεῖνοι, ἀκούσαντες ὅτι ζῇ, καὶ ἐθεάθη ὑπ' αὐτῆς, ἠπίστησαν.

12 Μετὰ δὲ ταῦτα δυσὶν ἐξ αὐτῶν περιπατοῦσιν ἐφανερώθη ἐν ἑτέρᾳ μορφῇ, πορευομένοις εἰς ἀγρόν.

13 Κἀκεῖνοι ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν τοῖς λοιποῖς· οὐδὲ ἐκείνοις ἐπίστευσαν.

14 Ὕστερον ἀνακειμένοις αὐτοῖς τοῖς ἕνδεκα ἐφανερώθη, καὶ ὠνείδισε τὴν ἀπιστίαν αὐ-

αὐτῶν, καὶ σκληροκαρδίαν, ὅτι τοῖς θεασα-
μένοις αὐτὸν ἐγηγερμένον οὐκ ἐπίστευσαν.
15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Πορευθέντες εἰς
τὸν κόσμον ἅπαντα, κηρύξατε τὸ εὐαγγέ-
λιον πάσῃ τῇ κτίσει.
16 Ὁ πιστεύσας καὶ βαπτισθεὶς, σωθήσε-
ται· ὁ δὲ ἀπιστήσας, κατακριθήσεται.
17 Σημεῖα δὲ τοῖς πιστεύσασι ταῦτα πα-
ρακολουθήσει· Ἐν τῷ ὀνόματί μου δαιμόνια
ἐκβαλοῦσι· γλώσσαις λαλήσουσι καιναῖς.
18 Ὄφεις ἀροῦσι· κἂν θανάσιμόν τι πίω-
σιν, οὐ μὴ αὐτοὺς βλάψει· ἐπὶ ἀῤῥώστους χεῖ-
ρας ἐπιθήσουσι, καὶ καλῶς ἕξουσιν.
19 Ὁ μὲν οὖν Κύριος μετὰ τὸ λαλῆσαι
αὐτοῖς, ἀνελήφθη εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ ἐκά-
θισεν ἐκ δεξιῶν τοῦ Θεοῦ.
20 Ἐκεῖνοι δὲ ἐξελθόντες ἐκήρυξαν παν-
ταχοῦ, τοῦ Κυρίου συνεργοῦντος, καὶ τὸν λό-
γον βεβαιοῦντος διὰ τῶν ἐπακολουθούντων
σημείων.

ΕΥ'ΑΓΓΕ'ΛΙΟΝ

ΚΑΤΑ' ΛΟΥΚΑ͂Ν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

Πρῶτον Ἰωάνναο προάγγελον ἔκθετο φύτλην.
Ζαχαρείαν τε δίκωφον ἀπειθέα ἄσπορον αὖθις
Μηζοκόρης σύλληψιν. Ἐλισαβέτην τε προφῆτιν.
Καὶ τοκετὸν Προδρόμοιο, καὶ αὖ λαλέοντα τοκῆα.

1 Ἐπειδήπερ πολλοὶ ἐ-
πεχείρησαν ἀνατάξασθαι διή-
γησιν περὶ τῶν πεπληροφορημέ-
νων ἐν ἡμῖν πραγμάτων,
2 Καθὼς παρέδοσαν ἡμῖν οἱ ἀπ' ἀρχῆς
αὐτόπται καὶ ὑπηρέται γενόμενοι τοῦ λόγου·
3 Ἔδοξε κἀμοὶ, παρηκολουθηκότι ἄνω-
θεν πᾶσιν ἀκριβῶς, καθεξῆς σοι γράψαι,
κράτιστε Θεόφιλε.
4 Ἵνα ἐπιγνῷς περὶ ὧν κατηχήθης λό-
γων τὴν ἀσφάλειαν.
5 Ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἡρώδου τοῦ
βασιλέως τῆς Ἰουδαίας, ἱερεύς
τις ὀνόματι Ζαχαρίας, ἐξ ἐφημερίας Ἀ-
βιά· καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἐκ τῶν θυγατέρων Ἀα-
ρὼν, καὶ τὸ ὄνομα αὐτῆς Ἐλισάβετ.
6 Ἦσαν δὲ δίκαιοι ἀμφότεροι ἐνώπιον τοῦ

Θεοῦ, πορευόμενοι ἐν πάσαις ταῖς ἐντολαῖς
καὶ δικαιώμασι τοῦ Κυρίου ἄμεμπτοι.
7 Καὶ οὐκ ἦν αὐτοῖς τέκνον, καθότι ἡ
Ἐλισάβετ ἦν στεῖρα, καὶ ἀμφότεροι προβε-
βηκότες ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν ἦσαν.
8 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ ἱερατεύειν αὐτὸν ἐν
τῇ τάξει τῆς ἐφημερίας αὐτοῦ ἔναντι τοῦ Θεοῦ.
9 Κατὰ τὸ ἔθος τῆς ἱερατείας, ἔλαχε τοῦ
θυμιάσαι, εἰσελθὼν εἰς τὸν ναὸν τοῦ Κυρίου.
10 Καὶ πᾶν τὸ πλῆθος τοῦ λαοῦ ἦν προ-
σευχόμενον ἔξω τῇ ὥρᾳ τοῦ θυμιάματος.
11 Ὤφθη δὲ αὐτῷ ἄγγελος Κυρίου, ἑστὼς
ἐκ δεξιῶν τοῦ θυσιαστηρίου τοῦ θυμιάματος.
12 Καὶ ἐταράχθη Ζαχαρίας ἰδὼν, καὶ
φόβος ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτόν.
13 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ ἄγγελος· Μὴ
φοβοῦ Ζαχαρία· διότι εἰσηκούσθη ἡ δέησίς
σου· καὶ ἡ γυνή σου Ἐλισάβετ γεννήσει Υἱόν
σοι, καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰωάννην.
14 Καὶ ἔσται χαρά σοι καὶ ἀγαλλίασις, καὶ
πολλοὶ ἐπὶ τῇ γεννήσει αὐτοῦ χαρήσονται.
15 Ἔσται γὰρ μέγας ἐνώπιον τοῦ Κυ-
ρίου· καὶ οἶνον καὶ σίκερα οὐ μὴ πίῃ· καὶ Πνεύ-
ματος ἁγίου πλησθήσεται ἔτι ἐκ κοιλίας
μητρὸς αὐτοῦ.
16 Καὶ πολλοὺς τῶν Υἱῶν Ἰσραὴλ ἐπι-
στρέψει ἐπὶ Κύριον τὸν Θεὸν αὐτῶν·
17 Καὶ αὐτὸς προελεύσεται ἐνώπιον αὐ-
τοῦ ἐν Πνεύματι καὶ δυνάμει Ἡλίου, ἐπιστρέ-
ψαι καρδίας Πατέρων ἐπὶ τέκνα, καὶ ἀπει-
θεῖς ἐν φρονήσει δικαίων, ἑτοιμάσαι Κυρίῳ
λαὸν κατεσκευασμένον.
18 Καὶ εἶπε Ζαχαρίας πρὸς τὸν ἄγγε-
λον· Κατὰ τί γνώσομαι τοῦτο; ἐγὼ γάρ εἰμι

πρεσβύτης, καὶ ἡ γυνή μου προβεβηκυῖα ἐν
ταῖς ἡμέραις αὐτῆς.
19 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγελος, εἶπεν
αὐτῷ· Ἐγώ εἰμι Γαβριὴλ ὁ παρεστηκὼς
ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ· καὶ ἀπεστάλην λαλῆσαι
πρὸς σὲ, καὶ εὐαγγελίσασθαί σοι ταῦτα.
20 Καὶ ἰδοὺ, ἔσῃ σιωπῶν, καὶ μὴ δυνά-
μενος λαλῆσαι, ἄχρι ἧς ἡμέρας γένηται ταῦ-
τα· ἀνθ' ὧν οὐκ ἐπίστευσας τοῖς λόγοις μου, οἵ-
τινες πληρωθήσονται εἰς τὸν καιρὸν αὐτῶν·
21 Καὶ ἦν ὁ λαὸς προσδοκῶν τὸν Ζαχα-
ρίαν· καὶ ἐθαύμαζον ἐν τῷ χρονίζειν αὐτὸν
ἐν τῷ ναῷ·
22 Ἐξελθὼν δὲ οὐκ ἠδύνατο λαλῆσαι
αὐτοῖς· καὶ ἐπέγνωσαν ὅτι ὀπτασίαν ἑώρακεν
ἐν τῷ ναῷ. καὶ αὐτὸς ἦν διανεύων αὐτοῖς· καὶ
διέμενε κωφός.
23 Καὶ ἐγένετο ὡς ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι
τῆς λειτουργίας αὐτοῦ, ἀπῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ.
24 Μετὰ δὲ ταύτας τὰς ἡμέρας συνέλα-
βεν Ἐλισάβετ ἡ γυνὴ αὐτοῦ· καὶ περιέκρυβεν
ἑαυτὴν μῆνας πέντε, λέγουσα·
25 Ὅτι οὕτω μοι πεποίηκεν ὁ Κύριος ἐν
ἡμέραις αἷς ἐπεῖδεν ἀφελεῖν τὸ ὄνειδός μου
ἐν ἀνθρώποις.
26 Ἐν δὲ τῷ μηνὶ τῷ ἕκτῳ ἀπεστάλη ὁ
ἄγγελος Γαβριὴλ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ εἰς πόλιν
τῆς Γαλιλαίας ᾗ ὄνομα Ναζαρὲτ,
27 Πρὸς Παρθένον μεμνηστευμένην ἀν-
δρὶ ᾧ ὄνομα Ἰωσὴφ, ἐξ οἴκου Δαβίδ· καὶ
τὸ ὄνομα τῆς Παρθένου, Μαριάμ.
28 Καὶ εἰσελθὼν ὁ ἄγγελος πρὸς αὐτὴν,
εἶπε· Χαῖρε κεχαριτωμένη· ὁ Κύριος μετὰ
σοῦ· εὐλογημένη σὺ ἐν γυναιξίν.

29 Η' δὲ ἰδοῦσα διεταράχθη ἐπὶ τῷ λό-
γῳ αὐτοῦ· καὶ διελογίζετο ποταπὸς εἴη ὁ ἀ-
σπασμὸς οὗτος.
30 Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος αὐτῇ· Μὴ φο-
βοῦ, Μαριάμ· εὗρες γὰρ χάριν παρὰ τῷ Θεῷ.
31 Καὶ ἰδοὺ, συλλήψῃ ἐν γαστρὶ, καὶ τέ-
ξῃ Υἱόν· καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰησοῦν.
32 Οὗτος ἔσαι μέγας, καὶ Υἱὸς ὑψίστου
κληθήσεται· καὶ δώσει αὐτῷ Κύριος ὁ Θεὸς
τὸν θρόνον Δαβὶδ τοῦ Πατρὸς αὐτοῦ·
33 Καὶ βασιλεύσει ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰακὼβ
εἰς τοὺς αἰῶνας, καὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ οὐκ
ἔσαι τέλος.
34 Εἶπε δὲ Μαριὰμ πρὸς τὸν ἄγγελον·
Πῶς ἔσαι τοῦτο, ἐπεὶ ἄνδρα οὐ γινώσκω;
35 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγελος εἶπεν αὐ-
τῇ· Πνεῦμα ἅγιον ἐπελεύσεται ἐπὶ σὲ, καὶ
δύναμις ὑψίστου ἐπισκιάσει σοι· διὸ καὶ τὸ γε-
νώμενον ἐκ σοῦ ἅγιον, κληθήσεται Υἱὸς Θεοῦ.
36 Καὶ ἰδοὺ, Ἐλισάβετ ἡ συγγενής σου,
καὶ αὐτὴ συνειληφυῖα Υἱὸν ἐν γήρᾳ αὐτῆς·
καὶ οὗτος μὴν ἕκτος ἐστὶν αὐτῇ τῇ καλουμένῃ
στείρᾳ.
37 Ὅτι οὐκ ἀδυνατήσει παρὰ τῷ Θεῷ
πᾶν ῥῆμα.
38 Εἶπε δὲ Μαριάμ· Ἰδοὺ ἡ δούλη Κυ-
ρίου· γένοιτό μοι κατὰ τὸ ῥῆμά σου. Καὶ ἀ-
πῆλθεν ἀπ' αὐτῆς ὁ ἄγγελος.
39 Ἀναστᾶσα δὲ Μαριὰμ ἐν ταῖς ἡμέραις
ταύταις, ἐπορεύθη εἰς τὴν ὀρεινὴν μετὰ σπου-
δῆς, εἰς πόλιν Ἰούδα.
40 Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον Ζαχαρίου,
καὶ ἠσπάσατο τὴν Ἐλισάβετ.
41 Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν ἡ Ἐλισάβετ
τὸν

τὸν ἀσπασμὸν τῆς Μαρίας, ἐσκίρτησε τὸ
βρέφος ἐν τῇ κοιλίᾳ αὐτῆς· καὶ ἐπλήσθη
Πνεύματος ἁγίου ἡ Ἐλισάβετ.

41 Καὶ ἀνεφώνησε φωνῇ μεγάλῃ, καὶ εἶ-
πεν· Εὐλογημένη σὺ ἐν γυναιξὶ, καὶ εὐλο-
γημένος ὁ καρπὸς τῆς κοιλίας σου.

43 Καὶ πόθεν μοι τοῦτο, ἵνα ἔλθῃ ἡ
Μήτηρ τοῦ Κυρίου μου πρός με;

44 Ἰδοὺ γὰρ, ὡς ἐγένετο ἡ φωνὴ τοῦ ἀ-
σπασμοῦ σου εἰς τὰ ὦτά μου, ἐσκίρτησεν ἐν ἀ-
γαλλιάσει τὸ βρέφος ἐν τῇ κοιλίᾳ μου.

45 Καὶ μακαρία ἡ πιστεύσασα· ὅτι ἔ-
σαι τελείωσις τοῖς λελαλημένοις αὐτῇ πα-
ρὰ Κυρίου.

46 Καὶ εἶπε Μαριάμ· Μεγαλύνει ἡ
ψυχή μου τὸν Κύριον·

47 Καὶ ἠγαλλίασε τὸ Πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ
Θεῷ τῷ Σωτῆρί μου·

48 Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν
τῆς δούλης αὐτοῦ· Ἰδοὺ γὰρ, ἀπὸ τοῦ νῦν
μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί.

49 Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνα-
τὸς, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ.

50 Καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰς γενεῶν
τοῖς φοβουμένοις αὐτόν.

51 Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ·
διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας
αὐτῶν.

52 Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων, καὶ
ὕψωσε ταπεινούς·

53 Πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν, καὶ
πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς.

54 Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ
μνησθῆναι ἐλέους,

55 (Καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς Πατέ-
ρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραὰμ, καὶ τῷ σπέρματι
αὐτοῦ,) εἰς τὸν αἰῶνα.
56 Ἔμεινε δὲ Μαριὰμ σὺν αὐτῇ ὡσεὶ
μῆνας τρεῖς· καὶ ὑπέστρεψεν εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς.
57 Τῇ δὲ Ἐλισάβετ ἐπλήσθη ὁ χρόνος
τοῦ τεκεῖν αὐτήν· καὶ ἐγέννησεν Υἱόν.
58 Καὶ ἤκουσαν οἱ περίοικοι καὶ οἱ συγγε-
νεῖς αὐτῆς, ὅτι ἐμεγάλυνε Κύριος τὸ ἔλεος
αὐτοῦ μετ' αὐτῆς· καὶ συνέχαιρον αὐτῇ.
59 Καὶ ἐγένετο, ἐν τῇ ὀγδόῃ ἡμέρᾳ ἦλ-
θον περιτεμεῖν τὸ παιδίον· καὶ ἐκάλουν αὐτὸ
ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ Πατρὸς αὐτοῦ, Ζαχαρίαν.
60 Καὶ ἀποκριθεῖσα ἡ μήτηρ αὐτοῦ, εἶ-
πεν· Οὐχί· ἀλλὰ κληθήσεται Ἰωάννης.
61 Καὶ εἶπον πρὸς αὐτήν· Ὅτι οὐδείς
ἐστιν ἐν τῇ συγγενείᾳ σου, ὃς καλεῖται τῷ ὀνό-
ματι τούτῳ.
62 Ἐνένευον δὲ τῷ Πατρὶ αὐτοῦ, τὸ τί
ἂν θέλοι καλεῖσθαι αὐτόν.
63 Καὶ αἰτήσας πινακίδιον, ἔγραψε,
λέγων· Ἰωάννης ἐστὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ· Καὶ
ἐθαύμασαν πάντες.
64 Ἀνεῴχθη δὲ τὸ στόμα αὐτοῦ παραχρῆ-
μα, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτοῦ· καὶ ἐλάλει εὐλο-
γῶν τὸν Θεόν.
65 Καὶ ἐγένετο ἐπὶ πάντας φόβος τοὺς πε-
ριοικοῦντας αὐτούς· καὶ ἐν ὅλῃ τῇ ὀρεινῇ τῆς
Ἰουδαίας διελαλεῖτο πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα.
66 Καὶ ἔθεντο πάντες οἱ ἀκούσαντες ἐν τῇ
καρδίᾳ αὐτῶν, λέγοντες· Τί ἄρα τὸ παιδίον
τοῦτο ἔσται; Καὶ χεὶρ Κυρίου ἦν μετ' αὐτοῦ.
67 Καὶ Ζαχαρίας ὁ Πατὴρ αὐτοῦ ἐπλήσθη
Πνεύματος ἁγίου· καὶ προεφήτευσε, λέγων·

68 Εὐ-

68 Εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσ-
ραὴλ, ὅτι ἐπεσκέψατο καὶ ἐποίησε λύτρωσιν
τῷ λαῷ αὐτοῦ,
69 Καὶ ἤγειρε κέρας σωτηρίας ἡμῖν, ἐν
τῷ οἴκῳ Δαβὶδ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ.
70 Καθὼς ἐλάλησε διὰ στόματος τῶν ἁ-
γίων τῶν ἀπ᾽ αἰῶνος Προφητῶν αὐτοῦ,
71 Σωτηρίαν ἐξ ἐχθρῶν ἡμῶν, καὶ ἐκ
χειρὸς πάντων τῶν μισούντων ἡμᾶς·
72 Ποιῆσαι ἔλεος μετὰ τῶν Πατέρων ἡ-
μῶν, καὶ μνησθῆναι διαθήκης ἁγίας αὐτοῦ·
73 Ὅρκον ὃν ὤμοσε πρὸς Ἀβραὰμ τὸν
Πατέρα ἡμῶν, τοῦ δοῦναι ἡμῖν·
74 Ἀφόβως, ἐκ χειρὸς τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν
ῥυσθέντας, λατρεύειν αὐτῷ,
75 Ἐν ὁσιότητι καὶ δικαιοσύνῃ ἐνώπιον αὐ-
τοῦ, πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς ἡμῶν.
76 Καὶ σὺ παιδίον, Προφήτης ὑψίστου
κληθήσῃ· προπορεύσῃ γὰρ πρὸ προσώπου
Κυρίου, ἑτοιμάσαι ὁδοὺς αὐτοῦ.
77 Τοῦ δοῦναι γνῶσιν σωτηρίας τῷ λαῷ
αὐτοῦ, ἐν ἀφέσει ἁμαρτιῶν αὐτῶν·
78 Διὰ σπλάγχνα ἐλέους Θεοῦ ἡμῶν, ἐν
οἷς ἐπεσκέψατο ἡμᾶς ἀνατολὴ ἐξ ὕψους.
79 Ἐπιφᾶναι τοῖς ἐν σκότει καὶ σκιᾷ θα-
νάτου καθημένοις, τοῦ κατευθῦναι τοὺς πόδας
ἡμῶν εἰς ὁδὸν εἰρήνης.
80 Τὸ δὲ παιδίον ηὔξανε καὶ ἐκραταιοῦτο
Πνεύματι· καὶ ἦν ἐν ταῖς ἐρήμοις ἕως ἡμέ-
ρας ἀναδείξεως αὐτοῦ πρὸς τὸν Ἰσραήλ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

Δεύτερον ἀγνοτόκου Θεομήτορος Υἱέα φαίνει·
Οὐρανίωντε φάλαγγα γενέθλιον ᾆσμα κροτοῦσαν.
Καὶ βρέφος ἀκρότμητον, ὑπαντιάσαντε Προφήταις.
Μύσαις συλλαλέοντα, δυωδεκέτηπερ ἐόντα.

1 Ε'Γένετο δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκεί-
ναις, ἐξῆλθε δόγμα παρὰ Καί-
σαρος Αὐγούστου, ἀπογράφεσθαι πᾶσαν τὴν
οἰκουμένην.
2 (Αὕτη ἡ ἀπογραφὴ πρώτη, ἐγένετο
ἡγεμονεύοντος τῆς Συρίας Κυρηνίου.)
3 Καὶ ἐπορεύοντο πάντες ἀπογράφεσθαι,
ἕκαστος εἰς τὴν ἰδίαν πόλιν.
4 Α'νέβη δὲ καὶ Ἰωσὴφ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας,
ἐκ πόλεως Ναζαρὲτ, εἰς τὴν Ἰουδαίαν, εἰς
πόλιν Δαβὶδ, ἥτις καλεῖται Βηθλεέμ. (διὰ
τὸ εἶναι αὐτὸν ἐξ οἴκου καὶ πατριᾶς Δαβὶδ,)
5 Α'πογράψασθαι σὺν Μαριὰμ τῇ με-
μνηστευμένῃ αὐτῷ γυναικὶ, οὔσῃ ἐγκύῳ.
6 Ε'γένετο δὲ ἐν τῷ εἶναι αὐτοὺς ἐκεῖ,
ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τοῦ τεκεῖν αὐτήν.
7 Καὶ ἔτεκε τὸν Υἱὸν αὐτῆς τὸν πρωτό-
τοκον, καὶ ἐσπαργάνωσεν αὐτὸν, καὶ ἀνέκλινεν
αὐτὸν ἐν τῇ φάτνῃ· Διότι οὐκ ἦν αὐτοῖς τό-
πος ἐν τῷ καταλύματι.
8 Καὶ ποιμένες ἦσαν ἐν τῇ χώρᾳ τῇ αὐ-
τῇ ἀγραυλοῦντες, καὶ φυλάσσοντες φυλακὰς
τῆς νυκτὸς ἐπὶ τὴν ποίμνην αὐτῶν.
9 Καὶ ἰδοὺ, ἄγγελος Κυρίου ἐπέστη αὐ-

τοῖς,

τοῖς, καὶ δόξα Κυρίου περιέλαμψεν αὐτούς·
καὶ ἐφοβήθησαν φόβον μέγαν.
10 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ ἄγγελος· Μὴ φο-
βεῖσθε· ἰδοὺ γὰρ, εὐαγγελίζομαι ὑμῖν χα-
ρὰν μεγάλην, ἥτις ἔσαι παντὶ τῷ λαῷ.
11 Ὅτι ἐτέχθη ὑμῖν σήμερον Σωτὴρ,
ὅς ἐστι Χριστὸς Κύριος, ἐν πόλει Δαβίδ.
12 Καὶ τοῦτο ὑμῖν τὸ σημεῖον· Εὑρήσετε
βρέφος ἐσπαργανωμένον, κείμενον ἐν τῇ φάτνῃ.
13 Καὶ ἐξαίφνης ἐγένετο σὺν τῷ ἀγγέ-
λῳ πλῆθος στρατιᾶς οὐρανίου, αἰνούντων τὸν
Θεὸν, καὶ λεγόντων·
14 Δόξα ἐν ὑψίστοις Θεῷ, καὶ ἐπὶ γῆς
εἰρήνη, ἐν ἀνθρώποις εὐδοκία.
15 Καὶ ἐγένετο, ὡς ἀπῆλθον ἀπ' αὐτῶν
εἰς τὸν οὐρανὸν οἱ ἄγγελοι, καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ
ποιμένες εἶπον πρὸς ἀλλήλους· Διέλθωμεν
δὴ ἕως Βηθλεέμ, καὶ ἴδωμεν τὸ ῥῆμα τοῦτο
τὸ γεγονὸς, ὃ ὁ Κύριος ἐγνώρισεν ἡμῖν.
16 Καὶ ἦλθον σπεύσαντες, καὶ ἀνεῦρον
τήν τε Μαριὰμ καὶ τὸν Ἰωσὴφ, καὶ τὸ βρέφος
κείμενον ἐν τῇ φάτνῃ.
17 Ἰδόντες δὲ διεγνώρισαν περὶ τοῦ ῥή-
ματος τοῦ λαληθέντος αὐτοῖς περὶ τοῦ παι-
δίου τούτου.
18 Καὶ πάντες οἱ ἀκούσαντες ἐθαύμα-
σαν περὶ τῶν λαληθέντων ὑπὸ τῶν ποιμένων
πρὸς αὐτούς.
19 Ἡ δὲ Μαριὰμ πάντα συνετήρει τὰ
ῥήματα ταῦτα, συμβάλλουσα ἐν τῇ καρδίᾳ
αὐτῆς.
20 Καὶ ἐπέστρεψαν οἱ ποιμένες, δοξά-
ζοντες καὶ αἰνοῦντες τὸν Θεὸν ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἤ-
κουσαν καὶ εἶδον, καθὼς ἐλαλήθη πρὸς αὐτούς.

21 Καὶ ὅτε ἐπλήσθησαν ἡμέραι ὀκτὼ τοῦ
περιτεμεῖν τὸ παιδίον, καὶ ἐκλήθη τὸ ὄνομα
αὐτοῦ Ἰησοῦς, τὸ κληθὲν ὑπὸ τοῦ ἀγγέλου πρὸ
τοῦ συλληφθῆναι αὐτὸν ἐν τῇ κοιλίᾳ.

22 Καὶ ὅτε ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τοῦ
καθαρισμοῦ αὐτῆς κατὰ τὸν νόμον Μωσέως,
ἀνήγαγον αὐτὸν εἰς Ἱεροσόλυμα, παραστῆ-
σαι τῷ Κυρίῳ,

23 (Καθὼς γέγραπται ἐν νόμῳ Κυρίου·
Ὅτι πᾶν ἄρσεν διανοῖγον μήτραν, ἅγιον τῷ
Κυρίῳ κληθήσεται.)

24 Καὶ τοῦ δοῦναι θυσίαν, κατὰ τὸ εἰρη-
μένον ἐν νόμῳ Κυρίου, ζεῦγος τρυγόνων, ἢ
δύο νεοσσοὺς περιστερῶν.

25 Καὶ ἰδοὺ, ἦν ἄνθρωπος ἐν Ἱερουσα-
λὴμ ᾧ ὄνομα Συμεών· καὶ ὁ ἄνθρωπος οὗτος
δίκαιος καὶ εὐλαβὴς, προσδεχόμενος παρά-
κλησιν τοῦ Ἰσραήλ· καὶ Πνεῦμα ἅγιον ἦν
ἐπ' αὐτόν.

26 Καὶ ἦν αὐτῷ κεχρηματισμένον ὑπὸ
τοῦ Πνεύματος τοῦ ἁγίου, μὴ ἰδεῖν θάνατον
πρὶν ἢ ἴδῃ τὸν Χριστὸν Κυρίου.

27 Καὶ ἦλθεν ἐν τῷ Πνεύματι εἰς τὸ
ἱερόν· καὶ ἐν τῷ εἰσαγαγεῖν τοὺς γονεῖς τὸ
παιδίον Ἰησοῦν, τοῦ ποιῆσαι αὐτοὺς κατὰ τὸ
εἰθισμένον τοῦ νόμου περὶ αὐτοῦ,

28 Καὶ αὐτὸς ἐδέξατο αὐτὸ εἰς τὰς ἀγ-
κάλας αὐτοῦ, καὶ εὐλόγησε τὸν Θεὸν, καὶ εἶπε·

29 Νῦν ἀπολύεις τὸν δοῦλόν σου, δέσπο-
τα, κατὰ τὸ ῥῆμά σου, ἐν εἰρήνῃ.

30 Ὅτι εἶδον οἱ ὀφθαλμοί μου τὸ σω-
τήριόν σου,

31 Ὃ ἡτοίμασας κατὰ πρόσωπον πάν-
των τῶν λαῶν.

32 Φῶς

32 Φῶς εἰς ἀποκάλυψιν ἐθνῶν, καὶ δό-
ξαν λαοῦ σου Ἰσραήλ.
33 Καὶ ἦν Ἰωσὴφ καὶ ἡ Μήτηρ αὐτοῦ θαυ-
μάζοντες ἐπὶ τοῖς λαλουμένοις περὶ αὐτοῦ.
34 Καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς Συμεὼν, καὶ εἶ-
πε πρὸς Μαριὰμ τὴν Μητέρα αὐτοῦ· Ἰδοὺ,
οὗτος κεῖται εἰς πτῶσιν καὶ ἀνάστασιν πολλῶν
ἐν τῷ Ἰσραὴλ, καὶ εἰς σημεῖον ἀντιλεγόμενον.
35 (Καὶ σοῦ δὲ αὐτῆς τὴν ψυχὴν διε-
λεύσεται ῥομφαία·) ὅπως ἂν ἀποκαλυ-
φθῶσιν ἐκ πολλῶν καρδιῶν διαλογισμοί.
36 Καὶ ἦν Ἄννα Προφῆτις, θυγάτηρ
Φανουὴλ, ἐκ φυλῆς Ἀσήρ· αὕτη προβεβη-
κυῖα ἐν ἡμέραις πολλαῖς, ζήσασα ἔτη μετὰ
ἀνδρὸς ἑπτὰ ἀπὸ τῆς Παρθενίας αὐτῆς.
37 Καὶ αὕτη χήρα ὡς ἐτῶν ὀγδοήκοντα
τεσσάρων, ἣ οὐκ ἀφίστατο ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ, νη-
στείαις καὶ δεήσεσι λατρεύουσα νύκτα καὶ ἡμέραν.
38 Καὶ αὕτη αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐπιστᾶσα ἀν-
θωμολογεῖτο τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐλάλει περὶ
αὐτοῦ πᾶσι τοῖς προσδεχομένοις λύτρωσιν ἐν
Ἱερουσαλήμ.
39 Καὶ ὡς ἐτέλεσαν ἅπαντα τὰ κατὰ τὸν
νόμον Κυρίου, ὑπέστρεψαν εἰς τὴν Γαλι-
λαίαν, εἰς τὴν πόλιν αὐτῶν Ναζαρέτ.
40 Τὸ δὲ παιδίον ηὔξανε, καὶ ἐκραταιοῦτο
Πνεύματι, πληρούμενον σοφίας· καὶ χάρις
Θεοῦ ἦν ἐπ' αὐτό.
41 Καὶ ἐπορεύοντο οἱ γονεῖς αὐτοῦ κατ'
ἔτος εἰς Ἱερουσαλὴμ τῇ ἑορτῇ τοῦ Πάσχα.
42 Καὶ ὅτε ἐγένετο ἐτῶν δώδεκα, ἀνα-
βάντων αὐτῶν εἰς Ἱεροσόλυμα κατὰ τὸ ἔθος
τῆς ἑορτῆς.
43 Καὶ τελειωσάντων τὰς ἡμέρας, ἐν τῷ

ὑποστρέφειν αὐτοὺς, ὑπέμεινεν Ἰησοῦς ὁ παῖς
ἐν Ἱερουσαλήμ· ϗ οὐκ ἔγνω Ἰωσὴφ καὶ ἡ
Μήτηρ αὐτοῦ.
44 Νομίσαντες δὲ αὐτὸν ἐν τῇ συνοδίᾳ
εἶναι, ἦλθον ἡμέρας ὁδόν· ϗ ἀνεζήτουν αὐ-
τὸν ἐν τοῖς συγγενέσι ϗ ἐν τοῖς γνωστοῖς.
45 Καὶ μὴ εὑρόντες αὐτὸν, ὑπέστρεψαν
εἰς Ἱερουσαλὴμ, ζητοῦντες αὐτόν.
46 Καὶ ἐγένετο, μεθ' ἡμέρας τρεῖς εὗρον
αὐτὸν ἐν τῷ Ἱερῷ καθεζόμενον ἐν μέσῳ τῶν
διδασκάλων, ϗ ἀκούοντα αὐτῶν, ϗ ἐπερω-
τῶντα αὐτούς.
47 Ἐξίσταντο δὲ πάντες οἱ ἀκούοντες αὐ-
τοῦ, ἐπὶ τῇ συνέσει καὶ ταῖς ἀποκρίσεσιν
αὐτοῦ.
48 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν ἐξεπλάγησαν· ϗ
πρὸς αὐτὸν ἡ Μήτηρ αὐτοῦ εἶπε· Τέκνον,
τί ἐποίησας ἡμῖν οὕτως; ἰδοὺ ὁ Πατήρ σου
κἀγὼ ὀδυνώμενοι ἐζητοῦμέν σε.
49 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί ὅτι ἐζη-
τεῖτέ με; οὐκ ᾔδειτε ὅτι ἐν τοῖς τοῦ Πατρός
μου δεῖ εἶναί με;
50 Καὶ αὐτοὶ οὐ συνῆκαν τὸ ῥῆμα, ὃ ἐ-
λάλησεν αὐτοῖς.
51 Καὶ κατέβη μετ' αὐτῶν, ϗ ἦλθεν εἰς
Ναζαρέτ· καὶ ἦν ὑποτασσόμενος αὐτοῖς.
Καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ διετήρει πάντα τὰ ῥήμα-
τα ταῦτα ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς.
52 Καὶ Ἰησοῦς προέκοπτε σοφίᾳ ϗ ἡλι-
κίᾳ, ϗ χάριτι παρὰ Θεῷ ϗ ἀνθρώποις.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

Ε'ν τριτάτῳ κλυτόφωνον ἐν ὄρεσι θέσπιν ἀκούσεις
Πλήθεσι κηρύττοντα· Ἰορδανίαις τε παρ᾽ ὄχθαις
Χειςὸν ὑποκλύζοντα. Θεοῦ τ᾽ ἐπιμάρτυρον ὄρνιν.
Καὶ γενεὰν διάδεκτον ἀπ᾽ ἀρχεγόνου Γενετῆρος.

1 ΕΝ ἔτει δὲ πεντεκαιδεκάτῳ τῆς ἡ-
γεμονίας Τιβερίου Καίσαρος, ἡ-
γεμονεύοντος Ποντίου Πιλάτου τῆς Ἰουδαίας,
καὶ τετραρχοῦντος τῆς Γαλιλαίας Ἡρώδου,
Φιλίππου δὲ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ τετραρχοῦντος
τῆς Ἰτουραίας καὶ Τραχωνίτιδος χώρας, καὶ
Λυσανίου τῆς Ἀβιληνῆς τετραρχοῦντος,
2 Ἐπὶ Ἀρχιερέων Ἄννα καὶ Καϊάφα,
ἐγένετο ῥῆμα Θεοῦ ἐπὶ Ἰωάννην τὸν τοῦ Ζα-
χαρίου Υἱὸν, ἐν τῇ ἐρήμῳ.
3 Καὶ ἦλθεν εἰς πᾶσαν τὴν περίχωρον
τοῦ Ἰορδάνου, κηρύσσων Βάπτισμα μετανοίας
εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν.
4 Ὡς γέγραπται ἐν βίβλῳ λόγων Ἡ-
σαΐου τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Φωνὴ βοῶν-
τος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν
Κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους αὐτοῦ.
5 Πᾶσα φάραγξ πληρωθήσεται, καὶ πᾶν
ὄρος καὶ βουνὸς ταπεινωθήσεται· καὶ ἔσται τὰ
σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν, καὶ αἱ τραχεῖαι εἰς ὁδοὺς
λείας.
6 Καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ τὸ Σωτήριον
τοῦ Θεοῦ.

7 Ἔλεγεν

7 Ἔλεγεν οὖν τοῖς ἐκπορευομένοις ὄχλοις
βαπτισθῆναι ὑπ' αὐτοῦ· Γεννήματα ἐχιδνῶν,
τίς ὑπέδειξεν ὑμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλού-
σης ὀργῆς;
8 Ποιήσατε οὖν καρποὺς ἀξίους τῆς μετα-
νοίας· καὶ μὴ ἄρξησθε λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Πα-
τέρα ἔχομεν τὸν Ἀβραάμ· λέγω γὰρ ὑμῖν,
ὅτι δύναται ὁ Θεὸς ἐκ τῶν λίθων τούτων ἐ-
γεῖραι τέκνα τῷ Ἀβραάμ.
9 Ἤδη δὲ καὶ ἡ ἀξίνη πρὸς τὴν ῥίζαν τῶν
δένδρων κεῖται. πᾶν οὖν δένδρον μὴ ποιοῦν
καρπὸν καλὸν, ἐκκόπτεται, καὶ εἰς πῦρ
βάλλεται.
10 Καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν οἱ ὄχλοι, λέ-
γοντες· Τί οὖν ποιήσομεν;
11 Ἀποκριθεὶς δὲ, λέγει αὐτοῖς· Ὁ
ἔχων δύο χιτῶνας, μεταδότω τῷ μὴ ἔχοντι·
καὶ ὁ ἔχων βρώματα, ὁμοίως ποιείτω.
12 Ἦλθον δὲ καὶ τελῶναι βαπτισθῆναι,
καὶ εἶπον πρὸς αὐτόν· Διδάσκαλε, τί
ποιήσομεν;
13 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτούς· Μηδὲν πλέον
παρὰ τὸ διατεταγμένον ὑμῖν πράσσετε.
14 Ἐπηρώτων δὲ αὐτὸν καὶ στρατευόμενοι,
λέγοντες· Καὶ ἡμεῖς τί ποιήσομεν; καὶ εἶπε
πρὸς αὐτούς· Μηδένα διασείσητε, μηδὲ συκο-
φαντήσητε· καὶ ἀρκεῖσθε τοῖς ὀψωνίοις ὑμῶν.
15 Προσδοκῶντος δὲ τοῦ λαοῦ, καὶ διαλογι-
ζομένων πάντων ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν περὶ
τοῦ Ἰωάννου, μήποτε αὐτὸς εἴη ὁ Χριστὸς,
16 Ἀπεκρίνατο ὁ Ἰωάννης, ἅπασι λέ-
γων· Ἐγὼ μὲν ὕδατι βαπτίζω ὑμᾶς· ἔρ-
χεται δὲ ὁ ἰσχυρότερός μου, οὗ οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς
λῦσαι τὸν ἱμάντα τῶν ὑποδημάτων αὐτοῦ·
αὐ-

αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσει ἐν Πνεύματι ἁγίῳ καὶ
πυρί.
17 Οὗ τὸ πτύον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ
διακαθαριεῖ τὴν ἅλωνα αὐτοῦ· καὶ συνάξει
τὸν σῖτον εἰς τὴν ἀποθήκην αὐτοῦ, τὸ δὲ ἄ-
χυρον κατακαύσει πυρὶ ἀσβέστῳ.
18 Πολλὰ μὲν οὖν καὶ ἕτερα παρακαλῶν
εὐηγγελίζετο τὸν λαόν.
19 Ὁ δὲ Ἡρώδης ὁ τετράρχης, ἐλεγχό-
μενος ὑπ' αὐτοῦ περὶ Ἡρωδιάδος τῆς γυναι-
κὸς Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ περὶ
πάντων ὧν ἐποίησε πονηρῶν ὁ Ἡρώδης.
20 Προσέθηκε καὶ τοῦτο ἐπὶ πᾶσι, καὶ κα-
τέκλεισε τὸν Ἰωάννην ἐν τῇ φυλακῇ.
21 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ βαπτισθῆναι ἅπαν-
τα τὸν λαὸν, καὶ Ἰησοῦ βαπτισθέντος καὶ προ-
σευχομένου, ἀνεῳχθῆναι τὸν οὐρανόν·
22 Καὶ καταβῆναι τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον
σωματικῷ εἴδει, ὡσεὶ περιστερὰν, ἐπ' αὐτόν·
καὶ φωνὴν ἐξ οὐρανοῦ γενέσθαι, λέγουσαν· Σὺ εἶ
ὁ Υἱός μου ὁ ἀγαπητὸς, ἐν σοὶ ηὐδόκησα.
23 Καὶ αὐτὸς ἦν ὁ Ἰησοῦς ὡσεὶ ἐτῶν τριά-
κοντα ἀρχόμενος, ὢν (ὡς ἐνομίζετο) Υἱὸς
Ἰωσὴφ, τοῦ Ἡλὶ,
24 Τοῦ Ματθὰτ, τοῦ Λευῒ, τοῦ Μελ-
χὶ, τοῦ Ἰαννὰ, τοῦ Ἰωσὴφ,
25 Τοῦ Ματταθίου, τοῦ Ἀμὼς, τοῦ
Ναοὺμ, τοῦ Ἑσλὶ, τοῦ Ναγγαὶ,
26 Τοῦ Μαὰθ, τοῦ Ματταθίου, τοῦ Σε-
μεῒ, τοῦ Ἰωσὴφ, τοῦ Ἰούδα,
27 Τοῦ Ἰωαννᾶ, τοῦ Ῥησὰ, τοῦ Ζοροβά-
βελ, τοῦ Σαλαθιὴλ, τοῦ Νηρὶ,
28 Τοῦ Μελχὶ, τοῦ Ἀδδὶ, τοῦ Κωσὰμ,
τοῦ Ἐλμωδὰμ, τοῦ Ἢρ,

29 Τοῦ

29 Τȣ̃ Ἰωσὴφ, τοῦ Ἐλιέζερ, τοῦ Ἰωρεὶμ, τȣ̃ Ματθὰτ, τȣ̃ Λευΐ,

30 Τȣ̃ Συμεὼν, τȣ̃ Ἰȣ́δα, τȣ̃ Ἰωσὴφ, τȣ̃ Ἰωνὰν, τȣ̃ Ἐλιακεὶμ,

31 Τȣ̃ Μελεᾶ, τȣ̃ Μαϊνὰν, τȣ̃ Ματταθὰ, τȣ̃ Ναθὰν, τȣ̃ Δαβὶδ,

32 Τȣ̃ Ἰεσσαὶ, τȣ̃ Ὠβὴδ, τοῦ Βοὸζ, τȣ̃ Σαλμὼν, τȣ̃ Ναασσὼν,

33 Τȣ̃ Ἀμιναδὰβ, τȣ̃ Ἀρὰμ, τȣ̃ Ἐσρὼμ, τȣ̃ Φαρὲς, τȣ̃ Ἰȣ́δα,

34 Τȣ̃ Ἰακὼβ, τȣ̃ Ἰσαὰκ, τȣ̃ Ἀβραὰμ, τȣ̃ Θάρα, τοῦ Ναχὼρ,

35 Τȣ̃ Σαρȣ̀χ, τȣ̃ Ῥαγαῦ, τȣ̃ Φαλὲκ, τȣ̃ Ἐβὲρ, τȣ̃ Σαλὰ,

36 Τοῦ Καϊνὰν, τοῦ Ἀρφαξὰδ, τοῦ Σὴμ, τȣ̃ Νῶε, τοῦ Λάμεχ,

37 Τȣ̃ Μαθȣσάλα, τȣ̃ Ἐνὼχ, τȣ̃ Ἰάρεδ, τȣ̃ Μαλελεὴλ, τȣ̃ Καϊνὰν,

38 Τȣ̃ Ἐνὼς, τȣ̃ Σὴθ, τοῦ Ἀδὰμ, τοῦ Θεȣ̃.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

Τείπλοκον ἀντιδίκοιο τὸ τέξατον ἔλλαχε μῦθον,
Πάξης. Ναζαρεῖδος τε μιαιφόνον ἅρπαγα χεῖρα.
Δαιμονίων κήρυγμα, φυγὴν θ' ἅμα ῥήματος ἀλκῆ.
Τὴν τ' ἐχυρὰν Σίμωνος. ἰδ' ἄλγεα ποικίλα (νȣ́σων.

1 ἸΗσȣ̃ς δὲ Πνεύματος ἁγίȣ πλήρης ὑπέστρεψεν ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνȣ· καὶ ἤγετο ἐν τῷ Πνεύματι εἰς τὴν ἔρημον,

2 Ἡμέ-



2 Ἡμέρας τεσσαράκοντα πειραζόμενος ὑ-
πὸ τοῦ διαβόλου· καὶ οὐκ ἔφαγεν οὐδὲν ἐν ταῖς
ἡμέραις ἐκείναις· καὶ συντελεσθεισῶν αὐτῶν,
ὕστερον ἐπείνασε.

3 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ διάβολος· Εἰ Υἱὸς
εἶ τοῦ Θεοῦ, εἰπὲ τῷ λίθῳ τούτῳ ἵνα γένηται
ἄρτος.

4 Καὶ ἀπεκρίθη Ἰησοῦς πρὸς αὐτὸν, λέ-
γων· Γέγραπται, ὅτι οὐκ ἐπ' ἄρτῳ μόνῳ ζή-
σεται ὁ ἄνθρωπος, ἀλλ' ἐπὶ παντὶ ῥήματι Θεοῦ.

5 Καὶ ἀναγαγὼν αὐτὸν ὁ διάβολος εἰς ὄ-
ρος ὑψηλὸν, ἔδειξεν αὐτῷ πάσας τὰς βασι-
λείας τῆς οἰκουμένης ἐν στιγμῇ χρόνου.

6 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ διάβολος· Σοὶ δώ-
σω τὴν ἐξουσίαν ταύτην ἅπασαν, καὶ τὴν δό-
ξαν αὐτῶν· ὅτι ἐμοὶ παραδέδοται, καὶ ᾧ
ἐὰν θέλω, δίδωμι αὐτήν.

7 Σὺ οὖν ἐὰν προσκυνήσῃς ἐνώπιόν μου,
ἔσται σου πάντα.

8 Καὶ ἀποκριθεὶς αὐτῷ, εἶπεν ὁ Ἰησοῦς·
Ὕπαγε ὀπίσω μου Σατανᾶ· Γέγραπται
γάρ· Προσκυνήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ
αὐτῷ μόνῳ λατρεύσεις.

9 Καὶ ἤγαγεν αὐτὸν εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ
ἔστησεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ πτερύγιον τοῦ Ἱεροῦ, καὶ
εἶπεν αὐτῷ· Εἰ ὁ Υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, βάλε
σεαυτὸν ἐντεῦθεν κάτω.

10 Γέγραπται γάρ· Ὅτι τοῖς Ἀγγέλοις
αὐτοῦ ἐντελεῖται περὶ σοῦ, τοῦ διαφυλάξαι σε.

11 Καὶ ὅτι ἐπὶ χειρῶν ἀροῦσί σε, μήποτε
προσκόψῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα σου.

12 Καὶ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰη-
σοῦς· Ὅτι εἴρηται· Οὐκ ἐκπειράσεις Κύ-
ριον τὸν Θεόν σου.

13 Καὶ συντελέσας πάντα πειρασμὸν ὁ
διάβολος, ἀπέστη ἀπ' αὐτοῦ ἄχρι καιροῦ.
14 Καὶ ὑπέστρεψεν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῇ δυνάμει
τοῦ Πνεύματος εἰς τὴν Γαλιλαίαν· καὶ φήμη
ἐξῆλθε καθ' ὅλης τῆς περιχώρου περὶ αὐτοῦ.
15 Καὶ αὐτὸς ἐδίδασκεν ἐν ταῖς συνα-
γωγαῖς αὐτῶν, δοξαζόμενος ὑπὸ πάντων.
16 Καὶ ἦλθεν εἰς τὴν Ναζαρὲτ, οὗ ἦν
τεθραμμένος· καὶ εἰσῆλθε κατὰ τὸ εἰωθὸς
αὐτῷ, ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν Σαββάτων, εἰς τὴν
συναγωγὴν· καὶ ἀνέστη ἀναγνῶναι.
17 Καὶ ἐπεδόθη αὐτῷ βιβλίον Ἡσαΐου
τοῦ Προφήτου· καὶ ἀναπτύξας τὸ βιβλίον, εὗ-
ρε τὸν τόπον οὗ ἦν γεγραμμένον.
18 Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμὲ, οὗ ἕνεκεν ἔ-
χρισέ με, εὐαγγελίζεσθαι πτωχοῖς ἀπέσταλ-
κέ με, ἰάσασθαι τοὺς συντετριμμένους τὴν καρ-
δίαν, κηρύξαι αἰχμαλώτοις ἄφεσιν, καὶ τυ-
φλοῖς ἀνάβλεψιν, ἀποστεῖλαι τεθραυσμένους
ἐν ἀφέσει.
19 Κηρύξαι ἐνιαυτὸν Κυρίου δεκτόν.
20 Καὶ πτύξας τὸ βιβλίον, ἀποδοὺς τῷ
ὑπηρέτῃ, ἐκάθισε· καὶ πάντων ἐν τῇ συνα-
γωγῇ οἱ ὀφθαλμοὶ ἦσαν ἀτενίζοντες αὐτῷ.
21 Ἤρξατο δὲ λέγειν πρὸς αὐτούς· Ὅτι
σήμερον πεπλήρωται ἡ γραφὴ αὕτη ἐν τοῖς
ὠσὶν ὑμῶν.
22 Καὶ πάντες ἐμαρτύρουν αὐτῷ, καὶ
ἐθαύμαζον ἐπὶ τοῖς λόγοις τῆς χάριτος, τοῖς
ἐκπορευομένοις ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ, καὶ ἔλε-
γον· Οὐχ οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς Ἰωσήφ;
23 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Πάντως ἐρεῖτέ
μοι τὴν παραβολὴν ταύτην· Ἰατρὲ, θερά-
πευσον σεαυτόν· ὅσα ἠκούσαμεν γενόμενα ἐν

τῇ Καπερναοὺμ, ποίησον καὶ ὧδε ἐν τῇ πα-
τρίδι σου.
24 Εἶπε δέ· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οὐδεὶς
Προφήτης δεκτός ἐστιν ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ.
25 Ἐπ' ἀληθείας δὲ λέγω ὑμῖν, πολ-
λαὶ χῆραι ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις Ἠλιοὺ ἐν
τῷ Ἰσραὴλ, ὅτε ἐκλείσθη ὁ οὐρανὸς ἐπὶ ἔτη
τρία καὶ μῆνας ἕξ, ὡς ἐγένετο λιμὸς μέγας
ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν.
26 Καὶ πρὸς οὐδεμίαν αὐτῶν ἐπέμφθη
Ἠλίας εἰ μὴ εἰς Σάρεπτα τῆς Σιδῶνος,
πρὸς γυναῖκα χήραν.
27 Καὶ πολλοὶ λεπροὶ ἦσαν ἐπὶ Ἐλισσαίου
τοῦ Προφήτου ἐν τῷ Ἰσραήλ· καὶ οὐδεὶς αὐτῶν
ἐκαθαρίσθη, εἰ μὴ Νεεμὰν ὁ Σύρος.
28 Καὶ ἐπλήσθησαν πάντες θυμοῦ ἐν τῇ
συναγωγῇ, ἀκούοντες ταῦτα.
29 Καὶ ἀναστάντες ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω
τῆς πόλεως· καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἕως τῆς ὀφρύος
τοῦ ὄρους, ἐφ' οὗ ἡ πόλις αὐτῶν ᾠκοδόμητο,
εἰς τὸ κατακρημνίσαι αὐτόν.
30 Αὐτὸς δὲ διελθὼν διὰ μέσου αὐτῶν,
ἐπορεύετο.
31 Καὶ κατῆλθεν εἰς Καπερναοὺμ πόλιν
τῆς Γαλιλαίας· καὶ ἦν διδάσκων αὐτοὺς ἐν
τοῖς Σάββασι.
32 Καὶ ἐξεπλήσσοντο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐ-
τοῦ· ὅτι ἐν ἐξουσίᾳ ἦν ὁ λόγος αὐτοῦ.
33 Καὶ ἐν τῇ συναγωγῇ ἦν ἄνθρωπος ἔ-
χων Πνεῦμα δαιμονίου ἀκαθάρτου, καὶ ἀνέ-
κραξε φωνῇ μεγάλῃ,
34 Λέγων· Ἔα, τί ἡμῖν καὶ σοί Ἰησοῦ
Ναζαρηνέ; ἦλθες ἀπολέσαι ἡμᾶς; οἶδά
σε τίς εἶ ὁ ἅγιος τοῦ Θεοῦ.

35 Καὶ

35 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Φιμώθητι, καὶ ἔξελθε ἐξ αὐτοῦ. Καὶ ῥίψαν αὐτὸν τὸ δαιμόνιον εἰς τὸ μέσον, ἐξῆλθεν ἀπ' αὐτοῦ, μηδὲν βλάψαν αὐτόν.

36 Καὶ ἐγένετο θάμβος ἐπὶ πάντας· καὶ συνελάλουν πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες· Τίς ὁ λόγος οὗτος, ὅτι ἐν ἐξουσίᾳ καὶ δυνάμει ἐπιτάσσει τοῖς ἀκαθάρτοις Πνεύμασι, καὶ ἐξέρχονται;

37 Καὶ ἐξεπορεύετο ἦχος περὶ αὐτοῦ εἰς πάντα τόπον τῆς περιχώρου.

38 Ἀναστὰς δὲ ἐκ τῆς συναγωγῆς, εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν Σίμωνος· ἡ πενθερὰ δὲ τοῦ Σίμωνος ἦν συνεχομένη πυρετῷ μεγάλῳ· καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν περὶ αὐτῆς.

39 Καὶ ἐπιστὰς ἐπάνω αὐτῆς, ἐπετίμησε τῷ πυρετῷ· καὶ ἀφῆκεν αὐτήν· παραχρῆμα δὲ ἀναστᾶσα διηκόνει αὐτοῖς.

40 Δύνοντος δὲ τοῦ ἡλίου, πάντες ὅσοι εἶχον ἀσθενοῦντας νόσοις ποικίλαις, ἤγαγον αὐτοὺς πρὸς αὐτόν· ὁ δὲ ἑνὶ ἑκάστῳ αὐτῶν τὰς χεῖρας ἐπιθεὶς, ἐθεράπευσεν αὐτούς.

41 Ἐξήρχετο δὲ καὶ δαιμόνια ἀπὸ πολλῶν, κράζοντα καὶ λέγοντα· Ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ· Καὶ ἐπιτιμῶν οὐκ εἴα αὐτὰ λαλεῖν, ὅτι ᾔδεισαν τὸν Χριστὸν αὐτὸν εἶναι.

42 Γενομένης δὲ ἡμέρας ἐξελθὼν ἐπορεύθη εἰς ἔρημον τόπον, καὶ οἱ ὄχλοι ἐζήτουν αὐτόν, καὶ ἦλθον ἕως αὐτοῦ· καὶ κατεῖχον αὐτὸν τοῦ μὴ πορεύεσθαι ἀπ' αὐτῶν.

43 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτούς· Ὅτι καὶ ταῖς ἑτέραις πόλεσιν εὐαγγελίσασθαί με δεῖ τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, ὅτι εἰς τοῦτο ἀπέσταλμαι.

44 Καὶ ἦν κηρύσσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς τῆς Γαλιλαίας.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

Θαύμασον ἰχθυόεσαν ἰδὼν κατὰ πέμπτον ἄλειίω.
Καὶ Λεπρὸν ἡμεροχρῶτα· ϗ ὠκυμόρε Παραλύτε.
Διττὸν ἄκος κομίσαντος, ἐφεσπομένους τε τελώνας.
Κλῦθί τε παρβολίω ῥάκεος, ϗ ἀπόζυγος οἴνε.

1 ΕΓένετο δὲ ἐν τῷ τὸν ὄχλον ἐπικεῖσθαι αὐτῷ τε ἀκέειν τὸν λόγον τε Θεε, ϗ αὐτὸς ἦν ἑςὼς παρὰ τὴν λίμνην Γεννησαρέτ.
2 Καὶ εἶδε δύο πλοῖα ἑςῶτα παρὰ τὴν λίμνην· οἱ δὲ ἁλιεῖς ἀποβάντες ἀπ' αὐτῶν ἀπέπλυναν τὰ δίκτυα.
3 Ἐμβὰς δὲ εἰς ἓν τῶν πλοίων ὃ ἦν τε Σίμωνος, ἠρώτησεν αὐτὸν ἀπὸ τῆς γῆς ἐπαναγαγεῖν ὀλίγον· ϗ καθίσας ἐδίδασκεν ἐκ τε πλοίε τὲς ὄχλες.
4 Ὡς δὲ ἐπαύσατο λαλῶν, εἶπε πρὸς τὸν Σίμωνα· Ἐπανάγαγε εἰς τὸ βάθος, ϗ χαλάσατε τὰ δίκτυα ὑμῶν εἰς ἄγραν·
5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Σίμων, εἶπεν αὐτῷ· Ἐπιςάτα, δι' ὅλης τῆς νυκτὸς κοπιάσαντες, ἐδὲν ἐλάβομεν· ἐπὶ δὲ τῷ ῥήματί σε χαλάσω τὸ δίκτυον.
6 Καὶ τετο ποιήσαντες, συνέκλεισαν ἰχθύων πλῆθος πολύ· διερρήγνυτο δὲ τὸ δίκτυον αὐτῶν.
7 Καὶ κατένευσαν τοῖς μετόχοις τοῖς ἐν

τῷ

τῷ ἑτέρῳ πλοίῳ, τοῦ ἐλθόντας συλλαβέσθαι αὐτοῖς· καὶ ἦλθον, καὶ ἔπλησαν ἀμφότερα τὰ πλοῖα, ὥστε βυθίζεσθαι αὐτά.

8 Ἰδὼν δὲ Σίμων Πέτρος, προσέπεσε τοῖς γόνασι τοῦ Ἰησοῦ, λέγων· Ἔξελθε ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι ἀνὴρ ἁμαρτωλός εἰμι, Κύριε.

9 Θάμβος γὰρ περιέσχεν αὐτὸν καὶ πάντας τοὺς σὺν αὐτῷ, ἐπὶ τῇ ἄγρᾳ τῶν ἰχθύων ᾗ συνέλαβον.

10 Ὁμοίως δὲ καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην, Υἱοὺς Ζεβεδαίου, οἳ ἦσαν κοινωνοὶ τῷ Σίμωνι. Καὶ εἶπε πρὸς τὸν Σίμωνα ὁ Ἰησοῦς· Μὴ φοβοῦ· ἀπὸ τοῦ νῦν ἀνθρώπους ἔσῃ ζωγρῶν.

11 Καὶ καταγαγόντες τὰ πλοῖα ἐπὶ τὴν γῆν, ἀφέντες ἅπαντα, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

12 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν μιᾷ τῶν πόλεων, καὶ ἰδού, ἀνὴρ πλήρης λέπρας· καὶ ἰδὼν τὸν Ἰησοῦν, πεσὼν ἐπὶ πρόσωπον, ἐδεήθη αὐτοῦ λέγων· Κύριε, ἐὰν θέλῃς, δύνασαί με καθαρίσαι.

13 Καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα, ἥψατο αὐτοῦ, εἰπών· Θέλω, καθαρίσθητι. Καὶ εὐθέως ἡ λέπρα ἀπῆλθεν ἀπ' αὐτοῦ.

14 Καὶ αὐτὸς παρήγγειλεν αὐτῷ μηδενὶ εἰπεῖν· ἀλλὰ ἀπελθὼν δεῖξον σεαυτὸν τῷ ἱερεῖ, καὶ προσένεγκε περὶ τοῦ καθαρισμοῦ σου, καθὼς προσέταξε Μωσῆς, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.

15 Διήρχετο δὲ μᾶλλον ὁ λόγος περὶ αὐτοῦ· καὶ συνήρχοντο ὄχλοι πολλοὶ ἀκούειν, καὶ θεραπεύεσθαι ὑπ' αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ἀσθενειῶν αὐτῶν.

16 Αὐτὸς δὲ ἦν ὑποχωρῶν ἐν ταῖς ἐρήμοις, καὶ προσευχόμενος.

17 Καὶ ἐγένετο ἐν μιᾷ τῶν ἡμερῶν, καὶ
αὐτὸς ἦν διδάσκων· καὶ ἦσαν καθήμενοι Φα-
ρισαῖοι καὶ Νομοδιδάσκαλοι, οἳ ἦσαν ἐλη-
λυθότες ἐκ πάσης κώμης τῆς Γαλιλαίας καὶ
Ἰουδαίας καὶ Ἱερουσαλήμ· καὶ δύναμις Κυρίου
ἦν εἰς τὸ ἰᾶσθαι αὐτούς.
18 Καὶ ἰδού, ἄνδρες φέροντες ἐπὶ κλίνης
ἄνθρωπον ὃς ἦν παραλελυμένος· καὶ ἐζήτουν
αὐτὸν εἰσενεγκεῖν, καὶ θεῖναι ἐνώπιον αὐτοῦ.
19 Καὶ μὴ εὑρόντες διὰ ποίας εἰσενέγκω-
σιν αὐτόν, διὰ τὸν ὄχλον, ἀναβάντες ἐπὶ
τὸ δῶμα, διὰ τῶν κεράμων καθῆκαν αὐτὸν
σὺν τῷ κλινιδίῳ εἰς τὸ μέσον, ἔμπροσθεν
τοῦ Ἰησοῦ.
20 Καὶ ἰδὼν τὴν πίστιν αὐτῶν, εἶπεν αὐ-
τῷ· Ἄνθρωπε, ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου.
21 Καὶ ἤρξαντο διαλογίζεσθαι οἱ Γραμ-
ματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι, λέγοντες· Τίς ἐστιν
οὗτος ὃς λαλεῖ βλασφημίας; τίς δύναται
ἀφιέναι ἁμαρτίας, εἰ μὴ μόνος ὁ Θεός;
22 Ἐπιγνοὺς δὲ ὁ Ἰησοῦς τοὺς διαλογισ-
μοὺς αὐτῶν, ἀποκριθεὶς εἶπε πρὸς αὐτούς·
Τί διαλογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;
23 Τί ἐστιν εὐκοπώτερον, εἰπεῖν· Ἀφέων-
ταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου· ἢ εἰπεῖν· Ἔγει-
ραι καὶ περιπάτει;
24 Ἵνα δὲ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ
Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφιέναι ἁ-
μαρτίας (εἶπε τῷ παραλελυμένῳ·) Σοὶ
λέγω, ἔγειραι, καὶ ἄρας τὸ κλινίδιόν σου,
πορεύου εἰς τὸν οἶκόν σου.
25 Καὶ παραχρῆμα ἀναστὰς ἐνώπιον αὐ-
τῶν, ἄρας ἐφ' ᾧ κατέκειτο, ἀπῆλθεν εἰς τὸν
οἶκον αὐτοῦ, δοξάζων τὸν Θεόν.

26 Καὶ

26 Καὶ ἔκστασις ἔλαβεν ἅπαντας, ϗ ἐδόξαζον τὸν Θεόν· ϗ ἐπλήσθησαν φόβου, λέγοντες· Ὅτι εἴδομεν παράδοξα σήμερον.

27 Καὶ μετὰ ταῦτα ἐξῆλθε, ϗ ἐθεάσατο τελώνην ὀνόματι Λευΐν, καθήμενον ἐπὶ τὸ τελώνιον, ϗ εἶπεν αὐτῷ· Ἀκολούθει μοι.

28 Καὶ καταλιπὼν ἅπαντα, ἀναστὰς ἠκολούθησεν αὐτῷ.

29 Καὶ ἐποίησε δοχὴν μεγάλην ὁ Λευῒς αὐτῷ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ· ϗ ἦν ὄχλος τελωνῶν πολὺς, καὶ ἄλλων οἳ ἦσαν μετ' αὐτῶν κατακείμενοι.

30 Καὶ ἐγόγγυζον οἱ Γραμματεῖς αὐτῶν ϗ οἱ Φαρισαῖοι πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ λέγοντες· Διατί μετὰ τελωνῶν ϗ ἁμαρτωλῶν ἐσθίετε ϗ πίνετε;

31 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς αὐτούς· Οὐ χρείαν ἔχουσιν οἱ ὑγιαίνοντες ἰατροῦ, ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες.

32 Οὐκ ἐλήλυθα καλέσαι δικαίους, ἀλλὰ ἁμαρτωλοὺς εἰς μετάνοιαν.

33 Οἱ δὲ εἶπον πρὸς αὐτόν· Διατί οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου νηστεύουσι πυκνὰ, ϗ δεήσεις ποιοῦνται, ὁμοίως ϗ οἱ τῶν Φαρισαίων· οἱ δὲ σοὶ ἐσθίουσι ϗ πίνουσιν;

34 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτούς· Μὴ δύνασθε τοὺς Υἱοὺς τοῦ νυμφῶνος, ἐν ᾧ ὁ νυμφίος μετ' αὐτῶν ἐστι, ποιῆσαι νηστεύειν;

35 Ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ϗ ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ' αὐτῶν ὁ νυμφίος, τότε νηστεύσουσιν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.

36 Ἔλεγε δὲ ϗ παραβολὴν πρὸς αὐτούς· Ὅτι οὐδεὶς ἐπίβλημα ἱματίου καινοῦ ἐπιβάλλει ἐπὶ ἱμάτιον παλαιόν· εἰ δὲ μήγε,

καὶ τὸ καινὸν σχίζει, καὶ τῷ παλαιῷ οὐ συμ-
φωνεῖ ἐπίβλημα τὸ ἀπὸ τοῦ καινοῦ.
37 Καὶ οὐδεὶς βάλλει οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς
παλαιούς· εἰ δὲ μήγε, ῥήξει ὁ νέος οἶνος
τοὺς ἀσκοὺς, καὶ αὐτὸς ἐκχυθήσεται, καὶ οἱ
ἀσκοὶ ἀπολοῦνται.
38 Ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς καινοὺς βλη-
τέον· καὶ ἀμφότεροι συντηροῦνται.
39 Καὶ οὐδεὶς πιὼν παλαιὸν, εὐθέως θέ-
λει νέον· λέγει γάρ· Ὁ παλαιὸς χρηστότε-
ρός ἐστιν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ϛʹ. 6.

Λύσιν δ' ἑβδομάτοιο παρείσατο ἤματος ἔκτου
Τίλματί τε σταχύων, ξηρᾶς τε χερὸς θεραπείῃ.
Ἐκλογίην συνὲς ὧδε δυωδεκάδος θεολέκτου·
Ἀμφὶ τεήν τε βίωσιν ἐφημοσύνας ἐριτίμους.

1 Ἐγένετο δὲ ἐν Σαββάτῳ δευτερο-
πρώτῳ διαπορεύεσθαι αὐτὸν διὰ
τῶν σπορίμων· καὶ ἔτιλλον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
τοὺς στάχυας, καὶ ἤσθιον, ψώχοντες ταῖς χερσί.
2 Τινὲς δὲ τῶν Φαρισαίων εἶπον αὐτοῖς· Τί
ποιεῖτε, ὃ οὐκ ἔξεστι ποιεῖν ἐν τοῖς Σάββασι;
3 Καὶ ἀποκριθεὶς πρὸς αὐτοὺς εἶπεν ὁ Ἰη-
σοῦς· Οὐδὲ τοῦτο ἀνέγνωτε, ὃ ἐποίησε Δαβίδ,
ὁπότε ἐπείνασεν αὐτὸς, καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ ὄντες;
4 Ὡς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ, καὶ
τοὺς ἄρτους τῆς προθέσεως ἔλαβε, καὶ ἔφαγε,
καὶ ἔδωκε καὶ τοῖς μετ' αὐτοῦ, οὓς οὐκ ἔξεστι φα-
γεῖν εἰ μὴ μόνους τοὺς Ἱερεῖς;
5 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὅτι Κύριός ἐστιν
ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου καὶ τοῦ Σαββάτου.

6 Ἐγένετο δὲ καὶ ἐν ἑτέρῳ Σαββάτῳ εἰ-
σελθεῖν αὐτὸν εἰς τὴν συναγωγὴν, καὶ διδά-
σκειν· καὶ ἦν ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ
ἡ δεξιὰ ἦν ξηρά.
7 Παρετήρουν δὲ αὐτὸν οἱ Γραμματεῖς καὶ
Φαρισαῖοι εἰ ἐν τῷ Σαββάτῳ θεραπεύσει·
ἵνα εὕρωσι κατηγορίαν αὐτοῦ.
8 Αὐτὸς δὲ ᾔδει τοὺς διαλογισμοὺς αὐτῶν·
καὶ εἶπε τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ξηρὰν ἔχοντι τὴν
χεῖρα· Ἔγειραι, καὶ στῆθι εἰς τὸ μέσον. Ὁ
δὲ ἀναστὰς ἔστη.
9 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτούς· Ἐπε-
ρωτήσω ὑμᾶς τι· Ἔξεστι τοῖς Σάββασιν ἀ-
γαθοποιῆσαι, ἢ κακοποιῆσαι; ψυχὴν σῶ-
σαι, ἢ ἀπολέσαι;
10 Καὶ περιβλεψάμενος πάντας αὐτοὺς,
εἶπε τῷ ἀνθρώπῳ· Ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου.
Ὁ δὲ ἐποίησεν οὕτω· καὶ ἀποκατεστάθη ἡ χεὶρ
αὐτοῦ ὑγιὴς ὡς ἡ ἄλλη.
11 Αὐτοὶ δὲ ἐπλήσθησαν ἀνοίας καὶ διελά-
λουν πρὸς ἀλλήλους, τί ἂν ποιήσειαν τῷ Ἰησοῦ.
12 Ἐγένετο δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις,
ἐξῆλθεν εἰς τὸ ὄρος προσεύξασθαι· καὶ ἦν
διανυκτερεύων ἐν τῇ προσευχῇ τοῦ Θεοῦ.
13 Καὶ ὅτε ἐγένετο ἡμέρα, προσεφώνησε
τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ· καὶ ἐκλεξάμενος ἀπ' αὐ-
τῶν δώδεκα, οὓς καὶ ἀποστόλους ὠνόμασε·
14 (Σίμωνα, ὃν καὶ ὠνόμασε Πέτρον, καὶ
Ἀνδρέαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, Ἰάκωβον καὶ
Ἰωάννην, Φίλιππον καὶ Βαρθολομαῖον·
15 Ματθαῖον καὶ Θωμᾶν, Ἰάκωβον τὸν τοῦ
Ἀλφαίου, καὶ Σίμωνα τὸν καλούμενον Ζηλωτήν·
16 Ἰούδαν Ἰακώβου, καὶ Ἰούδαν Ἰσκαριώ-
την, ὃς καὶ ἐγένετο προδότης·)

17 Καὶ καταβὰς μετ' αὐτῶν, ἔστη ἐπὶ τόπου
πεδινοῦ· καὶ ὄχλος μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ πλῆ-
θος πολὺ τοῦ λαοῦ ἀπὸ πάσης τῆς Ἰουδαίας
καὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ τῆς παραλίου Τύρου καὶ
Σιδῶνος, οἳ ἦλθον ἀκοῦσαι αὐτοῦ, καὶ ἰαθῆ-
ναι ἀπὸ τῶν νόσων αὐτῶν·

18 Καὶ οἱ ὀχλούμενοι ὑπὸ Πνευμάτων ἀ-
καθάρτων· καὶ ἐθεραπεύοντο.

19 Καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἐζήτει ἅπτεσθαι
αὐτοῦ· ὅτι δύναμις παρ' αὐτοῦ ἐξήρχετο, καὶ
ἰᾶτο πάντας.

20 Καὶ αὐτὸς ἐπάρας τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐ-
τοῦ εἰς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, ἔλεγε· Μακά-
ριοι οἱ πτωχοί· ὅτι ὑμετέρα ἐστὶν ἡ Βασι-
λεία τοῦ Θεοῦ.

21 Μακάριοι οἱ πεινῶντες νῦν· ὅτι χορ-
τασθήσεσθε. Μακάριοι οἱ κλαίοντες νῦν· ὅτι
γελάσετε.

22 Μακάριοί ἐστε ὅταν μισήσωσιν ὑμᾶς οἱ
ἄνθρωποι, καὶ ὅταν ἀφορίσωσιν ὑμᾶς, καὶ
ὀνειδίσωσι, καὶ ἐκβάλωσι τὸ ὄνομα ὑμῶν ὡς
πονηρὸν, ἕνεκα τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.

23 Χαίρετε ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ καὶ σκιρτή-
σατε· ἰδοὺ γὰρ, ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν τῷ
οὐρανῷ· κατὰ ταῦτα γὰρ ἐποίουν τοῖς προφή-
ταις οἱ Πατέρες αὐτῶν.

24 Πλὴν οὐαὶ ὑμῖν τοῖς πλουσίοις· ὅτι
ἀπέχετε τὴν παράκλησιν ὑμῶν.

25 Οὐαὶ ὑμῖν οἱ ἐμπεπλησμένοι· ὅτι
πεινάσετε. Οὐαὶ ὑμῖν οἱ γελῶντες νῦν· ὅτι
πενθήσετε καὶ κλαύσετε.

26 Οὐαὶ ὑμῖν ὅταν καλῶς ὑμᾶς εἴπωσι
πάντες οἱ ἄνθρωποι· κατὰ ταῦτα γὰρ ἐποίουν
τοῖς ψευδοπροφήταις οἱ Πατέρες αὐτῶν·

27 Ἀλλ' ὑμῖν λέγω τοῖς ἀκούουσιν· Ἀγαπᾶτε τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν· καλῶς ποιεῖτε τοῖς μισοῦσιν ὑμᾶς,

28 Εὐλογεῖτε τοὺς καταρωμένους ὑμῖν· καὶ προσεύχεσθε ὑπὲρ τῶν ἐπηρεαζόντων ὑμᾶς.

29 Τῷ τύπτοντί σε ἐπὶ τὴν σιαγόνα, πάρεχε καὶ τὴν ἄλλην· καὶ ἀπὸ τοῦ αἴροντός σου τὸ ἱμάτιον, καὶ τὸν χιτῶνα μὴ κωλύσῃς.

30 Παντὶ δὲ τῷ αἰτοῦντί σε δίδου· καὶ ἀπὸ τοῦ αἴροντος τὰ σὰ, μὴ ἀπαίτει.

31 Καὶ καθὼς θέλετε ἵνα ποιῶσιν ὑμῖν οἱ ἄνθρωποι, καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐτοῖς ὁμοίως.

32 Καὶ εἰ ἀγαπᾶτε τοὺς ἀγαπῶντας ὑμᾶς, ποία ὑμῖν χάρις ἐστί; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ τοὺς ἀγαπῶντας αὐτοὺς ἀγαπῶσι.

33 Καὶ ἐὰν ἀγαθοποιῆτε τοὺς ἀγαθοποιοῦντας ὑμᾶς, ποία ὑμῖν χάρις ἐστί; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ τὸ αὐτὸ ποιοῦσι.

34 Καὶ ἐὰν δανείζητε παρ' ὧν ἐλπίζετε ἀπολαβεῖν, ποία ὑμῖν χάρις ἐστί; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἁμαρτωλοῖς δανείζουσιν, ἵνα ἀπολάβωσι τὰ ἴσα.

35 Πλὴν ἀγαπᾶτε τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν, καὶ ἀγαθοποιεῖτε, καὶ δανείζετε μηδὲν ἀπελπίζοντες. καὶ ἔσται ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς, καὶ ἔσεσθε Υἱοὶ τοῦ ὑψίστου· ὅτι αὐτὸς χρηστός ἐστιν ἐπὶ τοὺς ἀχαρίστους καὶ πονηρούς.

36 Γίνεσθε οὖν οἰκτίρμονες, καθὼς καὶ ὁ Πατὴρ ὑμῶν οἰκτίρμων ἐστί.

37 Καὶ μὴ κρίνετε, καὶ οὐ μὴ κριθῆτε· μὴ καταδικάζετε, καὶ οὐ μὴ καταδικασθῆτε· ἀπολύετε, καὶ ἀπολυθήσεσθε.

38 Δίδοτε, καὶ δοθήσεται ὑμῖν· μέτρον καλὸν, πεπιεσμένον καὶ σεσαλευμένον καὶ

ὑπε-

ὑπερεκχυνόμενον δώσουσιν εἰς τὸν κόλπον ὑμῶν· τῷ γὰρ αὐτῷ μέτρῳ ᾧ μετρεῖτε, ἀντιμετρηθήσεται ὑμῖν.

39 Εἶπε δὲ παραβολὴν αὐτοῖς· Μήτι δύναται τυφλὸς τυφλὸν ὁδηγεῖν; οὐχὶ ἀμφότεροι εἰς βόθυνον πεσοῦνται;

40 Οὐκ ἔστι μαθητὴς ὑπὲρ τὸν διδάσκαλον αὐτοῦ· κατηρτισμένος δὲ πᾶς ἔσται ὡς ὁ διδάσκαλος αὐτοῦ.

41 Τί δὲ βλέπεις τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου· τὴν δὲ δοκὸν τὴν ἐν τῷ ἰδίῳ ὀφθαλμῷ οὐ κατανοεῖς;

42 Ἢ πῶς δύνασαι λέγειν τῷ ἀδελφῷ σου· Ἀδελφὲ, ἄφες ἐκβάλω τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου, αὐτὸς τὴν ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου δοκὸν οὐ βλέπων; Ὑποκριτὰ, ἔκβαλε πρῶτον τὴν δοκὸν ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου· καὶ τότε διαβλέψεις ἐκβαλεῖν τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου.

43 Οὐ γάρ ἐστι δένδρον καλὸν, ποιοῦν καρπὸν σαπρόν· οὐδὲ δένδρον σαπρὸν, ποιοῦν καρπὸν καλόν.

44 Ἕκαστον γὰρ δένδρον ἐκ τοῦ ἰδίου καρποῦ γινώσκεται· οὐ γὰρ ἐξ ἀκανθῶν συλλέγουσι σῦκα, οὐδὲ ἐκ βάτου τρυγῶσι σταφυλήν·

45 Ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ ἀγαθοῦ θησαυροῦ τῆς καρδίας αὐτοῦ προφέρει τὸ ἀγαθόν· καὶ ὁ πονηρὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ πονηροῦ θησαυροῦ τῆς καρδίας αὐτοῦ προφέρει τὸ πονηρόν· ἐκ γὰρ τοῦ περισσεύματος τῆς καρδίας λαλεῖ τὸ στόμα αὐτοῦ.

46 Τί δέ με καλεῖτε Κύριε, Κύριε· καὶ οὐ ποιεῖτε ἃ λέγω;

47 Πᾶς ὁ ἐρχόμενος πρός με, καὶ ἀκούων

μȣ τῶν λόγων, ϗ ποιῶν αὐτȣ̀ς, ὑποδείξω ὑμῖν τίνι ἐςὶν ὅμοιος.
48 Ὅμοιός ἐςιν ἀνθρώπῳ οἰκοδομοῦντι οἰκίαν, ὃς ἔσκαψε ϗ ἐβάθυνε ϗ ἔθηκε θεμέλιον ἐπὶ τὴν πέτραν· πλημμύρας δὲ γενομένης, προσέρρηξεν ὁ ποταμὸς τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, ϗ ὐκ ἴσχυσε σαλεῦσαι αὐτήν· τεθεμελίωτο γὰρ ἐπὶ τὴν Πέτραν.
49 Ὁ δὲ ἀκȣ́σας ϗ μὴ ποιήσας, ὅμοιός ἐςιν ἀνθρώπῳ οἰκοδομήσαντι οἰκίαν ἐπὶ τὴν γῆν χωρὶς θεμελίȣ· ᾗ προσέρρηξεν ὁ ποταμός· ϗ εὐθέως ἔπεσε, ϗ ἐγένετο τὸ ῥῆγμα τῆς οἰκίας ἐκείνης μέγα.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ζ'. 7.

Πίςιν Κεντυρίωνος ἐν ἑβδόμῳ αὖθις ἀγάσσῃ·
Ἔκτε πυλῶν θανάτȣ χήρας νέκυν ἐξαναβάντα.
Ἐνθάδε πρεσβεύοντα Λόγῳ τὸν Πρόδρομον ὄψει,
Οὗ πόδας ἐξαπένιψε μύροις καὶ δάκρυσι πόρνη.

1 ἘΠεὶ δὲ ἐπλήρωσε πάντα τὰ ῥήματα αὐτȣ̃ εἰς τὰς ἀκοὰς τȣ̃ λαȣ̃, εἰσῆλθεν εἰς Καπερναȣ́μ.
2 Ἑκατοντάρχȣ δέ τινος δȣ̃λος κακῶς ἔχων, ἤμελλε τελευτᾷν, ὃς ἦν αὐτῷ ἔντιμος.
3 Ἀκȣ́σας δὲ περὶ τȣ̃ Ἰησοῦ, ἀπέςειλε πρὸς αὐτὸν πρεσβυτέρȣς τῶν Ἰȣδαίων, ἐρωτῶν αὐτὸν, ὅπως ἐλθὼν διασώσῃ τὸν δȣ̃λον αὐτȣ̃.
4 Οἱ δὲ παραγενόμενοι πρὸς τὸν Ἰησȣ̃ν,



παρεκάλουν αὐτὸν σπουδαίως, λέγοντες, ὅτι
ἄξιός ἐστιν ᾧ παρέξει τοῦτο·
5 Ἀγαπᾷ γὰρ τὸ ἔθνος ἡμῶν, καὶ τὴν
συναγωγὴν αὐτὸς ᾠκοδόμησεν ἡμῖν.
6 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐπορεύετο σὺν αὐτοῖς·
ἤδη δὲ αὐτοῦ οὐ μακρὰν ἀπέχοντος ἀπὸ τῆς
οἰκίας, ἔπεμψε πρὸς αὐτὸν ὁ ἑκατόνταρχος
φίλους, λέγων αὐτῷ· Κύριε, μὴ σκύλλου·
οὐ γάρ εἰμι ἱκανὸς ἵνα ὑπὸ τὴν στέγην μου
εἰσέλθῃς.
7 Διὸ οὐδὲ ἐμαυτὸν ἠξίωσα πρὸς σὲ ἐλ-
θεῖν· ἀλλὰ εἰπὲ λόγῳ, καὶ ἰαθήσεται ὁ παῖς μου.
8 Καὶ γὰρ ἐγὼ ἄνθρωπός εἰμι ὑπὸ ἐξου-
σίαν τασσόμενος, ἔχων ὑπ' ἐμαυτὸν στρατιώ-
τας· καὶ λέγω τούτῳ· Πορεύθητι, καὶ πορεύε-
ται· καὶ ἄλλῳ· Ἔρχου, καὶ ἔρχεται· καὶ τῷ
δούλῳ μου· Ποίησον τοῦτο, καὶ ποιεῖ.
9 Ἀκούσας δὲ ταῦτα ὁ Ἰησοῦς, ἐθαύμα-
σεν αὐτόν· καὶ στραφεὶς, τῷ ἀκολουθοῦντι αὐ-
τῷ ὄχλῳ εἶπε· Λέγω ὑμῖν, οὐδὲ ἐν τῷ
Ἰσραὴλ τοσαύτην πίστιν εὗρον.
10 Καὶ ὑποστρέψαντες οἱ πεμφθέντες εἰς
τὸν οἶκον, εὗρον τὸν ἀσθενοῦντα δοῦλον, ὑγιαί-
νοντα.
11 Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἑξῆς, ἐπορεύετο εἰς
πόλιν καλουμένην Ναΐν· καὶ συνεπορεύοντο αὐ-
τῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἱκανοὶ, καὶ ὄχλος πολύς.
12 Ὡς δὲ ἤγγισε τῇ πύλῃ τῆς πόλεως,
καὶ ἰδοὺ, ἐξεκομίζετο τεθνηκὼς, Υἱὸς μονο-
γενὴς τῇ μητρὶ αὐτοῦ· καὶ αὕτη ἦν χήρα· καὶ
ὄχλος πόλεως ἱκανὸς ἦν σὺν αὐτῇ.
13 Καὶ ἰδὼν αὐτὴν ὁ Κύριος, ἐσπλαγ-
χνίσθη ἐπ' αὐτῇ, καὶ εἶπεν αὐτῇ· Μὴ κλαῖε.
14 Καὶ προσελθὼν ἥψατο τῆς σοροῦ, (οἱ

δὲ βαστάζοντες ἔστησαν,) καὶ εἶπε· Νεανί-
σκε, σοὶ λέγω, ἐγέρθητι·
15 Καὶ ἀνεκάθισεν ὁ νεκρὸς, καὶ ἤρξατο
λαλεῖν· καὶ ἔδωκεν αὐτὸν τῇ Μητρὶ αὐτοῦ.
16 Ἔλαβε δὲ φόβος ἅπαντας, καὶ ἐδό-
ξαζον τὸν Θεὸν, λέγοντες· Ὅτι Προφήτης
μέγας ἐγήγερται ἐν ἡμῖν, καὶ ὅτι ἐπεσκέ-
ψατο ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ.
17 Καὶ ἐξῆλθεν ὁ λόγος οὗτος ἐν ὅλῃ τῇ
Ἰουδαίᾳ περὶ αὐτοῦ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ περιχώρῳ.
18 Καὶ ἀπήγγειλαν Ἰωάννῃ οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ περὶ πάντων τούτων. Καὶ προσκαλεσά-
μενος δύο τινὰς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ὁ Ἰωάννης,
19 Ἔπεμψε πρὸς τὸν Ἰησοῦν, λέγων·
Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἄλλον προσδοκῶμεν;
20 Παραγενόμενοι δὲ πρὸς αὐτὸν οἱ ἄν-
δρες, εἶπον· Ἰωάννης ὁ Βαπτιστὴς ἀπέσταλ-
κεν ἡμᾶς πρὸς σὲ, λέγων· Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμε-
νος, ἢ ἄλλον προσδοκῶμεν;
21 Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ ὥρᾳ ἐθεράπευσε πολ-
λοὺς ἀπὸ νόσων καὶ μαστίγων καὶ Πνευμάτων
πονηρῶν· καὶ τυφλοῖς πολλοῖς ἐχαρίσατο τὸ
βλέπειν.
22 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Πορευθέντες ἀπαγγείλατε Ἰωάννῃ ἃ
εἴδετε καὶ ἠκούσατε· ὅτι τυφλοὶ ἀναβλέπου-
σι, χωλοὶ περιπατοῦσι, λεπροὶ καθαρίζον-
ται, κωφοὶ ἀκούουσι, νεκροὶ ἐγείρονται, πτω-
χοὶ εὐαγγελίζονται.
23 Καὶ μακάριός ἐστιν, ὃς ἐὰν μὴ σκαν-
δαλισθῇ ἐν ἐμοί.
24 Ἀπελθόντων δὲ τῶν ἀγγέλων Ἰωάν-
νου, ἤρξατο λέγειν πρὸς τοὺς ὄχλους περὶ
Ἰωάννου· Τί ἐξεληλύθατε εἰς τὴν ἔρημον
θεά-

θεάσασθαι; κάλαμον ὑπὸ ἀνέμου σαλευόμενον;
25 Ἀλλὰ τί ἐξεληλύθατε ἰδεῖν; ἄν-
θρωπον ἐν μαλακοῖς ἱματίοις ἠμφιεσμένον;
ἰδού, οἱ ἐν ἱματισμῷ ἐνδόξῳ καὶ τρυφῇ ὑπάρ-
χοντες, ἐν τοῖς βασιλείοις εἰσίν.
26 Ἀλλὰ τί ἐξεληλύθατε ἰδεῖν; Προ-
φήτην; ναὶ λέγω ὑμῖν, καὶ περισσότερον
Προφήτου.
27 Οὗτός ἐστι περὶ οὗ γέγραπται· Ἰδού,
ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρὸ προσώ-
που σου, ὃς κατασκευάσει τὴν ὁδόν σου ἔμ-
προσθέν σου.
28 Λέγω γὰρ ὑμῖν, μείζων ἐν γεννη-
τοῖς γυναικῶν Προφήτης Ἰωάννου τοῦ Βαπτι-
στοῦ οὐδείς ἐστιν· ὁ δὲ μικρότερος ἐν τῇ Βασι-
λείᾳ τοῦ Θεοῦ, μείζων αὐτοῦ ἐστι.
29 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀκούσας καὶ οἱ τελῶ-
ναι ἐδικαίωσαν τὸν Θεόν, βαπτισθέντες τὸ
Βάπτισμα Ἰωάννου.
30 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι καὶ οἱ Νομικοὶ τὴν
βουλὴν τοῦ Θεοῦ ἠθέτησαν εἰς ἑαυτούς, μὴ βα-
πτισθέντες ὑπ᾽ αὐτοῦ.
31 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Τίνι οὖν ὁμοιώσω
τοὺς ἀνθρώπους τῆς γενεᾶς ταύτης; καὶ τίνι εἰ-
σὶν ὅμοιοι;
32 Ὅμοιοί εἰσι παιδίοις τοῖς ἐν ἀγορᾷ
καθημένοις, καὶ προσφωνοῦσιν ἀλλήλοις, καὶ λέ-
γουσιν· Ηὐλήσαμεν ὑμῖν, καὶ οὐκ ὠρχήσασθε·
ἐθρηνήσαμεν ὑμῖν, καὶ οὐκ ἐκλαύσατε.
33 Ἐλήλυθε γὰρ Ἰωάννης ὁ Βαπτιστὴς
μήτε ἄρτον ἐσθίων, μήτε οἶνον πίνων· καὶ
λέγετε· Δαιμόνιον ἔχει.
34 Ἐλήλυθεν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐσθίων
καὶ πίνων· καὶ λέγετε· Ἰδού, ἄνθρωπος φάγος

καὶ οἰνοπότης, τελωνῶν φίλος καὶ ἁμαρτωλῶν.

35 Καὶ ἐδικαιώθη ἡ σοφία ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῆς πάντων.

36 Ἠρώτα δέ τις αὐτὸν τῶν Φαρισαίων ἵνα φάγῃ μετ' αὐτοῦ· καὶ εἰσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ Φαρισαίου, ἀνεκλίθη.

37 Καὶ ἰδοὺ, γυνὴ ἐν τῇ πόλει, ἥτις ἦν ἁμαρτωλὸς, ἐπιγνοῦσα ὅτι ἀνάκειται ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ Φαρισαίου, κομίσασα ἀλάβαστρον μύρου.

38 Καὶ στᾶσα παρὰ τοὺς πόδας αὐτοῦ ὀπίσω, κλαίουσα, ἤρξατο βρέχειν τοὺς πόδας αὐτοῦ τοῖς δάκρυσι· καὶ ταῖς θριξὶ τῆς κεφαλῆς αὐτῆς ἐξέμασσε, καὶ κατεφίλει τοὺς πόδας αὐτοῦ, καὶ ἤλειφε τῷ μύρῳ.

39 Ἰδὼν δὲ ὁ Φαρισαῖος ὁ καλέσας αὐτὸν, εἶπεν ἐν ἑαυτῷ, λέγων· Οὗτος, εἰ ἦν Προφήτης, ἐγίνωσκεν ἂν τίς καὶ ποταπὴ ἡ γυνὴ, ἥτις ἅπτεται αὐτοῦ, ὅτι ἁμαρτωλός ἐστι.

40 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς αὐτόν· Σίμων, ἔχω σοί τι εἰπεῖν. Ὁ δέ φησι· Διδάσκαλε, εἰπέ.

41 Δύο χρεωφειλέται ἦσαν δανειστῇ τινι· ὁ εἷς ὤφειλε δηνάρια πεντακόσια, ὁ δὲ ἕτερος πεντήκοντα.

42 Μὴ ἐχόντων δὲ αὐτῶν ἀποδοῦναι, ἀμφοτέροις ἐχαρίσατο· Τίς οὖν αὐτῶν, εἰπὲ, πλεῖον αὐτὸν ἀγαπήσει;

43 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Σίμων, εἶπεν· Ὑπολαμβάνω ὅτι ᾧ τὸ πλεῖον ἐχαρίσατο. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ὀρθῶς ἔκρινας.

44 Καὶ στραφεὶς πρὸς τὴν γυναῖκα, τῷ Σίμωνι ἔφη· Βλέπεις ταύτην τὴν γυναῖκα; εἰσῆλθόν σου εἰς τὴν οἰκίαν, ὕδωρ ἐπὶ τοὺς πό-

πόδας μου οὐκ ἔδωκας· αὕτη δὲ τοῖς δάκρυσιν ἔβρεξέ μου τοὺς πόδας, καὶ ταῖς θριξὶ τῆς κεφαλῆς αὐτῆς ἐξέμαξε.

45 Φίλημά μοι οὐκ ἔδωκας· αὕτη δὲ ἀφ' ἧς εἰσῆλθον, οὐ διέλιπε καταφιλοῦσά μου τοὺς πόδας.

46 Ἐλαίῳ τὴν κεφαλήν μου οὐκ ἤλειψας· αὕτη δὲ μύρῳ ἤλειψέ μου τοὺς πόδας.

47 Οὗ χάριν, λέγω σοι, ἀφέωνται αἱ ἁμαρτίαι αὐτῆς αἱ πολλαί, ὅτι ἠγάπησε πολύ· ᾧ δὲ ὀλίγον ἀφίεται, ὀλίγον ἀγαπᾷ.

48 Εἶπε δὲ αὐτῇ· Ἀφέωνταί σου αἱ ἁμαρτίαι.

49 Καὶ ἤρξαντο οἱ συνανακείμενοι λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Τίς οὗτός ἐστιν, ὃς καὶ ἁμαρτίας ἀφίησιν;

50 Εἶπε δὲ πρὸς τὴν γυναῖκα· Ἡ πίστις σου σέσωκέ σε· πορεύου εἰς εἰρήνην.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

Σύγκεισιν ὀγδοάτῳ σπορέως μάθε θειοσεβῆ δὲ
Μητέρος εἶναι μᾶλλον ὁμαίμονα. κύματα λίμνης
Εὐθὺ γαληνιάσαντα, καὶ ἀντιδίκων λεγεῶνα·
Αἱμόρρουν θρασύπιστον· ὁμοῦ τε κόρην Ἰαείρου.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ καθεξῆς, καὶ αὐτὸς διώδευε κατὰ πόλιν καὶ κώμην, κηρύσσων καὶ εὐαγγελιζόμενος τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ· καὶ οἱ δώδεκα σὺν αὐτῷ.

2 Καὶ γυναῖκές τινες, αἳ ἦσαν τεθεραπευμέναι ἀπὸ Πνευμάτων πονηρῶν καὶ ἀσθενειῶν.

Μαρία ἡ καλουμένη Μαγδαληνὴ, ἀφ' ἧς
δαιμόνια ἑπτὰ ἐξεληλύθει.
3 Καὶ Ἰωάννα γυνὴ Χουζᾶ ἐπιτρόπου Ἡ-
ρώδου, καὶ Σουσάννα, καὶ ἕτεραι πολλαὶ, αἵ-
τινες διηκόνουν αὐτῷ ἀπὸ τῶν ὑπαρχόντων
αὐταῖς.
4 Συνιόντος δὲ ὄχλου πολλοῦ, καὶ τῶν κα-
τὰ πόλιν ἐπιπορευομένων πρὸς αὐτὸν, εἶπε
διὰ παραβολῆς·
5 Ἐξῆλθεν ὁ σπείρων τοῦ σπεῖραι τὸν σπό-
ρον αὐτοῦ· καὶ ἐν τῷ σπείρειν αὐτὸν, ὃ μὲν
ἔπεσε παρὰ τὴν ὁδὸν, καὶ κατεπατήθη, καὶ
τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατέφαγεν αὐτό.
6 Καὶ ἕτερον ἔπεσεν ἐπὶ τὴν πέτραν, καὶ
φυὲν ἐξηράνθη, διὰ τὸ μὴ ἔχειν ἰκμάδα·
7 Καὶ ἕτερον ἔπεσεν ἐν μέσῳ τῶν ἀκανθῶν, καὶ
συμφυεῖσαι αἱ ἄκανθαι ἀπέπνιξαν αὐτό·
8 Καὶ ἕτερον ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν τὴν ἀ-
γαθὴν, καὶ φυὲν ἐποίησε καρπὸν ἑκατοντα-
πλασίονα. Ταῦτα λέγων ἐφώνει· Ὁ ἔχων
ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
9 Ἐπηρώτων δὲ αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ,
λέγοντες, τίς εἴη ἡ παραβολὴ αὕτη.
10 Ὁ δὲ εἶπεν· Ὑμῖν δέδοται γνῶναι
τὰ μυστήρια τῆς Βασιλείας τοῦ Θεοῦ· τοῖς δὲ
λοιποῖς ἐν παραβολαῖς, ἵνα βλέποντες μὴ
βλέπωσι, καὶ ἀκούοντες μὴ συνιῶσιν.
11 Ἔστι δὲ αὕτη ἡ παραβολή· Ὁ σπό-
ρος, ἐστὶν ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ·
12 Οἱ δὲ παρὰ τὴν ὁδὸν, εἰσὶν οἱ ἀ-
κούοντες· εἶτα ἔρχεται ὁ διάβολος, καὶ αἴρει
τὸν λόγον ἀπὸ τῆς καρδίας αὐτῶν, ἵνα μὴ
πιστεύσαντες σωθῶσιν.
13 Οἱ δὲ ἐπὶ τῆς πέτρας, οἳ ὅταν ἀκού-

σωσι, μετὰ χαρᾶς δέχονται τὸν λόγον· καὶ
οὗτοι ῥίζαν οὐκ ἔχουσιν, οἳ πρὸς καιρὸν πιστεύου-
σι, καὶ ἐν καιρῷ πειρασμοῦ ἀφίστανται.
14 Τὸ δὲ εἰς τὰς ἀκάνθας πεσὸν, οὗτοί
εἰσιν οἱ ἀκούσαντες, καὶ ὑπὸ μεριμνῶν καὶ πλού-
του καὶ ἡδονῶν τοῦ βίου πορευόμενοι συμπνί-
γονται, καὶ οὐ τελεσφοροῦσι.
15 Τὸ δὲ ἐν τῇ καλῇ γῇ, οὗτοί εἰσιν οἵ-
τινες ἐν καρδίᾳ καλῇ καὶ ἀγαθῇ ἀκούσαντες
τὸν λόγον, κατέχουσι, καὶ καρποφοροῦσιν ἐν
ὑπομονῇ.
16 Οὐδεὶς δὲ λύχνον ἅψας, καλύπτει
αὐτὸν σκεύει, ἢ ὑποκάτω κλίνης τίθησιν·
ἀλλ' ἐπὶ λυχνίας ἐπιτίθησιν, ἵνα οἱ εἰσπο-
ρευόμενοι βλέπωσι τὸ φῶς.
17 Οὐ γάρ ἐστι κρυπτὸν, ὃ οὐ φανερὸν γενή-
σεται· οὐδὲ ἀπόκρυφον ὃ οὐ γνωσθήσεται, καὶ
εἰς φανερὸν ἔλθῃ.
18 Βλέπετε οὖν πῶς ἀκούετε· ὃς γὰρ ἂν
ἔχῃ, δοθήσεται αὐτῷ· καὶ ὃς ἂν μὴ ἔχῃ, καὶ
ὃ δοκεῖ ἔχειν, ἀρθήσεται ἀπ' αὐτοῦ.
19 Παρεγένοντο δὲ πρὸς αὐτὸν ἡ Μήτηρ
καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἠδύναντο συντυ-
χεῖν αὐτῷ διὰ τὸν ὄχλον.
20 Καὶ ἀπηγγέλη αὐτῷ, λεγόντων· Ἡ
Μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἑστήκασιν ἔξω,
ἰδεῖν σε θέλοντες.
21 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε πρὸς αὐτούς·
Μήτηρ μου καὶ ἀδελφοί μου, οὗτοί εἰσιν οἱ τὸν
λόγον τοῦ Θεοῦ ἀκούοντες, καὶ ποιοῦντες αὐτόν.
22 Καὶ ἐγένετο ἐν μιᾷ τῶν ἡμερῶν, καὶ αὐ-
τὸς ἐνέβη εἰς πλοῖον, καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Διέλθωμεν εἰς τὸ πέ-
ραν τῆς λίμνης. Καὶ ἀνήχθησαν.
23 Πλεόν-

23 Πλεόντων δὲ αὐτῶν ἀφύπνωσε· καὶ κατέβη λαῖλαψ ἀνέμου εἰς τὴν λίμνην· καὶ συνεπληροῦντο, καὶ ἐκινδύνευον.

24 Προσελθόντες δὲ διήγειραν αὐτὸν, λέγοντες· Ἐπιστάτα ἐπιστάτα, ἀπολλύμεθα. Ὁ δὲ ἐγερθεὶς ἐπετίμησε τῷ ἀνέμῳ καὶ τῷ κλύδωνι τοῦ ὕδατος· καὶ ἐπαύσαντο, καὶ ἐγένετο γαλήνη.

25 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ποῦ ἐστιν ἡ πίστις ὑμῶν; Φοβηθέντες δὲ ἐθαύμασαν, λέγοντες πρὸς ἀλλήλους· Τίς ἄρα οὗτός ἐστιν, ὅτι καὶ τοῖς ἀνέμοις ἐπιτάσσει καὶ τῷ ὕδατι, καὶ ὑπακούουσιν αὐτῷ;

26 Καὶ κατέπλευσαν εἰς τὴν χώραν τῶν Γαδαρηνῶν, ἥτις ἐστὶν ἀντιπέραν τῆς Γαλιλαίας.

27 Ἐξελθόντι δὲ αὐτῷ ἐπὶ τὴν γῆν, ὑπήντησεν αὐτῷ ἀνήρ τις ἐκ τῆς πόλεως, ὃς εἶχε δαιμόνια ἐκ χρόνων ἱκανῶν, καὶ ἱμάτιον οὐκ ἐνεδιδύσκετο, καὶ ἐν οἰκίᾳ οὐκ ἔμενεν, ἀλλ' ἐν τοῖς μνήμασιν.

28 Ἰδὼν δὲ τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἀνακράξας, προσέπεσεν αὐτῷ, καὶ φωνῇ μεγάλῃ εἶπε· Τί ἐμοὶ καὶ σοὶ, Ἰησοῦ, Υἱὲ τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑψίστου; δέομαί σου, μή με βασανίσῃς.

29 Παρήγγελλε γὰρ τῷ Πνεύματι τῷ ἀκαθάρτῳ ἐξελθεῖν ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου· πολλοῖς γὰρ χρόνοις συνηρπάκει αὐτὸν, καὶ ἐδεσμεῖτο ἁλύσεσι καὶ πέδαις φυλασσόμενος· καὶ διαρρήσσων τὰ δεσμὰ, ἠλαύνετο ὑπὸ τοῦ δαίμονος εἰς τὰς ἐρήμους.

30 Ἐπηρώτησε δὲ αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Τί σοι ἐστὶν ὄνομα; Ὁ δὲ εἶπε· Λεγεών· ὅτι δαιμόνια πολλὰ εἰσῆλθεν εἰς αὐτόν.



31 Καὶ παρεκάλει αὐτὸν ἵνα μὴ ἐπιτάξῃ αὐτοῖς εἰς τὴν ἄβυσσον ἀπελθεῖν.

32 Ἦν δὲ ἐκεῖ ἀγέλη χοίρων ἱκανῶν βοσκομένων ἐν τῷ ὄρει· καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα ἐπιτρέψῃ αὐτοῖς εἰς ἐκείνους εἰσελθεῖν. Καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς.

33 Ἐξελθόντα δὲ τὰ δαιμόνια ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, εἰσῆλθεν εἰς τοὺς χοίρους· καὶ ὥρμησεν ἡ ἀγέλη κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν λίμνην· καὶ ἀπεπνίγη.

34 Ἰδόντες δὲ οἱ βόσκοντες τὸ γεγενημένον, ἔφυγον· καὶ ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν εἰς τὴν πόλιν καὶ εἰς τοὺς ἀγρούς.

35 Ἐξῆλθον δὲ ἰδεῖν τὸ γεγονός· καὶ ἦλθον πρὸς τὸν Ἰησοῦν, καὶ εὗρον καθήμενον τὸν ἄνθρωπον, ἀφ᾽ οὗ τὰ δαιμόνια ἐξεληλύθει, ἱματισμένον καὶ σωφρονοῦντα παρὰ τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ· καὶ ἐφοβήθησαν.

36 Ἀπήγγειλαν δὲ αὐτοῖς καὶ οἱ ἰδόντες, πῶς ἐσώθη ὁ δαιμονισθείς.

37 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν ἅπαν τὸ πλῆθος τῆς περιχώρου τῶν Γαδαρηνῶν, ἀπελθεῖν ἀπ᾽ αὐτῶν, ὅτι φόβῳ μεγάλῳ συνείχοντο· αὐτὸς δὲ ἐμβὰς εἰς τὸ πλοῖον, ὑπέστρεψεν.

38 Ἐδέετο δὲ αὐτοῦ ὁ ἀνὴρ ἀφ᾽ οὗ ἐξεληλύθει τὰ δαιμόνια, εἶναι σὺν αὐτῷ· ἀπέλυσε δὲ αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λέγων·

39 Ὑπόστρεφε εἰς τὸν οἶκόν σου, καὶ διηγοῦ ὅσα ἐποίησέ σοι ὁ Θεός. Καὶ ἀπῆλθε, καθ᾽ ὅλην τὴν πόλιν κηρύσσων ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς.

40 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ ὑποστρέψαι τὸν Ἰησοῦν, ἀπεδέξατο αὐτὸν ὁ ὄχλος· ἦσαν γὰρ πάντες προσδοκῶντες αὐτόν.

41 Καὶ

31 Καὶ παρεκάλει αὐτὸν ἵνα μὴ ἐπιτάξῃ αὐτοῖς εἰς τὴν ἄβυσσον ἀπελθεῖν.

32 Ἦν δὲ ἐκεῖ ἀγέλη χοίρων ἱκανῶν βοσκομένων ἐν τῷ ὄρει· καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα ἐπιτρέψῃ αὐτοῖς εἰς ἐκείνους εἰσελθεῖν. Καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς.

33 Ἐξελθόντα δὲ τὰ δαιμόνια ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, εἰσῆλθεν εἰς τοὺς χοίρους· καὶ ὥρμησεν ἡ ἀγέλη κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν λίμνην· καὶ ἀπεπνίγη.

34 Ἰδόντες δὲ οἱ βόσκοντες τὸ γεγενημένον, ἔφυγον· καὶ ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν εἰς τὴν πόλιν καὶ εἰς τοὺς ἀγρούς.

35 Ἐξῆλθον δὲ ἰδεῖν τὸ γεγονός· καὶ ἦλθον πρὸς τὸν Ἰησοῦν, καὶ εὗρον καθήμενον τὸν ἄνθρωπον, ἀφ' οὗ τὰ δαιμόνια ἐξεληλύθει, ἱματισμένον καὶ σωφρονοῦντα παρὰ τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ· καὶ ἐφοβήθησαν.

36 Ἀπήγγειλαν δὲ αὐτοῖς καὶ οἱ ἰδόντες, πῶς ἐσώθη ὁ δαιμονισθείς.

37 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν ἅπαν τὸ πλῆθος τῆς περιχώρου τῶν Γαδαρηνῶν, ἀπελθεῖν ἀπ' αὐτῶν, ὅτι φόβῳ μεγάλῳ συνείχοντο· αὐτὸς δὲ ἐμβὰς εἰς τὸ πλοῖον, ὑπέστρεψεν.

38 Ἐδέετο δὲ αὐτοῦ ὁ ἀνὴρ ἀφ' οὗ ἐξεληλύθει τὰ δαιμόνια, εἶναι σὺν αὐτῷ· ἀπέλυσε δὲ αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λέγων·

39 Ὑπόστρεφε εἰς τὸν οἶκόν σου, καὶ διηγοῦ ὅσα ἐποίησέ σοι ὁ Θεός. Καὶ ἀπῆλθε, καθ' ὅλην τὴν πόλιν κηρύσσων ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς.

40 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ ὑποστρέψαι τὸν Ἰησοῦν, ἀπεδέξατο αὐτὸν ὁ ὄχλος· ἦσαν γὰρ πάντες προσδοκῶντες αὐτόν.

41 Καὶ

41 Καὶ ἰδοὺ, ἦλθεν ἀνὴρ ᾧ ὄνομα Ἰάει-
ρος, καὶ αὐτὸς ἄρχων τῆς συναγωγῆς ὑπῆρχε·
καὶ πεσὼν παρὰ τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ, παρε-
κάλει αὐτὸν εἰσελθεῖν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ.

42 Ὅτι θυγάτηρ μονογενὴς ἦν αὐτῷ ὡς
ἐτῶν δώδεκα, καὶ αὕτη ἀπέθνησκεν. (Ἐν δὲ τῷ
ὑπάγειν αὐτὸν οἱ ὄχλοι συνέπνιγον αὐτόν.)

43 Καὶ γυνὴ οὖσα ἐν ῥύσει αἵματος ἀπὸ
ἐτῶν δώδεκα, ἥτις εἰς ἰατροὺς προσαναλώσα-
σα ὅλον τὸν βίον, οὐκ ἴσχυσεν ὑπ' οὐδενὸς θε-
ραπευθῆναι.

44 Προσελθοῦσα ὄπισθεν, ἥψατο τοῦ κρα-
σπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· καὶ παραχρῆμα ἔστη
ἡ ῥύσις τοῦ αἵματος αὐτῆς.

45 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Τίς ὁ ἁψάμε-
νός μου; Ἀρνουμένων δὲ πάντων, εἶπεν ὁ Πέ-
τρος καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ· Ἐπιστάτα, οἱ ὄχλοι
συνέχουσί σε καὶ ἀποθλίβουσι, καὶ λέγεις:
Τίς ὁ ἁψάμενός μου;

46 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἥψατό μου τίς;
ἐγὼ γὰρ ἔγνων δύναμιν ἐξελθοῦσαν ἀπ' ἐμοῦ.

47 Ἰδοῦσα δὲ ἡ γυνὴ ὅτι οὐκ ἔλαθε, τρέ-
μουσα ἦλθε, καὶ προσπεσοῦσα αὐτῷ, δι' ἣν αἰ-
τίαν ἥψατο αὐτοῦ, ἀπήγγειλεν αὐτῷ ἐνώπιον
παντὸς τοῦ λαοῦ, καὶ ὡς ἰάθη παραχρῆμα.

48 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· Θάρσει θύγατερ,
ἡ πίστις σου σέσωκέ σε· πορεύου εἰς εἰρήνην.

49 Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος, ἔρχεταί τις πα-
ρὰ τοῦ ἀρχισυναγώγου, λέγων αὐτῷ· Ὅτι
τέθνηκεν ἡ θυγάτηρ σου· μὴ σκύλλε τὸν δι-
δάσκαλον.

50 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀκούσας ἀπεκρίθη αὐ-
τῷ, λέγων· Μὴ φοβοῦ· μόνον πίστευε, καὶ
σωθήσεται.

51 Εἰ-

51 Εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, οὐκ ἀφῆ-
κεν εἰσελθεῖν οὐδένα, εἰ μὴ Πέτρον ϗ Ἰά-
κωβον ϗ Ἰωάννην, ϗ τὸν Πατέρα τῆς παι-
δὸς ϗ τὴν Μητέρα.
52 Ἔκλαιον δὲ πάντες ϗ ἐκόπτοντο αὐ-
τήν. Ὁ δὲ εἶπε· Μὴ κλαίετε· οὐκ ἀπέ-
θανεν, ἀλλὰ καθεύδει.
53 Καὶ κατεγέλων αὐτοῦ, εἰδότες ὅτι
ἀπέθανεν.
54 Αὐτὸς δὲ ἐκβαλὼν ἔξω πάντας, ϗ
κρατήσας τῆς χειρὸς αὐτῆς, ἐφώνησε, λέ-
γων· Ἡ παῖς, ἐγείρου.
55 Καὶ ἐπέστρεψε τὸ Πνεῦμα αὐτῆς, ϗ
ἀνέστη παραχρῆμα· ϗ διέταξεν αὐτῇ δοθῆ-
ναι φαγεῖν.
56 Καὶ ἐξέστησαν οἱ γονεῖς αὐτῆς· ὁ δὲ
παρήγγειλεν αὐτοῖς μηδενὶ εἰπεῖν τὸ γεγονός.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Θ'. 9.

Πεμπομένους ἐνάτῳ δυοκαίδεκα δέρκε θεόπτας,
Ὧν φάτις ἐξεπέραττεν ὑπὲρ Προδρόμοιο φονῆα.
Πεντάκις ἢ χιλίους ἐκορέσσατο πέντε δι' ἄρτων.
Καὶ Πέτρος ὡμολόγησε, καὶ ἄμβροτον εἶδος ἀμείφθη.
Ῥύσθη δ' δαιμονίδεσσι κατάσχετος. ἐν δὲ βροτοῖσι
Μείζων ὁ βρέφει ἶσος, ὃ καὶ χάειν ἔχε Θεοῖο.
Βροντογόνων δ' ἀπέειπε μέγαν κότον εἰς Σαμαρείτας.
Φοιτητῶν τε Λόγοιο τίς ὁ τρόπος εἶδε καὶ ἦθος.

1 ΣΥγκαλεσάμενος δὲ τοὺς δώδεκα
μαθητὰς αὐτοῦ, ἔδωκεν αὐτοῖς δύ-
ναμιν καὶ ἐξουσίαν ἐπὶ πάντα τὰ δαιμόνια,
καὶ νόσους θεραπεύειν.
2 Καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς κηρύσσειν τὴν Βα-
σιλείαν τοῦ Θεοῦ, καὶ ἰᾶσθαι τοὺς ἀσθενοῦντας.
3 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Μηδὲν αἴρετε
εἰς τὴν ὁδὸν, μήτε ῥάβδους, μήτε πήραν,
μήτε ἄρτον, μήτε ἀργύριον· μήτε ἀνὰ δύο
χιτῶνας ἔχειν.
4 Καὶ εἰς ἣν ἂν οἰκίαν εἰσέλθητε, ἐκεῖ
μένετε, καὶ ἐκεῖθεν ἐξέρχεσθε.
5 Καὶ ὅσοι ἂν μὴ δέξωνται ὑμᾶς, ἐξερ-
χόμενοι ἀπὸ τῆς πόλεως ἐκείνης, καὶ τὸν κο-
νιορτὸν ἀπὸ τῶν ποδῶν ὑμῶν ἀποτινάξατε,
εἰς μαρτύριον ἐπ' αὐτούς.

6 Ἐξερ-

6 Ἐξερχόμενοι δὲ διήρχοντο κατὰ τὰς κώμας, εὐαγγελιζόμενοι καὶ θεραπεύοντες πανταχοῦ.

7 Ἤκουσε δὲ Ἡρώδης ὁ τετράρχης τὰ γενόμενα ὑπ' αὐτοῦ πάντα· καὶ διηπόρει, διὰ τὸ λέγεσθαι ὑπό τινων, ὅτι Ἰωάννης ἐγήγερται ἐκ νεκρῶν.

8 Ὑπό τινων δὲ, ὅτι Ἡλίας ἐφάνη· ἄλλων δὲ, ὅτι Προφήτης εἷς τῶν ἀρχαίων ἀνέστη.

9 Καὶ εἶπεν ὁ Ἡρώδης· Ἰωάννην ἐγὼ ἀπεκεφάλισα· τίς δέ ἐστιν οὗτος περὶ οὗ ἐγὼ ἀκούω τοιαῦτα; Καὶ ἐζήτει ἰδεῖν αὐτόν.

10 Καὶ ὑποστρέψαντες οἱ ἀπόστολοι διηγήσαντο αὐτῷ ὅσα ἐποίησαν· καὶ παραλαβὼν αὐτοὺς, ὑπεχώρησε κατ' ἰδίαν εἰς τόπον ἔρημον πόλεως καλουμένης Βηθσαϊδά.

11 Οἱ δὲ ὄχλοι γνόντες, ἠκολούθησαν αὐτῷ· καὶ δεξάμενος αὐτοὺς, ἐλάλει αὐτοῖς περὶ τῆς Βασιλείας τοῦ Θεοῦ, καὶ τοὺς χρείαν ἔχοντας θεραπείας ἰᾶτο.

12 Ἡ δὲ ἡμέρα ἤρξατο κλίνειν· προσελθόντες δὲ οἱ δώδεκα, εἶπον αὐτῷ· Ἀπόλυσον τὸν ὄχλον, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κύκλῳ κώμας καὶ τοὺς ἀγροὺς, καταλύσωσι, καὶ εὕρωσιν ἐπισιτισμόν· ὅτι ὧδε ἐν ἐρήμῳ τόπῳ ἐσμέν.

13 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς· Δότε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν. Οἱ δὲ εἶπον· Οὐκ εἰσὶν ἡμῖν πλεῖον ἢ πέντε ἄρτοι καὶ δύο ἰχθύες, εἰ μήτι πορευθέντες ἡμεῖς ἀγοράσωμεν εἰς πάντα τὸν λαὸν τοῦτον βρώματα.

14 Ἦσαν γὰρ ὡσεὶ ἄνδρες πεντακισχίλιοι· εἶπε δὲ πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ· Κατακλίνατε αὐτοὺς κλισίας ἀνὰ πεντήκοντα.

15 Καὶ ἐποίησαν οὕτω, ϗ ἀνέκλιναν ἅ-
παντας.
16 Λαβὼν δὲ τοὺς πέντε ἄρτους ϗ τοὺς δύο
ἰχθύας, ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν, εὐλόγη-
σεν αὐτούς· καὶ κατέκλασε, ϗ ἐδίδου τοῖς
μαθηταῖς, παρατιθέναι τῷ ὄχλῳ.
17 Καὶ ἔφαγον, ϗ ἐχορτάσθησαν πάντες·
ϗ ἤρθη τὸ περισσεῦσαν αὐτοῖς κλασμάτων
κόφινοι δώδεκα.
18 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν προ-
σευχόμενον καταμόνας, συνῆσαν αὐτῷ οἱ
μαθηταί· καὶ ἐπηρώτησεν αὐτοὺς, λέγων·
Τίνα με λέγουσιν οἱ ὄχλοι εἶναι;
19 Οἱ δὲ ἀποκριθέντες, εἶπον· Ἰωάν-
νην τὸν Βαπτιστήν· ἄλλοι δὲ Ἠλίαν· ἄλλοι
δὲ, ὅτι Προφήτης τὶς τῶν ἀρχαίων ἀνέστη.
20 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ὑμεῖς δὲ τίνα με
λέγετε εἶναι; Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος,
εἶπε· Τὸν Χριστὸν τοῦ Θεοῦ.
21 Ὁ δὲ ἐπιτιμήσας αὐτοῖς, παρήγγει-
λε μηδενὶ εἰπεῖν τοῦτο,
22 Εἰπών· Ὅτι δεῖ τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώ-
που πολλὰ παθεῖν, ϗ ἀποδοκιμασθῆναι ἀ-
πὸ τῶν Πρεσβυτέρων ϗ Ἀρχιερέων ϗ Γραμ-
ματέων, ϗ ἀποκτανθῆναι, ϗ τῇ τρίτῃ ἡ-
μέρᾳ ἐγερθῆναι.
23 Ἔλεγε δὲ πρὸς πάντας· Εἴ τις θέ-
λει ὀπίσω μου ἐλθεῖν, ἀπαρνησάσθω ἑαυ-
τὸν, ϗ ἀράτω τὸν Σταυρὸν αὐτοῦ καθ᾽ ἡμέ-
ραν, ϗ ἀκολουθείτω μοι.
24 Ὃς γὰρ ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ
σῶσαι, ἀπολέσει αὐτήν· ὃς δ᾽ ἂν ἀπο-
λέσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἕνεκεν ἐμοῦ, οὗτος
σώσει αὐτήν.

25 Τί

25 Τί γὰρ ὠφελεῖται ἄνθρωπος κερδή-
σας τὸν Κόσμον ὅλον, ἑαυτὸν δὲ ἀπολέ-
σας, ἢ ζημιωθείς;
26 Ὃς γὰρ ἂν ἐπαισχυνθῇ με ϗ τοὺς ἐμοὺς
λόγους, τοῦτον ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπαισχυν-
θήσεται, ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ ϗ τοῦ
Πατρὸς, ϗ τῶν ἁγίων ἀγγέλων.
27 Λέγω δὲ ὑμῖν ἀληθῶς, εἰσί τινες
τῶν ὧδε ἑστηκότων, οἳ οὐ μὴ γεύσονται θανά-
του, ἕως ἂν ἴδωσι τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.
28 Ἐγένετο δὲ μετὰ τοὺς λόγους τούτους ὡ-
σεὶ ἡμέραι ὀκτὼ, ϗ παραλαβὼν τὸν Πέτρον
ϗ Ἰωάννην ϗ Ἰάκωβον, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος
προσεύξασθαι.
29 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ προσεύχεσθαι αὐτὸν,
τὸ εἶδος τοῦ προσώπου αὐτοῦ ἕτερον, ϗ ὁ ἱμα-
τισμὸς αὐτοῦ λευκὸς ἐξαστράπτων.
30 Καὶ ἰδοὺ, ἄνδρες δύο συνελάλουν αὐ-
τῷ, οἵτινες ἦσαν Μωσῆς ϗ Ἠλίας.
31 Οἳ ὀφθέντες ἐν δόξῃ, ἔλεγον τὴν ἔ-
ξοδον αὐτοῦ, ἣν ἔμελλε πληροῦν ἐν Ἱερουσαλήμ.
32 Ὁ δὲ Πέτρος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ ἦσαν
βεβαρημένοι ὕπνῳ· διαγρηγορήσαντες δὲ εἶ-
δον τὴν δόξαν αὐτοῦ, ϗ τοὺς δύο ἄνδρας τοὺς
συνεστῶτας αὐτῷ.
33 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ διαχωρίζεσθαι αὐ-
τοὺς ἀπ᾽ αὐτοῦ, εἶπεν ὁ Πέτρος πρὸς τὸν Ἰη-
σοῦν· Ἐπιστάτα, καλόν ἐστιν ἡμᾶς ὧδε εἶ-
ναι· ϗ ποιήσωμεν σκηνὰς τρεῖς, μίαν σοι,
καὶ Μωσεῖ μίαν, καὶ μίαν Ἠλίᾳ· μὴ εἰ-
δὼς ὃ λέγει.
34 Ταῦτα δὲ αὐτοῦ λέγοντος, ἐγένετο νε-
φέλη, ϗ ἐπεσκίασεν αὐτούς· ἐφοβήθησαν δὲ
ἐν τῷ ἐκείνους εἰσελθεῖν εἰς τὴν νεφέλην.

35 Καὶ

35 Καὶ φωνὴ ἐγένετο ἐκ τῆς νεφέλης, λέ-
γουσα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱός μου ὁ ἀγαπητὸς,
αὐτοῦ ἀκούετε.

36 Καὶ ἐν τῷ γενέσθαι τὴν φωνὴν, εὑρέ-
θη ὁ Ἰησοῦς μόνος· καὶ αὐτοὶ ἐσίγησαν, καὶ
οὐδενὶ ἀπήγγειλαν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις
οὐδὲν ὧν ἑωράκασιν.

37 Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἑξῆς ἡμέρᾳ, κα-
τελθόντων αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους, συνήντησεν
αὐτῷ ὄχλος πολύς.

38 Καὶ ἰδοὺ, ἀνὴρ ἀπὸ τοῦ ὄχλου ἀνε-
βόησε, λέγων· Διδάσκαλε, δέομαί σου,
ἐπίβλεψον ἐπὶ τὸν Υἱόν μου, ὅτι μονογενής
ἐστί μοι.

39 Καὶ ἰδοὺ, Πνεῦμα λαμβάνει αὐτὸν,
καὶ ἐξαίφνης κράζει, καὶ σπαράσσει αὐτὸν μετὰ
ἀφροῦ, καὶ μόγις ἀποχωρεῖ ἀπ' αὐτοῦ, συν-
τρίβον αὐτόν.

40 Καὶ ἐδεήθην τῶν μαθητῶν σου ἵνα ἐκ-
βάλλωσιν αὐτὸ, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν.

41 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ὦ
γενεὰ ἄπιστος καὶ διεστραμμένη, ἕως πότε ἔσο-
μαι πρὸς ὑμᾶς, καὶ ἀνέξομαι ὑμῶν; Προ-
σάγαγε ὧδε τὸν Υἱόν σου.

42 Ἔτι δὲ προσερχομένου αὐτοῦ, ἔρρηξεν
αὐτὸν τὸ δαιμόνιον, καὶ συνεσπάραξεν· ἐπε-
τίμησε δὲ ὁ Ἰησοῦς τῷ Πνεύματι τῷ ἀκα-
θάρτῳ, καὶ ἰάσατο τὸν παῖδα, καὶ ἀπέδωκεν
αὐτὸν τῷ Πατρὶ αὐτοῦ.

43 Ἐξεπλήσσοντο δὲ πάντες ἐπὶ τῇ με-
γαλειότητι τοῦ Θεοῦ. πάντων δὲ θαυμαζόν-
των ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, εἶπε
πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ·

44 Θέσθε ὑμεῖς εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν τοὺς λό-
γους

γους τούτους· ὁ γὰρ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου μέλλει παραδίδοσθαι εἰς χεῖρας ἀνθρώπων.

45 Οἱ δὲ ἠγνόουν τὸ ῥῆμα τοῦτο, καὶ ἦν παρακεκαλυμμένον ἀπ' αὐτῶν, ἵνα μὴ αἴσθωνται αὐτό· καὶ ἐφοβοῦντο ἐρωτῆσαι αὐτὸν περὶ τοῦ ῥήματος τούτου.

46 Εἰσῆλθε δὲ διαλογισμὸς ἐν αὐτοῖς, τὸ τίς ἂν εἴη μείζων αὐτῶν.

47 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἰδὼν τὸν διαλογισμὸν τῆς καρδίας αὐτῶν, ἐπιλαβόμενος παιδίου, ἔστησεν αὐτὸ παρ' ἑαυτῷ.

48 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὃς ἐὰν δέξηται τοῦτο τὸ παιδίον ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμὲ δέχεται· καὶ ὃς ἐὰν ἐμὲ δέξηται, δέχεται τὸν ἀποστείλαντά με· ὁ γὰρ μικρότερος ἐν πᾶσιν ὑμῖν ὑπάρχων, οὗτος ἔσται μέγας.

49 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰωάννης, εἶπεν· Ἐπιστάτα, εἴδομέν τινα ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου ἐκβάλλοντα τὰ δαιμόνια· καὶ ἐκωλύσαμεν αὐτόν, ὅτι οὐκ ἀκολουθεῖ μεθ' ἡμῶν.

50 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Μὴ κωλύετε· ὃς γὰρ οὐκ ἔστι καθ' ἡμῶν, ὑπὲρ ἡμῶν ἐστιν.

51 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ συμπληροῦσθαι τὰς ἡμέρας τῆς ἀναλήψεως αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐστήριξε τοῦ πορεύεσθαι εἰς Ἱερουσαλήμ.

52 Καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸ προσώπου αὐτοῦ· καὶ πορευθέντες εἰσῆλθον εἰς κώμην Σαμαρειτῶν, ὥστε ἑτοιμάσαι αὐτῷ.

53 Καὶ οὐκ ἐδέξαντο αὐτόν, ὅτι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἦν πορευόμενον εἰς Ἱερουσαλήμ.

54 Ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης, εἶπον· Κύριε, θέλεις εἴπω-

μεν

μεν πῦρ καταβῆναι ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἀνα-
λῶσαι αὐτοὺς, ὡς καὶ Ἡλίας ἐποίησε;
55 Στραφεὶς δὲ ἐπετίμησεν αὐτοῖς, καὶ
εἶπεν· Οὐκ οἴδατε οἵου πνεύματός ἐστε ὑμεῖς·
56 Ὁ γὰρ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε ψυ-
χὰς ἀνθρώπων ἀπολέσαι, ἀλλὰ σῶσαι.
Καὶ ἐπορεύθησαν εἰς ἑτέραν κώμην.
57 Ἐγένετο δὲ πορευομένων αὐτῶν, ἐν τῇ
ὁδῷ εἶπέ τις πρὸς αὐτόν· Ἀκολουθήσω σοι,
ὅπου ἂν ἀπέρχῃ, Κύριε.
58 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Αἱ ἀλώ-
πεκες φωλεοὺς ἔχουσι, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρα-
νοῦ κατασκηνώσεις· ὁ δὲ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
οὐκ ἔχει ποῦ τὴν κεφαλὴν κλίνῃ.
59 Εἶπε δὲ πρὸς ἕτερον· Ἀκολούθει μοι.
Ὁ δὲ εἶπε· Κύριε, ἐπίτρεψόν μοι ἀπελ-
θόντι πρῶτον θάψαι τὸν πατέρα μου.
60 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἄφες τοὺς
νεκροὺς θάψαι τοὺς ἑαυτῶν νεκρούς· σὺ δὲ ἀπελ-
θὼν διάγγελλε τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.
61 Εἶπε δὲ καὶ ἕτερος· Ἀκολουθήσω σοι,
Κύριε· πρῶτον δὲ ἐπίτρεψόν μοι ἀποτάξα-
σθαι τοῖς εἰς τὸν οἶκόν μου.
62 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Οὐδεὶς
ἐπιβαλὼν τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπ' ἄροτρον, καὶ
βλέπων εἰς τὰ ὀπίσω, εὔθετός ἐστιν εἰς τὴν
βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ι'. 10.

Ἑπτάκις πεμπομένους δεκάτῳ δέκα δέρκε μαθητάς.
Οὕσπερ ἀναινομένοισιν ὅπερ Γομόραν κεῖμα μεῖζον.
Οἳ καὶ ὑποχθονίων δεδμήκασι φῦλα γιγάντων.
Κλῦθί τε παρβολίην λῃσταῖς φονίοισι πεσόντος.
Καὶ Μαρίαν, Μάρθαν τε φιλόξενον ἀμφὶ Θεοῖο.

1 ΜΕτὰ δὲ ταῦτα ἀνέδειξεν ὁ Κύριος
ἑτέρους ἑβδομήκοντα, καὶ ἀπέ-
στειλεν αὐτοὺς ἀνὰ δύο πρὸ προσώπου αὐτοῦ, εἰς
πᾶσαν πόλιν καὶ τόπον, οὗ ἔμελλεν αὐτὸς ἔρχεσθαι.
2 Ἔλεγεν οὖν πρὸς αὐτούς· Ὁ μὲν θερισμὸς
πολύς, οἱ δὲ ἐργάται ὀλίγοι· δεήθητε οὖν τοῦ
Κυρίου τοῦ θερισμοῦ, ὅπως ἐκβάλλῃ ἐργάτας
εἰς τὸν θερισμὸν αὐτοῦ.
3 Ὑπάγετε· ἰδού, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς
ὡς ἄρνας ἐν μέσῳ λύκων.
4 Μὴ βαστάζετε βαλάντιον, μὴ πήραν,
μηδὲ ὑποδήματα· καὶ μηδένα κατὰ τὴν ὁδὸν
ἀσπάσησθε.
5 Εἰς ἣν δ' ἂν οἰκίαν εἰσέρχησθε, πρῶτον
λέγετε· Εἰρήνη τῷ οἴκῳ τούτῳ.
6 Καὶ ἐὰν μὲν ᾖ ἐκεῖ ὁ Υἱὸς εἰρήνης, ἐπα-
ναπαύσεται ἐπ' αὐτὸν ἡ εἰρήνη ὑμῶν· εἰ δὲ
μήγε, ἐφ' ὑμᾶς ἀνακάμψει.
7 Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ οἰκίᾳ μένετε, ἐσθίοντες
καὶ πίνοντες τὰ παρ' αὐτῶν· ἄξιος γὰρ ὁ ἐργάτης

τοῦ μισθοῦ αὐτοῦ ἐστί. Μὴ μεταβαίνετε ἐξ οἰ-
κίας εἰς οἰκίαν.
8 Καὶ εἰς ἣν δ' ἂν πόλιν εἰσέρχησθε, καὶ δέ-
χωνται ὑμᾶς, ἐσθίετε τὰ παρατιθέμενα ὑμῖν.
9 Καὶ θεραπεύετε τοὺς ἐν αὐτῇ ἀσθενεῖς, καὶ
λέγετε αὐτοῖς· Ἤγγικεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασι-
λεία τοῦ Θεοῦ.
10 Εἰς ἣν δ' ἂν πόλιν εἰσέρχησθε, καὶ μὴ
δέχωνται ὑμᾶς, ἐξελθόντες εἰς τὰς πλα-
τείας αὐτῆς, εἴπατε·
11 Καὶ τὸν κονιορτὸν τὸν κολληθέντα ἡμῖν
ἐκ τῆς πόλεως ὑμῶν, ἀπομασσόμεθα ὑμῖν·
πλὴν τοῦτο γινώσκετε, ὅτι ἤγγικεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ
βασιλεία τοῦ Θεοῦ.
12 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι Σοδόμοις ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀνεκτότερον ἔσται, ἢ τῇ πόλει
ἐκείνῃ.
13 Οὐαί σοι Χοραζὶν, οὐαί σοι Βηθσαϊδά·
ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἐγένοντο αἱ δυνάμεις
αἱ γενόμεναι ἐν ὑμῖν, πάλαι ἂν ἐν σάκκῳ καὶ
σποδῷ καθήμεναι μετενόησαν.
14 Πλὴν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἀνεκτότερον
ἔσται ἐν τῇ κρίσει, ἢ ὑμῖν.
15 Καὶ σὺ Καπερναοὺμ ἡ ἕως τοῦ οὐρανοῦ ὑ-
ψωθεῖσα, ἕως ᾅδου καταβιβασθήσῃ.
16 Ὁ ἀκούων ὑμῶν, ἐμοῦ ἀκούει· καὶ ὁ ἀθε-
τῶν ὑμᾶς, ἐμὲ ἀθετεῖ· ὁ δὲ ἐμὲ ἀθετῶν,
ἀθετεῖ τὸν ἀποστείλαντά με.
17 Ὑπέστρεψαν δὲ οἱ ἑβδομήκοντα μετὰ
χαρᾶς, λέγοντες· Κύριε, καὶ τὰ δαιμόνια
ὑποτάσσεται ἡμῖν ἐν τῷ ὀνόματί σου.
18 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ἐθεώρουν τὸν σατα-
νᾶν, ὡς ἀστραπὴν, ἐκ τοῦ οὐρανοῦ πεσόντα.
19 Ἰδοὺ, δίδωμι ὑμῖν τὴν ἐξουσίαν τοῦ

πατεῖν ἐπάνω ὄφεων καὶ σκορπίων, καὶ ἐπὶ
πᾶσαν τὴν δύναμιν τοῦ ἐχθροῦ· καὶ οὐδὲν
ὑμᾶς οὐ μὴ ἀδικήσει.
20 Πλὴν ἐν τούτῳ μὴ χαίρετε, ὅτι τὰ πνεύ-
ματα ὑμῖν ὑποτάσσεται· χαίρετε δὲ μᾶλλον
ὅτι τὰ ὀνόματα ὑμῶν ἐγράφη ἐν τοῖς οὐρανοῖς.
21 Ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἠγαλλιάσατο τῷ πνεύ-
ματι ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν· Ἐξομολογοῦμαί σοι
πάτερ, Κύριε τοῦ οὐρανοῦ καὶ τῆς γῆς, ὅτι ἀπέ-
κρυψας ταῦτα ἀπὸ σοφῶν, καὶ συνετῶν, καὶ ἀπε-
κάλυψας αὐτὰ νηπίοις· ναὶ ὁ πατὴρ, ὅτι
οὕτως ἐγένετο εὐδοκία ἔμπροσθέν σου.
22 Πάντα παρεδόθη μοι ὑπὸ τοῦ πατρός
μου· καὶ οὐδεὶς γινώσκει τίς ἐστιν ὁ Υἱὸς, εἰ μὴ
ὁ πατὴρ, καὶ τίς ἐστιν ὁ πατὴρ, εἰ μὴ ὁ Υἱὸς,
καὶ ᾧ ἐὰν βούληται ὁ Υἱὸς ἀποκαλύψαι.
23 Καὶ στραφεὶς πρὸς τοὺς μαθητὰς, κατ'
ἰδίαν εἶπε· Μακάριοι οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ βλέ-
ποντες ἃ βλέπετε.
24 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ προφῆται καὶ
βασιλεῖς ἠθέλησαν ἰδεῖν ἃ ὑμεῖς βλέπετε, καὶ
οὐκ εἶδον· καὶ ἀκοῦσαι ἃ ἀκούετε, καὶ οὐκ ἤκουσαν.
25 Καὶ ἰδοὺ, νομικός τις ἀνέστη, ἐκπει-
ράζων αὐτὸν, καὶ λέγων· Διδάσκαλε, τί
ποιήσας ζωὴν αἰώνιον κληρονομήσω;
26 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτόν· Ἐν τῷ νόμῳ
τί γέγραπται; πῶς ἀναγινώσκεις;
27 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἀγα-
πήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς καρ-
δίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ ἐξ
ὅλης τῆς ἰσχύος σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς διανοίας
σου· καὶ τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτόν.
28 Εἶπε δὲ αὐτῷ· Ὀρθῶς ἀπεκρίθης·
τοῦτο ποίει, καὶ ζήσῃ.

29 Ὁ δὲ θέλων δικαιοῦν ἑαυτὸν, εἶπε
πρὸς τὸν Ἰησοῦν· Καὶ τίς ἐστί μου πλησίον;
30 Ὑπολαβὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἄν-
θρωπός τις κατέβαινεν ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ εἰς
Ἱεριχὼ, καὶ λῃσταῖς περιέπεσεν, οἳ καὶ ἐκδύ-
σαντες αὐτὸν, καὶ πληγὰς ἐπιθέντες, ἀπῆλ-
θον, ἀφέντες ἡμιθανῆ τυγχάνοντα.
31 Κατὰ συγκυρίαν δὲ ἱερεύς τις κατέ-
βαινεν ἐν τῇ ὁδῷ ἐκείνῃ· καὶ ἰδὼν αὐτὸν, ἀν-
τιπαρῆλθεν.
32 Ὁμοίως δὲ καὶ Λευΐτης, γενόμενος
κατὰ τὸν τόπον, ἐλθὼν καὶ ἰδὼν, ἀντιπαρῆλθεν.
33 Σαμαρείτης δέ τις ὁδεύων, ἦλθε
κατ' αὐτὸν, καὶ ἰδὼν αὐτὸν, ἐσπλαγχνίσθη·
34 Καὶ προσελθὼν κατέδησε τὰ τραύμα-
τα αὐτοῦ, ἐπιχέων ἔλαιον καὶ οἶνον· ἐπιβι-
βάσας δὲ αὐτὸν ἐπὶ τὸ ἴδιον κτῆνος, ἤγα-
γεν αὐτὸν εἰς πανδοχεῖον, καὶ ἐπεμελήθη αὐτοῦ.
35 Καὶ ἐπὶ τὴν αὔριον ἐξελθὼν, ἐκβα-
λὼν δύο δηνάρια ἔδωκε τῷ πανδοχεῖ, καὶ εἶ-
πεν αὐτῷ· Ἐπιμελήθητι αὐτοῦ, καὶ ὅ, τι ἂν
προσδαπανήσῃς, ἐγὼ ἐν τῷ ἐπανέρχεσθαί
με, ἀποδώσω σοι.
36 Τίς οὖν τούτων τῶν τριῶν δοκεῖ σοι πλη-
σίον γεγονέναι τοῦ ἐμπεσόντος εἰς τοὺς λῃ-
στάς;
37 Ὁ δὲ εἶπεν· Ὁ ποιήσας τὸ ἔλεος μετ'
αὐτοῦ. Εἶπεν οὖν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Πορεύου,
καὶ σὺ ποίει ὁμοίως.
38 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτοὺς, καὶ
αὐτὸς εἰσῆλθεν εἰς κώμην τινά· γυνὴ δέ τις
ὀνόματι Μάρθα ὑπεδέξατο αὐτὸν εἰς τὸν οἶ-
κον αὐτῆς.
39 Καὶ τῇδε ἦν ἀδελφὴ καλουμένη Μαρία,

ἣ καὶ παρακαθίσασα παρὰ τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ, ἤκουε τὸν λόγον αὐτοῦ.

40 Ἡ δὲ Μάρθα περιεσπᾶτο περὶ πολλὴν διακονίαν· ἐπιστᾶσα δὲ εἶπε· Κύριε, οὐ μέλει σοι ὅτι ἡ ἀδελφή μου μόνην με κατέλιπε διακονεῖν; εἰπὲ οὖν αὐτῇ ἵνα μοι συναντιλάβηται.

41 Ἀποκριθεὶς δὲ εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μάρθα Μάρθα, μεριμνᾷς καὶ τυρβάζῃ περὶ πολλά· Ἑνὸς δέ ἐστι χρεία.

42 Μαρία δὲ τὴν ἀγαθὴν μερίδα ἐξελέξατο, ἥτις οὐκ ἀφαιρεθήσεται ἀπ' αὐτῆς.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΑ. 11.

Ἑνδέκατον διάβηθι, Θεῷ τε δαήσεαι εὐχὰς
Ὡς ἀνὰ παισὶ φέρειν. αἰτήμονος ἔνθα τε μῦθος.
Νυκτὶ φίλου πέφρασαι. ἐριννύος ἄρσις ἀναύδου.
Πρός τε κεκηγορέοντας ἐπήλυδες ἑπτὰ χερείους.
Καὶ Σαββᾶ βασίλισσα. Νινευῖται τε πολῖται.
Καὶ οὐαὶ πολύθρηνον ὑπερφιάλοις Φαρισαίοις.

1 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τόπῳ τινὶ προσευχόμενον, ὡς ἐπαύσατο, εἶπέ τις τῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς αὐτόν· Κύριε, δίδαξον ἡμᾶς προσεύχεσθαι, καθὼς καὶ Ἰωάννης ἐδίδαξε τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ.

2 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ὅταν προσεύχησθε, λέγετε· ΠΑΤΕΡ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς,

ἁγια-

ἁγιασθήτω τὸ ὄνομά σου· ἐλθέτω ἡ βασιλεία
σου· γενηθήτω τὸ θέλημά σου, ὡς ἐν οὐρανῷ,
καὶ ἐπὶ τῆς γῆς.
3 Τὸν ἄρτον ἡμῶν τὸν ἐπιούσιον δίδου ἡμῖν
τὸ καθ' ἡμέραν.
4 Καὶ ἄφες ἡμῖν τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν· καὶ
γὰρ αὐτοὶ ἀφίεμεν παντὶ ὀφείλοντι ἡμῖν· καὶ
μὴ εἰσενέγκῃς ἡμᾶς εἰς πειρασμὸν, ἀλλὰ ῥῦ-
σαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ.
5 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Τίς ἐξ ὑμῶν ἕξει
φίλον, καὶ πορεύσεται πρὸς αὐτὸν μεσονυκτίου,
καὶ εἴπῃ αὐτῷ· φίλε, χρῆσόν μοι τρεῖς ἄρτους·
6 Ἐπειδὴ φίλος μου παρεγένετο ἐξ ὁδοῦ
πρός με, καὶ οὐκ ἔχω ὃ παραθήσω αὐτῷ.
7 Κἀκεῖνος ἔσωθεν ἀποκριθεὶς εἴπῃ· Μή
μοι κόπους πάρεχε· ἤδη ἡ θύρα κέκλεισται,
καὶ τὰ παιδία μου μετ' ἐμοῦ εἰς τὴν κοίτην εἰ-
σίν· οὐ δύναμαι ἀναστὰς δοῦναί σοι.
8 Λέγω ὑμῖν, εἰ καὶ οὐ δώσει αὐτῷ ἀνα-
στὰς, διὰ τὸ εἶναι αὐτοῦ φίλον· διά γε τὴν ἀναί-
δειαν αὐτοῦ ἐγερθεὶς δώσει αὐτῷ ὅσων χρῄζει.
9 Κἀγὼ ὑμῖν λέγω· Αἰτεῖτε, καὶ δοθή-
σεται ὑμῖν· ζητεῖτε, καὶ εὑρήσετε· κρούε-
τε, καὶ ἀνοιγήσεται ὑμῖν.
10 Πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶν λαμβάνει· καὶ ὁ ζη-
τῶν εὑρίσκει· καὶ τῷ κρούοντι ἀνοιγήσεται.
11 Τίνα δὲ ὑμῶν τὸν πατέρα αἰτήσει ὁ
Υἱὸς ἄρτον, μὴ λίθον ἐπιδώσει αὐτῷ; εἰ
καὶ ἰχθὺν, μὴ ἀντὶ ἰχθύος ὄφιν ἐπιδώσει
αὐτῷ;
12 Ἢ καὶ ἐὰν αἰτήσῃ ὠὸν, μὴ ἐπιδώσει
αὐτῷ σκορπίον;
13 Εἰ οὖν ὑμεῖς πονηροὶ ὑπάρχοντες, οἴ-
δατε ἀγαθὰ δόματα διδόναι τοῖς τέκνοις ὑ-
 μῶν,

μῶν, πόσῳ μᾶλλον ὁ πατὴρ ὁ ἐξ οὐρανοῦ δώ-
σει Πνεῦμα ἅγιον τοῖς αἰτοῦσιν αὐτόν;
14 Καὶ ἦν ἐκβάλλων δαιμόνιον, καὶ αὐτὸ ἦν
κωφόν· ἐγένετο δὲ τοῦ δαιμονίου ἐξελθόντος,
ἐλάλησεν ὁ κωφός· καὶ ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι.
15 Τινὲς δὲ ἐξ αὐτῶν εἶπον· Ἐν Βεελζεβοὺλ
ἄρχοντι τῶν δαιμονίων ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια.
16 Ἕτεροι δὲ πειράζοντες, σημεῖον παρ'
αὐτοῦ ἐζήτουν ἐξ οὐρανοῦ.
17 Αὐτὸς δὲ εἰδὼς αὐτῶν τὰ διανοήματα,
εἶπεν αὐτοῖς· Πᾶσα βασιλεία ἐφ' ἑαυτὴν
διαμερισθεῖσα ἐρημοῦται, καὶ οἶκος ἐπὶ οἶκον
πίπτει.
18 Εἰ δὲ καὶ ὁ σατανᾶς ἐφ' ἑαυτὸν διεμερί-
σθη, πῶς σταθήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ; ὅτι λέ-
γετε, ἐν Βεελζεβοὺλ ἐκβάλλειν με τὰ δαιμόνια.
19 Εἰ δὲ ἐγὼ ἐν Βεελζεβοὺλ ἐκβάλλω
τὰ δαιμόνια, οἱ Υἱοὶ ὑμῶν ἐν τίνι ἐκβάλ-
λουσι; διὰ τοῦτο κριταὶ ὑμῶν αὐτοὶ ἔσονται.
20 Εἰ δὲ ἐν δακτύλῳ Θεοῦ ἐκβάλλω τὰ
δαιμόνια, ἄρα ἔφθασεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασι-
λεία τοῦ Θεοῦ.
21 Ὅταν ὁ ἰσχυρὸς καθωπλισμένος φυ-
λάσσῃ τὴν ἑαυτοῦ αὐλήν, ἐν εἰρήνῃ ἐστὶ τὰ
ὑπάρχοντα αὐτοῦ.
22 Ἐπὰν δὲ ὁ ἰσχυρότερος αὐτοῦ ἐπελθὼν
νικήσῃ αὐτόν, τὴν πανοπλίαν αὐτοῦ αἴρει ἐφ'
ᾗ ἐπεποίθει, καὶ τὰ σκῦλα αὐτοῦ διαδίδωσιν.
23 Ὁ μὴ ὢν μετ' ἐμοῦ, κατ' ἐμοῦ ἐστι·
καὶ ὁ μὴ συνάγων μετ' ἐμοῦ, σκορπίζει.
24 Ὅταν τὸ ἀκάθαρτον πνεῦμα ἐξέλθῃ
ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, διέρχεται δι' ἀνύδρων τό-
πων, ζητοῦν ἀνάπαυσιν· καὶ μὴ εὑρίσκον, λέ-
γει· Ὑποστρέψω εἰς τὸν οἶκόν μου ὅθεν ἐξῆλθον.

25 Καὶ

25 Καὶ ἐλθὸν εὑρίσκει σεσαρωμένον καὶ
κεκοσμημένον.
26 Τότε πορεύεται καὶ παραλαμβάνει ἑπ-
τὰ ἕτερα πνεύματα πονηρότερα ἑαυτοῦ· καὶ εἰ-
σελθόντα κατοικεῖ ἐκεῖ· καὶ γίνεται τὰ ἔσχατα
τοῦ ἀνθρώπου ἐκείνου χείρονα τῶν πρώτων.
27 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ λέγειν αὐτὸν ταῦτα,
ἐπάρασά τις γυνὴ φωνὴν ἐκ τοῦ ὄχλου, εἶ-
πεν αὐτῷ· Μακαρία ἡ κοιλία ἡ βαστάσασά
σε, καὶ μαστοὶ οὓς ἐθήλασας.
28 Αὐτὸς δὲ εἶπε· Μενοῦνγε μακάριοι οἱ ἀ-
κούοντες τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, καὶ φυλάσσοντες αὐτόν.
29 Τῶν δὲ ὄχλων ἐπαθροιζομένων ἤρξα-
το λέγειν· Ἡ γενεὰ αὕτη πονηρά ἐστι· σημεῖον
ἐπιζητεῖ, καὶ σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ, εἰ
μὴ τὸ σημεῖον Ἰωνᾶ τοῦ προφήτου.
30 Καθὼς γὰρ ἐγένετο Ἰωνᾶς σημεῖον
τοῖς Νινευΐταις, οὕτως ἔσται καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ
ἀνθρώπου τῇ γενεᾷ ταύτῃ.
31 Βασίλισσα νότου ἐγερθήσεται ἐν τῇ κρί-
σει μετὰ τῶν ἀνδρῶν τῆς γενεᾶς ταύτης, καὶ
κατακρινεῖ αὐτούς· ὅτι ἦλθεν ἐκ τῶν περάτων
τῆς γῆς ἀκοῦσαι τὴν σοφίαν Σολομῶντος·
καὶ ἰδού, πλεῖον Σολομῶντος ὧδε.
32 Ἄνδρες Νινευῒ ἀναστήσονται ἐν τῇ κρί-
σει μετὰ τῆς γενεᾶς ταύτης, καὶ κατακρινοῦσιν
αὐτήν· ὅτι μετενόησαν εἰς τὸ κήρυγμα Ἰω-
νᾶ· καὶ ἰδού, πλεῖον Ἰωνᾶ ὧδε.
33 Οὐδεὶς δὲ λύχνον ἅψας, εἰς κρυπ-
τὸν τίθησιν, οὐδὲ ὑπὸ τὸν μόδιον, ἀλλὰ
ἐπὶ τὴν λυχνίαν, ἵνα οἱ εἰσπορευόμενοι τὸ
φέγγος βλέπωσιν.
34 Ὁ λύχνος τοῦ σώματός ἐστιν ὁ ὀφθαλ-
μός· ὅταν οὖν ὁ ὀφθαλμός σου ἁπλοῦς ᾖ, καὶ

ὅλον τὸ σῶμά σου φωτεινόν ἐστιν· ἐπὰν δὲ πονηρὸς ᾖ, καὶ τὸ σῶμά σου σκοτεινόν.

35 Σκόπει οὖν μὴ τὸ φῶς τὸ ἐν σοὶ, σκότος ἐστίν.

36 Εἰ οὖν τὸ σῶμά σου ὅλον φωτεινὸν, μὴ ἔχον τί μέρος σκοτεινὸν, ἔσαι φωτεινὸν ὅλον, ὡς ὅταν ὁ λύχνος τῇ ἀστραπῇ φωτίζῃ σε.

37 Ἐν δὲ τῷ λαλῆσαι, ἠρώτα αὐτὸν Φαρισαῖός τις ὅπως ἀριστήσῃ παρ' αὐτῷ. εἰσελθὼν δὲ ἀνέπεσεν.

38 Ὁ δὲ Φαρισαῖος ἰδὼν ἐθαύμασεν ὅτι οὐ πρῶτον ἐβαπτίσθη πρὸ τοῦ ἀρίστου.

39 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος πρὸς αὐτόν· Νῦν ὑμεῖς οἱ Φαρισαῖοι τὸ ἔξωθεν τοῦ ποτηρίου καὶ τοῦ πίνακος καθαρίζετε· τὸ δὲ ἔσωθεν ὑμῶν γέμει ἁρπαγῆς καὶ πονηρίας.

40 Ἄφρονες, οὐχ ὁ ποιήσας τὸ ἔξωθεν, καὶ τὸ ἔσωθεν ἐποίησε;

41 Πλὴν τὰ ἐνόντα δότε ἐλεημοσύνην· καὶ ἰδοὺ, πάντα καθαρὰ ὑμῖν ἐστιν.

42 Ἀλλ' οὐαὶ ὑμῖν τοῖς φαρισαίοις, ὅτι ἀποδεκατοῦτε τὸ ἡδύοσμον καὶ τὸ πήγανον καὶ πᾶν λάχανον, καὶ παρέρχεσθε τὴν κρίσιν καὶ τὴν ἀγάπην τοῦ Θεοῦ· ταῦτα ἔδει ποιῆσαι, κἀκεῖνα μὴ ἀφιέναι.

43 Οὐαὶ ὑμῖν τοῖς φαρισαίοις, ὅτι ἀγαπᾶτε τὴν πρωτοκαθεδρείαν ἐν ταῖς συναγωγαῖς, καὶ τοὺς ἀσπασμοὺς ἐν ταῖς ἀγοραῖς.

44 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑποκριταὶ, ὅτι ἐστὲ ὡς τὰ μνημεῖα τὰ ἄδηλα, καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ περιπατοῦντες ἐπάνω οὐκ οἴδασιν.

45 Ἀποκριθεὶς δέ τις τῶν νομικῶν, λέγει

αὐ-

αὐτῷ· Διδάσκαλε, ταῦτα λέγων ϗ ἡμᾶς
ὑβρίζεις.
46 Ὁ δὲ εἶπε· Καὶ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς
οὐαὶ, ὅτι φορτίζετε τοὺς ἀνθρώπους φορτία
δυσβάστακτα, ϗ αὐτοὶ ἑνὶ τῶν δακτύλων ὑ-
μῶν οὐ προσψαύετε τοῖς φορτίοις.
47 Οὐαὶ ὑμῖν, ὅτι οἰκοδομεῖτε τὰ μνη-
μεῖα τῶν προφητῶν, οἱ δὲ πατέρες ὑμῶν ἀπέ-
κτειναν αὐτούς.
48 Ἄρα μαρτυρεῖτε ϗ συνευδοκεῖτε τοῖς
ἔργοις τῶν πατέρων ὑμῶν· ὅτι αὐτοὶ μὲν ἀπέ-
κτειναν αὐτοὺς, ὑμεῖς δὲ οἰκοδομεῖτε αὐτῶν
τὰ μνημεῖα.
49 Διὰ τοῦτο ϗ ἡ σοφία τοῦ Θεοῦ εἶπεν·
Ἀποστελῶ εἰς αὐτοὺς προφήτας, ϗ ἀποστό-
λους, ϗ ἐξ αὐτῶν ἀποκτενοῦσι ϗ ἐκδιώξουσιν·
50 Ἵνα ἐκζητηθῇ τὸ αἷμα πάντων τῶν
προφητῶν, τὸ ἐκχυνόμενον ἀπὸ καταβολῆς
κόσμου, ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης.
51 Ἀπὸ τοῦ αἵματος Ἄβελ ἕως τοῦ αἵμα-
τος Ζαχαρίου, τοῦ ἀπολομένου μεταξὺ τοῦ
θυσιαστηρίου ϗ τοῦ οἴκου· ναὶ λέγω ὑμῖν, ἐκ-
ζητηθήσεται ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης.
52 Οὐαὶ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς, ὅτι ἤρατε
τὴν κλεῖδα τῆς γνώσεως· αὐτοὶ οὐκ εἰσήλθε-
τε, ϗ τοὺς εἰσερχομένους ἐκωλύσατε.
53 Λέγοντος δὲ αὐτοῦ ταῦτα πρὸς αὐτοὺς
ἤρξαντο οἱ γραμματεῖς ϗ οἱ φαρισαῖοι δεινῶς
ἐνέχειν, ϗ ἀποστοματίζειν αὐτὸν περὶ πλειό-
νων,
54 Ἐνεδρεύοντες αὐτὸν, ϗ ζητοῦντες θη-
ρεῦσαί τι ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ, ἵνα κατη-
γορήσωσιν αὐτοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΒ΄. 12.

Κρυπτὰ δυωδεκάτῳ φανερούμενα δέρκε τὰ ἔργα.
Μὴ ζέμε γηγενέας σὺν παρβολίῃ πλεονέκτου.
Μήτε μεριμνομάχει· μᾶλλον δὲ πένησι χορήγει,
Καὶ φροντὶς θανάτοιο ἀέθεν μία· οἰκονόμει δέ.
Πιστοῦ καὶ ἀδίκοιο σύνες τέλος· ὧξ ἰδίων δὲ
Δυσσεβέων πίστιν σε τεμεῖν, ἐχθροῖς τε συνάπτειν.

1 ΕΝ οἷς ἐπισυναχθεισῶν τῶν μυριά-
δων τοῦ ὄχλου, ὥστε καταπατεῖν
ἀλλήλους, ἤρξατο λέγειν πρὸς τοὺς μαθητὰς
αὐτοῦ· Πρῶτον προσέχετε ἑαυτοῖς ἀπὸ τῆς
ζύμης τῶν Φαρισαίων, ἥτις ἐστὶν ὑπόκρισις.
2 Οὐδὲν δὲ συγκεκαλυμμένον ἐστὶν, ὃ οὐκ
ἀποκαλυφθήσεται· καὶ κρυπτὸν, ὃ οὐ γνωσθήσεται.
3 Ἀνθ᾽ ὧν ὅσα ἐν τῇ σκοτίᾳ εἴπατε, ἐν
τῷ φωτὶ ἀκουσθήσεται· καὶ ὃ πρὸς τὸ οὖς ἐλα-
λήσατε ἐν τοῖς ταμείοις, κηρυχθήσεται ἐπὶ
τῶν δωμάτων.
4 Λέγω δὲ ὑμῖν τοῖς φίλοις μου· Μὴ φοβη-
θῆτε ἀπὸ τῶν ἀποκτεινόντων τὸ σῶμα, καὶ μετὰ
ταῦτα μὴ ἐχόντων περισσότερόν τι ποιῆσαι.
5 Ὑποδείξω δὲ ὑμῖν τίνα φοβηθῆτε· φο-
βήθητε τὸν μετὰ τὸ ἀποκτεῖναι, ἐξουσίαν
ἔχοντα ἐμβαλεῖν εἰς τὴν γέενναν· ναὶ λέγω
ὑμῖν, τοῦτον φοβήθητε.
6 Οὐχὶ πέντε στρουθία πωλεῖται ἀσσαρίων

δύο;

δύο, καὶ ἓν ἐξ αὐτῶν οὐκ ἔστιν ἐπιλελησμένον
ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.
7 Ἀλλὰ καὶ αἱ τρίχες τῆς κεφαλῆς ὑμῶν
πᾶσαι ἠρίθμηνται. μὴ οὖν φοβεῖσθε· πολ-
λῶν στρουθίων διαφέρετε.
8 Λέγω δὲ ὑμῖν· Πᾶς ὃς ἂν ὁμολογήσῃ
ἐν ἐμοὶ ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, καὶ ὁ Υἱὸς
τοῦ ἀνθρώπου ὁμολογήσει ἐν αὐτῷ ἔμπροσ-
θεν τῶν ἀγγέλων τοῦ Θεοῦ.
9 Ὁ δὲ ἀρνησάμενός με ἐνώπιον τῶν ἀν-
θρώπων, ἀπαρνηθήσεται ἐνώπιον τῶν ἀγγέ-
λων τοῦ Θεοῦ.
10 Καὶ πᾶς ὃς ἐρεῖ λόγον εἰς τὸν Υἱὸν τοῦ
ἀνθρώπου, ἀφεθήσεται αὐτῷ· τῷ δὲ εἰς τὸ
ἅγιον Πνεῦμα βλασφημήσαντι οὐκ ἀφεθή-
σεται.
11 Ὅταν δὲ προσφέρωσιν ὑμᾶς ἐπὶ τὰς
συναγωγὰς καὶ τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς ἐξουσίας, μὴ
μεριμνᾶτε πῶς ἢ τί ἀπολογήσησθε, ἢ τί
εἴπητε.
12 Τὸ γὰρ ἅγιον Πνεῦμα διδάξει ὑμᾶς
ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, ἃ δεῖ εἰπεῖν.
13 Εἶπε δέ τις αὐτῷ ἐκ τοῦ ὄχλου· Δι-
δάσκαλε, εἰπὲ τῷ ἀδελφῷ μου μερίσασθαι
μετ' ἐμοῦ τὴν κληρονομίαν.
14 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ἄνθρωπε, τίς με
κατέστησε δικαστὴν ἢ μεριστὴν ἐφ' ὑμᾶς;
15 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς· Ὁρᾶτε καὶ φυλάσσε-
σθε ἀπὸ τῆς πλεονεξίας· ὅτι οὐκ ἐν τῷ περισσεύειν
τινὶ ἡ ζωὴ αὐτοῦ ἐστιν ἐκ τῶν ὑπαρχόντων αὐτοῦ.
16 Εἶπε δὲ παραβολὴν πρὸς αὐτοὺς, λέγων·
Ἀνθρώπου τινὸς πλουσίου εὐφόρησεν ἡ χώρα.
17 Καὶ διελογίζετο ἐν ἑαυτῷ, λέγων· Τί
ποιήσω; ὅτι οὐκ ἔχω ποῦ συνάξω τοὺς καρπούς μου;
18 Καὶ

18 Καὶ εἶπε· Τοῦτο ποιήσω· Καθελῶ μου τὰς ἀποθήκας, καὶ μείζονας οἰκοδομήσω· καὶ συνάξω ἐκεῖ πάντα τὰ γεννήματά μου, καὶ τὰ ἀγαθά μου.

19 Καὶ ἐρῶ τῇ ψυχῇ μου· Ψυχή, ἔχεις πολλὰ ἀγαθὰ κείμενα εἰς ἔτη πολλά· ἀναπαύου, φάγε, πίε, εὐφραίνου.

20 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Θεός· Ἄφρων, ταύτῃ τῇ νυκτὶ τὴν ψυχήν σου ἀπαιτοῦσιν ἀπὸ σοῦ· ἃ δὲ ἡτοίμασας, τίνι ἔσται;

21 Οὕτως ὁ θησαυρίζων ἑαυτῷ, καὶ μὴ εἰς Θεὸν πλουτῶν.

22 Εἶπε δὲ πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ· Διὰ τοῦτο ὑμῖν λέγω, μὴ μεριμνᾶτε τῇ ψυχῇ ὑμῶν, τί φάγητε· μηδὲ τῷ σώματι, τί ἐνδύσησθε.

23 Ἡ ψυχὴ πλεῖόν ἐστι τῆς τροφῆς, καὶ τὸ σῶμα, τοῦ ἐνδύματος.

24 Κατανοήσατε τοὺς κόρακας, ὅτι οὐ σπείρουσιν, οὐδὲ θερίζουσιν· οἷς οὐκ ἔστι ταμεῖον, οὐδὲ ἀποθήκη, καὶ ὁ Θεὸς τρέφει αὐτούς· πόσῳ μᾶλλον ὑμεῖς διαφέρετε τῶν πετεινῶν.

25 Τίς δὲ ἐξ ὑμῶν μεριμνῶν δύναται προσθεῖναι ἐπὶ τὴν ἡλικίαν αὐτοῦ πῆχυν ἕνα;

26 Εἰ οὖν οὔτε ἐλάχιστον δύνασθε, τί περὶ τῶν λοιπῶν μεριμνᾶτε;

27 Κατανοήσατε τὰ κρίνα, πῶς αὐξάνει· οὐ κοπιᾷ, οὐδὲ νήθει· λέγω δὲ ὑμῖν, οὐδὲ Σολομὼν ἐν πάσῃ τῇ δόξῃ αὐτοῦ περιεβάλετο ὡς ἓν τούτων.

28 Εἰ δὲ τὸν χόρτον ἐν τῷ ἀγρῷ σήμερον ὄντα, καὶ αὔριον εἰς κλίβανον βαλλόμενον, ὁ Θεὸς οὕτως ἀμφιέννυσι, πόσῳ μᾶλλον ὑμᾶς, ὀλιγόπιστοι.

29 Καὶ ὑμεῖς μὴ ζητεῖτε τί φάγητε, ἢ
τί πίητε· καὶ μὴ μετεωρίζεσθε.
30 Ταῦτα γὰρ πάντα, τὰ ἔθνη τοῦ Κόσμου
ἐπιζητεῖ· ὑμῶν δὲ ὁ πατὴρ οἶδεν ὅτι χρή-
ζετε τούτων.
31 Πλὴν ζητεῖτε τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ,
καὶ ταῦτα πάντα προστεθήσεται ὑμῖν.
32 Μὴ φοβοῦ τὸ μικρὸν ποίμνιον· ὅτι εὐ-
δόκησεν ὁ πατὴρ ὑμῶν δοῦναι ὑμῖν τὴν βα-
σιλείαν.
33 Πωλήσατε τὰ ὑπάρχοντα ὑμῶν, καὶ δό-
τε ἐλεημοσύνην. Ποιήσατε ἑαυτοῖς βαλάντια
μὴ παλαιούμενα, θησαυρὸν ἀνέκλειπτον ἐν
τοῖς οὐρανοῖς· ὅπου κλέπτης οὐκ ἐγγίζει, οὐ-
δὲ σὴς διαφθείρει.
34 Ὅπου γάρ ἐστιν ὁ θησαυρὸς ὑμῶν, ἐκεῖ
καὶ ἡ καρδία ὑμῶν ἔσται.
35 Ἔστωσαν ὑμῶν αἱ ὀσφύες περιεζωσμέ-
ναι, καὶ οἱ λύχνοι καιόμενοι.
36 Καὶ ὑμεῖς ὅμοιοι ἀνθρώποις προσδεχο-
μένοις τὸν Κύριον ἑαυτῶν, πότε ἀναλύσει ἐκ
τῶν γάμων· ἵνα ἐλθόντος καὶ κρούσαντος, εὐ-
θέως ἀνοίξωσιν αὐτῷ.
37 Μακάριοι οἱ δοῦλοι ἐκεῖνοι, οὓς ἐλθὼν
ὁ Κύριος εὑρήσει γρηγοροῦντας. ἀμὴν λέγω
ὑμῖν, ὅτι περιζώσεται, καὶ ἀνακλινεῖ αὐτοὺς,
καὶ παρελθὼν διακονήσει αὐτοῖς.
38 Καὶ ἐὰν ἔλθῃ ἐν τῇ δευτέρᾳ φυλακῇ,
καὶ ἐν τῇ τρίτῃ φυλακῇ ἔλθῃ, καὶ εὕρῃ οὕτω,
μακάριοί εἰσιν οἱ δοῦλοι ἐκεῖνοι.
39 Τοῦτο δὲ γινώσκετε, ὅτι εἰ ᾔδει ὁ οἰ-
κοδεσπότης ποίᾳ ὥρᾳ ὁ κλέπτης ἔρχεται,
ἐγρηγόρησεν ἂν, καὶ οὐκ ἂν ἀφῆκε διορυγῆναι
τὸν οἶκον αὐτοῦ.

40 Καὶ

40 Καὶ ὑμεῖς οὖν γίνεσθε ἕτοιμοι· ὅτι ᾗ ὥρᾳ
οὐ δοκεῖτε, ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται.
41 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Πέτρος· Κύριε, πρὸς
ἡμᾶς τὴν παραβολὴν ταύτην λέγεις, ἢ καὶ
πρὸς πάντας;
42 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Τίς ἄρα ἐστὶν ὁ
πιστὸς οἰκονόμος καὶ φρόνιμος, ὃν καταστήσει ὁ
κύριος ἐπὶ τῆς θεραπείας αὐτοῦ, τοῦ διδόναι
ἐν καιρῷ τὸ σιτομέτριον;
43 Μακάριος ὁ δοῦλος ἐκεῖνος, ὃν ἐλθὼν
ὁ κύριος αὐτοῦ εὑρήσει ποιοῦντα οὕτως.
44 Ἀληθῶς λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ πᾶσι
τοῖς ὑπάρχουσιν αὐτοῦ καταστήσει αὐτόν.
45 Ἐὰν δὲ εἴπῃ ὁ δοῦλος ἐκεῖνος ἐν τῇ καρ-
δίᾳ αὐτοῦ· Χρονίζει ὁ κύριός μου ἔρχεσθαι· καὶ
ἄρξηται τύπτειν τοὺς παῖδας καὶ τὰς παι-
δίσκας, ἐσθίειν τε καὶ πίνειν καὶ μεθύσκεσθαι·
46 Ἥξει ὁ κύριος τοῦ δούλου ἐκείνου ἐν ἡμέ-
ρᾳ ᾗ οὐ προσδοκᾷ, καὶ ἐν ὥρᾳ ᾗ οὐ γινώσκει·
καὶ διχοτομήσει αὐτόν, καὶ τὸ μέρος αὐτοῦ μετὰ
τῶν ἀπίστων θήσει.
47 Ἐκεῖνος δὲ ὁ δοῦλος ὁ γνοὺς τὸ θέλημα
τοῦ κυρίου ἑαυτοῦ, καὶ μὴ ἑτοιμάσας, μηδὲ
ποιήσας πρὸς τὸ θέλημα αὐτοῦ, δαρήσε-
ται πολλάς.
48 Ὁ δὲ μὴ γνοὺς, ποιήσας δὲ ἄξια πλη-
γῶν, δαρήσεται ὀλίγας· παντὶ δὲ ᾧ ἐδόθη πο-
λὺ, πολὺ ζητηθήσεται παρ' αὐτοῦ· καὶ ᾧ πα-
ρέθεντο πολὺ, περισσότερον αἰτήσουσιν αὐτόν.
49 Πῦρ ἦλθον βαλεῖν εἰς τὴν γῆν, καὶ τί
θέλω εἰ ἤδη ἀνήφθη;
50 Βάπτισμα δὲ ἔχω βαπτισθῆναι, καὶ
πῶς συνέχομαι ἕως οὗ τελεσθῇ;
51 Δοκεῖτε ὅτι εἰρήνην παρεγενόμην δοῦ-
ναι

ναι ἐν τῇ γῇ; οὐχὶ, λέγω ὑμῖν, ἀλλ' ἢ δια-
μερισμόν.
52 Ἔσονται γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν πέντε ἐν οἴ-
κῳ ἑνὶ διαμεμερισμένοι, τρεῖς ἐπὶ δυσὶ, καὶ
δύο ἐπὶ τρισί.
53 Διαμερισθήσεται πατὴρ ἐφ' Υἱῷ, καὶ
Υἱὸς ἐπὶ πατρὶ, μήτηρ ἐπὶ θυγατρὶ, καὶ
θυγάτηρ ἐπὶ μητρὶ, πενθερὰ ἐπὶ τὴν νύμ-
φην αὐτῆς, καὶ νύμφη ἐπὶ τὴν πενθερὰν αὐτῆς.
54 Ἔλεγε δὲ καὶ τοῖς ὄχλοις· Ὅταν ἴδη-
τε τὴν νεφέλην ἀνατέλλουσαν ἀπὸ δυσμῶν,
εὐθέως λέγετε· Ὄμβρος ἔρχεται· καὶ γίνε-
ται οὕτω.
55 Καὶ ὅταν νότον πνέοντα, λέγετε· Ὅ-
τι καύσων ἔσται, καὶ γίνεται.
56 Ὑποκριταὶ, τὸ πρόσωπον τῆς γῆς καὶ
τοῦ οὐρανοῦ οἴδατε δοκιμάζειν· τὸν δὲ καιρὸν
τοῦτον πῶς οὐ δοκιμάζετε.
57 Τί δὲ καὶ ἀφ' ἑαυτῶν οὐ κρίνετε τὸ δί-
καιον;
58 Ὡς γὰρ ὑπάγεις μετὰ τοῦ ἀντιδίκου σου
ἐπ' ἄρχοντα, ἐν τῇ ὁδῷ, δὸς ἐργασίαν ἀ-
πηλλάχθαι ἀπ' αὐτοῦ, μήποτε κατασύρῃ σε
πρὸς τὸν κριτὴν, καὶ ὁ κριτής σε παραδῷ τῷ
πράκτορι, καὶ ὁ πράκτωρ σε βάλλῃ εἰς φυλα-
κήν.
59 Λέγω σοι, οὐ μὴ ἐξέλθῃς ἐκεῖθεν ἕως
οὗ καὶ τὸ ἔσχατον λεπτὸν ἀποδῷς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

Ἐν τρισκαιδεκάτῳ δὲ δίκην φράσον ἐκ Γαλιλαίων
Εἰς ἀμεταγνώστους· συκῆς ἀπόειπε τομήν τε.
Ἐν σαβάτῳ δ' ἄθρησον ἀνισταμένην κεκυφυῖαν.
Καὶ ζύμῃ εἴκελον ὄντα Θεοῦ δόμον, ἠδὲ σινήπει.
Οὔγε πύλη στενότευκτος, ἐς ἣν πάλιν εἴσοδος ἔργα.
Ἔνθα νεῶ τὸν ὄλεθρον ἀπειλέει ἔκδικον ἄρδην.

1 ΠΑρῆσαν δέ τινες ἐν αὐτῷ τῷ καιρῷ ἀπαγγέλλοντες αὐτῷ περὶ τῶν Γαλιλαίων, ὧν τὸ αἷμα Πιλάτος ἔμιξε μετὰ τῶν θυσιῶν αὐτῶν.
2 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Δοκεῖτε ὅτι οἱ Γαλιλαῖοι οὗτοι ἁμαρτωλοὶ παρὰ πάντας τοὺς Γαλιλαίους ἐγένοντο, ὅτι τοιαῦτα πεπόνθασιν;
3 Οὐχί, λέγω ὑμῖν· ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοῆτε, πάντες ὡσαύτως ἀπολεῖσθε.
4 Ἢ ἐκεῖνοι οἱ δέκα καὶ ὀκτὼ, ἐφ' οὓς ἔπεσεν ὁ πύργος ἐν τῷ Σιλωάμ, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτούς, δοκεῖτε ὅτι οὗτοι ὀφειλέται ἐγένοντο παρὰ πάντας ἀνθρώπους τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἱερουσαλήμ;
5 Οὐχί, λέγω ὑμῖν· ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοῆτε, πάντες ὁμοίως ἀπολεῖσθε.
6 Ἔλεγε δὲ ταύτην τὴν παραβολήν· Συκῆν εἶχέ τις ἐν τῷ ἀμπελῶνι αὐτοῦ πεφυ-

τευ-

τουμένην· καὶ ἦλθε καρπὸν ζητῶν ἐν αὐτῇ ;
καὶ οὐχ εὗρεν.
7 Εἶπε δὲ πρὸς τὸν ἀμπελουργόν· Ἰδοὺ,
τρία ἔτη ἔρχομαι ζητῶν καρπὸν ἐν τῇ συκῇ
ταύτῃ, καὶ οὐχ εὑρίσκω· ἔκκοψον αὐτήν·
ἱνατί καὶ τὴν γῆν καταργεῖ ;
8 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς λέγει αὐτῷ· Κύριε,
ἄφες αὐτὴν καὶ τοῦτο τὸ ἔτος, ἕως ὅτου σκάψω πε-
ρὶ αὐτὴν, καὶ βάλω κοπρίαν·
9 Κἂν μὲν ποιήσῃ καρπόν· εἰ δὲ μήγε,
εἰς τὸ μέλλον ἐκκόψεις αὐτήν.
10 Ἦν δὲ διδάσκων ἐν μιᾷ τῶν συναγω-
γῶν ἐν τοῖς σάββασι.
11 Καὶ ἰδοὺ, γυνὴ ἦν πνεῦμα ἔχουσα ἀ-
σθενείας ἔτη δέκα καὶ ὀκτώ· καὶ ἦν συγκύπτουσα,
καὶ μὴ δυναμένη ἀνακύψαι εἰς τὸ παντελές.
12 Ἰδὼν δὲ αὐτὴν ὁ Ἰησοῦς, προσεφώ-
νησε, καὶ εἶπεν αὐτῇ· Γύναι, ἀπολέλυσαι
τῆς ἀσθενείας σου.
13 Καὶ ἐπέθηκεν αὐτῇ τὰς χεῖρας· καὶ πα-
ραχρῆμα ἀνωρθώθη, καὶ ἐδόξαζε τὸν Θεόν.
14 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἀρχισυνάγωγος, ἀ-
γανακτῶν, ὅτι τῷ σαββάτῳ ἐθεράπευσεν ὁ Ἰη-
σοῦς, ἔλεγε τῷ ὄχλῳ· Ἓξ ἡμέραι εἰσὶν ἐν
αἷς δεῖ ἐργάζεσθαι· ἐν ταύταις οὖν ἐρχόμενοι
θεραπεύεσθε, καὶ μὴ τῇ ἡμέρᾳ τοῦ σαββάτου.
15 Ἀπεκρίθη οὖν αὐτῷ ὁ Κύριος, καὶ εἶ-
πεν· Ὑποκριτὰ, ἕκαστος ὑμῶν τῷ σαββάτῳ
οὐ λύει τὸν βοῦν αὐτοῦ ἢ τὸν ὄνον ἀπὸ τῆς φάτ-
νης, καὶ ἀπαγαγὼν ποτίζει ;
16 Ταύτην δὲ, θυγατέρα Ἀβραὰμ οὖσαν,
ἣν ἔδησεν ὁ σατανᾶς ἰδοὺ δέκα καὶ ὀκτὼ ἔτη,
οὐκ ἔδει λυθῆναι ἀπὸ τοῦ δεσμοῦ τούτου τῇ ἡ-
μέρᾳ τοῦ Σαββάτου ;
17 Καὶ

17 Καὶ ταῦτα λέγοντος αὐτῦ, κατῃσχιώοντο πάντες οἱ ἀντικείμενοι αὐτῷ· ἢ πᾶς ὁ ὄχλος ἔχαιρεν ἐπὶ πᾶσι τοῖς ἐνδόξοις τοῖς γινομένοις ὑπ' αὐτῦ.

18 Ε'λεγε δέ· Τίνι ὁμοία ἐςὶν ἡ βασιλεία τῦ Θεῦ; ἢ τίνι ὁμοιώσω αὐτὴν;

19 Ο'μοία ἐςὶ κόκκῳ σινάπεως, ὃν λαβὼν ἄνθρωπος ἔβαλεν εἰς κῆπον ἑαυτῦ· καὶ ηὔξησε, ἢ ἐγένετο εἰς δένδρον μέγα, ἢ τὰ πετεινὰ τῦ ὐρανῦ κατεσκήνωσεν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτῦ.

20 Καὶ πάλιν εἶπε· Τίνι ὁμοιώσω τὴν βασιλείαν τῦ Θεῦ;

21 Ο'μοία ἐςὶ ζύμῃ, ἣν λαβῦσα γυνὴ ἐνέκρυψεν εἰς ἀλεύρυ σάτα τρία, ἕως ὗ ἐζυμώθη ὅλον.

22 Καὶ διεπορεύετο κατὰ πόλεις ἢ κώμας διδάσκων, ἢ πορείαν ποιύμενος εἰς Ι'ερυσαλήμ.

23 Εἶπε δέ τις αὐτῷ· Κύριε, εἰ ὀλίγοι οἱ σωζόμενοι; Ο' δὲ εἶπε πρὸς αὐτὺς·

24 Α'γωνίζεσθε εἰσελθεῖν διὰ τῆς ςενῆς πύλης· ὅτι πολλοὶ, λέγω ὑμῖν, ζητήσυσιν εἰσελθεῖν, ἢ ὐκ ἰσχύσυσιν.

25 Α'φ' οὗ ἂν ἐγερθῇ ὁ οἰκοδεσπότης, καὶ ἀποκλείσῃ τὴν θύραν, καὶ ἄρξησθε ἔξω ἑςάναι, καὶ κρούειν τὴν θύραν, λέγοντες· Κύριε Κύριε, ἄνοιξον ἡμῖν· καὶ ἀποκριθεὶς ἐρεῖ ὑμῖν, οὐκ οἶδα ὑμᾶς πόθεν ἐςέ.

26 Τότε ἄρξεσθε λέγειν· Ε'φάγομεν ἐνώπιόν συ, ἢ ἐπίομεν, ἢ ἐν ταῖς πλατείαις ἡμῶν ἐδίδαξας.

27 Καὶ ἐρεῖ· Λέγω ὑμῖν, ὐκ οἶδα ὑμᾶς

πό-

πόθεν ἐστέ. ἀπόστητε ἀπ' ἐμοῦ πάντες οἱ ἐρ-
γάται τῆς ἀδικίας.
28 Ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς
τῶν ὀδόντων, ὅταν ὄψησθε Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ
καὶ Ἰακώβ, καὶ πάντας τοὺς προφήτας ἐν τῇ βα-
σιλείᾳ τοῦ Θεοῦ, ὑμᾶς δὲ ἐκβαλλομένους ἔξω.
29 Καὶ ἥξουσιν ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ δυσμῶν,
καὶ ἀπὸ βορρᾶ καὶ νότου· καὶ ἀνακλιθήσονται ἐν
τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.
30 Καὶ ἰδού, εἰσὶν ἔσχατοι οἳ ἔσονται πρῶ-
τοι, καὶ εἰσὶ πρῶτοι οἳ ἔσονται ἔσχατοι.
31 Ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ προσῆλθόν τινες
Φαρισαῖοι, λέγοντες αὐτῷ· Ἔξελθε, καὶ
πορεύου ἐντεῦθεν, ὅτι Ἡρώδης θέλει σε
ἀποκτεῖναι.
32 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Πορευθέντες εἴπα-
τε τῇ ἀλώπεκι ταύτῃ· Ἰδού, ἐκβάλλω δαι-
μόνια, καὶ ἰάσεις ἐπιτελῶ σήμερον καὶ αὔριον,
καὶ τῇ τρίτῃ τελειοῦμαι.
33 Πλὴν δεῖ με σήμερον καὶ αὔριον καὶ τῇ
ἐχομένῃ πορεύεσθαι· ὅτι οὐκ ἐνδέχεται προφή-
την ἀπολέσθαι ἔξω Ἰερουσαλήμ.
34 Ἰερουσαλήμ, Ἰερουσαλήμ, ἡ ἀποκτεί-
νουσα τοὺς προφήτας, καὶ λιθοβολοῦσα τοὺς ἀ-
πεσταλμένους πρὸς αὐτήν, ποσάκις ἠθέλησα
ἐπισυνάξαι τὰ τέκνα σου, ὃν τρόπον ὄρνις τὴν
ἑαυτῆς νοσσιὰν ὑπὸ τὰς πτέρυγας, καὶ οὐκ ἠθε-
λήσατε;
35 Ἰδού, ἀφίεται ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρη-
μος· ἀμὴν δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι οὐ μή με ἴδη-
τε ἕως ἂν ἥξῃ ὅτε εἴπητε, Εὐλογημένος ὁ ἐρ-
χόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΔ'. 14.

Εἰς δέκατον δὲ τέταρτον ἀδίψιος ἔρχεται ὕδρωψ.
Πρωτόκλιτός τε ἄκλητος ἐλέγχεται· ὃς δὲ προσαίτας
Ἑςιάει πολύολβος· ἀναινομένων μέγα δεῖπνον,
Παρβολίη θεόφραςος· ἐφεσπομένοισι δ' ἀνάγκη.
Χειςὸν ἐρᾶν, μισεῦντες τὴν γέσιν ἶσα γονῆας,
Μὴ ψυχῆς τι θέλοντας ἀπαρτίσαι οἶκον ἀπείργῃ.

1 ΚΑΙ' ἐγένετο ἐν τῷ ἐλθεῖν αὐτὸν εἰς οἶκόν τινος τῶν ἀρχόντων τῶν Φαρισαίων σαββάτῳ φαγεῖν ἄρτον, καὶ αὐτοὶ ἦσαν παρατηρούμενοι αὐτῦ.
2 Καὶ ἰδοὺ, ἄνθρωπός τις ἦν ὑδρωπικὸς ἔμπροσθεν αὐτῦ.
3 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς τοὺς νομικοὺς καὶ Φαρισαίους, λέγων· Εἰ ἔξεστι τῷ σαββάτῳ θεραπεύειν; Οἱ δὲ ἡσύχασαν.
4 Καὶ ἐπιλαβόμενος ἰάσατο αὐτὸν, καὶ ἀπέλυσε.
5 Καὶ ἀποκριθεὶς πρὸς αὐτοὺς, εἶπε· Τίνος ὑμῶν ὄνος ἢ βοῦς εἰς φρέαρ ἐμπεσεῖται, καὶ οὐκ εὐθέως ἀνασπάσει αὐτὸν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τοῦ σαββάτου.
6 Καὶ οὐκ ἴσχυσαν ἀνταποκριθῆναι αὐτῷ πρὸς ταῦτα.
7 Ἔλεγε δὲ πρὸς τοὺς κεκλημένους παρα-

βολὴν, ἐπέχων πῶς τὰς πρωτοκλισίας ἐξε-
λέγοντο, λέγων πρὸς αὐτούς·
8 Ὅταν κληθῇς ὑπό τινος εἰς γάμους,
μὴ κατακλιθῇς εἰς τὴν πρωτοκλισίαν· μή-
ποτε ἐντιμότερός σου ᾖ κεκλημένος ὑπ' αὐτοῦ.
9 Καὶ ἐλθὼν ὁ σὲ καὶ αὐτὸν καλέσας, ἐρεῖ
σοι· Δὸς τούτῳ τόπον· καὶ τότε ἄρξῃ μετ' αἰ-
σχύνης τὸν ἔσχατον τόπον κατέχειν.
10 Ἀλλ' ὅταν κληθῇς, πορευθεὶς ἀνάπε-
σον εἰς τὸν ἔσχατον τόπον· ἵνα ὅταν ἔλθῃ ὁ
κεκληκώς σε, εἴπῃ σοι· Φίλε, προσανά-
βηθι ἀνώτερον· τότε ἔσται σοι δόξα ἐνώπιον
τῶν συνανακειμένων σοι.
11 Ὅτι πᾶς ὁ ὑψῶν ἑαυτὸν, ταπεινωθή-
σεται· καὶ ὁ ταπεινῶν ἑαυτὸν, ὑψωθήσεται.
12 Ἔλεγε δὲ καὶ τῷ κεκληκότι αὐτόν. Ὅ-
ταν ποιῇς ἄριστον ἢ δεῖπνον, μὴ φώνει τοὺς
φίλους σου, μηδὲ τοὺς ἀδελφούς σου, μηδὲ τοὺς
συγγενεῖς σου, μηδὲ γείτονας πλουσίους· μή-
ποτε καὶ αὐτοί σε ἀντικαλέσωσι, καὶ γένηταί
σοι ἀνταπόδομα.
13 Ἀλλ' ὅταν ποιῇς δοχὴν, κάλει πτω-
χοὺς, ἀναπήρους, χωλοὺς, τυφλούς.
14 Καὶ μακάριος ἔσῃ· ὅτι οὐκ ἔχουσιν ἀν-
ταποδοῦναί σοι· ἀνταποδοθήσεται γάρ σοι
ἐν τῇ ἀναστάσει τῶν δικαίων.
15 Ἀκούσας δέ τις τῶν συνανακειμένων
ταῦτα εἶπεν αὐτῷ· Μακάριος ὃς φάγεται ἄρ-
τον ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.
16 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ἄνθρωπός τις
ἐποίησε δεῖπνον μέγα, καὶ ἐκάλεσε πολλούς·
17 Καὶ ἀπέστειλε τὸν δοῦλον αὐτοῦ τῇ ὥρᾳ
τοῦ δείπνου εἰπεῖν τοῖς κεκλημένοις· Ἔρχεσθε
ὅτι ἤδη ἕτοιμά ἐστι πάντα.

18 Καὶ

18 Καὶ ἤρξαντο ἀπὸ μιᾶς παραιτεῖσθαι πάντες. Ὁ πρῶτος εἶπεν αὐτῷ· Ἀγρὸν ἠγόρασα, καὶ ἔχω ἀνάγκην ἐξελθεῖν καὶ ἰδεῖν αὐτόν· ἐρωτῶ σε, ἔχε με παρῃτημένον.

19 Καὶ ἕτερος εἶπε· Ζεύγη βοῶν ἠγόρασα πέντε, καὶ πορεύομαι δοκιμάσαι αὐτά· ἐρωτῶ σε, ἔχε με παρῃτημένον.

20 Καὶ ἕτερος εἶπε· Γυναῖκα ἔγημα, καὶ διὰ τοῦτο οὐ δύναμαι ἐλθεῖν.

21 Καὶ παραγενόμενος ὁ δοῦλος ἐκεῖνος ἀπήγγειλε τῷ κυρίῳ αὐτοῦ ταῦτα. Τότε ὀργισθεὶς ὁ οἰκοδεσπότης εἶπε τῷ δούλῳ αὐτοῦ· Ἔξελθε ταχέως εἰς τὰς πλατείας καὶ ῥύμας τῆς πόλεως, καὶ τοὺς πτωχοὺς καὶ ἀναπήρους καὶ χωλοὺς καὶ τυφλοὺς εἰσάγαγε ὧδε.

22 Καὶ εἶπεν ὁ δοῦλος· Κύριε, γέγονεν ὡς ἐπέταξας, καὶ ἔτι τόπος ἐστί.

23 Καὶ εἶπεν ὁ κύριος πρὸς τὸν δοῦλον· Ἔξελθε εἰς τὰς ὁδοὺς καὶ φραγμούς, καὶ ἀνάγκασον εἰσελθεῖν, ἵνα γεμισθῇ ὁ οἶκός μου.

24 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι οὐδεὶς τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων τῶν κεκλημένων γεύσεταί μου τοῦ δείπνου.

25 Συνεπορεύοντο δὲ αὐτῷ ὄχλοι πολλοί· καὶ στραφεὶς εἶπε πρὸς αὐτούς·

26 Εἴ τις ἔρχεται πρός με, καὶ οὐ μισεῖ τὸν πατέρα ἑαυτοῦ, καὶ τὴν μητέρα, καὶ τὴν γυναῖκα, καὶ τὰ τέκνα, καὶ τοὺς ἀδελφούς, καὶ τὰς ἀδελφάς, ἔτι δὲ καὶ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν, οὐ δύναταί μου μαθητὴς εἶναι.

27 Καὶ ὅστις οὐ βαστάζει τὸν σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἔρχεται ὀπίσω μου, οὐ δύναταί μου εἶναι μαθητής.

28 Τίς γὰρ ἐξ ὑμῶν, θέλων πύργον οἰ-

οἰκοδομῆσαι, οὐχὶ πρῶτον καθίσας ψηφίζει
τὴν δαπάνην, εἰ ἔχει τὰ πρὸς ἀπαρτισμόν;
29 Ἵνα μήποτε θέντος αὐτοῦ θεμέλιον,
καὶ μὴ ἰσχύοντος ἐκτελέσαι, πάντες οἱ θεω-
ροῦντες ἄρξωνται ἐμπαίζειν αὐτῷ,
30 Λέγοντες· Ὅτι οὗτος ὁ ἄνθρωπος ἤρ-
ξατο οἰκοδομεῖν, καὶ οὐκ ἴσχυσεν ἐκτελέσαι.
31 Ἢ τίς βασιλεὺς πορευόμενος συμβα-
λεῖν ἑτέρῳ βασιλεῖ εἰς πόλεμον, οὐχὶ κα-
θίσας πρῶτον βουλεύεται εἰ δυνατός ἐστιν ἐν
δέκα χιλιάσιν ἀπαντῆσαι τῷ μετὰ εἴκοσι
χιλιάδων ἐρχομένῳ ἐπ' αὐτόν;
32 Εἰ δὲ μήγε, ἔτι αὐτοῦ πόρρω ὄντος, πρε-
σβείαν ἀποστείλας, ἐρωτᾷ τὰ πρὸς εἰρήνην.
33 Οὕτως οὖν, πᾶς ἐξ ὑμῶν ὃς οὐκ ἀπο-
τάσσεται πᾶσι τοῖς ἑαυτοῦ ὑπάρχουσιν, οὐ δύ-
ναταί μου εἶναι μαθητής.
34 Καλὸν τὸ ἅλας· ἐὰν δὲ τὸ ἅλας μω-
ρανθῇ, ἐν τίνι ἀρτυθήσεται; Οὔτε εἰς γῆν,
οὔτε εἰς κοπρίαν εὔθετόν ἐστιν· ἔξω βάλλουσιν
αὐτό. Ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΕ΄. 15.

Πέντε δὲ καὶ δέκατον προολωλότος εὕρεσιν ἴσχει
Σὺν δραχμῇ προβάτοιο, καὶ ἄμμιγα νόσον
Ἀσώτου.

1 Ἦσαν δὲ ἐγγίζοντες αὐτῷ πάν-
τες οἱ τελῶναι καὶ οἱ ἁμαρτω-
λοί, ἀκούειν αὐτοῦ.
2 Καὶ διεγόγγυζον οἱ Φαρισαῖοι καὶ οἱ
Γραμματεῖς, λέγοντες· Ὅτι οὗτος ἁμαρτω-
λοὺς προσδέχεται, καὶ συνεσθίει αὐτοῖς.

3 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτοὺς τὴν παραβολὴν
ταύτην, λέγων·
4 Τίς ἄνθρωπος ἐξ ὑμῶν ἔχων ἑκατὸν
πρόβατα, καὶ ἀπολέσας ἓν ἐξ αὐτῶν, οὐ κα-
ταλείπει τὰ ἐννενηκονταεννέα ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ
πορεύεται ἐπὶ τὸ ἀπολωλὸς, ἕως εὕρῃ αὐτό;
5 Καὶ εὑρὼν ἐπιτίθησιν ἐπὶ τοὺς ὤμους
ἑαυτοῦ χαίρων·
6 Καὶ ἐλθὼν εἰς τὸν οἶκον, συγκαλεῖ
τοὺς φίλους καὶ τοὺς γείτονας, λέγων αὐτοῖς·
Συγχάρητέ μοι, ὅτι εὗρον τὸ πρόβατόν μου
τὸ ἀπολωλός.
7 Λέγω ὑμῖν ὅτι οὕτω χαρὰ ἔςαι ἐν τῷ
οὐρανῷ ἐπὶ ἑνὶ ἁμαρτωλῷ μετανοοῦντι, ἢ ἐπὶ
ἐννενηκονταεννέα δικαίοις, οἵτινες οὐ χρείαν
ἔχουσι μετανοίας.
8 Ἢ τίς γυνὴ δραχμὰς ἔχουσα δέκα,
ἐὰν ἀπολέσῃ δραχμὴν μίαν, οὐχὶ ἅπτει
λύχνον, καὶ σαροῖ τὴν οἰκίαν, καὶ ζητεῖ ἐπι-
μελῶς, ἕως ὅτου εὕρῃ;
9 Καὶ εὑροῦσα συγκαλεῖται τὰς φίλας καὶ
τὰς γείτονας, λέγουσα· Συγχάρητέ μοι,
ὅτι εὗρον τὴν δραχμὴν ἣν ἀπώλεσα.
10 Οὕτω, λέγω ὑμῖν, χαρὰ γίνεται
ἐνώπιον τῶν ἀγγέλων τοῦ Θεοῦ ἐπὶ ἑνὶ ἁμαρ-
τωλῷ μετανοοῦντι.
11 Εἶπε δέ· Ἄνθρωπός τις εἶχε δύο Υἱούς.
12 Καὶ εἶπεν ὁ νεώτερος αὐτῶν τῷ Πα-
τρί· Πάτερ, δός μοι τὸ ἐπιβάλλον μέρος τῆς
οὐσίας. Καὶ διεῖλεν αὐτοῖς τὸν βίον.
13 Καὶ μετ᾽ οὐ πολλὰς ἡμέρας συναγα-
γὼν ἅπαντα ὁ νεώτερος Υἱὸς ἀπεδήμησεν
εἰς χώραν μακράν· καὶ ἐκεῖ διεσκόρπισε τὴν
οὐσίαν αὐτοῦ, ζῶν ἀσώτως.

14 Δαπανήσαντος δὲ αὐτοῦ πάντα, ἐγέ-
νετο λιμὸς ἰσχυρὸς κατὰ τὴν χώραν ἐκείνην·
καὶ αὐτὸς ἤρξατο ὑστερεῖσθαι.
15 Καὶ πορευθεὶς ἐκολλήθη ἑνὶ τῶν πο-
λιτῶν τῆς χώρας ἐκείνης· καὶ ἔπεμψεν αὐτὸν
εἰς τοὺς ἀγροὺς αὐτοῦ βόσκειν χοίρους.
16 Καὶ ἐπεθύμει γεμίσαι τὴν κοιλίαν
αὐτοῦ ἀπὸ τῶν κερατίων ὧν ἤσθιον οἱ χοῖροι·
καὶ οὐδεὶς ἐδίδου αὐτῷ.
17 Εἰς ἑαυτὸν δὲ ἐλθὼν, εἶπε· Πόσοι
μίσθιοι τοῦ Πατρός μου περισσεύουσιν ἄρτων,
ἐγὼ δὲ λιμῷ ἀπόλλυμαι.
18 Ἀναστὰς πορεύσομαι πρὸς τὸν Πατέ-
ρα μου, καὶ ἐρῶ αὐτῷ· Πάτερ, ἥμαρτον εἰς
τὸν οὐρανὸν, καὶ ἐνώπιόν σου·
19 Καὶ οὐκέτι εἰμὶ ἄξιος κληθῆναι Υἱός
σου· ποίησόν με ὡς ἕνα τῶν μισθίων σου.
20 Καὶ ἀναστὰς ἦλθε πρὸς τὸν Πατέρα
ἑαυτοῦ. Ἔτι δὲ αὐτοῦ μακρὰν ἀπέχοντος,
εἶδεν αὐτὸν ὁ Πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἐσπλαγχνί-
σθη· καὶ δραμὼν ἐπέπεσεν ἐπὶ τὸν τράχηλον
αὐτοῦ, καὶ κατεφίλησεν αὐτόν.
21 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Υἱός· Πάτερ, ἥ-
μαρτον εἰς τὸν οὐρανὸν καὶ ἐνώπιόν σου, καὶ οὐκέτι
εἰμὶ ἄξιος κληθῆναι Υἱός σου.
22 Εἶπε δὲ ὁ Πατὴρ πρὸς τοὺς δούλους
αὐτοῦ· Ἐξενέγκατε τὴν στολὴν τὴν πρώτην,
καὶ ἐνδύσατε αὐτὸν, καὶ δότε δακτύλιον εἰς
τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ ὑποδήματα εἰς τοὺς πόδας.
23 Καὶ ἐνέγκαντες τὸν μόσχον τὸν σιτευτὸν
θύσατε, καὶ φαγόντες εὐφρανθῶμεν·
24 Ὅτι οὗτος ὁ Υἱός μου νεκρὸς ἦν, καὶ
ἀνέζησε· καὶ ἀπολωλὼς ἦν, καὶ εὑρέθη. Καὶ
ἤρξαντο εὐφραίνεσθαι.

25 Ην δὲ ὁ Υἱὸς αὐτοῦ ὁ πρεσβύτερος ἐν
ἀγρῷ· καὶ ὡς ἐρχόμενος ἤγγισε τῇ οἰκίᾳ,
ἤκουσε συμφωνίας καὶ χορῶν·
26 Καὶ προσκαλεσάμενος ἕνα τῶν παί-
δων ἐπυνθάνετο τί εἴη ταῦτα.
27 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι ὁ ἀδελφός
σου ἥκει· καὶ ἔθυσεν ὁ Πατήρ σου τὸν μόσχον
τὸν σιτευτὸν, ὅτι ὑγιαίνοντα αὐτὸν ἀπέλαβεν.
28 Ὠργίσθη δὲ, καὶ οὐκ ἤθελεν εἰσελθεῖν·
ὁ οὖν Πατὴρ αὐτοῦ ἐξελθὼν παρεκάλει αὐτόν.
29 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε τῷ Πατρί·
Ἰδοὺ, τοσαῦτα ἔτη δουλεύω σοι, καὶ οὐδέποτε
ἐντολήν σου παρῆλθον, καὶ ἐμοὶ οὐδέποτε
ἔδωκας ἔριφον, ἵνα μετὰ τῶν φίλων μου εὐ-
φρανθῶ.
30 Ὅτε δὲ ὁ Υἱός σου οὗτος, ὁ καταφα-
γών σου τὸν βίον μετὰ πορνῶν, ἦλθεν, ἔθυ-
σας αὐτῷ τὸν μόσχον τὸν σιτευτόν.
31 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Τέκνον, σὺ πάντοτε
μετ' ἐμοῦ εἶ, καὶ πάντα τὰ ἐμὰ, σά ἐστιν.
32 Εὐφρανθῆναι δὲ καὶ χαρῆναι ἔδει, ὅτι
ὁ ἀδελφός σου οὗτος νεκρὸς ἦν, καὶ ἀνέζησε,
καὶ ἀπολωλὼς ἦν, καὶ εὑρέθη.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ις'. 16.

Οἰκονόμον δ' ἀδικοῦντα δὶς ὄγδοον αὐτακο-
μίζει,
Οὗ δόλον ἐξ ἰδίων μιμητέον ἀμφὶ πενήτων.
Πλούσιον εἰς ᾅδου, κόλπων δ' ἐπὶ Λάζαρον
Ἄβραμ.

1 ΕΛεγε δὲ καὶ πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐ-
τοῦ· Ἄνθρωπός τις ἦν πλούσιος,
ὃς

ὃς εἶχεν οἰκονόμον· καὶ οὗτος διεβλήθη αὐτῷ
ὡς διασκορπίζων τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ.
2 Καὶ φωνήσας αὐτὸν, εἶπεν αὐτῷ· Τί
τοῦτο ἀκούω περὶ σοῦ; ἀπόδος τὸν λόγον τῆς
οἰκονομίας σου· οὐ γὰρ δυνήσῃ ἔτι οἰκονομεῖν.
3 Εἶπε δὲ ἐν ἑαυτῷ ὁ οἰκονόμος· Τί
ποιήσω, ὅτι ὁ Κύριός μου ἀφαιρεῖται τὴν οἰ-
κονομίαν ἀπ' ἐμοῦ; σκάπτειν οὐκ ἰσχύω, ἐπαι-
τεῖν αἰσχύνομαι.
4 Ἔγνων τί ποιήσω, ἵνα ὅταν μετασταθῶ τῆς
οἰκονομίας, δέξωνταί με εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν.
5 Καὶ προσκαλεσάμενος ἕνα ἕκαστον τῶν
χρεωφειλετῶν τοῦ Κυρίου ἑαυτοῦ, ἔλεγε τῷ πρώ-
τῳ· Πόσον ὀφείλεις τῷ Κυρίῳ μου;
6 Ὁ δὲ εἶπεν· Ἑκατὸν βάτους ἐλαίου.
Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Δέξαι σου τὸ γράμμα, καὶ
καθίσας ταχέως γράψον πεντήκοντα.
7 Ἔπειτα ἑτέρῳ εἶπε· Σὺ δὲ πόσον ὀ-
φείλεις; Ὁ δὲ εἶπεν· Ἑκατὸν κόρους σίτου.
Καὶ λέγει αὐτῷ· Δέξαι σου τὸ γράμμα,
καὶ γράψον ὀγδοήκοντα.
8 Καὶ ἐπήνεσεν ὁ Κύριος τὸν οἰκονόμον τῆς
ἀδικίας, ὅτι φρονίμως ἐποίησεν· ὅτι οἱ
Υἱοὶ τοῦ αἰῶνος τούτου φρονιμώτεροι ὑπὲρ τοὺς
Υἱοὺς τοῦ φωτὸς εἰς τὴν γενεὰν τὴν ἑαυτῶν εἰσι.
9 Κἀγὼ ὑμῖν λέγω· Ποιήσατε ἑαυτοῖς
φίλους ἐκ τοῦ μαμωνᾶ τῆς ἀδικίας· ἵνα ὅταν
ἐκλίπητε, δέξωνται ὑμᾶς εἰς τὰς αἰωνίους
σκηνάς.
10 Ὁ πιστὸς ἐν ἐλαχίστῳ, καὶ ἐν πολλῷ
πιστός ἐστι· καὶ ὁ ἐν ἐλαχίστῳ ἄδικος, καὶ ἐν
πολλῷ ἄδικός ἐστιν.
11 Εἰ οὖν ἐν τῷ ἀδίκῳ μαμωνᾷ πιστοὶ οὐκ
ἐγένεσθε, τὸ ἀληθινὸν τίς ὑμῖν πιστεύσει;

12 Καὶ εἰ ἐν τῷ ἀλλοτρίῳ πιστοὶ οὐκ ἐγένεσθε, τὸ ὑμέτερον τίς ὑμῖν δώσει;

13 Οὐδεὶς οἰκέτης δύναται δυσὶ κυρίοις δουλεύειν· ἢ γὰρ τὸν ἕνα μισήσει, καὶ τὸν ἕτερον ἀγαπήσει· ἢ ἑνὸς ἀνθέξεται, καὶ τοῦ ἑτέρου καταφρονήσει. οὐ δύνασθε Θεῷ δουλεύειν καὶ μαμωνᾷ.

14 Ἤκουον δὲ ταῦτα πάντα καὶ οἱ Φαρισαῖοι, φιλάργυροι ὑπάρχοντες· καὶ ἐξεμυκτήριζον αὐτόν.

15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐστε οἱ δικαιοῦντες ἑαυτοὺς ἐνώπιον τῶν ἀνθρώπων· ὁ δὲ Θεὸς γινώσκει τὰς καρδίας ὑμῶν· ὅτι τὸ ἐν ἀνθρώποις ὑψηλὸν, βδέλυγμα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἐστιν.

16 Ὁ νόμος καὶ οἱ Προφῆται ἕως Ἰωάννου· ἀπὸ τότε ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ εὐαγγελίζεται, καὶ πᾶς εἰς αὐτὴν βιάζεται.

17 Εὐκοπώτερον δέ ἐστι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν παρελθεῖν, ἢ τοῦ νόμου μίαν κεραίαν πεσεῖν.

18 Πᾶς ὁ ἀπολύων τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ γαμῶν ἑτέραν, μοιχεύει· καὶ πᾶς ὁ ἀπολελυμένην ἀπὸ ἀνδρὸς γαμῶν, μοιχεύει.

19 Ἄνθρωπος δέ τις ἦν πλούσιος, καὶ ἐνεδιδύσκετο πορφύραν καὶ βύσσον, εὐφραινόμενος καθ' ἡμέραν λαμπρῶς.

20 Πτωχὸς δέ τις ἦν ὀνόματι Λάζαρος, ὃς ἐβέβλητο πρὸς τὸν πυλῶνα αὐτοῦ ἡλκωμένος·

21 Καὶ ἐπιθυμῶν χορτασθῆναι ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν πιπτόντων ἀπὸ τῆς τραπέζης τοῦ πλουσίου· ἀλλὰ καὶ οἱ κύνες ἐρχόμενοι ἀπέλειχον τὰ ἕλκη αὐτοῦ.

22 Ἐγένετο δὲ ἀποθανεῖν τὸν πτωχὸν, καὶ ἀπενεχθῆναι αὐτὸν ὑπὸ τῶν ἀγγέλων εἰς

τὸν

τὸν κόλπον τοῦ Ἀβραάμ· ἀπέθανε δὲ καὶ ὁ
πλούσιος, καὶ ἐτάφη.
23 Καὶ ἐν τῷ ᾅδῃ ἐπάρας τοὺς ὀφθαλ-
μοὺς αὐτοῦ, ὑπάρχων ἐν βασάνοις, ὁρᾷ τὸν
Ἀβραὰμ ἀπὸ μακρόθεν, καὶ Λάζαρον ἐν
τοῖς κόλποις αὐτοῦ.
24 Καὶ αὐτὸς φωνήσας εἶπε, Πάτερ Ἀ-
βραάμ, ἐλέησόν με, καὶ πέμψον Λάζαρον,
ἵνα βάψῃ τὸ ἄκρον τοῦ δακτύλου αὐτοῦ ὕδα-
τος, καὶ καταψύξῃ τὴν γλῶσσάν μου· ὅτι
ὀδυνῶμαι ἐν τῇ φλογὶ ταύτῃ.
25 Εἶπε δὲ Ἀβραάμ· Τέκνον, μνήσθητι
ὅτι ἀπέλαβες σὺ τὰ ἀγαθά σου ἐν τῇ ζωῇ
σου, καὶ Λάζαρος ὁμοίως τὰ κακά· νῦν δὲ
ὅδε παρακαλεῖται, σὺ δὲ ὀδυνᾶσαι.
26 Καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις, μεταξὺ ἡμῶν καὶ
ὑμῶν χάσμα μέγα ἐστήρικται, ὅπως οἱ θέ-
λοντες διαβῆναι ἐντεῦθεν πρὸς ὑμᾶς, μὴ
δύνωνται, μηδὲ οἱ ἐκεῖθεν πρὸς ἡμᾶς δια-
περῶσιν.
27 Εἶπε δέ· Ἐρωτῶ οὖν σε Πάτερ, ἵνα
πέμψῃς αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Πατρός μου·
28 Ἔχω γὰρ πέντε ἀδελφούς, ὅπως δια-
μαρτύρηται αὐτοῖς, ἵνα μὴ καὶ αὐτοὶ ἔλθω-
σιν εἰς τὸν τόπον τοῦτον τῆς βασάνου.
29 Λέγει αὐτῷ Ἀβραάμ· Ἔχουσι Μω-
σέα καὶ τοὺς Προφήτας· ἀκουσάτωσαν αὐτῶν.
30 Ὁ δὲ εἶπεν· Οὐχί, Πάτερ Ἀ-
βραάμ· ἀλλ' ἐάν τις ἀπὸ νεκρῶν πορευθῇ
πρὸς αὐτούς, μετανοήσουσιν.
31 Εἶπε δὲ αὐτῷ· Εἰ Μωσέως καὶ τῶν
Προφητῶν οὐκ ἀκούουσιν, οὐδὲ ἐάν τις ἐκ νεκρῶν
ἀναστῇ, πεισθήσονται.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΖ'. 17.

Ἑπτὰ δὲ καὶ δέκατον τὸ σκάνδαλον εἰς ἅλα
βάλλει.
Μυριάκις δ' ἀφέμεν τε ἀλιτραίνουσι κελεύει.
Σφᾶς τε καλεῖν, τελέσαντας ἐφημοσύνας
περ, ἀχρείους.
Καὶ δέκα λεπροφόρων εὐγνώμονα τὸν Σα-
μαρείτην.
Αἰφνιδίαν τ' ἐπέλευσιν ἐπουρανίοιο κειτᾶο.

1 ΕΙ'πε δὲ πρὸς τοὺς μαθητάς· Ἀνέν-
δεκτόν ἐστι μὴ ἐλθεῖν τὰ σκάνδα-
λα· οὐαὶ δὲ δι' οὗ ἔρχεται.
2 Λυσιτελεῖ αὐτῷ εἰ μύλος ὀνικὸς περί-
κειται περὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ ἔρριπται
εἰς τὴν θάλασσαν, ἢ ἵνα σκανδαλίσῃ ἕνα
τῶν μικρῶν τούτων.
3 Προσέχετε ἑαυτοῖς· Ἐὰν δὲ ἁμάρτῃ
εἰς σὲ ὁ ἀδελφός σου, ἐπιτίμησον αὐτῷ· καὶ
ἐὰν μετανοήσῃ, ἄφες αὐτῷ.
4 Καὶ ἐὰν ἑπτάκις τῆς ἡμέρας ἁμάρτῃ
εἰς σέ, καὶ ἑπτάκις τῆς ἡμέρας ἐπιστρέψῃ ἐπὶ
σέ, λέγων· Μετανοῶ, ἀφήσεις αὐτῷ.
5 Καὶ εἶπον οἱ ἀπόστολοι τῷ Κυρίῳ·
Πρόσθες ἡμῖν πίστιν.
6 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Εἰ ἔχετε πίστιν ὡς
κόκκον σινάπεως, ἐλέγετε ἂν τῇ συκαμίνῳ
ταύτῃ· Ἐκριζώθητι, καὶ φυτεύθητι ἐν τῇ
θαλάσσῃ· καὶ ὑπήκουσεν ἂν ὑμῖν.
7 Τίς δὲ ἐξ ὑμῶν δοῦλον ἔχων ἀροτριῶν-
τα, ἢ ποιμαίνοντα, ὃς εἰσελθόντι ἐκ τοῦ ἀ-
γροῦ ἐρεῖ εὐθέως· Παρελθὼν ἀνάπεσαι;

8 Ἀλλ'

8 Ἀλλ' οὐχὶ ἐρεῖ αὐτῷ· Ἑτοίμασον τί δει-
πνήσω, καὶ περιζωσάμενος διακόνει μοι,
ἕως φάγω καὶ πίω· καὶ μετὰ ταῦτα φάγεσαι καὶ
πίεσαι σύ;

9 Μὴ χάριν ἔχει τῷ δούλῳ ἐκείνῳ ὅτι
ἐποίησε τὰ διαταχθέντα αὐτῷ; οὐ δοκῶ.

10 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ποιήσητε πάντα
τὰ διαταχθέντα ὑμῖν, λέγετε· Ὅτι δοῦλοι
ἀχρεῖοί ἐσμεν· ὅτι ὃ ὠφείλομεν ποιῆσαι,
πεποιήκαμεν.

11 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτὸν εἰς
Ἱερουσαλὴμ, καὶ αὐτὸς διήρχετο διὰ μέσα
Σαμαρείας καὶ Γαλιλαίας.

12 Καὶ εἰσερχομένου αὐτοῦ εἴς τινα κώ-
μην, ἀπήντησαν αὐτῷ δέκα λεπροὶ ἄν-
δρες, οἳ ἔστησαν πόῤῥωθεν.

13 Καὶ αὐτοὶ ἦραν φωνὴν, λέγοντες·
Ἰησοῦ ἐπιστάτα, ἐλέησον ἡμᾶς.

14 Καὶ ἰδὼν εἶπεν αὐτοῖς· Πορευθέντες
ἐπιδείξατε ἑαυτοὺς τοῖς ἱερεῦσι· Καὶ ἐγένετο
ἐν τῷ ὑπάγειν αὐτοὺς, ἐκαθαρίσθησαν.

15 Εἷς δὲ ἐξ αὐτῶν, ἰδὼν ὅτι ἰάθη, ὑπέστρε-
ψε, μετὰ φωνῆς μεγάλης δοξάζων τὸν Θεόν.

16 Καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον παρὰ τοὺς
πόδας αὐτοῦ, εὐχαριστῶν αὐτῷ· καὶ αὐτὸς ἦν
Σαμαρείτης.

17 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Οὐ-
χὶ οἱ δέκα ἐκαθαρίσθησαν; οἱ δὲ ἐννέα ποῦ;

18 Οὐχ εὑρέθησαν ὑποστρέψαντες δοῦναι
δόξαν τῷ Θεῷ, εἰ μὴ ὁ ἀλλογενὴς οὗτος.

19 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἀναστὰς πορεύου·
ἡ πίστις σου σέσωκέ σε.

20 Ἐπερωτηθεὶς δὲ ὑπὸ τῶν Φαρισαίων
πότε ἔρχεται ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ; ἀπεκρίθη

αὐτοῖς, καὶ εἶπεν· Οὐκ ἔρχεται ἡ Βασιλεία
τοῦ Θεοῦ μετὰ παρατηρήσεως.
21 Οὐδὲ ἐροῦσιν· Ἰδοὺ, ὧδε, ἢ, ἰδοὺ
ἐκεῖ· ἰδοὺ γὰρ ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἐντὸς
ὑμῶν ἐστιν.
22 Εἶπε δὲ πρὸς τοὺς μαθητάς. Ἐλεύ-
σονται ἡμέραι, ὅτε ἐπιθυμήσετε μίαν τῶν
ἡμερῶν τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου ἰδεῖν· καὶ οὐκ
ὄψεσθε.
23 Καὶ ἐροῦσιν ὑμῖν· Ἰδοὺ ὧδε, ἢ, ἰδοὺ
ἐκεῖ· μὴ ἀπέλθητε, μηδὲ διώξητε.
24 Ὥσπερ γὰρ ἡ ἀστραπὴ ἡ ἀστράπτουσα
ἐκ τῆς ὑπ' οὐρανὸν, εἰς τὴν ὑπ' οὐρανὸν λάμ-
πει· οὕτως ἔσται καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ
ἡμέρᾳ αὐτοῦ.
25 Πρῶτον δὲ δεῖ αὐτὸν πολλὰ παθεῖν,
καὶ ἀποδοκιμασθῆναι ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης.
26 Καὶ καθὼς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις
τοῦ Νῶε, οὕτως ἔσται καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ
Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.
27 Ἤσθιον, ἔπινον, ἐγάμουν, ἐξεγαμί-
ζοντο, ἄχρι ἧς ἡμέρας εἰσῆλθε Νῶε εἰς
τὴν κιβωτόν· καὶ ἦλθεν ὁ κατακλυσμὸς, καὶ
ἀπώλεσεν ἅπαντας.
28 Ὁμοίως καὶ ὡς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέ-
ραις Λώτ· ἤσθιον, ἔπινον, ἠγόραζον, ἐπώ-
λουν, ἐφύτευον, ᾠκοδόμουν.
29 Ἧ δὲ ἡμέρᾳ ἐξῆλθε Λὼτ ἀπὸ Σο-
δόμων, ἔβρεξε πῦρ καὶ θεῖον ἀπ' οὐρανοῦ, καὶ
ἀπώλεσεν ἅπαντας.
30 Κατὰ ταῦτα ἔσται ᾗ ἡμέρᾳ ὁ Υἱὸς τοῦ
ἀνθρώπου ἀποκαλύπτεται.
31 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὃς ἔσται ἐπὶ τοῦ
δώματος, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ ἐν τῇ οἰκίᾳ, μὴ
κατα-

καταβάτω ἆραι αὐτά· καὶ ὁ ἐν τῷ ἀγρῷ,
ὁμοίως μὴ ἐπιστρεψάτω εἰς τὰ ὀπίσω.
32 Μνημονεύετε τῆς γυναικὸς Λώτ.
33 Ὃς ἐὰν ζητήσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶ-
σαι, ἀπολέσει αὐτήν· καὶ ὃς ἐὰν ἀπολέσῃ
αὐτὴν, ζωογονήσει αὐτήν.
34 Λέγω ὑμῖν, ταύτῃ τῇ νυκτὶ ἔσονται
δύο ἐπὶ κλίνης μιᾶς· ὁ εἷς παραληφθήσε-
ται, καὶ ὁ ἕτερος ἀφεθήσεται.
35 Δύο ἔσονται ἀλήθουσαι ἐπὶ τὸ αὐτό·
ἡ μία παραληφθήσεται, καὶ ἡ ἑτέρα ἀφε-
θήσεται.
36 Δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγρῷ· ὁ εἷς πα-
ραληφθήσεται, καὶ ὁ ἕτερος ἀφεθήσεται.
37 Καὶ ἀποκριθέντες λέγουσιν αὐτῷ· Ποῦ
Κύριε; Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅπου τὸ σῶ-
μα, ἐκεῖ συναχθήσονται οἱ ἀετοί.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΗ'. 18.

Δὶς δ' ἐνάτῳ χήρας τε, κειτοῦ τ' ἀδίκου κλύε μῦθον.
Κόμπον τ' εὐχομένοιο, καὶ αὐτίκα δάκρυ τελώνου.
Εὐλογίην παίδων, οἷς Οὐρανὸς ἀμβατὸς οἵοις.
Ὅς γε πολυκτεάνοισι πέλει ῥαφὶς οἷα καμήλῳ.
Τοῖς δ' ὑποταξαμένοισι Θεῷ πυλεῶνας ἀνοίγει.
Καὶ τυφλὸν εἰσορόοντα τῆς Ἱεριχούντιον οὔδοις.

1 ΕʼΛεγε δὲ καὶ παραβολὴν αὐτοῖς
πρὸς τὸ δεῖν πάντοτε προσεύχε-
σθαι, καὶ μὴ ἐκκακεῖν,

2 Λέγων· Κριτής τις ἦν ἔν τινι πόλει, τὸν Θεὸν μὴ φοβούμενος, καὶ ἄνθρωπον μὴ ἐντρεπόμενος.

3 Χήρα δέ τις ἦν ἐν τῇ πόλει ἐκείνῃ· καὶ ἤρχετο πρὸς αὐτὸν, λέγουσα· Ἐκδίκησόν με ἀπὸ τοῦ ἀντιδίκου μου.

4 Καὶ οὐκ ἠθέλησεν ἐπὶ χρόνον· μετὰ δὲ ταῦτα εἶπεν ἐν ἑαυτῷ· Εἰ καὶ τὸν Θεὸν οὐ φοβοῦμαι, καὶ ἄνθρωπον οὐκ ἐντρέπομαι,

5 Διάγε τὸ παρέχειν μοι κόπον τὴν χήραν ταύτην, ἐκδικήσω αὐτήν. ἵνα μὴ εἰς τέλος ἐρχομένη ὑπωπιάζῃ με.

6 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Ἀκούσατε τί ὁ κριτὴς τῆς ἀδικίας λέγει.

7 Ὁ δὲ Θεὸς οὐ μὴ ποιήσει τὴν ἐκδίκησιν τῶν ἐκλεκτῶν αὐτοῦ τῶν βοώντων πρὸς αὐτὸν ἡμέρας καὶ νυκτὸς, καὶ μακροθυμῶν ἐπ᾽ αὐτοῖς;

8 Λέγω ὑμῖν ὅτι ποιήσει τὴν ἐκδίκησιν αὐτῶν ἐν τάχει· πλὴν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐλθὼν ἆρα εὑρήσει τὴν πίστιν ἐπὶ τῆς γῆς;

9 Εἶπε δὲ καὶ πρός τινας τοὺς πεποιθότας ἐφ᾽ ἑαυτοῖς ὅτι εἰσὶ δίκαιοι, καὶ ἐξουθενοῦντας τοὺς λοιποὺς, τὴν παραβολὴν ταύτην.

10 Ἄνθρωποι δύο ἀνέβησαν εἰς τὸ ἱερὸν προσεύξασθαι· ὁ εἷς Φαρισαῖος, καὶ ὁ ἕτερος τελώνης.

11 Ὁ Φαρισαῖος σταθεὶς πρὸς ἑαυτὸν ταῦτα προσηύχετο· Ὁ Θεὸς, εὐχαριστῶ σοι, ὅτι οὐκ εἰμὶ ὥσπερ οἱ λοιποὶ τῶν ἀνθρώπων, ἅρπαγες, ἄδικοι, μοιχοὶ, ἢ καὶ ὡς οὗτος ὁ τελώνης.

12 Νηστεύω δὶς τοῦ Σαββάτου, ἀποδεκατῶ πάντα ὅσα κτῶμαι.

13 Καὶ ὁ τελώνης μακρόθεν ἑστὼς οὐκ ἤθε-

λεν

λεν οὐδὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς εἰς τὸν οὐρανὸν ἐπᾶραι·
ἀλλ᾽ ἔτυπτεν εἰς τὸ στῆθος αὐτοῦ, λέγων· Ὁ
Θεὸς ἱλάσθητί μοι τῷ ἁμαρτωλῷ.
14 Λέγω ὑμῖν, κατέβη οὗτος δεδικαιω-
μένος εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, ἢ ἐκεῖνος· ὅτι πᾶς
ὁ ὑψῶν ἑαυτὸν, ταπεινωθήσεται· ὁ δὲ τα-
πεινῶν ἑαυτὸν ὑψωθήσεται.
15 Προσέφερον δὲ αὐτῷ καὶ τὰ βρέφη, ἵνα
αὐτῶν ἅπτηται· ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ ἐπε-
τίμησαν αὐτοῖς.
16 Ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος αὐτὰ,
εἶπεν· Ἄφετε τὰ παιδία ἔρχεσθαι πρός με,
καὶ μὴ κωλύετε αὐτά· τῶν γὰρ τοιούτων ἐστὶν
ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ.
17 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὃς ἐὰν μὴ δέξη-
ται τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ὡς παιδίον, οὐ
μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐτήν.
18 Καὶ ἐπηρώτησέ τις αὐτὸν ἄρχων, λέ-
γων· Διδάσκαλε ἀγαθὲ, τί ποιήσας ζωὴν
αἰώνιον κληρονομήσω;
19 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τί με λέγεις
ἀγαθόν; οὐδεὶς ἀγαθὸς, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός.
20 Τὰς ἐντολὰς οἶδας· Μὴ μοιχεύσῃς·
Μὴ φονεύσῃς· Μὴ κλέψῃς· Μὴ ψευδομαρ-
τυρήσῃς· Τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα σου.
21 Ὁ δὲ εἶπε· Ταῦτα πάντα ἐφυλαξά-
μην ἐκ νεότητός μου.
22 Ἀκούσας δὲ ταῦτα ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐ-
τῷ· Ἔτι ἕν σοι λείπει· πάντα ὅσα ἔχεις πώ-
λησον, καὶ διάδος πτωχοῖς, καὶ ἕξεις θησαυ-
ρὸν ἐν οὐρανῷ· καὶ δεῦρο, ἀκολούθει μοι.
23 Ὁ δὲ, ἀκούσας ταῦτα, περίλυπος
ἐγένετο· ἦν γὰρ πλούσιος σφόδρα.
24 Ἰδὼν δὲ αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς περίλυπον

γενό-

γενόμενον, εἶπε· Πῶς δυσκόλως οἱ τὰ χρή-
ματα ἔχοντες εἰσελεύσονται εἰς τὴν Βασι-
λείαν τοῦ Θεοῦ.
25 Εὐκοπώτερον γάρ ἐστι κάμηλον διὰ
τρυμαλιᾶς ῥαφίδος εἰσελθεῖν, ἢ πλούσιον
εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.
26 Εἶπον δὲ οἱ ἀκούσαντες· Καὶ τίς δύ-
ναται σωθῆναι;
27 Ο' δὲ εἶπε· Τὰ ἀδύνατα παρὰ ἀν-
θρώποις, δυνατά ἐστι παρὰ τῷ Θεῷ.
28 Εἶπε δὲ ὁ Πέτρος· Ι'δού, ἡμεῖς ἀ-
φήκαμεν πάντα, καὶ ἠκολουθήσαμέν σοι.
29 Ο' δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Α'μὴν λέγω ὑ-
μῖν, ὅτι οὐδείς ἐστιν, ὃς ἀφῆκεν οἰκίαν, ἢ γο-
νεῖς, ἢ ἀδελφούς, ἢ γυναῖκα, ἢ τέκνα,
ἕνεκεν τῆς Βασιλείας τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν.
30 Ο'ς οὐ μὴ ἀπολάβῃ πολλαπλασίονα
ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ, καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχο-
μένῳ ζωὴν αἰώνιον.
31 Παραλαβὼν δὲ τοὺς δώδεκα, εἶπε
πρὸς αὐτούς· Ι'δού, ἀναβαίνομεν εἰς Ι'εροσό-
λυμα, καὶ τελεσθήσεται πάντα τὰ γεγραμμέ-
να διὰ τῶν Προφητῶν, τῷ Υἱῷ τοῦ ἀνθρώπου.
32 Παραδοθήσεται γὰρ τοῖς ἔθνεσι, καὶ
ἐμπαιχθήσεται, καὶ ὑβρισθήσεται, καὶ ἐμ-
πτυσθήσεται·
33 Καὶ μαστιγώσαντες ἀποκτενοῦσιν αὐ-
τόν· καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ ἀναστήσεται.
34 Καὶ αὐτοὶ οὐδὲν τούτων συνῆκαν· καὶ
ἦν τὸ ῥῆμα τοῦτο κεκρυμμένον ἀπ' αὐτῶν,
καὶ οὐκ ἐγίνωσκον τὰ λεγόμενα.
35 Ε'γένετο δὲ ἐν τῷ ἐγγίζειν αὐτὸν εἰς
Ι'εριχώ, τυφλός τις ἐκάθητο παρὰ τὴν ὁ-
δὸν προσαιτῶν.

36 Α'κού-

36 Α'κούσας δὲ ὄχλου διαπορευομένου, ἐπυνθάνετο τί εἴη τοῦτο.

37 Α'πήγγειλαν δὲ αὐτῷ, ὅτι Ι'ησοῦς ὁ Ναζωραῖος παρέρχεται.

38 Καὶ ἐβόησε, λέγων· Ι'ησοῦ Υἱὲ Δαβὶδ, ἐλέησόν με.

39 Καὶ οἱ προάγοντες ἐπετίμων αὐτῷ ἵνα σιωπήσῃ· αὐτὸς δὲ πολλῷ μᾶλλον ἔκραζεν· Υἱὲ Δαβὶδ, ἐλέησόν με.

40 Σταθεὶς δὲ ὁ Ι'ησοῦς ἐκέλευσεν αὐτὸν ἀχθῆναι πρὸς αὐτόν. ἐγγίσαντος δὲ αὐτοῦ ἐπηρώτησεν αὐτὸν,

41 Λέγων· τί σοι θέλεις ποιήσω; Ο' δὲ εἶπε· Κύριε, ἵνα ἀναβλέψω.

42 Καὶ ὁ Ι'ησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Α'νάβλεψον· ἡ πίστις σου σέσωκέ σε.

43 Καὶ παραχρῆμα ἀνέβλεψε, καὶ ἠκολούθει αὐτῷ δοξάζων τὸν Θεόν· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἰδὼν, ἔδωκεν αἶνον τῷ Θεῷ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΘ'. 19.

Εἰς ἔνατον δέκατόν τε προβὰς Ζακχαίου ὁράσεις.
Μνῶν τε νομὴν δούλοισι. κορυμβοφέρους τε πολίτας,
Ε'κ Σολύμων. ᾄδοντας ἀπαντιάσαι βασιλῆϊ.
Κλαιομένην τε πόλιν, τῆς οὐ λίθος ἔμπεδος εἴη.
Ε'κ τε πυλῶν πωλοῦντας ἐλαυνομένους Ι'εροῖο.

1 ΚΑὶ εἰσελθὼν διήρχετο τὴν Ι'εριχώ.

2 Καὶ

2 Καὶ ἰδοὺ, ἀνὴρ ὀνόματι καλούμενος
Ζακχαῖος· καὶ αὐτὸς ἦν ἀρχιτελώνης, καὶ οὗτος
ἦν πλούσιος.
3 Καὶ ἐζήτει ἰδεῖν τὸν Ἰησοῦν τίς ἐστι·
καὶ οὐκ ἠδύνατο ἀπὸ τοῦ ὄχλου, ὅτι τῇ ἡλικίᾳ
μικρὸς ἦν.
4 Καὶ προδραμὼν ἔμπροσθεν, ἀνέβη ἐπὶ
συκομωραίαν, ἵνα ἴδῃ αὐτόν· ὅτι δι' ἐκείνης
ἤμελλε διέρχεσθαι.
5 Καὶ ὡς ἦλθεν ἐπὶ τὸν τόπον, ἀναβλέ-
ψας ὁ Ἰησοῦς εἶδεν αὐτὸν, καὶ εἶπε πρὸς αὐ-
τόν· Ζακχαῖε, σπεύσας κατάβηθι· σήμερον
γὰρ ἐν τῷ οἴκῳ σου δεῖ με μεῖναι.
6 Καὶ σπεύσας κατέβη, καὶ ὑπεδέξατο
αὐτὸν χαίρων.
7 Καὶ ἰδόντες ἅπαντες διεγόγγυζον,
λέγοντες· Ὅτι παρὰ ἁμαρτωλῷ ἀνδρὶ εἰ-
σῆλθε καταλῦσαι.
8 Σταθεὶς δὲ Ζακχαῖος εἶπε πρὸς τὸν Κύ-
ριον· Ἰδοὺ, τὰ ἡμίση τῶν ὑπαρχόντων μου,
Κύριε, δίδωμι τοῖς πτωχοῖς· καὶ εἴ τινός τι
ἐσυκοφάντησα, ἀποδίδωμι τετραπλοῦν.
9 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι σή-
μερον σωτηρία τῷ οἴκῳ τούτῳ ἐγένετο, κα-
θότι καὶ αὐτὸς Υἱὸς Ἀβραάμ ἐστιν.
10 Ἦλθε γὰρ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ζη-
τῆσαι καὶ σῶσαι τὸ ἀπολωλός.
11 Ἀκουόντων δὲ αὐτῶν ταῦτα, προσθεὶς εἶ-
πε παραβολὴν, διὰ τὸ ἐγγὺς αὐτὸν εἶναι Ἰε-
ρουσαλὴμ, καὶ δοκεῖν αὐτοὺς ὅτι παραχρῆμα
μέλλει ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἀναφαίνεσθαι.
12 Εἶπεν οὖν· Ἄνθρωπός τις εὐγενὴς
ἐπορεύθη εἰς χώραν μακρὰν, λαβεῖν ἑαυτῷ
βασιλείαν, καὶ ὑποστρέψαι.

13 Κα-

13 Καλέσας δὲ δέκα δούλους ἑαυτοῦ, ἔ-
δωκεν αὐτοῖς δέκα μνᾶς, καὶ εἶπε πρὸς αὐ-
τούς· Πραγματεύσασθε ἕως ἔρχομαι.
14 Οἱ δὲ πολῖται αὐτοῦ ἐμίσουν αὐτὸν, καὶ
ἀπέστειλαν πρεσβείαν ὀπίσω αὐτοῦ, λέγοντες·
Οὐ θέλομεν τοῦτον βασιλεῦσαι ἐφ' ἡμᾶς.
15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐπανελθεῖν αὐτὸν
λαβόντα τὴν βασιλείαν, καὶ εἶπε φωνηθῆναι
αὐτῷ τοὺς δούλους τούτους, οἷς ἔδωκε τὸ ἀργύ-
ριον· ἵνα γνῷ τίς τί διεπραγματεύσατο.
16 Παρεγένετο δὲ ὁ πρῶτος, λέγων· Κύ-
ριε, ἡ μνᾶ σου προσειργάσατο δέκα μνᾶς.
17 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Εὖ ἀγαθὲ δοῦλε·
ὅτι ἐν ἐλαχίστῳ πιστὸς ἐγένου, ἴσθι ἐξουσίαν
ἔχων ἐπάνω δέκα πόλεων.
18 Καὶ ἦλθεν ὁ δεύτερος, λέγων· Κύ-
ριε, ἡ μνᾶ σου ἐποίησε πέντε μνᾶς.
19 Εἶπε δὲ καὶ τούτῳ· Καὶ σὺ γίνου ἐπά-
νω πέντε πόλεων.
20 Καὶ ἕτερος ἦλθε, λέγων· Κύριε, ἰδοὺ,
ἡ μνᾶ σου, ἣν εἶχον ἀποκειμένην ἐν σουδαρίῳ.
21 Ἐφοβήθην γάρ σε, ὅτι ἄνθρωπος αὐ-
στηρὸς εἶ· αἴρεις ὃ οὐκ ἔθηκας, καὶ θερίζεις ὃ
οὐκ ἔσπειρας.
22 Λέγει δὲ αὐτῷ· Ἐκ τοῦ στόματός σου
κρινῶ σε, πονηρὲ δοῦλε· ᾔδεις ὅτι ἐγὼ ἄν-
θρωπος αὐστηρός εἰμι, αἴρων ὃ οὐκ ἔθηκα, καὶ
θερίζων ὃ οὐκ ἔσπειρα.
23 Καὶ διατί οὐκ ἔδωκας τὸ ἀργύριόν μου
ἐπὶ τὴν τράπεζαν, καὶ ἐγὼ ἐλθὼν σὺν τόκῳ
ἂν ἔπραξα αὐτό;
24 Καὶ τοῖς παρεστῶσιν εἶπεν· Ἄρατε
ἀπ' αὐτοῦ τὴν μνᾶν, καὶ δότε τῷ τὰς δέκα
μνᾶς ἔχοντι.

25 Καὶ εἶπον αὐτῷ· Κύριε, ἔχει δέκα
μνᾶς.
26 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι παντὶ τῷ ἔχον-
τι δοθήσεται· ἀπὸ δὲ τοῦ μὴ ἔχοντος, καὶ ὃ
ἔχει, ἀρθήσεται ἀπ' αὐτοῦ.
27 Πλὴν τοὺς ἐχθρούς μου ἐκείνους, τοὺς μὴ
θελήσαντάς με βασιλεῦσαι ἐπ' αὐτοὺς, ἀγά-
γετε ὧδε, καὶ κατασφάξατε ἔμπροσθέν μου.
28 Καὶ εἰπὼν ταῦτα, ἐπορεύετο ἔμπρο-
σθεν, ἀναβαίνων εἰς Ἱεροσόλυμα.
29 Καὶ ἐγένετο ὡς ἤγγισεν εἰς Βηθφαγὴ
καὶ Βηθανίαν, πρὸς τὸ ὄρος τὸ καλούμενον
Ἐλαιῶν, ἀπέστειλε δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ,
30 Εἰπών· Ὑπάγετε εἰς τὴν κατέναντι
κώμην· ἐν ᾗ εἰσπορευόμενοι εὑρήσετε πῶλον
δεδεμένον, ἐφ' ὃν οὐδεὶς πώποτε ἀνθρώπων
ἐκάθισε· λύσαντες αὐτὸν ἀγάγετε.
31 Καὶ ἐάν τις ὑμᾶς ἐρωτᾷ· Διὰ τί
λύετε; Οὕτως ἐρεῖτε αὐτῷ· Ὅτι ὁ Κύριος
αὐτοῦ χρείαν ἔχει.
32 Ἀπελθόντες δὲ οἱ ἀπεσταλμένοι, εὗ-
ρον καθὼς εἶπεν αὐτοῖς.
33 Λυόντων δὲ αὐτῶν τὸν πῶλον, εἶπον
οἱ Κύριοι αὐτοῦ πρὸς αὐτούς· Τί λύετε τὸν
πῶλον;
34 Οἱ δὲ εἶπον· ὁ Κύριος αὐτοῦ χρείαν ἔχει.
35 Καὶ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς τὸν Ἰησοῦν·
Καὶ ἐπιρρίψαντες ἑαυτῶν τὰ ἱμάτια ἐπὶ τὸν
πῶλον ἐπεβίβασαν τὸν Ἰησοῦν.
36 Πορευομένου δὲ αὐτοῦ, ὑπεστρώννυον τὰ
ἱμάτια αὐτῶν ἐν τῇ ὁδῷ.
37 Ἐγγίζοντος δὲ αὐτοῦ ἤδη πρὸς τῇ κα-
ταβάσει τοῦ ὄρους τῶν Ἐλαιῶν, ἤρξαντο ἅπαν
τὸ πλῆθος τῶν μαθητῶν χαίροντες αἰνεῖν τὸν
Θεὸν

Θεὸν φωνῇ μεγάλῃ περὶ πασῶν ὧν εἶδον δυνάμεων,

38 Λέγοντες· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος βασιλεὺς ἐν ὀνόματι Κυρίου· εἰρήνη ἐν οὐρανῷ, καὶ δόξα ἐν ὑψίστοις.

39 Καί τινες τῶν Φαρισαίων ἀπὸ τοῦ ὄχλου εἶπον πρὸς αὐτόν· Διδάσκαλε, ἐπιτίμησον τοῖς μαθηταῖς σου.

40 Καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Λέγω ὑμῖν ὅτι ἐὰν οὗτοι σιωπήσωσιν, οἱ λίθοι κεκράξονται.

41 Καὶ ὡς ἤγγισεν, ἰδὼν τὴν πόλιν, ἔκλαυσεν ἐπ' αὐτῇ,

42 Λέγων· Ὅτι εἰ ἔγνως καὶ σὺ, καί γε ἐν τῇ ἡμέρᾳ σου ταύτῃ, τὰ πρὸς εἰρήνην σου· νῦν δὲ ἐκρύβη ἀπὸ ὀφθαλμῶν σου.

43 Ὅτι ἥξουσιν ἡμέραι ἐπὶ σὲ, καὶ περιβαλοῦσιν οἱ ἐχθροί σου χάρακά σοι, καὶ περικυκλώσουσί σε, καὶ συνέξουσί σε πάντοθεν·

44 Καὶ ἐδαφιοῦσί σε, καὶ τὰ τέκνα σου ἐν σοί· καὶ οὐκ ἀφήσουσιν ἐν σοὶ λίθον ἐπὶ λίθῳ· ἀνθ' ὧν οὐκ ἔγνως τὸν καιρὸν τῆς ἐπισκοπῆς σου.

45 Καὶ εἰσελθὼν εἰς τὸ Ἱερὸν, ἤρξατο ἐκβάλλειν τοὺς πωλοῦντας ἐν αὐτῷ καὶ ἀγοράζοντας,

46 Λέγων αὐτοῖς· Γέγραπται· Ὁ οἶκός μου, οἶκος προσευχῆς ἐστιν· ὑμεῖς δὲ αὐτὸν ἐποιήσατε σπήλαιον λῃστῶν.

47 Καὶ ἦν διδάσκων τὸ καθ' ἡμέραν ἐν τῷ Ἱερῷ· οἱ δὲ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς ἐζήτουν αὐτὸν ἀπολέσαι, καὶ οἱ πρῶτοι τοῦ λαοῦ·

48 Καὶ οὐχ εὕρισκον τὸ τί ποιήσωσιν· ὁ λαὸς γὰρ ἅπας ἐξεκρέματο αὐτοῦ ἀκούων.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Κ'. 20.

Εἰκοςὸν δ' ἐπίβηθι, ὅπȣ Βαπτίσματος εὕρῃς Ζαχαρείδȣ πρόβλημα. ἐν οἰνοφύτῳ δὲ φονῆας Μȣνογενȣ̃ς δολόεντας. ἴδῃς δ' ἀκρόγωνον Ἑβραίοις.
Ο'ντα λίθον πρόσκομμα, φόρον βασιλεῦσι τελεῖσθαι.
Ε'ντε παλιμβιότοισιν ἰσάγγελον ἄζυγα κλῆρον.
Καὶ Λόγον ὑψιμέδοντα Δαβὶδ ἄπο φῶτα γενέθλης.
Μισεῖν γραμματέων τε δολόφρονος ἤθεα τύφȣ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν μιᾷ τῶν ἡμερῶν ἐκείνων, διδάσκοντος αὐτȣ̃ τὸν λαὸν ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ εὐαγγελιζομένȣ, ἐπέςησαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς σὺν τοῖς πρεσβυτέροις,
2 Καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, λέγοντες· Εἰπὲ ἡμῖν ἐν ποίᾳ ἐξȣσίᾳ ταῦτα ποιεῖς, ἢ τίς ἐςιν ὁ δȣ́ς σοι τὴν ἐξȣσίαν ταύτην;
3 Α'ποκριθεὶς δὲ εἶπε πρὸς αὐτȣ́ς· Ε'ρωτήσω ὑμᾶς κἀγὼ ἕνα λόγον· καὶ εἴπατέ μοι·
4 Τὸ Βάπτισμα Ι'ωάννȣ ἐξ ȣ̓ρανȣ̃ ἦν, ἢ ἐξ ἀνθρώπων;
5 Οἱ δὲ συνελογίσαντο πρὸς ἑαυτȣ̀ς, λέγοντες· Ο'τι ἐὰν εἴπωμεν· Ε'ξ ȣ̓ρανȣ̃, ἐρεῖ· Διὰ τί ȣ̓̃ν ȣ̓κ ἐπιςεύσατε αὐτῷ;
6 Ε'ὰν δὲ εἴπωμεν· Ε'ξ ἀνθρώπων· πᾶς ὁ λαὸς καταλιθάσει ἡμᾶς· πεπεισμένος γάρ ἐςιν Ι'ωάννην Προφήτην εἶναι.

7 Καὶ

7 Καὶ ἀπεκρίθησαν μὴ εἰδέναι πόθεν.
8 Καὶ ὁ Ἰησῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐδὲ ἐγὼ
λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξυσίᾳ ταῦτα ποιῶ.
9 Ἤρξατο δὲ πρὸς τὸν λαὸν λέγειν τὴν
παραβολὴν ταύτην· Ἄνθρωπός τις ἐφύτευ-
σεν ἀμπελῶνα, καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς·
καὶ ἀπεδήμησε χρόνυς ἱκανύς.
10 Καὶ ἐν καιρῷ ἀπέστειλε πρὸς τὺς γεωρ-
γὺς δῦλον, ἵνα ἀπὸ τῦ καρπῦ τῦ ἀμπελῶ-
νος δῶσιν αὐτῷ· οἱ δὲ γεωργοὶ δείραντες
αὐτὸν, ἐξαπέστειλαν κενόν.
11 Καὶ προσέθετο πέμψαι ἕτερον δῦλον·
οἱ δὲ κἀκεῖνον δείραντες καὶ ἀτιμάσαντες
ἐξαπέστειλαν κενόν.
12 Καὶ προσέθετο πέμψαι τρίτον· οἱ δὲ
καὶ τῦτον τραυματίσαντες ἐξέβαλον.
13 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος τῦ ἀμπελῶνος·
Τί ποιήσω; πέμψω τὸν Υἱόν μυ τὸν ἀγα-
πητόν· ἴσως τῦτον ἰδόντες ἐντραπήσονται.
14 Ἰδόντες δὲ αὐτὸν οἱ γεωργοὶ, διελο-
γίζοντο πρὸς ἑαυτὺς, λέγοντες· Οὗτός ἐστιν
ὁ κληρονόμος· δεῦτε, ἀποκτείνωμεν αὐτὸν,
ἵνα ἡμῶν γένηται ἡ κληρονομία.
15 Καὶ ἐκβαλόντες αὐτὸν ἔξω τῦ ἀμπε-
λῶνος, ἀπέκτειναν· Τί ὖν ποιήσει αὐτοῖς
ὁ Κύριος τῦ ἀμπελῶνος;
16 Ἐλεύσεται καὶ ἀπολέσει τὺς γεωργὺς
τύτυς, καὶ δώσει τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις. Ἀ-
κύσαντες δὲ εἶπον· Μὴ γένοιτο.
17 Ὁ δὲ ἐμβλέψας αὐτοῖς, εἶπε· Τί
ὖν ἐστι τὸ γεγραμμένον τῦτο· Λίθον ὃν ἀ-
πεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομῦντες, ὗτος ἐγενή-
θη εἰς κεφαλὴν γωνίας;
18 Πᾶς ὁ πεσὼν ἐπ' ἐκεῖνον τὸν λίθον,
συν-

συνθλασθήσεται· ἐφ᾽ ὃν δ᾽ ἂν πέσῃ, λικ-
μήσει αὐτόν.
19 Καὶ ἐζήτησαν οἱ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ
Γραμματεῖς ἐπιβαλεῖν ἐπ᾽ αὐτὸν τὰς χεῖ-
ρας ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, καὶ ἐφοβήθησαν τὸν
λαόν· ἔγνωσαν γὰρ ὅτι πρὸς αὐτοὺς τὴν πα-
ραβολὴν ταύτην εἶπε.
20 Καὶ παρατηρήσαντες ἀπέστειλαν ἐγ-
καθέτους, ὑποκρινομένους ἑαυτοὺς δικαίους εἶναι·
ἵνα ἐπιλάβωνται αὐτοῦ λόγου, εἰς τὸ παρα-
δοῦναι αὐτὸν τῇ ἀρχῇ καὶ τῇ ἐξουσίᾳ τοῦ ἡγεμόνος.
21 Καὶ ἐπηρώτησαν αὐτόν, λέγοντες·
Διδάσκαλε, οἴδαμεν ὅτι ὀρθῶς λέγεις καὶ
διδάσκεις, καὶ οὐ λαμβάνεις πρόσωπον, ἀλλ᾽
ἐπ᾽ ἀληθείας τὴν ὁδὸν τοῦ Θεοῦ διδάσκεις.
22 Ἔξεστιν ἡμῖν Καίσαρι φόρον δοῦναι, ἢ οὔ;
23 Κατανοήσας δὲ αὐτῶν τὴν πανουργίαν,
εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί με πειράζετε;
24 Ἐπιδείξατέ μοι δηνάριον· τίνος ἔχει
εἰκόνα καὶ ἐπιγραφήν; Ἀποκριθέντες δὲ εἶ-
πον· Καίσαρος.
25 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἀπόδοτε τοίνυν
τὰ Καίσαρος Καίσαρι, καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ τῷ Θεῷ.
26 Καὶ οὐκ ἴσχυσαν ἐπιλαβέσθαι αὐτοῦ ῥή-
ματος ἐναντίον τοῦ λαοῦ· καὶ θαυμάσαντες
ἐπὶ τῇ ἀποκρίσει αὐτοῦ, ἐσίγησαν.
27 Προσελθόντες δέ τινες τῶν Σαδδου-
καίων, (οἱ ἀντιλέγοντες ἀνάστασιν μὴ εἶ-
ναι,) ἐπηρώτησαν αὐτόν,
28 Λέγοντες· Διδάσκαλε, Μωσῆς ἔ-
γραψεν ἡμῖν· Ἐάν τινος ἀδελφὸς ἀποθάνῃ
ἔχων γυναῖκα, καὶ οὗτος ἄτεκνος ἀποθάνῃ,
ἵνα λάβῃ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα, καὶ
ἐξαναστήσῃ σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.

29 Ἐπ-

29 Ἑπτὰ οὖν ἀδελφοὶ ἦσαν· καὶ ὁ πρῶτος, λαβὼν γυναῖκα, ἀπέθανεν ἄτεκνος.

30 Καὶ ἔλαβεν ὁ δεύτερος τὴν γυναῖκα, καὶ οὗτος ἀπέθανεν ἄτεκνος.

31 Καὶ ὁ τρίτος ἔλαβεν αὐτήν· ὡσαύτως δὲ καὶ οἱ ἑπτά· καὶ οὐ κατέλιπον τέκνα, καὶ ἀπέθανον.

32 Ὕστερον δὲ πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ γυνή.

33 Ἐν τῇ οὖν ἀναστάσει, τίνος αὐτῶν γίνεται γυνή; οἱ γὰρ ἑπτὰ ἔσχον αὐτὴν γυναῖκα.

34 Καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οἱ Υἱοὶ τοῦ αἰῶνος τούτου γαμοῦσι καὶ ἐκγαμίσκονται·

35 Οἱ δὲ καταξιωθέντες τοῦ αἰῶνος ἐκείνου τυχεῖν, καὶ τῆς ἀναστάσεως τῆς ἐκ νεκρῶν, οὔτε γαμοῦσιν, οὔτε ἐκγαμίσκονται.

36 Οὔτε γὰρ ἀποθανεῖν ἔτι δύνανται· ἰσάγγελοι γάρ εἰσι· καὶ Υἱοί εἰσι τοῦ Θεοῦ, τῆς ἀναστάσεως Υἱοὶ ὄντες.

37 Ὅτι δὲ ἐγείρονται οἱ νεκροὶ, καὶ Μωσῆς ἐμήνυσεν ἐπὶ τῆς βάτου, ὡς λέγει Κύριον τὸν Θεὸν Ἀβραὰμ, καὶ τὸν Θεὸν Ἰσαὰκ, καὶ τὸν Θεὸν Ἰακώβ.

38 Θεὸς δὲ οὐκ ἔστι νεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων· πάντες γὰρ αὐτῷ ζῶσιν.

39 Ἀποκριθέντες δέ τινες τῶν γραμματέων εἶπον· Διδάσκαλε, καλῶς εἶπας.

40 Οὐκ ἔτι δὲ ἐτόλμων ἐπερωτᾷν αὐτὸν οὐδέν.

41 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς· Πῶς λέγουσι τὸν Χριστὸν Υἱὸν Δαβὶδ εἶναι;

42 Καὶ αὐτὸς Δαβὶδ λέγει ἐν βίβλῳ ψαλμῶν· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθου ἐκ δεξιῶν μου,

43 Ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου;

44 Δαβὶδ οὖν Κύριον αὐτὸν καλεῖ, καὶ πῶς Υἱὸς αὐτοῦ ἐστιν;

45 Ἀκούοντος δὲ παντὸς τοῦ λαοῦ, εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ.

46 Προσέχετε ἀπὸ τῶν γραμματέων τῶν θελόντων περιπατεῖν ἐν στολαῖς, καὶ φιλούντων ἀσπασμοὺς ἐν ταῖς ἀγοραῖς, καὶ πρωτοκαθεδείας ἐν ταῖς συναγωγαῖς, καὶ πρωτοκλισίας ἐν τοῖς δείπνοις.

47 Οἳ κατεσθίουσι τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν, καὶ προφάσει μακρὰ προσεύχονται· οὗτοι λήψονται περισσότερον κρίμα.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΑʹ. 21.

Λεπτὰ δύο πρώτιστον ἐν εἴκοσι δέξατο χήρας.
Καὶ νηοῦ κατάλυσιν ἐτήτυμον ἄχει θεμέθλων.
Χειρογενεῖς ἰδίων τε διωκομένους γενετήρων.
Καὶ πόλιν ἀντιβίων ἐκπερθομένην στρατιάων.
Γῆς τε κλόνον, πολέμους τε, φόβηθρά τε, λιμὸν ἀλήτην,
Λοιμόν τ' ὀλλυμένοιο προάγγελα σήματα Κόσμου.

1 ἈΝαβλέψας δὲ εἶδε τοὺς βάλλοντας τὰ δῶρα αὐτῶν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον πλουσίους.

2 Εἶδε δὲ καί τινα χήραν πενιχρὰν βάλλουσαν ἐκεῖ δύο λεπτά·

3 Καὶ εἶπεν· Ἀληθῶς λέγω ὑμῖν, ὅτι ἡ χήρα ἡ πτωχὴ αὕτη πλεῖον πάντων ἔβαλεν·

4 Ἅπαντες γὰρ οὗτοι ἐκ τοῦ περισσεύοντος

αὐ-

αὐτοῖς ἔβαλον εἰς τὰ δῶρα τοῦ Θεοῦ· αὕτη
δὲ ἐκ τοῦ ὑστερήματος αὐτῆς ἅπαντα τὸν βίον
ὃν εἶχεν ἔβαλε.
5 Καί τινων λεγόντων περὶ τοῦ ἱεροῦ, ὅτι λί-
θοις καλοῖς ϗ ἀναθήμασι κεκόσμηται, εἶπε·
6 Ταῦτα ἃ θεωρεῖτε, ἐλεύσονται ἡμέραι
ἐν αἷς οὐκ ἀφεθήσεται λίθος ἐπὶ λίθῳ, ὃς
οὐ καταλυθήσεται.
7 Ἐπηρώτησαν δὲ αὐτὸν, λέγοντες· Δι-
δάσκαλε, πότε οὖν ταῦτα ἔσται; ϗ τί τὸ ση-
μεῖον ὅταν μέλλῃ ταῦτα γίνεσθαι;
8 Ὁ δὲ εἶπε· Βλέπετε μὴ πλανηθῆτε·
πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου,
λέγοντες· Ὅτι ἐγώ εἰμι· ϗ ὁ καιρὸς ἤγγι-
κε. μὴ οὖν πορευθῆτε ὀπίσω αὐτῶν.
9 Ὅταν δὲ ἀκούσητε πολέμους ϗ ἀκατα-
στασίας, μὴ πτοηθῆτε· δεῖ γὰρ ταῦτα γενέ-
σθαι πρῶτον· ἀλλ᾽ οὐκ εὐθέως τὸ τέλος.
10 Τότε ἔλεγεν αὐτοῖς· Ἐγερθήσεται ἔθ-
νος ἐπὶ ἔθνος, ϗ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν.
11 Σεισμοί τε μεγάλοι κατὰ τόπους ϗ λι-
μοὶ ϗ λοιμοὶ ἔσονται, φόβητρά τε ϗ ση-
μεῖα ἀπ᾽ οὐρανοῦ μεγάλα ἔσται.
12 Πρὸ δὲ τούτων ἁπάντων ἐπιβαλοῦσιν ἐφ᾽
ὑμᾶς τὰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ διώξουσι, πα-
ραδιδόντες εἰς συναγωγὰς ϗ φυλακὰς, ἀγο-
μένους ἐπὶ βασιλεῖς ϗ ἡγεμόνας, ἕνεκεν τοῦ
ὀνόματός μου.
13 Ἀποβήσεται δὲ ὑμῖν εἰς μαρτύριον.
14 Θέσθε οὖν εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν, μὴ
προμελετᾷν ἀπολογηθῆναι.
15 Ἐγὼ γὰρ δώσω ὑμῖν στόμα ϗ σοφίαν,
ᾗ οὐ δυνήσονται ἀντειπεῖν, οὐδὲ ἀντιστῆναι πάν-
τες οἱ ἀντικείμενοι ὑμῖν.

16 Παραδοθήσεσθε δὲ ϗ ὑπὸ γονέων, ϗ
ἀδελφῶν ϗ συγγενῶν, ϗ φίλων· ϗ θανατώ-
σουσιν ἐξ ὑμῶν·
17 Καὶ ἔσεσθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων διὰ
τὸ ὄνομά μου.
18 Καὶ θρὶξ ἐκ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν οὐ μὴ
ἀπόληται.
19 Ἐν τῇ ὑπομονῇ ὑμῶν κτήσασθε τὰς
ψυχὰς ὑμῶν.
20 Ὅταν δὲ ἴδητε κυκλουμένην ὑπὸ στρα-
τοπέδων τὴν Ἱερουσαλὴμ, τότε γνῶτε ὅτι
ἤγγικεν ἡ ἐρήμωσις αὐτῆς.
21 Τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, φευγέτωσαν
εἰς τὰ ὄρη· ϗ οἱ ἐν μέσῳ αὐτῆς, ἐκχωρείτω-
σαν· ϗ οἱ ἐν ταῖς χώραις, μὴ εἰσερχέσθω-
σαν εἰς αὐτήν.
22 Ὅτι ἡμέραι ἐκδικήσεως αὗταί εἰσι,
τοῦ πληρωθῆναι πάντα τὰ Γεγραμμένα.
23 Οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχούσαις ϗ ταῖς
θηλαζούσαις ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις· ἔσται
γὰρ ἀνάγκη μεγάλη ἐπὶ τῆς γῆς, ϗ ὀργὴ
ἐν τῷ λαῷ τούτῳ.
24 Καὶ πεσοῦνται στόματι μαχαίρας, ϗ
αἰχμαλωτισθήσονται εἰς πάντα τὰ ἔθνη· ϗ
Ἱερουσαλὴμ ἔσται πατουμένη ὑπὸ ἐθνῶν, ἄ-
χρι πληρωθῶσι καιροὶ ἐθνῶν.
25 Καὶ ἔσται σημεῖα ἐν ἡλίῳ ϗ σελήνῃ ϗ
ἄστροις· ϗ ἐπὶ τῆς γῆς συνοχὴ ἐθνῶν ἐν ἀπο-
ρίᾳ, ἠχούσης θαλάσσης ϗ σάλου.
26 Ἀποψυχόντων ἀνθρώπων ἀπὸ φόβου ϗ
προσδοκίας τῶν ἐπερχομένων τῇ οἰκουμένῃ·
αἱ γὰρ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν σαλευθήσονται.
27 Καὶ τότε ὄψονται τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχό-
μενον ἐν νεφέλῃ μετὰ δυνάμεως ϗ δόξης πολ-
λῆς.

28 Α'ρχομένων δὲ τούτων γίνεσθαι, ἀνακύ-
ψατε καὶ ἐπάρατε τὰς κεφαλὰς ὑμῶν· διότι
ἐγγίζει ἡ ἀπολύτρωσις ὑμῶν.
29 Καὶ εἶπε παραβολὴν αὐτοῖς· Ι'δετε
τὴν συκῆν καὶ πάντα τὰ δένδρα·
30 Ο'ταν προβάλωσιν ἤδη, βλέποντες
ἀφ' ἑαυτῶν γινώσκετε ὅτι ἤδη ἐγγὺς τὸ θέρος
ἐστίν·
31 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ἴδητε ταῦτα γι-
νόμενα, γινώσκετε, ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἡ Βασι-
λεία τοῦ Θεοῦ.
32 Α'μὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οὐ μὴ παρέλ-
θῃ ἡ γενεὰ αὕτη, ἕως ἂν πάντα γένηται.
33 Ο' οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται, οἱ
δὲ λόγοι μου οὐ μὴ παρέλθωσι.
34 Προσέχετε δὲ ἑαυτοῖς μήποτε βαρυν-
θῶσιν ὑμῶν αἱ καρδίαι ἐν κραιπάλῃ καὶ μέ-
θῃ καὶ μερίμναις βιωτικαῖς, καὶ αἰφνίδιος ἐφ'
ὑμᾶς ἐπιστῇ ἡ ἡμέρα ἐκείνη.
35 Ω'ς παγὶς γὰρ ἐπελεύσεται ἐπὶ πάν-
τας τοὺς καθημένους ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς
γῆς.
36 Α'γρυπνεῖτε οὖν, ἐν παντὶ καιρῷ δεό-
μενοι, ἵνα καταξιωθῆτε ἐκφυγεῖν ταῦτα πάν-
τα τὰ μέλλοντα γίνεσθαι, καὶ σταθῆναι ἔμπρο-
σθεν τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.
37 Η'ν δὲ τὰς ἡμέρας ἐν τῷ ἱερῷ διδά-
σκων· τὰς δὲ νύκτας ἐξερχόμενος ηὐλίζετο
εἰς τὸ ὄρος τὸ καλούμενον Ε'λαιῶν.
38 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὤρθριζε πρὸς αὐτὸν
ἐν τῷ Ι'ερῷ ἀκούειν αὐτοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΒ'. 22.

Εἰκοςὸν προδόταο τὸ δεύτερον ἔλλαχε πρᾶσιν.
Πάσχα, τέλος τε νόμοιο, καὶ ὄργια θύματος ἄλλε.
Νεῖκος ὁμᾶ μύςων. ἀρνησομένοιο δὲ Πέτρε.
Α'γγελίω πολύκλαυτον· ἰδ' αἱματόεντας ἱδρῶτας.
Καὶ δολερόν τε φίλημα. καὶ ἄρτιον ἔκτομον ἆας.
Δεσμάτ'· ἀπωμοσίας τε, καὶ ἄσχετα δάκρυα Πέτρε.
Ε'μπαιγμοὺς· ἀδίκων τε κατάκεισιν Α'ρχιερήων.

1 Η"Γγιζε δὲ ἡ ἑορτὴ τῶν ἀζύμων, ἡ λεγομένη Πάσχα.

2 Καὶ ἐζήτουν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς, τὸ πῶς ἀνέλωσιν αὐτόν· ἐφοβοῦντο γὰρ τὸν λαόν.

3 Εἰσῆλθε δὲ ὁ Σατανᾶς εἰς Ι'ούδαν τὸν ἐπικαλούμενον Ι'σκαριώτην, ὄντα ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν δώδεκα.

4 Καὶ ἀπελθὼν συνελάλησε τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς ςρατηγοῖς, τὸ πῶς αὐτὸν παραδῷ αὐτοῖς.

5 Καὶ ἐχάρησαν· καὶ συνέθεντο αὐτῷ ἀργύριον δοῦναι.

6 Καὶ ἐξωμολόγησε· καὶ ἐζήτει εὐκαιρίαν τοῦ παραδοῦναι αὐτὸν αὐτοῖς, ἄτερ ὄχλου.

7 Η"λθε δὲ ἡ ἡμέρα τῶν ἀζύμων, ἐν ᾗ ἔδει θύεσθαι τὸ πάσχα.

8 Καὶ ἀπέςειλε Πέτρον καὶ Ι'ωάννην, εἰπών·

πών· Πορευθέντες ἑτοιμάσατε ἡμῖν τὸ πά-
σχα, ἵνα φάγωμεν.
9 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Ποῦ θέλεις ἑτοι-
μάσωμεν;
10 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἰδοὺ, εἰσελθόν-
των ὑμῶν εἰς τὴν πόλιν, συναντήσει ὑμῖν ἄν-
θρωπος κεράμιον ὕδατος βαστάζων· ἀκολου-
θήσατε αὐτῷ εἰς τὴν οἰκίαν οὗ εἰσπορεύεται.
11 Καὶ ἐρεῖτε τῷ οἰκοδεσπότῃ τῆς οἰ-
κίας· Λέγει σοι ὁ διδάσκαλος· Ποῦ ἐστι τὸ
κατάλυμα, ὅπου τὸ πάσχα μετὰ τῶν μαθητῶν
μου φάγω;
12 Κἀκεῖνος ὑμῖν δείξει ἀνώγεον μέγα
ἐστρωμένον· ἐκεῖ ἑτοιμάσατε.
13 Ἀπελθόντες δὲ εὗρον καθὼς εἴρηκεν
αὐτοῖς· καὶ ἡτοίμασαν τὸ πάσχα.
14 Καὶ ὅτε ἐγένετο ἡ ὥρα, ἀνέπεσε, καὶ
οἱ δώδεκα ἀπόστολοι σὺν αὐτῷ.
15 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Ἐπιθυμίᾳ
ἐπεθύμησα τοῦτο τὸ πάσχα φαγεῖν μεθ᾽ ὑ-
μῶν πρὸ τοῦ με παθεῖν.
16 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι οὐκέτι οὐ μὴ φά-
γω ἐξ αὐτοῦ, ἕως ὅτου πληρωθῇ ἐν τῇ Βασι-
λείᾳ τοῦ Θεοῦ.
17 Καὶ δεξάμενος ποτήριον, εὐχαριστήσας
εἶπε· Λάβετε τοῦτο, καὶ διαμερίσατε ἑαυτοῖς.
18 Λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι οὐ μὴ πίω ἀπὸ
τοῦ γεννήματος τῆς ἀμπέλου, ἕως ὅτου ἡ Βα-
σιλεία τοῦ Θεοῦ ἔλθῃ.
19 Καὶ λαβὼν ἄρτον εὐχαριστήσας ἔκλα-
σε· καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων· Τοῦτό ἐστι τὸ
σῶμά μου, τὸ ὑπὲρ ὑμῶν διδόμενον· τοῦτο
ποιεῖτε εἰς τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν.
20 Ὡσαύτως καὶ τὸ ποτήριον, μετὰ τὸ
 δει-

δειπνῆσαι, λέγων· Τοῦτο τὸ ποτήριον, ἡ καινὴ διαθήκη ἐν τῷ αἵματί μου, τὸ ὑπὲρ ὑμῶν ἐκχυνόμενον.

21 Πλὴν ἰδοὺ, ἡ χεὶρ τοῦ παραδιδόντος με μετ' ἐμοῦ ἐπὶ τῆς τραπέζης.

22 Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου πορεύεται κατὰ τὸ ὡρισμένον· πλὴν οὐαὶ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ δι' οὗ παραδίδοται.

23 Καὶ αὐτοὶ ἤρξαντο συζητεῖν πρὸς ἑαυτοὺς, τὸ, τίς ἄρα εἴη ἐξ αὐτῶν ὁ τοῦτο μέλλων πράσσειν.

24 Ἐγένετο δὲ καὶ φιλονεικία ἐν αὐτοῖς, τὸ, τίς αὐτῶν δοκεῖ εἶναι μείζων.

25 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Οἱ βασιλεῖς τῶν ἐθνῶν κυριεύουσιν αὐτῶν· καὶ οἱ ἐξουσιάζοντες αὐτῶν εὐεργέται καλοῦνται.

26 Ὑμεῖς δὲ οὐχ οὕτως· ἀλλ' ὁ μείζων ἐν ὑμῖν, γενέσθω ὡς ὁ νεώτερος· καὶ ὁ ἡγούμενος, ὡς ὁ διακονῶν.

27 Τίς γὰρ μείζων, ὁ ἀνακείμενος, ἢ ὁ διακονῶν; οὐχὶ ὁ ἀνακείμενος; ἐγὼ δέ εἰμι ἐν μέσῳ ὑμῶν ὡς ὁ διακονῶν·

28 Ὑμεῖς δέ ἐστε οἱ διαμεμενηκότες μετ' ἐμοῦ ἐν τοῖς πειρασμοῖς μου.

29 Κἀγὼ διατίθεμαι ὑμῖν, καθὼς διέθετό μοι ὁ Πατήρ μου, βασιλείαν·

30 Ἵνα ἐσθίητε καὶ πίνητε ἐπὶ τῆς τραπέζης μου ἐν τῇ βασιλείᾳ μου, καὶ καθίσησθε ἐπὶ θρόνων, κρίνοντες τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ.

31 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Σίμων, Σίμων, ἰδοὺ, ὁ Σατανᾶς ἐξῃτήσατο ὑμᾶς, τοῦ σινιάσαι ὡς τὸν σῖτον·

32 Ἐγὼ δὲ ἐδεήθην περὶ σοῦ, ἵνα μὴ

ἐκλείπῃ ἡ πίστις σου· καὶ σύ ποτε ἐπιστρέψας,
στήριξον τοὺς ἀδελφούς σου.
33 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, μετὰ σοῦ
ἕτοιμός εἰμι καὶ εἰς φυλακὴν καὶ εἰς θάνατον
πορεύεσθαι.
34 Ὁ δὲ εἶπε· Λέγω σοι Πέτρε, οὐ μὴ
φωνήσει σήμερον ἀλέκτωρ, πρὶν ἢ τρὶς ἀπαρ-
νήσῃ μὴ εἰδέναι με.
35 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτε ἀπέστειλα ὑμᾶς
ἄτερ βαλαντίου, καὶ πήρας, καὶ ὑποδημάτων, μή
τινος ὑστερήσατε; Οἱ δὲ εἶπον· Οὐδενός.
36 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς· Ἀλλὰ νῦν, ὁ ἔχων
βαλάντιον, ἀράτω, ὁμοίως καὶ πήραν· καὶ ὁ
μὴ ἔχων, πωλησάτω τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, καὶ
ἀγορασάτω μάχαιραν.
37 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἔτι τοῦτο τὸ γε-
γραμμένον δεῖ τελεσθῆναι ἐν ἐμοὶ, τό· Καὶ
μετὰ ἀνόμων ἐλογίσθη. Καὶ γὰρ τὰ περὶ
ἐμοῦ τέλος ἔχει.
38 Οἱ δὲ εἶπον· Κύριε, ἰδοὺ μάχαιραι
ὧδε δύο. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἱκανόν ἐστι.
39 Καὶ ἐξελθὼν ἐπορεύθη κατὰ τὸ ἔθος
εἰς τὸ ὄρος τῶν Ἐλαιῶν· ἠκολούθησαν δὲ αὐ-
τῷ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.
40 Γενόμενος δὲ ἐπὶ τοῦ τόπου, εἶπεν αὐ-
τοῖς· Προσεύχεσθε μὴ εἰσελθεῖν εἰς πειρασμόν.
41 Καὶ αὐτὸς ἀπεσπάσθη ἀπ' αὐτῶν ὡσεὶ
λίθου βολὴν, καὶ θεὶς τὰ γόνατα προσηύχετο,
42 Λέγων· Πάτερ, εἰ βούλει παρενεγ-
κεῖν τὸ ποτήριον τοῦτο ἀπ' ἐμοῦ· πλὴν μὴ τὸ
θέλημά μου, ἀλλὰ τὸ σὸν γενέσθω.
43 Ὤφθη δὲ αὐτῷ ἄγγελος ἀπ' οὐρανοῦ
ἐνισχύων αὐτόν.
44 Καὶ γενόμενος ἐν ἀγωνίᾳ, ἐκτενέστερον

προσηύχετο· ἐγένετο δὲ ὁ ἱδρὼς αὐτοῦ ὡσεὶ
θρόμβοι αἵματος καταβαίνοντες ἐπὶ τὴν γῆν.
45 Καὶ ἀναστὰς ἀπὸ τῆς προσευχῆς, ἐλ-
θὼν πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, εὗρεν αὐτοὺς
κοιμωμένους ἀπὸ τῆς λύπης.
46 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί καθεύδετε;
ἀναστάντες προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθητε
εἰς πειρασμόν.
47 Ἔτι δὲ αὐτοῦ λαλοῦντος, ἰδοὺ ὄχλος,
καὶ ὁ λεγόμενος Ἰούδας, εἷς τῶν δώδεκα,
προήρχετο αὐτῶν, καὶ ἤγγισε τῷ Ἰησοῦ φιλῆ-
σαι αὐτόν.
48 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἰούδα, φι-
λήματι τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου παραδίδως;
49 Ἰδόντες δὲ οἱ περὶ αὐτὸν τὸ ἐσόμε-
νον, εἶπον αὐτῷ· Κύριε, εἰ πατάξομεν ἐν
μαχαίρᾳ;
50 Καὶ ἐπάταξεν εἷς τις ἐξ αὐτῶν τὸν δοῦλον
τοῦ ἀρχιερέως, καὶ ἀφεῖλεν αὐτοῦ τὸ οὖς τὸ δεξιόν·
51 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν·
Ἐᾶτε ἕως τούτου· Καὶ ἁψάμενος τοῦ ὠτίου
αὐτοῦ, ἰάσατο αὐτόν.
52 Εἶπε δὲ ὁ Ἰησοῦς πρὸς τοὺς παραγε-
νομένους ἐπ' αὐτὸν ἀρχιερεῖς καὶ στρατηγοὺς τοῦ
ἱεροῦ, καὶ πρεσβυτέρους· Ὡς ἐπὶ λῃστὴν ἐξε-
ληλύθατε μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων;
53 Καθ' ἡμέραν ὄντος μου μεθ' ὑμῶν ἐν
τῷ Ἱερῷ, οὐκ ἐξετείνατε τὰς χεῖρας ἐπ' ἐμέ·
ἀλλ' αὕτη ὑμῶν ἐστιν ἡ ὥρα, καὶ ἡ ἐξουσία τοῦ
σκότους.
54 Συλλαβόντες δὲ αὐτὸν ἤγαγον, καὶ εἰ-
σήγαγον αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀρχιερέως·
Ὁ δὲ Πέτρος ἠκολούθει μακρόθεν.
55 Ἁψάντων δὲ πῦρ ἐν μέσῳ τῆς αὐλῆς,
καὶ

ϗ συγκαθισάντων αὐτῶν, ἐκάθητο ὁ Πέτρος
ἐν μέσῳ αὐτῶν·
56 Ἰδȣ̃σα δὲ αὐτὸν παιδίσκη τις καθή-
μενον πρὸς τὸ φῶς, ϗ ἀτενίσασα αὐτῷ, εἶ-
πε· ϗ ȣ̃τος σὺν αὐτῷ ἦν.
57 Ὁ δὲ ἠρνήσατο αὐτὸν, λέγων· Γύ-
ναι, ȣ̓κ οἶδα αὐτόν.
58 Καὶ μετὰ βραχὺ ἕτερος ἰδὼν αὐτὸν,
ἔφη· Καὶ σὺ ἐξ αὐτῶν εἶ. Ὁ δὲ Πέτρος
εἶπεν· Ἄνθρωπε, ȣ̓κ εἰμί.
59 Καὶ διαστάσης ὡσεὶ ὥρας μιᾶς, ἄλ-
λος τις διϊσχυρίζετο, λέγων· Ἐπ' ἀλη-
θείας ϗ ȣ̃τος μετ' αὐτȣ̃ ἦν· ϗ γὰρ Γαλι-
λαῖός ἐστιν·
60 Εἶπε δὲ ὁ Πέτρος· Ἄνθρωπε, οὐκ
οἶδα ὃ λέγεις· Καὶ παραχρῆμα, ἔτι λα-
λȣ̃ντος αὐτȣ̃, ἐφώνησεν ὁ ἀλέκτωρ.
61 Καὶ στραφεὶς ὁ Κύριος ἐνέβλεψε τῷ
Πέτρῳ· ϗ ὑπεμνήσθη ὁ Πέτρος τȣ̃ λόγȣ τȣ̃
Κυρίȣ, ὡς εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι πρὶν ἀλέκτο-
ρα φωνῆσαι, ἀπαρνήσῃ με τρίς.
62 Καὶ ἐξελθὼν ἔξω ὁ Πέτρος ἔκλαυσε
πικρῶς.
63 Καὶ οἱ ἄνδρες οἱ συνέχοντες τὸν Ἰη-
σȣ̃ν, ἐνέπαιζον αὐτῷ, δέροντες.
64 Καὶ περικαλύψαντες αὐτὸν, ἔτυπτον
αὐτȣ̃ τὸ πρόσωπον· ϗ ἐπηρώτων αὐτὸν, λέ-
γοντες· Προφήτευσον τίς ἐστιν ὁ παίσας σε;
65 Καὶ ἕτερα πολλὰ βλασφημȣ̃ντες ἔλε-
γον εἰς αὐτόν.
66 Καὶ ὡς ἐγένετο ἡμέρα, συνήχθη τὸ
πρεσβυτέριον τȣ̃ λαȣ̃, ἀρχιερεῖς τε ϗ Γραμ-
ματεῖς, καὶ ἀνήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ συνέ-
δριον ἑαυτῶν,

67 Λέγοντες· Εἰ σὺ εἶ ὁ Χειςός; εἰπὲ
ἡμῖν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ἐὰν ὑμῖν εἴπω,
ὐ μὴ πιςεύσητε·
68 Ἐὰν δὲ καὶ ἐρωτήσω, ὐ μὴ ἀποκει-
θῆτέ μοι, ἢ ἀπολύσητε.
69 Ἀπὸ τοῦ νῦν ἔςαι ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
καθήμενος ἐκ δεξιῶν τῆς δυνάμεως τοῦ Θεοῦ.
70 Εἶπον δὲ πάντες· Σὺ οὖν εἶ ὁ Υἱὸς
τοῦ Θεοῦ; Ὁ δὲ πρὸς αὐτοὺς ἔφη· Ὑμεῖς
λέγετε ὅτι ἐγώ εἰμι.
71 Οἱ δὲ εἶπον· Τί ἔτι χρείαν ἔχομεν
μαρτυρίας; αὐτοὶ γὰρ ἠκούσαμεν ἀπὸ τοῦ
ςόματος αὐτοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΓ'. 23.

Εἴκοσῳ ξὺ τρίτῳ τε κατήγορον ὄχλον ἀθρήσεις·
Σκώμματά θ' Ἡρώδαο, Θεῷ προκειτόν τε
φωνῆα.
Σταυροφόρον Σίμωνα, γυναῖκά τε θρηνολο-
γοῦντα.
Εὐχύμενόντε μέσον Σωτῆρα παγέντα κα-
κούργων.
Ληςῶ τ' αὐτοδίδακτον· ἀμαυρομένους τε
πλανήτας.
Καὶ Λόγον ἐκπνεύσαντα, τάφῳ δὲ τεθέντα
μυρίπνουν.

1 ΚΑὶ ἀνάςαν ἅπαν τὸ πλῆθος αὐ-
τῶν, ἤγαγεν αὐτὸν ἐπὶ τὸν Πιλάτον.
2 Ἤρξαντο δὲ κατηγορεῖν αὐτοῦ, λέγον-
τες· Τοῦτον εὕρομεν διαςρέφοντα τὸ ἔθνος, καὶ
κωλύοντα Καίσαρι φόρους διδόναι, λέγοντα
ἑαυτὸν Χειςὸν Βασιλέα εἶναι.

3 Ὁ δὲ Πιλάτος ἐπηρώτησεν αὐτὸν, λέγων· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς αὐτῷ ἔφη· Σὺ λέγεις.

4 Ὁ δὲ Πιλάτος εἶπε πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ τοὺς ὄχλους· Οὐδὲν εὑρίσκω αἴτιον ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ.

5 Οἱ δὲ ἐπίσχυον, λέγοντες· Ὅτι ἀνασείει τὸν λαὸν, διδάσκων καθ' ὅλης τῆς Ἰουδαίας, ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ἕως ὧδε.

6 Πιλάτος δὲ ἀκούσας Γαλιλαίαν, ἐπηρώτησεν εἰ ὁ ἄνθρωπος Γαλιλαῖός ἐστι.

7 Καὶ ἐπιγνοὺς ὅτι ἐκ τῆς ἐξουσίας Ἡρώδου ἐστὶν, ἀνέπεμψεν αὐτὸν πρὸς Ἡρώδην, ὄντα καὶ αὐτὸν ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν ταύταις ταῖς ἡμέραις.

8 Ὁ δὲ Ἡρώδης, ἰδὼν τὸν Ἰησοῦν ἐχάρη λίαν· ἦν γὰρ θέλων ἐξ ἱκανοῦ ἰδεῖν αὐτὸν, διὰ τὸ ἀκούειν πολλὰ περὶ αὐτοῦ· καὶ ἤλπιζέ τι σημεῖον ἰδεῖν ὑπ' αὐτοῦ γινόμενον.

9 Ἐπηρώτα δὲ αὐτὸν ἐν λόγοις ἱκανοῖς· αὐτὸς δὲ οὐδὲν ἀπεκρίνατο αὐτῷ.

10 Εἱστήκεισαν δὲ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς εὐτόνως κατηγοροῦντες αὐτοῦ.

11 Ἐξουθενήσας δὲ αὐτὸν ὁ Ἡρώδης σὺν τοῖς στρατεύμασιν αὐτοῦ, καὶ ἐμπαίξας, περιβαλὼν αὐτὸν ἐσθῆτα λαμπρὰν, ἀνέπεμψεν αὐτὸν τῷ Πιλάτῳ.

12 Ἐγένοντο δὲ φίλοι ὅ, τε Πιλάτος καὶ ὁ Ἡρώδης ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ μετ' ἀλλήλων· προϋπῆρχον γὰρ ἐν ἔχθρᾳ ὄντες πρὸς ἑαυτούς.

13 Πιλάτος δὲ, συγκαλεσάμενος τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ τοὺς ἄρχοντας καὶ τὸν λαὸν,

14 Εἶπε πρὸς αὐτούς· Προσηνέγκατέ μοι τὸν ἄνθρωπον τοῦτον, ὡς ἀποστρέφοντα τὸν

λαόν· καὶ ἰδού, ἐγὼ ἐνώπιον ὑμῶν ἀνακρί-
νας, οὐδὲν εὗρον ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ αἴ-
τιον, ὧν κατηγορεῖτε κατ' αὐτοῦ.

15 Ἀλλ' οὐδὲ Ἡρώδης· ἀνέπεμψα γὰρ
ὑμᾶς πρὸς αὐτόν, καὶ ἰδού, οὐδὲν ἄξιον θα-
νάτου ἐστὶ πεπραγμένον αὐτῷ.

16 Παιδεύσας οὖν αὐτὸν ἀπολύσω.

17 Ἀνάγκην δὲ εἶχεν ἀπολύειν αὐτοῖς
κατὰ ἑορτὴν ἕνα.

18 Ἀνέκραξαν δὲ παμπληθεί, λέγον-
τες· Αἶρε τοῦτον, ἀπόλυσον δὲ ἡμῖν τὸν
Βαραββᾶν·

19 Ὅστις ἦν διὰ στάσιν τινὰ γενομένην ἐν
τῇ πόλει καὶ φόνον βεβλημένος εἰς φυλακήν.

20 Πάλιν οὖν ὁ Πιλάτος προσεφώνησε,
θέλων ἀπολῦσαι τὸν Ἰησοῦν.

21 Οἱ δὲ ἐπεφώνουν, λέγοντες· Σταύ-
ρωσον, σταύρωσον αὐτόν.

22 Ὁ δὲ τρίτον εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί γὰρ
κακὸν ἐποίησεν οὗτος; οὐδὲν αἴτιον θανάτου εὗ-
ρον ἐν αὐτῷ· παιδεύσας οὖν αὐτὸν ἀπολύσω.

23 Οἱ δὲ ἐπέκειντο φωναῖς μεγάλαις,
αἰτούμενοι αὐτὸν σταυρωθῆναι· καὶ κατίσχυον
αἱ φωναὶ αὐτῶν καὶ τῶν ἀρχιερέων.

24 Ὁ δὲ Πιλάτος ἐπέκρινε γενέσθαι τὸ
αἴτημα αὐτῶν.

25 Ἀπέλυσε δὲ αὐτοῖς τὸν διὰ στάσιν καὶ
φόνον βεβλημένον εἰς τὴν φυλακήν, ὃν ᾐτοῦντο·
τὸν δὲ Ἰησοῦν παρέδωκε τῷ θελήματι αὐτῶν.

26 Καὶ ὡς ἀπήγαγον αὐτόν, ἐπιλαβό-
μενοι Σίμωνός τινος Κυρηναίου τοῦ ἐρχομένου
ἀπ' ἀγροῦ, ἐπέθηκαν αὐτῷ τὸν σταυρόν, φέ-
ρειν ὄπισθεν τοῦ Ἰησοῦ.

27 Ἠκολούθει δὲ αὐτῷ πολὺ πλῆθος τοῦ
λαοῦ

λαοῦ καὶ γυναικῶν· αἳ καὶ ἐκόπτοντο καὶ ἐθρή-
νουν αὐτόν.
28 Στραφεὶς δὲ πρὸς αὐτὰς ὁ Ἰησοῦς,
εἶπε· Θυγατέρες Ἱερουσαλὴμ, μὴ κλαίετε
ἐπ' ἐμὲ, πλὴν ἐφ' ἑαυτὰς κλαίετε, καὶ ἐπὶ
τὰ τέκνα ὑμῶν·
29 Ὅτι ἰδοὺ, ἔρχονται ἡμέραι, ἐν αἷς
ἐροῦσι· Μακάριαι αἱ στεῖραι, καὶ κοιλίαι αἳ οὐκ
ἐγέννησαν, καὶ μαστοὶ οἳ οὐκ ἐθήλασαν.
30 Τότε ἄρξονται λέγειν τοῖς ὄρεσι· Πέσε-
τε ἐφ' ἡμᾶς· καὶ τοῖς βουνοῖς· Καλύψατε ἡμᾶς.
31 Ὅτι εἰ ἐν τῷ ὑγρῷ ξύλῳ ταῦτα ποιοῦ-
σιν, ἐν τῷ ξηρῷ τί γένηται;
32 Ἤγοντο δὲ καὶ ἕτεροι δύο κακοῦργοι
σὺν αὐτῷ ἀναιρεθῆναι.
33 Καὶ ὅτε ἀπῆλθον ἐπὶ τὸν τόπον τὸν
καλούμενον Κρανίον, ἐκεῖ ἐσταύρωσαν αὐτὸν
καὶ τοὺς κακούργους· ὃν μὲν ἐκ δεξιῶν, ὃν δὲ
ἐξ ἀριστερῶν.
34 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔλεγε· Πάτερ, ἄφες αὐ-
τοῖς· οὐ γὰρ οἴδασι τί ποιοῦσι· Διαμερι-
ζόμενοι δὲ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, ἔβαλον κλῆρον.
35 Καὶ εἱστήκει ὁ λαὸς θεωρῶν. ἐξεμυκ-
τήριζον δὲ καὶ οἱ ἄρχοντες σὺν αὐτοῖς, λέ-
γοντες· Ἄλλους ἔσωσε, σωσάτω ἑαυτὸν, εἰ
οὗτός ἐστιν ὁ Χριστὸς ὁ τοῦ Θεοῦ ἐκλεκτός.
36 Ἐνέπαιζον δὲ αὐτῷ καὶ οἱ στρατιῶται,
προσερχόμενοι, καὶ ὄξος προσφέροντες αὐτῷ,
37 Καὶ λέγοντες· Εἰ σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς
τῶν Ἰουδαίων, σῶσον σεαυτόν.
38 Ἦν δὲ καὶ ἐπιγραφὴ γεγραμμένη ἐπ'
αὐτῷ γράμμασιν Ἑλληνικοῖς καὶ Ῥωμαϊκοῖς
καὶ Ἑβραϊκοῖς· ΟΥΤΟΣ ΕΣΤΙΝ Ο
ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΤΩΝ ΙΟΥΔΑΙΩΝ.

39 Εἷς δὲ τῶν κρεμασθέντων κακούργων ἐβλασφήμει αὐτὸν, λέγων· Εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς, σῶσον σεαυτὸν καὶ ἡμᾶς.

40 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἕτερος ἐπετίμα αὐτῷ, λέγων· Οὐδὲ φοβῇ σὺ τὸν Θεὸν, ὅτι ἐν τῷ αὐτῷ κρίματι εἶ;

41 Καὶ ἡμεῖς μὲν δικαίως· ἄξια γὰρ ὧν ἐπράξαμεν ἀπολαμβάνομεν· οὗτος δὲ οὐδὲν ἄτοπον ἔπραξε.

42 Καὶ ἔλεγε τῷ Ἰησοῦ· Μνήσθητί μου, Κύριε, ὅταν ἔλθῃς ἐν τῇ βασιλείᾳ σου.

43 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω σοι, σήμερον μετ' ἐμοῦ ἔσῃ ἐν τῷ παραδείσῳ.

44 Ἦν δὲ ὡσεὶ ὥρα ἕκτη, καὶ σκότος ἐγένετο ἐφ' ὅλην τὴν γῆν, ἕως ὥρας ἐννάτης.

44 Καὶ ἐσκοτίσθη ὁ ἥλιος, καὶ ἐσχίσθη τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ μέσον.

46 Καὶ φωνήσας φωνῇ μεγάλῃ ὁ Ἰησοῦς εἶπε· Πάτερ, εἰς χεῖράς σου παραθήσομαι τὸ Πνεῦμά μου· Καὶ ταῦτα εἰπὼν ἐξέπνευσεν.

47 Ἰδὼν δὲ ὁ ἑκατόνταρχος τὸ γενόμενον, ἐδόξασε τὸν Θεὸν, λέγων· Ὄντως ὁ ἄνθρωπος οὗτος δίκαιος ἦν.

48 Καὶ πάντες οἱ συμπαραγενόμενοι ὄχλοι ἐπὶ τὴν θεωρείαν ταύτην, θεωροῦντες τὰ γενόμενα, τύπτοντες ἑαυτῶν τὰ στήθη ὑπέστρεφον.

49 Εἱστήκεισαν δὲ πάντες οἱ γνωστοὶ αὐτοῦ μακρόθεν, καὶ γυναῖκες αἱ συνακολουθήσασαι αὐτῷ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας, ὁρῶσαι ταῦτα.

50 Καὶ ἰδοὺ, ἀνὴρ ὀνόματι Ἰωσὴφ, βουλευτὴς ὑπάρχων, ἀνὴρ ἀγαθὸς καὶ δίκαιος.

51 (Οὗτος οὐκ ἦν συγκατατεθειμένος τῇ βουλῇ καὶ τῇ πράξει αὐτῶν,) ἀπὸ Ἀριμαθαίας πόλεως τῶν Ἰουδαίων· ὃς καὶ προσε-

δέ-



δέχετο καὶ αὐτὸς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

52 Οὗτος προσελθὼν τῷ Πιλάτῳ, ᾐτήσατο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

53 Καὶ καθελὼν αὐτὸ ἐνετύλιξεν αὐτὸ σινδόνι, καὶ ἔθηκεν αὐτὸ ἐν μνήματι λαξευτῷ, οὗ οὐκ ἦν οὐδέπω οὐδεὶς κείμενος.

54 Καὶ ἡμέρα ἦν παρασκευὴ, καὶ Σάββατον ἐπέφωσκε.

55 Κατακολουθήσασαι δὲ καὶ γυναῖκες, αἵτινες ἦσαν συνεληλυθυῖαι αὐτῷ ἐκ τῆς Γαλιλαίας, ἐθεάσαντο τὸ μνημεῖον, καὶ ὡς ἐτέθη τὸ σῶμα αὐτοῦ.

56 Ὑποστρέψασαι δὲ ἡτοίμασαν ἀρώματα καὶ μύρα· καὶ τὸ μὲν Σάββατον ἡσύχασαν κατὰ τὴν ἐντολήν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΔ'. 24.

Ἔσχατον ἀγγέλλοντας ἀνάστασιν ἔσχε γυναίοις
Ἀνέρας ἀστράπτοντας· ἴδης δὲ Λόγον συνοδίτην
Εἰς Ἐμαοὺς Κλεόπαο· καὶ ἄμμιγα δώδεκα μύσταις.
Θνητοπρεπῶς ἔδοντα· καὶ εἰς Πόλον αὖτις ἰόντα.

1 Τῇ δὲ μιᾷ τῶν Σαββάτων, ὄρθρου βαθέος ἦλθον ἐπὶ τὸ μνῆμα, φέρουσαι ἃ ἡτοίμασαν ἀρώματα· καί τινες σὺν αὐταῖς.

2 Εὗρον δὲ τὸν λίθον ἀποκεκυλισμένον ἀπὸ τοῦ μνημείου.

3 Καὶ εἰσελθοῦσαι οὐχ εὗρον τὸ σῶμα τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

4 Καὶ

4 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ διαπορεῖσθαι αὐτὰς περὶ τούτου, καὶ ἰδού, δύο ἄνδρες ἐπέστησαν αὐταῖς ἐν ἐσθήσεσιν ἀστραπτούσαις.

5 Ἐμφόβων δὲ γενομένων αὐτῶν, καὶ κλινουσῶν τὸ πρόσωπον εἰς τὴν γῆν, εἶπον πρὸς αὐτάς· Τί ζητεῖτε τὸν ζῶντα μετὰ τῶν νεκρῶν;

6 Οὐκ ἔστιν ὧδε, ἀλλ᾽ ἠγέρθη· μνήσθητε ὡς ἐλάλησεν ὑμῖν, ἔτι ὢν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ,

7 Λέγων· Ὅτι δεῖ τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου παραδοθῆναι εἰς χεῖρας ἀνθρώπων ἁμαρτωλῶν, καὶ σταυρωθῆναι, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστῆναι.

8 Καὶ ἐμνήσθησαν τῶν ῥημάτων αὐτοῦ.

9 Καὶ ὑποστρέψασαι ἀπὸ τοῦ μνημείου, ἀπήγγειλαν ταῦτα πάντα τοῖς ἕνδεκα καὶ πᾶσι τοῖς λοιποῖς.

10 Ἦσαν δὲ ἡ Μαγδαληνὴ Μαρία καὶ Ἰωάννα καὶ Μαρία Ἰακώβου, καὶ αἱ λοιπαὶ σὺν αὐταῖς, αἳ ἔλεγον πρὸς τοὺς ἀποστόλους ταῦτα.

11 Καὶ ἐφάνησαν ἐνώπιον αὐτῶν ὡσεὶ λῆρος τὰ ῥήματα αὐτῶν, καὶ ἠπίστουν αὐταῖς.

12 Ὁ δὲ Πέτρος ἀναστὰς ἔδραμεν ἐπὶ τὸ μνημεῖον· καὶ παρακύψας βλέπει τὰ ὀθόνια κείμενα μόνα· καὶ ἀπῆλθε, πρὸς ἑαυτὸν θαυμάζων τὸ γεγονός.

13 Καὶ ἰδού, δύο ἐξ αὐτῶν ἦσαν πορευόμενοι ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ εἰς κώμην ἀπέχουσαν σταδίους ἑξήκοντα ἀπὸ Ἱερουσαλήμ, ᾗ ὄνομα Ἐμμαούς.

14 Καὶ αὐτοὶ ὡμίλουν πρὸς ἀλλήλους περὶ πάντων τῶν συμβεβηκότων τούτων.

15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ὁμιλεῖν αὐτοὺς καὶ

συζητεῖν, καὶ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς ἐγγίσας συνε-
πορεύετο αὐτοῖς.
16 Οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν ἐκρατοῦντο τοῦ
μὴ ἐπιγνῶναι αὐτόν.
17 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς· Τίνες οἱ λόγοι
οὗτοι οὓς ἀντιβάλλετε πρὸς ἀλλήλους περιπα-
τοῦντες, καὶ ἐστὲ σκυθρωποί;
18 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ εἷς ᾧ ὄνομα Κλεό-
πας, εἶπε πρὸς αὐτόν· Σὺ μόνος παροικεῖς
ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ οὐκ ἔγνως τὰ γενόμενα ἐν
αὐτῇ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις;
19 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ποῖα; Οἱ δὲ εἶπον
αὐτῷ· Τὰ περὶ Ἰησοῦ τοῦ Ναζωραίου, ὃς ἐ-
γένετο ἀνὴρ προφήτης, δυνατὸς ἐν ἔργῳ καὶ
λόγῳ ἐναντίον τοῦ Θεοῦ, καὶ παντὸς τοῦ λαοῦ.
20 Ὅπως τε παρέδωκαν αὐτὸν οἱ ἀρχιε-
ρεῖς καὶ οἱ ἄρχοντες ἡμῶν εἰς κρίμα θανάτου,
καὶ ἐσαύρωσαν αὐτόν·
21 Ἡμεῖς δὲ ἠλπίζομεν ὅτι αὐτός ἐστιν
ὁ μέλλων λυτροῦσθαι τὸν Ἰσραήλ· ἀλλά γε
σὺν πᾶσι τούτοις, τρίτην ταύτην ἡμέραν ἄγει
σήμερον ἀφ' οὗ ταῦτα ἐγένετο.
22 Ἀλλὰ καὶ γυναῖκές τινες ἐξ ἡμῶν
ἐξέστησαν ἡμᾶς, γενόμεναι ὄρθριαι ἐπὶ τὸ
μνημεῖον.
23 Καὶ μὴ εὑροῦσαι τὸ σῶμα αὐτοῦ, ἦλ-
θον, λέγουσαι καὶ ὀπτασίαν ἀγγέλων ἑωρα-
κέναι, οἳ λέγουσιν αὐτὸν ζῆν.
24 Καὶ ἀπῆλθόν τινες τῶν σὺν ἡμῖν ἐπὶ
τὸ μνημεῖον, καὶ εὗρον οὕτω καθὼς καὶ αἱ γυ-
ναῖκες εἶπον· αὐτὸν δὲ οὐκ εἶδον.
25 Καὶ αὐτὸς εἶπε πρὸς αὐτούς· Ὦ ἀ-
νόητοι καὶ βραδεῖς τῇ καρδίᾳ τοῦ πιστεύειν ἐπὶ
πᾶσιν οἷς ἐλάλησαν οἱ προφῆται.
26 Οὐ-

26 Οὐχὶ ταῦτα ἔδει παθεῖν τὸν Χρι-
στὸν, ϗ εἰσελθεῖν εἰς τὴν δόξαν αὐτοῦ;
27 Καὶ ἀρξάμενος ἀπὸ Μωσέως, ϗ ἀπὸ
πάντων τῶν Προφητῶν, διηρμήνευεν αὐτοῖς
ἐν πάσαις ταῖς γραφαῖς τὰ περὶ αὐτοῦ.
28 Καὶ ἤγγισαν εἰς τὴν κώμην οὗ ἐπο-
ρεύοντο· καὶ αὐτὸς προσεποιεῖτο πορρωτέρω
πορεύεσθαι.
29 Καὶ παρεβιάσαντο αὐτὸν, λέγοντες·
Μεῖνον μεθ' ἡμῶν, ὅτι πρὸς ἑσπέραν ἐστὶ,
ϗ κέκλικεν ἡ ἡμέρα. Καὶ εἰσῆλθε τοῦ μεῖ-
ναι σὺν αὐτοῖς.
30 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κατακλιθῆναι αὐ-
τὸν μετ' αὐτῶν, λαβὼν τὸν ἄρτον εὐλόγησε,
ϗ κλάσας ἐπεδίδου αὐτοῖς.
31 Αὐτῶν δὲ διηνοίχθησαν οἱ ὀφθαλ-
μοὶ, ϗ ἐπέγνωσαν αὐτόν· ϗ αὐτὸς ἄφαντος
ἐγένετο ἀπ' αὐτῶν.
32 Καὶ εἶπον πρὸς ἀλλήλους· Οὐχὶ ἡ
καρδία ἡμῶν καιομένη ἦν ἐν ἡμῖν, ὡς ἐλά-
λει ἡμῖν ἐν τῇ ὁδῷ, ϗ ὡς διήνοιγεν ἡμῖν
τὰς γραφάς;
33 Καὶ ἀναστάντες αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, ὑπέ-
στρεψαν εἰς Ἱερουσαλὴμ, ϗ εὗρον συνηθροισ-
μένους τοὺς ἕνδεκα ϗ τοὺς σὺν αὐτοῖς,
34 Λέγοντας· Ὅτι ἠγέρθη ὁ Κύριος ὄν-
τως, ϗ ὤφθη Σίμωνι.
35 Καὶ αὐτοὶ ἐξηγοῦντο τὰ ἐν τῇ ὁδῷ· ϗ
ὡς ἐγνώσθη αὐτοῖς ἐν τῇ κλάσει τοῦ ἄρτου.
36 Ταῦτα δὲ αὐτῶν λαλούντων, αὐτὸς ὁ
Ἰησοῦς ἔστη ἐν μέσῳ αὐτῶν, ϗ λέγει αὐτοῖς·
Εἰρήνη ὑμῖν.
37 Πτοηθέντες δὲ ϗ ἔμφοβοι γενόμενοι
ἐδόκουν Πνεῦμα θεωρεῖν.

38 Καὶ

38 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί τεταραγμένοι
ἐστὲ, καὶ διατὶ διαλογισμοὶ ἀναβαίνουσιν ἐν
ταῖς καρδίαις ὑμῶν;
39 Ἴδετε τὰς χεῖράς μου καὶ τοὺς πόδας
μου· ὅτι αὐτὸς ἐγώ εἰμι. ψηλαφήσατέ με καὶ
ἴδετε, ὅτι Πνεῦμα σάρκα καὶ ὀστέα οὐκ ἔχει,
καθὼς ἐμὲ θεωρεῖτε ἔχοντα.
40 Καὶ τοῦτο εἰπὼν ἐπέδειξεν αὐτοῖς τὰς
χεῖρας καὶ τοὺς πόδας.
41 Ἔτι δὲ ἀπιστούντων αὐτῶν ἀπὸ τῆς χα-
ρᾶς, καὶ θαυμαζόντων, εἶπεν αὐτοῖς· Ἔχε-
τέ τι βρώσιμον ἐνθάδε;
42 Οἱ δὲ ἐπέδωκεν αὐτῷ ἰχθύος ὀπτοῦ
μέρος, καὶ ἀπὸ μελισσίου κηρίου.
43 Καὶ λαβὼν, ἐνώπιον αὐτῶν ἔφαγεν.
44 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Οὗτοι οἱ λόγοι οὓς
ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς ἔτι ὢν σὺν ὑμῖν, ὅτι
δεῖ πληρωθῆναι πάντα τὰ Γεγραμμένα ἐν
τῷ νόμῳ Μωσέως, καὶ προφήταις, καὶ ψαλ-
μοῖς περὶ ἐμοῦ.
45 Τότε διήνοιξεν αὐτῶν τὸν νοῦν, τοῦ συ-
νιέναι τὰς γραφάς.
46 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι οὕτω γέγρα-
πται, καὶ οὕτως ἔδει παθεῖν τὸν Χριστὸν, καὶ
ἀναστῆναι ἐκ νεκρῶν τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ,
47 Καὶ κηρυχθῆναι ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ
μετάνοιαν καὶ ἄφεσιν ἁμαρτιῶν εἰς πάντα τὰ
ἔθνη, ἀρξάμενον ἀπὸ Ἱερουσαλήμ.
48 Ὑμεῖς δέ ἐστε μάρτυρες τούτων.
49 Καὶ ἰδοὺ, ἐγὼ ἀποστέλλω τὴν ἐπαγ-
γελίαν τοῦ Πατρός μου ἐφ' ὑμᾶς· ὑμεῖς δὲ
καθίσατε ἐν τῇ πόλει Ἱερουσαλὴμ ἕως οὗ ἐν-
δύσησθε δύναμιν ἐξ ὕψους.
50 Ἐξήγαγε δὲ αὐτοὺς ἔξω ἕως εἰς Βη-
θα-

θανίαν· καὶ ἐπάρας τὰς χεῖρας αὐτοῦ, εὐ-
λόγησεν αὐτούς.
51 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εὐλογεῖν αὐτὸν
αὐτοὺς, διέστη ἀπ' αὐτῶν, καὶ ἀνεφέρετο εἰς
τὸν οὐρανόν.
52 Καὶ αὐτοὶ προσκυνήσαντες αὐτὸν,
ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλὴμ μετὰ χαρᾶς με-
γάλης.
53 Καὶ ἦσαν διαπαντὸς ἐν τῷ ἱερῷ, αἰ-
νοῦντες καὶ εὐλογοῦντες τὸν Θεόν. Ἀμήν.

ΕΥ'ΑΓΓΕ'ΛΙΟΝ

ΚΑΤΑ' Ι'ΩΑ'ΝΝΗΝ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

Πρῶτον διδάσκει πρὸς Θεὸν Θεὸν Λόγον,
Παντεργὸν, ἀνθρώποις τε ζωὴν, καὶ φάος.
Οὓς υἱοποιεῖ, ἀντιδὲς νόμου χάριν.
Ὧι τοῖς μεμαρτύρηκε φωνὴ Προδρόμου.
Ὧι τ' Ἀνδρέας φοίτησε, σύγγονόν τ' ἄγε
Κληθέντα Πέτρον, καὶ Φίλιππος, ὅς φίλον
Ἕλκει λόγος δύναμιν ἀπειθῆ θέα.

1 ἘΝ ἀρχῇ ἦν ὁ λόγος, καὶ ὁ λόγος ἦν πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ Θεὸς ἦν ὁ λόγος.
2 Οὗτος ἦν ἐν ἀρχῇ πρὸς τὸν Θεόν.
3 Πάντα δι' αὐτοῦ ἐγένετο· καὶ χωρὶς αὐτοῦ ἐγένετο οὐδὲ ἓν ὃ γέγονεν.
4 Ἐν αὐτῷ ζωὴ ἦν, καὶ ἡ ζωὴ ἦν τὸ φῶς τῶν ἀνθρώπων·
5 Καὶ τὸ φῶς ἐν τῇ σκοτίᾳ φαίνει, καὶ ἡ σκοτία αὐτὸ οὐ κατέλαβεν.
6 Ἐγένετο ἄνθρωπος ἀπεσαλμένος παρὰ Θεοῦ, ὄνομα αὐτῷ Ἰωάννης.
7 Οὗτος ἦλθεν εἰς μαρτυρίαν, ἵνα μαρτυρήσῃ περὶ τοῦ φωτὸς, ἵνα πάντες πιστεύσωσι δι' αὐτοῦ.

8 Οὐκ ἦν ἐκεῖνος τὸ φῶς, ἀλλ' ἵνα μαρ-
τυρήσῃ περὶ τοῦ φωτός.
9 Ἦν τὸ φῶς τὸ ἀληθινὸν, ὃ φωτίζει
πάντα ἄνθρωπον ἐρχόμενον εἰς τὸν Κόσμον.
10 Ἐν τῷ κόσμῳ ἦν, καὶ ὁ κόσμος δι'
αὐτοῦ ἐγένετο· καὶ ὁ κόσμος αὐτὸν οὐκ ἔγνω.
11 Εἰς τὰ ἴδια ἦλθε, καὶ οἱ ἴδιοι αὐτὸν
οὐ παρέλαβον.
12 Ὅσοι δὲ ἔλαβον αὐτὸν, ἔδωκεν αὐ-
τοῖς ἐξουσίαν τέκνα Θεοῦ γενέσθαι, τοῖς πι-
στεύουσιν εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ.
13 Οἳ οὐκ ἐξ αἱμάτων, οὐδὲ ἐκ θελήμα-
τος σαρκὸς, οὐδὲ ἐκ θελήματος ἀνδρὸς,
ἀλλ' ἐκ Θεοῦ ἐγεννήθησαν.
14 Καὶ ὁ λόγος σὰρξ ἐγένετο· καὶ ἐσκή-
νωσεν ἐν ἡμῖν, (καὶ ἐθεασάμεθα τὴν δόξαν
αὐτοῦ, δόξαν ὡς μονογενοῦς παρὰ Πατρὸς,)
πλήρης χάριτος καὶ ἀληθείας.
15 Ἰωάννης μαρτυρεῖ περὶ αὐτοῦ, καὶ κέ-
κραγε, λέγων· Οὗτος ἦν ὃν εἶπον· Ὁ ὀπί-
σω μου ἐρχόμενος, ἔμπροσθέν μου γέγονεν·
ὅτι πρῶτός μου ἦν.
16 Καὶ ἐκ τοῦ πληρώματος αὐτοῦ ἡμεῖς
πάντες ἐλάβομεν, καὶ χάριν ἀντὶ χάριτος.
17 Ὅτι ὁ νόμος διὰ Μωσέως ἐδόθη·
ἡ χάρις καὶ ἡ ἀλήθεια διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ
ἐγένετο.
18 Θεὸν οὐδεὶς ἑώρακε πώποτε· ὁ μονο-
γενὴς Υἱὸς, ὁ ὢν εἰς τὸν κόλπον τοῦ Πα-
τρὸς, ἐκεῖνος ἐξηγήσατο.
19 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ Ἰωάν-
νου, ὅτε ἀπέστειλαν οἱ Ἰουδαῖοι ἐξ Ἱεροσολύ-
μων Ἱερεῖς καὶ Λευΐτας, ἵνα ἐρωτήσωσιν αὐ-
τόν· Σὺ τίς εἶ;

20 Καὶ

20 Καὶ ὡμολόγησε, καὶ οὐκ ἠρνήσατο· καὶ ὡμολόγησεν· Ὅτι οὐκ εἰμὶ ἐγὼ ὁ Χριστός.

21 Καὶ ἠρώτησαν αὐτόν· Τί οὖν; Ἠλίας εἶ σύ; Καὶ λέγει· Οὐκ εἰμί· Ὁ Προφήτης εἶ σύ; Καὶ ἀπεκρίθη· Οὔ.

22 Εἶπον οὖν αὐτῷ· Τίς εἶ; ἵνα ἀπόκρισιν δῶμεν τοῖς πέμψασιν ἡμᾶς· τί λέγεις περὶ σεαυτοῦ;

23 Ἔφη· Ἐγὼ φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Εὐθύνατε τὴν ὁδὸν Κυρίου· καθὼς εἶπεν Ἡσαΐας ὁ Προφήτης.

24 Καὶ οἱ ἀπεσταλμένοι ἦσαν ἐκ τῶν Φαρισαίων·

25 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν, καὶ εἶπον αὐτῷ· Τί οὖν βαπτίζεις, εἰ σὺ οὐκ εἶ ὁ Χριστὸς, οὔτε Ἠλίας, οὔτε ὁ Προφήτης;

26 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰωάννης, λέγων· Ἐγὼ βαπτίζω ἐν ὕδατι· μέσος δὲ ὑμῶν ἕστηκεν ὃν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε.

27 Αὐτός ἐστιν ὁ ὀπίσω μου ἐρχόμενος, ὃς ἔμπροσθέν μου γέγονεν· οὗ ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἄξιος ἵνα λύσω αὐτοῦ τὸν ἱμάντα τοῦ ὑποδήματος.

28 Ταῦτα ἐν Βηθανίᾳ ἐγένετο πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὅπου ἦν Ἰωάννης βαπτίζων.

29 Τῇ ἐπαύριον βλέπει ὁ Ἰωάννης τὸν Ἰησοῦν ἐρχόμενον πρὸς αὐτὸν, καὶ λέγει· Ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν τοῦ κόσμου.

30 Οὗτός ἐστι περὶ οὗ ἐγὼ εἶπον· Ὀπίσω μου ἔρχεται ἀνὴρ, ὃς ἔμπροσθέν μου γέγονεν· ὅτι πρῶτός μου ἦν.

31 Κἀγὼ οὐκ ᾔδειν αὐτόν· ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ τῷ Ἰσραὴλ, διὰ τοῦτο ἦλθον ἐγὼ ἐν τῷ ὕδατι βαπτίζων.

32 Καὶ ἐμαρτύρησεν Ἰωάννης, λέγων·

Ὅτι

Ὅτι τεθέαμαι τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον ὡσεὶ
περιστερὰν ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ἔμεινεν ἐπ' αὐτόν.
33 Κἀγὼ οὐκ ᾔδειν αὐτόν· ἀλλ' ὁ πέμ-
ψας με βαπτίζειν ἐν ὕδατι, ἐκεῖνός μοι εἶ-
πεν· Ἐφ' ὃν ἂν ἴδῃς τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον
καὶ μένον ἐπ' αὐτὸν, οὗτός ἐστιν ὁ βαπτίζων ἐν
Πνεύματι ἁγίῳ.
34 Κἀγὼ ἑώρακα, καὶ μεμαρτύρηκα, ὅτι
οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ.
35 Τῇ ἐπαύριον πάλιν εἱστήκει ὁ Ἰωάν-
νης, καὶ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο.
36 Καὶ ἐμβλέψας τῷ Ἰησοῦ περιπατοῦν-
τι, λέγει· Ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ.
37 Καὶ ἤκουσαν αὐτοῦ οἱ δύο μαθηταὶ λα-
λοῦντος, καὶ ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ.
38 Στραφεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, καὶ θεασάμενος
αὐτοὺς ἀκολουθοῦντας, λέγει αὐτοῖς·
39 Τί ζητεῖτε; Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Ῥαβ-
βὶ, (ὃ λέγεται ἑρμηνευόμενον, διδάσκα-
λε,) ποῦ μένεις;
40 Λέγει αὐτοῖς· Ἔρχεσθε καὶ ἴδετε. Ἦλ-
θον καὶ εἶδον ποῦ μένει. καὶ παρ' αὐτῷ ἔμειναν
τὴν ἡμέραν ἐκείνην, ὥρα δὲ ἦν ὡς δεκάτη.
41 Ἦν Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος
Πέτρου, εἷς ἐκ τῶν δύο τῶν ἀκουσάντων παρὰ
Ἰωάννου, καὶ ἀκολουθησάντων αὐτῷ.
42 Εὑρίσκει οὗτος πρῶτος τὸν ἀδελφὸν τὸν
ἴδιον Σίμωνα, καὶ λέγει αὐτῷ· Εὑρήκαμεν
τὸν Μεσσίαν, ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον ὁ
Χριστός.
43 Καὶ ἤγαγεν αὐτὸν πρὸς τὸν Ἰησοῦν·
Ἐμβλέψας δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, εἶπε· Σὺ
εἶ Σίμων ὁ Υἱὸς Ἰωνᾶ· σὺ κληθήσῃ Κη-
φᾶς, ὃ ἑρμηνεύεται Πέτρος.

44 Τῇ ἐπαύριον ἠθέλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐξελ-
θεῖν εἰς τὴν Γαλιλαίαν· καὶ εὑρίσκει Φίλιπ-
πον, καὶ λέγει αὐτῷ· Ἀκολούθει μοι.
45 Ἦν δὲ ὁ Φίλιππος ἀπὸ Βηθσαϊδὰ,
ἐκ τῆς πόλεως Ἀνδρέου καὶ Πέτρου.
46 Εὑρίσκει Φίλιππος τὸν Ναθαναὴλ,
καὶ λέγει αὐτῷ· Ὃν ἔγραψε Μωσῆς ἐν τῷ νόμῳ
καὶ οἱ προφῆται, εὑρήκαμεν, Ἰησοῦν τὸν Υἱὸν
τοῦ Ἰωσὴφ τὸν ἀπὸ Ναζαρέτ.
47 Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ναθαναήλ· Ἐκ Να-
ζαρὲτ δύναταί τι ἀγαθὸν εἶναι; Λέγει αὐ-
τῷ Φίλιππος· Ἔρχου καὶ ἴδε.
48 Εἶδεν ὁ Ἰησοῦς τὸν Ναθαναὴλ ἐρχό-
μενον πρὸς αὐτὸν, καὶ λέγει περὶ αὐτοῦ· Ἴδε
ἀληθῶς Ἰσραηλίτης ἐν ᾧ δόλος οὐκ ἔστι.
49 Λέγει αὐτῷ Ναθαναήλ· Πόθεν με
γινώσκεις; Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν
αὐτῷ· Πρὸ τοῦ σε Φίλιππον φωνῆσαι, ὄν-
τα ὑπὸ τὴν συκῆν, εἶδόν σε.
50 Ἀπεκρίθη Ναθαναὴλ, καὶ λέγει αὐ-
τῷ· Ῥαββὶ, σὺ εἶ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ, σὺ εἶ
ὁ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραήλ.
51 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὅ-
τι εἶπόν σοι· Εἶδόν σε ὑποκάτω τῆς συκῆς,
πιστεύεις; μείζω τούτων ὄψει.
52 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ἀμὴν ἀμὴν λέγω
ὑμῖν, Ἀπ' ἄρτι ὄψεσθε τὸν οὐρανὸν ἀνεῳγότα,
καὶ τοὺς ἀγγέλους τοῦ Θεοῦ ἀναβαίνοντας καὶ κατα-
βαίνοντας ἐπὶ τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

Ὕδωρ οἶνον δεύτερον γάμῳ τρέπει.
Μάστιξι τ' ὠθεῖ ἐκ νεὼ τοὺς ἐμπόρους.
Λυθέντ' ἐγείρειν ναὸν ἐκ τρεῖς ἡμέρας
Δείκνυσι· σημείοις τε πολλοὺς προτρέπει.

1 ΚΑὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ γάμος ἐγέ-
νετο ἐν Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας·
καὶ ἦν ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ ἐκεῖ.
2 Ἐκλήθη δὲ καὶ ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ
αὐτοῦ εἰς τὸν γάμον.
3 Καὶ ὑστερήσαντος οἴνου, λέγει ἡ μήτηρ τοῦ
Ἰησοῦ πρὸς αὐτόν· Οἶνον οὐκ ἔχουσι.
4 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Τί ἐμοὶ καὶ σοί,
γύναι; οὔπω ἥκει ἡ ὥρα μου.
5 Λέγει ἡ μήτηρ αὐτοῦ τοῖς διακόνοις· Ὅ,
τι ἂν λέγῃ ὑμῖν, ποιήσατε.
6 Ἦσαν δὲ ἐκεῖ ὑδρίαι λίθιναι ἓξ κεί-
μεναι κατὰ τὸν καθαρισμὸν τῶν Ἰουδαίων,
χωροῦσαι ἀνὰ μετρητὰς δύο ἢ τρεῖς.
7 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Γεμίσατε τὰς
ὑδρίας ὕδατος. Καὶ ἐγέμισαν αὐτὰς ἕως
ἄνω.
8 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἀντλήσατε νῦν,
καὶ φέρετε τῷ ἀρχιτρικλίνῳ. Καὶ ἤνεγκαν.
9 Ὡς δὲ ἐγεύσατο ὁ ἀρχιτρίκλινος τὸ ὕ-
δωρ οἶνον γεγενημένον, (καὶ οὐκ ᾔδει πόθεν
ἐστίν· οἱ δὲ διάκονοι ᾔδεισαν οἱ ἠντληκό-
τες τὸ ὕδωρ·) φωνεῖ τὸν νυμφίον ὁ ἀρχιτρί-
κλινος.
10 Καὶ λέγει αὐτῷ· Πᾶς ἄνθρωπος
πρῶτον τὸν καλὸν οἶνον τίθησι, καὶ ὅταν με-
θυ-

θυσθῶσι, τότε τὸν ἐλάσσω· σὺ τετήρηκας τὸν καλὸν οἶνον ἕως ἄρτι.

11 Ταύτην ἐποίησε τὴν ἀρχὴν τῶν σημείων ὁ Ἰησοῦς ἐν Κανᾷ τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἐφανέρωσε τὴν δόξαν αὐτοῦ· καὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

12 Μετὰ τοῦτο κατέβη εἰς Καπερναοὺμ, αὐτὸς καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· καὶ ἐκεῖ ἔμειναν οὐ πολλὰς ἡμέρας.

13 Καὶ ἐγγὺς ἦν τὸ πάσχα τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἀνέβη εἰς Ἱεροσόλυμα ὁ Ἰησοῦς.

14 Καὶ εὗρεν ἐν τῷ ἱερῷ τοὺς πωλοῦντας βόας καὶ πρόβατα καὶ περιστεράς, καὶ τοὺς κερματιστὰς καθημένους.

15 Καὶ ποιήσας φραγέλλιον ἐκ σχοινίων, πάντας ἐξέβαλεν ἐκ τοῦ ἱεροῦ, τά τε πρόβατα καὶ τοὺς βόας· καὶ τῶν κολλυβιστῶν ἐξέχεε τὸ κέρμα, καὶ τὰς τραπέζας ἀνέστρεψε.

16 Καὶ τοῖς τὰς περιστερὰς πωλοῦσιν εἶπεν· Ἄρατε ταῦτα ἐντεῦθεν· μὴ ποιεῖτε τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου οἶκον ἐμπορίου.

17 Ἐμνήσθησαν δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ὅτι γεγραμμένον ἐστίν· Ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου κατέφαγέ με.

18 Ἀπεκρίθησαν οὖν οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ εἶπον αὐτῷ· Τί σημεῖον δεικνύεις ἡμῖν, ὅτι ταῦτα ποιεῖς;

19 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Λύσατε τὸν ναὸν τοῦτον, καὶ ἐν τρισὶν ἡμέραις ἐγερῶ αὐτόν.

20 Εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· Τεσσαράκοντα καὶ ἓξ ἔτεσιν ᾠκοδομήθη ὁ ναὸς οὗτος, καὶ σὺ ἐν τρισὶν ἡμέραις ἐγερεῖς αὐτόν.

21 Ἐκεῖνος δὲ ἔλεγε περὶ τοῦ ναοῦ τοῦ σώ-
ματος αὐτοῦ.
22 Ὅτε οὖν ἠγέρθη ἐκ νεκρῶν, ἐμνήσθη-
σαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ὅτι τοῦτο ἔλεγεν αὐτοῖς·
καὶ ἐπίστευσαν τῇ γραφῇ, καὶ τῷ λόγῳ ᾧ εἶπεν
ὁ Ἰησοῦς.
23 Ὡς δὲ ἦν ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν τῷ πάσχα
ἐν τῇ ἑορτῇ, πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς τὸ ὄνομα
αὐτοῦ, θεωροῦντες αὐτοῦ τὰ σημεῖα ἃ ἐποίει.
24 Αὐτὸς δὲ ὁ Ἰησοῦς οὐκ ἐπίστευεν ἑαυτὸν
αὐτοῖς, διὰ τὸ αὐτὸν γινώσκειν πάντας.
25 Καὶ ὅτι οὐ χρείαν εἶχεν ἵνα τὶς μαρτυ-
ρήσῃ περὶ τοῦ ἀνθρώπου· αὐτὸς γὰρ ἐγίνωσκε
τί ἦν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

Μυεῖ δὲ Νικόδημον ἐν τρίτῳ Λόγος
Βάπτισμα, πίστιν, καὶ τὸν ἐν ξύλῳ μόρον.
Φθόνος Μαθητῶν Προδρόμου πρὸς Δεσπότην,
Οἷς Θειότητα τοῦ Λόγου παριστάει,

1 Ἦν δὲ ἄνθρωπος ἐκ τῶν Φαρι-
σαίων, Νικόδημος ὄνομα αὐ-
τῷ, ἄρχων τῶν Ἰουδαίων.
2 Οὗτος ἦλθε πρὸς τὸν Ἰησοῦν νυκτὸς, καὶ
εἶπεν αὐτῷ· Ῥαββὶ, οἴδαμεν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ
ἐλήλυθας διδάσκαλος· οὐδεὶς γὰρ ταῦτα τὰ
σημεῖα δύναται ποιεῖν ἃ σὺ ποιεῖς, ἐὰν μὴ
ᾖ ὁ Θεὸς μετ' αὐτοῦ.
3 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ·
Ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, ἐὰν μή τις γεννηθῇ
ἄνωθεν, οὐ δύναται ἰδεῖν τὴν βασιλείαν τοῦ
Θεοῦ.

4 Λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ Νικόδημος· Πῶς
δύναται ἄνθρωπος γεννηθῆναι γέρων ὤν; μὴ
δύναται εἰς τὴν κοιλίαν τῆς μητρὸς αὐτοῦ δεύ-
τερον εἰσελθεῖν καὶ γεννηθῆναι;

5 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν ἀμὴν λέ-
γω σοι, ἐὰν μή τις γεννηθῇ ἐξ ὕδατος καὶ
Πνεύματος, οὐ δύναται εἰσελθεῖν εἰς τὴν
βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

6 Τὸ γεγεννημένον ἐκ τῆς σαρκὸς, σάρξ
ἐστι· καὶ τὸ γεγεννημένον ἐκ τοῦ Πνεύματος,
πνεῦμά ἐστι.

7 Μὴ θαυμάσῃς ὅτι εἶπόν σοι· Δεῖ ὑμᾶς
γεννηθῆναι ἄνωθεν.

8 Τὸ πνεῦμα ὅπου θέλει πνεῖ· καὶ τὴν φω-
νὴν αὐτοῦ ἀκούεις, ἀλλ' οὐκ οἶδας πόθεν ἔρ-
χεται, καὶ ποῦ ὑπάγει· οὕτως ἐστὶ πᾶς ὁ γεγεν-
νημένος ἐκ τοῦ Πνεύματος.

9 Ἀπεκρίθη Νικόδημος, καὶ εἶπεν αὐτῷ·
Πῶς δύναται ταῦτα γενέσθαι;

10 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ·
Σὺ εἶ ὁ διδάσκαλος τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ταῦτα
οὐ γινώσκεις;

11 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, ὅτι ὃ οἴδαμεν
λαλοῦμεν, καὶ ὃ ἑωράκαμεν μαρτυροῦμεν, καὶ
τὴν μαρτυρίαν ἡμῶν οὐ λαμβάνετε.

12 Εἰ τὰ ἐπίγεια εἶπον ὑμῖν, καὶ οὐ πι-
στεύετε, πῶς, ἐὰν εἴπω ὑμῖν τὰ ἐπουράνια,
πιστεύσετε;

13 Καὶ οὐδεὶς ἀναβέβηκεν εἰς τὸν οὐρανὸν
εἰ μὴ ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβὰς, ὁ Υἱὸς τοῦ
ἀνθρώπου ὁ ὢν ἐν τῷ οὐρανῷ.

14 Καὶ καθὼς Μωσῆς ὕψωσε τὸν ὄφιν ἐν
τῇ ἐρήμῳ, οὕτως ὑψωθῆναι δεῖ τὸν Υἱὸν τοῦ
ἀνθρώπου.

15 Ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν, μὴ ἀπό-
ληται, ἀλλ' ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον.
16 Οὕτω γὰρ ἠγάπησεν ὁ Θεὸς τὸν κόσ-
μον, ὥστε τὸν Υἱὸν αὐτοῦ τὸν μονογενῆ ἔδωκεν,
ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν, μὴ ἀπόληται,
ἀλλ' ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον.
17 Οὐ γὰρ ἀπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν
αὐτοῦ εἰς τὸν κόσμον, ἵνα κρίνῃ τὸν κόσμον,
ἀλλ' ἵνα σωθῇ ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ.
18 Ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν, οὐ κρίνεται· ὁ
δὲ μὴ πιστεύων, ἤδη κέκριται, ὅτι μὴ πεπί-
στευκεν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ μονογενοῦς Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.
19 Αὕτη δέ ἐστιν ἡ κρίσις, ὅτι τὸ φῶς ἐλή-
λυθεν εἰς τὸν κόσμον, καὶ ἠγάπησαν οἱ ἄνθρω-
ποι μᾶλλον τὸ σκότος ἢ τὸ φῶς· ἦν γὰρ πο-
νηρὰ αὐτῶν τὰ ἔργα.
20 Πᾶς γὰρ ὁ φαῦλα πράσσων, μισεῖ τὸ
φῶς· καὶ οὐκ ἔρχεται πρὸς τὸ φῶς, ἵνα μὴ ἐλεγ-
χθῇ τὰ ἔργα αὐτοῦ.
21 Ὁ δὲ ποιῶν τὴν ἀλήθειαν, ἔρχεται
πρὸς τὸ φῶς, ἵνα φανερωθῇ αὐτοῦ τὰ ἔργα,
ὅτι ἐν Θεῷ ἐστιν εἰργασμένα.
22 Μετὰ ταῦτα ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μα-
θηταὶ αὐτοῦ εἰς τὴν Ἰουδαίαν γῆν, καὶ ἐκεῖ
διέτριβε μετ' αὐτῶν καὶ ἐβάπτιζεν.
23 Ἦν δὲ καὶ Ἰωάννης βαπτίζων ἐν Αἰ-
νὼν, ἐγγὺς τοῦ Σαλεὶμ, ὅτι ὕδατα πολλὰ
ἦν ἐκεῖ· καὶ παρεγίνοντο καὶ ἐβαπτίζοντο.
24 Οὔπω γὰρ ἦν βεβλημένος εἰς τὴν φυ-
λακὴν ὁ Ἰωάννης.
25 Ἐγένετο οὖν ζήτησις ἐκ τῶν μαθητῶν
Ἰωάννου μετὰ Ἰουδαίων περὶ καθαρισμοῦ.
26 Καὶ ἦλθον πρὸς τὸν Ἰωάννην καὶ εἶπον
αὐτῷ· Ῥαββὶ, ὃς ἦν μετὰ σοῦ πέραν τοῦ Ἰορ-
δά-

δάνου, ᾧ σὺ μεμαρτύρηκας, ἴδε, οὗτος βα-
πτίζει, καὶ πάντες ἔρχονται πρὸς αὐτόν.
27 Ἀπεκρίθη Ἰωάννης καὶ εἶπεν· Οὐ δύ-
ναται ἄνθρωπος λαμβάνειν οὐδὲν ἐὰν μὴ ᾖ
δεδομένον αὐτῷ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ.
28 Αὐτοὶ ὑμεῖς μοι μαρτυρεῖτε ὅτι εἶπον·
Οὐκ εἰμὶ ἐγὼ ὁ Χριστὸς, ἀλλ' ὅτι ἀπεσταλ-
μένος εἰμὶ ἔμπροσθεν ἐκείνου.
29 Ὁ ἔχων τὴν νύμφην, νυμφίος ἐστίν·
ὁ δὲ φίλος τοῦ νυμφίου ὁ ἑστηκὼς καὶ ἀκούων αὐ-
τοῦ, χαρᾷ χαίρει διὰ τὴν φωνὴν τοῦ νυμφίου·
αὕτη οὖν ἡ χαρὰ ἡ ἐμὴ πεπλήρωται.
30 Ἐκεῖνον δεῖ αὐξάνειν, ἐμὲ δὲ ἐλατ-
τοῦσθαι.
31 Ὁ ἄνωθεν ἐρχόμενος, ἐπάνω πάντων
ἐστίν. ὁ ὢν ἐκ τῆς γῆς, ἐκ τῆς γῆς ἐστι, καὶ
ἐκ τῆς γῆς λαλεῖ. ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐρχόμενος,
ἐπάνω πάντων ἐστί.
32 Καὶ ὃ ἑώρακε καὶ ἤκουσε, τοῦτο μαρτυ-
ρεῖ· καὶ τὴν μαρτυρίαν αὐτοῦ οὐδεὶς λαμβάνει.
33 Ὁ λαβὼν αὐτοῦ τὴν μαρτυρίαν ἐσφρά-
γισεν ὅτι ὁ Θεὸς ἀληθής ἐστιν.
34 Ὃν γὰρ ἀπέστειλεν ὁ Θεὸς, τὰ ῥήματα
τοῦ Θεοῦ λαλεῖ· οὐ γὰρ ἐκ μέτρου δίδωσιν ὁ
Θεὸς τὸ Πνεῦμα.
35 Ὁ πατὴρ ἀγαπᾷ τὸν Υἱὸν, καὶ πάν-
τα δέδωκεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ.
36 Ὁ πιστεύων εἰς τὸν Υἱὸν, ἔχει ζωὴν
αἰώνιον· ὁ δὲ ἀπειθῶν τῷ Υἱῷ, οὐκ ὄψε-
ται ζωὴν, ἀλλ' ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ μένει ἐπ'
αὐτόν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

Τὸ δ' αὖ τέταρτον τὴν Σαμαρεῖτιν φέρει.
Καὶ μελλόποτμον παῖδος ἀλθαίνει γόνον.

1 Ω'Σ οὖν ἔγνω ὁ Κύριος ὅτι ἤκουσαν
οἱ φαρισαῖοι, ὅτι Ἰησοῦς πλείο-
νας μαθητὰς ποιεῖ καὶ βαπτίζει, ἢ Ἰωάννης.
2 (Καίτοιγε Ἰησοῦς αὐτὸς οὐκ ἐβάπτι-
ζεν, ἀλλ' οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.)
3 Ἀφῆκε τὴν Ἰουδαίαν, καὶ ἀπῆλθε πά-
λιν εἰς τὴν Γαλιλαίαν.
4 Ἔδει δὲ αὐτὸν διέρχεσθαι διὰ τῆς Σα-
μαρείας.
5 Ἔρχεται οὖν εἰς πόλιν τῆς Σαμαρείας
λεγομένην Σιχὰρ, πλησίον τοῦ χωρίου, ὃ ἔδω-
κεν Ἰακὼβ Ἰωσὴφ τῷ Υἱῷ αὐτοῦ.
6 Ἦν δὲ ἐκεῖ πηγὴ τοῦ Ἰακώβ. ὁ οὖν
Ἰησοῦς κεκοπιακὼς ἐκ τῆς ὁδοιπορίας, ἐκα-
θέζετο οὕτως ἐπὶ τῇ πηγῇ· ὥρα ἦν ὡσεὶ ἕκτη.
7 Ἔρχεται γυνὴ ἐκ τῆς Σαμαρείας ἀν-
τλῆσαι ὕδωρ. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Δός
μοι πιεῖν.
8 Οἱ γὰρ μαθηταὶ αὐτοῦ ἀπεληλύθεισαν
εἰς τὴν πόλιν, ἵνα τροφὰς ἀγοράσωσι.
9 Λέγει οὖν αὐτῷ ἡ γυνὴ ἡ Σαμαρεῖτις·
Πῶς σὺ Ἰουδαῖος ὢν παρ' ἐμοῦ πιεῖν αἰτεῖς,
οὔσης γυναικὸς Σαμαρείτιδος; οὐ γὰρ συγ-
χρῶνται Ἰουδαῖοι Σαμαρείταις.
10 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῇ· Εἰ
ᾔδεις τὴν δωρεὰν τοῦ Θεοῦ, καὶ τίς ἐστιν ὁ λέ-
γων σοι· Δός μοι πιεῖν· σὺ ἂν ᾔτησας αὐτὸν,
καὶ ἔδωκεν ἄν σοι ὕδωρ ζῶν.

11 Λέ-

11 Λέγει αὐτῷ ἡ γυνή· Κύριε, οὔτε ἄντλημα ἔχεις, καὶ τὸ φρέαρ ἐστὶ βαθύ· πόθεν οὖν ἔχεις τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν;

12 Μὴ σὺ μείζων εἶ τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἰακώβ, ὃς ἔδωκεν ἡμῖν τὸ φρέαρ, καὶ αὐτὸς ἐξ αὐτοῦ ἔπιε, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ τὰ θρέμματα αὐτοῦ;

13 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῇ· Πᾶς ὁ πίνων ἐκ τοῦ ὕδατος τούτου, διψήσει πάλιν.

14 Ὃς δ' ἂν πίῃ ἐκ τοῦ ὕδατος, οὗ ἐγὼ δώσω αὐτῷ, οὐ μὴ διψήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα· ἀλλὰ τὸ ὕδωρ ὃ δώσω αὐτῷ γενήσεται ἐν αὐτῷ πηγὴ ὕδατος ἁλλομένου εἰς ζωὴν αἰώνιον.

15 Λέγει πρὸς αὐτὸν ἡ γυνή· Κύριε, δός μοι τοῦτο τὸ ὕδωρ, ἵνα μὴ διψῶ, μηδὲ ἔρχωμαι ἐνθάδε ἀντλεῖν.

16 Λέγω αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ὕπαγε, φώνησον τὸν ἄνδρα σου, καὶ ἐλθὲ ἐνθάδε.

17 Ἀπεκρίθη ἡ γυνή, καὶ εἶπεν· Οὐκ ἔχω ἄνδρα. Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Καλῶς εἶπας· Ὅτι ἄνδρα οὐκ ἔχω.

18 Πέντε γὰρ ἄνδρας ἔσχες, καὶ νῦν ὃν ἔχεις, οὐκ ἔστι σου ἀνήρ· τοῦτο ἀληθὲς εἴρηκας.

19 Λέγει αὐτῷ ἡ γυνή· Κύριε, θεωρῶ ὅτι προφήτης εἶ σύ.

20 Οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν τούτῳ τῷ ὄρει προσεκύνησαν· καὶ ὑμεῖς λέγετε ὅτι ἐν Ἱεροσολύμοις ἐστὶν ὁ τόπος ὅπου δεῖ προσκυνεῖν.

21 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γύναι, πίστευσόν μοι, ὅτι ἔρχεται ὥρα, ὅτε οὔτε ἐν τῷ ὄρει τούτῳ, οὔτε ἐν Ἱεροσολύμοις προσκυνήσετε τῷ πατρί.

22 Ὑμεῖς προσκυνεῖτε ὃ οὐκ οἴδατε· ἡμεῖς

προσκυνοῦμεν ὃ οἴδαμεν· ὅτι ἡ σωτηρία ἐκ
τῶν Ἰουδαίων ἐστίν.
23 Ἀλλ' ἔρχεται ὥρα, ϗ νῦν ἐστιν, ὅτε οἱ
ἀληθινοὶ προσκυνηταὶ προσκυνήσουσι τῷ πα-
τρὶ ἐν πνεύματι ϗ ἀληθείᾳ· ϗ γὰρ ὁ πατὴρ
τοιούτους ζητεῖ τοὺς προσκυνοῦντας αὐτόν.
24 Πνεῦμα ὁ Θεός· ϗ τοὺς προσκυνοῦν-
τας αὐτὸν, ἐν πνεύματι ϗ ἀληθείᾳ δεῖ
προσκυνεῖν.
25 Λέγει αὐτῷ ἡ γυνή· Οἶδα ὅτι Μεσ-
σίας ἔρχεται, ὁ λεγόμενος Χριστός· ὅταν
ἔλθῃ ἐκεῖνος, ἀναγγελεῖ ἡμῖν πάντα.
26 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγώ εἰμι,
ὁ λαλῶν σοι.
27 Καὶ ἐπὶ τούτῳ ἦλθον οἱ μαθηταὶ αὐ-
τοῦ, ϗ ἐθαύμασαν ὅτι μετὰ γυναικὸς ἐλά-
λει. οὐδεὶς μέντοι εἶπε· Τί ζητεῖς; ἤ, τί
λαλεῖς μετ' αὐτῆς.
28 Ἀφῆκεν οὖν τὴν ὑδρίαν αὐτῆς ἡ γυνὴ,
ϗ ἀπῆλθεν εἰς τὴν πόλιν, ϗ λέγει τοῖς ἀν-
θρώποις·
29 Δεῦτε, ἴδετε ἄνθρωπον, ὃς εἶπέ μοι πάν-
τα ὅσα ἐποίησα· μήτι οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός.
30 Ἐξῆλθον οὖν ἐκ τῆς πόλεως, ϗ ἤρ-
χοντο πρὸς αὐτόν.
31 Ἐν δὲ τῷ μεταξὺ ἠρώτων αὐτὸν οἱ μα-
θηταὶ, λέγοντες· Ῥαββὶ, φάγε.
32 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἐγὼ βρῶσιν ἔχω
φαγεῖν, ἣν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε.
33 Ἔλεγον οὖν οἱ μαθηταὶ πρὸς ἀλλή-
λους· Μήτις ἤνεγκεν αὐτῷ φαγεῖν;
34 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐμὸν βρῶ-
μά ἐστιν, ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ πέμψαν-
τός με, ϗ τελειώσω αὐτοῦ τὸ ἔργον.

35 Οὐχ

35 Οὐχ ὑμεῖς λέγετε ὅτι ἔτι τετράμηνόν ἐστι, καὶ ὁ θερισμὸς ἔρχεται; Ἰδοὺ, λέγω ὑμῖν, ἐπάρατε τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ θεάσασθε τὰς χώρας ὅτι λευκαί εἰσι πρὸς θερισμὸν ἤδη.

36 Καὶ ὁ θερίζων, μισθὸν λαμβάνει, καὶ συνάγει καρπὸν εἰς ζωὴν αἰώνιον· ἵνα καὶ ὁ σπείρων ὁμοῦ χαίρῃ, καὶ ὁ θερίζων.

37 Ἐν γὰρ τούτῳ ὁ λόγος ἐστὶν ὁ ἀληθινὸς, ὅτι ἄλλος ἐστὶν ὁ σπείρων, καὶ ἄλλος ὁ θερίζων.

38 Ἐγὼ ἀπέστειλα ὑμᾶς θερίζειν ὃ οὐχ ὑμεῖς κεκοπιάκατε· ἄλλοι κεκοπιάκασι, καὶ ὑμεῖς εἰς τὸν κόπον αὐτῶν εἰσεληλύθατε.

39 Ἐκ δὲ τῆς πόλεως ἐκείνης πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτὸν τῶν Σαμαρειτῶν, διὰ τὸν λόγον τῆς γυναικὸς, μαρτυρούσης· Ὅτι εἶπέ μοι πάντα ὅσα ἐποίησα.

40 Ὡς οὖν ἦλθον πρὸς αὐτὸν οἱ Σαμαρεῖται, ἠρώτων αὐτὸν μεῖναι παρ' αὐτοῖς· καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ δύο ἡμέρας.

41 Καὶ πολλῷ πλείους ἐπίστευσαν διὰ τὸν λόγον αὐτοῦ.

42 Τῇ τε γυναικὶ ἔλεγον· Ὅτι οὐκέτι διὰ τὴν σὴν λαλιὰν πιστεύομεν· αὐτοὶ γὰρ ἀκηκόαμεν, καὶ οἴδαμεν ὅτι οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ σωτὴρ τοῦ κόσμου, ὁ Χριστός.

43 Μετὰ δὲ τὰς δύο ἡμέρας ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν, καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

44 Αὐτὸς γὰρ ὁ Ἰησοῦς ἐμαρτύρησεν ὅτι Προφήτης ἐν τῇ ἰδίᾳ πατρίδι τιμὴν οὐκ ἔχει.

45 Ὅτε οὖν ἦλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἐδέξαντο αὐτὸν οἱ Γαλιλαῖοι, πάντα ἑωρα-

κότες ἃ ἐποίησεν ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν τῇ ἑορ-
τῇ. καὶ αὐτοὶ γὰρ ἦλθον εἰς τὴν ἑορτήν.
46 Ἦλθεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πάλιν εἰς τὴν Κα-
νᾶ τῆς Γαλιλαίας, ὅπου ἐποίησε τὸ ὕδωρ
οἶνον, Καὶ ἦν τις βασιλικὸς, οὗ ὁ Υἱὸς ἠσθέ-
νει ἐν Καπερναούμ.
47 Οὗτος ἀκούσας ὅτι Ἰησοῦς ἥκει ἐκ τῆς
Ἰουδαίας εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἀπῆλθε πρὸς
αὐτὸν, καὶ ἠρώτα αὐτὸν ἵνα καταβῇ καὶ ἰάσηται
αὐτοῦ τὸν Υἱόν· ἤμελλε γὰρ ἀποθνήσκειν.
48 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτόν· Ἐὰν
μὴ σημεῖα καὶ τέρατα ἴδητε, οὐ μὴ πιστεύ-
σητε.
49 Λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ βασιλικός· Κύ-
ριε, κατάβηθι πρὶν ἀποθανεῖν τὸ παιδίον
μου.
50 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Πορεύου· ὁ
Υἱός σου ζῇ· Καὶ ἐπίστευσεν ὁ ἄνθρωπος
τῷ λόγῳ ᾧ εἶπεν αὐτῷ Ἰησοῦς, καὶ ἐπο-
ρεύετο.
51 Ἤδη δὲ αὐτοῦ καταβαίνοντος, οἱ δοῦ-
λοι αὐτοῦ ἀπήντησαν αὐτῷ, καὶ ἀπήγγειλαν,
λέγοντες· Ὅτι ὁ παῖς σου ζῇ.
52 Ἐπύθετο οὖν παρ᾽ αὐτῶν τὴν ὥραν ἐν ᾗ
κομψότερον ἔσχε· καὶ εἶπον αὐτῷ· Ὅτι χθὲς
ὥραν ἑβδόμην ἀφῆκεν αὐτὸν ὁ πυρετός.
53 Ἔγνω οὖν ὁ πατὴρ ὅτι ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥ-
ρᾳ ἐν ᾗ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι ὁ Υἱός
σου ζῇ, ἐπίστευσεν αὐτὸς καὶ ἡ οἰκία αὐτοῦ ὅλη.
54 Τοῦτο πάλιν δεύτερον σημεῖον ἐποίη-
σεν ὁ Ἰησοῦς, ἐλθὼν ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἰς
τὴν Γαλιλαίαν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

Πέμπτον δ' ἰᾶται παρ' κολυμβήθραν λύσιν
Αἴροντος εὐνήν· ἔνθεν ἑβραίων χόλος,
Οἷς Υἱὸν αὐτὸν τοῦ Θεοῦ φαίνει Λόγος.
Νεκροὺς ἀναστήσοντα, καὶ κρίνοντά γε,
Θεόν τ', Ἰωάννην τε, καὶ γραφὰς ἅμα
Συμμαρτυροῦντας εἰσάγει· καὶ Μωσέα
Κατήγορόν σφιν δοξολήπταις ἀθλίοις.

1 ΜΕτὰ ταῦτα ἦν ἑορτὴ τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἀνέβη ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἱεροσόλυμα.

2 Ἔστι δὲ ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις ἐπὶ τῇ προβατικῇ κολυμβήθρα, ἡ ἐπιλεγομένη Ἑβραϊστὶ Βηθεσδά, πέντε στοὰς ἔχουσα.

3 Ἐν ταύταις κατέκειτο πλῆθος πολὺ τῶν ἀσθενούντων, τυφλῶν, χωλῶν, ξηρῶν, ἐκδεχομένων τὴν τοῦ ὕδατος κίνησιν.

4 Ἄγγελος γὰρ κατὰ καιρὸν κατέβαινεν ἐν τῇ κολυμβήθρᾳ, καὶ ἐτάρασσε τὸ ὕδωρ· ὁ οὖν πρῶτος ἐμβὰς μετὰ τὴν ταραχὴν τοῦ ὕδατος, ὑγιὴς ἐγίνετο, ᾧ δήποτε κατείχετο νοσήματι.

5 Ἦν δέ τις ἄνθρωπος ἐκεῖ τριάκοντα ὀκτὼ ἔτη ἔχων ἐν τῇ ἀσθενείᾳ.

6 Τοῦτον ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς κατακείμενον, καὶ γνοὺς ὅτι πολὺν ἤδη χρόνον ἔχει, λέγει αὐτῷ· Θέλεις ὑγιὴς γενέσθαι;

7 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ἀσθενῶν· Κύριε, ἄνθρωπον οὐκ ἔχω, ἵνα, ὅταν ταραχθῇ τὸ ὕδωρ, βάλλῃ με εἰς τὴν κολυμβήθραν· ἐν ᾧ δὲ ἔρχομαι ἐγὼ, ἄλλος πρὸ ἐμοῦ καταβαίνει.

8 Λέ-

8 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἔγειραι, ἆρον τὸν κράββατόν σου, καὶ περιπάτει.

9 Καὶ εὐθέως ἐγένετο ὑγιὴς ὁ ἄνθρωπος, καὶ ἦρε τὸν κράββατον αὐτοῦ, καὶ περιεπάτει. Ἦν δὲ σάββατον ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ.

10 Ἔλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι τῷ τεθεραπευμένῳ· Σάββατόν ἐστιν, οὐκ ἔξεστί σοι ἆραι τὸν κράββατον.

11 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Ὁ ποιήσας με ὑγιῆ, ἐκεῖνός μοι εἶπεν· Ἆρον τὸν κράββατόν σου, καὶ περιπάτει.

12 Ἠρώτησαν οὖν αὐτόν· Τίς ἐστιν ὁ ἄνθρωπος ὁ εἰπών σοι· Ἆρον τὸν κράββατόν σου, καὶ περιπάτει.

13 Ὁ δὲ ἰαθεὶς οὐκ ᾔδει τίς ἐστιν· ὁ γὰρ Ἰησοῦς ἐξένευσεν ὄχλου ὄντος ἐν τῷ τόπῳ.

14 Μετὰ ταῦτα εὑρίσκει αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἴδε, ὑγιὴς γέγονας· μηκέτι ἁμάρτανε, ἵνα μὴ χεῖρόν τι σοί γένηται.

15 Ἀπῆλθεν ὁ ἄνθρωπος, καὶ ἀνήγγειλε τοῖς Ἰουδαίοις, ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ ποιήσας αὐτὸν ὑγιῆ.

16 Καὶ διὰ τοῦτο ἐδίωκον τὸν Ἰησοῦν οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ ἐζήτουν αὐτὸν ἀποκτεῖναι, ὅτι ταῦτα ἐποίει ἐν σαββάτῳ.

17 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς· Ὁ πατήρ μου ἕως ἄρτι ἐργάζεται, κἀγὼ ἐργάζομαι.

18 Διὰ τοῦτο οὖν μᾶλλον ἐζήτουν αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι, ὅτι οὐ μόνον ἔλυε τὸ σάββατον, ἀλλὰ καὶ πατέρα ἴδιον ἔλεγε τὸν Θεὸν, ἴσον ἑαυτὸν ποιῶν τῷ Θεῷ.

19 Ἀπεκρίνατο οὖν ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν

αὐ-

αὐτοῖς· Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ δύναται ὁ
Υἱὸς ποιεῖν ἀφ' ἑαυτοῦ οὐδὲν, ἐὰν μή τι βλέπῃ
τὸν πατέρα ποιοῦντα· ἃ γὰρ ἂν ἐκεῖνος ποιῇ,
ταῦτα καὶ ὁ Υἱὸς ὁμοίως ποιεῖ.
20 Ὁ γὰρ πατὴρ φιλεῖ τὸν Υἱὸν, καὶ
πάντα δείκνυσιν αὐτῷ ἃ αὐτὸς ποιεῖ· καὶ μεί-
ζονα τούτων δείξει αὐτῷ ἔργα, ἵνα ὑμεῖς θαυ-
μάζητε.
21 Ὥσπερ γὰρ ὁ πατὴρ ἐγείρει τοὺς νεκροὺς
καὶ ζωοποιεῖ, οὕτω καὶ ὁ Υἱὸς οὓς θέλει ζωο-
ποιεῖ.
22 Οὐδὲ γὰρ ὁ πατὴρ κρίνει οὐδένα, ἀλ-
λὰ τὴν κρίσιν πᾶσαν δέδωκε τῷ Υἱῷ.
23 Ἵνα πάντες τιμῶσι τὸν Υἱὸν, καθὼς
τιμῶσι τὸν πατέρα. ὁ μὴ τιμῶν τὸν Υἱὸν, οὐ
τιμᾷ τὸν πατέρα τὸν πέμψαντα αὐτόν.
24 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὁ τὸν λό-
γον μου ἀκούων, καὶ πιστεύων τῷ πέμψαντί
με, ἔχει ζωὴν αἰώνιον, καὶ εἰς κρίσιν οὐκ ἔρ-
χεται, ἀλλὰ μεταβέβηκεν ἐκ τοῦ θανάτου εἰς
τὴν ζωήν.
25 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔρχεται
ὥρα, καὶ νῦν ἐστιν, ὅτε οἱ νεκροὶ ἀκούσονται
τῆς φωνῆς τοῦ Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ· καὶ οἱ ἀκούσαν-
τες ζήσονται.
26 Ὥσπερ γὰρ ὁ πατὴρ ἔχει ζωὴν ἐν
ἑαυτῷ, οὕτως ἔδωκε καὶ τῷ Υἱῷ ζωὴν ἔχειν
ἐν ἑαυτῷ.
27 Καὶ ἐξουσίαν ἔδωκεν αὐτῷ καὶ κρίσιν
ποιεῖν, ὅτι Υἱὸς ἀνθρώπου ἐστί.
28 Μὴ θαυμάζετε τοῦτο· ὅτι ἔρχεται ὥρα
ἐν ᾗ πάντες οἱ ἐν τοῖς μνημείοις ἀκούσονται
τῆς φωνῆς αὐτοῦ.
29 Καὶ ἐκπορεύσονται οἱ τὰ ἀγαθὰ ποιή-
σαν-

σαντες, εἰς ἀνάςασιν ζωῆς· οἱ δὲ τὰ φαῦλα
πράξαντες, εἰς ἀνάςασιν κρίσεως.
30 Οὐ δύναμαι ἐγὼ ποιεῖν ἀπ' ἐμαυτοῦ
οὐδέν· καθὼς ἀκούω κρίνω· καὶ ἡ κρίσις ἡ
ἐμὴ δικαία ἐςίν· ὅτι οὐ ζητῶ τὸ θέλημα τὸ
ἐμόν, ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με
πατρός.
31 Ἐὰν ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ ἐμαυτοῦ, ἡ
μαρτυρία μου οὐκ ἔςιν ἀληθής.
32 Ἄλλος ἐςὶν ὁ μαρτυρῶν περὶ ἐμοῦ, καὶ
οἶδα ὅτι ἀληθής ἐςιν ἡ μαρτυρία, ἣν μαρτυ-
ρεῖ περὶ ἐμοῦ.
33 Ὑμεῖς ἀπεςάλκατε πρὸς Ἰωάννην,
καὶ μεμαρτύρηκε τῇ ἀληθείᾳ.
34 Ἐγὼ δὲ οὐ παρὰ ἀνθρώπου τὴν μαρτυ-
ρίαν λαμβάνω· ἀλλὰ ταῦτα λέγω, ἵνα ὑμεῖς
σωθῆτε.
35 Ἐκεῖνος ἦν ὁ λύχνος ὁ καιόμενος καὶ φαί-
νων· ὑμεῖς δὲ ἠθελήσατε ἀγαλλιαθῆναι
πρὸς ὥραν ἐν τῷ φωτὶ αὐτοῦ.
36 Ἐγὼ δὲ ἔχω τὴν μαρτυρίαν μείζω τοῦ
Ἰωάννου· τὰ γὰρ ἔργα ἃ ἔδωκέ μοι ὁ πατὴρ
ἵνα τελειώσω αὐτά, αὐτὰ τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ
ποιῶ, μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ, ὅτι ὁ πατήρ με
ἀπέςαλκε.
37 Καὶ ὁ πέμψας με πατὴρ, αὐτὸς με-
μαρτύρηκε περὶ ἐμοῦ· οὔτε φωνὴν αὐτοῦ ἀκηκόα-
τε πώποτε, οὔτε εἶδος αὐτοῦ ἑωράκατε.
38 Καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ οὐκ ἔχετε μένοντα
ἐν ὑμῖν· ὅτι ὃν ἀπέςειλεν ἐκεῖνος, τούτῳ
ὑμεῖς οὐ πιςεύετε.
39 Ἐρευνᾶτε τὰς γραφάς, ὅτι ὑμεῖς δοκεῖ-
τε ἐν αὐταῖς ζωὴν αἰώνιον ἔχειν· καὶ ἐκεῖναί
εἰσιν αἱ μαρτυροῦσαι περὶ ἐμοῦ.

40 Καὶ

40 Καὶ οὐ θέλετε ἐλθεῖν πρός με, ἵνα
ζωὴν ἔχητε.

41 Δόξαν παρὰ ἀνθρώπων οὐ λαμβάνω·

42 Α'λλ' ἔγνωκα ὑμᾶς ὅτι τὴν ἀγάπην τοῦ
Θεοῦ οὐκ ἔχετε ἐν ἑαυτοῖς.

43 Ε'γὼ ἐλήλυθα ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Πα-
τρός μου, καὶ οὐ λαμβάνετέ με· ἐὰν ἄλ-
λος ἔλθῃ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἰδίῳ, ἐκεῖνον
λήψεσθε.

44 Πῶς δύνασθε ὑμεῖς πιστεῦσαι, δόξαν
παρὰ ἀλλήλων λαμβάνοντες, καὶ τὴν δό-
ξαν τὴν παρὰ τοῦ μόνου Θεοῦ οὐ ζητεῖτε;

45 Μὴ δοκεῖτε, ὅτι ἐγὼ κατηγορήσω ὑμῶν
πρὸς τὸν πατέρα· ἔστιν ὁ κατηγορῶν ὑμῶν
Μωσῆς, εἰς ὃν ὑμεῖς ἠλπίσατε.

46 Εἰ γὰρ ἐπιστεύετε Μωσῇ, ἐπιστεύετε
ἂν ἐμοί· περὶ γὰρ ἐμοῦ ἐκεῖνος ἔγραψεν.

47 Εἰ δὲ τοῖς ἐκείνου γράμμασιν οὐ πιστεύε-
τε, πῶς τοῖς ἐμοῖς ῥήμασι πιστεύσετε;

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ϛ'. 6.

Τὸ δ' ἕκτον ἄρτοις πέντε ἡμιμυρίους
Κόρεσσε. καὶ κλύδωνα πέζευσεν Λόγος.
Α'ρτον δ' ἑαυτὸν ζῶντα πρὸς βρῶσιν πόρεν.
Ο'χλος δ' ἀπέστη, αἷμα πίνειν μὴ στέγων.
Οἱ δ' ἕνδεκα πρόσμειναν ἀπλέτῳ πόθῳ.

1 ΜΕτὰ ταῦτα ἀπῆλθεν ὁ Ἰησοῦς πέ-
ραν τῆς θαλάσσης τῆς Γαλι-
λαίας τῆς Τιβεριάδος.

2 Καὶ ἠκολούθει αὐτῷ ὄχλος πολὺς, ὅτι
ἑώρων αὐτοῦ τὰ σημεῖα, ἃ ἐποίει ἐπὶ τῶν ἀσθε-
νούντων.

3 Α'νῆλθε δὲ εἰς τὸ ὄρος ὁ Ι'ησοῦς, καὶ ἐκεῖ
ἐκάθητο μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ.
4 Η῏ν δὲ ἐγγὺς τὸ πάσχα, ἡ ἑορτὴ τῶν
Ι'ουδαίων.
5 Ε'πάρας οὖν ὁ Ι'ησοῦς τοὺς ὀφθαλμοὺς
καὶ θεασάμενος ὅτι πολὺς ὄχλος ἔρχεται πρὸς
αὐτὸν, λέγει πρὸς τὸν Φίλιππον· Πόθεν
ἀγοράσωμεν ἄρτους, ἵνα φάγωσιν οὗτοι;
6 (Τοῦτο δὲ ἔλεγε πειράζων αὐτόν· αὐ-
τὸς γὰρ ᾔδει τί ἔμελλε ποιεῖν.)
7 Α'πεκρίθη αὐτῷ Φίλιππος· Διακο-
σίων δηναρίων ἄρτοι οὐκ ἀρκοῦσιν αὐτοῖς, ἵνα
ἕκαστος αὐτῶν βραχύ τι λάβῃ.
8 Λέγει αὐτῷ εἷς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ,
Α'νδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρου.
9 Ε῎στι παιδάριον ἓν ὧδε ὃ ἔχει πέντε ἄρ-
τους κριθίνους καὶ δύο ὀψάρια· ἀλλὰ ταῦτα τί
ἐστιν εἰς τοσούτους;
10 Εἶπε δὲ ὁ Ι'ησοῦς· Ποιήσατε τοὺς ἀν-
θρώπους ἀναπεσεῖν. Η῏ν δὲ χόρτος πολὺς ἐν
τῷ τόπῳ. Α'νέπεσον οὖν οἱ ἄνδρες τὸν ἀρι-
θμὸν ὡσεὶ πεντακισχίλιοι.
11 Ε῎λαβε δὲ τοὺς ἄρτους ὁ Ι'ησοῦς, καὶ εὐ-
χαριστήσας διέδωκε τοῖς μαθηταῖς, οἱ δὲ
μαθηταὶ τοῖς ἀνακειμένοις· ὁμοίως δὲ ἐκ τῶν
ὀψαρίων ὅσον ἤθελον.
12 Ω῾ς δὲ ἐνεπλήσθησαν, λέγει τοῖς μα-
θηταῖς αὐτοῦ· Συναγάγετε τὰ περισσεύσαντα
κλάσματα, ἵνα μή τι ἀπόληται.
13 Συνήγαγον οὖν, καὶ ἐγέμισαν δώ-
δεκα κοφίνους κλασμάτων ἐκ τῶν πέντε ἄρ-
των τῶν κριθίνων, ἃ ἐπερίσσευσε τοῖς βεβρω-
κόσιν.
14 Οἱ οὖν ἄνθρωποι ἰδόντες ὃ ἐποίησε
ση-

σημεῖον ὁ Ἰησοῦς, ἔλεγον· Ὅτι οὗτός ἐστιν
ἀληθῶς ὁ προφήτης ὁ ἐρχόμενος εἰς τὸν κόσμον.
15 Ἰησοῦς οὖν γνοὺς ὅτι μέλλουσιν ἔρχεσθαι,
καὶ ἁρπάζειν αὐτὸν ἵνα ποιήσωσιν αὐτὸν βα-
σιλέα, ἀνεχώρησε πάλιν εἰς τὸ ὄρος αὐτὸς
μόνος.
16 Ὡς δὲ ὀψία ἐγένετο, κατέβησαν οἱ
μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπὶ τὴν θάλασσαν.
17 Καὶ ἐμβάντες εἰς τὸ πλοῖον, ἤρχοντο
πέραν τῆς θαλάσσης εἰς Καπερναούμ· καὶ σκο-
τία ἤδη ἐγεγόνει, καὶ οὐκ ἐληλύθει πρὸς αὐ-
τοὺς ὁ Ἰησοῦς.
18 Ἥ τε θάλασσα, ἀνέμου μεγάλου πνέον-
τος, διηγείρετο.
19 Ἐληλακότες οὖν ὡς σταδίους εἰκοσιπέν-
τε ἢ τριάκοντα, θεωροῦσι τὸν Ἰησοῦν περιπα-
τοῦντα ἐπὶ τῆς θαλάσσης, καὶ ἐγγὺς τοῦ πλοίου
γινόμενον· καὶ ἐφοβήθησαν.
20 Ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· Ἐγώ εἰμι, μὴ
φοβεῖσθε.
21 Ἤθελον οὖν λαβεῖν αὐτὸν εἰς τὸ
πλοῖον· καὶ εὐθέως τὸ πλοῖον ἐγένετο ἐπὶ τῆς
γῆς εἰς ἣν ὑπῆγον.
22 Τῇ ἐπαύριον ὁ ὄχλος ὁ ἑστηκὼς πέραν
τῆς θαλάσσης, ἰδὼν ὅτι πλοιάριον ἄλλο οὐκ
ἦν ἐκεῖ εἰ μὴ ἓν ἐκεῖνο εἰς ὃ ἐνέβησαν οἱ μα-
θηταὶ αὐτοῦ, καὶ ὅτι οὐ συνεισῆλθε τοῖς μα-
θηταῖς αὐτοῦ ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ πλοιάριον, ἀλλὰ
μόνοι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἀπῆλθον.
23 Ἄλλα δὲ ἦλθε πλοιάρια ἐκ Τιβε-
ριάδος ἐγγὺς τοῦ τόπου ὅπου ἔφαγον τὸν ἄρτον,
εὐχαριστήσαντος τοῦ Κυρίου.
24 Ὅτε οὖν εἶδεν ὁ ὄχλος ὅτι Ἰησοῦς οὐκ
ἔστιν ἐκεῖ, οὐδὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἐνέβησαν
καὶ

καὶ αὐτοὶ εἰς τὰ πλοῖα, καὶ ἦλθον εἰς Καπερ-
ναοὺμ, ζητοῦντες τὸν Ἰησοῦν.
25 Καὶ εὑρόντες αὐτὸν πέραν τῆς θαλάσ-
σης, εἶπον αὐτῷ· Ῥαββὶ, πότε ὧδε γέ-
γονας;
26 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν·
Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ζητεῖτέ με οὐχ ὅτι
εἴδετε σημεῖα, ἀλλ' ὅτι ἐφάγετε ἐκ τῶν ἄρ-
των, καὶ ἐχορτάσθητε.
27 Ἐργάζεσθε μὴ τὴν βρῶσιν τὴν ἀπολ-
λυμένην, ἀλλὰ τὴν βρῶσιν τὴν μένουσαν εἰς
ζωὴν αἰώνιον, ἣν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑμῖν
δώσει· τοῦτον γὰρ ὁ πατὴρ ἐσφράγισεν ὁ Θεός.
28 Εἶπον οὖν πρὸς αὐτόν· Τί ποιοῦμεν
ἵνα ἐργαζώμεθα τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ;
29 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
Τοῦτό ἐστι τὸ ἔργον τοῦ Θεοῦ, ἵνα πιστεύσητε
εἰς ὃν ἀπέστειλεν ἐκεῖνος.
30 Εἶπον οὖν αὐτῷ· Τί οὖν ποιεῖς σὺ
σημεῖον, ἵνα ἴδωμεν καὶ πιστεύσωμέν σοι; τί
ἐργάζῃ;
31 Οἱ πατέρες ἡμῶν τὸ μάννα ἔφαγον ἐν
τῇ ἐρήμῳ, καθώς ἐστι γεγραμμένον· Ἄρτον
ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν.
32 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν ἀμὴν
λέγω ὑμῖν· Οὐ Μωσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸν ἄρ-
τον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ἀλλ' ὁ πατήρ μου δίδωσιν
ὑμῖν τὸν ἄρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ τὸν ἀληθινόν.
33 Ὁ γὰρ ἄρτος τοῦ Θεοῦ ἐστιν ὁ καταβαίνων
ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ζωὴν διδοὺς τῷ κόσμῳ.
34 Εἶπον οὖν πρὸς αὐτόν· Κύριε, πάν-
τοτε δὸς ἡμῖν τὸν ἄρτον τοῦτον.
35 Εἶπε δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγώ εἰμι
ὁ ἄρτος τῆς ζωῆς· ὁ ἐρχόμενος πρός με, οὐ
μὴ



μὴ πεινάσῃ· καὶ ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ, οὐ μὴ δι-
ψήσῃ πώποτε.

36 Ἀλλ' εἶπον ὑμῖν ὅτι καὶ ἑωράκατέ με,
καὶ οὐ πιστεύετε.

37 Πᾶν ὃ δίδωσί μοι ὁ πατὴρ, πρὸς ἐμὲ
ἥξει· καὶ τὸν ἐρχόμενον πρός με οὐ μὴ ἐκ-
βάλω ἔξω.

38 Ὅτι καταβέβηκα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, οὐχ ἵνα
ποιῶ τὸ θέλημα τὸ ἐμὸν, ἀλλὰ τὸ θέλημα
τοῦ πέμψαντός με.

39 Τοῦτο δέ ἐστι τὸ θέλημα τοῦ πέμψαν-
τός με πατρὸς, ἵνα πᾶν ὃ δέδωκέ μοι, μὴ
ἀπολέσω ἐξ αὐτοῦ, ἀλλὰ ἀναστήσω αὐτὸ
ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

40 Τοῦτο δέ ἐστι τὸ θέλημα τοῦ πέμψαν-
τός με, ἵνα πᾶς ὁ θεωρῶν τὸν Υἱὸν, καὶ πι-
στεύων εἰς αὐτὸν, ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον· καὶ ἀναστή-
σω αὐτὸν ἐγὼ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

41 Ἐγόγγυζον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι περὶ αὐτοῦ,
ὅτι εἶπεν· Ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ καταβὰς ἐκ
τοῦ οὐρανοῦ.

42 Καὶ ἔλεγον· Οὐχ οὗτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ
Υἱὸς Ἰωσὴφ, οὗ ἡμεῖς οἴδαμεν τὸν πατέρα
καὶ τὴν μητέρα; Πῶς οὖν λέγει οὗτος· Ὅτι
ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβέβηκα;

43 Ἀπεκρίθη οὖν ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐ-
τοῖς· Μὴ γογγύζετε μετ' ἀλλήλων.

44 Οὐδεὶς δύναται ἐλθεῖν πρός με, ἐὰν
μὴ ὁ πατὴρ ὁ πέμψας με ἑλκύσῃ αὐτὸν, καὶ
ἐγὼ ἀναστήσω αὐτὸν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

45 Ἔστι γεγραμμένον ἐν τοῖς προφήταις·
Καὶ ἔσονται πάντες διδακτοὶ τοῦ Θεοῦ. Πᾶς
οὖν ὁ ἀκούσας παρὰ τοῦ πατρὸς, καὶ μαθὼν, ἔρ-
χεται πρός με.

46 Οὐχ

46 Οὐχ ὅτι τὸν πατέρα τὶς ἑώρακεν, εἰ
μὴ ὁ ὢν παρὰ τοῦ Θεοῦ· οὗτος ἑώρακε τὸν
πατέρα.

47 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ πιστεύων
εἰς ἐμὲ, ἔχει ζωὴν αἰώνιον.

48 Ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος τῆς ζωῆς.

49 Οἱ πατέρες ὑμῶν ἔφαγον τὸ μάννα ἐν
τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἀπέθανον.

50 Οὗτός ἐστιν ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ
καταβαίνων, ἵνα τὶς ἐξ αὐτοῦ φάγῃ καὶ μὴ
ἀποθάνῃ.

51 Ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ ζῶν, ὁ ἐκ τοῦ οὐρα-
νοῦ καταβάς· ἐάν τις φάγῃ ἐκ τούτου τοῦ ἄρτου,
ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ὁ ἄρτος δὲ ὃν ἐγὼ
δώσω, ἡ σάρξ μου ἐστὶν, ἣν ἐγὼ δώσω ὑπὲρ
τῆς τοῦ κόσμου ζωῆς.

52 Ἐμάχοντο οὖν πρὸς ἀλλήλους οἱ Ἰου-
δαῖοι, λέγοντες· Πῶς δύναται οὗτος ἡμῖν
δοῦναι τὴν σάρκα φαγεῖν.

53 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν
ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ φάγητε τὴν σάρκα
τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου, καὶ πίνητε αὐτοῦ τὸ αἷμα,
οὐκ ἔχετε ζωὴν ἐν ἑαυτοῖς.

54 Ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα, καὶ πίνων μου
τὸ αἷμα, ἔχει ζωὴν αἰώνιον· καὶ ἐγὼ ἀναστή-
σω αὐτὸν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

55 Ἡ γὰρ σάρξ μου ἀληθῶς ἐστι βρῶσις,
καὶ τὸ αἷμά μου ἀληθῶς ἐστι πόσις.

56 Ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα, καὶ πί-
νων μου τὸ αἷμα, ἐν ἐμοὶ μένει, κἀγὼ
ἐν αὐτῷ.

57 Καθὼς ἀπέστειλέ με ὁ ζῶν πατὴρ,
κἀγὼ ζῶ διὰ τὸν πατέρα· καὶ ὁ τρώγων με,
κἀκεῖνος ζήσεται δι' ἐμέ.

58 Οὗ-

58 Οὗτός ἐστιν ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ κα-
ταβάς· οὐ καθὼς ἔφαγον οἱ πατέρες ὑμῶν τὸ
μάννα, καὶ ἀπέθανον· ὁ τρώγων τοῦτον τὸν ἄρ-
τον ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα.

59 Ταῦτα εἶπεν ἐν συναγωγῇ, διδάσκων
ἐν Καπερναούμ.

60 Πολλοὶ οὖν ἀκούσαντες ἐκ τῶν μαθητῶν
αὐτοῦ, εἶπον· Σκληρός ἐστιν οὗτος ὁ λόγος·
τίς δύναται αὐτοῦ ἀκούειν;

61 Εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἐν ἑαυτῷ ὅτι γογ-
γύζουσι περὶ τούτου οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, εἶπεν
αὐτοῖς· Τοῦτο ὑμᾶς σκανδαλίζει;

62 Ἐὰν οὖν θεωρῆτε τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου
ἀναβαίνοντα ὅπου ἦν τὸ πρότερον.

63 Τὸ πνεῦμά ἐστι τὸ ζωοποιοῦν, ἡ σὰρξ
οὐκ ὠφελεῖ οὐδέν· τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ λαλῶ ὑ-
μῖν, πνεῦμά ἐστι καὶ ζωή ἐστιν.

64 Ἀλλ' εἰσὶν ἐξ ὑμῶν τινες οἳ οὐ πιστεύου-
σιν· ᾔδει γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὁ Ἰησοῦς τίνες εἰσὶν
οἱ μὴ πιστεύοντες, καὶ τίς ἐστιν ὁ παραδώσων
αὐτόν.

65 Καὶ ἔλεγε· Διὰ τοῦτο εἴρηκα ὑμῖν, ὅτι
οὐδεὶς δύναται ἐλθεῖν πρός με, ἐὰν μὴ ᾖ δε-
δομένον αὐτῷ ἐκ τοῦ πατρός μου.

66 Ἐκ τούτου πολλοὶ ἀπῆλθον τῶν μαθη-
τῶν αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ οὐκέτι μετ' αὐτοῦ
περιεπάτουν.

67 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς τοῖς δώδεκα· Μὴ
καὶ ὑμεῖς θέλετε ὑπάγειν.

68 Ἀπεκρίθη οὖν αὐτῷ Σίμων Πέτρος·
Κύριε, πρὸς τίνα ἀπελευσόμεθα; ῥήματα
ζωῆς αἰωνίου ἔχεις·

69 Καὶ ἡμεῖς πεπιστεύκαμεν καὶ ἐγνώκαμεν
ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος.

70 Α'-

70 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ ἐγὼ
ὑμᾶς τοὺς δώδεκα ἐξελεξάμην; καὶ ἐξ ὑμῶν εἷς
διάβολός ἐστιν.
71 Ἔλεγε δὲ τὸν Ἰούδαν Σίμωνος Ἰσκα-
ριώτην· οὗτος γὰρ ἤμελλεν αὐτὸν παραδιδό-
ναι, εἷς ὢν ἐκ τῶν δώδεκα.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ'. 7.

Τὸ δ' ἕβδομον φονῶντας ἑβραίους ἔχει,
Οὓς σκηνοπηγῷ τῇ πανηγύρει Λόγος
Μέσῃ διδάσκει, κἀσχάτῃ Χριστοῦ πέρι.
Ζωῆς τε πηγὴν διψάουσι προσφέρει.
Καὶ σχίσμα λαοῖς ἀμφ' ἐκείνου προσφέρει.
Χριστὸν προφήτην θρυλλέουσι καὶ πλάνον.
Καὶ συλλαβεῖν θέλουσιν οὐκ ἀπεξάπη.
Βουλῇ τε Νικόδημος ἀντιψηφίει.

1 ΚΑὶ περιεπάτει ὁ Ἰησοῦς μετὰ ταῦ-
τα ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ· οὐ γὰρ ἤθε-
λεν ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ περιπατεῖν, ὅτι ἐζήτουν
αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι.
2 Ἦν δὲ ἐγγὺς ἡ ἑορτὴ τῶν Ἰουδαίων ἡ
σκηνοπηγία.
3 Εἶπον οὖν πρὸς αὐτὸν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ·
Μετάβηθι ἐντεῦθεν, καὶ ὕπαγε εἰς τὴν Ἰου-
δαίαν, ἵνα καὶ οἱ μαθηταί σου θεωρήσωσι τὰ
ἔργα σου ἃ ποιεῖς·
4 Οὐδεὶς γὰρ ἐν κρυπτῷ τι ποιεῖ, καὶ ζη-
τεῖ αὐτὸς ἐν παῤῥησίᾳ εἶναι· εἰ ταῦτα ποιεῖς,
φανέρωσον σεαυτὸν τῷ κόσμῳ.
5 Οὐδὲ γὰρ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐπίστευον
εἰς αὐτόν.
6 Λέγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὁ καιρὸς ὁ
ἐμὸς

ἐμὸς οὔπω πάρεστιν· ὁ δὲ καιρὸς ὁ ὑμέτερος
πάντοτέ ἐστιν ἕτοιμος.
7 Οὐ δύναται ὁ κόσμος μισεῖν ὑμᾶς·
ἐμὲ δὲ μισεῖ, ὅτι ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ αὐτοῦ,
ὅτι τὰ ἔργα αὐτοῦ πονηρά ἐστιν.
8 Ὑμεῖς ἀνάβητε εἰς τὴν ἑορτὴν ταύτην·
ἐγὼ οὔπω ἀναβαίνω εἰς τὴν ἑορτὴν ταύτην,
ὅτι ὁ καιρὸς ὁ ἐμὸς οὔπω πεπλήρωται.
9 Ταῦτα δὲ εἰπὼν αὐτοῖς, ἔμεινεν ἐν τῇ
Γαλιλαίᾳ.
10 Ὡς δὲ ἀνέβησαν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ,
τότε καὶ αὐτὸς ἀνέβη εἰς τὴν ἑορτὴν, οὐ φανε-
ρῶς, ἀλλ' ὡς ἐν κρυπτῷ.
11 Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι ἐζήτουν αὐτὸν ἐν τῇ
ἑορτῇ, καὶ ἔλεγον· Ποῦ ἐστιν ἐκεῖνος;
12 Καὶ γογγυσμὸς πολὺς περὶ αὐτοῦ ἦν ἐν
τοῖς ὄχλοις· οἱ μὲν ἔλεγον, ὅτι ἀγαθός ἐστιν·
ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Οὔ· ἀλλὰ πλανᾷ τὸν ὄχλον·
13 Οὐδεὶς μέντοι παῤῥησίᾳ ἐλάλει περὶ
αὐτοῦ, διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων.
14 Ἤδη δὲ τῆς ἑορτῆς μεσούσης, ἀνέβη
ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερὸν, καὶ ἐδίδασκε.
15 Καὶ ἐθαύμαζον οἱ Ἰουδαῖοι, λέγοντες·
Πῶς οὗτος γράμματα οἶδε, μὴ μεμαθηκώς;
16 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν·
Ἡ ἐμὴ διδαχὴ οὐκ ἔστιν ἐμὴ, ἀλλὰ τοῦ
πέμψαντός με.
17 Ἐάν τις θέλῃ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιεῖν,
γνώσεται περὶ τῆς διδαχῆς, πότερον ἐκ τοῦ
Θεοῦ ἐστιν, ἢ ἐγὼ ἀπ' ἐμαυτοῦ λαλῶ.
18 Ὁ ἀφ' ἑαυτοῦ λαλῶν, τὴν δόξαν τὴν
ἰδίαν ζητεῖ· ὁ δὲ ζητῶν τὴν δόξαν τοῦ πέμ-
ψαντος αὐτὸν, οὗτος ἀληθής ἐστι, καὶ ἀδικία
ἐν αὐτῷ οὐκ ἔστιν.

19 Οὐ Μωσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸν νόμον,
καὶ οὐδεὶς ἐξ ὑμῶν ποιεῖ τὸν νόμον; τί με ζη-
τεῖτε ἀποκτεῖναι;
20 Ἀπεκρίθη ὁ ὄχλος, καὶ εἶπε· Δαι-
μόνιον ἔχεις· τίς σε ζητεῖ ἀποκτεῖναι;
21 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
Ἓν ἔργον ἐποίησα· καὶ πάντες θαυμάζετε.
22 Διὰ τοῦτο Μωσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὴν
περιτομὴν, (οὐχ ὅτι ἐκ τοῦ Μωσέως ἐστὶν,
ἀλλ' ἐκ τῶν Πατέρων,) καὶ ἐν Σαββάτῳ
περιτέμνετε ἄνθρωπον.
23 Εἰ περιτομὴν λαμβάνει ἄνθρωπος ἐν
Σαββάτῳ, ἵνα μὴ λυθῇ ὁ νόμος Μωσέως,
ἐμοὶ χολᾶτε ὅτι ὅλον ἄνθρωπον ὑγιῆ ἐποίη-
σα ἐν Σαββάτῳ;
24 Μὴ κρίνετε κατ' ὄψιν, ἀλλὰ τὴν δι-
καίαν κρίσιν κρίνατε.
25 Ἔλεγον οὖν τινες ἐκ τῶν Ἱεροσολυμι-
τῶν· Οὐχ οὗτός ἐστιν ὃν ζητοῦσιν ἀποκτεῖναι;
26 Καὶ ἴδε παῤῥησίᾳ λαλεῖ, καὶ οὐδὲν αὐ-
τῷ λέγουσι· μήποτε ἀληθῶς ἔγνωσαν οἱ ἄρ-
χοντες ὅτι οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ Χριστός;
27 Ἀλλὰ τοῦτον οἴδαμεν πόθεν ἐστίν· ὁ δὲ
Χς ὅταν ἔρχηται, οὐδεὶς γινώσκει πόθεν ἐστίν.
28 Ἔκραξεν οὖν ἐν τῷ Ἱερῷ διδάσκων ὁ
Ἰησοῦς, καὶ λέγων· Κἀμὲ οἴδατε, καὶ οἴ-
δατε πόθεν εἰμί· καὶ ἀπ' ἐμαυτοῦ οὐκ ἐλή-
λυθα, ἀλλ' ἔστιν ἀληθινὸς ὁ πέμψας με,
ὃν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε.
29 Ἐγὼ δὲ οἶδα αὐτὸν, ὅτι παρ' αὐτοῦ
εἰμι, κἀκεῖνός με ἀπέστειλεν.
30 Ἐζήτουν οὖν αὐτὸν πιάσαι· καὶ οὐδεὶς
ἐπέβαλεν ἐπ' αὐτὸν τὴν χεῖρα, ὅτι οὔπω
ἐληλύθει ἡ ὥρα αὐτοῦ.

31 Πολλοὶ δὲ ἐκ τοῦ ὄχλου ἐπίστευσαν εἰς
αὐτὸν, καὶ ἔλεγον· Ὅτι ὁ Χριστὸς ὅταν ἔλ-
θῃ, μήτι πλείονα σημεῖα τούτων ποιήσει ὧν
οὗτος ἐποίησεν;
32 Ἤκουσαν οἱ Φαρισαῖοι τοῦ ὄχλου γογ-
γύζοντος περὶ αὐτοῦ ταῦτα· καὶ ἀπέστειλαν οἱ
Φαρισαῖοι καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ὑπηρέτας, ἵνα
πιάσωσιν αὐτόν·
33 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἔτι μι-
κρὸν χρόνον μεθ' ὑμῶν εἰμι, καὶ ὑπάγω πρὸς
τὸν πέμψαντά με.
34 Ζητήσετέ με, καὶ οὐχ εὑρήσετε· καὶ ὅπου
εἰμὶ ἐγὼ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν.
35 Εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς ἑαυτούς·
Ποῦ οὗτος μέλλει πορεύεσθαι, ὅτι ἡμεῖς οὐχ εὑ-
ρήσομεν αὐτόν; μὴ εἰς τὴν διασπορὰν τῶν
Ἑλλήνων μέλλει πορεύεσθαι, καὶ διδάσκειν
τοὺς Ἕλληνας;
36 Τίς ἐστιν οὗτος ὁ λόγος ὃν εἶπε· Ζη-
τήσετέ με, καὶ οὐχ εὑρήσετε· καὶ ὅπου εἰμὶ
ἐγὼ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν;
37 Ἐν δὲ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ τῇ μεγάλῃ τῆς
ἑορτῆς εἱστήκει ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἔκραξε, λέγων·
Ἐάν τις διψᾷ, ἐρχέσθω πρός με, καὶ πινέτω.
38 Ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ, καθὼς εἶπεν ἡ
γραφὴ, ποταμοὶ ἐκ τῆς κοιλίας αὐτοῦ ῥεύ-
σουσιν ὕδατος ζῶντος.
39 (Τοῦτο δὲ εἶπε περὶ τοῦ Πνεύματος οὗ
ἔμελλον λαμβάνειν οἱ πιστεύοντες εἰς αὐτόν·
οὔπω γὰρ ἦν Πνεῦμα ἅγιον, ὅτι ὁ Ἰησοῦς
οὐδέπω ἐδοξάσθη.)
40 Πολλοὶ οὖν ἐκ τοῦ ὄχλου ἀκούσαντες τὸν
λόγον, ἔλεγον· Οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ προφήτης.
41 Ἄλλοι ἔλεγον· Οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός·

ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Μὴ γὰρ ἐκ τῆς Γαλι-
λαίας ὁ Χριστὸς ἔρχεται;
42 Οὐχὶ ἡ γραφὴ εἶπεν· ὅτι ἐκ τοῦ σπέρ-
ματος Δαβὶδ, καὶ ἀπὸ Βηθλεὲμ τῆς κώ-
μης ὅπου ἦν Δαβὶδ, ὁ Χριστὸς ἔρχεται;
43 Σχίσμα οὖν ἐν τῷ ὄχλῳ ἐγένετο δι᾽
αὐτόν.
44 Τινὲς δὲ ἤθελον ἐξ αὐτῶν πιάσαι
αὐτόν· ἀλλ᾽ οὐδεὶς ἐπέβαλεν ἐπ᾽ αὐτὸν τὰς
χεῖρας.
45 Ἦλθον οὖν οἱ ὑπηρέται πρὸς τοὺς ἀρ-
χιερεῖς καὶ Φαρισαίους· καὶ εἶπον αὐτοῖς ἐκεῖ-
νοι· Διὰ τί οὐκ ἠγάγετε αὐτόν;
46 Ἀπεκρίθησαν οἱ ὑπηρέται· Οὐδέ-
ποτε οὕτως ἐλάλησεν ἄνθρωπος, ὡς οὗτος ὁ
ἄνθρωπος.
47 Ἀπεκρίθησαν οὖν αὐτοῖς οἱ Φαρι-
σαῖοι· Μὴ καὶ ὑμεῖς πεπλάνησθε;
48 Μή τις ἐκ τῶν ἀρχόντων ἐπίστευσεν εἰς
αὐτὸν, ἢ ἐκ τῶν Φαρισαίων;
49 Ἀλλ᾽ ὁ ὄχλος οὗτος ὁ μὴ γινώσκων τὸν
νόμον, ἐπικατάρατοί εἰσι.
50 Λέγει Νικόδημος πρὸς αὐτοὺς, ὁ ἐλ-
θὼν νυκτὸς πρὸς αὐτὸν, εἷς ὢν ἐξ αὐτῶν.
51 Μὴ ὁ νόμος ἡμῶν κρίνει τὸν ἄνθρω-
πον, ἐὰν μὴ ἀκούσῃ παρ᾽ αὐτοῦ πρότερον, καὶ
γνῷ τί ποιεῖ;
52 Ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· Μὴ καὶ
σὺ ἐκ τῆς Γαλιλαίας εἶ; ἐρεύνησον καὶ ἴδε
ὅτι Προφήτης ἐκ τῆς Γαλιλαίας οὐκ ἐγή-
γερται.
53 Καὶ ἐπορεύθη ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον
αὐτοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

Ἐν ὀγδόῳ δ' ἔλυσε πότμου μοιχίδα.
Κόσμου φάος δ' ἑαυτὸν ὁ Χριστὸς λέγει,
Καὶ συμφυῆ Θεῷ γε· ἔνθ' ἁμαρτίαις
Μέλλειν ὄλεσθαι τοὺς ἀπειθεῖς τῷ λόγῳ.
Οὐχ Ἀβραὰμ δὲ παῖδας, ἀλλ' ἑωσφόρου,
Χριστοκτονεῖν λυσσῶντας ἐν βλασφημίαις.
Θεοῦ δ' ἑαυτὸν Υἷα φάντα, κἀκ Ἄβραμ,
Λίθοις βάλλουσιν· αὐτὸς ἄβλεπτος δ' ἔβη

1 Ἰησοῦς δὲ ἐπορεύθη εἰς τὸ ὄρος τῶν
Ἐλαιῶν.
2 Ὄρθρου δὲ πάλιν παρεγένετο εἰς τὸ ἱε-
ρὸν, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἤρχετο πρὸς αὐτόν· καὶ
καθίσας ἐδίδασκεν αὐτούς.
3 Ἄγουσι δὲ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρι-
σαῖοι πρὸς αὐτὸν γυναῖκα ἐν μοιχείᾳ κατει-
λημμένην· καὶ στήσαντες αὐτὴν ἐν μέσῳ,
4 Λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, αὕτη ἡ
γυνὴ κατειλήφθη ἐπαυτοφώρῳ μοιχευομένη.
5 Ἐν δὲ τῷ νόμῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετείλατο
τὰς τοιαύτας λιθοβολεῖσθαι· σὺ οὖν τί λέγεις;
6 Τοῦτο δὲ ἔλεγον πειράζοντες αὐτὸν, ἵνα
ἔχωσι κατηγορεῖν αὐτοῦ· Ὁ δὲ Ἰησοῦς κάτω
κύψας, τῷ δακτύλῳ ἔγραφεν εἰς τὴν γῆν.
7 Ὡς δὲ ἐπέμενον ἐρωτῶντες αὐτὸν, ἀνα-
κύψας εἶπε πρὸς αὐτούς. Ὁ ἀναμάρτητος ὑ-
μῶν, πρῶτος τὸν λίθον ἐπ' αὐτὴν βαλέτω.
8 Καὶ πάλιν κάτω κύψας, ἔγραφεν εἰς
τὴν γῆν.
9 Οἱ δὲ, ἀκούσαντες, καὶ ὑπὸ τῆς συνει-
δήσεως ἐλεγχόμενοι, ἐξήρχοντο εἷς καθεῖς,

 ἀρξά-

ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων ἕως τῶν ἐσχάτων· καὶ κατελείφθη μόνος ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἡ γυνὴ ἐν μέσῳ ἑστῶσα.

10 Ἀνακύψας δὲ ὁ Ἰησοῦς, καὶ μηδένα θεασάμενος πλὴν τῆς γυναικὸς, εἶπεν αὐτῇ· Ἡ γυνὴ, ποῦ εἰσιν ἐκεῖνοι οἱ κατήγοροί σου; οὐδείς σε κατέκρινεν;

11 Ἡ δὲ εἶπεν· Οὐδεὶς, Κύριε. Εἶπε δὲ αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Οὐδὲ ἐγώ σε κατακρίνω. πορεύου, καὶ μηκέτι ἁμάρτανε.

12 Πάλιν οὖν ὁ Ἰησοῦς αὐτοῖς ἐλάλησε, λέγων· Ἐγώ εἰμι τὸ φῶς τοῦ κόσμου· ὁ ἀκολουθῶν ἐμοὶ, οὐ μὴ περιπατήσει ἐν τῇ σκοτίᾳ, ἀλλ' ἕξει τὸ φῶς τῆς ζωῆς.

13 Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι· Σὺ περὶ σεαυτοῦ μαρτυρεῖς· ἡ μαρτυρία σου οὐκ ἔστιν ἀληθής.

14 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Κἂν ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ ἐμαυτοῦ, ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία μου· ὅτι οἶδα πόθεν ἦλθον, καὶ ποῦ ὑπάγω· ὑμεῖς δὲ οὐκ οἴδατε πόθεν ἔρχομαι, καὶ ποῦ ὑπάγω.

15 Ὑμεῖς κατὰ τὴν σάρκα κρίνετε, ἐγὼ οὐ κρίνω οὐδένα.

16 Καὶ ἐὰν κρίνω δὲ ἐγὼ, ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ ἀληθής ἐστιν· ὅτι μόνος οὐκ εἰμὶ, ἀλλ' ἐγὼ καὶ ὁ πέμψας με Πατήρ.

17 Καὶ ἐν τῷ νόμῳ δὲ τῷ ὑμετέρῳ γέγραπται, ὅτι δύο ἀνθρώπων ἡ μαρτυρία ἀληθής ἐστιν.

18 Ἐγώ εἰμι ὁ μαρτυρῶν περὶ ἐμαυτοῦ, καὶ μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ ὁ πέμψας με Πατήρ.

19 Ἔλεγον οὖν αὐτῷ· Ποῦ ἐστιν ὁ Πατήρ σου; Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὔτε ἐμὲ οἴδατε,



οὔτε τὸν Πατέρα μου· εἰ ἐμὲ ᾔδειτε, καὶ τὸν
Πατέρα μου ᾔδειτε ἄν.

20 Ταῦτα τὰ ῥήματα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς
ἐν τῷ γαζοφυλακίῳ, διδάσκων ἐν τῷ Ἱε-
ρῷ· καὶ οὐδεὶς ἐπίασεν αὐτὸν, ὅτι οὔπω ἐλη-
λύθει ἡ ὥρα αὐτοῦ.

21 Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς·
Ἐγὼ ὑπάγω, καὶ ζητήσετέ με, καὶ ἐν τῇ ἁ-
μαρτίᾳ ὑμῶν ἀποθανεῖσθε· ὅπου ἐγὼ ὑπά-
γω, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν.

22 Ἔλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· Μήτι ἀποκ-
τενεῖ ἑαυτὸν, ὅτι λέγει· Ὅπου ἐγὼ ὑπά-
γω, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν;

23 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐκ τῶν κά-
τω ἐστὲ, ἐγὼ ἐκ τῶν ἄνω εἰμί· ὑμεῖς ἐκ τοῦ
κόσμου τούτου ἐστὲ, ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ κόσμου
τούτου.

24 Εἶπον οὖν ὑμῖν ὅτι ἀποθανεῖσθε ἐν
ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν· ἐὰν γὰρ μὴ πιστεύ-
σητε, ὅτι ἐγώ εἰμι, ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς
ἁμαρτίαις ὑμῶν.

25 Ἔλεγον οὖν αὐτῷ· Σὺ τίς εἶ; Καὶ
εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Τὴν ἀρχὴν ὅ, τι καὶ
λαλῶ ὑμῖν.

26 Πολλὰ ἔχω περὶ ὑμῶν λαλεῖν καὶ κρί-
νειν· ἀλλ' ὁ πέμψας με ἀληθής ἐστι· κἀγὼ ἃ ἤ-
κουσα παρ' αὐτοῦ, ταῦτα λέγω εἰς τὸν κόσμον.

27 Οὐκ ἔγνωσαν ὅτι τὸν Πατέρα αὐτοῖς
ἔλεγεν.

28 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅταν ὑ-
ψώσητε τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου, τότε γνώσε-
σθε ὅτι ἐγώ εἰμι, καὶ ἀπ' ἐμαυτοῦ ποιῶ οὐδὲν,
ἀλλὰ καθὼς ἐδίδαξέ με ὁ Πατήρ μου,
ταῦτα λαλῶ.



29 Καὶ ὁ πέμψας με, μετ' ἐμοῦ ἐστιν· οὐκ ἀφῆκέ με μόνον ὁ Πατὴρ, ὅτι ἐγὼ τὰ ἀρεστὰ αὐτῷ ποιῶ πάντοτε.

30 Ταῦτα αὐτοῦ λαλοῦντος πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν.

31 Ἔλεγεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πρὸς τοὺς πεπιστευκότας αὐτῷ Ἰουδαίους· Ἐὰν ὑμεῖς μείνητε ἐν τῷ λόγῳ τῷ ἐμῷ, ἀληθῶς μαθηταί μου ἐστέ.

32 Καὶ γνώσεσθε τὴν ἀλήθειαν, καὶ ἡ ἀλήθεια ἐλευθερώσει ὑμᾶς.

33 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· Σπέρμα Ἀβραάμ ἐσμεν, καὶ οὐδενὶ δεδουλεύκαμεν πώποτε· πῶς σὺ λέγεις· Ὅτι ἐλεύθεροι γενήσεσθε;

34 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἁμαρτίαν, δοῦλός ἐστι τῆς ἁμαρτίας.

35 Ὁ δὲ δοῦλος οὐ μένει ἐν τῇ οἰκίᾳ εἰς τὸν αἰῶνα· ὁ Υἱὸς μένει εἰς τὸν αἰῶνα.

36 Ἐὰν οὖν ὁ Υἱὸς ὑμᾶς ἐλευθερώσῃ, ὄντως ἐλεύθεροι ἔσεσθε.

37 Οἶδα ὅτι σπέρμα Ἀβραάμ ἐστε· ἀλλὰ ζητεῖτέ με ἀποκτεῖναι, ὅτι ὁ λόγος ὁ ἐμὸς οὐ χωρεῖ ἐν ὑμῖν.

38 Ἐγὼ ὃ ἑώρακα παρὰ τῷ Πατρί μου, λαλῶ, καὶ ὑμεῖς οὖν ὃ ἑωράκατε παρὰ τῷ Πατρὶ ὑμῶν, ποιεῖτε.

39 Ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· Ὁ Πατὴρ ἡμῶν Ἀβραάμ ἐστι. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ τέκνα τοῦ Ἀβραὰμ ἦτε, τὰ ἔργα τοῦ Ἀβραὰμ ἐποιεῖτε ἄν.

40 Νῦν δὲ ζητεῖτέ με ἀποκτεῖναι, ἄνθρωπον ὃς τὴν ἀλήθειαν ὑμῖν λελάληκα, ἣν ἤκουσα παρὰ τοῦ Θεοῦ· τοῦτο Ἀβραὰμ οὐκ ἐποίησεν.

41 Ὑμεῖς

41 Υ'μεῖς ποιεῖτε τὰ ἔργα τοῦ Πατρὸς ὑ-
μῶν. Εἶπον οὖν αὐτῷ· Η'μεῖς ἐκ πορνείας οὐ γε-
γεννήμεθα· ἕνα Πατέρα ἔχομεν, τὸν Θεόν.
42 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ι'ησοῦς· Εἰ ὁ
Θεὸς Πατὴρ ὑμῶν ἦν, ἠγαπᾶτε ἂν ἐμέ·
ἐγὼ γὰρ ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐξῆλθον καὶ ἥκω· οὐδὲ
γὰρ ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐλήλυθα, ἀλλ' ἐκεῖνός με
ἀπέστειλε.
43 Διατί τὴν λαλιὰν τὴν ἐμὴν οὐ γινώ-
σκετε; ὅτι οὐ δύνασθε ἀκούειν τὸν λόγον τὸν ἐμόν.
44 Υ'μεῖς ἐκ Πατρὸς τοῦ διαβόλου ἐστὲ,
καὶ τὰς ἐπιθυμίας τοῦ Πατρὸς ὑμῶν θέλετε
ποιεῖν· ἐκεῖνος ἀνθρωποκτόνος ἦν ἀπ' ἀρχῆς,
καὶ ἐν τῇ ἀληθείᾳ οὐχ ἕστηκεν· ὅτι οὐκ ἔστιν
ἀλήθεια ἐν αὐτῷ· ὅταν λαλῇ τὸ ψεῦδος,
ἐκ τῶν ἰδίων λαλεῖ· ὅτι ψεύστης ἐστὶ, καὶ ὁ
Πατὴρ αὐτοῦ.
45 Ε'γὼ δὲ ὅτι τὴν ἀλήθειαν λέγω, οὐ
πιστεύετέ μοι.
46 Τίς ἐξ ὑμῶν ἐλέγχει με περὶ ἁμαρ-
τίας; εἰ δὲ ἀλήθειαν λέγω, διατί ὑμεῖς οὐ
πιστεύετέ μοι;
47 Ο' ὢν ἐκ τοῦ Θεοῦ τὰ ῥήματα τοῦ Θεοῦ
ἀκούει· Διὰ τοῦτο ὑμεῖς οὐκ ἀκούετε, ὅτι ἐκ
τοῦ Θεοῦ οὐκ ἐστέ.
48 Α'πεκρίθησαν οὖν οἱ Ι'ουδαῖοι, καὶ εἶπον
αὐτῷ· Οὐ καλῶς λέγομεν ἡμεῖς, ὅτι Σα-
μαρείτης εἶ σὺ, καὶ δαιμόνιον ἔχεις;
49 Α'πεκρίθη Ι'ησοῦς· Ε'γὼ δαιμόνιον
οὐκ ἔχω, ἀλλὰ τιμῶ τὸν Πατέρα μου, καὶ ὑ-
μεῖς ἀτιμάζετέ με.
50 Ε'γὼ δὲ οὐ ζητῶ τὴν δόξαν μου· ἔστιν
ὁ ζητῶν καὶ κρίνων.
51 Α'μὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐάν τις τὸν

λόγον τὸν ἐμὸν τηρήσῃ, θάνατον ȣ̓ μὴ θεωρήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα.

52 Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ἰȣδαῖοι· Νῦν ἐγνώκαμεν ὅτι δαιμόνιον ἔχεις· Ἀβραὰμ ἀπέθανε, ϗ οἱ Προφῆται, ϗ σὺ λέγεις· Ἐάν τις τὸν λόγον μȣ τηρήσῃ, ȣ̓ μὴ γεύσεται θανάτȣ εἰς τὸν αἰῶνα.

53 Μὴ σὺ μείζων εἶ τοῦ Πατρὸς ἡμῶν Ἀβραὰμ, ὅςις ἀπέθανε; ϗ οἱ Προφῆται ἀπέθανον. τίνα σεαυτὸν σὺ ποιεῖς;

54 Ἀπεκρίθη Ἰησȣ̃ς· Ἐὰν ἐγὼ δοξάζω ἐμαυτὸν, ἡ δόξα μȣ ȣ̓δέν ἐςιν· ἔςιν ὁ Πατήρ μȣ ὁ δοξάζων με, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι Θεὸς ὑμῶν ἐςι.

55 Καὶ ȣ̓κ ἐγνώκατε αὐτόν· ἐγὼ δὲ οἶδα αὐτόν· καὶ ἐὰν εἴπω ὅτι ȣ̓κ οἶδα αὐτὸν, ἔσομαι ὅμοιος ὑμῶν, ψεύςης. ἀλλ' οἶδα αὐτὸν, ϗ τὸν λόγον αὐτȣ̃ τηρῶ.

56 Ἀβραὰμ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ἠγαλλιάσατο ἵνα ἴδῃ τὴν ἡμέραν τὴν ἐμήν· ϗ εἶδε, ϗ ἐχάρη.

57 Εἶπον οὖν οἱ Ἰȣδαῖοι πρὸς αὐτόν· Πεντήκοντα ἔτη ȣ̔́πω ἔχεις, καὶ Ἀβραὰμ ἑώρακας;

58 Εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησȣ̃ς· Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, πρὶν Ἀβραὰμ γενέσθαι, ἐγώ εἰμι.

59 Ἦραν οὖν λίθους ἵνα βάλωσιν ἐπ' αὐτόν· Ἰησȣ̃ς δὲ ἐκρύβη, ϗ ἐξῆλθεν ἐκ τȣ̃ ἱερȣ̃, διελθὼν διὰ μέσȣ αὐτῶν· καὶ παρῆγεν οὕτως.



ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Θ'. 9.

Ἐν δ' ἐννάτ' ὠμμάτωσε τυφλὸς Σαββάτου.
Ἐχθροὶ δὲ τυφλώττουσι· τυφλὸς δὲ βλέπει.

1 ΚΑὶ παράγων εἶδεν ἄνθρωπον τυ-
φλὸν ἐκ γενετῆς.
2 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ,
λέγοντες· Ῥαββὶ, τίς ἥμαρτεν, οὗτος, ἢ
οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ἵνα τυφλὸς γεννηθῇ;
3 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὔτε οὗτος ἥμαρ-
τεν, οὔτε οἱ γονεῖς αὐτοῦ· ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ
τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ ἐν αὐτῷ.
4 Ἐμὲ δεῖ ἐργάζεσθαι τὰ ἔργα τοῦ πέμ-
ψαντός με ἕως ἡμέρα ἐστίν· ἔρχεται νὺξ, ὅτε
οὐδεὶς δύναται ἐργάζεσθαι.
5 Ὅταν ἐν τῷ κόσμῳ ὦ, φῶς εἰμι τοῦ
κόσμου.
6 Ταῦτα εἰπὼν, ἔπτυσε χαμαὶ, καὶ ἐποίη-
σε πηλὸν ἐκ τοῦ πτύσματος, καὶ ἐπέχρισε τὸν
πηλὸν ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ τυφλοῦ.
7 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὕπαγε, νίψαι εἰς
τὴν κολυμβήθραν τοῦ Σιλωάμ, (ὃ ἑρμη-
νεύεται, ἀπεσταλμένος.) Ἀπῆλθεν οὖν καὶ
ἐνίψατο, καὶ ἦλθε βλέπων.
8 Οἱ οὖν γείτονες καὶ οἱ θεωροῦντες αὐτὸν τὸ
πρότερον ὅτι τυφλὸς ἦν, ἔλεγον· Οὐχ οὗτός
ἐστιν ὁ καθήμενος καὶ προσαιτῶν.
9 Ἄλλοι ἔλεγον· Ὅτι οὗτός ἐστιν· ἄλλοι
δέ· Ὅτι ὅμοιος αὐτῷ ἐστιν· Ἐκεῖνος ἔλε-
γεν· Ὅτι ἐγώ εἰμι.
10 Ἔλεγον οὖν αὐτῷ· Πῶς ἀνεῴχθησάν
σοι οἱ ὀφθαλμοί;

11 Ἀπεκρίθη ἐκεῖνος, καὶ εἶπεν· Ἄν-
θρωπος λεγόμενος Ἰησοῦς, πηλὸν ἐποίησε,
καὶ ἐπέχρισέ μου τοὺς ὀφθαλμοὺς, καὶ εἶπέ μοι·
Ὕπαγε εἰς τὴν κολυμβήθραν τοῦ Σιλωὰμ,
καὶ νίψαι. Ἀπελθὼν δὲ καὶ νιψάμενος,
ἀνέβλεψα.
12 Εἶπον οὖν αὐτῷ· Ποῦ ἐστιν ἐκεῖνος;
Λέγει· Οὐκ οἶδα.
13 Ἄγουσιν αὐτὸν πρὸς τοὺς Φαρισαίους,
τόν ποτε τυφλόν.
14 Ἦν δὲ Σάββατον ὅτε τὸν πηλὸν ἐ-
ποίησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἀνέῳξεν αὐτοῦ τοὺς ὀφ-
θαλμούς.
15 Πάλιν οὖν ἠρώτων αὐτὸν καὶ οἱ Φαρι-
σαῖοι πῶς ἀνέβλεψεν. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς·
Πηλὸν ἐπέθηκεν ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ
ἐνιψάμην, καὶ βλέπω.
16 Ἔλεγαν οὖν ἐκ τῶν Φαρισαίων τινές·
Οὗτος ὁ ἄνθρωπος οὐκ ἔστι παρὰ τοῦ Θεοῦ,
ὅτι τὸ Σάββατον οὐ τηρεῖ. Ἄλλοι ἔλεγον·
Πῶς δύναται ἄνθρωπος ἁμαρτωλὸς τοιαῦτα
σημεῖα ποιεῖν; Καὶ σχίσμα ἦν ἐν αὐτοῖς.
17 Λέγουσι τῷ τυφλῷ πάλιν· Σὺ τί λέ-
γεις περὶ αὐτοῦ, ὅτι ἤνοιξέ σου τοὺς ὀφθαλ-
μούς; Ὁ δὲ εἶπεν· ὅτι προφήτης ἐστίν.
18 Οὐκ ἐπίστευσαν οὖν οἱ Ἰουδαῖοι περὶ αὐ-
τοῦ ὅτι τυφλὸς ἦν καὶ ἀνέβλεψεν, ἕως ὅτου ἐφώ-
νησαν τοὺς γονεῖς αὐτοῦ τοῦ ἀναβλέψαντος·
19 Καὶ ἠρώτησαν αὐτοὺς, λέγοντες· Οὗ-
τός ἐστιν ὁ Υἱὸς ὑμῶν, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι
τυφλὸς ἐγεννήθη; πῶς οὖν ἄρτι βλέπει;
20 Ἀπεκρίθησαν αὐτοῖς οἱ γονεῖς αὐτοῦ
καὶ εἶπον· Οἴδαμεν ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς ἡ-
μῶν, καὶ ὅτι τυφλὸς ἐγεννήθη.

21 Πῶς δὲ νῦν βλέπει, οὐκ οἴδαμεν, ἢ
τίς ἤνοιξεν αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμοὺς, ἡμεῖς οὐκ
οἴδαμεν· αὐτὸς ἡλικίαν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτή-
σατε· αὐτὸς περὶ αὐτοῦ λαλήσει.
22 Ταῦτα εἶπον οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ὅτι ἐφο-
βοῦντο τοὺς Ἰουδαίους· ἤδη γὰρ συνετέθειντο
οἱ Ἰουδαῖοι, ἵνα ἐάν τις αὐτὸν ὁμολογήσῃ
Χριστὸν, ἀποσυνάγωγος γένηται.
23 Διὰ τοῦτο οἱ γονεῖς αὐτοῦ εἶπον· Ὅτι
ἡλικίαν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε.
24 Ἐφώνησαν οὖν ἐκ δευτέρου τὸν ἄνθρω-
πον ὃς ἦν τυφλὸς, καὶ εἶπον αὐτῷ· Δὸς δό-
ξαν τῷ Θεῷ· ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι ὁ ἄνθρω-
πος οὗτος ἁμαρτωλός ἐστιν.
25 Ἀπεκρίθη οὖν ἐκεῖνος, καὶ εἶπεν· Εἰ
ἁμαρτωλός ἐστιν, οὐκ οἶδα· ἓν οἶδα, ὅτι
τυφλὸς ὢν, ἄρτι βλέπω.
26 Εἶπον δὲ αὐτῷ πάλιν· Τί ἐποίησέ
σοι; πῶς ἤνοιξέ σου τοὺς ὀφθαλμούς;
27 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Εἶπον ὑμῖν ἤδη,
καὶ οὐκ ἠκούσατε· τί πάλιν θέλετε ἀκούειν;
μὴ καὶ ὑμεῖς θέλετε αὐτοῦ μαθηταὶ γενέσθαι;
28 Ἐλοιδόρησαν οὖν αὐτὸν, καὶ εἶπον·
Σὺ εἶ μαθητὴς ἐκείνου· ἡμεῖς δὲ τοῦ Μω-
σέως ἐσμὲν μαθηταί.
29 Ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι Μωσῇ λελάληκεν
ὁ Θεός. τοῦτον δὲ οὐκ οἴδαμεν πόθεν ἐστίν.
30 Ἀπεκρίθη ὁ ἄνθρωπος, καὶ εἶπεν αὐ-
τοῖς· Ἐν γὰρ τούτῳ θαυμαστόν ἐστιν, ὅτι ὑ-
μεῖς οὐκ οἴδατε πόθεν ἐστὶ, καὶ ἀνέῳξέ μου
τοὺς ὀφθαλμούς.
31 Οἴδαμεν δὲ ὅτι ἁμαρτωλῶν ὁ Θεὸς
οὐκ ἀκούει. ἀλλ' ἐάν τις θεοσεβὴς ᾖ, καὶ τὸ
θέλημα αὐτοῦ ποιῇ, τούτου ἀκούει.

32 Ἐκ



32 Ἐκ τοῦ αἰῶνος οὐκ ἠκούσθη ὅτι ἤνοιξέ τις
ὀφθαλμοὺς τυφλοῦ γεγεννημένου.

33 Εἰ μὴ ἦν οὗτος παρὰ Θεοῦ, οὐκ ἠδύνατο
ποιεῖν οὐδέν.

34 Ἀπεκρίθησαν, καὶ εἶπον αὐτῷ· Ἐν
ἁμαρτίαις σὺ ἐγεννήθης ὅλος, καὶ σὺ διδάσκεις
ἡμᾶς; Καὶ ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω.

35 Ἤκουσεν ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐξέβαλον αὐτὸν
ἔξω· καὶ εὑρὼν αὐτόν, εἶπεν αὐτῷ· Σὺ πιστεύεις
εἰς τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ;

36 Ἀπεκρίθη ἐκεῖνος, καὶ εἶπε· Τίς
ἐστι, Κύριε, ἵνα πιστεύσω εἰς αὐτόν;

37 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Καὶ ἑώρακας
αὐτόν, καὶ ὁ λαλῶν μετὰ σοῦ, ἐκεῖνός ἐστιν.

38 Ὁ δὲ ἔφη· Πιστεύω, Κύριε· καὶ προσεκύνησεν
αὐτῷ.

39 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Εἰς κρίμα ἐγὼ
εἰς τὸν κόσμον τοῦτον ἦλθον· ἵνα οἱ μὴ
βλέποντες βλέπωσι, καὶ οἱ βλέποντες τυφλοὶ
γένωνται.

40 Καὶ ἤκουσαν ἐκ τῶν Φαρισαίων ταῦτα
οἱ ὄντες μετ' αὐτοῦ, καὶ εἶπον αὐτῷ· Μὴ καὶ
ἡμεῖς τυφλοί ἐσμεν;

41 Εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ τυφλοὶ
ἦτε, οὐκ ἂν εἴχετε ἁμαρτίαν· νῦν δὲ λέγετε·
Ὅτι βλέπομεν· ἡ οὖν ἁμαρτία ὑμῶν
μένει.

ΚΕ-



ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ι. 10.

Τῷ δὶς δὲ πέμπτῳ τὶς καλὸς ποιμὴν ἔφη,
Θύρα δὲ ποίμνης, καὶ νομεὺς ψυχοσσόος
Ἢ δαιμονῶντα καὶ μανέντα λοιδόρουν.
Ἐγκαινίοις δὲ τοῖς ἐρωτῶσι φράσει
Ἔργοις πρόδηλον ξύμφυτον Θεοῦ γόνον.
Αἴρουσι λάας· συλλαβεῖν θ' ὡρμηκότων,
Ἄψαυστος ᾔει· προσκυνεῖται τ' ἐμφρόνως.

1 ἈΜὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ μὴ
εἰσερχόμενος διὰ τῆς θύρας εἰς
τὴν αὐλὴν τῶν προβάτων, ἀλλὰ ἀναβαίνων
ἀλλαχόθεν, ἐκεῖνος κλέπτης ἐστὶ καὶ λῃστής.
2 Ὁ δὲ εἰσερχόμενος διὰ τῆς θύρας,
ποιμήν ἐστι τῶν προβάτων.
3 Τούτῳ ὁ θυρωρὸς ἀνοίγει, καὶ τὰ πρόβατα
τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούει· καὶ τὰ ἴδια πρόβατα
καλεῖ κατ' ὄνομα, καὶ ἐξάγει αὐτά.
4 Καὶ ὅταν τὰ ἴδια πρόβατα ἐκβάλῃ,
ἔμπροσθεν αὐτῶν πορεύεται· καὶ τὰ πρόβατα
αὐτῷ ἀκολουθεῖ, ὅτι οἴδασι τὴν φωνὴν αὐτοῦ.
5 Ἀλλοτρίῳ δὲ οὐ μὴ ἀκολουθήσωσιν,
ἀλλὰ φεύξονται ἀπ' αὐτοῦ· ὅτι οὐκ οἴδασι τῶν
ἀλλοτρίων τὴν φωνήν.
6 Ταύτην τὴν παροιμίαν εἶπεν αὐτοῖς ὁ
Ἰησοῦς· ἐκεῖνοι δὲ οὐκ ἔγνωσαν τίνα ἦν ἃ
ἐλάλει αὐτοῖς.
7 Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀ-
μὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐγώ εἰμι ἡ θύ-
ρα τῶν προβάτων.
8 Πάντες ὅσοι πρὸ ἐμοῦ ἦλθον, κλέπται
εἰσὶ καὶ λῃσταί· ἀλλ' οὐκ ἤκουσαν αὐτῶν τὰ πρό-
βατα.

9 Ἐγὼ

9 Ἐγώ εἰμι ἡ θύρα· δι' ἐμοῦ ἐάν τις εἰ-
σέλθῃ, σωθήσεται· καὶ εἰσελεύσεται καὶ ἐξε-
λεύσεται, καὶ νομὴν εὑρήσει.
10 Ὁ κλέπτης οὐκ ἔρχεται εἰ μὴ ἵνα
κλέψῃ καὶ θύσῃ καὶ ἀπολέσῃ· ἐγὼ ἦλθον
ἵνα ζωὴν ἔχωσι, καὶ περισσὸν ἔχωσιν.
11 Ἐγώ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός. ὁ ποι-
μὴν ὁ καλὸς τὴν ψυχὴν αὐτοῦ τίθησιν ὑπὲρ
τῶν προβάτων.
12 Ὁ μισθωτὸς δὲ, καὶ οὐκ ὢν ποιμὴν, οὗ
οὐκ εἰσὶ τὰ πρόβατα ἴδια, θεωρεῖ τὸν λύκον
ἐρχόμενον, καὶ ἀφίησι τὰ πρόβατα, καὶ φεύ-
γει· καὶ ὁ λύκος ἁρπάζει αὐτὰ, καὶ σκορπίζει
τὰ πρόβατα.
13 Ὁ δὲ μισθωτὸς φεύγει, ὅτι μισθωτός
ἐστι, καὶ οὐ μέλει αὐτῷ περὶ τῶν προβάτων.
14 Ἐγώ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλὸς, καὶ γινώ-
σκω τὰ ἐμὰ, καὶ γινώσκομαι ὑπὸ τῶν ἐμῶν.
15 Καθὼς γινώσκει με ὁ Πατὴρ, κἀγὼ
γινώσκω τὸν Πατέρα· καὶ τὴν ψυχήν μου τί-
θημι ὑπὲρ τῶν προβάτων.
16 Καὶ ἄλλα πρόβατα ἔχω, ἃ οὐκ ἔστιν
ἐκ τῆς αὐλῆς ταύτης· κἀκεῖνά με δεῖ ἀγα-
γεῖν· καὶ τῆς φωνῆς μου ἀκούσουσι. καὶ γενήσε-
ται μία ποίμνη, εἷς ποιμήν.
17 Διὰ τοῦτο ὁ Πατήρ με ἀγαπᾷ, ὅτι ἐγὼ
τίθημι τὴν ψυχήν μου ἵνα πάλιν λάβω αὐτήν.
18 Οὐδεὶς αἴρει αὐτὴν ἀπ' ἐμοῦ· ἀλλ'
ἐγὼ τίθημι αὐτὴν ἀπ' ἐμαυτοῦ. ἐξουσίαν
ἔχω θεῖναι αὐτὴν, καὶ ἐξουσίαν ἔχω πάλιν
λαβεῖν αὐτήν· ταύτην τὴν ἐντολὴν ἔλαβον
παρὰ τοῦ Πατρός μου.
19 Σχίσμα οὖν πάλιν ἐγένετο ἐν τοῖς
Ἰουδαίοις διὰ τοὺς λόγους τούτους.



20 Ἔλεγον δὲ πολλοὶ ἐξ αὐτῶν· Δαι-
μόνιον ἔχει καὶ μαίνεται· τί αὐτοῦ ἀκούετε;
21 Ἄλλοι ἔλεγον· Ταῦτα τὰ ῥήματα οὐκ
ἔστι δαιμονιζομένου· μὴ δαιμόνιον δύναται
τυφλῶν ὀφθαλμοὺς ἀνοίγειν.
22 Ἐγένετο δὲ τὰ ἐγκαίνια ἐν τοῖς Ἱερο-
σολύμοις, καὶ χειμὼν ἦν.
23 Καὶ περιεπάτει ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ Ἱερῷ
ἐν τῇ στοᾷ τοῦ Σολομῶντος.
24 Ἐκύκλωσαν οὖν αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι,
καὶ ἔλεγον αὐτῷ· Ἕως πότε τὴν ψυχὴν ἡ-
μῶν αἴρεις; εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς, εἰπὲ ἡμῖν
παῤῥησίᾳ.
25 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἶπον
ὑμῖν καὶ οὐ πιστεύετε· τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ
ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Πατρός μου, ταῦτα μαρ-
τυρεῖ περὶ ἐμοῦ.
26 Ἀλλ᾽ ὑμεῖς οὐ πιστεύετε· οὐ γάρ ἐστε ἐκ
τῶν προβάτων τῶν ἐμῶν, καθὼς εἶπον ὑμῖν.
27 Τὰ πρόβατα τὰ ἐμὰ τῆς φωνῆς μου
ἀκούει, κἀγὼ γινώσκω αὐτὰ, καὶ ἀκολου-
θοῦσί μοι·
28 Κἀγὼ ζωὴν αἰώνιον δίδωμι αὐτοῖς,
καὶ οὐ μὴ ἀπόλωνται εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ οὐχ
ἁρπάσει τις αὐτὰ ἐκ τῆς χειρός μου.
29 Ὁ Πατήρ μου ὃς δέδωκέ μοι, μείζων
πάντων ἐστί· καὶ οὐδεὶς δύναται ἁρπάζειν ἐκ
τῆς χειρὸς τοῦ Πατρός μου.
30 Ἐγὼ καὶ ὁ Πατὴρ ἕν ἐσμεν.
31 Ἐβάστασαν οὖν πάλιν λίθους οἱ Ἰου-
δαῖοι, ἵνα λιθάσωσιν αὐτόν.
32 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πολλὰ
καλὰ ἔργα ἔδειξα ὑμῖν ἐκ τοῦ Πατρός μου·
διὰ ποῖον αὐτῶν ἔργον λιθάζετέ με.

33 Ἀπε-

33 Α'πεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι λέ-
γοντες· Περὶ καλοῦ ἔργου οὐ λιθάζομέν σε,
ἀλλὰ περὶ βλασφημίας, καὶ ὅτι σὺ ἄνθρω-
πος ὢν, ποιεῖς σεαυτὸν Θεόν.
34 Α'πεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ
ἔστι γεγραμμένον ἐν τῷ νόμῳ ὑμῶν· Ἐγὼ
εἶπα, θεοί ἐστε;
35 Εἰ ἐκείνους εἶπε θεοὺς, πρὸς οὓς ὁ λό-
γος τοῦ Θεοῦ ἐγένετο, καὶ οὐ δύναται λυθῆναι
ἡ γραφή.
36 Ὃν ὁ Πατὴρ ἡγίασε καὶ ἀπέστειλεν εἰς
τὸν κόσμον, ὑμεῖς λέγετε· Ὅτι βλασφη-
μεῖς, ὅτι εἶπον, Υἱὸς τοῦ Θεοῦ εἰμι;
37 Εἰ οὐ ποιῶ τὰ ἔργα τοῦ Πατρός μου,
μὴ πιστεύετέ μοι·
38 Εἰ δὲ ποιῶ, κἂν ἐμοὶ μὴ πιστεύητε,
τοῖς ἔργοις πιστεύσατε· ἵνα γνῶτε καὶ πιστεύ-
σητε ὅτι ἐν ἐμοὶ ὁ Πατὴρ, κἀγὼ ἐν αὐτῷ.
39 Ἐζήτουν οὖν πάλιν αὐτὸν πιάσαι· καὶ
ἐξῆλθεν ἐκ τῆς χειρὸς αὐτῶν.
40 Καὶ ἀπῆλθε πάλιν πέραν τοῦ Ἰορδά-
νου, εἰς τὸν τόπον ὅπου ἦν Ἰωάννης τὸ πρῶτον
βαπτίζων· καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ.
41 Καὶ πολλοὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν, καὶ
ἔλεγον· Ὅτι Ἰωάννης μὲν σημεῖον ἐποίησεν
οὐδέν· πάντα δὲ ὅσα εἶπεν Ἰωάννης περὶ τού-
του, ἀληθῆ ἦν.
42 Καὶ ἐπίστευσαν πολλοὶ ἐκεῖ εἰς αὐτόν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

Τὸ πρὸς δέκα πρῶτόν γε πρεσβείαν φέρει
Ὑπὲρ νοσῦντος Λαζάρυ. πρύφη μόρον.
Χειςόντε Μάρθα μέμφεται, ἢ προσφέρει
Πίςιν βεβαίαν· ἢ Μαρίαν ἐξάγει
Κλαίυσαν, ἣγε συνδακρύει ἢ Λόγος.
Φωνῇ τ' ἐγείρει τὸν τεταρταῖον τάφῳ.
Πολλοὶ δὲ πιςεύυσιν. Ἑβραίων φθόνῳ
Βυλὴ μέμηνεν. ὓ Καϊάφας ἄκων.
Χειςῦ μόρον πρύφησεν εἰς σωτηρίαν.

1 ΗΝ δέ τις ἀσθενῶν Λάζαρος ἀπὸ
Βηθανίας, ἐκ τῆς κώμης Μα-
ρίας ἢ Μάρθας τῆς ἀδελφῆς αὐτῆς.
2 (Ἦν δὲ Μαρία ἡ ἀλείψασα τὸν Κύ-
ριον μύρῳ, καὶ ἐκμάξασα τὺς πόδας αὐτῦ
ταῖς θριξὶν αὐτῆς· ἧς ὁ ἀδελφὸς Λάζα-
ρος ἠσθένει.)
3 Ἀπέςειλαν ὖν αἱ ἀδελφαὶ πρὸς αὐτὸν,
λέγυσαι· Κύριε, ἴδε, ὃν φιλεῖς, ἀσθενεῖ.
4 Ἀκύσας δὲ ὁ Ἰησῦς εἶπεν· Αὕτη ἡ ἀσθέ-
νεια ὐκ ἔςι πρὸς θάνατον, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς δόξης
τῦ Θεῦ, ἵνα δοξασθῇ ὁ Υἱὸς τῦ Θεῦ δι' αὐτῆς.
5 Ἠγάπα δὲ ὁ Ἰησῦς τὴν Μάρθαν καὶ
τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς ἢ τὸν Λάζαρον.
6 Ὡς ὖν ἤκυσεν ὅτι ἀσθενεῖ, τότε μὲν
ἔμεινεν ἐν ᾧ τῇ τόπῳ δύο ἡμέρας.
7 Ἔπειτα μετὰ τῦτο λέγει τοῖς μαθη-
ταῖς· Ἄγωμεν εἰς τὴν Ἰυδαίαν πάλιν.
8 Λέγυσιν αὐτῷ οἱ μαθηταί· Ῥαββὶ,
νῦν ἐζήτυν σε λιθάσαι οἱ Ἰυδαῖοι, ἢ πά-
λιν ὑπάγεις ἐκεῖ;

9 Ἀπε-

9 Α'πεκρίθη ὁ Ι'ησοῦς· Οὐχὶ δώδεκά
εἰσιν ὧραι τῆς ἡμέρας; ἐάν τις περιπατῇ ἐν
τῇ ἡμέρᾳ, οὐ προσκόπτει· ὅτι τὸ φῶς τȣ͂
κόσμȣ τȣ́τȣ βλέπει.
10 Ε'ὰν δέ τις περιπατῇ ἐν τῇ νυκτὶ,
προσκόπτει, ὅτι τὸ φῶς ȣ̓κ ἔςιν ἐν αὐτῷ.
11 Ταῦτα εἶπε· καὶ μετὰ τȣ͂το λέγει αὐ-
τοῖς· Λάζαρος ὁ φίλος ἡμῶν κεκοίμηται·
ἀλλὰ πορεύομαι ἵνα ἐξυπνίσω αὐτόν.
12 Εἶπον ȣ̓͂ν οἱ μαθηταὶ αὐτȣ͂· Κύριε, εἰ
κεκοίμηται, σωθήσεται.
13 Εἰρήκει δὲ ὁ Ι'ησȣ͂ς περὶ τȣ͂ θανάτȣ
αὐτȣ͂· ἐκεῖνοι δὲ ἔδοξαν ὅτι περὶ τῆς κοιμή-
σεως τȣ͂ ὕπνȣ λέγει.
14 Τότε οὖν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ι'ησȣ͂ς παῤ-
ῥησίᾳ· Λάζαρος ἀπέθανε.
15 Καὶ χαίρω δι' ὑμᾶς, (ἵνα πιςεύσητε,)
ὅτι ȣ̓κ ἤμην ἐκεῖ· ἀλλ' ἄγωμεν πρὸς αὐτόν.
16 Εἶπεν οὖν Θωμᾶς, ὁ λεγόμενος Δί-
δυμος, τοῖς συμμαθηταῖς· Α"γωμεν καὶ ἡ-
μεῖς, ἵνα ἀποθάνωμεν μετ' αὐτȣ͂.
17 Ε'λθὼν οὖν ὁ Ι'ησȣ͂ς εὗρεν αὐτὸν τέσ-
σαρας ἡμέρας ἤδη ἔχοντα ἐν τῷ μνημείῳ.
(18 Ἦν δὲ ἡ Βηθανία ἐγγὺς τῶν Ι'ερο-
σολύμων, ὡς ἀπὸ ςαδίων δεκαπέντε.)
19 Καὶ πολλοὶ ἐκ τῶν Ι'ȣδαίων ἐληλύθεισαν
πρὸς τὰς περὶ Μάρθαν καὶ Μαρίαν, ἵνα πα-
ραμυθήσωνται αὐτὰς περὶ τȣ͂ ἀδελφȣ͂ αὐτῶν.
20 Ἡ οὖν Μάρθα ὡς ἤκȣσεν ὅτι ὁ Ι'η-
σȣ͂ς ἔρχεται, ὑπήντησεν αὐτῷ· Μαρία δὲ
ἐν τῷ οἴκῳ ἐκαθέζετο.
21 Εἶπεν οὖν ἡ Μάρθα πρὸς τὸν Ι'η-
σοῦν· Κύριε, εἰ ἦς ὧδε, ὁ ἀδελφός μȣ ȣ̓κ
ἂν ἐτεθνήκει.

22 Α'λ-

22 Ἀλλὰ καὶ νῦν οἶδα ὅτι ὅσα ἂν αἰτήσῃ
τὸν Θεὸν, δώσει σοι ὁ Θεός.
23 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἀναστήσεται ὁ
ἀδελφός σου.
24 Λέγει αὐτῷ Μάρθα· Οἶδα ὅτι ἀναστή-
σεται ἐν τῇ ἀναστάσει ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.
25 Εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγώ εἰμι ἡ ἀ-
νάστασις καὶ ἡ ζωή· ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ, κἂν
ἀποθάνῃ, ζήσεται.
26 Καὶ πᾶς ὁ ζῶν καὶ πιστεύων εἰς ἐμὲ, οὐ
μὴ ἀποθάνῃ εἰς τὸν αἰῶνα· Πιστεύεις τοῦτο;
27 Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε, ἐγὼ πε-
πίστευκα ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ,
ὁ εἰς τὸν κόσμον ἐρχόμενος.
28 Καὶ ταῦτα εἰποῦσα ἀπῆλθε, καὶ ἐφώ-
νησε Μαρίαν τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς λάθρα, εἰ-
ποῦσα· Ὁ διδάσκαλος πάρεστι, καὶ φωνεῖ σε.
29 Ἐκείνη ὡς ἤκουσεν, ἐγείρεται ταχὺ, καὶ
ἔρχεται πρὸς αὐτόν.
30 (Οὔπω δὲ ἐληλύθει ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν
κώμην, ἀλλ' ἦν ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ὑπήντησεν
αὐτῷ ἡ Μάρθα.)
31 Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι οἱ ὄντες μετ' αὐτῆς ἐν
τῇ οἰκίᾳ καὶ παραμυθούμενοι αὐτὴν, ἰδόντες
τὴν Μαρίαν ὅτι ταχέως ἀνέστη καὶ ἐξῆλθεν,
ἠκολούθησαν αὐτῇ, λέγοντες· Ὅτι ὑπάγει
εἰς τὸ μνημεῖον ἵνα κλαύσῃ ἐκεῖ.
32 Ἡ οὖν Μαρία ὡς ἦλθεν ὅπου ἦν ὁ
Ἰησοῦς, ἰδοῦσα αὐτὸν, ἔπεσεν εἰς τοὺς πόδας
αὐτοῦ, λέγουσα αὐτῷ· Κύριε, εἰ ἦς ὧδε,
οὐκ ἂν ἀπέθανέ μου ὁ ἀδελφός.
33 Ἰησοῦς οὖν, ὡς εἶδεν αὐτὴν κλαίουσαν, καὶ
τοὺς συνελθόντας αὐτῇ Ἰουδαίους κλαίοντας, ἐ-
νεβριμήσατο τῷ Πνεύματι, καὶ ἐτάραξεν ἑαυτόν.

34 Καὶ

34 Καὶ εἶπε· Ποῦ τεθείκατε αὐτόν; Λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἔρχου καὶ ἴδε.

35 Ἐδάκρυσεν ὁ Ἰησοῦς.

36 Ἔλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· Ἴδε πῶς ἐφίλει αὐτόν.

37 Τινὲς δὲ ἐξ αὐτῶν εἶπον· Οὐκ ἠδύνατο οὗτος, ὁ ἀνοίξας τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ τυφλοῦ, ποιῆσαι ἵνα καὶ οὗτος μὴ ἀποθάνῃ;

38 Ἰησοῦς οὖν πάλιν ἐμβριμώμενος ἐν ἑαυτῷ, ἔρχεται εἰς τὸ μνημεῖον· Ἦν δὲ σπήλαιον, καὶ λίθος ἐπέκειτο ἐπ' αὐτῷ.

39 Λέγει ὁ Ἰησοῦς· Ἄρατε τὸν λίθον· Λέγει αὐτῷ ἡ ἀδελφὴ τοῦ τεθνηκότος Μάρθα· Κύριε, ἤδη ὄζει· τεταρταῖος γάρ ἐστι.

40 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ εἶπόν σοι, ὅτι ἐὰν πιστεύσῃς, ὄψει τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ;

41 Ἦραν οὖν τὸν λίθον οὗ ἦν ὁ τεθνηκὼς κείμενος· Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἦρε τοὺς ὀφθαλμοὺς ἄνω, καὶ εἶπε· Πάτερ, εὐχαριστῶ σοι ὅτι ἤκουσάς μου.

42 Ἐγὼ δὲ ᾔδειν ὅτι πάντοτέ μου ἀκούεις· ἀλλὰ διὰ τὸν ὄχλον τὸν περιεστῶτα εἶπον, ἵνα πιστεύσωσιν ὅτι σύ με ἀπέστειλας.

43 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, φωνῇ μεγάλῃ ἐκραύγασε· Λάζαρε, δεῦρο ἔξω.

44 Καὶ ἐξῆλθεν ὁ τεθνηκὼς, δεδεμένος τοὺς πόδας καὶ τὰς χεῖρας κειρίαις· καὶ ἡ ὄψις αὐτοῦ σουδαρίῳ περιεδέδετο· Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Λύσατε αὐτὸν, καὶ ἄφετε ὑπάγειν.

45 Πολλοὶ οὖν ἐκ τῶν Ἰουδαίων οἱ ἐλθόντες πρὸς τὴν Μαρίαν, καὶ θεασάμενοι ἃ ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν.

46 Τινὲς δὲ ἐξ αὐτῶν ἀπῆλθον πρὸς τοὺς Φαρισαίους, καὶ εἶπον αὐτοῖς ἃ ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς.

47 Συνήγαγον οὖν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι συνέδριον, καὶ ἔλεγον· Τί ποιοῦμεν; ὅτι οὗτος ὁ ἄνθρωπος πολλὰ σημεῖα ποιεῖ.

48 Ἐὰν ἀφῶμεν αὐτὸν οὕτω, πάντες πιστεύσουσιν εἰς αὐτόν· καὶ ἐλεύσονται οἱ Ῥωμαῖοι, καὶ ἀροῦσιν ἡμῶν καὶ τὸν τόπον καὶ τὸ ἔθνος.

49 Εἷς δέ τις ἐξ αὐτῶν Καϊάφας, ἀρχιερεὺς ὢν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκείνου, εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς οὐκ οἴδατε οὐδέν·

50 Οὐδὲ διαλογίζεσθε ὅτι συμφέρει ἡμῖν ἵνα εἷς ἄνθρωπος ἀποθάνῃ ὑπὲρ τοῦ λαοῦ, καὶ μὴ ὅλον τὸ ἔθνος ἀπόληται.

51 Τοῦτο δὲ ἀφ' ἑαυτοῦ οὐκ εἶπεν· ἀλλὰ ἀρχιερεὺς ὢν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκείνου, προεφήτευσεν ὅτι ἔμελλεν ὁ Ἰησοῦς ἀποθνήσκειν ὑπὲρ τοῦ ἔθνους.

52 Καὶ οὐχ ὑπὲρ τοῦ ἔθνους μόνον, ἀλλ' ἵνα καὶ τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ τὰ διεσκορπισμένα συναγάγῃ εἰς ἕν.

53 Ἀπ' ἐκείνης οὖν τῆς ἡμέρας συνεβουλεύσαντο ἵνα ἀποκτείνωσιν αὐτόν.

54 Ἰησοῦς οὖν οὐκ ἔτι παῤῥησίᾳ περιεπάτει ἐν τοῖς Ἰουδαίοις, ἀλλὰ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν εἰς τὴν χώραν ἐγγὺς τῆς ἐρήμου, εἰς Ἐφραῒμ λεγομένην πόλιν· κἀκεῖ διέτριβε μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ.

55 Ἦν δὲ ἐγγὺς τὸ πάσχα τῶν Ἰουδαίων· καὶ ἀνέβησαν πολλοὶ εἰς Ἱεροσόλυμα ἐκ τῆς χώρας πρὸ τοῦ πάσχα, ἵνα ἁγνίσωσιν ἑαυτούς.

56 Ἐζήτουν οὖν τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἔλεγον μετ' ἀλλήλων ἐν τῷ Ἱερῷ ἑστηκότες· Τί δοκεῖ ὑμῖν, ὅτι οὐ μὴ ἔλθῃ εἰς τὴν ἑορτήν;

57 Δεδώκεισαν δὲ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἐντολὴν, ἵνα ἐάν τις γνῷ ποῦ ἐστι, μηνύσῃ, ὅπως πιάσωσιν αὐτόν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

Φαίνει δὶς ἕκτον σύγγονον τὴν Λαζάρου
Μυρηχοῦσαν τὴν κάραν τοῦ Δεσπότου.
Ἰσκαριώτου, καὶ Ἰουδαίων φθόνον
Κλάδοις ὑπαντὴν· ἔνθα τ' Ἑλλήνων σέβας,
Ἐθνῶν τ' ἁπάντων ἐν ξύλῳ παγκληεία.
Ἐξ Οὐρανοῦ φωνήτε εἰς δόξαν Λόγου,
Ἀπειθέοντος Ἰσραὴλ ἀκαρδίου
Ὅση τε πίστις εἰς Θεοῦ Λόγον πέλει.

1 Ὁ Οὖν Ἰησοῦς πρὸ ἓξ ἡμερῶν τοῦ πά-
σχα ἦλθεν εἰς Βηθανίαν, ὅπου ἦν
Λάζαρος ὁ τεθνηκὼς, ὃν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν.
2 Ἐποίησαν οὖν αὐτῷ δεῖπνον ἐκεῖ, καὶ
ἡ Μάρθα διηκόνει· ὁ δὲ Λάζαρος εἷς ἦν
τῶν συνανακειμένων αὐτῷ.
3 Ἡ οὖν Μαρία, λαβοῦσα λίτραν μύρου
νάρδου πιστικῆς πολυτίμου, ἤλειψε τοὺς πό-
δας τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἐξέμαξε ταῖς θριξὶν αὐτῆς
τοὺς πόδας αὐτοῦ· ἡ δὲ οἰκία ἐπληρώθη ἐκ
τῆς ὀσμῆς τοῦ μύρου.
4 Λέγει οὖν εἷς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, Ἰού-
δας Σίμωνος Ἰσκαριώτης, ὁ μέλλων αὐτὸν
παραδιδόναι.
5 Διατί τοῦτο τὸ μύρον οὐκ ἐπράθη τριακο-
σίων δηναρίων, καὶ ἐδόθη πτωχοῖς;
6 Εἶπε δὲ τοῦτο, οὐχ ὅτι περὶ τῶν πτωχῶν
ἔμελλεν αὐτῷ, ἀλλ' ὅτι κλέπτης ἦν, καὶ τὸ
γλωσσόκομον εἶχε, καὶ τὰ βαλλόμενα ἐβάσταζεν.

7 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς· Ἄφες αὐτήν· εἰς τὴν
ἡμέραν τοῦ ἐνταφιασμοῦ μου τετήρηκεν αὐτό.
8 Τοὺς πτωχοὺς γὰρ πάντοτε ἔχετε μεθ'
ἑαυτῶν, ἐμὲ δὲ οὐ πάντοτε ἔχετε.
9 Ἔγνω οὖν ὄχλος πολὺς ἐκ τῶν Ἰουδαίων
ὅτι ἐκεῖ ἐστι· καὶ ἦλθον οὐ διὰ τὸν Ἰησοῦν μό-
νον, ἀλλ' ἵνα καὶ τὸν Λάζαρον ἴδωσιν, ὃν ἤ-
γειρεν ἐκ νεκρῶν.
10 Ἐβουλεύσαντο δὲ οἱ ἀρχιερεῖς, ἵνα καὶ
τὸν Λάζαρον ἀποκτείνωσιν.
11 Ὅτι πολλοὶ δι' αὐτὸν ὑπῆγον τῶν Ἰου-
δαίων, καὶ ἐπίστευον εἰς τὸν Ἰησοῦν.
12 Τῇ ἐπαύριον ὄχλος πολὺς ὁ ἐλθὼν
εἰς τὴν ἑορτήν, ἀκούσαντες ὅτι ἔρχεται ὁ Ἰη-
σοῦς εἰς Ἱεροσόλυμα.
13 Ἔλαβον τὰ βαΐα τῶν φοινίκων, καὶ
ἐξῆλθον εἰς ὑπάντησιν αὐτῷ, καὶ ἔκραζον·
Ὡσαννά, εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνό-
ματι Κυρίου, ὁ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραήλ.
14 Εὑρὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὀνάριον, ἐκάθισεν
ἐπ' αὐτό, καθώς ἐστι γεγραμμένον.
15 Μὴ φοβοῦ θύγατερ Σιών· ἰδού, ὁ βασι-
λεύς σου ἔρχεται, καθήμενος ἐπὶ πῶλον ὄνου.
16 Ταῦτα δὲ οὐκ ἔγνωσαν οἱ μαθηταὶ αὐ-
τοῦ τὸ πρῶτον· ἀλλ' ὅτε ἐδοξάσθη ὁ Ἰησοῦς,
τότε ἐμνήσθησαν ὅτι ταῦτα ἦν ἐπ' αὐτῷ γε-
γραμμένα, καὶ ταῦτα ἐποίησαν αὐτῷ.
17 Ἐμαρτύρει οὖν ὁ ὄχλος ὁ ὢν μετ' αὐτοῦ,
ὅτι τὸν Λάζαρον ἐφώνησεν ἐκ τοῦ μνημείου,
καὶ ἤγειρεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.
18 Διὰ τοῦτο καὶ ὑπήντησεν αὐτῷ ὁ ὄχ-
λος, ὅτι ἤκουσε τοῦτο αὐτὸν πεποιηκέναι τὸ
σημεῖον.
19 Οἱ οὖν φαρισαῖοι εἶπον πρὸς ἑαυτούς·

Θεωρεῖτε ὅτι οὐκ ὠφελεῖτε οὐδέν· ἴδε, ὁ κόσ-
μος ὀπίσω αὐτοῦ ἀπῆλθεν.

20 Ἦσαν δέ τινες Ἕλληνες ἐκ τῶν ἀνα-
βαινόντων ἵνα προσκυνήσωσιν ἐν τῇ ἑορτῇ.

21 Οὗτοι οὖν προσῆλθον Φιλίππῳ τῷ
ἀπὸ Βηθσαϊδὰ τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἠρώτων
αὐτὸν, λέγοντες· Κύριε, θέλομεν τὸν Ἰη-
σοῦν ἰδεῖν.

22 Ἔρχεται Φίλιππος καὶ λέγει τῷ Ἀν-
δρέᾳ· καὶ πάλιν Ἀνδρέας καὶ Φίλιππος λέ-
γουσι τῷ Ἰησοῦ.

23 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς,
λέγων· Ἐλήλυθεν ἡ ὥρα ἵνα δοξασθῇ ὁ
Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.

24 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ ὁ
κόκκος τοῦ σίτου πεσὼν εἰς τὴν γῆν ἀποθάνῃ,
αὐτὸς μόνος μένει· ἐὰν δὲ ἀποθάνῃ, πολὺν
καρπὸν φέρει.

25 Ὁ φιλῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ἀπολέσει
αὐτήν· καὶ ὁ μισῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν τῷ κόσ-
μῳ τούτῳ, εἰς ζωὴν αἰώνιον φυλάξει αὐτήν.

26 Ἐὰν ἐμοὶ διακονῇ τις, ἐμοὶ ἀκολουθεί-
τω· καὶ ὅπου εἰμὶ ἐγὼ, ἐκεῖ καὶ ὁ διάκονος ὁ
ἐμὸς ἔσαι· καὶ ἐάν τις ἐμοὶ διακονῇ, τιμή-
σει αὐτὸν ὁ πατήρ.

27 Νῦν ἡ ψυχή μου τετάρακται· καὶ τί εἴ-
πω; Πάτερ, σῶσόν με ἐκ τῆς ὥρας ταύτης,
ἀλλὰ διὰ τοῦτο ἦλθον εἰς τὴν ὥραν ταύτην.

28 Πάτερ, δόξασόν σου τὸ ὄνομα. Ἦλ-
θεν οὖν φωνὴ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· Καὶ ἐδόξασα, καὶ
πάλιν δοξάσω.

29 Ὁ οὖν ὄχλος ὁ ἑσὼς καὶ ἀκούσας, ἔλε-
γε βροντὴν γεγονέναι· Ἄλλοι ἔλεγον· Ἄγ-
γελος αὐτῷ λελάληκεν.

30 Ἀ-

30 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν· Οὐ
δι' ἐμὲ αὕτη ἡ φωνὴ γέγονεν, ἀλλὰ δι' ὑμᾶς.
31 Νῦν κρίσις ἐστὶ τοῦ κόσμου τούτου· νῦν ὁ
ἄρχων τοῦ κόσμου τούτου ἐκβληθήσεται ἔξω.
32 Κἀγὼ, ἐὰν ὑψωθῶ ἐκ τῆς γῆς, πάν-
τας ἑλκύσω πρὸς ἐμαυτόν.
33 (Τοῦτο δὲ ἔλεγε, σημαίνων ποίῳ θα-
νάτῳ ἤμελλεν ἀποθνήσκειν.
34 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ὄχλος· Ἡμεῖς
ἠκούσαμεν ἐκ τοῦ νόμου ὅτι ὁ Χριστὸς μένει εἰς
τὸν αἰῶνα· καὶ πῶς σὺ λέγεις ὅτι δεῖ ὑψωθῆ-
ναι τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου; τίς ἐστιν οὗτος ὁ
Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου;
35 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἔτι μι-
κρὸν χρόνον τὸ φῶς μεθ' ἡμῶν ἐστι· περιπα-
τεῖτε ἕως τὸ φῶς ἔχετε, ἵνα μὴ σκοτία ὑμᾶς
καταλάβῃ. καὶ ὁ περιπατῶν ἐν τῇ σκοτίᾳ οὐκ
οἶδε ποῦ ὑπάγει.
36 Ἕως τὸ φῶς ἔχετε, πιστεύετε εἰς τὸ
φῶς, ἵνα Υἱοὶ φωτὸς γένησθε. Ταῦτα ἐλά-
λησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἀπελθὼν ἐκρύβη ἀπ'
αὐτῶν;
37 Τοσαῦτα δὲ αὐτοῦ σημεῖα πεποιηκότος
ἔμπροσθεν αὐτῶν, οὐκ ἐπίστευον εἰς αὐτόν·
38 Ἵνα ὁ λόγος Ἡσαΐου τοῦ προφήτου πλη-
ρωθῇ, ὃν εἶπε· Κύριε, τίς ἐπίστευσε τῇ ἀκοῇ
ἡμῶν, καὶ ὁ βραχίων Κυρίου τίνι ἀπεκα-
λύφθη;
39 Διὰ τοῦτο οὐκ ἠδύναντο πιστεύειν, ὅτι
πάλιν εἶπεν Ἡσαΐας.
40 Τετύφλωκεν αὐτῶν τοὺς ὀφθαλμοὺς, καὶ
πεπώρωκεν αὐτῶν τὴν καρδίαν· ἵνα μὴ ἴδω-
σι τοῖς ὀφθαλμοῖς, καὶ νοήσωσι τῇ καρδίᾳ,
καὶ ἐπιστραφῶσι, καὶ ἰάσωμαι αὐτούς.

41 Ταῦτα εἶπεν Ἠσαΐας ὅτε εἶδε τὴν δόξαν αὐτοῦ, καὶ ἐλάλησε περὶ αὐτοῦ.

42 Ὅμως μέντοι καὶ ἐκ τῶν ἀρχόντων πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν. ἀλλὰ διὰ τοὺς φαρισαίους οὐχ ὡμολόγουν, ἵνα μὴ ἀποσυνάγωγοι γένωνται.

43 Ἠγάπησαν γὰρ τὴν δόξαν τῶν ἀνθρώπων μᾶλλον ἤπερ τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ.

44 Ἰησοῦς δὲ ἔκραξε καὶ εἶπεν· Ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ, οὐ πιστεύει εἰς ἐμὲ, ἀλλ᾽ εἰς τὸν πέμψαντά με.

45 Καὶ ὁ θεωρῶν ἐμὲ, θεωρεῖ τὸν πέμψαντά με.

46 Ἐγὼ φῶς εἰς τὸν κόσμον ἐλήλυθα, ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ ἐν τῇ σκοτίᾳ μὴ μείνῃ.

47 Καὶ ἐάν τις μου ἀκούσῃ τῶν ῥημάτων, καὶ μὴ πιστεύσῃ, ἐγὼ οὐ κρίνω αὐτόν· Οὐ γὰρ ἦλθον ἵνα κρίνω τὸν κόσμον, ἀλλ᾽ ἵνα σώσω τὸν κόσμον.

48 Ὁ ἀθετῶν ἐμὲ καὶ μὴ λαμβάνων τὰ ῥήματά μου, ἔχει τὸν κρίνοντα αὐτόν· ὁ λόγος ὃν ἐλάλησα, ἐκεῖνος κρινεῖ αὐτὸν ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

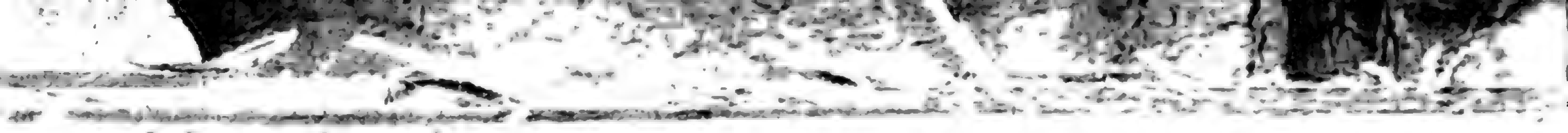
49 Ὅτι ἐγὼ ἐξ ἐμαυτοῦ οὐκ ἐλάλησα. ἀλλ᾽ ὁ πέμψας με πατὴρ, αὐτός μοι ἐντολὴν ἔδωκε τί εἴπω καὶ τί λαλήσω.

50 Καὶ οἶδα ὅτι ἡ ἐντολὴ αὐτοῦ ζωὴ αἰώνιός ἐστιν, ἃ οὖν λαλῶ ἐγὼ, καθὼς εἴρηκέ μοι ὁ πατὴρ, οὕτω λαλῶ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

Τῷ πρὸς δέκα τρίτῳ γε νίπτει τοὺς πόδας.
Δείκνυσι κἀπίβουλον ἠγαπημένῳ.
Μύσαις ἀμοιβαῖόν τε φίλτρον προτρέπει.
Τριττὴν προμηνύει τε ἄρνησιν Πέτρῳ.

1 ΠΡὸ δὲ τῆς ἑορτῆς τοῦ πάσχα, εἰ-
δὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐλήλυθεν αὐτοῦ
ἡ ὥρα ἵνα μεταβῇ ἐκ τοῦ κόσμου τούτου πρὸς τὸν
πατέρα, ἀγαπήσας τοὺς ἰδίους τοὺς ἐν τῷ κόσ-
μῳ, εἰς τέλος ἠγάπησεν αὐτούς.
2 Καὶ δείπνου γενομένου, (τοῦ διαβόλου ἤδη
βεβληκότος εἰς τὴν καρδίαν Ἰούδα Σίμωνος
Ἰσκαριώτου, ἵνα αὐτὸν παραδῷ·)
3 Εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντα δέδωκεν αὐ-
τῷ ὁ πατὴρ εἰς τὰς χεῖρας, καὶ ὅτι ἀπὸ Θεοῦ
ἐξῆλθε, καὶ πρὸς τὸν Θεὸν ὑπάγει,
4 Ἐγείρεται ἐκ τοῦ δείπνου, καὶ τίθησι τὰ
ἱμάτια· καὶ λαβὼν λέντιον, διέζωσεν ἑαυτόν.
5 Εἶτα βάλλει ὕδωρ εἰς τὸν νιπτῆρα, καὶ
ἤρξατο νίπτειν τοὺς πόδας τῶν μαθητῶν, καὶ
ἐκμάσσειν τῷ λεντίῳ ᾧ ἦν διεζωσμένος.
6 Ἔρχεται οὖν πρὸς Σίμωνα Πέτρον· καὶ
λέγει αὐτῷ ἐκεῖνος· Κύριε, σύ μου νίπτεις
τοὺς πόδας;
7 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὃ
ἐγὼ ποιῶ, σὺ οὐκ οἶδας ἄρτι, γνώσῃ δὲ
μετὰ ταῦτα·
8 Λέγει αὐτῷ Πέτρος· Οὐ μὴ νίψῃς τοὺς
πόδας μου εἰς τὸν αἰῶνα· Ἀπεκρίθη αὐτῷ
ὁ Ἰησοῦς· Ἐὰν μὴ νίψω σε, οὐκ ἔχεις μέ-
ρος μετ' ἐμοῦ.



9 Λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, μὴ τοὺς πόδας μου μόνον, ἀλλὰ καὶ τὰς χεῖρας καὶ τὴν κεφαλήν.

10 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὁ λελουμένος οὐ χρείαν ἔχει ἢ τοὺς πόδας νίψασθαι, ἀλλ' ἔστι καθαρὸς ὅλος· καὶ ὑμεῖς καθαροί ἐστε, ἀλλ' οὐχὶ πάντες.

11 Ἤδει γὰρ τὸν παραδιδόντα αὐτόν· Διὰ τοῦτο εἶπεν· Οὐχὶ πάντες καθαροί ἐστε.

12 Ὅτε οὖν ἔνιψε τοὺς πόδας αὐτῶν, καὶ ἔλαβε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, ἀναπεσὼν πάλιν, εἶπεν αὐτοῖς· Γινώσκετε τί πεποίηκα ὑμῖν;

13 Ὑμεῖς φωνεῖτέ με· Ὁ διδάσκαλος καὶ ὁ κύριος· καὶ καλῶς λέγετε· εἰμὶ γάρ.

14 Εἰ οὖν ἐγὼ ἔνιψα ὑμῶν τοὺς πόδας, ὁ κύριος καὶ ὁ διδάσκαλος, καὶ ὑμεῖς ὀφείλετε ἀλλήλων νίπτειν τοὺς πόδας.

15 Ὑπόδειγμα γὰρ ἔδωκα ὑμῖν, ἵνα καθὼς ἐγὼ ἐποίησα ὑμῖν, καὶ ὑμεῖς ποιῆτε.

16 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐκ ἔστι δοῦλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ, οὐδὲ ἀπόστολος μείζων τοῦ πέμψαντος αὐτόν.

17 Εἰ ταῦτα οἴδατε, μακάριοί ἐστε ἐὰν ποιῆτε αὐτά.

18 Οὐ περὶ πάντων ὑμῶν λέγω· ἐγὼ οἶδα οὓς ἐξελεξάμην· ἀλλ' ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ· Ὁ τρώγων μετ' ἐμοῦ τὸν ἄρτον, ἐπῆρεν ἐπ' ἐμὲ τὴν πτέρναν αὐτοῦ.

19 Ἀπ' ἄρτι λέγω ὑμῖν πρὸ τοῦ γενέσθαι, ἵνα ὅταν γένηται, πιστεύσητε ὅτι ἐγώ εἰμι.

20 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν· Ὁ λαμβάνων ἐάν τινα πέμψω, ἐμὲ λαμβάνει· ὁ δὲ ἐμὲ λαμβάνων, λαμβάνει τὸν πέμψαντά με.

21 Ταῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἐταράχθη τῷ
πνεύματι, καὶ ἐμαρτύρησε, καὶ εἶπεν· Ἀμὴν
ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν παρα-
δώσει με.
22 Ἔβλεπον οὖν εἰς ἀλλήλους οἱ μαθηταὶ,
ἀπορούμενοι περὶ τίνος λέγει.
23 Ἦν δὲ ἀνακείμενος εἷς τῶν μαθητῶν
αὐτοῦ ἐν τῷ κόλπῳ τοῦ Ἰησοῦ, ὃν ἠγάπα ὁ
Ἰησοῦς.
24 Νεύει οὖν τούτῳ Σίμων Πέτρος πυθέ-
σθαι τίς ἂν εἴη περὶ οὗ λέγει.
25 Ἐπιπεσὼν δὲ ἐκεῖνος ἐπὶ τὸ στῆθος τοῦ
Ἰησοῦ, λέγει αὐτῷ· Κύριε, τίς ἐστιν;
26 Ἀποκρίνεται ὁ Ἰησοῦς· Ἐκεῖνός ἐστιν
ᾧ ἐγὼ βάψας τὸ ψωμίον ἐπιδώσω. Καὶ ἐμ-
βάψας τὸ ψωμίον, δίδωσιν Ἰούδᾳ Σίμω-
νος Ἰσκαριώτῃ.
27 Καὶ μετὰ τὸ ψωμίον τότε εἰσῆλθεν εἰς
ἐκεῖνον ὁ Σατανᾶς· Λέγει οὖν αὐτῷ ὁ Ἰη-
σοῦς· Ὃ ποιεῖς, ποίησον τάχιον.
28 Τοῦτο δὲ οὐδεὶς ἔγνω τῶν ἀνακειμένων
πρὸς τί εἶπεν αὐτῷ.
29 Τινὲς γὰρ ἐδόκουν, ἐπεὶ τὸ γλωσσόκο-
μον εἶχεν ὁ Ἰούδας, ὅτι λέγῃ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς·
Ἀγόρασον ὧν χρείαν ἔχομεν εἰς τὴν ἑορτήν·
ἢ τοῖς πτωχοῖς ἵνα τι δῷ.
30 Λαβὼν οὖν τὸ ψωμίον ἐκεῖνος, εὐθέως
ἐξῆλθεν· ἦν δὲ νύξ.
31 Ὅτε οὖν ἐξῆλθε, λέγει ὁ Ἰησοῦς· Νῦν
ἐδοξάσθη ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου, καὶ ὁ Θεὸς
ἐδοξάσθη ἐν αὐτῷ.
32 Εἰ ὁ Θεὸς ἐδοξάσθη ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ
Θεὸς δοξάσει αὐτὸν ἐν ἑαυτῷ, καὶ εὐθὺς δο-
ξάσει αὐτόν.

33 Τεκνία, ἔτι μικρὸν μεθ' ὑμῶν εἰμι· ζητήσετέ με, καὶ καθὼς εἶπον τοῖς Ἰουδαίοις· Ὅτι ὅπου ὑπάγω ἐγὼ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν· καὶ ὑμῖν λέγω ἄρτι.

34 Ἐντολὴν καινὴν δίδωμι ὑμῖν, ἵνα ἀγαπᾶτε ἀλλήλους· καθὼς ἠγάπησα ὑμᾶς, ἵνα καὶ ὑμεῖς ἀγαπᾶτε ἀλλήλους.

35 Ἐν τούτῳ γνώσονται πάντες ὅτι ἐμοὶ μαθηταί ἐστε, ἐὰν ἀγάπην ἔχητε ἐν ἀλλήλοις.

36 Λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, ποῦ ὑπάγεις; Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅπου ὑπάγω, οὐ δύνασαί μοι νῦν ἀκολουθῆσαι, ὕστερον δὲ ἀκολουθήσεις μοι.

37 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Κύριε, διατί οὐ δύναμαί σοι ἀκολουθῆσαι ἄρτι; τὴν ψυχήν μου ὑπὲρ σοῦ θήσω.

38 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τὴν ψυχήν σου ὑπὲρ ἐμοῦ θήσεις; Ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, οὐ μὴ ἀλέκτωρ φωνήσει ἕως οὗ ἀπαρνήσῃ με τρίς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΔ'. 14.

Δισέβδομον δὲ θειάτητα τὴν Λόγου
Ἔστησι, καὶ κράτος δὲ πίστεως ἀδόκ.
Στοργῆς δὲ τέκμαρ ἐντολῶν ἐργασία.
Καὶ Πνεῦμα πιστοῖς ἐγγυᾷ βουληφόρον.

1 ΜΗ' ταρασσέσθω ὑμῶν ἡ καρδία· πιστεύετε εἰς τὸν Θεὸν, καὶ εἰς ἐμὲ πιστεύετε.

2 Ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ πατρός μου μοναὶ πολλαί εἰσιν· εἰ δὲ μὴ, εἶπον ἂν ὑμῖν· πορεύομαι ἑτοιμάσαι τόπον ὑμῖν.

3 Καὶ ἐὰν πορευθῶ, καὶ ἑτοιμάσω ὑμῖν τόπον, πάλιν ἔρχομαι, καὶ παραλήψομαι ὑμᾶς πρὸς ἐμαυτόν· ἵνα ὅπου εἰμὶ ἐγὼ καὶ ὑμεῖς ἦτε.

4 Καὶ ὅπου ἐγὼ ὑπάγω οἴδατε, καὶ τὴν ὁδὸν οἴδατε.

5 Λέγει αὐτῷ Θωμᾶς· Κύριε, οὐκ οἴδαμεν ποῦ ὑπάγεις· καὶ πῶς δυνάμεθα τὴν ὁδὸν εἰδέναι;

6 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγώ εἰμι ἡ ὁδὸς, καὶ ἡ ἀλήθεια, καὶ ἡ ζωή· οὐδεὶς ἔρχεται πρὸς τὸν πατέρα, εἰ μὴ δι' ἐμοῦ.

7 Εἰ ἐγνώκειτέ με, καὶ τὸν πατέρα μου ἐγνώκειτε ἄν· καὶ ἀπ' ἄρτι γινώσκετε αὐτὸν, καὶ ἑωράκατε αὐτόν.

8 Λέγει αὐτῷ Φίλιππος· Κύριε, δεῖξον ἡμῖν τὸν πατέρα, καὶ ἀρκεῖ ἡμῖν.

9 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τοσοῦτον χρόνον μεθ' ὑμῶν εἰμι, καὶ οὐκ ἔγνωκάς με Φίλιππε; ὁ ἑωρακὼς ἐμὲ, ἑώρακε τὸν πατέρα· καὶ πῶς σὺ λέγεις· Δεῖξον ἡμῖν τὸν πατέρα;

10 Οὐ πιστεύεις ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πατρὶ, καὶ ὁ πατὴρ ἐν ἐμοί ἐστι; τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ λαλῶ ὑμῖν, ἀπ' ἐμαυτοῦ οὐ λαλῶ· ὁ δὲ πατὴρ ὁ ἐν ἐμοὶ μένων, αὐτὸς ποιεῖ τὰ ἔργα.

11 Πιστεύετέ μοι ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πατρὶ, καὶ ὁ πατὴρ ἐν ἐμοί ἐστιν· εἰ δὲ μὴ, διὰ τὰ ἔργα αὐτὰ πιστεύετέ μοι.

12 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ, τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ, κἀκεῖνος ποιήσει, καὶ μείζονα τούτων ποιήσει· ὅτι ἐγὼ πρὸς τὸν πατέρα μου πορεύομαι.

13 Καὶ ὅ, τι ἂν αἰτήσητε ἐν τῷ ὀνόμα-



τί μου, τοῦτο ποιήσω· ἵνα δοξασθῇ ὁ πατὴρ
ἐν τῷ Υἱῷ.
14 Ἐάν τι αἰτήσητε ἐν τῷ ὀνόματί μου,
ἐγὼ ποιήσω.
15 Ἐὰν ἀγαπᾶτέ με, τὰς ἐντολὰς τὰς
ἐμὰς τηρήσατε.
16 Καὶ ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν πατέρα, καὶ ἄλ-
λον παράκλητον δώσει ὑμῖν, ἵνα μένῃ μεθ᾽
ὑμῶν εἰς τὸν αἰῶνα.
17 Τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ ὁ κόσ-
μος οὐ δύναται λαβεῖν, ὅτι οὐ θεωρεῖ αὐτὸ,
οὐδὲ γινώσκει αὐτό· ὑμεῖς δὲ γινώσκετε αὐ-
τὸ, ὅτι παρ᾽ ὑμῖν μένει, καὶ ἐν ὑμῖν ἔσται.
18 Οὐκ ἀφήσω ὑμᾶς ὀρφανούς· ἔρχομαι
πρὸς ὑμᾶς.
19 Ἔτι μικρὸν, καὶ ὁ κόσμος με οὐκ ἔτι
θεωρεῖ· ὑμεῖς δὲ θεωρεῖτέ με· ὅτι ἐγὼ ζῶ,
καὶ ὑμεῖς ζήσεσθε.
20 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ γνώσεσθε ὑμεῖς ὅτι
ἐγὼ ἐν τῷ πατρί μου, καὶ ὑμεῖς ἐν ἐμοὶ, κἀ-
γὼ ἐν ὑμῖν.
21 Ὁ ἔχων τὰς ἐντολάς μου, καὶ τηρῶν αὐ-
τὰς, ἐκεῖνός ἐστιν ὁ ἀγαπῶν με· ὁ δὲ ἀγα-
πῶν με, ἀγαπηθήσεται ὑπὸ τοῦ πατρός μου·
καὶ ἐγὼ ἀγαπήσω αὐτὸν, καὶ ἐμφανίσω αὐτῷ
ἐμαυτόν.
22 Λέγει αὐτῷ Ἰούδας· (οὐχ ὁ Ἰσκα-
ριώτης·) Κύριε, τί γέγονεν ὅτι ἡμῖν μέλλεις
ἐμφανίζειν σεαυτὸν, καὶ οὐχὶ τῷ κόσμῳ;
23 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ·
Ἐάν τις ἀγαπᾷ με, τὸν λόγον μου τηρήσει·
καὶ ὁ πατήρ μου ἀγαπήσει αὐτὸν, καὶ πρὸς αὐ-
τὸν ἐλευσόμεθα, καὶ μονὴν παρ᾽ αὐτῷ ποιή-
σομεν.

24 Ὁ μὴ ἀγαπῶν με, τοὺς λόγους μου οὐ
τηρεῖ· καὶ ὁ λόγος ὃν ἀκούετε, οὐκ ἔστιν ἐμὸς,
ἀλλὰ τοῦ πέμψαντός με πατρός.
25 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν παρ' ὑμῖν μένων.
26 Ὁ δὲ παράκλητος, τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον,
ὃ πέμψει ὁ πατὴρ ἐν τῷ ὀνόματί μου, ἐκεῖ-
νος ὑμᾶς διδάξει πάντα, καὶ ὑπομνήσει ὑμᾶς
πάντα ἃ εἶπον ὑμῖν.
27 Εἰρήνην ἀφίημι ὑμῖν· εἰρήνην τὴν ἐμὴν
δίδωμι ὑμῖν· οὐ καθὼς ὁ κόσμος δίδωσιν,
ἐγὼ δίδωμι ὑμῖν. μὴ ταρασσέσθω ὑμῶν ἡ
καρδία, μηδὲ δειλιάτω.
28 Ἠκούσατε ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν· Ὑπά-
γω καὶ ἔρχομαι πρὸς ὑμᾶς. Εἰ ἠγαπᾶτέ με,
ἐχάρητε ἂν ὅτι εἶπον, πορεύομαι πρὸς τὸν
πατέρα· ὅτι ὁ πατήρ μου μείζων μου ἐστί.
29 Καὶ νῦν εἴρηκα ὑμῖν πρὶν γενέσθαι· ἵνα
ὅταν γένηται, πιστεύσητε.
30 Οὐκ ἔτι πολλὰ λαλήσω μεθ' ὑμῶν.
ἔρχεται γὰρ ὁ τοῦ κόσμου τούτου ἄρχων, καὶ ἐν
ἐμοὶ οὐκ ἔχει οὐδέν.
31 Ἀλλ' ἵνα γνῷ ὁ κόσμος ὅτι ἀγαπῶ τὸν
πατέρα, καὶ καθὼς ἐνετείλατό μοι ὁ πατὴρ,
οὕτω ποιῶ· ἐγείρεσθε, ἄγωμεν ἐντεῦθεν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΕ'. 15.

Τῷ ξὶς δὲ πέμπτῳ παραβολὴ τῆς ἀμπέλου
Στοργὴν πρὸς αὐτὸν, καὶ πρὸς ἀλλήλους ἔχειν.
Κόσμου τε μῖσος μηδαμῶς πεφρικέναι·
Ἐκ τοῦ Παρακλήτου δὲ ῥῆμα προσμένειν.

1 Ἐγώ εἰμι ἡ ἄμπελος ἡ ἀληθινὴ,
καὶ ὁ πατήρ μου ὁ γεωργός ἐστι.

2 Πᾶν κλῆμα ἐν ἐμοὶ μὴ φέρων καρπὸν, καὶ
αἴρει αὐτό· καὶ πᾶν τὸ καρπὸν φέρων, καθαίρει
αὐτὸ, ἵνα πλείονα καρπὸν φέρῃ.
3 Ἤδη ὑμεῖς καθαροί ἐστε διὰ τὸν λόγον
ὃν λελάληκα ὑμῖν.
4 Μείνατε ἐν ἐμοὶ, κἀγὼ ἐν ὑμῖν· κα-
θὼς τὸ κλῆμα οὐ δύναται καρπὸν φέρειν ἀφ'
ἑαυτοῦ, ἐὰν μὴ μείνῃ ἐν τῇ ἀμπέλῳ· οὕτως οὐδὲ
ὑμεῖς, ἐὰν μὴ ἐν ἐμοὶ μείνητε.
5 Ἐγώ εἰμι ἡ ἄμπελος, ὑμεῖς τὰ κλήμα-
τα· ὁ μένων ἐν ἐμοὶ, κἀγὼ ἐν αὐτῷ, οὗτος
φέρει καρπὸν πολύν· ὅτι χωρὶς ἐμοῦ οὐ δύ-
νασθε ποιεῖν οὐδέν.
6 Ἐὰν μή τις μείνῃ ἐν ἐμοὶ, ἐβλήθη ἔξω
ὡς τὸ κλῆμα, καὶ ἐξηράνθη· καὶ συνάγουσιν
αὐτὰ, καὶ εἰς πῦρ βάλλουσι, καὶ καίεται.
7 Ἐὰν μείνητε ἐν ἐμοὶ, καὶ τὰ ῥήματά μου
ἐν ὑμῖν μείνῃ, ὃ ἐὰν θέλητε αἰτήσεσθε, καὶ
γενήσεται ὑμῖν.
8 Ἐν τούτῳ ἐδοξάσθη ὁ πατήρ μου, ἵνα
καρπὸν πολὺν φέρητε· καὶ γενήσεσθε ἐμοὶ
μαθηταί.
9 Καθὼς ἠγάπησέ με ὁ πατὴρ, κἀγὼ ἠ-
γάπησα ὑμᾶς· μείνατε ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ ἐμῇ.
10 Ἐὰν τὰς ἐντολάς μου τηρήσητε, μενεῖ-
τε ἐν τῇ ἀγάπῃ μου· καθὼς ἐγὼ τὰς ἐντολὰς
τοῦ πατρός μου τετήρηκα, καὶ μένω αὐτοῦ ἐν
τῇ ἀγάπῃ.
11 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ἡ χαρὰ ἡ ἐ-
μὴ ἐν ὑμῖν μείνῃ, καὶ ἡ χαρὰ ὑμῶν πληρωθῇ.
12 Αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολὴ ἡ ἐμὴ, ἵνα ἀγα-
πᾶτε ἀλλήλους, καθὼς ἠγάπησα ὑμᾶς.
13 Μείζονα ταύτης ἀγάπην οὐδεὶς ἔχει, ἵνα
τις τὴν ψυχὴν αὐτοῦ θῇ ὑπὲρ τῶν φίλων αὐτοῦ.

14 Ὑ-

14 Ὑμεῖς φίλοι μου ἐστὲ, ἐὰν ποιῆτε ὅσα
ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν.
15 Οὐκέτι ὑμᾶς λέγω δούλους· ὅτι ὁ δοῦ-
λος οὐκ οἶδε τί ποιεῖ αὐτοῦ ὁ κύριος. ὑμᾶς δὲ
εἴρηκα φίλους, ὅτι πάντα ἃ ἤκουσα παρὰ τοῦ
πατρός μου, ἐγνώρισα ὑμῖν.
16 Οὐχ ὑμεῖς με ἐξελέξασθε, ἀλλ' ἐγὼ
ἐξελεξάμην ὑμᾶς, καὶ ἔθηκα ὑμᾶς, ἵνα
ὑμεῖς ὑπάγητε, καὶ καρπὸν φέρητε, καὶ ὁ καρ-
πὸς ὑμῶν μένῃ· ἵνα ὅ, τι ἂν αἰτήσητε τὸν
πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δῷ ὑμῖν.
17 Ταῦτα ἐντέλλομαι ὑμῖν, ἵνα ἀγαπᾶ-
τε ἀλλήλους.
18 Εἰ ὁ κόσμος ὑμᾶς μισεῖ, γινώσκετε
ὅτι ἐμὲ πρῶτον ὑμῶν μεμίσηκεν.
19 Εἰ ἐκ τοῦ κόσμου ἦτε, ὁ κόσμος ἂν τὸ
ἴδιον ἐφίλει· ὅτι δὲ ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ ἐστὲ,
ἀλλ' ἐγὼ ἐξελεξάμην ὑμᾶς ἐκ τοῦ κόσμου, διὰ
τοῦτο μισεῖ ὑμᾶς ὁ κόσμος.
20 Μνημονεύετε τοῦ λόγου οὗ ἐγὼ εἶπον ὑ-
μῖν· Οὐκ ἔστι δοῦλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ.
εἰ ἐμὲ ἐδίωξαν, καὶ ὑμᾶς διώξουσιν, εἰ τὸν
λόγον μου ἐτήρησαν, καὶ τὸν ὑμέτερον τηρή-
σουσιν.
21 Ἀλλὰ ταῦτα πάντα ποιήσουσιν ὑμῖν
διὰ τὸ ὄνομά μου, ὅτι οὐκ οἴδασι τὸν πέμ-
ψαντά με.
22 Εἰ μὴ ἦλθον, καὶ ἐλάλησα αὐτοῖς,
ἁμαρτίαν οὐκ εἶχον· νῦν δὲ πρόφασιν οὐκ ἔχου-
σι περὶ τῆς ἁμαρτίας αὐτῶν.
23 Ὁ ἐμὲ μισῶν, καὶ τὸν πατέρα μου
μισεῖ.
24 Εἰ τὰ ἔργα μὴ ἐποίησα ἐν αὐτοῖς ἃ οὐ-
δεὶς ἄλλος πεποίηκεν, ἁμαρτίαν οὐκ εἶχον·



νῦν δὲ ϗ ἑωράκασι, ϗ μεμισήκασι ϗ ἐμὲ ϗ
τὸν πατέρα μου.
25 Ἀλλ' ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὁ γεγραμ-
μένος ἐν τῷ νόμῳ αὐτῶν· Ὅτι ἐμίσησάν με
δωρεάν.
26 Ὅταν δὲ ἔλθῃ ὁ παράκλητος, ὃν ἐγὼ
πέμψω ὑμῖν παρὰ τοῦ πατρὸς, (τὸ Πνεῦ-
μα τῆς ἀληθείας, ὃ παρὰ τοῦ πατρὸς ἐκπο-
ρεύεται,) ἐκεῖνος μαρτυρήσει περὶ ἐμοῦ.
27 Καὶ ὑμεῖς δὲ μαρτυρεῖτε, ὅτι ἀπ' ἀρ-
χῆς μετ' ἐμοῦ ἐστε.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ιϛ'. 16.

Δισογδόῳ διωγμὸν ἀγγέλλει φίλοις,
Παρουσίαν τε Πνεύματος συνηγόρου.
Ἐγέρσεως τέρψιν τε, ϗ λύπην πάθους.
Πρὸς Πατρὸς εὔνοιάν τε, ϗ χαρισμάτων
Νομὴν ἀφειδῆ, ϗ κατὰ χθονὸς κράτος.

1 ΤΑῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἵνα μὴ
σκανδαλισθῆτε.
2 Ἀποσυναγώγους ποιήσουσιν ὑμᾶς· ἀλλ'
ἔρχεται ὥρα, ἵνα πᾶς ὁ ἀποκτείνας ὑμᾶς,
δόξῃ λατρείαν προσφέρειν τῷ Θεῷ.
3 Καὶ ταῦτα ποιήσουσιν ὑμῖν, ὅτι οὐκ
ἔγνωσαν τὸν πατέρα οὐδὲ ἐμέ.
4 Ἀλλὰ ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἵνα ὅταν
ἔλθῃ ἡ ὥρα, μνημονεύητε αὐτῶν, ὅτι ἐγὼ
εἶπον ὑμῖν· ταῦτα δὲ ὑμῖν ἐξ ἀρχῆς οὐκ εἶ-
πον, ὅτι μεθ' ὑμῶν ἤμην.
5 Νῦν δὲ ὑπάγω πρὸς τὸν πέμψαντά
με, ϗ οὐδεὶς ἐξ ὑμῶν ἐρωτᾷ με· Ποῦ ὑ-
πάγεις;

6 Ἀλλ'

6 Ἀλλ' ὅτι ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἡ λύ-
πη πεπλήρωκεν ὑμῶν τὴν καρδίαν·
7 Ἀλλ' ἐγὼ τὴν ἀλήθειαν λέγω ὑμῖν,
συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω· ἐὰν γὰρ
μὴ ἀπέλθω, ὁ παράκλητος οὐκ ἐλεύσεται
πρὸς ὑμᾶς· ἐὰν δὲ πορευθῶ, πέμψω αὐ-
τὸν πρὸς ὑμᾶς.
8 Καὶ ἐλθὼν ἐκεῖνος, ἐλέγξει τὸν κόσ-
μον περὶ ἁμαρτίας καὶ περὶ δικαιοσύνης καὶ πε-
ρὶ κρίσεως,
9 Περὶ ἁμαρτίας μὲν, ὅτι οὐ πιστεύου-
σιν εἰς ἐμέ.
10 Περὶ δικαιοσύνης δὲ, ὅτι πρὸς τὸν
πατέρα μου ὑπάγω, καὶ οὐκ ἔτι θεωρεῖτέ με.
11 Περὶ δὲ κρίσεως, ὅτι ὁ ἄρχων τοῦ κόσ-
μου τούτου κέκριται.
12 Ἔτι πολλὰ ἔχω λέγειν ὑμῖν, ἀλλ'
οὐ δύνασθε βαστάζειν ἄρτι.
13 Ὅταν δὲ ἔλθῃ ἐκεῖνος, τὸ Πνεῦμα
τῆς ἀληθείας, ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν
τὴν ἀλήθειαν· οὐ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ,
ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκούσῃ, λαλήσει, καὶ τὰ ἐρχό-
μενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν.
14 Ἐκεῖνος ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ τοῦ ἐμοῦ
λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν.
15 Πάντα ὅσα ἔχει ὁ πατὴρ, ἐμά ἐστι·
διὰ τοῦτο εἶπον ὅτι ἐκ τοῦ ἐμοῦ λήψεται, καὶ
ἀναγγελεῖ ὑμῖν.
16 Μικρὸν, καὶ οὐ θεωρεῖτέ με· καὶ πάλιν
μικρὸν, καὶ ὄψεσθέ με, ὅτι ἐγὼ ὑπάγω πρὸς
τὸν πατέρα.
17 Εἶπον οὖν ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς
ἀλλήλους· Τί ἐστι τοῦτο ὃ λέγει ἡμῖν· Μι-
κρὸν, καὶ οὐ θεωρεῖτέ με· καὶ πάλιν μικρὸν,

καὶ ὄψεσθέ με· καὶ, Ὅτι ἐγὼ ὑπάγω πρὸς τὸν πατέρα;

18 Ἔλεγον οὖν· Τοῦτο τί ἐστιν ὃ λέγει, τὸ μικρόν; οὐκ οἴδαμεν τί λαλεῖ.

19 Ἔγνω οὖν ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἤθελον αὐτὸν ἐρωτᾷν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Περὶ τούτου ζητεῖτε μετ' ἀλλήλων, ὅτι εἶπον· Μικρὸν, καὶ οὐ θεωρεῖτέ με· καὶ πάλιν μικρὸν, καὶ ὄψεσθέ με;

20 Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι κλαύσετε καὶ θρηνήσετε ὑμεῖς, ὁ δὲ κόσμος χαρήσεται· ὑμεῖς δὲ λυπηθήσεσθε, ἀλλ' ἡ λύπη ὑμῶν εἰς χαρὰν γενήσεται.

21 Ἡ γυνὴ ὅταν τίκτῃ, λύπην ἔχει, ὅτι ἦλθεν ἡ ὥρα αὐτῆς· ὅταν δὲ γεννήσῃ τὸ παιδίον, οὐκ ἔτι μνημονεύει τῆς θλίψεως, διὰ τὴν χαρὰν, ὅτι ἐγεννήθη ἄνθρωπος εἰς τὸν κόσμον.

22 Καὶ ὑμεῖς οὖν λύπην μὲν νῦν ἔχετε· πάλιν δὲ ὄψομαι ὑμᾶς, καὶ χαρήσεται ὑμῶν ἡ καρδία, καὶ τὴν χαρὰν ὑμῶν οὐδεὶς αἴρει ἀφ' ὑμῶν.

23 Καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐμὲ οὐκ ἐρωτήσετε οὐδέν· Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅσα ἂν αἰτήσητε τὸν πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δώσει ὑμῖν.

24 Ἕως ἄρτι οὐκ ᾐτήσατε οὐδὲν ἐν τῷ ὀνόματί μου· αἰτεῖτε, καὶ λήψεσθε, ἵνα ἡ χαρὰ ὑμῶν ᾖ πεπληρωμένη.

25 Ταῦτα ἐν παροιμίαις λελάληκα ὑμῖν· ἀλλ' ἔρχεται ὥρα ὅτε οὐκ ἔτι ἐν παροιμίαις λαλήσω ὑμῖν, ἀλλὰ παῤῥησίᾳ περὶ τοῦ πατρὸς ἀναγγελῶ ὑμῖν.

26 Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐν τῷ ὀνόματί μου



αἰτήσεσθε· καὶ οὐ λέγω ὑμῖν ὅτι ἐγὼ ἐρωτήσω
τὸν πατέρα περὶ ὑμῶν·
27 Αὐτὸς γὰρ ὁ πατὴρ φιλεῖ ὑμᾶς, ὅτι
ὑμεῖς ἐμὲ πεφιλήκατε, καὶ πεπιστεύκατε ὅτι
ἐγὼ παρὰ τοῦ Θεοῦ ἐξῆλθον.
28 Ἐξῆλθον παρὰ τοῦ πατρὸς, καὶ ἐλήλυ-
θα εἰς τὸν κόσμον· πάλιν ἀφίημι τὸν κόσμον,
καὶ πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα.
29 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Ἴδε
νῦν παῤῥησίᾳ λαλεῖς, καὶ παροιμίαν οὐδε-
μίαν λέγεις.
30 Νῦν οἴδαμεν ὅτι οἶδας πάντα, καὶ οὐ
χρείαν ἔχεις ἵνα τίς σε ἐρωτᾷ. ἐν τούτῳ πι-
στεύομεν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐξῆλθες.
31 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἄρτι
πιστεύετε;
32 Ἰδοὺ, ἔρχεται ὥρα, καὶ νῦν ἐλήλυθεν
ἵνα σκορπισθῆτε ἕκαστος εἰς τὰ ἴδια, καὶ ἐμὲ
μόνον ἀφῆτε· καὶ οὐκ εἰμὶ μόνος, ὅτι ὁ πατὴρ
μετ' ἐμοῦ ἐστι.
33 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ἐν ἐμοὶ εἰ-
ρήνην ἔχητε. ἐν τῷ κόσμῳ θλίψιν ἕξετε· ἀλ-
λὰ θαρσεῖτε· ἐγὼ νενίκηκα τὸν κόσμον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΖ'. 17.

Διαιρεβδομόντε καὶ ζῆτον λιτὰς Λόγου,
Ἴσον πρὸς ὃν Τοκῆα αἰτοῦντος κλέος.
Ὑπὲρ μαθητῶν, μελλοπίστων θ' ὡς σφίσιν
Ἓν ὦσιν ἐν Θεῷγε, ὡς ἓν οἱ δύο.

1 ΤΑῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐπῆ-
ρε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ εἰς τὸν οὐ-
ρανὸν, καὶ εἶπε· Πάτερ, ἐλήλυθεν ἡ ὥρα·
δό-

δόξασόν σου τὸν Υἱὸν, ἵνα καὶ ὁ Υἱός σου
δοξάσῃ σε.
2 Καθὼς ἔδωκας αὐτῷ ἐξουσίαν πάσης
σαρκὸς, ἵνα πᾶν ὃ δέδωκας αὐτῷ, δώσῃ
αὐτοῖς ζωὴν αἰώνιον.
3 Αὕτη δέ ἐστιν ἡ αἰώνιος ζωὴ, ἵνα γινώ-
σκωσί σε τὸν μόνον ἀληθινὸν Θεὸν, καὶ ὃν ἀ-
πέστειλας Ἰησοῦν Χριστόν.
4 Ἐγώ σε ἐδόξασα ἐπὶ τῆς γῆς· τὸ ἔργον
ἐτελείωσα ὃ δέδωκάς μοι ἵνα ποιήσω.
5 Καὶ νῦν δόξασόν με σὺ πάτερ παρὰ
σεαυτῷ τῇ δόξῃ ᾗ εἶχον πρὸ τοῦ τὸν κόσμον εἶ-
ναι, παρὰ σοί.
6 Ἐφανέρωσά σου τὸ ὄνομα τοῖς ἀνθρώ-
ποις, οὓς δέδωκάς μοι ἐκ τοῦ κόσμου· σοὶ ἦσαν,
καὶ ἐμοὶ αὐτοὺς δέδωκας, καὶ τὸν λόγον σου τε-
τηρήκασι.
7 Νῦν ἔγνωκαν ὅτι πάντα ὅσα δέδωκάς
μοι, παρὰ σοῦ ἐστιν·
8 Ὅτι τὰ ῥήματα ἃ δέδωκάς μοι, δέδω-
κα αὐτοῖς· καὶ αὐτοὶ ἔλαβον, καὶ ἔγνωσαν ἀλη-
θῶς ὅτι παρὰ σοῦ ἐξῆλθον, καὶ ἐπίστευσαν
ὅτι σύ με ἀπέστειλας.
9 Ἐγὼ περὶ αὐτῶν ἐρωτῶ· οὐ περὶ τοῦ κόσ-
μου ἐρωτῶ, ἀλλὰ περὶ ὧν δέδωκάς μοι, ὅτι
σοί εἰσι.
10 Καὶ τὰ ἐμὰ πάντα σά ἐστι, καὶ τὰ σὰ
ἐμά· καὶ δεδόξασμαι ἐν αὐτοῖς.
11 Καὶ οὐκ ἔτι εἰμὶ ἐν τῷ κόσμῳ, καὶ οὗτοι
ἐν τῷ κόσμῳ εἰσί· καὶ ἐγὼ πρὸς σὲ ἔρχομαι.
Πάτερ ἅγιε, τήρησον αὐτοὺς ἐν τῷ ὀνόματί σου,
οὓς δέδωκάς μοι, ἵνα ὦσιν ἓν καθὼς ἡμεῖς.
12 Ὅτε ἤμην μετ' αὐτῶν ἐν τῷ κόσμῳ,
ἐγὼ ἐτήρουν αὐτοὺς ἐν τῷ ὀνόματί σου· οὓς δέ-
δω-

δωκάς μοι ἐφύλαξα, ϗ οὐδεὶς ἐξ αὐτῶν ἀ-
πώλετο, εἰ μὴ ὁ Υἱὸς τῆς ἀπωλείας, ἵνα
ἡ γραφὴ πληρωθῇ.
13 Νῦν δὲ πρὸς σὲ ἔρχομαι, ϗ ταῦτα λα-
λῶ ἐν τῷ κόσμῳ, ἵνα ἔχωσι τὴν χαρὰν τὴν
ἐμὴν πεπληρωμένην ἐν αὐτοῖς.
14 Ἐγὼ δέδωκα αὐτοῖς τὸν λόγον σου, ϗ
ὁ κόσμος ἐμίσησεν αὐτοὺς, ὅτι οὐκ εἰσὶν ἐκ τοῦ
κόσμου, καθὼς ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ κόσμου.
15 Οὐκ ἐρωτῶ ἵνα ἄρῃς αὐτοὺς ἐκ τοῦ κόσ-
μου, ἀλλ' ἵνα τηρήσῃς αὐτοὺς ἐκ τοῦ πονηροῦ.
16 Ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ εἰσὶ, καθὼς ἐγὼ ἐκ
τοῦ κόσμου οὐκ εἰμί.
17 Ἁγίασον αὐτοὺς ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου· ὁ
λόγος ὁ σὸς ἀλήθειά ἐστι.
18 Καθὼς ἐμὲ ἀπέστειλας εἰς τὸν κόσμον,
κἀγὼ ἀπέστειλα αὐτοὺς εἰς τὸν κόσμον.
19 Καὶ ὑπὲρ αὐτῶν ἐγὼ ἁγιάζω ἐμαυτὸν,
ἵνα ϗ αὐτοὶ ὦσιν ἡγιασμένοι ἐν ἀληθείᾳ.
20 Οὐ περὶ τούτων δὲ ἐρωτῶ μόνον, ἀλλὰ
ϗ περὶ τῶν πιστευσόντων διὰ τοῦ λόγου αὐτῶν εἰς
ἐμέ.
21 Ἵνα πάντες ἓν ὦσι, καθὼς σὺ πάτερ
ἐν ἐμοὶ, κἀγὼ ἐν σοὶ, ἵνα ϗ αὐτοὶ ἐν ἡμῖν
ἓν ὦσιν· ἵνα ὁ κόσμος πιστεύσῃ ὅτι σύ με
ἀπέστειλας.
22 Καὶ ἐγὼ τὴν δόξαν ἣν δέδωκάς μοι,
δέδωκα αὐτοῖς· ἵνα ὦσιν ἓν, καθὼς ἡμεῖς
ἕν ἐσμεν.
23 Ἐγὼ ἐν αὐτοῖς, ϗ σὺ ἐν ἐμοὶ, ἵνα
ὦσι τετελειωμένοι εἰς ἓν, ϗ ἵνα γινώσκῃ ὁ
κόσμος, ὅτι σύ με ἀπέστειλας, ϗ ἠγάπη-
σας αὐτοὺς, καθὼς ἐμὲ ἠγάπησας.
24 Πάτερ, οὓς δέδωκάς μοι, θέλω ἵνα

ὅπου

ὅπου εἰμὶ ἐγὼ, κἀκεῖνοι ὦσι μετ' ἐμοῦ· ἵνα
θεωρῶσι τὴν δόξαν τὴν ἐμὴν ἣν ἔδωκάς μοι,
ὅτι ἠγάπησάς με πρὸ καταβολῆς κόσμου.
25 Πάτερ δίκαιε, καὶ ὁ κόσμος σε οὐκ ἔγνω,
ἐγὼ δέ σε ἔγνων, καὶ οὗτοι ἔγνωσαν ὅτι σύ με
ἀπέστειλας.
26 Καὶ ἐγνώρισα αὐτοῖς τὸ ὄνομά σου, καὶ
γνωρίσω· ἵνα ἡ ἀγάπη ἣν ἠγάπησάς με, ἐν
αὐτοῖς ᾖ, κἀγὼ ἐν αὐτοῖς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΗ'. 18.

Δὶς δ' ἐννάτῳ προδόντα καὶ σπείρην ἴδοις,
Ὄπισθεν ἐκπεσόντας εἰς φωνὴν Λόγου.
Πέτρου μάχαιραν, οὔτε δεσμώτην ἄγον
Χριστὸν πρὸς Ἄνναν· ἔνθαγ' ἄρνησις Πέτρου,
Ῥάπισμα παντολμόν τε· εἶτ' ἀρχηγέτου
Ἀνάκρισις, λύσις τε· ἀντίφθεγμά τε
Αἱρουμένων λῄσταρχον ἀντ' εὐεργέτου.

1 ΤΑῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἐξῆλθε σὺν
τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ πέραν τοῦ χει-
μάῤῥου τῶν Κέδρων, ὅπου ἦν κῆπος, εἰς ὃν εἰ-
σῆλθεν αὐτὸς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.
2 Ἤδει δὲ καὶ Ἰούδας ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν,
τὸν τόπον· ὅτι πολλάκις συνήχθη ὁ Ἰησοῦς
ἐκεῖ μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ.
3 Ὁ οὖν Ἰούδας λαβὼν τὴν σπεῖραν, καὶ ἐκ
τῶν ἀρχιερέων καὶ Φαρισαίων ὑπηρέτας, ἔρχεται
ἐκεῖ μετὰ φανῶν καὶ λαμπάδων καὶ ὅπλων.
4 Ἰησοῦς οὖν εἰδὼς πάντα τὰ ἐρχόμενα ἐπ'
αὐτὸν, ἐξελθὼν εἶπεν αὐτοῖς· Τίνα ζητεῖτε;
5 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· Ἰησοῦν τὸν Να-
ζωραῖον. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγώ εἰμι·

Εἰ-

Εἱστήκει δὲ καὶ Ἰούδας ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν
μετ' αὐτῶν.
6 Ὡς οὖν εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ἐγώ εἰμι,
ἀπῆλθον εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ ἔπεσον χαμαί.
7 Πάλιν οὖν αὐτοὺς ἐπηρώτησε· Τίνα ζη-
τεῖτε; Οἱ δὲ εἶπον· Ἰησοῦν τὸν Ναζωραῖον.
8 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Εἶπον ὑμῖν ὅτι
ἐγώ εἰμι, εἰ οὖν ἐμὲ ζητεῖτε, ἄφετε τούτους
ὑπάγειν.
9 Ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὃν εἶπεν· Ὅτι
οὓς δέδωκάς μοι, οὐκ ἀπώλεσα ἐξ αὐτῶν
οὐδένα.
10 Σίμων οὖν Πέτρος ἔχων μάχαιραν,
εἵλκυσεν αὐτὴν, καὶ ἔπαισε τὸν τοῦ ἀρχιερέως
δοῦλον, καὶ ἀπέκοψεν αὐτοῦ τὸ ὠτίον τὸ δεξιόν.
ἦν δὲ ὄνομα τῷ δούλῳ Μάλχος.
11 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς τῷ Πέτρῳ· Βάλε
τὴν μάχαιράν σου εἰς τὴν θήκην. τὸ ποτήριον
ὃ δέδωκέ μοι ὁ πατὴρ, οὐ μὴ πίω αὐτό;
12 Ἡ οὖν σπεῖρα καὶ ὁ χιλίαρχος καὶ οἱ ὑ-
πηρέται τῶν Ἰουδαίων συνέλαβον τὸν Ἰησοῦν,
καὶ ἔδησαν αὐτόν.
13 Καὶ ἀπήγαγον αὐτὸν πρὸς Ἄνναν πρῶ-
τον· ἦν γὰρ πενθερὸς τοῦ Καϊάφα, ὃς ἦν ἀρ-
χιερεὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκείνου.
14 Ἦν δὲ Καϊάφας ὁ συμβουλεύσας τοῖς
Ἰουδαίοις ὅτι συμφέρει ἕνα ἄνθρωπον ἀπολέ-
σθαι ὑπὲρ τοῦ λαοῦ.
15 Ἠκολούθει δὲ τῷ Ἰησοῦ Σίμων Πέτρος,
καὶ ὁ ἄλλος μαθητής· ὁ δὲ μαθητὴς ἐκεῖνος
ἦν γνωστὸς τῷ ἀρχιερεῖ, καὶ συνεισῆλθε τῷ Ἰη-
σοῦ εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ ἀρχιερέως.
16 Ὁ δὲ Πέτρος εἱστήκει πρὸς τῇ θύρᾳ
ἔξω· ἐξῆλθεν οὖν ὁ μαθητὴς ὁ ἄλλος ὃς ἦν
γνω-

γνωστὸς τῷ ἀρχιερεῖ, καὶ εἶπε τῇ θυρωρῷ, καὶ
εἰσήγαγε τὸν Πέτρον.
17 Λέγει οὖν ἡ παιδίσκη ἡ θυρωρὸς τῷ
Πέτρῳ· Μὴ καὶ σὺ ἐκ τῶν μαθητῶν εἶ τοῦ ἀν-
θρώπου τούτου; Λέγει ἐκεῖνος· Οὐκ εἰμί.
18 Εἱστήκεισαν δὲ οἱ δοῦλοι καὶ οἱ ὑπηρέται
ἀνθρακιὰν πεποιηκότες, ὅτι ψύχος ἦν, καὶ
ἐθερμαίνοντο· ἦν δὲ μετ' αὐτῶν ὁ Πέτρος
ἑστὼς καὶ θερμαινόμενος.
19 Ὁ οὖν ἀρχιερεὺς ἠρώτησε τὸν Ἰησοῦν
περὶ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ περὶ τῆς διδα-
χῆς αὐτοῦ.
20 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ παῤ-
ῥησίᾳ ἐλάλησα τῷ κόσμῳ· ἐγὼ πάντοτε
ἐδίδαξα ἐν τῇ συναγωγῇ καὶ ἐν τῷ ἱερῷ, ὅπου
πάντοθεν οἱ Ἰουδαῖοι συνέρχονται, καὶ ἐν κρυ-
πτῷ ἐλάλησα οὐδέν.
21 Τί με ἐπερωτᾷς; ἐπερώτησον τοὺς ἀ-
κηκοότας, τί ἐλάλησα αὐτοῖς· ἴδε, οὗτοι
οἴδασιν ἃ εἶπον ἐγώ.
22 Ταῦτα δὲ αὐτοῦ εἰπόντος, εἷς τῶν ὑπη-
ρετῶν παρεστηκὼς ἔδωκε ῥάπισμα τῷ Ἰησοῦ,
εἰπών· Οὕτως ἀποκρίνῃ τῷ ἀρχιερεῖ;
23 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ κακῶς
ἐλάλησα, μαρτύρησον περὶ τοῦ κακοῦ· εἰ δὲ
καλῶς, τί με δέρεις;
24 Ἀπέστειλεν οὖν αὐτὸν ὁ Ἄννας δεδεμέ-
νον πρὸς Καϊάφαν τὸν ἀρχιερέα.
25 Ἦν δὲ Σίμων Πέτρος ἑστὼς καὶ θερμαι-
νόμενος. εἶπον οὖν αὐτῷ· Μὴ καὶ σὺ ἐκ τῶν
μαθητῶν αὐτοῦ εἶ; Ἠρνήσατο ἐκεῖνος, καὶ εἶ-
πεν· Οὐκ εἰμί.
26 Λέγει εἷς ἐκ τῶν δούλων τοῦ ἀρχιε-
ρέως, συγγενὴς ὢν οὗ ἀπέκοψε Πέτρος
τὸ

τὸ ὠτίον· Οὐκ ἐγώ σε εἶδον ἐν τῷ κήπῳ
μετ' αὐτοῦ;
27 Πάλιν οὖν ἠρνήσατο ὁ Πέτρος, καὶ εὐ-
θέως ἀλέκτωρ ἐφώνησεν.
28 Α'γουσιν οὖν τὸν Ι'ησοῦν ἀπὸ τοῦ Καϊάφα
εἰς τὸ πραιτώριον. ἦν δὲ πρωΐα· καὶ αὐτοὶ οὐκ
εἰσῆλθον εἰς τὸ πραιτώριον, ἵνα μὴ μιανθῶ-
σιν, ἀλλ' ἵνα φάγωσι τὸ πάσχα.
29 Ε'ξῆλθεν οὖν ὁ Πιλάτος πρὸς αὐτοὺς,
καὶ εἶπε· Τίνα κατηγορίαν φέρετε κατὰ τοῦ ἀν-
θρώπου τούτου;
30 Α'πεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· Εἰ μὴ
ἦν οὗτος κακοποιὸς, οὐκ ἄν σοι παρεδώκαμεν
αὐτόν.
31 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Λάβετε
αὐτὸν ὑμεῖς, καὶ κατὰ τὸν νόμον ὑμῶν κρίνατε
αὐτόν· Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ι'ουδαῖοι· Ἡμῖν
οὐκ ἔξεστιν ἀποκτεῖναι οὐδένα.
32 Ι'να ὁ λόγος τοῦ Ι'ησοῦ πληρωθῇ, ὃν
εἶπε, σημαίνων ποίῳ θανάτῳ ἤμελλεν ἀπο-
θνήσκειν.
33 Εἰσῆλθεν οὖν εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν ὁ
Πιλάτος, καὶ ἐφώνησε τὸν Ι'ησοῦν· καὶ εἶπεν αὐ-
τῷ· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ι'ουδαίων;
34 Α'πεκρίθη αὐτῷ ὁ Ι'ησοῦς· Α'φ' ἑαυ-
τοῦ σὺ τοῦτο λέγεις, ἢ ἄλλοι σοι εἶπον πε-
ρὶ ἐμοῦ;
35 Α'πεκρίθη ὁ Πιλάτος· Μήτι ἐγὼ Ι'ου-
δαῖός εἰμι; τὸ ἔθνος τὸ σὸν καὶ οἱ ἀρχιερεῖς
παρέδωκάν σε ἐμοί· τί ἐποίησας;
36 Α'πεκρίθη ὁ Ι'ησοῦς· Ἡ βασιλεία ἡ
ἐμὴ οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ κόσμου τούτου· εἰ ἐκ τοῦ κόσ-
μου τούτου ἦν ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ, οἱ ὑπηρέται
ἂν οἱ ἐμοὶ ἠγωνίζοντο ἵνα μὴ παραδοθῶ
τοῖς

τοῖς Ἰουδαίοις· νῦν δὲ ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ οὐκ
ἔστιν ἐντεῦθεν.
37 Εἶπεν οὖν αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Οὐκοῦν
βασιλεὺς εἶ σύ; Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Σὺ
λέγεις ὅτι βασιλεύς εἰμι ἐγώ· ἐγὼ εἰς τοῦτο
γεγέννημαι, καὶ εἰς τοῦτο ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσ-
μον, ἵνα μαρτυρήσω τῇ ἀληθείᾳ. Πᾶς ὁ
ὢν ἐκ τῆς ἀληθείας ἀκούει μου τῆς φωνῆς.
38 Λέγει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Τί ἐστιν ἀ-
λήθεια; Καὶ τοῦτο εἰπὼν, πάλιν ἐξῆλθε
πρὸς τοὺς Ἰουδαίους, καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἐγὼ
οὐδεμίαν αἰτίαν εὑρίσκω ἐν αὐτῷ.
39 Ἔστι δὲ συνήθεια ὑμῖν, ἵνα ἕνα ὑμῖν
ἀπολύσω ἐν τῷ πάσχα. βούλεσθε οὖν ὑμῖν
ἀπολύσω τὸν βασιλέα τῶν Ἰουδαίων;
40 Ἐκραύγασαν οὖν πάλιν πάντες, λέ-
γοντες. Μὴ τοῦτον, ἀλλὰ τὸν Βαραββᾶν· ἦν
δὲ ὁ Βαραββᾶς λῃστής.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΘ'. 19.

Τὸ δ' ἐννατόν γε πρὸς δέκα Χριστοῦ πάθος,
Πληγὰς, ἀκάνθας, καὶ βοὰς Θεοκτόνων.
Ἀνάκρισιν, σιγήν τε, καὶ ψῆφον μόρου
Ἐν δυοῖ λῃσταῖς· ὅττ' ἐπιγραφὴν ξύλου
Μέμψαν θ' Ἑβραῖοι· καὶ νομὴν τῶν εἱμά-
των.
Μητρὸς θεσίαν τε, δίψος, ὀξίδα,
Πλευρᾶς τε νύξιν, αἱματόῤῥυτόν θ' ὕδωρ,
Ταφήν τε τελέσασαν ἐν καινῷ τάφῳ.

1 ΤΟ'τε οὖν ἔλαβεν ὁ Πιλάτος τὸν Ἰη-
σοῦν, καὶ ἐμαστίγωσε.
2 Καὶ οἱ στρατιῶται πλέξαντες στέφανον ἐξ
ἀκαν-

ἀκανθῶν, ἐπέθηκαν αὐτοῦ τῇ κεφαλῇ, καὶ
ἱμάτιον πορφυροῦν περιέβαλον αὐτόν.
3 Καὶ ἔλεγον· Χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰου-
δαίων, καὶ ἐδίδουν αὐτῷ ῥαπίσματα.
4 Ἐξῆλθεν οὖν πάλιν ἔξω ὁ Πιλάτος,
καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἴδε, ἄγω ὑμῖν αὐτὸν
ἔξω, ἵνα γνῶτε ὅτι ἐν αὐτῷ οὐδεμίαν αἰτίαν
εὑρίσκω.
5 Ἐξῆλθεν οὖν ὁ Ἰησοῦς ἔξω, φορῶν τὸν
ἀκάνθινον στέφανον, καὶ τὸ πορφυροῦν ἱμάτιον.
Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἴδε ὁ ἄνθρωπος.
6 Ὅτε οὖν εἶδον αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ
ὑπηρέται, ἐκραύγασαν, λέγοντες· Σταύ-
ρωσον, σταύρωσον. Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος·
Λάβετε αὐτὸν ὑμεῖς, καὶ σταυρώσατε· ἐγὼ
γὰρ οὐχ εὑρίσκω ἐν αὐτῷ αἰτίαν.
7 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡ-
μεῖς νόμον ἔχομεν, καὶ κατὰ τὸν νόμον ἡμῶν
ὀφείλει ἀποθανεῖν, ὅτι ἑαυτὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ
ἐποίησεν.
8 Ὅτε οὖν ἤκουσεν ὁ Πιλάτος τοῦτον τὸν
λόγον, μᾶλλον ἐφοβήθη.
9 Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν,
καὶ λέγει τῷ Ἰησοῦ· Πόθεν εἶ σύ; Ὁ δὲ
Ἰησοῦς ἀπόκρισιν οὐκ ἔδωκεν αὐτῷ.
10 Λέγει οὖν αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Ἐμοὶ οὐ
λαλεῖς; οὐκ οἶδας ὅτι ἐξουσίαν ἔχω σταυρῶ-
σαί σε, καὶ ἐξουσίαν ἔχω ἀπολῦσαί σε;
11 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ εἶχες ἐξου-
σίαν οὐδεμίαν κατ' ἐμοῦ εἰ μὴ ἦν σοι δεδομέ-
νον ἄνωθεν· διὰ τοῦτο ὁ παραδιδούς με σοὶ
μείζονα ἁμαρτίαν ἔχει.
12 Ἐκ τούτου ἐζήτει ὁ Πιλάτος ἀπολῦσαι
αὐτόν· οἱ δὲ Ἰουδαῖοι ἔκραζον, λέγοντες·

Ἐὰν τοῦτον ἀπολύσῃς, οὐκ εἶ φίλος τοῦ Καί-
σαρος· πᾶς ὁ βασιλέα αὐτὸν ποιῶν, ἀντι-
λέγει τῷ Καίσαρι.
13 Ὁ οὖν Πιλάτος ἀκούσας τοῦτον τὸν λό-
γον, ἤγαγεν ἔξω τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἐκάθισεν
ἐπὶ τοῦ βήματος, εἰς τόπον λεγόμενον Λιθό-
στρωτον, Ἑβραϊστὶ δὲ Γαββαθᾶ.
14 Ἦν δὲ παρασκευὴ τοῦ πάσχα, ὥρα
δὲ ὡσεὶ ἕκτη· καὶ λέγει τοῖς Ἰουδαίοις· Ἴδε
ὁ βασιλεὺς ὑμῶν.
15 Οἱ δὲ ἐκραύγασαν· Ἆρον, ἆρον,
σταύρωσον αὐτόν· Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος·
Τὸν βασιλέα ὑμῶν σταυρώσω; Ἀπεκρίθη-
σαν οἱ ἀρχιερεῖς· Οὐκ ἔχομεν βασιλέα εἰ
μὴ Καίσαρα.
16 Τότε οὖν παρέδωκεν αὐτὸν αὐτοῖς ἵνα
σταυρωθῇ. παρέλαβον δὲ τὸν Ἰησοῦν καὶ ἀ-
πήγαγον.
17 Καὶ βαστάζων τὸν σταυρὸν αὐτοῦ ἐξῆλ-
θεν εἰς τὸν λεγόμενον Κρανίου τόπον, ὃς λέ-
γεται Ἑβραϊστὶ Γολγοθᾶ.
18 Ὅπου αὐτὸν ἐσταύρωσαν, καὶ μετ' αὐτοῦ
ἄλλους δύο, ἐντεῦθεν καὶ ἐντεῦθεν, μέσον
δὲ τὸν Ἰησοῦν.
19 Ἔγραψε δὲ καὶ τίτλον ὁ Πιλάτος, καὶ
ἔθηκεν ἐπὶ τοῦ σταυροῦ. ἦν δὲ γεγραμμένον·
ἸΗΣΟΥ͂Σ Ὁ ΝΑΖΩΡΑΙ͂ΟΣ Ὁ
ΒΑΣΙΛΕΥ͂Σ ΤΩ͂Ν ἸΟΥΔΑΙ͂ΩΝ.
20 Τοῦτον οὖν τὸν τίτλον πολλοὶ ἀνέγνωσαν
τῶν Ἰουδαίων· ὅτι ἐγγὺς ἦν τῆς πόλεως ὁ
τόπος ὅπου ἐσταυρώθη ὁ Ἰησοῦς· καὶ ἦν γεγραμ-
μένον Ἑβραϊστί, Ἑλληνιστί, Ῥωμαϊστί.
21 Ἔλεγον οὖν τῷ Πιλάτῳ οἱ ἀρχιερεῖς
τῶν Ἰουδαίων· Μὴ γράφε· Ὁ βασιλεὺς τῶν
Ἰου-

Ι'ουδαίων· ἀλλ' ὅτι ἐκεῖνος εἶπε· βασιλεὺς
εἰμι τῶν Ι'ουδαίων.
22 Α'πεκρίθη ὁ Πιλάτος· Ο' γέγραφα,
γέγραφα.
23 Οἱ οὖν στρατιῶται, ὅτε ἐσταύρωσαν τὸν
Ι'ησοῦν, ἔλαβον τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, (καὶ ἐ-
ποίησαν τέσσαρα μέρη, ἑκάστῳ στρατιώτῃ μέ-
ρος·) καὶ τὸν χιτῶνα· ἦν δὲ ὁ χιτὼν ἄῤῥα-
φος, ἐκ τῶν ἄνωθεν ὑφαντὸς δι' ὅλου.
24 Εἶπον οὖν πρὸς ἀλλήλους· Μὴ σχίσω-
μεν αὐτὸν, ἀλλὰ λάχωμεν περὶ αὐτοῦ, τί-
νος ἔσται. ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ ἡ λέγουσα·
Διεμερίσαντο τὰ ἱμάτιά μου ἑαυτοῖς, καὶ ἐπὶ
τὸν ἱματισμόν μου ἔβαλον κλῆρον· Οἱ μὲν
οὖν στρατιῶται ταῦτα ἐποίησαν.
25 Εἱστήκεισαν δὲ παρὰ τῷ σταυρῷ τοῦ Ι'ησοῦ
ἡ Μήτηρ αὐτοῦ, καὶ ἡ ἀδελφὴ τῆς Μητρὸς αὐ-
αὐτοῦ Μαρία ἡ τοῦ Κλωπᾶ, καὶ Μαρία ἡ
Μαγδαληνή.
26 Ι'ησοῦς οὖν ἰδὼν τὴν Μητέρα, καὶ τὸν
μαθητὴν παρεστῶτα ὃν ἠγάπα, λέγει τῇ μη-
τρὶ αὐτοῦ· Γύναι, ἰδοὺ ὁ Υἱός σου.
27 Εἶτα λέγει τῷ μαθητῇ· Ι'δοὺ ἡ μή-
τηρ σου· Καὶ ἀπ' ἐκείνης τῆς ὥρας ἔλαβεν
αὐτὴν ὁ μαθητὴς εἰς τὰ ἴδια.
28 Μετὰ τοῦτο εἰδὼς ὁ Ι'ησοῦς ὅτι πάντα
ἤδη τετέλεσται, ἵνα τελειωθῇ ἡ γραφὴ, λέ-
γει· Διψῶ.
29 Σκεῦος οὖν ἔκειτο ὄξους μεστόν· οἱ δὲ,
πλήσαντες σπόγγον ὄξους, καὶ ὑσσώπῳ περι-
θέντες, προσήνεγκαν αὐτοῦ τῷ στόματι.
30 Ο'τε οὖν ἔλαβε τὸ ὄξος ὁ Ι'ησοῦς, εἶ-
πε· Τετέλεσται. καὶ κλίνας τὴν κεφαλὴν,
παρέδωκε τὸ Πνεῦμα.

31 Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι, ἵνα μὴ μείνῃ ἐπὶ τοῦ σαυροῦ τὰ σώματα ἐν τῷ Σαββάτῳ, ἐπεὶ παρασκευὴ ἦν, (ἦν γὰρ μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνη τοῦ Σαββάτου,) ἠρώτησαν τὸν Πιλάτον ἵνα κατεαγῶσιν αὐτῶν τὰ σκέλη, καὶ ἀρθῶσιν.

32 Ἦλθον οὖν οἱ στρατιῶται, καὶ τοῦ μὲν πρώτου κατέαξαν τὰ σκέλη, καὶ τοῦ ἄλλου τοῦ συσαυρωθέντος αὐτῷ.

33 Ἐπὶ δὲ τὸν Ἰησοῦν ἐλθόντες, ὡς εἶδον αὐτὸν ἤδη τεθνηκότα, οὐ κατέαξαν αὐτοῦ τὰ σκέλη·

34 Ἀλλ' εἷς τῶν στρατιωτῶν λόγχῃ αὐτοῦ τὴν πλευρὰν ἔνυξε, καὶ εὐθὺς ἐξῆλθεν αἷμα καὶ ὕδωρ.

35 Καὶ ὁ ἑωρακὼς μεμαρτύρηκε, καὶ ἀληθινὴ αὐτοῦ ἐστιν ἡ μαρτυρία· κἀκεῖνος οἶδεν ὅτι ἀληθῆ λέγει, ἵνα ὑμεῖς πιστεύσητε.

36 Ἐγένετο γὰρ ταῦτα ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ· Ὀστοῦν οὐ συντριβήσεται αὐτοῦ.

37 Καὶ πάλιν ἑτέρα γραφὴ λέγει· Ὄψονται εἰς ὃν ἐξεκέντησαν.

38 Μετὰ δὲ ταῦτα ἠρώτησε τὸν Πιλάτον ὁ Ἰωσὴφ ὁ ἀπὸ Ἀριμαθαίας, (ὢν μαθητὴς τοῦ Ἰησοῦ, κεκρυμμένος δὲ διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων,) ἵνα ἄρῃ τὸ σῶμα Ἰησοῦ· καὶ ἐπέτρεψεν ὁ Πιλάτος. ἦλθεν οὖν καὶ ἦρε τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

39 Ἦλθε δὲ καὶ Νικόδημος (ὁ ἐλθὼν πρὸς τὸν Ἰησοῦν νυκτὸς τὸ πρῶτον,) φέρων μίγμα σμύρνης καὶ ἀλόης ὡσεὶ λίτρας ἑκατόν.

40 Ἔλαβον οὖν τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἔδησαν αὐτὸ ὀθονίοις μετὰ τῶν ἀρωμάτων, καθὼς ἔθος ἐστὶ τοῖς Ἰουδαίοις ἐνταφιάζειν.

41 Ἦν δὲ ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ἐσαυρώθη,

κῆ-

κῆπος, καὶ ἐν τῷ κήπῳ μνημεῖον καινὸν, ἐν
ᾧ οὐδέπω οὐδεὶς ἐτέθη.
42 Ἐκεῖ οὖν διὰ τὴν Παρασκευὴν τῶν
Ἰουδαίων, ὅτι ἐγγὺς ἦν τὸ μνημεῖον, ἔθη-
καν τὸν Ἰησοῦν.

ΚΕΦΑ᾽ΛΑΙΟΝ, Κ΄. 20.

Εἰκοσὸν ἀγγέλλουσαν ἄθρει πρὸς τάφον,
Ἰωάννην, Πέτρον τε δεδραμηκότας.
Ὀφθέντα κηπουρόν τε Χριστὸν Μαρίῃ,
Καὶ τοῖς Μαθηταῖς, τῶν θυρῶν κεκλεισ-
μένων.
Αὖθις δ᾽ ἀπειθεῖ εἰς ἀφὴν τῷ Διδύμῳ.

1 ΤΗ͂, δὲ μιᾷ τῶν Σαββάτων Μαρία
ἡ Μαγδαληνὴ ἔρχεται πρωῒ σκο-
τίας ἔτι οὔσης εἰς τὸ μνημεῖον· καὶ βλέπει τὸν
λίθον ἠρμένον ἐκ τοῦ μνημείου.
2 Τρέχει οὖν καὶ ἔρχεται πρὸς Σίμωνα Πέ-
τρον, καὶ πρὸς τὸν ἄλλον μαθητὴν ὃν ἐφίλει ὁ
Ἰησοῦς· καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἦραν τὸν Κύριον ἐκ
τοῦ μνημείου, καὶ οὐκ οἴδαμεν ποῦ ἔθηκαν αὐτόν.
3 Ἐξῆλθεν οὖν ὁ Πέτρος καὶ ὁ ἄλλος μα-
θητὴς, καὶ ἤρχοντο εἰς τὸ μνημεῖον.
4 Ἔτρεχον δὲ οἱ δύο ὁμοῦ, καὶ ὁ ἄλλος
μαθητὴς προέδραμε τάχιον τοῦ Πέτρου, καὶ
ἦλθε πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον.
5 Καὶ παρακύψας βλέπει κείμενα τὰ
ὀθόνια· οὐ μέντοι εἰσῆλθεν.
6 Ἔρχεται οὖν Σίμων Πέτρος ἀκολουθῶν
αὐτῷ, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ μνημεῖον, καὶ θεω-
ρεῖ τὰ ὀθόνια κείμενα,
7 Καὶ τὸ σουδάριον ὃ ἦν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς

αὐτȣ̃, οὐ μετὰ τῶν ὀθονίων κείμενον, ἀλλὰ
χωρὶς ἐντετυλιγμένον εἰς ἕνα τόπον.
8 Τότε οὖν εἰσῆλθε ϗ ὁ ἄλλος μαθητὴς
ὁ ἐλθὼν πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον, καὶ εἶδε,
ϗ ἐπίςευσεν.
9 Οὐδέπω γὰρ ᾔδεισαν τὴν γραφὴν, ὅτι
δεῖ αὐτὸν ἐκ νεκρῶν ἀναςῆναι.
10 Α'πῆλθον οὖν πάλιν πρὸς ἑαυτȣ̀ς οἱ
μαθηταί.
11 Μαρία δὲ εἱςήκει πρὸς τὸ μνημεῖον
κλαίȣσα ἔξω· ὡς οὖν ἔκλαιε, παρέκυψεν
εἰς τὸ μνημεῖον·
12 Καὶ θεωρεῖ δύο ἀγγέλȣς ἐν λευκοῖς
καθεζομένȣς, ἕνα πρὸς τῇ κεφαλῇ, ϗ ἕνα
πρὸς τοῖς ποσὶν, ὅπȣ ἔκειτο τὸ σῶμα τȣ̃ Ι'ησȣ̃.
13 Καὶ λέγȣσιν αὐτῇ ἐκεῖνοι· Γύναι, τί
κλαίεις; Λέγει αὐτοῖς· Ο'τι ἦραν τὸν Κύ-
ριόν μȣ, ϗ ȣ̓κ οἶδα πȣ̃ ἔθηκαν αὐτόν.
14 Καὶ ταῦτα εἰποῦσα, ἐςράφη εἰς τὰ
ὀπίσω, ϗ θεωρεῖ τὸν Ι'ησȣ̃ν ἑςῶτα· καὶ ȣ̓κ
ᾔδει ὅτι ὁ Ι'ησȣ̃ς ἐςι.
15 Λέγει αὐτῇ ὁ Ι'ησοῦς· Γύναι, τί
κλαίεις; τίνα ζητεῖς; Ε'κείνη, δοκȣ̃σα ὅτι
ὁ κηπȣρός ἐςι, λέγει αὐτῷ· Κύριε, εἰ σὺ
ἐβάςασας αὐτὸν, εἰπέ μοι ποῦ αὐτὸν ἔθη-
κας· κἀγὼ αὐτὸν ἀρῶ.
16 Λέγει αὐτῇ ὁ Ι'ησȣ̃ς· Μαρία· Σ'ςρα-
φεῖσα ἐκείνη λέγει αὐτῷ· Ρ'αββȣνὶ, ὃ λέ-
γεται, διδάσκαλε.
17 Λέγει αὐτῇ ὁ Ι'ησȣ̃ς· Μή μȣ ἅπτȣ·
ȣ̓́πω γὰρ ἀναβέβηκα πρὸς τὸν Πατέρα μȣ·
πορεύȣ δὲ πρὸς τȣ̀ς ἀδελφȣ́ς μȣ, καὶ εἰπὲ
αὐτοῖς· Α'ναβαίνω πρὸς τὸν Πατέρα μȣ ϗ
Πατέρα ὑμῶν, ϗ Θεόν μȣ ϗ Θεὸν ὑμῶν.
18 Ε'ρ-

18 Ἔρχεται Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ ἀπαγγέλλουσα τοῖς μαθηταῖς ὅτι ἑώρακε τὸν Κύριον, καὶ ταῦτα εἶπεν αὐτῇ.

19 Οὔσης οὖν ὀψίας τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τῇ μιᾷ τῶν Σαββάτων, καὶ τῶν θυρῶν κεκλεισμένων, ὅπου ἦσαν οἱ μαθηταὶ συνηγμένοι διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων, ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον, καὶ λέγει αὐτοῖς· Εἰρήνη ὑμῖν.

20 Καὶ τοῦτο εἰπὼν, ἔδειξεν αὐτοῖς τὰς χεῖρας καὶ τὴν πλευρὰν αὐτοῦ. Ἐχάρησαν οὖν οἱ μαθηταὶ ἰδόντες τὸν Κύριον.

21 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς πάλιν· Εἰρήνη ὑμῖν· καθὼς ἀπέσταλκέ με ὁ Πατὴρ, κἀγὼ πέμπω ὑμᾶς.

22 Καὶ τοῦτο εἰπὼν, ἐνεφύσησε, καὶ λέγει αὐτοῖς· Λάβετε Πνεῦμα ἅγιον.

23 Ἄν τινων ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας, ἀφίενται αὐτοῖς· ἄν τινων κρατῆτε, κεκράτηνται.

24 Θωμᾶς δὲ, εἷς ἐκ τῶν δώδεκα, ὁ λεγόμενος Δίδυμος, οὐκ ἦν μετ' αὐτῶν ὅτε ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς.

25 Ἔλεγον οὖν αὐτῷ οἱ ἄλλοι μαθηταί· Ἑωράκαμεν τὸν Κύριον. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἐὰν μὴ ἴδω ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ τὸν τύπον τῶν ἥλων, καὶ βάλω τὸν δάκτυλόν μου εἰς τὸν τύπον τῶν ἥλων, καὶ βάλω τὴν χεῖρα μου εἰς τὴν πλευρὰν αὐτοῦ, οὐ μὴ πιστεύσω.

26 Καὶ μεθ' ἡμέρας ὀκτὼ πάλιν ἦσαν ἔσω οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ Θωμᾶς μετ' αὐτῶν· ἔρχεται ὁ Ἰησοῦς τῶν θυρῶν κεκλεισμένων, καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον, καὶ εἶπεν· Εἰρήνη ὑμῖν.

27 Εἶτα λέγει τῷ Θωμᾷ· Φέρε τὸν δάκτυλόν σου ὧδε, καὶ ἴδε τὰς χεῖράς μου· καὶ φέρε



τὴν χεῖρά σου, καὶ βάλε εἰς τὴν πλευράν μου·
καὶ μὴ γίνου ἄπιστος, ἀλλὰ πιστός.
28 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ Θωμᾶς, καὶ εἶπεν
αὐτῷ· Ὁ Κύριός μου καὶ ὁ Θεός μου.
29 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι ἑώρακάς
με, Θωμᾶ, πεπίστευκας· μακάριοι οἱ μὴ
ἰδόντες, καὶ πιστεύσαντες.
30 Πολλὰ μὲν οὖν καὶ ἄλλα σημεῖα ἐποίη-
σεν ὁ Ἰησοῦς ἐνώπιον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, ἃ
οὐκ ἔστι γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ.
31 Ταῦτα δὲ γέγραπται, ἵνα πιστεύση-
τε ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τοῦ
Θεοῦ, καὶ ἵνα πιστεύοντες ζωὴν ἔχητε ἐν τῷ
ὀνόματι αὐτοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΑ'. 21.

Ἐν ἐσχάτῳ δὲ τὴν ξείνην ὀπτασίαν
Μάθοις, ἅτ' ἄγρα τῶν μεγίστων ἰχθύων·
Δήλωσε Χριστόν· καὶ Πέτρον δ' εἰς Ποιμένα
Ἔστησε, καὶ σταύρωσιν ἐν γήρᾳ θέτο.
Πότμον τ' ἄδηλον εἶπε τῷ φιλουμένῳ.

1 ΜΕτὰ ταῦτα ἐφανέρωσεν ἑαυτὸν
πάλιν ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς
ἐπὶ τῆς θαλάσσης τῆς Τιβεριάδος, ἐφανέ-
ρωσε δὲ οὕτως·
2 Ἦσαν ὁμοῦ Σίμων Πέτρος, καὶ Θωμᾶς
ὁ λεγόμενος Δίδυμος, καὶ Ναθαναὴλ ὁ ἀ-
πὸ Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας, καὶ οἱ τοῦ Ζεβε-
δαίου, καὶ ἄλλοι ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο.
3 Λέγει αὐτοῖς Σίμων Πέτρος· Ὑπά-
γω ἁλιεύειν. Λέγουσιν αὐτῷ· Ἐρχόμεθα
καὶ ἡμεῖς σὺν σοί. Ἐξῆλθον, καὶ ἀνέβησαν

εἰς

εἰς τὸ πλοῖον εὐθὺς, καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ νυκτὶ
ἐπίασαν οὐδέν.
4 Πρωΐας δὲ ἤδη γενομένης ἔστη ὁ Ἰησοῦς
εἰς τὸν αἰγιαλόν· οὐ μέντοι ᾔδεισαν οἱ μαθη-
ταὶ ὅτι Ἰησοῦς ἐστι.
5 Λέγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Παιδία,
μή τι προσφάγιον ἔχετε; Ἀπεκρίθησαν
αὐτῷ· Οὔ.
6 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Βάλετε εἰς τὰ δε-
ξιὰ μέρη τοῦ πλοίου τὸ δίκτυον, καὶ εὑρήσετε.
Ἔβαλον οὖν, καὶ οὐκ ἔτι αὐτὸ ἑλκῦσαι ἴσχυ-
σαν ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἰχθύων.
7 Λέγει οὖν ὁ μαθητὴς ἐκεῖνος, ὃν ἠγάπα
ὁ Ἰησοῦς· τῷ Πέτρῳ· Ὁ Κύριός ἐστι. Σί-
μων οὖν Πέτρος, ἀκούσας ὅτι ὁ Κύριός ἐστι,
τὸν ἐπενδύτην διεζώσατο, (ἦν γὰρ γυμνὸς,)
καὶ ἔβαλεν ἑαυτὸν εἰς τὴν θάλασσαν.
8 Οἱ δὲ ἄλλοι μαθηταὶ τῷ πλοιαρίῳ ἦλ-
θον, (οὐ γὰρ ἦσαν μακρὰν ἀπὸ τῆς γῆς,
ἀλλ' ὡς ἀπὸ πηχῶν διακοσίων,) σύροντες
τὸ δίκτυον τῶν ἰχθύων.
9 Ὡς οὖν ἀπέβησαν εἰς τὴν γῆν, βλέ-
πουσιν ἀνθρακιὰν κειμένην, καὶ ὀψάριον ἐπι-
κείμενον, καὶ ἄρτον.
10 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐνέγκατε ἀ-
πὸ τῶν ὀψαρίων ὧν ἐπιάσατε νῦν.
11 Ἀνέβη Σίμων Πέτρος, καὶ εἵλκυσε τὸ
δίκτυον ἐπὶ τῆς γῆς, μεστὸν ἰχθύων μεγά-
λων ἑκατὸν πεντηκοντατριῶν· καὶ τοσούτων ὄντων
οὐκ ἐσχίσθη τὸ δίκτυον.
12 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Δεῦτε, ἀρι-
στήσατε. Οὐδεὶς δὲ ἐτόλμα τῶν μαθητῶν
ἐξετάσαι αὐτόν, Σὺ τίς εἶ; εἰδότες ὅτι ὁ
Κύριός ἐστιν.

13 Ε'ρχεται οὖν ὁ Ι'ησοῦς, καὶ λαμβάνει
τὸν ἄρτον, καὶ δίδωσιν αὐτοῖς, καὶ τὸ ὀψά-
ριον ὁμοίως.

14 Τοῦτο ἤδη τρίτον ἐφανερώθη ὁ Ι'ησοῦς
τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἐγερθεὶς ἐκ νεκρῶν.

15 Ο'τε οὖν ἠρίστησαν, λέγει τῷ Σίμω-
νι Πέτρῳ ὁ Ι'ησοῦς· Σίμων Ι'ωνᾶ, ἀγαπᾷς
με πλεῖον τούτων; Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύ-
ριε· σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε· Λέγει αὐτῷ·
Βόσκε τὰ ἀρνία μου.

16 Λέγει αὐτῷ πάλιν δεύτερον· Σίμων
Ι'ωνᾶ, ἀγαπᾷς με; Λέγει αὐτῷ· Ναὶ
Κύριε· σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε· Λέγει αὐτῷ·
Ποίμαινε τὰ πρόβατά μου.

17 Λέγει αὐτῷ τὸ τρίτον· Σίμων Ι'ω-
νᾶ, φιλεῖς με; Ε'λυπήθη ὁ Πέτρος ὅτι εἶ-
πεν αὐτῷ τὸ τρίτον, φιλεῖς με; καὶ εἶπεν αὐ-
τῷ· Κύριε, σὺ πάντα οἶδας· σὺ γινώσκεις
ὅτι φιλῶ σε· Λέγει αὐτῷ ὁ Ι'ησοῦς· Βόσκε
τὰ πρόβατά μου.

18 Α'μὴν ἀμὴν λέγω σοι, ὅτε ἦς νεώτε-
ρος ἐζώννυες σεαυτὸν, καὶ περιεπάτεις ὅπου
ἤθελες· ὅταν δὲ γηράσῃς, ἐκτενεῖς τὰς χεῖ-
ράς σου, καὶ ἄλλος σε ζώσει, καὶ οἴσει ὅπου οὐ
θέλεις.

19 Τοῦτο δὲ εἶπε, σημαίνων ποίῳ θανά-
τῳ δοξάσει τὸν Θεόν· Καὶ τοῦτο εἰπὼν, λέ-
γει αὐτῷ· Α'κολούθει μοι.

20 Ε'πιστραφεὶς δὲ ὁ Πέτρος βλέπει τὸν μα-
θητὴν ὃν ἠγάπα ὁ Ι'ησοῦς, ἀκολουθοῦντα, ὃς
καὶ ἀνέπεσεν ἐν τῷ δείπνῳ ἐπὶ τὸ στῆθος αὐτοῦ,
καὶ εἶπε· Κύριε, τίς ἐστιν ὁ παραδιδούς σε;

21 Τοῦτον ἰδὼν ὁ Πέτρος λέγει τῷ Ι'η-
σοῦ· Κύριε οὗτος δὲ τί;

22 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐὰν αὐτὸν
θέλω μένειν ἕως ἔρχομαι, τί πρὸς σέ; σὺ
ἀκολούθει μοι.

23 Ἐξῆλθεν οὖν ὁ λόγος οὗτος εἰς τοὺς ἀ-
δελφοὺς, ὅτι ὁ μαθητὴς ἐκεῖνος οὐκ ἀποθνή-
σκει· καὶ οὐκ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς ὅτι οὐκ ἀ-
ποθνήσκει· ἀλλ' Ἐὰν αὐτὸν θέλω μένειν
ἕως ἔρχομαι, τί πρὸς σέ;

24 Οὗτός ἐστιν ὁ μαθητὴς ὁ μαρτυρῶν
περὶ τούτων, καὶ γράψας ταῦτα· καὶ οἴδαμεν
ὅτι ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία αὐτοῦ.

25 Ἔστι δὲ καὶ ἄλλα πολλὰ ὅσα ἐποίησεν
ὁ Ἰησοῦς, ἅτινα ἐὰν γράφηται καθ' ἕν, οὐδὲ
αὐτὸν οἶμαι τὸν κόσμον χωρῆσαι τὰ γραφό-
μενα βιβλία· Ἀμήν.

ΠΡΑ΄ΞΕΙΣ
ΤΩΝ Α΄ΓΙΩΝ
Α΄ΠΟΣΤΟ΄ΛΩΝ.

ΚΕΦΑ΄ΛΑΙΟΝ, Α΄. 1.

1 Τὸν μὲν πρῶτον λόγον ἐποιη-
σάμην περὶ πάντων, ὦ Θεό-
φιλε, ὧν ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς
ποιεῖν τε καὶ διδάσκειν,
2 Ἄχρι ἧς ἡμέρας ἐντειλάμενος τοῖς ἀ-
ποστόλοις διὰ Πνεύματος ἁγίου, οὓς ἐξελέ-
ξατο, ἀνελήφθη.
3 Οἷς καὶ παρέστησεν ἑαυτὸν ζῶντα μετὰ τὸ
παθεῖν αὐτὸν, ἐν πολλοῖς τεκμηρίοις, δι᾽
ἡμερῶν τεσσαράκοντα ὀπτανόμενος αὐτοῖς, καὶ
λέγων τὰ περὶ τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ.
4 Καὶ συναλιζόμενος παρήγγειλεν αὐ-
τοῖς ἀπὸ Ἱεροσολύμων μὴ χωρίζεσθαι, ἀλ-
λὰ περιμένειν τὴν ἐπαγγελίαν τοῦ Πατρὸς,
ἣν ἠκούσατέ μου.
5 Ὅτι Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι,
ὑμεῖς δὲ βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι ἁγίῳ
οὐ μετὰ πολλὰς ταύτας ἡμέρας.
6 Οἱ μὲν οὖν συνελθόντες ἐπηρώτων αὐ-
τὸν, λέγοντες· Κύριε, εἰ ἐν τῷ χρόνῳ τούτῳ
ἀποκαθιστάνεις τὴν βασιλείαν τῷ Ἰσραήλ;

7 Εἶ-

7 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς· Οὐχ ὑμῶν ἐστὶ γνῶναι χρόνους ἢ καιροὺς οὓς ὁ Πατὴρ ἔθετο ἐν τῇ ἰδίᾳ ἐξουσίᾳ.

8 Ἀλλὰ λήψεσθε δύναμιν ἐπελθόντος τοῦ ἁγίου Πνεύματος ἐφ᾽ ὑμᾶς· καὶ ἔσεσθέ μοι μάρτυρες ἔν τε Ἱερουσαλὴμ καὶ ἐν πάσῃ τῇ Ἰουδαίᾳ καὶ Σαμαρείᾳ, καὶ ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς.

9 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, βλεπόντων αὐτῶν ἐπήρθη, καὶ νεφέλη ὑπέλαβεν αὐτὸν ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν.

10 Καὶ ὡς ἀτενίζοντες ἦσαν εἰς τὸν οὐρανὸν, πορευομένου αὐτοῦ, καὶ ἰδοὺ, ἄνδρες δύο παρειστήκεισαν αὐτοῖς ἐν ἐσθῆτι λευκῇ.

11 Οἳ καὶ εἶπον· Ἄνδρες Γαλιλαῖοι, τί ἑστήκατε ἐμβλέποντες εἰς τὸν οὐρανόν; οὗτος ὁ Ἰησοῦς ὁ ἀναληφθεὶς ἀφ᾽ ὑμῶν εἰς τὸν οὐρανὸν, οὕτως ἐλεύσεται ὃν τρόπον ἐθεάσασθε αὐτὸν πορευόμενον εἰς τὸν οὐρανόν.

12 Τότε ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ ὄρους τοῦ καλουμένου Ἐλαιῶνος, ὅ ἐστιν ἐγγὺς Ἱερουσαλὴμ, Σαββάτου ἔχον ὁδόν.

13 Καὶ ὅτε εἰσῆλθον, ἀνέβησαν εἰς τὸ ὑπερῷον, οὗ ἦσαν καταμένοντες, ὅ, τε Πέτρος καὶ Ἰάκωβος, καὶ Ἰωάννης, καὶ Ἀνδρέας, Φίλιππος καὶ Θωμᾶς, Βαρθολομαῖος καὶ Ματθαῖος, Ἰάκωβος Ἀλφαίου, καὶ Σίμων ὁ Ζηλωτὴς, καὶ Ἰούδας Ἰακώβου.

14 Οὗτοι πάντες ἦσαν προσκαρτεροῦντες ὁμοθυμαδὸν τῇ προσευχῇ καὶ τῇ δεήσει, σὺν γυναιξὶ, καὶ Μαρίᾳ τῇ μητρὶ τοῦ Ἰησοῦ, καὶ σὺν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ.

15 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις ἀναστὰς Πέτρος ἐν μέσῳ τῶν μαθητῶν, εἶπεν· (ἦν τε ὄχλος ὀνομάτων ἐπὶ τὸ αὐτὸ ὡς ἑκατὸν εἴκοσιν.)

16 Ἄν-

16 Ἄνδρες ἀδελφοὶ, ἔδει πληρωθῆναι τὴν
γραφὴν ταύτην ἣν προεῖπε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅ-
γιον διὰ στόματος Δαβὶδ, περὶ Ἰούδα τοῦ
γενομένου ὁδηγοῦ τοῖς συλλαβοῦσι τὸν Ἰησοῦν.
17 Ὅτι κατηριθμημένος ἦν σὺν ἡμῖν,
καὶ ἔλαχε τὸν κλῆρον τῆς διακονίας ταύτης.
18 Οὗτος μὲν οὖν ἐκτήσατο χωρίον ἐκ τοῦ
μισθοῦ τῆς ἀδικίας· καὶ πρηνὴς γενόμενος ἐ-
λάκησε μέσος, καὶ ἐξεχύθη πάντα τὰ σπλάγ-
χνα αὐτοῦ.
19 Καὶ γνωστὸν ἐγένετο πᾶσι τοῖς κατοικοῦ-
σιν Ἱερουσαλὴμ, ὥστε κληθῆναι τὸ χωρίον
ἐκεῖνο τῇ ἰδίᾳ διαλέκτῳ αὐτῶν, Ἀκελδα-
μὰ, τουτέστι, χωρίον αἵματος.
20 Γέγραπται γὰρ ἐν βίβλῳ ψαλμῶν·
Γενηθήτω ἡ ἔπαυλις αὐτοῦ ἔρημος, καὶ μὴ
ἔστω ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ· Καί· Τὴν ἐπισκο-
πὴν αὐτοῦ λάβοι ἕτερος.
21 Δεῖ οὖν τῶν συνελθόντων ἡμῖν ἀνδρῶν
ἐν παντὶ χρόνῳ, ἐν ᾧ εἰσῆλθε καὶ ἐξῆλθεν
ἐφ' ἡμᾶς ὁ Κύριος Ἰησοῦς,
22 Ἀρξάμενος ἀπὸ τοῦ Βαπτίσματος Ἰω-
άννου ἕως τῆς ἡμέρας ἧς ἀνελήφθη ἀφ' ἡμῶν,
μάρτυρα τῆς ἀναστάσεως αὐτοῦ γενέσθαι σὺν
ἡμῖν ἕνα τούτων.
23 Καὶ ἔστησαν δύο, Ἰωσὴφ τὸν καλούμε-
νον Βαρσαβᾶν, ὃς ἐπεκλήθη Ἰοῦστος, καὶ
Ματθίαν.
24 Καὶ προσευξάμενοι εἶπον· Σὺ Κύριε
καρδιογνῶστα πάντων, ἀνάδειξον ἐκ τούτων τῶν
δύο ἕνα ὃν ἐξελέξω,
25 Λαβεῖν τὸν κλῆρον τῆς διακονίας ταύ-
της καὶ ἀποστολῆς, ἐξ ἧς παρέβη Ἰούδας,
πορευθῆναι εἰς τὸν τόπον τὸν ἴδιον.

26 Καὶ



26 Καὶ ἔδωκαν κλήρους αὐτῶν, ϗ ἔπεσεν
ὁ κλῆρος ἐπὶ Ματθίαν, ϗ συγκατεψηφί-
σθη μετὰ τῶν ἕνδεκα ἀποστόλων.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΚΑὶ ἐν τῷ συμπληροῦσθαι τὴν ἡ-
μέραν τῆς Πεντηκοστῆς, ἦσαν ἅ-
παντες ὁμοθυμαδὸν ἐπὶ τὸ αὐτό.
2 Καὶ ἐγένετο ἄφνω ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἦχος ὥ-
σπερ φερομένης πνοῆς βιαίας, ϗ ἐπλήρωσεν
ὅλον τὸν οἶκον οὗ ἦσαν καθήμενοι.
3 Καὶ ὤφθησαν αὐτοῖς διαμεριζόμεναι
γλῶσσαι ὡσεὶ πυρός, ἐκάθισέ τε ἐφ' ἕνα ἕ-
καστον αὐτῶν.
4 Καὶ ἐπλήσθησαν ἅπαντες Πνεύματος
ἁγίου, ϗ ἤρξαντο λαλεῖν ἑτέραις γλώσσαις,
καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου αὐτοῖς ἀποφθέγ-
γεσθαι.
5 Ἦσαν δὲ ἐν Ἱερουσαλὴμ κατοικοῦντες
Ἰουδαῖοι, ἄνδρες εὐλαβεῖς, ἀπὸ παντὸς ἔ-
θνους τῶν ὑπὸ τὸν οὐρανόν.
6 Γενομένης δὲ τῆς φωνῆς ταύτης, συνῆλ-
θε τὸ πλῆθος, ϗ συνεχύθη, ὅτι ἤκουον εἷς
ἕκαστος τῇ ἰδίᾳ διαλέκτῳ λαλούντων αὐτῶν.
7 Ἐξίσταντο δὲ πάντες καὶ ἐθαύμαζον,
λέγοντες πρὸς ἀλλήλους· Οὐκ ἰδοὺ πάντες
οὗτοί εἰσιν οἱ λαλοῦντες Γαλιλαῖοι;
8 Καὶ πῶς ἡμεῖς ἀκούομεν ἕκαστος τῇ ἰδίᾳ
διαλέκτῳ ὑμῶν ἐν ᾗ ἐγεννήθημεν;
9 Πάρθοι ϗ Μῆδοι ϗ Ἐλαμῖται, ϗ οἱ
κατοικοῦντες τὴν Μεσοποταμίαν, Ἰουδαίαν τε
ϗ Καππαδοκίαν, Πόντον ϗ τὴν Ἀσίαν,
10 Φρυγίαν τε καὶ Παμφυλίαν, Αἴγυ-

πτου,

πτον, καὶ τὰ μέρη τῆς Λιβύης τῆς κατὰ Κυ-
ρήνην, καὶ οἱ ἐπιδημοῦντες Ῥωμαῖοι, Ἰουδαῖοί
τε καὶ προσήλυτοι,
11 Κρῆτες καὶ Ἄραβες, ἀκούομεν λαλούν-
των αὐτῶν ταῖς ἡμετέραις γλώσσαις τὰ με-
γαλεῖα τοῦ Θεοῦ.
12 Ἐξίσταντο δὲ πάντες καὶ διηπόρουν,
ἄλλος πρὸς ἄλλον λέγοντες· Τί ἂν θέλοι
τοῦτο εἶναι;
13 Ἕτεροι δὲ χλευάζοντες ἔλεγον· Ὅτι
γλεύκους μεμεστωμένοι εἰσί.
14 Σταθεὶς δὲ Πέτρος σὺν τοῖς ἕνδεκα,
ἐπῆρε τὴν φωνὴν αὐτοῦ, καὶ ἀπεφθέγξατο αὐ-
τοῖς· Ἄνδρες Ἰουδαῖοι, καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἱε-
ρουσαλὴμ ἅπαντες, τοῦτο ὑμῖν γνωστὸν ἔστω,
καὶ ἐνωτίσασθε τὰ ῥήματά μου.
15 Οὐ γάρ, ὡς ὑμεῖς ὑπολαμβάνετε, οὗ-
τοι μεθύουσιν· ἔστι γὰρ ὥρα τρίτη τῆς ἡμέρας.
16 Ἀλλὰ τοῦτό ἐστι τὸ εἰρημένον διὰ τοῦ
Προφήτου Ἰωήλ.
17 Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἐσχάταις ἡμέραις,
(λέγει ὁ Θεός,) ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ Πνεύματός
μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα· καὶ προφητεύσουσιν οἱ
Υἱοὶ ὑμῶν καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ νεα-
νίσκοι ὑμῶν ὁράσεις ὄψονται, καὶ οἱ πρεσβύ-
τεροι ὑμῶν ἐνύπνια ἐνυπνιασθήσονται.
18 Καί γε ἐπὶ τοὺς δούλους μου καὶ ἐπὶ τὰς
δούλας μου ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐκχεῶ ἀ-
πὸ τοῦ Πνεύματός μου, καὶ προφητεύσουσι.
19 Καὶ δώσω τέρατα ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω,
καὶ σημεῖα ἐπὶ τῆς γῆς κάτω, αἷμα καὶ πῦρ
καὶ ἀτμίδα καπνοῦ.
20 Ὁ ἥλιος μεταστραφήσεται εἰς σκότος,
καὶ ἡ σελήνη εἰς αἷμα, πρὶν ἢ ἐλθεῖν τὴν
ἡμέ-

ἡμέραν Κυρίου τὴν μεγάλην καὶ ἐπιφανῆ.
21 Καὶ ἔσται, πᾶς ὃς ἂν ἐπικαλέσηται
τὸ ὄνομα Κυρίου, σωθήσεται.
22 Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, ἀκούσατε τοὺς
λόγους τούτους· Ἰησοῦν τὸν Ναζωραῖον, ἄν-
δρα ἀπὸ τοῦ Θεοῦ ἀποδεδειγμένον εἰς ὑμᾶς
δυνάμεσι καὶ τέρασι καὶ σημείοις οἷς ἐποίησε
δι᾽ αὐτοῦ ὁ Θεὸς ἐν μέσῳ ὑμῶν, καθὼς καὶ
αὐτοὶ οἴδατε,
23 Τοῦτον τῇ ὡρισμένῃ βουλῇ καὶ προγνώ-
σει τοῦ Θεοῦ ἔκδοτον λαβόντες, διὰ χειρῶν
ἀνόμων προσπήξαντες ἀνείλετε.
24 Ὃν ὁ Θεὸς ἀνέστησε, λύσας τὰς ὠδῖ-
νας τοῦ θανάτου, καθότι οὐκ ἦν δυνατὸν κρα-
τεῖσθαι αὐτὸν ὑπ᾽ αὐτοῦ·
25 Δαβὶδ γὰρ λέγει εἰς αὐτόν· Προω-
ρώμην τὸν Κύριον ἐνώπιόν μου διὰ παντὸς,
ὅτι ἐκ δεξιῶν μου ἐστὶν, ἵνα μὴ σαλευθῶ.
26 Διὰ τοῦτο εὐφράνθη ἡ καρδία μου, καὶ
ἠγαλλιάσατο ἡ γλῶσσά μου· ἔτι δὲ καὶ ἡ
σάρξ μου κατασκηνώσει ἐπ᾽ ἐλπίδι.
27 Ὅτι οὐκ ἐγκαταλείψεις τὴν ψυχήν
μου εἰς ᾅδου, οὐδὲ δώσεις τὸν ὅσιόν σου ἰδεῖν
διαφθοράν.
28 Ἐγνώρισάς μοι ὁδοὺς ζωῆς· πληρώσεις
με εὐφροσύνης μετὰ τοῦ προσώπου σου.
29 Ἄνδρες ἀδελφοὶ, ἐξὸν εἰπεῖν μετὰ παρ-
ρησίας πρὸς ὑμᾶς περὶ τοῦ Πατριάρχου Δα-
βὶδ, ὅτι καὶ ἐτελεύτησε καὶ ἐτάφη, καὶ τὸ μνῆμα
αὐτοῦ ἐστιν ἐν ἡμῖν ἄχρι τῆς ἡμέρας ταύτης.
30 Προφήτης οὖν ὑπάρχων, καὶ εἰδὼς ὅτι
ὅρκῳ ὤμοσεν αὐτῷ ὁ Θεὸς, ἐκ καρποῦ τῆς
ὀσφύος αὐτοῦ τὸ κατὰ σάρκα ἀναστήσειν τὸν
Χριστὸν, καθίσαι ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ,
31 Προϊ-

31 Προϊδὼν ἐλάλησε περὶ τῆς ἀναστάσεως
τοῦ Χριστοῦ, ὅτι οὐ κατελείφθη ἡ ψυχὴ αὐτοῦ
εἰς ᾅδου, οὐδὲ ἡ σὰρξ αὐτοῦ εἶδε διαφθοράν.
32 Τοῦτον τὸν Ἰησοῦν ἀνέστησεν ὁ Θεὸς,
οὗ πάντες ἡμεῖς ἐσμεν μάρτυρες.
33 Τῇ δεξιᾷ οὖν τοῦ Θεοῦ ὑψωθεὶς, τήν
τε ἐπαγγελίαν τοῦ ἁγίου Πνεύματος λαβὼν
παρὰ τοῦ Πατρὸς, ἐξέχεε τοῦτο ὃ νῦν ὑμεῖς
βλέπετε καὶ ἀκούετε.
34 Οὐ γὰρ Δαβὶδ ἀνέβη εἰς τοὺς οὐρανούς·
λέγει δὲ αὐτός· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ
μου· Κάθου ἐκ δεξιῶν μου,
35 Ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον
τῶν ποδῶν σου.
36 Ἀσφαλῶς οὖν γινωσκέτω πᾶς οἶκος
Ἰσραὴλ, ὅτι Κύριον καὶ Χριστὸν αὐτὸν ὁ
Θεὸς ἐποίησε, τοῦτον τὸν Ἰησοῦν ὃν ὑμεῖς
ἐσταυρώσατε.
37 Ἀκούσαντες δὲ κατενύγησαν τῇ καρ-
δίᾳ, εἶπόν τε πρὸς τὸν Πέτρον καὶ τοὺς λοιποὺς
ἀποστόλους· Τί ποιήσομεν, ἄνδρες ἀδελφοί;
38 Πέτρος δὲ ἔφη πρὸς αὐτούς· Μετανοή-
σατε, καὶ βαπτισθήτω ἕκαστος ὑμῶν ἐπὶ τῷ ὀ-
νόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν· καὶ
λήψεσθε τὴν δωρεὰν τοῦ ἁγίου Πνεύματος.
39 Ὑμῖν γάρ ἐστιν ἡ ἐπαγγελία καὶ τοῖς
τέκνοις ὑμῶν, καὶ πᾶσι τοῖς εἰς μακρὰν, ὅσους
ἂν προσκαλέσηται Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν.
40 Ἑτέροις τε λόγοις πλείοσι διεμαρτύ-
ρετο, καὶ παρεκάλει, λέγων· Σώθητε ἀπὸ
τῆς γενεᾶς τῆς σκολιᾶς ταύτης.
41 Οἱ μὲν οὖν ἀσμένως ἀποδεξάμενοι τὸν
λόγον αὐτοῦ, ἐβαπτίσθησαν· καὶ προσετέθησαν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ψυχαὶ ὡσεὶ τρισχίλιαι.

42 Ἦσαν

42 Ἦσαν δὲ προσκαρτεροῦντες τῇ διδαχῇ τῶν ἀποστόλων καὶ τῇ κοινωνίᾳ καὶ τῇ κλάσει τοῦ ἄρτου καὶ ταῖς προσευχαῖς.

43 Ἐγένετο δὲ πάσῃ ψυχῇ φόβος· πολλά τε τέρατα καὶ σημεῖα διὰ τῶν ἀποστόλων ἐγίνετο.

44 Πάντες δὲ οἱ πιστεύοντες ἦσαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ, καὶ εἶχον ἅπαντα κοινά.

45 Καὶ τὰ κτήματα καὶ τὰς ὑπάρξεις ἐπίπρασκον, καὶ διεμέριζον αὐτὰ πᾶσι, καθότι ἄν τις χρείαν εἶχε.

46 Καθ' ἡμέραν τε προσκαρτεροῦντες ὁμοθυμαδὸν ἐν τῷ ἱερῷ, κλῶντές τε κατ' οἶκον ἄρτον, μετελάμβανον τροφῆς ἐν ἀγαλλιάσει καὶ ἀφελότητι καρδίας,

47 Αἰνοῦντες τὸν Θεὸν, καὶ ἔχοντες χάριν πρὸς ὅλον τὸν λαόν. Ὁ δὲ Κύριος προσετίθει τοὺς σωζομένους καθ' ἡμέραν τῇ ἐκκλησίᾳ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Ἐπὶ τὸ αὐτὸ δὲ Πέτρος καὶ Ἰωάννης ἀνέβαινον εἰς τὸ ἱερὸν ἐπὶ τὴν ὥραν τῆς προσευχῆς τὴν ἐννάτην.

2 Καί τις ἀνὴρ χωλὸς ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτοῦ ὑπάρχων, ἐβαστάζετο· ὃν ἐτίθουν καθ' ἡμέραν πρὸς τὴν θύραν τοῦ ἱεροῦ τὴν λεγομένην Ὡραίαν, τοῦ αἰτεῖν ἐλεημοσύνην παρὰ τῶν εἰσπορευομένων εἰς τὸ ἱερόν.

3 Ὃς ἰδὼν Πέτρον καὶ Ἰωάννην μέλλοντας εἰσιέναι εἰς τὸ ἱερὸν, ἠρώτα ἐλεημοσύνην λαβεῖν·

4 Ἀτενίσας δὲ Πέτρος εἰς αὐτὸν σὺν τῷ Ἰωάννῃ, εἶπε· Βλέψον εἰς ἡμᾶς.

5 Ὁ

5 Ὁ δὲ ἐπεῖχεν αὐτοῖς, προσδοκῶν τι παρ' αὐτῶν λαβεῖν.

6 Εἶπε δὲ Πέτρος· Ἀργύριον ϗ χρυσίον οὐχ ὑπάρχει μοι· ὃ δὲ ἔχω, τοῦτό σοι δίδωμι· Ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Ναζωραίου ἔγειραι ϗ περιπάτει.

7 Καὶ πιάσας αὐτὸν τῆς δεξιᾶς χειρὸς ἤγειρε· παραχρῆμα δὲ ἐστερεώθησαν αὐτοῦ αἱ βάσεις ϗ τὰ σφυρά.

8 Καὶ ἐξαλλόμενος ἔστη, ϗ περιεπάτει· ϗ εἰσῆλθε σὺν αὐτοῖς εἰς τὸ ἱερὸν, περιπατῶν ϗ ἁλλόμενος, ϗ αἰνῶν τὸν Θεόν.

9 Καὶ εἶδεν αὐτὸν πᾶς ὁ λαὸς περιπατοῦντα ϗ αἰνοῦντα τὸν Θεόν.

10 Ἐπεγίνωσκόν τε αὐτὸν ὅτι οὗτος ἦν ὁ πρὸς τὴν ἐλεημοσύνην καθήμενος ἐπὶ τῇ Ὡραίᾳ πύλῃ τοῦ ἱεροῦ· ϗ ἐπλήσθησαν θάμβους ϗ ἐκστάσεως ἐπὶ τῷ συμβεβηκότι αὐτῷ.

11 Κρατοῦντος δὲ τοῦ ἰαθέντος χωλοῦ τὸν Πέτρον ϗ Ἰωάννην, συνέδραμε πρὸς αὐτοὺς πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ τῇ στοᾷ τῇ καλουμένῃ Σολομῶντος ἔκθαμβοι.

12 Ἰδὼν δὲ Πέτρος ἀπεκρίνατο πρὸς τὸν λαόν· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, τί θαυμάζετε ἐπὶ τούτῳ, ἢ ἡμῖν τί ἀτενίζετε, ὡς ἰδίᾳ δυνάμει ἢ εὐσεβείᾳ πεποιηκόσι τοῦ περιπατεῖν αὐτόν;

13 Ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ ϗ Ἰσαὰκ ϗ Ἰακὼβ, ὁ Θεὸς τῶν Πατέρων ἡμῶν ἐδόξασε τὸν παῖδα αὐτοῦ Ἰησοῦν, ὃν ὑμεῖς παρεδώκατε, καὶ ἠρνήσασθε αὐτὸν κατὰ πρόσωπον Πιλάτου, κρίναντος ἐκείνου ἀπολύειν.

14 Ὑμεῖς δὲ τὸν ἅγιον ϗ δίκαιον ἠρνήσασθε, ϗ ᾐτήσασθε ἄνδρα φονέα χαρισθῆναι ὑμῖν.

15 Τὸν



15 Τὸν δὲ ἀρχηγὸν τῆς ζωῆς ἀπεκτείνα-
τε, ὃν ὁ Θεὸς ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν, οὗ ἡμεῖς
μάρτυρές ἐσμεν.
16 Καὶ ἐπὶ τῇ πίστει τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ,
τοῦτον, ὃν θεωρεῖτε καὶ οἴδατε, ἐστερέωσε τὸ
ὄνομα αὐτοῦ· καὶ ἡ πίστις ἡ δι' αὐτοῦ ἔδωκεν
αὐτῷ τὴν ὁλοκληρείαν ταύτην ἀπέναντι πάν-
των ὑμῶν.
17 Καὶ νῦν, ἀδελφοί, οἶδα ὅτι κατὰ ἄ-
γνοιαν ἐπράξατε, ὥσπερ καὶ οἱ ἄρχοντες ὑμῶν.
18 Ὁ δὲ Θεὸς ἃ προκατήγγειλε διὰ στό-
ματος πάντων τῶν Προφητῶν αὐτοῦ, παθεῖν
τὸν Χριστὸν, ἐπλήρωσεν οὕτω.
19 Μετανοήσατε οὖν καὶ ἐπιστρέψατε, εἰς
τὸ ἐξαλειφθῆναι ὑμῶν τὰς ἁμαρτίας· ὅπως
ἂν ἔλθωσι καιροὶ ἀναψύξεως ἀπὸ προσώ-
που τοῦ Κυρίου,
20 Καὶ ἀποστείλῃ τὸν προκεκηρυγμένον
ὑμῖν Ἰησοῦν Χριστὸν,
21 Ὃν δεῖ οὐρανὸν μὲν δέξασθαι ἄχρι
χρόνων ἀποκαταστάσεως πάντων ὧν ἐλάλησεν
ὁ Θεὸς διὰ στόματος πάντων ἁγίων αὐτοῦ
Προφητῶν ἀπ' αἰῶνος.
22 Μωσῆς μὲν γὰρ πρὸς τοὺς πατέρας εἶ-
πεν· Ὅτι Προφήτην ὑμῖν ἀναστήσει Κύριος
ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν, ὡς ἐ-
μέ· αὐτοῦ ἀκούσεσθε κατὰ πάντα ὅσα ἂν λα-
λήσῃ πρὸς ὑμᾶς.
23 Ἔσται δὲ πᾶσα ψυχὴ, ἥτις ἂν μὴ
ἀκούσῃ τοῦ Προφήτου ἐκείνου, ἐξολοθρευθήσε-
ται ἐκ τοῦ λαοῦ.
24 Καὶ πάντες δὲ οἱ προφῆται ἀπὸ Σα-
μουὴλ καὶ τῶν καθεξῆς, ὅσοι ἐλάλησαν, καὶ
προκατήγγειλαν τὰς ἡμέρας ταύτας.

25 Ὑμεῖς

25 Ὑμεῖς ἐστε Υἱοὶ τῶν Προφητῶν καὶ τῆς
διαθήκης ἧς διέθετο ὁ Θεὸς πρὸς τοὺς Πα-
τέρας ἡμῶν, λέγων πρὸς Ἀβραάμ· Καὶ
τῷ σπέρματί σου ἐνευλογηθήσονται πᾶσαι αἱ
πατριαὶ τῆς γῆς.
26 Ὑμῖν πρῶτον ὁ Θεὸς, ἀναστήσας τὸν
παῖδα αὐτοῦ Ἰησοῦν, ἀπέστειλεν αὐτὸν εὐ-
λογοῦντα ὑμᾶς, ἐν τῷ ἀποστρέφειν ἕκαστον ἀ-
πὸ τῶν πονηριῶν ὑμῶν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΛΑλούντων δὲ αὐτῶν πρὸς τὸν λαὸν,
ἐπέστησαν αὐτοῖς οἱ ἱερεῖς καὶ ὁ
στρατηγὸς τοῦ ἱεροῦ καὶ οἱ Σαδδουκαῖοι,
2 Διαπονούμενοι διὰ τὸ διδάσκειν αὐτοὺς
τὸν λαὸν, καὶ καταγγέλλειν ἐν τῷ Ἰησοῦ τὴν
ἀνάστασιν τὴν ἐκ νεκρῶν.
3 Καὶ ἐπέβαλον αὐτοῖς τὰς χεῖρας, καὶ
ἔθεντο εἰς τήρησιν εἰς τὴν αὔριον· ἦν γὰρ ἑ-
σπέρα ἤδη.
4 Πολλοὶ δὲ τῶν ἀκουσάντων τὸν λόγον
ἐπίστευσαν· καὶ ἐγενήθη ὁ ἀριθμὸς τῶν ἀνδρῶν
ὡσεὶ χιλιάδες πέντε.
5 Ἐγένετο δὲ ἐπὶ τὴν αὔριον συναχθῆναι
αὐτῶν τοὺς ἄρχοντας καὶ πρεσβυτέρους καὶ γραμ-
ματεῖς εἰς Ἱερουσαλὴμ,
6 Καὶ Ἄνναν τὸν ἀρχιερέα καὶ Καϊάφαν
καὶ Ἰωάννην καὶ Ἀλέξανδρον, καὶ ὅσοι ἦσαν
ἐκ γένους ἀρχιερατικοῦ.
7 Καὶ στήσαντες αὐτοὺς ἐν τῷ μέσῳ, ἐ-
πυνθάνοντο· Ἐν ποίᾳ δυνάμει ἢ ἐν ποίῳ
ὀνόματι ἐποιήσατε τοῦτο ὑμεῖς;
8 Τότε Πέτρος πλησθεὶς Πνεύματος ἁγίου
εἶπε

εἶπε πρὸς αὐτούς. Ἄρχοντες τοῦ λαοῦ, καὶ
πρεσβύτεροι τοῦ Ἰσραὴλ,
9 Εἰ ἡμεῖς σήμερον ἀνακρινόμεθα ἐπὶ
εὐεργεσίᾳ ἀνθρώπου ἀσθενοῦς, ἐν τίνι οὗτος
σέσωσται·
10 Γνωστὸν ἔστω πᾶσιν ὑμῖν καὶ παντὶ τῷ
λαῷ Ἰσραὴλ, ὅτι ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ
Χριστοῦ τοῦ Ναζωραίου, ὃν ὑμεῖς ἐσταυρώσα-
τε, ὃν ὁ Θεὸς ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν, ἐν τούτῳ
οὗτος παρέστηκεν ἐνώπιον ὑμῶν ὑγιής.
11 Οὗτός ἐστιν ὁ λίθος ὁ ἐξουθενηθεὶς ὑφ'
ὑμῶν τῶν οἰκοδομούντων, ὁ γενόμενος εἰς κε-
φαλὴν γωνίας.
12 Καὶ οὐκ ἔστιν ἐν ἄλλῳ οὐδενὶ ἡ σωτη-
ρία· οὔτε γὰρ ὄνομά ἐστιν ἕτερον ὑπὸ τὸν οὐ-
ρανὸν τὸ δεδομένον ἐν ἀνθρώποις, ἐν ᾧ δεῖ
σωθῆναι ἡμᾶς.
13 Θεωροῦντες δὲ τὴν τοῦ Πέτρου παῤῥησίαν
καὶ Ἰωάννου, καὶ καταλαβόμενοι ὅτι ἄνθρωποι
ἀγράμματοί εἰσι καὶ ἰδιῶται, ἐθαύμαζον, ἐπε-
γίνωσκόν τε αὐτοὺς ὅτι σὺν τῷ Ἰησοῦ ἦσαν.
14 Τὸν δὲ ἄνθρωπον βλέποντες σὺν αὐ-
τοῖς ἑστῶτα τὸν τεθεραπευμένον, οὐδὲν εἶχον
ἀντειπεῖν.
15 Κελεύσαντες δὲ αὐτοὺς ἔξω τοῦ συνε-
δρίου ἀπελθεῖν, συνέβαλον πρὸς ἀλλήλους,
16 Λέγοντες· Τί ποιήσομεν τοῖς ἀνθρώ-
ποις τούτοις; ὅτι μὲν γὰρ γνωστὸν σημεῖον γέ-
γονε δι' αὐτῶν, πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερου-
σαλὴμ φανερὸν, καὶ οὐ δυνάμεθα ἀρνήσασθαι.
17 Ἀλλ' ἵνα μὴ ἐπὶ πλεῖον διανεμηθῇ εἰς
τὸν λαὸν, ἀπειλῇ ἀπειλησώμεθα αὐτοῖς
μηκέτι λαλεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τούτῳ μηδενὶ
ἀνθρώπων.

18 Καὶ

18 Καὶ καλέσαντες αὐτοὺς, παρήγγειλαν
αὐτοῖς τὸ καθόλου μὴ φθέγγεσθαι μηδὲ δι-
δάσκειν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ.
19 Ὁ δὲ Πέτρος καὶ Ἰωάννης ἀποκριθέντες
πρὸς αὐτοὺς, εἶπον· Εἰ δίκαιόν ἐστιν ἐνώπιον τοῦ
Θεοῦ, ὑμῶν ἀκούειν μᾶλλον ἢ τοῦ Θεοῦ, κρίνατε.
20 Οὐ δυνάμεθα γὰρ ἡμεῖς, ἃ εἴδομεν
καὶ ἠκούσαμεν, μὴ λαλεῖν.
21 Οἱ δὲ προσαπειλησάμενοι ἀπέλυσαν
αὐτοὺς, μηδὲν εὑρίσκοντες τὸ πῶς κολάσων-
ται αὐτοὺς, διὰ τὸν λαόν· ὅτι πάντες ἐδό-
ξαζον τὸν Θεὸν ἐπὶ τῷ γεγονότι.
22 Ἐτῶν γὰρ ἦν πλειόνων τεσσαράκοντα ὁ
ἄνθρωπος, ἐφ᾽ ὃν ἐγεγόνει τὸ σημεῖον τοῦτο
τῆς ἰάσεως.
23 Ἀπολυθέντες δὲ ἦλθον πρὸς τοὺς ἰ-
δίους, καὶ ἀπήγγειλαν ὅσα πρὸς αὐτοὺς οἱ ἀρ-
χιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι εἶπον.
24 Οἱ δὲ ἀκούσαντες, ὁμοθυμαδὸν ἦραν
φωνὴν πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ εἶπον· Δέσποτα, σὺ
ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν
θάλασσαν, καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς.
25 Ὁ διὰ στόματος Δαβὶδ τοῦ παιδός σου
εἰπών· Ἵνα τί ἐφρύαξαν ἔθνη, καὶ λαοὶ
ἐμελέτησαν κενά;
26 Παρέστησαν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ
οἱ ἄρχοντες συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ κατὰ τοῦ
Κυρίου καὶ κατὰ τοῦ Χριστοῦ αὐτοῦ.
27 Συνήχθησαν γὰρ ἐπ᾽ ἀληθείας ἐπὶ τὸν
ἅγιον παῖδά σου Ἰησοῦν, ὃν ἔχρισας, Ἡρώ-
δης τε καὶ Πόντιος Πιλάτος σὺν ἔθνεσι καὶ
λαοῖς Ἰσραὴλ,
28 Ποιῆσαι ὅσα ἡ χείρ σου καὶ ἡ βουλή σου
προώρισε γενέσθαι.

29 Καὶ

29 Καὶ τὰ νῦν Κύριε ἔπιδε ἐπὶ τὰς ἀπειλὰς
αὐτῶν, καὶ δὸς τοῖς δούλοις σου μετὰ παῤῥη-
σίας πάσης λαλεῖν τὸν λόγον σου,
30 Ἐν τῷ τὴν χεῖρά σου ἐκτείνειν σε εἰς ἴα-
σιν, καὶ σημεῖα καὶ τέρατα γίνεσθαι διὰ τοῦ ὀνό-
ματος τοῦ ἁγίου παιδός σου Ἰησοῦ.
31 Καὶ δεηθέντων αὐτῶν ἐσαλεύθη ὁ τό-
πος ἐν ᾧ ἦσαν συνηγμένοι· καὶ ἐπλήσθησαν
ἅπαντες Πνεύματος ἁγίου, καὶ ἐλάλουν τὸν
λόγον τοῦ Θεοῦ μετὰ παῤῥησίας.
32 Τοῦ δὲ πλήθους τῶν πιστευσάντων ἦν ἡ
καρδία καὶ ἡ ψυχὴ μία· καὶ οὐδὲ εἷς τι τῶν
ὑπαρχόντων αὐτῷ ἔλεγεν ἴδιον εἶναι, ἀλλ'
ἦν αὐτοῖς ἅπαντα κοινά.
33 Καὶ μεγάλῃ δυνάμει ἀπεδίδουν τὸ
μαρτύριον οἱ ἀπόστολοι τῆς ἀναστάσεως τοῦ
Κυρίου Ἰησοῦ, χάρις τε μεγάλη ἦν ἐπὶ πάν-
τας αὐτούς.
34 Οὐδὲ γὰρ ἐνδεής τις ὑπῆρχεν ἐν αὐ-
τοῖς· ὅσοι γὰρ κτήτορες χωρίων ἢ οἰκιῶν ὑπῆρ-
χον, πωλοῦντες ἔφερον τὰς τιμὰς τῶν πιπρα-
σκομένων,
35 Καὶ ἐτίθουν παρὰ τοὺς πόδας τῶν ἀπο-
στόλων· διεδίδοτο δὲ ἑκάστῳ καθότι ἄν τις
χρείαν εἶχεν.
36 Ἰωσῆς δὲ, ὁ ἐπικληθεὶς Βαρνάβας
ὑπὸ τῶν ἀποστόλων, (ὅ ἐστι μεθερμηνευόμε-
νον, Υἱὸς παρακλήσεως,) Λευΐτης, Κύ-
πριος τῷ γένει.
37 Ὑπάρχοντος αὐτῷ ἀγροῦ, πωλήσας
ἤνεγκε τὸ χρῆμα, καὶ ἔθηκε παρὰ τοὺς πό-
δας τῶν Ἀποστόλων.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 Α'Νὴρ δέ τις Α'νανίας ὀνόματι,
σὺν Σαπφείρῃ τῇ γυναικὶ αὐτοῦ
ἐπώλησε κτῆμα.
2 Καὶ ἐνοσφίσατο ἀπὸ τῆς τιμῆς, συνει-
δυίας καὶ τῆς γυναικὸς αὐτοῦ· καὶ ἐνέγκας μέρος
τι, παρὰ τοὺς πόδας τῶν ἀποστόλων ἔθηκεν,
3 Εἶπε δὲ Πέτρος· Α'νανία, διατί ἐπλή-
ρωσεν ὁ Σατανᾶς τὴν καρδίαν σου, ψεύσα-
σθαί σε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον, καὶ νοσφίσασθαι
ἀπὸ τῆς τιμῆς τοῦ χωρίου;
4 Οὐχὶ μένον, σοὶ ἔμενε, καὶ πραθὲν ἐν
τῇ σῇ ἐξουσίᾳ ὑπῆρχε; τί ὅτι ἔθου ἐν τῇ καρ-
καρδίᾳ σου τὸ πρᾶγμα τοῦτο; οὐκ ἐψεύσω ἀν-
θρώποις, ἀλλὰ τῷ Θεῷ.
5 Α'κούων δὲ Α'νανίας τοὺς λόγους τούτους,
πεσὼν ἐξέψυξε· καὶ ἐγένετο φόβος μέγας ἐπὶ
πάντας τοὺς ἀκούοντας ταῦτα.
6 Α'ναστάντες δὲ οἱ νεώτεροι συνέστειλαν
αὐτὸν, καὶ ἐξενέγκαντες ἔθαψαν.
7 Ε'γένετο δὲ ὡς ὡρῶν τριῶν διάστημα, καὶ
ἡ γυνὴ αὐτοῦ μὴ εἰδυῖα τὸ γεγονὸς εἰσῆλθεν.
8 Α'πεκρίθη δὲ αὐτῇ ὁ Πέτρος· Εἰπέ
μοι, εἰ τοσούτου τὸ χωρίον ἀπέδοσθε; Ἡ δὲ
εἶπε· Ναὶ, τοσούτου.
9 Ο' δὲ Πέτρος εἶπε πρὸς αὐτήν· Τί
ὅτι συνεφωνήθη ὑμῖν πειράσαι τὸ Πνεῦ-
μα Κυρίου; ἰδοὺ οἱ πόδες τῶν θαψάν-
των τὸν ἄνδρα σου, ἐπὶ τῇ θύρᾳ, καὶ ἐξοί-
σουσί σε.
10 Ε'πεσε δὲ παραχρῆμα παρὰ τοὺς πό-
δας αὐτοῦ, καὶ ἐξέψυξεν. εἰσελθόντες δὲ οἱ

νεανίσκοι εὗρον αὐτὴν νεκρὰν, καὶ ἐξενέγκαν-
τες ἔθαψαν πρὸς τὸν ἄνδρα αὐτῆς.
11 Καὶ ἐγένετο φόβος μέγας ἐφ᾽ ὅλην τὴν
Ἐκκλησίαν, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ἀκούοντας
ταῦτα.
12 Διὰ δὲ τῶν χειρῶν τῶν ἀποστόλων ἐγέ-
νετο σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τῷ λαῷ πολλά·
(καὶ ἦσαν ὁμοθυμαδὸν ἅπαντες ἐν τῇ στοᾷ
Σολομῶντος.
13 Τῶν δὲ λοιπῶν οὐδεὶς ἐτόλμα κολ-
λᾶσθαι αὐτοῖς· ἀλλ᾽ ἐμεγάλυνεν αὐτοὺς ὁ
λαός.
14 Μᾶλλον δὲ προσετίθεντο πιστεύοντες
τῷ Κυρίῳ, πλήθη ἀνδρῶν τε καὶ γυναικῶν·)
15 Ὥστε κατὰ τὰς πλατείας ἐκφέρειν τοὺς
ἀσθενεῖς, καὶ τιθέναι ἐπὶ κλινῶν καὶ κραββάτων,
ἵνα ἐρχομένου Πέτρου κἂν ἡ σκιὰ ἐπισκιάσῃ
τινὶ αὐτῶν.
16 Συνήρχετο δὲ καὶ τὸ πλῆθος τῶν πέριξ
πόλεων εἰς Ἱερουσαλὴμ, φέροντες ἀσθενεῖς καὶ
ὀχλουμένους ὑπὸ πνευμάτων ἀκαθάρτων· οἵ-
τινες ἐθεραπεύοντο ἅπαντες.
17 Ἀναστὰς δὲ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ πάντες οἱ
σὺν αὐτῷ, (ἡ οὖσα αἵρεσις τῶν Σαδδου-
καίων,) ἐπλήσθησαν ζήλου.
18 Καὶ ἐπέβαλον τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ
τοὺς ἀποστόλους, καὶ ἔθεντο αὐτοὺς ἐν τηρήσει
δημοσίᾳ.
19 Ἄγγελος δὲ Κυρίου διὰ τῆς νυκτὸς
ἤνοιξε τὰς θύρας τῆς φυλακῆς· ἐξαγαγών
τε αὐτοὺς, εἶπε·
20 Πορεύεσθε, καὶ σταθέντες λαλεῖτε ἐν
τῷ ἱερῷ τῷ λαῷ πάντα τὰ ῥήματα τῆς ζωῆς
ταύτης.

21 Ἀκούσαντες δὲ εἰσῆλθον ὑπὸ τὸν ὄρθρον
εἰς τὸ ἱερὸν, καὶ ἐδίδασκον· Παραγενόμενος
δὲ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ οἱ σὺν αὐτῷ, συνεκάλεσαν
τὸ συνέδριον καὶ πᾶσαν τὴν γερουσίαν τῶν Υἱῶν
Ἰσραήλ· καὶ ἀπέστειλαν εἰς τὸ δεσμωτήριον,
ἀχθῆναι αὐτούς.
22 Οἱ δὲ ὑπηρέται παραγενόμενοι οὐχ εὗ-
ρον αὐτοὺς ἐν τῇ φυλακῇ· ἀναστρέψαντες δὲ
ἀπήγγειλαν,
23 Λέγοντες· Ὅτι τὸ μὲν δεσμωτήριον
εὕρομεν κεκλεισμένον ἐν πάσῃ ἀσφαλείᾳ, καὶ
τοὺς φύλακας ἔξω ἑστῶτας πρὸ τῶν θυρῶν·
ἀνοίξαντες δὲ, ἔσω οὐδένα εὕρομεν.
24 Ὡς δὲ ἤκουσαν τοὺς λόγους τούτους ὅ, τε
Ἱερεὺς καὶ ὁ στρατηγὸς τοῦ ἱεροῦ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς,
διηπόρουν περὶ αὐτῶν, τί ἂν γένοιτο τοῦτο.
25 Παραγενόμενος δέ τις ἀπήγγειλεν
αὐτοῖς, λέγων· Ὅτι ἰδοὺ, οἱ ἄνδρες οὓς ἔθε-
σθε ἐν τῇ φυλακῇ, εἰσὶν ἐν τῷ ἱερῷ ἑστῶτες,
καὶ διδάσκοντες τὸν λαόν.
26 Τότε ἀπελθὼν ὁ στρατηγὸς σὺν τοῖς
ὑπηρέταις, ἤγαγεν αὐτοὺς, οὐ μετὰ βίας·
(ἐφοβοῦντο γὰρ τὸν λαὸν ἵνα μὴ λιθα-
σθῶσιν.
27 Ἀγαγόντες δὲ αὐτοὺς ἔστησαν ἐν τῷ συ-
νεδρίῳ· καὶ ἐπηρώτησεν αὐτοὺς ὁ ἀρχιερεὺς,
28 Λέγων· Οὐ παραγγελίᾳ παρηγγεί-
λαμεν ὑμῖν μὴ διδάσκειν ἐπὶ τῷ ὀνόματι
τούτῳ; καὶ ἰδοὺ, πεπληρώκατε τὴν Ἱερουσα-
λὴμ τῆς διδαχῆς ὑμῶν, καὶ βούλεσθε ἐπα-
γαγεῖν ἐφ' ἡμᾶς τὸ αἷμα τοῦ ἀνθρώπου τούτου.
29 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος καὶ οἱ ἀπό-
στολοι, εἶπον· Πειθαρχεῖν δεῖ Θεῷ μᾶλλον
ἢ ἀνθρώποις.

30 Ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν ἤγειρεν Ἰησοῦν, ὃν ὑμεῖς διεχειρίσασθε κρεμάσαντες ἐπὶ ξύλου·

31 Τοῦτον ὁ Θεὸς ἀρχηγὸν καὶ σωτῆρα ὕψωσε τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, δοῦναι μετάνοιαν τῷ Ἰσραὴλ καὶ ἄφεσιν ἁμαρτιῶν.

32 Καὶ ἡμεῖς ἐσμὲν αὐτοῦ μάρτυρες τῶν ῥημάτων τούτων, καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ τὸ ἅγιον, ὃ ἔδωκεν ὁ Θεὸς τοῖς πειθαρχοῦσιν αὐτῷ.

33 Οἱ δὲ ἀκούσαντες διεπρίοντο, καὶ ἐβουλεύοντο ἀνελεῖν αὐτούς.

34 Ἀναστὰς δέ τις ἐν τῷ συνεδρίῳ Φαρισαῖος, ὀνόματι Γαμαλιήλ, νομοδιδάσκαλος, τίμιος παντὶ τῷ λαῷ, ἐκέλευσεν ἔξω βραχύ τι τοὺς ἀποστόλους ποιῆσαι·

35 Εἶπέ τε πρὸς αὐτούς· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, προσέχετε ἑαυτοῖς ἐπὶ τοῖς ἀνθρώποις τούτοις, τί μέλλετε πράσσειν.

36 Πρὸ γὰρ τούτων τῶν ἡμερῶν ἀνέστη Θευδᾶς, λέγων εἶναί τινα ἑαυτὸν μέγαν, ᾧ προσεκολλήθη ἀριθμὸς ἀνδρῶν ὡσεὶ τετρακοσίων· ὃς ἀνῃρέθη, καὶ πάντες ὅσοι ἐπείθοντο αὐτῷ, διελύθησαν, καὶ ἐγένοντο εἰς οὐδέν.

37 Μετὰ τοῦτον ἀνέστη Ἰούδας ὁ Γαλιλαῖος, ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς ἀπογραφῆς, καὶ ἀπέστησε λαὸν ἱκανὸν ὀπίσω αὐτοῦ· κἀκεῖνος ἀπώλετο, καὶ πάντες ὅσοι ἐπείθοντο αὐτῷ διεσκορπίσθησαν.

38 Καὶ τὰ νῦν λέγω ὑμῖν, ἀπόστητε ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων τούτων, καὶ ἐάσατε αὐτούς· ὅτι ἐὰν ᾖ ἐξ ἀνθρώπων ἡ βουλὴ αὕτη, ἢ τὸ ἔργον τοῦτο, καταλυθήσεται.

39 Εἰ δὲ ἐκ Θεοῦ ἐστιν, οὐ δύνασθε καταλῦσαι αὐτό, μήποτε καὶ θεομάχοι εὑρεθῆτε.



40 Ἐπείσθησαν δὲ αὐτῷ· καὶ προσκαλεσάμενοι τοὺς ἀποστόλους, δείραντες παρήγγειλαν μὴ λαλεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἀπέλυσαν αὐτούς.

41 Οἱ μὲν οὖν ἐπορεύοντο χαίροντες ἀπὸ προσώπου τοῦ συνεδρίου, ὅτι ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ κατηξιώθησαν ἀτιμασθῆναι.

42 Πᾶσάν τε ἡμέραν ἐν τῷ ἱερῷ καὶ κατ' οἶκον οὐκ ἐπαύοντο διδάσκοντες καὶ εὐαγγελιζόμενοι Ἰησοῦν τὸν Χριστόν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ς'. 6.

1 ἘΝ δὲ ταῖς ἡμέραις ταύταις πληθυνόντων τῶν μαθητῶν, ἐγένετο γογγυσμὸς τῶν Ἑλληνιστῶν πρὸς τοὺς Ἑβραίους, ὅτι παρεθεωροῦντο ἐν τῇ διακονίᾳ τῇ καθημερινῇ αἱ χῆραι αὐτῶν.

2 Προσκαλεσάμενοι δὲ οἱ δώδεκα τὸ πλῆθος τῶν μαθητῶν, εἶπον· Οὐκ ἀρεστόν ἐστιν ἡμᾶς καταλείψαντας τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, διακονεῖν τραπέζαις.

3 Ἐπισκέψασθε οὖν, ἀδελφοί, ἄνδρας ἐξ ὑμῶν μαρτυρουμένους ἑπτὰ, πλήρεις Πνεύματος ἁγίου καὶ σοφίας, οὓς καταστήσομεν ἐπὶ τῆς χρείας ταύτης.

4 Ἡμεῖς δὲ τῇ προσευχῇ καὶ τῇ διακονίᾳ τοῦ λόγου προσκαρτερήσομεν.

5 Καὶ ἤρεσεν ὁ λόγος ἐνώπιον παντὸς τοῦ πλήθους· καὶ ἐξελέξαντο Στέφανον, ἄνδρα πλήρη πίστεως καὶ Πνεύματος ἁγίου, καὶ Φίλιππον καὶ Πρόχορον, καὶ Νικάνορα, καὶ Τίμωνα, καὶ Παρμενᾶν, καὶ Νικόλαον προσήλυτον Ἀντιοχέα.

6 Οὓς ἔστησαν ἐνώπιον τῶν ἀποστόλων·

καὶ

ϗ προσευξάμενοι ἐπέθηκαν αὐτοῖς τὰς χεῖ-
ρας.
7 Καὶ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ηὔξανε, ϗ ἐπλη-
θύνετο ὁ ἀριθμὸς τῶν μαθητῶν ἐν Ἱερουσα-
λὴμ σφόδρα· πολύς τε ὄχλος τῶν ἱερέων
ὑπήκουον τῇ πίστει.
8 Στέφανος δὲ πλήρης πίστεως ϗ δυνά-
μεως ἐποίει τέρατα ϗ σημεῖα μεγάλα ἐν τῷ
λαῷ.
9 Ἀνέστησαν δέ τινες τῶν ἐκ τῆς συναγω-
γῆς τῆς λεγομένης Λιβερτίνων, ϗ Κυρη-
ναίων, ϗ Ἀλεξανδρέων, ϗ τῶν ἀπὸ Κιλι-
κίας ϗ Ἀσίας, συζητοῦντες τῷ Στεφάνῳ:
10 Καὶ οὐκ ἴσχυον ἀντιστῆναι τῇ σοφίᾳ ϗ
τῷ Πνεύματι ᾧ ἐλάλει.
11 Τότε ὑπέβαλον ἄνδρας λέγοντας ὅτι
ἀκηκόαμεν αὐτοῦ λαλοῦντος ῥήματα βλάσφη-
μα εἰς Μωσῆν ϗ τὸν Θεόν.
12 Συνεκίνησάν τε τὸν λαὸν ϗ τοὺς πρεσ-
βυτέρους ϗ τοὺς γραμματεῖς· ϗ ἐπιστάντες συ-
νήρπασαν αὐτὸν, καὶ ἤγαγον εἰς τὸ συνέ-
δριον.
13 Ἔστησάν τε μάρτυρας ψευδεῖς, λέ-
γοντας, Ὁ ἄνθρωπος οὗτος οὐ παύεται ῥή-
ματα βλάσφημα λαλῶν κατὰ τοῦ τόπου τοῦ ἁ-
γίου τούτου ϗ τοῦ νόμου.
14 Ἀκηκόαμεν γὰρ αὐτοῦ λέγοντος, ὅτι
Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος οὗτος καταλύσει τὸν τό-
πον τοῦτον, ϗ ἀλλάξει τὰ ἔθη ἃ παρέδωκεν
ἡμῖν Μωϋσῆς.
15 Καὶ ἀτενίσαντες εἰς αὐτὸν ἅπαντες οἱ
καθεζόμενοι ἐν τῷ συνεδρίῳ, εἶδον τὸ πρό-
σωπον αὐτοῦ ὡσεὶ πρόσωπον Ἀγγέλου.



ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ΄. 7.

1 ΕΙ'πε δὲ ὁ ἀρχιερεύς· Εἰ ἄρα ταῦτα
οὕτως ἔχει;
2 Ὁ δὲ ἔφη· Ἄνδρες ἀδελφοὶ καὶ πατέ-
ρες, ἀκούσατε· Ὁ Θεὸς τῆς δόξης ὤφθη τῷ
πατρὶ ἡμῶν Ἀβραὰμ ὄντι ἐν τῇ Μεσοποτα-
μίᾳ, πρὶν ἢ κατοικῆσαι αὐτὸν ἐν Χαῤῥάν.
3 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτόν· Ἔξελθε ἐκ τῆς
γῆς σου καὶ ἐκ τῆς συγγενείας σου, καὶ δεῦρο εἰς
τὴν γῆν ἣν ἄν σοι δείξω.
4 Τότε ἐξελθὼν ἐκ γῆς Χαλδαίων, κα-
τῴκησεν ἐν Χαῤῥάν· Κἀκεῖθεν, μετὰ τὸ
ἀποθανεῖν τὸν πατέρα αὐτοῦ, μετῴκισεν αὐ-
τὸν εἰς τὴν γῆν ταύτην εἰς ἣν ὑμεῖς νῦν κα-
τοικεῖτε.
5 Καὶ οὐκ ἔδωκεν αὐτῷ κληρονομίαν ἐν αὐ-
τῇ, οὐδὲ βῆμα ποδός· καὶ ἐπηγγείλατο αὐτῷ
δοῦναι εἰς κατάσχεσιν αὐτὴν, καὶ τῷ σπέρματι
αὐτοῦ μετ' αὐτὸν, οὐκ ὄντος αὐτῷ τέκνου.
6 Ἐλάλησε δὲ οὕτως ὁ Θεός. Ὅτι ἔσται
τὸ σπέρμα αὐτοῦ πάροικον ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ,
καὶ δουλώσουσιν αὐτὸ καὶ κακώσουσιν ἔτη τε-
τρακόσια.
7 Καὶ τὸ ἔθνος, ᾧ ἐὰν δουλεύσωσι, κρι-
νῶ ἐγὼ, εἶπεν ὁ Θεός· καὶ μετὰ ταῦτα ἐξε-
λεύσονται, καὶ λατρεύσουσί μοι ἐν τῷ τόπῳ
τούτῳ.
8 Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ διαθήκην περιτο-
μῆς· καὶ οὕτως ἐγέννησε τὸν Ἰσαάκ, καὶ πε-
ριέτεμεν αὐτὸν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ· καὶ ὁ Ἰ-
σαὰκ τὸν Ἰακώβ, καὶ ὁ Ἰακὼβ τοὺς δώδεκα
πατριάρχας.
9 Καὶ οἱ πατριάρχαι ζηλώσαντες τὸν

Ἰω-

Ἰωσὴφ ἀπέδοντο εἰς Αἴγυπτον· καὶ ἦν ὁ Θεὸς
μετ' αὐτοῦ.
10 Καὶ ἐξείλετο αὐτὸν ἐκ πασῶν τῶν θλί-
ψεων αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ χάριν καὶ σοφίαν
ἐναντίον Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου, καὶ
κατέστησεν αὐτὸν ἡγούμενον ἐπ' Αἴγυπτον καὶ
ὅλον τὸν οἶκον αὐτοῦ.
11 Ἦλθε δὲ λιμὸς ἐφ' ὅλην τὴν γῆν Αἰ-
γύπτου καὶ Χαναὰν, καὶ θλίψις μεγάλη· καὶ οὐχ
εὕρισκον χορτάσματα οἱ πατέρες ἡμῶν.
12 Ἀκούσας δὲ Ἰακὼβ ὄντα σῖτα ἐν Αἰ-
γύπτῳ, ἐξαπέστειλε τοὺς πατέρας ἡμῶν
πρῶτον.
13 Καὶ ἐν τῷ δευτέρῳ ἀνεγνωρίσθη Ἰωσὴφ
τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ, καὶ φανερὸν ἐγένετο τῷ
Φαραὼ τὸ γένος τοῦ Ἰωσήφ.
14 Ἀποστείλας δὲ Ἰωσὴφ μετεκαλέσατο
τὸν πατέρα αὐτοῦ Ἰακὼβ, καὶ πᾶσαν τὴν συγ-
γένειαν αὐτοῦ, ἐν ψυχαῖς ἑβδομήκοντα πέντε.
15 Κατέβη δὲ Ἰακὼβ εἰς Αἴγυπτον, καὶ
ἐτελεύτησεν αὐτὸς καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν.
16 Καὶ μετετέθησαν εἰς Συχὲμ, καὶ ἐτέ-
θησαν ἐν τῷ μνήματι ὃ ὠνήσατο Ἀβραὰμ
τιμῆς ἀργυρίου παρὰ τῶν Υἱῶν Ἐμμὸρ τοῦ
Συχέμ.
17 Καθὼς δὲ ἤγγιζεν ὁ χρόνος τῆς ἐπαγ-
γελίας ἧς ὤμοσεν ὁ Θεὸς τῷ Ἀβραὰμ, ηὔ-
ξησεν ὁ λαὸς καὶ ἐπληθύνθη ἐν Αἰγύπτῳ.
18 Ἄχρις οὗ ἀνέστη βασιλεὺς ἕτερος ὃς
οὐκ ᾔδει τὸν Ἰωσήφ.
19 Οὗτος κατασοφισάμενος τὸ γένος ἡμῶν,
ἐκάκωσε τοὺς πατέρας ἡμῶν, τοῦ ποιεῖν ἔκθετα
τὰ βρέφη αὐτῶν, εἰς τὸ μὴ ζωογονεῖσθαι.
20 Ἐν ᾧ καιρῷ ἐγεννήθη Μωσῆς, καὶ ἦν

ἀστεῖος τῷ Θεῷ, ὃς ἀνετράφη μῆνας τρεῖς ἐν
τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ.
21 Ἐκτεθέντα δὲ αὐτὸν, ἀνείλετο αὐτὸν
ἡ θυγάτηρ Φαραὼ καὶ ἀνεθρέψατο αὐτὸν ἑαυ-
τῇ εἰς Υἱόν.
22 Καὶ ἐπαιδεύθη Μωσῆς πάσῃ σοφίᾳ
Αἰγυπτίων· ἦν δὲ δυνατὸς ἐν λόγοις καὶ ἐν
ἔργοις.
23 Ὡς δὲ ἐπληροῦτο αὐτῷ τεσσαρακονταε-
τὴς χρόνος, ἀνέβη ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ ἐπι-
σκέψασθαι τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ τοὺς Υἱοὺς
Ἰσραήλ.
24 Καὶ ἰδών τινα ἀδικούμενον, ἠμύνατο,
καὶ ἐποίησεν ἐκδίκησιν τῷ καταπονουμένῳ,
πατάξας τὸν Αἰγύπτιον·
25 Ἐνόμιζε δὲ συνιέναι τοὺς ἀδελφοὺς αὐ-
τοῦ, ὅτι ὁ Θεὸς διὰ χειρὸς αὐτοῦ δίδωσιν αὐ-
τοῖς σωτηρίαν· οἱ δὲ οὐ συνῆκαν.
26 Τῇ δὲ ἐπιούσῃ ἡμέρᾳ ὤφθη αὐτοῖς μα-
χομένοις, καὶ συνήλασεν αὐτοὺς εἰς εἰρήνην,
εἰπών· Ἄνδρες, ἀδελφοί ἐστε ὑμεῖς· ἵνα
τί ἀδικεῖτε ἀλλήλους;
27 Ὁ δὲ ἀδικῶν τὸν πλησίον, ἀπώσατο
αὐτὸν, εἰπών· Τίς σε κατέστησεν ἄρχοντα καὶ
δικαστὴν ἐφ᾽ ἡμᾶς;
28 Μὴ ἀνελεῖν με σὺ θέλεις, ὃν τρόπον
ἀνεῖλες χθὲς τὸν Αἰγύπτιον;
29 Ἔφυγε δὲ Μωσῆς ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ,
καὶ ἐγένετο πάροικος ἐν γῇ Μαδιάμ, οὗ ἐγέ-
ννησεν Υἱοὺς δύο.
30 Καὶ πληρωθέντων ἐτῶν τεσσαράκοντα,
ὤφθη αὐτῷ ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ ὄρους Σινᾶ ἄγγε-
λος Κυρίου ἐν φλογὶ πυρὸς βάτου.
31 Ὁ δὲ Μωσῆς ἰδὼν, ἐθαύμασε τὸ
ὅρα-

ὅραμα· προσερχομένου δὲ αὐτοῦ κατανοῆσαι,
ἐγένετο φωνὴ Κυρίου πρὸς αὐτόν.
32 Ἐγὼ ὁ Θεὸς τῶν πατέρων σου, ὁ Θεὸς
Ἀβραὰμ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰα-
κώβ. Ἔντρομος δὲ γενόμενος Μωσῆς οὐκ
ἐτόλμα κατανοῆσαι.
33 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Κύριος· Λῦσον τὸ
ὑπόδημα τῶν ποδῶν σου· ὁ γὰρ τόπος ἐν ᾧ
ἕστηκας, γῆ ἁγία ἐστίν.
34 Ἰδὼν εἶδον τὴν κάκωσιν τοῦ λαοῦ μου τοῦ
ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ τοῦ στεναγμοῦ αὐτῶν ἤκουσα,
καὶ κατέβην ἐξελέσθαι αὐτούς· καὶ νῦν δεῦρο,
ἀποστελῶ σε εἰς Αἴγυπτον.
35 Τοῦτον τὸν Μωϋσῆν ὃν ἠρνήσαντο, εἰ-
πόντες· Τίς σε κατέστησεν ἄρχοντα καὶ δικα-
στήν; τοῦτον ὁ Θεὸς ἄρχοντα καὶ λυτρωτὴν ἀπέ-
στειλεν ἐν χειρὶ ἀγγέλου τοῦ ὀφθέντος αὐτῷ ἐν
τῇ βάτῳ.
36 Οὗτος ἐξήγαγεν αὐτοὺς, ποιήσας τέ-
ρατα καὶ σημεῖα ἐν γῇ Αἰγύπτου, καὶ ἐν ἐρυ-
θρᾷ θαλάσσῃ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἔτη τεσσα-
ράκοντα.
37 Οὗτός ἐστιν ὁ Μωϋσῆς ὁ εἰπὼν τοῖς
Υἱοῖς Ἰσραήλ· Προφήτην ὑμῖν ἀναστήσει
Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν
ὡς ἐμέ· αὐτοῦ ἀκούσεσθε.
38 Οὗτός ἐστιν ὁ γενόμενος ἐν τῇ ἐκκλη-
σίᾳ ἐν τῇ ἐρήμῳ, μετὰ τοῦ ἀγγέλου τοῦ λαλοῦν-
τος αὐτῷ ἐν τῷ ὄρει Σινᾶ, καὶ τῶν πατέρων
ἡμῶν, ὃς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.
39 Ὧ οὐκ ἠθέλησαν ὑπήκοοι γενέσθαι οἱ
πατέρες ἡμῶν, ἀλλ᾽ ἀπώσαντο, καὶ ἐστράφη-
σαν ταῖς καρδίαις αὐτῶν εἰς Αἴγυπτον.
40 Εἰπόντες τῷ Ἀαρών· Ποίησον ἡμῖν

θεοὺς, οἳ προπορεύσονται ἡμῶν· ὁ γὰρ Μωσῆς
οὗτος ὃς ἐξήγαγεν ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου,
οὐκ οἴδαμεν τί γέγονεν αὐτῷ.
41 Καὶ ἐμοσχοποίησαν ἐν ταῖς ἡμέραις
ἐκείναις, καὶ ἀνήγαγον θυσίαν τῷ εἰδώλῳ, καὶ
εὐφραίνοντο ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτῶν.
42 Ἔστρεψε δὲ ὁ Θεὸς, καὶ παρέδωκεν αὐ-
τοὺς λατρεύειν τῇ στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, καθὼς γέ-
γραπται ἐν βίβλῳ τῶν προφητῶν· Μὴ σφά-
για καὶ θυσίας προσηνέγκατέ μοι ἔτη τεσσα-
ράκοντα ἐν τῇ ἐρήμῳ, οἶκος Ἰσραήλ;
43 Καὶ ἀνελάβετε τὴν σκηνὴν τοῦ Μολὸχ,
καὶ τὸ ἄστρον τοῦ Θεοῦ ὑμῶν Ῥεμφὰν, τοὺς τύπους
οὓς ἐποιήσατε προσκυνεῖν αὐτοῖς· καὶ μετοικιῶ
ὑμᾶς ἐπέκεινα Βαβυλῶνος.
44 Ἡ σκηνὴ τοῦ μαρτυρίου ἦν ἐν τοῖς πα-
τράσιν ἡμῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καθὼς διετάξατο
ὁ λαλῶν τῷ Μωσῇ, ποιῆσαι αὐτὴν κατὰ
τὸν τόπον ὃν ἑωράκει.
45 Ἣν καὶ εἰσήγαγον διαδεξάμενοι οἱ πα-
τέρες ἡμῶν μετὰ Ἰησοῦ ἐν τῇ κατασχέσει τῶν
ἐθνῶν, ὧν ἔξωσεν ὁ Θεὸς ἀπὸ προσώπου τῶν
πατέρων ἡμῶν, ἕως τῶν ἡμερῶν Δαβίδ.
46 Ὃς εὗρε χάριν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, καὶ
ᾐτήσατο εὑρεῖν σκήνωμα τῷ Θεῷ Ἰακώβ.
47 Σολομῶν δὲ ᾠκοδόμησεν αὐτῷ οἶκον.
48 Ἀλλ' οὐχ ὁ ὕψιστος ἐν χειροποιήτοις
ναοῖς κατοικεῖ, καθὼς ὁ προφήτης λέγει·
49 Ὁ οὐρανός μοι θρόνος, ἡ δὲ γῆ ὑπο-
πόδιον τῶν ποδῶν μου· Ποῖον οἶκον οἰκοδο-
μήσετέ μοι, λέγει Κύριος; ἢ τίς τόπος κα-
ταπαύσεως μου;
50 Οὐχὶ ἡ χείρ μου ἐποίησε ταῦτα πάντα;
51 Σκληροτράχηλοι, καὶ ἀπερίτμητοι τῇ
καρ-

καρδίᾳ καὶ τοῖς ὠσὶν, ὑμεῖς ἀεὶ τῷ Πνεύματι τῷ ἁγίῳ ἀντιπίπτετε, ὡς οἱ πατέρες ὑμῶν καὶ ὑμεῖς.

42 Τίνα τῶν προφητῶν οὐκ ἐδίωξαν οἱ πατέρες ὑμῶν; καὶ ἀπέκτειναν τοὺς προκαταγγείλαντας περὶ τῆς ἐλεύσεως τοῦ δικαίου, οὗ νῦν ὑμεῖς προδόται καὶ φονεῖς γεγένησθε.

53 Οἵτινες ἐλάβετε τὸν νόμον εἰς διαταγὰς ἀγγέλων, καὶ οὐκ ἐφυλάξατε.

54 Ἀκούοντες δὲ ταῦτα, διεπρίοντο ταῖς καρδίαις αὐτῶν, καὶ ἔβρυχον τοὺς ὀδόντας ἐπ᾽ αὐτόν.

55 Ὑπάρχων δὲ πλήρης Πνεύματος ἁγίου, ἀτενίσας εἰς τὸν οὐρανὸν, εἶδε δόξαν Θεοῦ, καὶ Ἰησοῦν ἑστῶτα ἐκ δεξιῶν τοῦ Θεοῦ.

56 Καὶ εἶπεν· Ἰδοὺ, θεωρῶ τοὺς οὐρανοὺς ἀνεῳγμένους, καὶ τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐκ δεξιῶν ἑστῶτα τοῦ Θεοῦ.

57 Κράξαντες δὲ φωνῇ μεγάλῃ, συνέσχον τὰ ὦτα αὐτῶν, καὶ ὥρμησαν ὁμοθυμαδὸν ἐπ᾽ αὐτόν.

58 Καὶ ἐκβαλόντες ἔξω τῆς πόλεως, ἐλιθοβόλουν· καὶ οἱ μάρτυρες ἀπέθεντο τὰ ἱμάτια αὐτῶν παρὰ τοὺς πόδας νεανίου καλουμένου Σαύλου,

59 Καὶ ἐλιθοβόλουν τὸν Στέφανον, ἐπικαλούμενον καὶ λέγοντα· Κύριε Ἰησοῦ, δέξαι τὸ πνεῦμά μου.

60 Θεὶς δὲ τὰ γόνατα, ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ· Κύριε, μὴ στήσῃς αὐτοῖς τὴν ἁμαρτίαν ταύτην· Καὶ τοῦτο εἰπὼν, ἐκοιμήθη.

ΚΕΦΑ΄ΛΑΙΟΝ, Η΄. 8.

1 Σαῦλος δὲ ἦν συνευδοκῶν τῇ ἀναι-
ρέσει αὐτοῦ· Ἐγένετο δὲ ἐν ἐκείνῃ
τῇ ἡμέρᾳ διωγμὸς μέγας ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν
τὴν ἐν Ἱεροσολύμοις, πάντες τε διεσπάρη-
σαν κατὰ τὰς χώρας τῆς Ἰουδαίας καὶ Σαμα-
ρείας, πλὴν τῶν ἀποστόλων.
2 Συνεκόμισαν δὲ τὸν Στέφανον ἄνδρες
εὐλαβεῖς, καὶ ἐποιήσαντο κοπετὸν μέγαν
ἐπ᾽ αὐτῷ.
3 Σαῦλος δὲ ἐλυμαίνετο τὴν ἐκκλησίαν,
κατὰ τοὺς οἴκους εἰσπορευόμενος, σύρων τε ἄν-
δρας καὶ γυναῖκας, παρεδίδου εἰς φυλακήν.
4 Οἱ μὲν οὖν διασπαρέντες διῆλθον,
εὐαγγελιζόμενοι τὸν λόγον.
5 Φίλιππος δὲ κατελθὼν εἰς πόλιν τῆς
Σαμαρείας, ἐκήρυσσεν αὐτοῖς τὸν Χριστόν.
6 Προσεῖχόν τε οἱ ὄχλοι τοῖς λεγομένοις
ὑπὸ τοῦ Φιλίππου ὁμοθυμαδὸν, ἐν τῷ ἀ-
κούειν αὐτοὺς καὶ βλέπειν τὰ σημεῖα ἃ ἐ-
ποίει.
7 Πολλῶν γὰρ τῶν ἐχόντων πνεύματα ἀ-
κάθαρτα, βοῶντα μεγάλῃ φωνῇ, ἐξήρχετο·
πολλοὶ δὲ παραλελυμένοι καὶ χωλοὶ ἐθερα-
πεύθησαν.
8 Καὶ ἐγένετο χαρὰ μεγάλη ἐν τῇ πόλει
ἐκείνῃ.
9 Ἀνὴρ δέ τις ὀνόματι Σίμων, προϋ-
πῆρχεν ἐν τῇ πόλει μαγεύων καὶ ἐξιστῶν τὸ ἔθνος
τῆς Σαμαρείας, λέγων εἶναί τινα ἑαυτὸν μέγαν.
10 Ὧ προσεῖχον πάντες ἀπὸ μικροῦ ἕως
μεγάλου, λέγοντες· Οὗτός ἐστιν ἡ δύναμις
τοῦ Θεοῦ ἡ μεγάλη.



11 Προσεῖχον δὲ αὐτῷ, διὰ τὸ ἱκανῷ χρόνῳ ταῖς μαγείαις ἐξεστακέναι αὐτούς.

12 Ὅτε δὲ ἐπίστευσαν τῷ Φιλίππῳ εὐαγγελιζομένῳ τὰ περὶ τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ, καὶ τοῦ ὀνόματος τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐβαπτίζοντο ἄνδρες τε καὶ γυναῖκες.

13 Ὁ δὲ Σίμων καὶ αὐτὸς ἐπίστευσε, καὶ βαπτισθεὶς ἦν προσκαρτερῶν τῷ Φιλίππῳ· θεωρῶν τε σημεῖα καὶ δυνάμεις μεγάλας γινομένας, ἐξίστατο.

14 Ἀκούσαντες δὲ οἱ ἐν Ἱεροσολύμοις ἀπόστολοι ὅτι δέδεκται ἡ Σαμάρεια τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀπέστειλαν πρὸς αὐτοὺς τὸν Πέτρον καὶ Ἰωάννην.

15 Οἵτινες καταβάντες προσηύξαντο περὶ αὐτῶν, ὅπως λάβωσι Πνεῦμα ἅγιον.

16 (Οὔπω γὰρ ἦν ἐπ' οὐδενὶ αὐτῶν ἐπιπεπτωκός, μόνον δὲ βεβαπτισμένοι ὑπῆρχον εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.)

17 Τότε ἐπετίθουν τὰς χεῖρας ἐπ' αὐτούς, καὶ ἐλάμβανον Πνεῦμα ἅγιον.

18 Θεασάμενος δὲ ὁ Σίμων ὅτι διὰ τῆς ἐπιθέσεως τῶν χειρῶν τῶν ἀποστόλων δίδοται τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον, προσήνεγκεν αὐτοῖς χρήματα,

19 Λέγων· Δότε κἀμοὶ τὴν ἐξουσίαν ταύτην, ἵνα ᾧ ἐὰν ἐπιθῶ τὰς χεῖρας, λαμβάνῃ Πνεῦμα ἅγιον.

20 Πέτρος δὲ εἶπε πρὸς αὐτόν· Τὸ ἀργύριόν σου σὺν σοὶ εἴη εἰς ἀπώλειαν, ὅτι τὴν δωρεὰν τοῦ Θεοῦ ἐνόμισας διὰ χρημάτων κτᾶσθαι.

21 Οὐκ ἔστι σοι μερὶς οὐδὲ κλῆρος ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ. ἡ γὰρ καρδία σου οὐκ ἔστιν εὐθεῖα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

22 Με-

22 Μετανόησον ὖν ἀπὸ τῆς κακίας σου
ταύτης, καὶ δεήθητι τῷ Θεῷ, εἰ ἄρα ἀφεθή-
σεταί σοι ἡ ἐπίνοια τῆς καρδίας σου.
23 Εἰς γὰρ χολὴν πικρίας καὶ σύνδεσμον
ἀδικίας ὁρῶ σε ὄντα.
24 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Σίμων εἶπε· Δεή-
θητε ὑμεῖς ὑπὲρ ἐμῦ πρὸς τὸν Κύριον, ὅπως
μηδὲν ἐπέλθῃ ἐπ' ἐμὲ ὧν εἰρήκατε.
25 Οἱ μὲν ὖν, διαμαρτυράμενοι, καὶ λα-
λήσαντες τὸν λόγον τῦ Κυρίυ, ὑπέστρεψαν
εἰς Ἱερυσαλὴμ, πολλάς τε κώμας τῶν Σα-
μαρειτῶν εὐηγγελίσαντο.
26 Ἄγγελος δὲ Κυρίυ ἐλάλησε πρὸς
Φίλιππον, λέγων· Ἀνάστηθι καὶ πορεύου
κατὰ μεσημβρίαν, ἐπὶ τὴν ὁδὸν τὴν κατα-
βαίνυσαν ἀπὸ Ἱερυσαλὴμ εἰς Γάζαν· αὕ-
τη ἐστὶν ἔρημος.
27 Καὶ ἀναστὰς ἐπορεύθη· καὶ ἰδὺ, ἀνὴρ
Αἰθίοψ εὐνῦχος, δυνάστης Κανδάκης τῆς
βασιλίσσης Αἰθιόπων, ὃς ἦν ἐπὶ πάσης
τῆς γάζης αὐτῆς, ὃς ἐληλύθει προσκυνή-
σων εἰς Ἱερυσαλήμ.
28 Ἦν τε ὑποστρέφων, καὶ καθήμενος ἐπὶ
τῦ ἅρματος αὐτῦ, καὶ ἀνεγίνωσκε τὸν προ-
φήτην Ἠσαΐαν.
29 Εἶπε δὲ τὸ Πνεῦμα τῷ Φιλίππῳ·
Πρόσελθε, καὶ κολλήθητι τῷ ἅρματι τύτῳ.
30 Προσδραμὼν δὲ ὁ Φίλιππος ἤκυσεν
αὐτῦ ἀναγινώσκοντος τὸν προφήτην Ἠσαΐαν,
καὶ εἶπεν· Ἆρά γε γινώσκεις ἃ ἀναγινώσκεις;
31 Ὁ δὲ εἶπε. Πῶς γὰρ ἂν δυναίμην,
ἐὰν μήτις ὁδηγήσῃ με; Παρεκάλεσέ τε τὸν
Φίλιππον, ἀναβάντα καθίσαι σὺν αὐτῷ.
32 Ἡ δὲ περιοχὴ τῆς γραφῆς ἣν ἀνεγί-



νωσκεν, ἦν αὕτη· Ὡς πρόβατον ἐπὶ σφαγὴν ἤχθη· καὶ ὡς ἀμνὸς ἐναντίον τοῦ κείροντος αὐτὸν ἄφωνος, οὕτως οὐκ ἀνοίγει τὸ στόμα αὐτοῦ.

33 Ἐν τῇ ταπεινώσει αὐτοῦ ἡ κρίσις αὐτοῦ ἤρθη· τὴν δὲ γενεὰν αὐτοῦ τίς διηγήσεται; ὅτι αἴρεται ἀπὸ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτοῦ.

34 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ εὐνοῦχος τῷ Φιλίππῳ, εἶπε· Δέομαί σου, περὶ τίνος ὁ προφήτης λέγει τοῦτο; περὶ ἑαυτοῦ, ἢ περὶ ἑτέρου τινός;

35 Ἀνοίξας δὲ ὁ Φίλιππος τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς γραφῆς ταύτης, εὐηγγελίσατο αὐτῷ τὸν Ἰησοῦν.

36 Ὡς δὲ ἐπορεύοντο κατὰ τὴν ὁδὸν, ἦλθον ἐπί τι ὕδωρ· καί φησιν ὁ εὐνοῦχος· Ἰδοὺ ὕδωρ· τί κωλύει με βαπτισθῆναι;

37 Εἶπε δὲ ὁ Φίλιππος· Εἰ πιστεύεις ἐξ ὅλης τῆς καρδίας, ἔξεστιν· Ἀποκριθεὶς δὲ εἶπε· Πιστεύω τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ εἶναι τὸν Ἰησοῦν Χριστόν.

38 Καὶ ἐκέλευσε στῆναι τὸ ἅρμα· καὶ κατέβησαν ἀμφότεροι εἰς τὸ ὕδωρ, ὅ, τε Φίλιππος καὶ ὁ εὐνοῦχος· καὶ ἐβάπτισεν αὐτόν.

39 Ὅτε δὲ ἀνέβησαν ἐκ τοῦ ὕδατος, Πνεῦμα Κυρίου ἥρπασε τὸν Φίλιππον, καὶ οὐκ εἶδεν αὐτὸν οὐκέτι ὁ εὐνοῦχος· ἐπορεύετο γὰρ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ χαίρων.

40 Φίλιππος δὲ εὑρέθη εἰς Ἄζωτον· καὶ διερχόμενος εὐηγγελίζετο τὰς πόλεις πάσας, ἕως τοῦ ἐλθεῖν αὐτὸν εἰς Καισάρειαν.

ΚΕ.

ΚΕΦΑ´ΛΑΙΟΝ, Θ´. 9

1 Ο῾ Δὲ Σαῦλος ἔτι ἐμπνέων ἀπει-
λῆς καὶ φόνου εἰς τοὺς μαθητὰς τοῦ
Κυρίου, προσελθὼν τῷ Ἀρχιερεῖ,
2 Ἠτήσατο παρ' αὐτοῦ ἐπιστολὰς εἰς Δα-
μασκὸν πρὸς τὰς συναγωγάς, ὅπως ἐάν τινας
εὕρῃ τῆς ὁδοῦ ὄντας ἄνδρας τε καὶ γυναῖκας δε-
δεμένους ἀγάγῃ εἰς Ἱερουσαλήμ.
3 Ἐν δὲ τῷ πορεύεσθαι, ἐγένετο αὐτὸν
ἐγγίζειν τῇ Δαμασκῷ· καὶ ἐξαίφνης περιή-
στραψεν αὐτὸν φῶς ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ.
4 Καὶ πεσὼν ἐπὶ τὴν γῆν, ἤκουσε φωνὴν
λέγουσαν αὐτῷ· Σαοὺλ, Σαοὺλ, τί με
διώκεις;
5 Εἶπε δέ· Τίς εἶ, Κύριε; Ὁ δὲ Κύ-
ριος εἶπεν· Ἐγώ εἰμι Ἰησοῦς ὃν σὺ διώκεις.
σκληρόν σοι πρὸς κέντρα λακτίζειν.
6 Τρέμων τε καὶ θαμβῶν εἶπε· Κύριε, τί
με θέλεις ποιῆσαι; Καὶ ὁ Κύριος πρὸς αὐ-
τόν· Ἀνάστηθι καὶ εἴσελθε εἰς τὴν πόλιν, καὶ
λαληθήσεταί σοι τί σε δεῖ ποιεῖν.
7 Οἱ δὲ ἄνδρες οἱ συνοδεύοντες αὐτῷ,
εἱστήκεισαν ἐννεοί, ἀκούοντες μὲν τῆς φωνῆς,
μηδένα δὲ θεωροῦντες.
8 Ἠγέρθη δὲ ὁ Σαῦλος ἀπὸ τῆς γῆς·
ἀνεῳγμένων δὲ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ, οὐδένα
ἔβλεπε· χειραγωγοῦντες δὲ αὐτὸν, εἰσήγα-
γον εἰς Δαμασκόν.
9 Καὶ ἦν ἡμέρας τρεῖς μὴ βλέπων· καὶ οὐκ
ἔφαγεν, οὐδὲ ἔπιεν.
10 Ἦν δέ τις μαθητὴς ἐν Δαμασκῷ ὀνό-
ματι Ἀνανίας, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ Κύριος

ἐν

ἐν ὁράματι· Ἀνανία. Ὁ δὲ εἶπεν· Ἰδοὺ
ἐγώ, Κύριε.
11 Ὁ δὲ Κύριος πρὸς αὐτόν· Ἀναστὰς
πορεύθητι ἐπὶ τὴν ῥύμην τὴν καλουμένην Εὐ-
θεῖαν, καὶ ζήτησον ἐν οἰκίᾳ Ἰούδα Σαῦλον
ὀνόματι, Ταρσέα· ἰδοὺ γὰρ προσεύχεται.
12 Καὶ εἶδεν ἐν ὁράματι ἄνδρα ὀνόματι
Ἀνανίαν εἰσελθόντα, καὶ ἐπιθέντα αὐτῷ χεῖ-
ρα, ὅπως ἀναβλέψῃ.
13 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Ἀνανίας· Κύριε, ἀ-
κήκοα ἀπὸ πολλῶν περὶ τοῦ ἀνδρὸς τούτου, ὅσα
κακὰ ἐποίησε τοῖς ἁγίοις σου ἐν Ἱερουσαλήμ.
14 Καὶ ὧδε ἔχει ἐξουσίαν παρὰ τῶν ἀρχιε-
ρέων, δῆσαι πάντας τοὺς ἐπικαλουμένους τὸ
ὄνομά σου.
15 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ Κύριος· Πο-
ρεύου, ὅτι σκεῦος ἐκλογῆς μοί ἐστιν οὗτος, τοῦ
βαστάσαι τὸ ὄνομά μου ἐνώπιον ἐθνῶν, καὶ βα-
σιλέων, Υἱῶν τε Ἰσραήλ.
16 Ἐγὼ γὰρ ὑποδείξω αὐτῷ ὅσα δεῖ αὐ-
τὸν ὑπὲρ τοῦ ὀνόματός μου παθεῖν.
17 Ἀπῆλθε δὲ Ἀνανίας καὶ εἰσῆλθεν εἰς
τὴν οἰκίαν· καὶ ἐπιθεὶς ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας,
εἶπε· Σαοὺλ ἀδελφέ, ὁ Κύριος ἀπέσταλκέ
με (Ἰησοῦς ὁ ὀφθείς σοι ἐν τῇ ὁδῷ ᾗ ἤρχου)
ὅπως ἀναβλέψῃς, καὶ πλησθῇς Πνεύμα-
τος ἁγίου.
18 Καὶ εὐθέως ἀπέπεσον ἀπὸ τῶν ὀφθαλ-
μῶν αὐτοῦ ὡσεὶ λεπίδες, ἀνέβλεψέ τε πα-
ραχρῆμα· καὶ ἀναστὰς ἐβαπτίσθη.
19 Καὶ λαβὼν τροφὴν ἐνίσχυσεν. Ἐγένε-
το δὲ ὁ Σαῦλος μετὰ τῶν ἐν Δαμασκῷ μα-
θητῶν ἡμέρας τινάς.
20 Καὶ εὐθέως ἐν ταῖς συναγωγαῖς ἐκή-

ρυσσε τὸν Χριστὸν, ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

21 Ἐξίσταντο δὲ πάντες οἱ ἀκούοντες, καὶ ἔλεγον· Οὐχ οὗτός ἐστιν ὁ πορθήσας ἐν Ἱερουσαλὴμ τοὺς ἐπικαλουμένους τὸ ὄνομα τοῦτο; καὶ ὧδε εἰς τοῦτο ἐληλύθει ἵνα δεδεμένους αὐτοὺς ἀγάγῃ ἐπὶ τοὺς ἀρχιερεῖς.

22 Σαῦλος δὲ μᾶλλον ἐνεδυναμοῦτο, καὶ συνέχυνε τοὺς Ἰουδαίους τοὺς κατοικοῦντας ἐν Δαμασκῷ, συμβιβάζων ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός.

23 Ὡς δὲ ἐπληροῦντο ἡμέραι ἱκαναὶ, συνεβουλεύσαντο οἱ Ἰουδαῖοι ἀνελεῖν αὐτόν.

24 Ἐγνώσθη δὲ τῷ Σαύλῳ ἡ ἐπιβουλὴ αὐτῶν. παρετήρουν τε τὰς πύλας ἡμέρας τε καὶ νυκτὸς, ὅπως αὐτὸν ἀνέλωσι.

25 Λαβόντες δὲ αὐτὸν οἱ μαθηταὶ νυκτὸς, καθῆκαν διὰ τοῦ τείχους, χαλάσαντες ἐν σπυρίδι.

26 Παραγενόμενος δὲ ὁ Σαῦλος εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἐπειρᾶτο κολλᾶσθαι τοῖς μαθηταῖς· καὶ πάντες ἐφοβοῦντο αὐτὸν, μὴ πιστεύοντες ὅτι ἐστὶ μαθητής.

27 Βαρνάβας δὲ ἐπιλαβόμενος αὐτὸν, ἤγαγε πρὸς τοὺς ἀποστόλους, καὶ διηγήσατο αὐτοῖς πῶς ἐν τῇ ὁδῷ εἶδε τὸν Κύριον, καὶ ὅτι ἐλάλησεν αὐτῷ, καὶ πῶς ἐν Δαμασκῷ ἐπαῤῥησιάσατο ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Ἰησοῦ.

28 Καὶ ἦν μετ' αὐτῶν εἰσπορευόμενος καὶ ἐκπορευόμενος ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ παῤῥησιαζόμενος ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

29 Ἐλάλει τε καὶ συνεζήτει πρὸς τοὺς Ἑλληνιστάς· οἱ δὲ ἐπεχείρουν αὐτὸν ἀνελεῖν.

30 Ἐπιγνόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ κατήγα-

γον αὐτὸν εἰς Καισάρειαν, καὶ ἐξαπέστειλαν αὐτὸν εἰς Ταρσόν.

31 Αἱ μὲν οὖν ἐκκλησίαι καθ' ὅλης τῆς Ἰουδαίας καὶ Γαλιλαίας καὶ Σαμαρείας εἶχον εἰρήνην, οἰκοδομούμεναι καὶ πορευόμεναι τῷ φόβῳ τοῦ Κυρίου, καὶ τῇ παρακλήσει τοῦ ἁγίου Πνεύματος ἐπληθύνοντο.

32 Ἐγένετο δὲ Πέτρον διερχόμενον διὰ πάντων, κατελθεῖν καὶ πρὸς τοὺς ἁγίους τοὺς κατοικοῦντας Λύδδαν.

33 Εὗρε δὲ ἐκεῖ ἄνθρωπόν τινα Αἰνέαν ὀνόματι, ἐξ ἐτῶν ὀκτὼ κατακείμενον ἐπὶ κραββάτῳ, ὃς ἦν παραλελυμένος.

34 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Πέτρος· Αἰνέα, ἰᾶταί σε Ἰησοῦς ὁ Χριστός· ἀνάστηθι, καὶ στρῶσον σεαυτῷ. Καὶ εὐθέως ἀνέστη.

35 Καὶ εἶδον αὐτὸν πάντες οἱ κατοικοῦντες Λύδδαν καὶ τὸν Σάρωνα, οἵτινες ἐπέστρεψαν ἐπὶ τὸν Κύριον.

36 Ἐν Ἰόππῃ δέ τις ἦν μαθήτρια ὀνόματι Ταβιθά, ἣ διερμηνευομένη λέγεται Δορκάς· αὕτη ἦν πλήρης ἀγαθῶν ἔργων καὶ ἐλεημοσυνῶν ὧν ἐποίει.

37 Ἐγένετο δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἀσθενήσασαν αὐτὴν ἀποθανεῖν· λούσαντες δὲ αὐτὴν ἔθηκαν ἐν ὑπερῴῳ.

38 Ἐγγὺς δὲ οὔσης Λύδδης τῇ Ἰόππῃ, οἱ μαθηταὶ ἀκούσαντες ὅτι Πέτρος ἐστὶν ἐν αὐτῇ, ἀπέστειλαν δύο ἄνδρας πρὸς αὐτόν, παρακαλοῦντες μὴ ὀκνῆσαι διελθεῖν ἕως αὐτῶν.

39 Ἀναστὰς δὲ Πέτρος συνῆλθεν αὐτοῖς· ὃν παραγενόμενον ἀνήγαγον εἰς τὸ ὑπερῷον, καὶ παρέστησαν αὐτῷ πᾶσαι αἱ χῆραι κλαίου-

σαι,

σαι καὶ ἐπιδεικνύμεναι χιτῶνας καὶ ἱμάτια ὅσα ἐποίει μετ' αὐτῶν οὖσα ἡ Δορκάς.

40 Ἐκβαλὼν δὲ ἔξω πάντας ὁ Πέτρος, θεὶς τὰ γόνατα προσηύξατο· καὶ ἐπιστρέψας πρὸς τὸ σῶμα, εἶπε· Ταβιθά, ἀνάστηθι. Ἡ δὲ ἤνοιξε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῆς· καὶ ἰδοῦσα τὸν Πέτρον, ἀνεκάθισε.

41 Δοὺς δὲ αὐτῇ χεῖρα, ἀνέστησεν αὐτήν. φωνήσας δὲ τοὺς ἁγίους καὶ τὰς χήρας, παρέστησεν αὐτὴν ζῶσαν.

42 Γνωστὸν δὲ ἐγένετο καθ' ὅλης τῆς Ἰόππης· καὶ πολλοὶ ἐπίστευσαν ἐπὶ τὸν Κύριον.

43 Ἐγένετο δὲ ἡμέρας ἱκανὰς μεῖναι αὐτὸν ἐν Ἰόππῃ παρά τινι Σίμωνι βυρσεῖ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ι'. 10.

1 Ἀνὴρ δέ τις ἦν ἐν Καισαρείᾳ ὀνόματι Κορνήλιος, ἑκατοντάρχης ἐκ σπείρης τῆς καλουμένης Ἰταλικῆς.

2 Εὐσεβὴς καὶ φοβούμενος τὸν Θεὸν, σὺν παντὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, ποιῶν τε ἐλεημοσύνας πολλὰς τῷ λαῷ, καὶ δεόμενος τοῦ Θεοῦ διαπαντός.

3 Εἶδεν ἐν ὁράματι φανερῶς, ὡσεὶ ὥραν ἐννάτην τῆς ἡμέρας, ἄγγελον τοῦ Θεοῦ εἰσελθόντα πρὸς αὐτὸν, καὶ εἰπόντα αὐτῷ· Κορνήλιε.

4 Ὁ δὲ ἀτενίσας αὐτῷ, καὶ ἔμφοβος γενόμενος, εἶπε· Τί ἐστι Κύριε; εἶπε δὲ αὐτῷ· Αἱ προσευχαί σου καὶ αἱ ἐλεημοσύναι σου ἀνέβησαν εἰς μνημόσυνον ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

5 Καὶ νῦν πέμψον εἰς Ἰόππην ἄνδρας, καὶ μετάπεμψαι Σίμωνα, ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρος.

6 Οὗτος ξενίζεται παρά τινι Σίμωνι

βύρ-

βυρσεῖ, ᾧ ἐστιν οἰκία παρὰ θάλασσαν· οὗτος
λαλήσει σοι τί σε δεῖ ποιεῖν.

7 Ὡς δὲ ἀπῆλθεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν
τῷ Κορνηλίῳ, φωνήσας δύο τῶν οἰκετῶν αὐ-
τοῦ, καὶ στρατιώτην εὐσεβῆ τῶν προσκαρτε-
ρούντων αὐτῷ.

8 Καὶ ἐξηγησάμενος αὐτοῖς ἅπαντα, ἀ-
πέστειλεν αὐτοὺς εἰς τὴν Ἰόππην.

9 Τῇ δὲ ἐπαύριον ὁδοιπορούντων ἐκείνων,
καὶ τῇ πόλει ἐγγιζόντων, ἀνέβη Πέτρος ἐπὶ τὸ
δῶμα προσεύξασθαι, περὶ ὥραν ἕκτην.

10 Ἐγένετο δὲ πρόσπεινος, καὶ ἤθελε γεύ-
σασθαι· παρασκευαζόντων δὲ ἐκείνων, ἐπέ-
πεσεν ἐπ' αὐτὸν ἔκστασις·

11 Καὶ θεωρεῖ τὸν οὐρανὸν ἀνεῳγμένον,
καὶ καταβαῖνον ἐπ' αὐτὸν σκεῦός τι ὡς ὀθόνην
μεγάλην, τέσσαρσιν ἀρχαῖς δεδεμένον, καὶ
καὶ καθιέμενον ἐπὶ τῆς γῆς.

12 Ἐν ᾧ ὑπῆρχε πάντα τὰ τετράποδα τῆς
γῆς, καὶ τὰ θηρία, καὶ τὰ ἑρπετὰ, καὶ τὰ πε-
τεινὰ τοῦ οὐρανοῦ.

13 Καὶ ἐγένετο φωνὴ πρὸς αὐτόν· Ἀνα-
στὰς, Πέτρε, θῦσον καὶ φάγε.

14 Ὁ δὲ Πέτρος εἶπε· Μηδαμῶς,
Κύριε· ὅτι οὐδέποτε ἔφαγον πᾶν κοινὸν ἢ
ἀκάθαρτον.

15 Καὶ φωνὴ πάλιν ἐκ δευτέρου πρὸς
αὐτόν· Ἃ ὁ Θεὸς ἐκαθάρισε, σὺ μὴ
κοίνου.

16 Τοῦτο δὲ ἐγένετο ἐπὶ τρίς. καὶ πάλιν
ἀνελήφθη τὸ σκεῦος εἰς τὸν οὐρανόν.

17 Ὡς δὲ ἐν ἑαυτῷ διηπόρει ὁ Πέτρος
τί ἂν εἴη τὸ ὅραμα ὃ εἶδε, καὶ ἰδοὺ, οἱ ἄν-
δρες οἱ ἀπεσταλμένοι ἀπὸ τοῦ Κορνηλίου,

διε-

διερωτήσαντες τὴν οἰκίαν Σίμωνος, ἐπέστησαν ἐπὶ τὸν πυλῶνα.

18 Καὶ φωνήσαντες ἐπυνθάνοντο εἰ Σίμων ὁ ἐπικαλούμενος Πέτρος ἐνθάδε ξενίζεται.

19 Τοῦ δὲ Πέτρου ἐνθυμουμένου περὶ τοῦ ὁράματος, εἶπεν αὐτῷ τὸ Πνεῦμα· Ἰδοὺ, ἄνδρες τρεῖς ζητοῦσί σε.

20 Ἀλλὰ ἀναστὰς κατάβηθι, καὶ πορεύου σὺν αὐτοῖς, μηδὲν διακρινόμενος· διότι ἐγὼ ἀπέσταλκα αὐτούς.

21 Καταβὰς δὲ Πέτρος πρὸς τοὺς ἄνδρας τοὺς ἀπεσταλμένους ἀπὸ τοῦ Κορνηλίου πρὸς αὐτὸν, εἶπεν· Ἰδοὺ, ἐγώ εἰμι ὃν ζητεῖτε· τίς ἡ αἰτία δι᾽ ἣν πάρεστε;

22 Οἱ δὲ εἶπον, Κορνήλιος ἑκατοντάρχης, ἀνὴρ δίκαιος καὶ φοβούμενος τὸν Θεὸν, μαρτυρούμενός τε ὑπὸ ὅλου τοῦ ἔθνους τῶν Ἰουδαίων, ἐχρηματίσθη ὑπὸ ἀγγέλου ἁγίου μεταπέμψασθαί σε εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ἀκοῦσαι ῥήματα παρὰ σοῦ.

23 Εἰσκαλεσάμενος οὖν αὐτοὺς ἐξένισε. Τῇ δὲ ἐπαύριον ὁ Πέτρος ἐξῆλθε σὺν αὐτοῖς, καί τινες τῶν ἀδελφῶν τῶν ἀπὸ τῆς Ἰόππης συνῆλθον αὐτῷ.

24 Καὶ τῇ ἐπαύριον εἰσῆλθον εἰς τὴν Καισάρειαν· ὁ δὲ Κορνήλιος ἦν προσδοκῶν αὐτοὺς, συγκαλεσάμενος τοὺς συγγενεῖς αὐτοῦ καὶ τοὺς ἀναγκαίους φίλους.

25 Ὡς δὲ ἐγένετο εἰσελθεῖν τὸν Πέτρον, συναντήσας αὐτῷ ὁ Κορνήλιος, πεσὼν ἐπὶ τοὺς πόδας, προσεκύνησεν.

26 Ὁ δὲ Πέτρος αὐτὸν ἤγειρε, λέγων· Ἀνάστηθι· κἀγὼ αὐτὸς ἄνθρωπός εἰμι.

27 Καὶ

27 Καὶ συνομιλῶν αὐτῷ, εἰσῆλθε, καὶ
εὑρίσκει συνεληλυθότας πολλούς.
28 Ἔφη τε πρὸς αὐτούς· Ὑμεῖς ἐπίστασθε
ὡς ἀθέμιτόν ἐστιν ἀνδρὶ Ἰουδαίῳ κολλᾶσθαι ἢ
προσέρχεσθαι ἀλλοφύλῳ· καὶ ἐμοὶ ὁ Θεὸς ἔ-
δειξε μηδένα κοινὸν ἢ ἀκάθαρτον λέγειν ἄν-
θρωπον.
29 Διὸ καὶ ἀναντιῤῥήτως ἦλθον μεταπεμ-
φθείς. πυνθάνομαι οὖν, τίνι λόγῳ μετε-
πέμψασθέ με;
30 Καὶ ὁ Κορνήλιος ἔφη· Ἀπὸ τετάρτης
ἡμέρας μέχρι ταύτης τῆς ὥρας ἤμην νηστεύων,
καὶ τὴν ἐννάτην ὥραν προσευχόμενος ἐν τῷ οἴ-
κῳ μου· καὶ ἰδού, ἀνὴρ ἔστη ἐνώπιόν μου ἐν ἐ-
σθῆτι λαμπρᾷ.
31 Καί φησι· Κορνήλιε, εἰσηκούσθη σου ἡ
προσευχή, καὶ αἱ ἐλεημοσύναι σου ἐμνήσθησαν
ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.
32 Πέμψον οὖν εἰς Ἰόππην, καὶ μετακάλε-
σαι Σίμωνα, ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρος· οὗτος
ξενίζεται ἐν οἰκίᾳ Σίμωνος βυρσέως παρὰ
θάλασσαν· ὃς παραγενόμενος λαλήσει σοι.
33 Ἐξαυτῆς οὖν ἔπεμψα πρός σε· σύ τε κα-
λῶς ἐποίησας παραγενόμενος. νῦν οὖν πάν-
τες ἡμεῖς ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ πάρεσμεν, ἀκοῦσαι
πάντα τὰ προστεταγμένα σοι ὑπὸ τοῦ Θεοῦ.
34 Ἀνοίξας δὲ Πέτρος τὸ στόμα, εἶπεν·
Ἐπ' ἀληθείας καταλαμβάνομαι ὅτι οὐκ ἔστι
προσωπολήπτης ὁ Θεός·
35 Ἀλλ' ἐν παντὶ ἔθνει ὁ φοβούμενος αὐτόν,
καὶ ἐργαζόμενος δικαιοσύνην, δεκτὸς αὐτῷ ἐστι.
36 Τὸν λόγον ὃν ἀπέστειλε τοῖς Υἱοῖς Ἰ-
σραήλ, εὐαγγελιζόμενος εἰρήνην διὰ Ἰησοῦ
Χριστοῦ· οὗτός ἐστι πάντων Κύριος.

37 Ὑμεῖς οἴδατε τὸ γενόμενον ῥῆμα καθ'
ὅλης τῆς Ἰουδαίας, ἀρξάμενον ἀπὸ τῆς Γαλι-
λαίας μετὰ τὸ βάπτισμα ὃ ἐκήρυξεν Ἰωάννης.
38 Ἰησοῦν τὸν ἀπὸ Ναζαρὲτ, ὡς ἔχρισεν
αὐτὸν ὁ Θεὸς Πνεύματι ἁγίῳ καὶ δυνάμει, ὃς
διῆλθεν εὐεργετῶν καὶ ἰώμενος πάντας τοὺς κα-
ταδυναστευομένους ὑπὸ τοῦ διαβόλου, ὅτι ὁ
Θεὸς ἦν μετ' αὐτοῦ.
39 Καὶ ἡμεῖς ἐσμὲν μάρτυρες πάντων ὧν
ἐποίησεν ἔν τε τῇ χώρᾳ τῶν Ἰουδαίων καὶ ἐν
Ἱερουσαλήμ· ὃν ἀνεῖλον κρεμάσαντες ἐπὶ
ξύλου.
40 Τοῦτον ὁ Θεὸς ἤγειρε τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ,
καὶ ἔδωκεν αὐτὸν ἐμφανῆ γενέσθαι,
41 Οὐ παντὶ τῷ λαῷ, ἀλλὰ μάρτυσι
τοῖς προκεχειροτονημένοις ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, ἡμῖν,
οἵτινες συνεφάγομεν καὶ συνεπίομεν αὐτῷ με-
τὰ τὸ ἀναστῆναι αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.
42 Καὶ παρήγγειλεν ἡμῖν κηρύξαι τῷ
λαῷ, καὶ διαμαρτύρασθαι ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ ὡρισ-
μένος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ κριτὴς ζώντων καὶ νεκρῶν.
43 Τούτῳ πάντες οἱ προφῆται μαρτυροῦ-
σιν, ἄφεσιν ἁμαρτιῶν λαβεῖν διὰ τοῦ ὀνόμα-
τος αὐτοῦ πάντα τὸν πιστεύοντα εἰς αὐτόν.
44 Ἔτι λαλοῦντος τοῦ Πέτρου τὰ ῥήματα
ταῦτα, ἐπέπεσε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπὶ πάν-
τας τοὺς ἀκούοντας τὸν λόγον.
45 Καὶ ἐξέστησαν οἱ ἐκ περιτομῆς πιστοὶ
ὅσοι συνῆλθον τῷ Πέτρῳ, ὅτι καὶ ἐπὶ τὰ ἔθνη
ἡ δωρεὰ τοῦ ἁγίου Πνεύματος ἐκκέχυται.
46 Ἤκουον γὰρ αὐτῶν λαλούντων γλώσ-
σαις, καὶ μεγαλυνόντων τὸν Θεόν. Τότε ἀπε-
κρίθη ὁ Πέτρος.
47 Μήτι τὸ ὕδωρ κωλῦσαι δύναται τις

τοῦ μὴ βαπτισθῆναι τούτους, οἵτινες τὸ Πνεῦμα
τὸ ἅγιον ἔλαβον, καθὼς καὶ ἡμεῖς;
48 Προσέταξέ τε αὐτοὺς βαπτισθῆναι ἐν
τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου· Τότε ἠρώτησαν αὐ-
τὸν ἐπιμεῖναι ἡμέρας τινάς.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

1 ΗΚουσαν δὲ οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ ἀ-
δελφοὶ οἱ ὄντες κατὰ τὴν Ἰουδαίαν,
ὅτι καὶ τὰ ἔθνη ἐδέξαντο τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ.
2 Καὶ ὅτε ἀνέβη Πέτρος εἰς Ἱεροσόλυμα,
διεκρίνοντο πρὸς αὐτὸν οἱ ἐκ περιτομῆς,
3 Λέγοντες Ὅτι πρὸς ἄνδρας ἀκροβυστίαν
ἔχοντας εἰσῆλθες, καὶ συνέφαγες αὐτοῖς.
4 Ἀρξάμενος δὲ ὁ Πέτρος, ἐξετίθετο
αὐτοῖς καθεξῆς, λέγων·
5 Ἐγὼ ἤμην ἐν πόλει Ἰόππῃ προσευ-
χόμενος, καὶ εἶδον ἐν ἐκστάσει ὅραμα, κατα-
βαῖνον σκεῦός τι ὡς ὀθόνην μεγάλην, τέσ-
σαρσιν ἀρχαῖς καθιεμένην ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ
ἦλθεν ἄχρις ἐμοῦ·
6 Εἰς ἣν ἀτενίσας κατενόουν· καὶ εἶδον τὰ
τετράποδα τῆς γῆς, καὶ τὰ θηρία, καὶ τὰ ἑρ-
πετὰ, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ.
7 Ἤκουσα δὲ φωνῆς λεγούσης μοι· Ἀνα-
στὰς Πέτρε, θῦσον καὶ φάγε.
8 Εἶπον δέ· Μηδαμῶς Κύριε· ὅτι πᾶν
κοινὸν ἢ ἀκάθαρτον οὐδέποτε εἰσῆλθεν εἰς
τὸ στόμα μου.
9 Ἀπεκρίθη δέ μοι φωνὴ ἐκ δευτέρου ἐκ τοῦ
οὐρανοῦ· Ἃ ὁ Θεὸς ἐκαθάρισε, σὺ μὴ κοίνου.
10 Τοῦτο δὲ ἐγένετο ἐπὶ τρίς· καὶ πάλιν
ἀνεσπάσθη ἅπαντα εἰς τὸν οὐρανόν.
11 Καὶ ἰδοὺ, ἐξαυτῆς τρεῖς ἄνδρες ἐπέ-

ϛησαν ἐπὶ τὴν οἰκίαν ἐν ᾗ ἤμην, ἀπεςαλμέ-
νοι ἀπὸ Καισαρείας πρός με.
12 Εἶπε δέ μοι τὸ Πνεῦμα συνελθεῖν
αὐτοῖς μηδὲν διακρινόμενον· ἦλθον δὲ σὺν
ἐμοὶ καὶ οἱ ἓξ ἀδελφοὶ οὗτοι, καὶ εἰσήλθομεν
εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀνδρός.
13 Ἀπήγγειλέ τε ἡμῖν πῶς εἶδε τὸν ἄγ-
γελον ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ ςαθέντα καὶ εἰπόντα αὐ-
τῷ· Ἀπόςειλον εἰς Ἰόππην ἄνδρας, καὶ με-
τάπεμψαι Σίμωνα τὸν ἐπικαλούμενον Πέτρον,
14 Ὃς λαλήσει ῥήματα πρὸς σέ, ἐν οἷς
σωθήσῃ σὺ καὶ πᾶς ὁ οἶκός σου.
15 Ἐν δὲ τῷ ἄρξασθαί με λαλεῖν, ἐπέ-
πεσε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπ᾽ αὐτοὺς, ὥσπερ καὶ
ἐφ᾽ ἡμᾶς ἐν ἀρχῇ.
16 Ἐμνήσθην δὲ τοῦ ῥήματος Κυρίου, ὡς
ἔλεγεν· Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι, ὑ-
μεῖς δὲ βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι ἁγίῳ.
17 Εἰ οὖν τὴν ἴσην δωρεὰν ἔδωκεν αὐτοῖς
ὁ Θεὸς ὡς καὶ ἡμῖν, πιςεύσασιν ἐπὶ τὸν Κύ-
ριον Ἰησοῦν Χριςὸν, ἐγὼ δὲ τίς ἤμην δυνα-
τὸς κωλῦσαι τὸν Θεόν;
18 Ἀκούσαντες δὲ ταῦτα ἡσύχασαν, καὶ ἐδό-
ξαζον τὸν Θεὸν, λέγοντες· Ἄραγε καὶ τοῖς ἔ-
θνεσιν ὁ Θεὸς τὴν μετάνοιαν ἔδωκεν εἰς ζωήν.
19 Οἱ μὲν οὖν διασπαρέντες ἀπὸ τῆς θλί-
ψεως τῆς γενομένης ἐπὶ Στεφάνῳ, διῆλθον
ἕως Φοινίκης καὶ Κύπρου καὶ Ἀντιοχείας, μη-
δενὶ λαλοῦντες τὸν λόγον εἰ μὴ μόνον Ἰουδαίοις.
20 Ἦσαν δέ τινες ἐξ αὐτῶν ἄνδρες Κύ-
πριοι καὶ Κυρηναῖοι, οἵτινες εἰσελθόντες εἰς
Ἀντιόχειαν, ἐλάλουν πρὸς τοὺς Ἑλληνιςὰς,
εὐαγγελιζόμενοι τὸν Κύριον Ἰησοῦν.
21 Καὶ ἦν χεὶρ Κυρίου μετ᾽ αὐτῶν· πολύς τε
ἀριθ-

ἀριθμὸς πιστεύσας ἐπέστρεψεν ἐπὶ τὸν Κύριον.
22 Ἠκούσθη δὲ ὁ λόγος εἰς τὰ ὦτα τῆς
Ἐκκλησίας τῆς ἐν Ἱεροσολύμοις περὶ αὐ-
τῶν· καὶ ἐξαπέστειλαν Βαρνάβαν διελθεῖν ἕως
Ἀντιοχείας.
23 Ὃς παραγενόμενος καὶ ἰδὼν τὴν χάριν τοῦ
Θεοῦ, ἐχάρη, καὶ παρεκάλει πάντας τῇ προ-
θέσει τῆς καρδίας προσμένειν τῷ Κυρίῳ·
24 Ὅτι ἦν ἀνὴρ ἀγαθὸς καὶ πλήρης Πνεύ-
ματος ἁγίου καὶ πίστεως. καὶ προσετέθη ὄχλος
ἱκανὸς τῷ Κυρίῳ.
25 Ἐξῆλθε δὲ εἰς Ταρσὸν ὁ Βαρνάβας
ἀναζητῆσαι Σαῦλον· καὶ εὑρὼν αὐτὸν ἤγα-
γεν αὐτὸν εἰς Ἀντιόχειαν.
26 Ἐγένετο δὲ αὐτοὺς ἐνιαυτὸν ὅλον συναχ-
θῆναι ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, καὶ διδάξαι ὄχλον
ἱκανὸν, χρηματίσαι τε πρῶτον ἐν Ἀντιοχείᾳ
τοὺς μαθητὰς Χριστιανούς.
27 Ἐν ταύταις δὲ ταῖς ἡμέραις κατῆλθον
ἀπὸ Ἱεροσολύμων προφῆται εἰς Ἀντιόχειαν.
28 Ἀναστὰς δὲ εἷς ἐξ αὐτῶν ὀνόματι Ἄγα-
βος, ἐσήμανε διὰ τοῦ Πνεύματος, λιμὸν μέ-
γαν μέλλειν ἔσεσθαι ἐφ᾽ ὅλην τὴν οἰκουμένην·
ὅστις καὶ ἐγένετο ἐπὶ Κλαυδίου Καίσαρος.
29 Τῶν δὲ μαθητῶν, καθὼς ηὐπορεῖτό
τις, ὥρισαν ἕκαστος αὐτῶν εἰς διακονίαν πέμ-
ψαι τοῖς κατοικοῦσιν ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ἀδελφοῖς·
30 Ὃ καὶ ἐποίησαν, ἀποστείλαντες πρὸς τοὺς
πρεσβυτέρους διὰ χειρὸς Βαρνάβα καὶ Σαύλου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΒ΄. 12.

1 ΚΑτ᾽ ἐκεῖνον δὲ τὸν καιρὸν ἐπέβα-
λεν Ἡρώδης ὁ βασιλεὺς τὰς χεῖ-
ρας κακῶσαί τινας τῶν ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας.

2 Α'νεῖλε δὲ Ἰάκωβον τὸν ἀδελφὸν Ἰωάν-
νου μαχαίρα.
3 Καὶ ἰδὼν ὅτι ἀρεστόν ἐστι τοῖς Ἰουδαίοις,
προσέθετο συλλαβεῖν καὶ Πέτρον. (ἦσαν δὲ
ἡμέραι τῶν Ἀζύμων.)
4 Ὃν καὶ πιάσας ἔθετο εἰς φυλακὴν,
παραδοὺς τέσσαρσι τετραδίοις στρατιωτῶν φυ-
λάσσειν αὐτόν· βουλόμενος μετὰ τὸ πάσχα
ἀναγαγεῖν αὐτὸν τῷ λαῷ.
5 Ὁ μὲν οὖν Πέτρος ἐτηρεῖτο ἐν τῇ φυλακῇ·
προσευχὴ δὲ ἦν ἐκτενὴς γινομένη ὑπὸ τῆς
Ἐκκλησίας πρὸς τὸν Θεὸν ὑπὲρ αὐτοῦ.
6 Ὅτε δὲ ἔμελλεν αὐτὸν προάγειν ὁ Ἡρώ-
δης, τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ ἦν ὁ Πέτρος κοιμώμε-
νος μεταξὺ δύο στρατιωτῶν, δεδεμένος ἁλύ-
σεσι δυσί, φύλακές τε πρὸ τῆς θύρας ἐτή-
ρουν τὴν φυλακήν.
7 Καὶ ἰδοὺ, ἄγγελος Κυρίου ἐπέστη, καὶ
φῶς ἔλαμψεν ἐν τῷ οἰκήματι· πατάξας δὲ
τὴν πλευρὰν τοῦ Πέτρου, ἤγειρεν αὐτὸν, λέ-
γων· Ἀνάστα ἐν τάχει. Καὶ ἐξέπεσον αὐτοῦ
αἱ ἁλύσεις ἐκ τῶν χειρῶν.
8 Εἶπέ τε ὁ ἄγγελος πρὸς αὐτόν· Περί-
ζωσαι, καὶ ὑπόδησαι τὰ σανδάλιά σου· Ἐ-
ποίησε δὲ οὕτω. Καὶ λέγει αὐτῷ· Περιβα-
λοῦ τὸ ἱμάτιόν σου, καὶ ἀκολούθει μοι.
9 Καὶ ἐξελθὼν ἠκολούθει αὐτῷ, καὶ οὐκ
ᾔδει ὅτι ἀληθές ἐστι τὸ γινόμενον διὰ τοῦ ἀγ-
γέλου· ἐδόκει δὲ ὅραμα βλέπειν.
10 Διελθόντες δὲ πρώτην φυλακὴν καὶ δευ-
τέραν, ἦλθον ἐπὶ τὴν πύλην τὴν σιδηρᾶν, τὴν φέ-
ρουσαν εἰς τὴν πόλιν, ἥτις αὐτομάτη ἠνοίχθη
αὐτοῖς· καὶ ἐξελθόντες προῆλθον ῥύμην μίαν·
καὶ εὐθέως ἀπέστη ὁ Ἄγγελος ἀπ' αὐτοῦ.

11 Καὶ

11 Καὶ ὁ Πέτρος γενόμενος ἐν ἑαυτῷ, εἶπε· Νῦν οἶδα ἀληθῶς ὅτι ἐξαπέστειλε Κύριος τὸν Ἄγγελον αὐτοῦ, καὶ ἐξείλετό με ἐκ χειρὸς Ἡρώδου, καὶ πάσης τῆς προσδοκίας τοῦ λαοῦ τῶν Ἰουδαίων.

12 Συνιδών τε ἦλθεν ἐπὶ τὴν οἰκίαν Μαρίας τῆς Μητρὸς Ἰωάννου, τοῦ ἐπικαλουμένου Μάρκου, οὗ ἦσαν ἱκανοὶ συνηθροισμένοι καὶ προσευχόμενοι.

13 Κρούσαντος δὲ τοῦ Πέτρου τὴν θύραν τοῦ πυλῶνος, προσῆλθε παιδίσκη ὑπακοῦσαι, ὀνόματι Ῥόδη.

14 Καὶ ἐπιγνοῦσα τὴν φωνὴν τοῦ Πέτρου, ἀπὸ τῆς χαρᾶς οὐκ ἤνοιξε τὸν πυλῶνα, εἰσδραμοῦσα δὲ ἀπήγγειλεν ἑστάναι τὸν Πέτρον πρὸ τοῦ πυλῶνος.

15 Οἱ δὲ πρὸς αὐτὴν εἶπον· Μαίνῃ. Ἡ δὲ διϊσχυρίζετο οὕτως ἔχειν. Οἱ δ' ἔλεγον· Ὁ ἄγγελος αὐτοῦ ἐστιν.

16 Ὁ δὲ Πέτρος ἐπέμενε κρούων· ἀνοίξαντες δὲ εἶδον αὐτὸν, καὶ ἐξέστησαν.

17 Κατασείσας δὲ αὐτοῖς τῇ χειρὶ σιγᾷν, διηγήσατο αὐτοῖς, πῶς ὁ Κύριος αὐτὸν ἐξήγαγεν ἐκ τῆς φυλακῆς· εἶπε δέ· Ἀπαγγείλατε Ἰακώβῳ καὶ τοῖς ἀδελφοῖς ταῦτα. Καὶ ἐξελθὼν ἐπορεύθη εἰς ἕτερον τόπον.

18 Γενομένης δὲ ἡμέρας ἦν τάραχος οὐκ ὀλίγος ἐν τοῖς στρατιώταις, τί ἄρα ὁ Πέτρος ἐγένετο.

19 Ἡρώδης δὲ ἐπιζητήσας αὐτὸν, καὶ μὴ εὑρὼν, ἀνακρίνας τοὺς φύλακας, ἐκέλευσεν ἀπαχθῆναι· καὶ κατελθὼν ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας εἰς τὴν Καισάρειαν, διέτριβεν.

20 Ἦν δὲ ὁ Ἡρώδης θυμομαχῶν Τυρίοις

καὶ Σιδωνίοις· ὁμοθυμαδὸν δὲ παρῆσαν πρὸς
αὐτὸν, καὶ πείσαντες Βλάστον τὸν ἐπὶ τοῦ κοι-
τῶνος τοῦ βασιλέως, ᾐτοῦντο εἰρήνην· διὰ τὸ
τρέφεσθαι αὐτῶν τὴν χώραν ἀπὸ τῆς βασιλικῆς.
21 Τακτῇ δὲ ἡμέρᾳ ὁ Ἡρώδης ἐνδυσά-
μενος ἐσθῆτα βασιλικὴν, καὶ καθίσας ἐπὶ τοῦ
βήματος, ἐδημηγόρει πρὸς αὐτούς.
22 Ὁ δὲ δῆμος ἐπεφώνει· Θεοῦ φωνὴ, καὶ
οὐκ ἀνθρώπου.
23 Παραχρῆμα δὲ ἐπάταξεν αὐτὸν ἄγγε-
λος Κυρίου, ἀνθ᾽ ὧν οὐκ ἔδωκε τὴν δόξαν τῷ
Θεῷ· καὶ γενόμενος σκωληκόβρωτος, ἐξέψυξεν.
24 Ὁ δὲ λόγος τοῦ Θεοῦ ηὔξανε καὶ ἐπλη-
θύνετο.
25 Βαρνάβας δὲ καὶ Σαῦλος ὑπέστρεψαν
ἐξ Ἱερουσαλὴμ, πληρώσαντες τὴν διακο-
νίαν, συμπαραλαβόντες καὶ Ἰωάννην τὸν ἐπι-
κληθέντα Μάρκον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

1 Ἦσαν δέ τινες ἐν Ἀντιοχείᾳ κα-
τὰ τὴν οὖσαν ἐκκλησίαν προφῆ-
ται καὶ διδάσκαλοι, ὅ, τε Βαρνάβας καὶ Συ-
μεὼν ὁ καλούμενος Νίγερ, καὶ Λούκιος ὁ Κυ-
ρηναῖος, Μαναήν τε Ἡρώδου τοῦ τετράρχου
σύντροφος, καὶ Σαῦλος.
2 Λειτουργούντων δὲ αὐτῶν τῷ Κυρίῳ καὶ νη-
στευόντων, εἶπε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον· Ἀφορί-
σατε δή μοι τόν τε Βαρνάβαν καὶ τὸν Σαῦλον
εἰς τὸ ἔργον ὃ προσκέκλημαι αὐτούς.
3 Τότε νηστεύσαντες καὶ προσευξάμενοι, καὶ
ἐπιθέντες τὰς χεῖρας αὐτοῖς, ἀπέλυσαν.
4 Οὗτοι μὲν οὖν ἐκπεμφθέντες ὑπὸ τοῦ
Πνεύματος τοῦ ἁγίου, κατῆλθον εἰς τὴν Σελεύ-
κειαν,

κειαν, ἐκεῖθέν τε ἀπέπλευσαν εἰς τὴν Κύπρον.
5 Καὶ γενόμενοι ἐν Σαλαμῖνι, κατήγ-
γελλον τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ ἐν ταῖς συναγωγαῖς
τῶν Ἰουδαίων· εἶχον δὲ καὶ Ἰωάννην ὑπηρέτην.
6 Διελθόντες δὲ τὴν νῆσον ἄχρι Πάφου,
εὗρόν τινα μάγον ψευδοπροφήτην Ἰουδαῖον,
ᾧ ὄνομα Βαριησοῦς,
7 Ὃς ἦν σὺν τῷ ἀνθυπάτῳ Σεργίῳ
Παύλῳ, ἀνδρὶ συνετῷ· οὗτος προσκαλεσά-
μενος Βαρνάβαν καὶ Σαῦλον, ἐπεζήτησεν
ἀκοῦσαι τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ.
8 Ἀνθίστατο δὲ αὐτοῖς Ἐλύμας ὁ μά-
γος, (οὕτω γὰρ μεθερμηνεύεται τὸ ὄνομα αὐ-
τοῦ,) ζητῶν διαστρέψαι τὸν ἀνθύπατον ἀπὸ
τῆς πίστεως.
9 Σαῦλος δὲ (ὁ καὶ Παῦλος) πλησθεὶς
Πνεύματος ἁγίου, καὶ ἀτενίσας εἰς αὐτὸν,
10 Εἶπεν· Ὦ πλήρης παντὸς δόλου καὶ
πάσης ῥᾳδιουργίας, Υἱὲ διαβόλου, ἐχθρὲ
πάσης δικαιοσύνης, οὐ παύσῃ διαστρέφων τὰς
ὁδοὺς Κυρίου τὰς εὐθείας;
11 Καὶ νῦν ἰδοὺ, χεὶρ τοῦ Κυρίου ἐπί σε· καὶ
ἔσῃ τυφλὸς, μὴ βλέπων τὸν ἥλιον ἄχρι καιροῦ.
Παραχρῆμα δὲ ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτὸν ἀχλὺς
καὶ σκότος, καὶ περιάγων ἐζήτει χειραγωγούς.
12 Τότε ἰδὼν ὁ ἀνθύπατος τὸ γεγονὸς,
ἐπίστευσεν, ἐκπλησσόμενος ἐπὶ τῇ διδαχῇ
τοῦ Κυρίου.
13 Ἀναχθέντες δὲ ἀπὸ τῆς Πάφου οἱ
περὶ τὸν Παῦλον, ἦλθον εἰς Πέργην τῆς
Παμφυλίας. Ἰωάννης δὲ ἀποχωρήσας ἀπ'
αὐτῶν, ὑπέστρεψεν εἰς Ἱεροσόλυμα.
14 Αὐτοὶ δὲ διελθόντες ἀπὸ τῆς Πέργης,
παρεγένοντο εἰς Ἀντιόχειαν τῆς Πισιδίας, καὶ

εἰσελθόντες εἰς τὴν συναγωγὴν τῇ ἡμέρᾳ τῶν
Σαββάτων, ἐκάθισαν.
15 Μετὰ δὲ τὴν ἀνάγνωσιν τοῦ νόμου καὶ τῶν
Προφητῶν, ἀπέστειλαν οἱ Ἀρχισυνάγωγοι
πρὸς αὐτοὺς, λέγοντες· Ἄνδρες ἀδελφοὶ,
εἰ ἔστι λόγος ἐν ὑμῖν παρακλήσεως πρὸς τὸν
λαὸν, λέγετε.
16 Ἀναστὰς δὲ Παῦλος, καὶ κατασείσας
τῇ χειρὶ, εἶπεν· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, καὶ
οἱ φοβούμενοι τὸν Θεὸν, ἀκούσατε.
17 Ὁ Θεὸς τοῦ λαοῦ τούτου Ἰσραὴλ ἐξελέ-
ξατο τοὺς Πατέρας ἡμῶν, καὶ τὸν λαὸν ὕψωσεν
ἐν τῇ παροικίᾳ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ μετὰ βρα-
χίονος ὑψηλοῦ ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐξ αὐτῆς.
18 Καὶ ὡς τεσσαρακονταετῆ χρόνον ἐτρο-
ποφόρησεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ.
19 Καὶ καθελὼν ἔθνη ἑπτὰ ἐν γῇ Χαναὰν,
κατεκληροδότησεν αὐτοῖς τὴν γῆν αὐτῶν.
20 Καὶ μετὰ ταῦτα ὡς ἔτεσι τετρακοσίοις
καὶ πεντήκοντα ἔδωκε κριτὰς ἕως Σαμουὴλ τοῦ
Προφήτου.
21 Κἀκεῖθεν ᾐτήσαντο βασιλέα, καὶ ἔ-
δωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς τὸν Σαοὺλ Υἱὸν Κὶς,
ἄνδρα ἐκ φυλῆς Βενιαμὶν ἔτη τεσσαράκοντα.
22 Καὶ μεταστήσας αὐτὸν, ἤγειρεν αὐτοῖς
τὸν Δαβὶδ εἰς βασιλέα· ᾧ καὶ εἶπε μαρτυ-
ρήσας· Εὗρον Δαβὶδ τὸν τοῦ Ἰεσσαὶ, ἄνδρα
κατὰ τὴν καρδίαν μου, ὃς ποιήσει πάντα τὰ
θελήματά μου.
23 Τούτου ὁ Θεὸς ἀπὸ τοῦ σπέρματος κατ'
ἐπαγγελίαν ἤγειρε τῷ Ἰσραὴλ σωτῆρα Ἰησοῦν,
24 Προκηρύξαντος Ἰωάννου πρὸ προσώπου
τῆς εἰσόδου αὐτοῦ βάπτισμα μετανοίας παν-
τὶ τῷ λαῷ Ἰσραήλ.

25 Ὡς δὲ ἐπλήρου ὁ Ἰωάννης τὸν δρόμον, ἔλεγε· Τίνα με ὑπονοεῖτε εἶναι; οὐκ εἰμὶ ἐγώ, ἀλλ᾽ ἰδού, ἔρχεται μετ᾽ ἐμέ, οὗ οὐκ εἰμὶ ἄξιος τὸ ὑπόδημα τῶν ποδῶν λῦσαι.

26 Ἄνδρες ἀδελφοί, Υἱοὶ γένους Ἀβραάμ, καὶ οἱ ἐν ὑμῖν φοβούμενοι τὸν Θεόν, ὑμῖν ὁ λόγος τῆς σωτηρίας ταύτης ἀπεστάλη.

27 Οἱ γὰρ κατοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλὴμ καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, τοῦτον ἀγνοήσαντες, καὶ τὰς φωνὰς τῶν Προφητῶν τὰς κατὰ πᾶν Σάββατον ἀναγινωσκομένας, κρίναντες, ἐπλήρωσαν.

28 Καὶ μηδεμίαν αἰτίαν θανάτου εὑρόντες, ᾐτήσαντο Πιλάτον ἀναιρεθῆναι αὐτόν.

29 Ὡς δὲ ἐτέλεσαν ἅπαντα τὰ περὶ αὐτοῦ γεγραμμένα, καθελόντες ἀπὸ τοῦ ξύλου ἔθηκαν εἰς μνημεῖον.

30 Ὁ δὲ Θεὸς ἤγειρεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

31 Ὃς ὤφθη ἐπὶ ἡμέρας πλείους τοῖς συναναβᾶσιν αὐτῷ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας εἰς Ἱερουσαλήμ, οἵτινές εἰσι μάρτυρες αὐτοῦ πρὸς τὸν λαόν.

32 Καὶ ἡμεῖς ὑμᾶς εὐαγγελιζόμεθα τὴν πρὸς τοὺς Πατέρας ἐπαγγελίαν γενομένην, ὅτι ταύτην ὁ Θεὸς ἐκπεπλήρωκε τοῖς τέκνοις αὐτῶν, ἡμῖν, ἀναστήσας Ἰησοῦν·

33 Ὡς καὶ ἐν τῷ ψαλμῷ τῷ δευτέρῳ γέγραπται· Υἱός μου εἶ σύ, ἐγὼ σήμερον γεγέννηκά σε.

34 Ὅτι δὲ ἀνέστησεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν, μηκέτι μέλλοντα ὑποστρέφειν εἰς διαφθοράν, οὕτως εἴρηκεν· Ὅτι δώσω ὑμῖν τὰ ὅσια Δαβὶδ τὰ πιστά.

35 Διὸ καὶ ἐν ἑτέρῳ λέγει· Οὐ δώσεις τὸν ὅσιόν σου ἰδεῖν διαφθοράν.

36 Δαβὶδ μὲν γὰρ ἰδίᾳ γενεᾷ ὑπηρε-
τήσας τῇ τοῦ Θεοῦ βουλῇ, ἐκοιμήθη, καὶ προ-
σετέθη πρὸς τοὺς Πατέρας αὐτοῦ, καὶ εἶδε
διαφθοράν.
37 Ὃν δὲ ὁ Θεὸς ἤγειρεν, οὐκ εἶδε δια-
φθοράν·
38 Γνωστὸν οὖν ἔστω ὑμῖν, ἄνδρες ἀδελ-
φοὶ, ὅτι διὰ τούτου ὑμῖν ἄφεσις ἁμαρτιῶν κα-
ταγγέλλεται·
39 Καὶ ἀπὸ πάντων ὧν οὐκ ἠδυνήθητε ἐν
τῷ νόμῳ Μωσέως δικαιωθῆναι, ἐν τούτῳ
πᾶς ὁ πιστεύων δικαιοῦται.
40 Βλέπετε οὖν μὴ ἐπέλθῃ ἐφ' ὑμᾶς τὸ
εἰρημένον ἐν τοῖς προφήταις·
41 Ἴδετε οἱ καταφρονηταὶ, καὶ θαυμάσα-
τε, καὶ ἀφανίσθητε· ὅτι ἔργον ἐγὼ ἐργάζομαι
ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, ἔργον ᾧ οὐ μὴ πιστεύ-
σητε, ἐάν τις ἐκδιηγῆται ὑμῖν.
42 Ἐξιόντων δὲ ἐκ τῆς συναγωγῆς τῶν
Ἰουδαίων, παρεκάλουν τὰ ἔθνη εἰς τὸ μεταξὺ
Σάββατον λαληθῆναι αὐτοῖς τὰ ῥήματα
ταῦτα.
43 Λυθείσης δὲ τῆς συναγωγῆς, ἠκολού-
θησαν πολλοὶ τῶν Ἰουδαίων καὶ τῶν σεβομένων
προσηλύτων τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Βαρνάβᾳ· οἵ-
τινες προσλαλοῦντες αὐτοῖς, ἔπειθον αὐτοὺς
ἐπιμένειν τῇ χάριτι τοῦ Θεοῦ.
44 Τῷ δὲ ἐρχομένῳ Σαββάτῳ σχεδὸν πᾶ-
σα ἡ πόλις συνήχθη ἀκοῦσαι τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ.
45 Ἰδόντες δὲ οἱ Ἰουδαῖοι τοὺς ὄχλους, ἐπλή-
σθησαν ζήλου, καὶ ἀντέλεγον τοῖς ὑπὸ τοῦ Παύλου
λεγομένοις, ἀντιλέγοντες καὶ βλασφημοῦντες.
46 Παῤῥησιασάμενοι δὲ ὁ Παῦλος καὶ ὁ
Βαρνάβας, εἶπον· Ὑμῖν ἦν ἀναγκαῖον πρῶτον

λα-

λαληθῆναι τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ· ἐπειδὴ δὲ ἀπω-
θεῖσθε αὐτὸν, καὶ οὐκ ἀξίους κρίνετε ἑαυτοὺς τῆς
αἰωνίου ζωῆς, ἰδοὺ στρεφόμεθα εἰς τὰ ἔθνη.
47 Οὕτω γὰρ ἐντέταλται ἡμῖν ὁ Κύριος·
Τέθεικά σε εἰς φῶς ἐθνῶν, τοῦ εἶναί σε εἰς
σωτηρίαν ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς.
48 Ἀκούοντα δὲ τὰ ἔθνη ἔχαιρον, καὶ ἐδό-
ξαζον τὸν λόγον τοῦ Κυρίου· καὶ ἐπίστευσαν ὅ-
σοι ἦσαν τεταγμένοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.
49 Διεφέρετο δὲ ὁ λόγος τοῦ Κυρίου δι᾽
ὅλης τῆς χώρας.
50 Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι παρώτρυναν τὰς σεβο-
μένας γυναῖκας καὶ τὰς εὐσχήμονας, καὶ τοὺς
πρώτους τῆς πόλεως, καὶ ἐπήγειραν διωγμὸν
ἐπὶ τὸν Παῦλον καὶ τὸν Βαρνάβαν, καὶ ἐξέ-
βαλον αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ὁρίων αὐτῶν.
51 Οἱ δὲ ἐκτιναξάμενοι τὸν κονιορτὸν τῶν
ποδῶν αὐτῶν ἐπ᾽ αὐτοὺς, ἦλθον εἰς Ἰκόνιον.
52 Οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπληροῦντο χαρᾶς καὶ
Πνεύματος ἁγίου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΔ΄. 14.

1 ΕΓένετο δὲ ἐν Ἰκονίῳ, κατὰ τὸ αὐτὸ
εἰσελθεῖν αὐτοὺς εἰς τὴν συναγωγὴν
τῶν Ἰουδαίων, καὶ λαλῆσαι οὕτως ὥστε πιστεῦσαι
Ἰουδαίων τε καὶ Ἑλλήνων πολὺ πλῆθος.
2 Οἱ δὲ ἀπειθοῦντες Ἰουδαῖοι ἐπήγειραν
καὶ ἐκάκωσαν τὰς ψυχὰς τῶν ἐθνῶν κατὰ τῶν
ἀδελφῶν.
3 Ἱκανὸν μὲν οὖν χρόνον διέτριψαν παῤῥη-
σιαζόμενοι ἐπὶ τῷ Κυρίῳ τῷ μαρτυροῦντι τῷ
λόγῳ τῆς χάριτος αὐτοῦ, καὶ διδόντι σημεῖα καὶ
τέρατα γίνεσθαι διὰ τῶν χειρῶν αὐτῶν.
4 Ἐσχίσθη δὲ τὸ πλῆθος τῆς πόλεως· καὶ

αἱ

οἱ μὲν ἦσαν σὺν τοῖς Ἰουδαίοις, οἱ δὲ σὺν
τοῖς ἀποστόλοις.

5 Ὡς δὲ ἐγένετο ὁρμὴ τῶν ἐθνῶν τε καὶ
Ἰουδαίων σὺν τοῖς ἄρχουσιν αὐτῶν, ὑβρίσαι καὶ
λιθοβολῆσαι αὐτοὺς,

6 Συνιδόντες κατέφυγον εἰς τὰς πόλεις
τῆς Λυκαονίας, Λύστραν καὶ Δέρβην, καὶ τὴν
περίχωρον·

7 Κἀκεῖ ἦσαν εὐαγγελιζόμενοι.

8 Καί τις ἀνὴρ ἐν Λύστροις ἀδύνατος τοῖς
ποσὶν ἐκάθητο, χωλὸς ἐκ κοιλίας μητρὸς
αὐτοῦ ὑπάρχων, ὃς οὐδέποτε περιεπεπατήκει.

9 Οὗτος ἤκουε τοῦ Παύλου λαλοῦντος· ὃς
ἀτενίσας αὐτῷ, καὶ ἰδὼν ὅτι πίστιν ἔχει τοῦ
σωθῆναι,

10 Εἶπε μεγάλῃ τῇ φωνῇ· Ἀνάστηθι
ἐπὶ τοὺς πόδας σου ὀρθός· Καὶ ἥλλετο, καὶ
περιεπάτει.

11 Οἱ δὲ ὄχλοι ἰδόντες ὃ ἐποίησεν ὁ
Παῦλος, ἐπῆραν τὴν φωνὴν αὐτῶν, Λυκαο-
νιστὶ λέγοντες· Οἱ θεοὶ ὁμοιωθέντες ἀνθρώ-
ποις κατέβησαν πρὸς ἡμᾶς.

12 Ἐκάλουν τε τὸν μὲν Βαρνάβαν, Δία.
τὸν δὲ Παῦλον, Ἑρμῆν· ἐπειδὴ αὐτὸς ἦν
ὁ ἡγούμενος τοῦ λόγου.

13 Ὁ δὲ ἱερεὺς τοῦ Διὸς τοῦ ὄντος πρὸ τῆς
πόλεως αὐτῶν, ταύρους καὶ στέμματα ἐπὶ τοὺς πυ-
λῶνας ἐνέγκας, σὺν τοῖς ὄχλοις ἤθελε θύειν.

14 Ἀκούσαντες δὲ οἱ ἀπόστολοι Βαρνάβας
καὶ Παῦλος, διαῤῥήξαντες τὰ ἱμάτια αὐτῶν
εἰσεπήδησαν εἰς τὸν ὄχλον, κράζοντες,

15 Καὶ λέγοντες· Ἄνδρες, τί ταῦτα
ποιεῖτε; καὶ ἡμεῖς ὁμοιοπαθεῖς ἐσμὲν ὑμῖν
ἄνθρωποι, εὐαγγελιζόμενοι ὑμᾶς ἀπὸ τούτων

τῶν

τῶν ματαίων ἐπιστρέφειν ἐπὶ τὸν Θεὸν τὸν ζῶντα, ὃς ἐποίησε τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν, καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς.

16 Ὃς ἐν ταῖς παρῳχημέναις γενεαῖς εἴασε πάντα τὰ ἔθνη πορεύεσθαι ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν.

17 Καίτοιγε οὐκ ἀμάρτυρον ἑαυτὸν ἀφῆκεν, ἀγαθοποιῶν, οὐρανόθεν ἡμῖν ὑετοὺς διδοὺς, καὶ καιροὺς καρποφόρους, ἐμπιπλῶν τροφῆς καὶ εὐφροσύνης τὰς καρδίας ἡμῶν.

18 Καὶ ταῦτα λέγοντες, μόλις κατέπαυσαν τοὺς ὄχλους τοῦ μὴ θύειν αὐτοῖς.

19 Ἐπῆλθον δὲ ἀπὸ Ἀντιοχείας καὶ Ἰκονίου Ἰουδαῖοι, καὶ πείσαντες τοὺς ὄχλους, καὶ λιθάσαντες τὸν Παῦλον, ἔσυρον ἔξω τῆς πόλεως, νομίσαντες αὐτὸν τεθνάναι.

20 Κυκλωσάντων δὲ αὐτὸν τῶν μαθητῶν, ἀναστὰς εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ τῇ ἐπαύριον ἐξῆλθε σὺν τῷ Βαρνάβᾳ εἰς Δέρβην.

21 Εὐαγγελισάμενοί τε τὴν πόλιν ἐκείνην, καὶ μαθητεύσαντες ἱκανοὺς, ὑπέστρεψαν εἰς τὴν Λύστραν καὶ Ἰκόνιον καὶ Ἀντιόχειαν,

22 Ἐπιστηρίζοντες τὰς ψυχὰς τῶν μαθητῶν, παρακαλοῦντες ἐμμένειν τῇ πίστει, καὶ ὅτι διὰ πολλῶν θλίψεων δεῖ ἡμᾶς εἰσελθεῖν εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

23 Χειροτονήσαντες δὲ αὐτοῖς πρεσβυτέρους κατ' ἐκκλησίαν, προσευξάμενοι μετὰ νηστειῶν, παρέθεντο αὐτοὺς τῷ Κυρίῳ εἰς ὃν πεπιστεύκεισαν.

24 Καὶ διελθόντες τὴν Πισιδίαν, ἦλθον εἰς Παμφυλίαν.

25 Καὶ λαλήσαντες ἐν Πέργῃ τὸν λόγον, κατέβησαν εἰς Ἀττάλειαν.

26 Κἀκεῖθεν ἀπέπλευσαν εἰς Ἀντιό-

χειαν

χειαν· ὅθεν ἦσαν παραδεδομένοι τῇ χάειτι
τοῦ Θεοῦ εἰς τὸ ἔργον ὃ ἐπλήρωσαν.
27 Παραγενόμενοι δὲ καὶ συναγαγόντες
τὴν ἐκκλησίαν, ἀνήγγειλαν ὅσα ἐποίησεν
ὁ Θεὸς μετ' αὐτῶν, καὶ ὅτι ἤνοιξε τοῖς ἔθνεσι
θύραν πίστεως.
28 Διέτριβον δὲ ἐκεῖ χρόνον οὐκ ὀλίγον
σὺν τοῖς μαθηταῖς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΕ'. 15.

1 ΚΑί τινες κατελθόντες ἀπὸ τῆς
Ἰουδαίας, ἐδίδασκον τοὺς ἀδελ-
φούς· Ὅτι ἐὰν μὴ πεειτέμνησθε τῷ ἔθει
Μωϋσέως, οὐ δύνασθε σωθῆναι.
2 Γενομένης οὖν στάσεως καὶ συζητήσεως οὐκ
ὀλίγης τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Βαρνάβᾳ πρὸς
αὐτοὺς, ἔταξαν ἀναβαίνειν Παῦλον καὶ Βαρ-
νάβαν καί τινας ἄλλους ἐξ αὐτῶν πρὸς τοὺς ἀ-
ποστόλους καὶ πρεσβυτέρους εἰς Ἱερουσαλὴμ,
πεεὶ τοῦ ζητήματος τούτου.
3 Οἱ μὲν οὖν προπεμφθέντες ὑπὸ τῆς ἐκκλη-
σίας, διήρχοντο τὴν Φοινίκην καὶ Σαμάρειαν,
ἐκδιηγούμενοι τὴν ἐπιστροφὴν τῶν ἐθνῶν· καὶ ἐ-
ποίουν χαρὰν μεγάλην πᾶσι τοῖς ἀδελφοῖς.
4 Παραγενόμενοι δὲ εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἀπε-
δέχθησαν ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας καὶ τῶν ἀποστό-
λων καὶ τῶν πρεσβυτέρων, ἀνήγγειλάν τε ὅσα
ὁ Θεὸς ἐποίησε μετ' αὐτῶν.
5 Ἐξανέστησαν δέ τινες τῶν ἀπὸ τῆς αἱρέ-
σεως τῶν Φαρισαίων πεπιστευκότες, λέγον-
τες· Ὅτι δεῖ πεειτέμνειν αὐτοὺς, παραγ-
γέλλειν τε τηρεῖν τὸν νόμον Μωϋσέως.
6 Συνήχθησαν δὲ οἱ ἀπόστολοι καὶ οἱ
πρεσβύτεροι ἰδεῖν πεεὶ τοῦ λόγου τούτου.



7 Πολλῆς δὲ συζητήσεως γενομένης, ἀ-
ναςὰς Πέτρος εἶπε πρὸς αὐτούς· Ἄνδρες ἀ-
δελφοὶ, ὑμεῖς ἐπίςαθε ὅτι ἀφ' ἡμερῶν ἀρ-
χαίων ὁ Θεὸς ἐν ὑμῖν ἐξελέξατο διὰ τοῦ ςό-
ματός μου ἀκοῦσαι τὰ ἔθνη τὸν λόγον τοῦ εὐαγ-
γελίου, καὶ πιςεῦσαι.

8 Καὶ ὁ καρδιογνώςης Θεὸς ἐμαρτύρησεν
αὐτοῖς, δοὺς αὐτοῖς τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον,
καθὼς καὶ ἡμῖν.

9 Καὶ οὐδὲν διέκρινε μεταξὺ ἡμῶν τε καὶ αὐ-
τῶν, τῇ πίςει καθαρίσας τὰς καρδίας αὐτῶν.

10 Νῦν οὖν τί πειράζετε τὸν Θεὸν, ἐπι-
θεῖναι ζυγὸν ἐπὶ τὸν τράχηλον τῶν μαθητῶν,
ὃν οὔτε οἱ πατέρες ἡμῶν οὔτε ἡμεῖς ἰσχύσα-
μεν βαςάσαι;

11 Ἀλλὰ διὰ τῆς χάριτος Κυρίου Ἰησοῦ
Χριςοῦ πιςεύομεν σωθῆναι, καθ' ὃν τρόπον
κἀκεῖνοι.

12 Ἐσίγησε δὲ πᾶν τὸ πλῆθος, καὶ ἤ-
κουον Βαρνάβα καὶ Παύλου ἐξηγουμένων ὅσα
ἐποίησεν ὁ Θεὸς σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τοῖς
ἔθνεσι δι' αὐτῶν.

13 Μετὰ δὲ τὸ σιγῆσαι αὐτοὺς, ἀπεκρί-
θη Ἰάκωβος, λέγων· Ἄνδρες ἀδελφοὶ, ἀ-
κούσατέ μου.

14 Συμεὼν ἐξηγήσατο καθὼς πρῶτον ὁ
Θεὸς ἐπεσκέψατο λαβεῖν ἐξ ἐθνῶν λαὸν
ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ.

15 Καὶ τούτῳ συμφωνοῦσιν οἱ λόγοι τῶν
Προφητῶν· καθὼς γέγραπται·

16 Μετὰ ταῦτα ἀναςρέψω, καὶ ἀνοικοδο-
μήσω τὴν σκηνὴν Δαβὶδ τὴν πεπτωκυῖαν,
καὶ τὰ κατεσκαμμένα αὐτῆς ἀνοικοδομήσω,
καὶ ἀνορθώσω αὐτήν.

17 Ὅπ-

17 Ὅπως ἂν ἐκζητήσωσιν οἱ κατάλοιποι
τῶν ἀνθρώπων τὸν Κύριον, καὶ πάντα τὰ ἔθνη
ἐφ᾽ οὓς ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ᾽ αὐτούς·
λέγει Κύριος ὁ ποιῶν ταῦτα πάντα.
18 Γνωστὰ ἀπ᾽ αἰῶνός ἐστι τῷ Θεῷ πάντα
τὰ ἔργα αὐτοῦ.
19 Διὸ ἐγὼ κρίνω μὴ παρενοχλεῖν τοῖς
ἀπὸ τῶν ἐθνῶν ἐπιστρέφουσιν ἐπὶ τὸν Θεόν.
20 Ἀλλὰ ἐπιστεῖλαι αὐτοῖς τοῦ ἀπέχεσθαι
ἀπὸ τῶν ἀλισγημάτων τῶν εἰδώλων καὶ τῆς
πορνείας καὶ τοῦ πνικτοῦ καὶ τοῦ αἵματος.
21 Μωσῆς γὰρ ἐκ γενεῶν ἀρχαίων κατὰ
πόλιν τοὺς κηρύσσοντας αὐτὸν ἔχει, ἐν ταῖς συνα-
γωγαῖς κατὰ πᾶν σάββατον ἀναγινωσκόμενος.
22 Τότε ἔδοξε τοῖς ἀποστόλοις καὶ τοῖς
πρεσβυτέροις σὺν ὅλῃ τῇ ἐκκλησίᾳ, ἐκλε-
ξαμένους ἄνδρας ἐξ αὐτῶν πέμψαι εἰς Ἀν-
τιόχειαν σὺν τῷ Παύλῳ καὶ Βαρνάβᾳ, Ἰούδαν
τὸν ἐπικαλούμενον Βαρσαβᾶν, καὶ Σίλαν,
ἄνδρας ἡγουμένους ἐν τοῖς ἀδελφοῖς·
23 Γράψαντες διὰ χειρὸς αὐτῶν τάδε.
Οἱ Ἀπόστολοι καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ ἀδελ-
φοὶ, τοῖς κατὰ τὴν Ἀντιόχειαν καὶ Συρίαν καὶ
Κιλικίαν, ἀδελφοῖς τοῖς ἐξ ἐθνῶν, χαίρειν.
24 Ἐπειδὴ ἠκούσαμεν ὅτι τινὲς ἐξ ὑμῶν
ἐξελθόντες ἐτάραξαν ὑμᾶς λόγοις, ἀνασκευά-
ζοντες τὰς ψυχὰς ὑμῶν, λέγοντες περιτέμνε-
σθαι καὶ τηρεῖν τὸν νόμον, οἷς οὐ διεστειλάμεθα.
25 Ἔδοξεν ἡμῖν γενομένοις ὁμοθυμαδὸν,
ἐκλεξαμένους ἄνδρας πέμψαι πρὸς ὑμᾶς, σὺν
τοῖς ἀγαπητοῖς ἡμῶν Βαρνάβᾳ καὶ Παύλῳ,
26 Ἀνθρώποις παραδεδωκόσι τὰς ψυχὰς
αὐτῶν ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος τοῦ Κυρίου ἡμῶν
Ἰησοῦ Χριστοῦ.

27 Ἀπε-

27 Ἀπεστάλκαμεν οὖν Ἰούδαν καὶ Σίλαν, καὶ
αὐτοὺς διὰ λόγου ἀπαγγέλλοντας τὰ αὐτά.
28 Ἔδοξε γὰρ τῷ ἁγίῳ Πνεύματι καὶ ἡμῖν,
μηδὲν πλέον ἐπιτίθεσθαι ὑμῖν βάρος πλὴν
τῶν ἐπάναγκες τούτων·
29 Ἀπέχεσθαι εἰδωλοθύτων καὶ αἵματος
καὶ πνικτοῦ καὶ πορνείας, ἐξ ὧν διατηροῦντες
ἑαυτοὺς, εὖ πράξετε. Ἔρρωσθε.
30 Οἱ μὲν οὖν ἀπολυθέντες ἦλθον εἰς Ἀν-
τιόχειαν· καὶ συναγαγόντες τὸ πλῆθος, ἐ-
πέδωκαν τὴν ἐπιστολήν.
31 Ἀναγνόντες δὲ, ἐχάρησαν ἐπὶ τῇ πα-
ρακλήσει.
32 Ἰούδας δὲ καὶ Σίλας, καὶ αὐτοὶ προ-
φῆται ὄντες, διὰ λόγου πολλοῦ παρεκάλεσαν
τοὺς ἀδελφοὺς, καὶ ἐπεστήριξαν.
33 Ποιήσαντες δὲ χρόνον, ἀπελύθησαν
μετ' εἰρήνης ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν πρὸς τοὺς ἀ-
ποστόλους.
34 Ἔδοξε δὲ τῷ Σίλᾳ ἐπιμεῖναι αὐτοῦ.
35 Παῦλος δὲ καὶ Βαρνάβας διέτριβον ἐν
Ἀντιοχείᾳ, διδάσκοντες καὶ εὐαγγελιζόμενοι
μετὰ καὶ ἑτέρων πολλῶν τὸν λόγον τοῦ Κυρίου.
36 Μετὰ δέ τινας ἡμέρας εἶπε Παῦλος
πρὸς Βαρνάβαν· Ἐπιστρέψαντες δὴ ἐπισκε-
ψώμεθα τοὺς ἀδελφοὺς ἡμῶν κατὰ πᾶσαν
πόλιν, ἐν αἷς κατηγγείλαμεν τὸν λόγον τοῦ
Κυρίου, πῶς ἔχουσι.
37 Βαρνάβας δὲ ἐβουλεύσατο συμπαρα-
λαβεῖν τὸν Ἰωάννην τὸν καλούμενον Μάρκον.
38 Παῦλος δὲ ἠξίου τὸν ἀποστάντα ἀπ'
αὐτῶν ἀπὸ Παμφυλίας, καὶ μὴ συνελθόντα
αὐτοῖς εἰς τὸ ἔργον, μὴ συμπαραλαβεῖν τοῦτον.
39 Ἐγένετο οὖν παροξυσμὸς, ὥστε ἀπο-

χωρι-

χωρισθῆναι αὐτοὺς ἀπ' ἀλλήλων· τόν τε Βαρ-
νάβαν παραλαβόντα τὸν Μάρκον ἐκπλεῦσαι
εἰς Κύπρον·
40 Παῦλος δὲ ἐπιλεξάμενος Σίλαν,
ἐξῆλθε, παραδοθεὶς τῇ χάριτι τοῦ Θεοῦ ὑ-
πὸ τῶν ἀδελφῶν.
41 Διήρχετο δὲ τὴν Συρίαν καὶ Κιλικίαν,
ἐπιστηρίζων τὰς ἐκκλησίας.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ιϛ'. 16.

1 Κατήντησε δὲ εἰς Δέρβην καὶ Λύ-
στραν· καὶ ἰδοὺ, μαθητής τις ἦν
ἐκεῖ ὀνόματι Τιμόθεος, Υἱὸς γυναικός τι-
νος Ἰουδαίας πιστῆς, πατρὸς δὲ Ἕλληνος·
2 Ὃς ἐμαρτυρεῖτο ὑπὸ τῶν ἐν Λύστροις καὶ
Ἰκονίῳ ἀδελφῶν.
3 Τοῦτον ἠθέλησεν ὁ Παῦλος σὺν αὐτῷ
ἐξελθεῖν· καὶ λαβὼν περιέτεμεν αὐτὸν, διὰ
τοὺς Ἰουδαίους τοὺς ὄντας ἐν τοῖς τόποις ἐκεί-
νοις· ᾔδεισαν γὰρ ἅπαντες τὸν πατέρα αὐτοῦ
ὅτι Ἕλλην ὑπῆρχεν.
4 Ὡς δὲ διεπορεύοντο τὰς πόλεις, παρε-
δίδουν αὐτοῖς φυλάσσειν τὰ δόγματα τὰ κε-
κριμένα ὑπὸ τῶν ἀποστόλων καὶ τῶν πρεσβυ-
τέρων τῶν ἐν Ἱερουσαλήμ.
5 Αἱ μὲν οὖν ἐκκλησίαι ἐστερεοῦντο τῇ πίστει,
καὶ ἐπερίσσευον τῷ ἀριθμῷ καθ' ἡμέραν.
6 Διελθόντες δὲ τὴν Φρυγίαν καὶ τὴν Γα-
λατικὴν χώραν, κωλυθέντες ὑπὸ τοῦ ἁγίου
Πνεύματος λαλῆσαι τὸν λόγον ἐν τῇ Ἀσίᾳ,
7 Ἐλθόντες κατὰ τὴν Μυσίαν, ἐπείρα-
ζον κατὰ τὴν Βιθυνίαν πορεύεσθαι· καὶ οὐκ
εἴασεν αὐτοὺς τὸ Πνεῦμα.
8 Παρελθόντες δὲ τὴν Μυσίαν, κατέβησαν
εἰς Τρωάδα. 9 Καὶ

9 Καὶ ὅραμα διὰ τῆς νυκτὸς ὤφθη τῷ
Παύλῳ· Ἀνήρ τις ἦν Μακεδὼν ἑστὼς, πα-
ρακαλῶν αὐτὸν, καὶ λέγων· Διαβὰς εἰς Μα-
κεδονίαν βοήθησον ἡμῖν.

10 Ὡς δὲ τὸ ὅραμα εἶδεν, εὐθέως ἐζη-
τήσαμεν ἐξελθεῖν εἰς τὴν Μακεδονίαν,
συμβιβάζοντες ὅτι προσκέκληται ἡμᾶς ὁ
Κύριος εὐαγγελίσασθαι αὐτούς.

11 Ἀναχθέντες οὖν ἀπὸ τῆς Τρῳάδος,
εὐθυδρομήσαμεν εἰς Σαμοθρᾴκην, τῇ τε
ἐπιούσῃ εἰς Νεάπολιν.

12 Ἐκεῖθέν τε εἰς Φιλίππους, ἥτις ἐστὶ
πρώτη τῆς μερίδος τῆς Μακεδονίας πόλις
κολώνια. ἦμεν δὲ ἐν ταύτῃ τῇ πόλει δια-
τρίβοντες ἡμέρας τινάς.

13 Τῇ τε ἡμέρᾳ τῶν Σαββάτων ἐξήλθο-
μεν ἔξω τῆς πόλεως παρὰ ποταμὸν, οὗ ἐνο-
μίζετο προσευχὴ εἶναι· καὶ καθίσαντες ἐλα-
λοῦμεν ταῖς συνελθούσαις γυναιξί.

14 Καί τις γυνὴ ὀνόματι Λυδία, πορ-
φυρόπωλις πόλεως Θυατείρων, σεβομένη τὸν
Θεὸν, ἤκουεν· ἧς ὁ Κύριος διήνοιξε τὴν
καρδίαν, προσέχειν τοῖς λαλουμένοις ὑπὸ
τοῦ Παύλου.

15 Ὡς δὲ ἐβαπτίσθη, καὶ ὁ οἶκος αὐτῆς,
παρεκάλεσε, λέγουσα· Εἰ κεκρίκατέ με πι-
στὴν τῷ Κυρίῳ εἶναι, εἰσελθόντες εἰς τὸν οἶκόν
μου, μείνατε. Καὶ παρεβιάσατο ἡμᾶς.

16 Ἐγένετο δὲ πορευομένων ἡμῶν εἰς προ-
σευχὴν, παιδίσκην τινὰ ἔχουσαν πνεῦμα Πύ-
θωνος, ἀπαντῆσαι ἡμῖν, ἥτις ἐργασίαν πολ-
λὴν παρεῖχε τοῖς κυρίοις αὐτῆς, μαντευομένη.

17 Αὕτη κατακολουθήσασα τῷ Παύλῳ καὶ
ἡμῖν, ἔκραζε, λέγουσα· Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι,
δου-

δοῦλοι τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑψίστου εἰσὶν, οἵτινες κα-
ταγγέλλουσιν ὑμῖν ὁδὸν σωτηρίας.
18 Τοῦτο δὲ ἐποίει ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας·
διαπονηθεὶς δὲ ὁ Παῦλος, καὶ ἐπιστρέψας,
τῷ Πνεύματι εἶπε· Παραγγέλλω σοι ἐν τῷ
ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐξελθεῖν ἀπ᾿ αὐτῆς·
Καὶ ἐξῆλθεν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ.
19 Ἰδόντες δὲ οἱ Κύριοι αὐτῆς ὅτι ἐξῆλ-
θεν ἡ ἐλπὶς τῆς ἐργασίας αὐτῶν, ἐπιλαβό-
μενοι τὸν Παῦλον καὶ τὸν Σίλαν εἵλκυσαν
εἰς τὴν ἀγορὰν ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας.
20 Καὶ προσαγαγόντες αὐτοὺς τοῖς στρατη-
γοῖς, εἶπον· Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι ἐκταράσ-
σουσιν ἡμῶν τὴν πόλιν, Ἰουδαῖοι ὑπάρχοντες.
21 Καὶ καταγγέλλουσιν ἔθη, ἃ οὐκ ἔξεστιν ἡ-
μῖν παραδέχεσθαι, οὐδὲ ποιεῖν, Ῥωμαίοις οὖσι.
22 Καὶ συνεπέστη ὁ ὄχλος κατ᾿ αὐτῶν, καὶ
οἱ στρατηγοὶ περιῤῥήξαντες αὐτῶν τὰ ἱμάτια,
ἐκέλευον ῥαβδίζειν.
23 Πολλάς τε ἐπιθέντες αὐτοῖς πληγὰς,
ἔβαλον εἰς φυλακὴν, παραγγείλαντες τῷ
δεσμοφύλακι ἀσφαλῶς τηρεῖν αὐτούς.
24 Ὃς παραγγελίαν τοιαύτην εἰληφὼς,
ἔβαλεν αὐτοὺς εἰς τὴν ἐσωτέραν φυλακὴν, καὶ
τοὺς πόδας αὐτῶν ἠσφαλίσατο εἰς τὸ ξύλον.
25 Κατὰ δὲ τὸ μεσονύκτιον Παῦλος καὶ
Σίλας προσευχόμενοι ὕμνουν τὸν Θεόν· ἐπη-
κροῶντο δὲ αὐτῶν οἱ δέσμιοι.
26 Ἄφνω δὲ σεισμὸς ἐγένετο μέγας, ὥστε
σαλευθῆναι τὰ θεμέλια τοῦ δεσμωτηρίου·
ἀνεῴχθησάν τε παραχρῆμα αἱ θύραι πᾶ-
σαι, καὶ πάντων τὰ δεσμὰ ἀνέθη.
27 Ἔξυπνος δὲ γενόμενος ὁ δεσμοφύλαξ,
καὶ ἰδὼν ἀνεῳγμένας τὰς θύρας τῆς φυλακῆς,
σπα-

σπασάμενος μάχαιραν, ἔμελλεν ἑαυτὸν ἀναιρεῖν, νομίζων ἐκπεφευγέναι τοὺς δεσμίους.

28 Ἐφώνησε δὲ φωνῇ μεγάλῃ ὁ Παῦλος, λέγων· Μηδὲν πράξῃς σεαυτῷ κακόν· ἅπαντες γάρ ἐσμεν ἐνθάδε.

29 Αἰτήσας δὲ φῶτα εἰσεπήδησε, ϗ ἔντρομος γενόμενος προσέπεσε τῷ Παύλῳ ϗ τῷ Σίλα.

30 Καὶ προαγαγὼν αὐτοὺς ἔξω, ἔφη· Κύριοι, τί με δεῖ ποιεῖν ἵνα σωθῶ;

31 Οἱ δὲ εἶπον· Πίστευσον ἐπὶ τὸν Κύριον Ἰησοῦν Χριστὸν, ϗ σωθήσῃ σὺ ϗ ὁ οἶκός σου.

32 Καὶ ἐλάλησαν αὐτῷ τὸν λόγον τοῦ Κυρίου, ϗ πᾶσι τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.

33 Καὶ παραλαβὼν αὐτοὺς ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ τῆς νυκτὸς, ἔλουσεν ἀπὸ τῶν πληγῶν· ϗ ἐβαπτίσθη αὐτὸς ϗ οἱ αὐτοῦ πάντες παραχρῆμα.

34 Ἀναγαγών τε αὐτοὺς εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, παρέθηκε τράπεζαν, καὶ ἠγαλλιάσατο πανοικὶ πεπιστευκὼς τῷ Θεῷ.

35 Ἡμέρας δὲ γενομένης ἀπέστειλαν οἱ στρατηγοὶ τοὺς ῥαβδούχους, λέγοντες· Ἀπόλυσον τοὺς ἀνθρώπους ἐκείνους.

36 Ἀπήγγειλε δὲ ὁ δεσμοφύλαξ τοὺς λόγους τούτους πρὸς τὸν Παῦλον· Ὅτι ἀπεστάλκασιν οἱ στρατηγοὶ, ἵνα ἀπολυθῆτε· νῦν οὖν ἐξελθόντες, πορεύεσθε ἐν εἰρήνῃ.

37 Ὁ δὲ Παῦλος ἔφη πρὸς αὐτούς· Δείραντες ἡμᾶς δημοσίᾳ, ἀκατακρίτους, ἀνθρώπους Ῥωμαίους ὑπάρχοντας, ἔβαλον εἰς φυλακὴν, ϗ νῦν λάθρα ἡμᾶς ἐκβάλλουσιν; Οὐ γάρ· ἀλλὰ ἐλθόντες αὐτοὶ ἡμᾶς ἐξαγαγέτωσαν.

38 Ἀνήγγειλαν δὲ τοῖς στρατηγοῖς οἱ ῥα-

βδοῦ-

ῥαβδοῦχοι τὰ ῥήματα ταῦτα· καὶ ἐφοβήθησαν ἀκούσαντες ὅτι Ῥωμαῖοί εἰσι.

39 Καὶ ἐλθόντες παρεκάλεσαν αὐτοὺς, καὶ ἐξαγαγόντες ἠρώτων ἐξελθεῖν τῆς πόλεως.

40 Ἐξελθόντες δὲ ἐκ τῆς φυλακῆς εἰσῆλθον εἰς τὴν Λυδίαν· καὶ ἰδόντες τοὺς ἀδελφοὺς, παρεκάλεσαν αὐτοὺς, καὶ ἐξῆλθον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΖ'. 17.

1 Διοδεύσαντες δὲ τὴν Ἀμφίπολιν καὶ Ἀπολλωνίαν, ἦλθον εἰς Θεσσαλονίκην, ὅπου ἦν ἡ συναγωγὴ τῶν Ἰουδαίων.

2 Κατὰ δὲ τὸ εἰωθὸς τῷ Παύλῳ εἰσῆλθε πρὸς αὐτοὺς, καὶ ἐπὶ Σάββατα τρία διελέγετο αὐτοῖς ἀπὸ τῶν γραφῶν,

3 Διανοίγων καὶ παρατιθέμενος ὅτι τὸν Χριστὸν ἔδει παθεῖν καὶ ἀναστῆναι ἐκ νεκρῶν, καὶ ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ Χριστὸς Ἰησοῦς, ὃν ἐγὼ καταγγέλλω ὑμῖν.

4 Καί τινες ἐξ αὐτῶν ἐπείσθησαν, καὶ προσεκληρώθησαν τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Σίλᾳ, τῶν τε σεβομένων Ἑλλήνων πολὺ πλῆθος, γυναικῶν τε τῶν πρώτων οὐκ ὀλίγαι.

5 Ζηλώσαντες δὲ οἱ ἀπειθοῦντες Ἰουδαῖοι, καὶ προσλαβόμενοι τῶν ἀγοραίων τινὰς ἄνδρας πονηροὺς, καὶ ὀχλοποιήσαντες, ἐθορύβουν τὴν πόλιν· ἐπιστάντες τε τῇ οἰκίᾳ Ἰάσονος, ἐζήτουν αὐτοὺς ἀγαγεῖν εἰς τὸν δῆμον.

6 Μὴ εὑρόντες δὲ αὐτοὺς, ἔσυρον τὸν Ἰάσονα καί τινας ἀδελφοὺς ἐπὶ τοὺς πολιτάρχας, βοῶντες· Ὅτι οἱ τὴν οἰκουμένην ἀναστατώσαντες, οὗτοι καὶ ἐνθάδε πάρεισιν,

7 Οὓς ὑποδέδεκται Ἰάσων· καὶ οὗτοι πάντες ἀπέναντι τῶν δογμάτων Καίσαρος πράττουσι,

βα-

βασιλέα λέγοντες ἕτερον εἶναι, Ἰησοῦν.
8 Ἐτάραξαν δὲ τὸν ὄχλον καὶ τοὺς πολιτάρ-
χας ἀκούοντας ταῦτα.
9 Καὶ λαβόντες τὸ ἱκανὸν παρὰ τοῦ Ἰάσο-
νος καὶ τῶν λοιπῶν, ἀπέλυσαν αὐτούς.
10 Οἱ δὲ ἀδελφοὶ εὐθέως διὰ τῆς νυκτὸς
ἐξέπεμψαν τόν τε Παῦλον καὶ τὸν Σίλαν εἰς
Βέροιαν· οἵτινες παραγενόμενοι, εἰς τὴν συ-
ναγωγὴν τῶν Ἰουδαίων ἀπῄεσαν.
11 Οὗτοι δὲ ἦσαν εὐγενέστεροι τῶν ἐν Θεσ-
σαλονίκῃ, οἵτινες ἐδέξαντο τὸν λόγον μετὰ πά-
σης προθυμίας, τὸ καθ' ἡμέραν ἀνακρίνοντες
τὰς γραφὰς, εἰ ἔχοι ταῦτα οὕτως.
12 Πολλοὶ μὲν οὖν ἐξ αὐτῶν ἐπίστευσαν,
καὶ τῶν Ἑλληνίδων γυναικῶν τῶν εὐσχημόνων,
καὶ ἀνδρῶν οὐκ ὀλίγοι.
13 Ὡς δὲ ἔγνωσαν οἱ ἀπὸ τῆς Θεσσαλο-
νίκης Ἰουδαῖοι, ὅτι καὶ ἐν τῇ Βεροίᾳ κατηγ-
γέλη ὑπὸ τοῦ Παύλου ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ, ἦλ-
θον κἀκεῖ, σαλεύοντες τοὺς ὄχλους.
14 Εὐθέως δὲ τότε τὸν Παῦλον ἐξαπέ-
στειλαν οἱ ἀδελφοὶ πορεύεσθαι ὡς ἐπὶ τὴν θά-
λασσαν· ὑπέμενον δὲ ὅ, τε Σίλας καὶ ὁ Τι-
μόθεος ἐκεῖ.
15 Οἱ δὲ καθιστῶντες τὸν Παῦλον, ἤγα-
γον αὐτὸν ἕως Ἀθηνῶν· καὶ λαβόντες ἐντολὴν
πρὸς τὸν Σίλαν καὶ Τιμόθεον, ἵνα ὡς τάχι-
στα ἔλθωσι πρὸς αὐτὸν, ἐξῄεσαν.
16 Ἐν δὲ ταῖς Ἀθήναις ἐκδεχομένου
αὐτοὺς τοῦ Παύλου, παρωξύνετο τὸ πνεῦμα
αὐτοῦ ἐν αὐτῷ, θεωροῦντι κατείδωλον οὖσαν
τὴν πόλιν.
17 Διελέγετο μὲν οὖν ἐν τῇ συναγωγῇ
τοῖς Ἰουδαίοις καὶ τοῖς σεβομένοις, καὶ ἐν τῇ

ἀγορᾷ κατὰ πᾶσαν ἡμέραν πρὸς τοὺς παρα-
τυγχάνοντας.

18 Τινὲς δὲ τῶν Ἐπικουρείων καὶ τῶν Στωϊ-
κῶν φιλοσόφων συνέβαλλον αὐτῷ· καί τινες
ἔλεγον· Τί ἂν θέλοι ὁ Σπερμολόγος οὗτος
λέγειν; Οἱ δέ· Ξένων δαιμονίων δοκεῖ κα-
ταγγελεὺς εἶναι· ὅτι τὸν Ἰησοῦν καὶ τὴν ἀνάστα-
σιν αὐτοῖς εὐηγγελίζετο.

19 Ἐπιλαβόμενοί τε αὐτοῦ, ἐπὶ τὸν Ἄ-
ρειον πάγον ἤγαγον, λέγοντες· Δυνάμε-
θα γνῶναι τίς ἡ καινὴ αὕτη ἡ ὑπὸ σοῦ λα-
λουμένη διδαχή;

20 Ξενίζοντα γάρ τινα εἰσφέρεις εἰς τὰς
ἀκοὰς ἡμῶν· βουλόμεθα οὖν γνῶναι τί ἂν
θέλοι ταῦτα εἶναι.

21 (Ἀθηναῖοι δὲ πάντες καὶ οἱ ἐπιδημοῦν-
τες ξένοι εἰς οὐδὲν ἕτερον εὐκαίρουν ἢ λέγειν τι
καὶ ἀκούειν καινότερον.)

22 Σταθεὶς δὲ ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ τοῦ Ἀ-
ρείου πάγου, ἔφη· Ἄνδρες Ἀθηναῖοι, κατὰ
πάντα ὡς δεισιδαιμονεστέρους ὑμᾶς θεωρῶ.

23 Διερχόμενος γὰρ καὶ ἀναθεωρῶν τὰ σε-
βάσματα ὑμῶν, εὗρον καὶ βωμὸν ἐν ᾧ ἐπεγέ-
γραπτο· Ἀγνώστῳ Θεῷ. Ὃν οὖν ἀγνοοῦντες
εὐσεβεῖτε, τοῦτον ἐγὼ καταγγέλλω ὑμῖν.

24 Ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας τὸν κόσμον καὶ πάντα
τὰ ἐν αὐτῷ, οὗτος οὐρανοῦ καὶ γῆς Κύριος ὑπάρ-
χων, οὐκ ἐν χειροποιήτοις ναοῖς κατοικεῖ.

25 Οὐδὲ ὑπὸ χειρῶν ἀνθρώπων θεραπεύε-
ται, προσδεόμενός τινος, αὐτὸς διδοὺς πᾶσι
ζωὴν καὶ πνοὴν καὶ τὰ πάντα.

26 Ἐποίησέ τε ἐξ ἑνὸς αἵματος πᾶν
ἔθνος ἀνθρώπων κατοικεῖν ἐπὶ πᾶν τὸ
πρόσωπον τῆς γῆς, ὁρίσας προτεταγμένους
και-

καιρὺς, καὶ τὰς ὁροθεσίας τῆς κατοικίας αὐτῶν.
27 Ζητεῖν τὸν Κύριον, εἰ ἄραγε ψηλαφή-
σειαν αὐτὸν καὶ εὕροιεν· καίτοιγε ὐ μακρὰν ἀπὸ
ἑνὸς ἑκάςυ ἡμῶν ὑπάρχοντα.
28 Ἐν αὐτῷ γὰρ ζῶμεν, καὶ κινύμεθα,
καί ἐσμεν· ὡς καί τινες τῶν καθ' ὑμᾶς ποιη-
τῶν εἰρήκασι· Τῦ γὰρ καὶ γένος ἐσμέν.
29 Γένος ὖν ὑπάρχοντες τῦ Θεῦ, ὐκ ὀφεί-
λομεν νομίζειν χρυσῷ ἢ ἀργύρῳ ἢ λίθῳ, χα-
ράγματι τέχνης καὶ ἐνθυμήσεως ἀνθρώπυ, τὸ
θεῖον εἶναι ὅμοιον.
30 Τὺς μὲν ὖν χρόνυς τῆς ἀγνοίας ὑπερι-
δὼν ὁ Θεὸς, τὰ νῦν παραγγέλλει τοῖς ἀνθρώ-
ποις πᾶσι πανταχῦ μετανοεῖν.
31 Διότι ἔςησεν ἡμέραν ἐν ᾗ μέλλει κρί-
νειν τὴν οἰκυμένην ἐν δικαιοσύνῃ, ἐν ἀνδρὶ ᾧ
ὥρισε, πίςιν παρασχὼν πᾶσιν, ἀναςήσας
αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.
32 Ἀκύσαντες δὲ ἀνάςασιν νεκρῶν, οἱ μὲν
ἐχλεύαζον· οἱ δὲ, εἶπον· Ἀκυσόμεθά συ
πάλιν περὶ τύτυ.
33 Καὶ οὕτως ὁ Παῦλος ἐξῆλθεν ἐκ μέ-
συ αὐτῶν.
34 Τινὲς δὲ ἄνδρες κολληθέντες αὐτῷ,
ἐπίςευσαν· ἐν οἷς καὶ Διονύσιος ὁ Ἀρεοπαγί-
της, καὶ γυνὴ ὀνόματι Δάμαρις, καὶ ἕτεροι
σὺν αὐτοῖς.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΗ'. 18.

1 ΜΕτὰ δὲ ταῦτα χωρισθεὶς ὁ Παῦ-
λος ἐκ τῶν Ἀθηνῶν, ἦλθεν
εἰς Κόρινθον.
2 Καὶ εὑρών τινα Ἰυδαῖον ὀνόματι Ἀκύ-
λαν, Ποντικὸν τῷ γένει, προσφάτως ἐληλυ-

θότα ἀπὸ τῆς Ἰταλίας, καὶ Πρίσκιλλαν γυ-
ναῖκα αὐτοῦ, (διὰ τὸ διατεταχέναι Κλαύδιον
χωρίζεσθαι πάντας τοὺς Ἰουδαίους ἐκ τῆς Ῥώ-
μης,) προσῆλθεν αὐτοῖς.
3 Καὶ διὰ τὸ ὁμότεχνον εἶναι, ἔμενε παρ'
αὐτοῖς, καὶ εἰργάζετο· ἦσαν γὰρ σκηνοποιοὶ
τὴν τέχνην.
4 Διελέγετο δὲ ἐν τῇ συναγωγῇ κατὰ πᾶν
σάββατον, ἔπειθέ τε Ἰουδαίους καὶ Ἕλληνας.
5 Ὡς δὲ κατῆλθον ἀπὸ τῆς Μακεδονίας
ὅ, τε Σίλας καὶ ὁ Τιμόθεος, συνείχετο τῷ
πνεύματι ὁ Παῦλος, διαμαρτυρόμενος τοῖς
Ἰουδαίοις τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.
6 Ἀντιτασσομένων δὲ αὐτῶν καὶ βλασφη-
μούντων, ἐκτιναξάμενος τὰ ἱμάτια, εἶπε
πρὸς αὐτούς· Τὸ αἷμα ὑμῶν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν
ὑμῶν· καθαρὸς ἐγώ, ἀπὸ τοῦ νῦν εἰς τὰ
ἔθνη πορεύσομαι.
7 Καὶ μεταβὰς ἐκεῖθεν, ἦλθεν εἰς οἰ-
κίαν τινὸς ὀνόματι Ἰούστου, σεβομένου τὸν Θεόν,
οὗ ἡ οἰκία ἦν συνομοροῦσα τῇ συναγωγῇ.
8 Κρίσπος δὲ ὁ ἀρχισυνάγωγος ἐπίστευσε
τῷ Κυρίῳ σὺν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ· καὶ πολλοὶ
τῶν Κορινθίων ἀκούοντες ἐπίστευον, καὶ
ἐβαπτίζοντο.
9 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος δι' ὁράματος ἐν νυκτὶ
τῷ Παύλῳ· Μὴ φοβοῦ, ἀλλὰ λάλει, καὶ
μὴ σιωπήσῃς.
10 Διότι ἐγώ εἰμι μετὰ σοῦ, καὶ οὐδεὶς ἐπι-
θήσεταί σοι τοῦ κακῶσαί σε· διότι λαός ἐστί
μοι πολὺς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ.
11 Ἐκάθησέ τε ἐνιαυτὸν καὶ μῆνας ἕξ, δι-
δάσκων ἐν αὐτοῖς τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ.
12 Γαλλίωνος δὲ ἀνθυπατεύοντος τῆς
Ἀ-

Ἀχαΐας, κατεπέστησαν ὁμοθυμαδὸν οἱ Ἰουδαῖοι
τῷ Παύλῳ, καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἐπὶ τὸ βῆμα,
13 Λέγοντες· Ὅτι παρὰ τὸν νόμον οὗτος
ἀναπείθει τοὺς ἀνθρώπους σέβεσθαι τὸν Θεόν.
14 Μέλλοντος δὲ τοῦ Παύλου ἀνοίγειν τὸ
στόμα, εἶπεν ὁ Γαλλίων πρὸς τοὺς Ἰουδαίους· Εἰ
μὲν οὖν ἦν ἀδίκημά τι ἢ ῥᾳδιούργημα πονηρὸν,
ὦ Ἰουδαῖοι, κατὰ λόγον ἂν ἠνεσχόμην ὑμῶν·
15 Εἰ δὲ ζήτημά ἐστι περὶ λόγου καὶ ὀνομά-
των, καὶ νόμου τοῦ καθ' ὑμᾶς, ὄψεσθε αὐτοί·
κριτὴς γὰρ ἐγὼ τούτων οὐ βούλομαι εἶναι.
16 Καὶ ἀπήλασεν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ βήματος.
17 Ἐπιλαβόμενοι δὲ πάντες οἱ Ἕλλη-
νες Σωσθένην τὸν ἀρχισυνάγωγον, ἔτυπτον
ἔμπροσθεν τοῦ βήματος· καὶ οὐδὲν τούτων τῷ
Γαλλίωνι ἔμελεν.
18 Ὁ δὲ Παῦλος ἔτι προσμείνας ἡμέρας
ἱκανὰς, τοῖς ἀδελφοῖς ἀποταξάμενος, ἐξέ-
πλει εἰς τὴν Συρίαν· καὶ σὺν αὐτῷ Πρίσκιλ-
λα καὶ Ἀκύλας, κειράμενος τὴν κεφαλὴν ἐν
Κεγχρεαῖς· εἶχε γὰρ εὐχήν.
19 Κατήντησε δὲ εἰς Ἔφεσον, κἀκείνους
κατέλιπεν αὐτοῦ· αὐτὸς δὲ εἰσελθὼν εἰς τὴν
συναγωγὴν, διελέχθη τοῖς Ἰουδαίοις.
20 Ἐρωτώντων δὲ αὐτῶν ἐπὶ πλείονα χρό-
νον μεῖναι παρ' αὐτοῖς, οὐκ ἐπένευσεν.
21 Ἀλλ' ἀπετάξατο αὐτοῖς, εἰπών· Δεῖ
με πάντως τὴν ἑορτὴν τὴν ἐρχομένην ποιῆσαι
εἰς Ἱεροσόλυμα· πάλιν δὲ ἀνακάμψω πρὸς
ὑμᾶς, τοῦ Θεοῦ θέλοντος. Καὶ ἀνήχθη
ἀπὸ τῆς Ἐφέσου.
22 Καὶ κατελθὼν εἰς Καισάρειαν, ἀνα-
βὰς, καὶ ἀσπασάμενος τὴν ἐκκλησίαν, κα-
τέβη εἰς Ἀντιόχειαν.

23 Καὶ ποιήσας χρόνον τινὰ, ἐξῆλθε,
διερχόμενος καθεξῆς τὴν Γαλατικὴν χώραν καὶ
Φρυγίαν, ἐπιστηρίζων πάντας τοὺς μαθητάς.
24 Ἰουδαῖος δέ τις Ἀπολλὼς ὀνόματι, Ἀ-
λεξανδρεὺς τῷ γένει, ἀνὴρ λόγιος, κατήντη-
σεν εἰς Ἔφεσον, δυνατὸς ὢν ἐν ταῖς γραφαῖς.
25 Οὗτος ἦν κατηχημένος τὴν ὁδὸν τοῦ Κυ-
ρίου, καὶ ζέων τῷ πνεύματι, ἐλάλει καὶ ἐδί-
δασκεν ἀκριβῶς τὰ περὶ τοῦ Κυρίου, ἐπιστά-
μενος μόνον τὸ βάπτισμα Ἰωάννου.
26 Οὗτός τε ἤρξατο παῤῥησιάζεσθαι ἐν τῇ
συναγωγῇ. Ἀκούσαντες δὲ αὐτοῦ Ἀκύλας καὶ
Πρίσκιλλα, προσελάβοντο αὐτὸν, καὶ ἀκρι-
βέστερον αὐτῷ ἐξέθεντο τὴν τοῦ Θεοῦ ὁδόν.
27 Βουλομένου δὲ αὐτοῦ διελθεῖν εἰς τὴν
Ἀχαΐαν, προτρεψάμενοι οἱ ἀδελφοὶ ἔγρα-
ψαν τοῖς μαθηταῖς ἀποδέξασθαι αὐτόν· ὃς
παραγενόμενος, συνεβάλετο πολὺ τοῖς πε-
πιστευκόσι διὰ τῆς χάριτος.
28 Εὐτόνως γὰρ τοῖς Ἰουδαίοις διακατη-
λέγχετο δημοσίᾳ, ἐπιδεικνὺς διὰ τῶν γρα-
φῶν, εἶναι τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΘ'. 19.

1 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ τὸν Ἀπολλὼ εἶναι
ἐν Κορίνθῳ, Παῦλον διελθόντα
τὰ ἀνωτερικὰ μέρη, ἐλθεῖν εἰς Ἔφεσον· καὶ
εὑρών τινας μαθητὰς,
2 Εἶπε πρὸς αὐτούς· Εἰ πνεῦμα ἅγιον
ἐλάβετε πιστεύσαντες; Οἱ δὲ εἶπον πρὸς
αὐτόν· ἀλλ' οὐδὲ εἰ Πνεῦμα ἅγιόν ἐστιν,
ἠκούσαμεν.
3 Εἶπέ τε πρὸς αὐτούς· Εἰς τί οὖν ἐβαπτίσθη-
τε; Οἱ δὲ εἶπον· Εἰς τὸ Ἰωάννου βάπτισμα.

4 Εἶ-

4 Εἶπε δὲ Παῦλος· Ἰωάννης μὲν ἐβά-
πτισε βάπτισμα μετανοίας, τῷ λαῷ λέγων,
εἰς τὸν ἐρχόμενον μετ᾽ αὐτὸν ἵνα πιστεύσωσι,
τουτέστιν, εἰς τὸν Χριστὸν Ἰησοῦν.
5 Ἀκούσαντες δὲ ἐβαπτίσθησαν εἰς τὸ ὄνο-
μα τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.
6 Καὶ ἐπιθέντος αὐτοῖς τοῦ Παύλου τὰς
χεῖρας, ἦλθε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐπ᾽ αὐτούς·
ἐλάλουν τε γλώσσαις, καὶ προεφήτευον.
7 Ἦσαν δὲ οἱ πάντες ἄνδρες ὡσεὶ δεκα-
δύο.
8 Εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν συναγωγὴν, ἐπαρ-
ρησιάζετο, ἐπὶ μῆνας τρεῖς διαλεγόμενος καὶ
πείθων τὰ περὶ τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ.
9 Ὡς δέ τινες ἐσκληρύνοντο καὶ ἠπείθουν,
κακολογοῦντες τὴν ὁδὸν ἐνώπιον τοῦ πλήθους,
ἀποστὰς ἀπ᾽ αὐτῶν, ἀφώρισε τοὺς μαθητὰς,
καθ᾽ ἡμέραν διαλεγόμενος ἐν τῇ σχολῇ Τυ-
ράννου τινός.
10 Τοῦτο δὲ ἐγένετο ἐπὶ ἔτη δύο· ὥστε
πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν Ἀσίαν ἀκοῦ-
σαι τὸν λόγον τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, Ἰουδαίους
τε καὶ Ἕλληνας.
11 Δυνάμεις τε οὐ τὰς τυχούσας ἐποίει ὁ
Θεὸς διὰ τῶν χειρῶν Παύλου.
12 Ὥστε καὶ ἐπὶ τοὺς ἀσθενοῦντας ἐπιφέρεσθαι
ἀπὸ τοῦ χρωτὸς αὐτοῦ σουδάρια, ἢ σιμικίνθια, καὶ
ἀπαλλάσσεσθαι ἀπ᾽ αὐτῶν τὰς νόσους, τά τε
πνεύματα τὰ πονηρὰ ἐξέρχεσθαι ἀπ᾽ αὐτῶν.
13 Ἐπεχείρησαν δέ τινες ἀπὸ τῶν περιερ-
χομένων Ἰουδαίων ἐξορκιστῶν ὀνομάζειν ἐπὶ τοὺς
ἔχοντας τὰ πνεύματα τὰ πονηρὰ τὸ ὄνομα τοῦ
Κυρίου Ἰησοῦ, λέγοντες· Ὁρκίζομεν ὑμᾶς
τὸν Ἰησοῦν ὃν ὁ Παῦλος κηρύσσει.

14 Ἦσαν δέ τινες υἱοὶ Σκευᾶ Ἰουδαίου ἀρχιερέως ἑπτὰ, οἱ τοῦτο ποιοῦντες.

15 Ἀποκριθὲν δὲ τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν, εἶπε· Τὸν Ἰησοῦν γινώσκω, καὶ τὸν Παῦλον ἐπίσταμαι· ὑμεῖς δὲ τίνες ἐστέ;

16 Καὶ ἐφαλλόμενος ἐπ᾽ αὐτοὺς ὁ ἄνθρωπος ἐν ᾧ ἦν τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν, καὶ κατακυριεύσας αὐτῶν, ἴσχυσε κατ᾽ αὐτῶν, ὥστε γυμνοὺς καὶ τετραυματισμένους ἐκφυγεῖν ἐκ τοῦ οἴκου ἐκείνου.

17 Τοῦτο δὲ ἐγένετο γνωστὸν πᾶσιν Ἰουδαίοις τε καὶ Ἕλλησι τοῖς κατοικοῦσι τὴν Ἔφεσον, καὶ ἐπέπεσε φόβος ἐπὶ πάντας αὐτοὺς, καὶ ἐμεγαλύνετο τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

18 Πολλοί τε τῶν πεπιστευκότων ἤρχοντο, ἐξομολογούμενοι καὶ ἀναγγέλλοντες τὰς πράξεις αὐτῶν.

19 Ἱκανοὶ δὲ τῶν τὰ περίεργα πραξάντων, συνενέγκαντες τὰς βίβλους, κατέκαιον ἐνώπιον πάντων· καὶ συνεψήφισαν τὰς τιμὰς αὐτῶν, καὶ εὗρον ἀργυρίου μυριάδας πέντε.

20 Οὕτω κατὰ κράτος ὁ λόγος τοῦ Κυρίου ηὔξανε καὶ ἴσχυεν.

21 Ὡς δὲ ἐπληρώθη ταῦτα, ἔθετο ὁ Παῦλος ἐν τῷ Πνεύματι, διελθὼν τὴν Μακεδονίαν καὶ Ἀχαΐαν, πορεύεσθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, εἰπών· Ὅτι μετὰ τὸ γενέσθαι με ἐκεῖ, δεῖ με καὶ Ῥώμην ἰδεῖν.

22 Ἀποστείλας δὲ εἰς τὴν Μακεδονίαν δύο τῶν διακονούντων αὐτῷ, Τιμόθεον καὶ Ἔραστον, αὐτὸς ἐπέσχε χρόνον εἰς τὴν Ἀσίαν.

23 Ἐγένετο δὲ κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον τάραχος οὐκ ὀλίγος περὶ τῆς ὁδοῦ.

24 Δημήτριος γάρ τις ὀνόματι, ἀργυροκό-

πος,

πος, ποιῶν ναοὺς ἀργυροῦς Ἀρτέμιδος, παρείχετο τοῖς τεχνίταις ἐργασίαν οὐκ ὀλίγην.

25 Οὓς συναθροίσας, καὶ τοὺς περὶ τὰ τοιαῦτα ἐργάτας, εἶπεν· Ἄνδρες, ἐπίσασθε ὅτι ἐκ ταύτης τῆς ἐργασίας ἡ εὐποεία ἡμῶν ἐστι.

26 Καὶ θεωρεῖτε καὶ ἀκούετε ὅτι οὐ μόνον Ἐφέσου, ἀλλὰ σχεδὸν πάσης τῆς Ἀσίας ὁ Παῦλος οὗτος πείσας μετέστησεν ἱκανὸν ὄχλον, λέγων ὅτι οὐκ εἰσὶ θεοὶ οἱ διὰ χειρῶν γινόμενοι.

27 Οὐ μόνον δὲ τοῦτο κινδυνεύει ἡμῖν τὸ μέρος εἰς ἀπελεγμὸν ἐλθεῖν, ἀλλὰ καὶ τὸ τῆς μεγάλης θεᾶς Ἀρτέμιδος ἱερὸν εἰς οὐδὲν λογισθῆναι, μέλλειν τε καὶ καθαιρεῖσθαι τὴν μεγαλειότητα αὐτῆς, ἣν ὅλη ἡ Ἀσία καὶ ἡ οἰκουμένη σέβεται.

28 Ἀκούσαντες δέ, καὶ γενόμενοι πλήρεις θυμοῦ, ἔκραζον λέγοντες· Μεγάλη ἡ Ἄρτεμις Ἐφεσίων.

29 Καὶ ἐπλήσθη ἡ πόλις ὅλη συγχύσεως· ὥρμησάν τε ὁμοθυμαδὸν εἰς τὸ θέατρον, συναρπάσαντες Γάϊον καὶ Ἀρίσαρχον Μακεδόνας, συνεκδήμους τοῦ Παύλου.

30 Τοῦ δὲ Παύλου βουλομένου εἰσελθεῖν εἰς τὸν δῆμον, οὐκ εἴων αὐτὸν οἱ μαθηταί.

31 Τινὲς δὲ καὶ τῶν Ἀσιαρχῶν ὄντες αὐτῷ φίλοι, πέμψαντες πρὸς αὐτόν, παρεκάλουν μὴ δοῦναι ἑαυτὸν εἰς τὸ θέατρον.

32 Ἄλλοι μὲν οὖν ἄλλο τι ἔκραζον· ἦν γὰρ ἡ ἐκκλησία συγκεχυμένη, καὶ οἱ πλείους οὐκ ᾔδεισαν τίνος ἕνεκεν συνεληλύθεισαν.

33 Ἐκ δὲ τοῦ ὄχλου προεβίβασαν Ἀλέξανδρον, προβαλλόντων αὐτὸν τῶν Ἰουδαίων· ὁ δὲ

Α'λέξανδρος κατασείσας τὴν χεῖρα, ἤθελεν ἀπολογεῖσθαι τῷ δήμῳ.

34 Ε'πιγνόντων δὲ ὅτι Ι'ουδαῖός ἐστι, φωνὴ ἐγένετο μία ἐκ πάντων, ὡς ἐπὶ ὥρας δύο κραζόντων· Μεγάλη ἡ Α'ρτεμις Ε'φεσίων.

35 Καταστείλας δὲ ὁ γραμματεὺς τὸν ὄχλον, φησίν· Α'νδρες Ε'φέσιοι, τίς γάρ ἐστιν ἄνθρωπος, ὃς οὐ γινώσκει τὴν Ε'φεσίων πόλιν νεωκόρον οὖσαν τῆς μεγάλης θεᾶς Α'ρτέμιδος, καὶ τοῦ Διοπετοῦς;

36 Α'ναντιρρήτων οὖν ὄντων τούτων, δέον ἐστὶν ὑμᾶς κατεσταλμένους ὑπάρχειν, καὶ μηδὲν προπετὲς πράττειν·

37 Η'γάγετε γὰρ τοὺς ἄνδρας τούτους, οὔτε ἱεροσύλους, οὔτε βλασφημοῦντας τὴν θεὰν ὑμῶν.

38 Εἰ μὲν οὖν Δημήτριος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ τεχνῖται πρός τινα λόγον ἔχουσιν, ἀγοραῖοι ἄγονται, καὶ ἀνθύπατοί εἰσιν, ἐγκαλείτωσαν ἀλλήλοις.

39 Εἰ δέ τι περὶ ἑτέρων ἐπιζητεῖτε, ἐν τῇ ἐννόμῳ ἐκκλησίᾳ ἐπιλυθήσεται.

40 Καὶ γὰρ κινδυνεύομεν ἐγκαλεῖσθαι στάσεως περὶ τῆς σήμερον, μηδενὸς αἰτίου ὑπάρχοντος περὶ οὗ δυνησόμεθα ἀποδοῦναι λόγον τῆς συστροφῆς ταύτης. Καὶ ταῦτα εἰπὼν, ἀπέλυσε τὴν ἐκκλησίαν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Κ'. 20.

1 ΜΕτὰ δὲ τὸ παύσασθαι τὸν θόρυβον προσκαλεσάμενος ὁ Παῦλος τοὺς μαθητὰς καὶ ἀσπασάμενος, ἐξῆλθε πορευθῆναι εἰς τὴν Μακεδονίαν.

2 Διελθὼν δὲ τὰ μέρη ἐκεῖνα, καὶ παρακαλέσας αὐτοὺς λόγῳ πολλῷ, ἦλθεν εἰς τὴν Ε'λλάδα.

3 Ποιήσας τε μῆνας τρεῖς, γενομένης αὐτῷ ἐπιβουλῆς ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων μέλλοντι ἀνάγεσθαι εἰς τὴν Συρίαν, ἐγένετο γνώμη τοῦ ὑποστρέφειν διὰ Μακεδονίας.

4 Συνείπετο δὲ αὐτῷ ἄχρι τῆς Ἀσίας Σώπατρος Βεροιαῖος· Θεσσαλονικέων δὲ, Ἀρίσταρχος καὶ Σεκοῦνδος, καὶ Γάϊος Δερβαῖος, καὶ Τιμόθεος, Ἀσιανοὶ δὲ, Τυχικὸς καὶ Τρόφιμος.

5 Οὗτοι προελθόντες ἔμενον ἡμᾶς ἐν Τρωάδι.

6 Ἡμεῖς δὲ ἐξεπλεύσαμεν μετὰ τὰς ἡμέρας τῶν Ἀζύμων ἀπὸ Φιλίππων, καὶ ἤλθομεν πρὸς αὐτοὺς εἰς τὴν Τρωάδα ἄχρις ἡμερῶν πέντε, οὗ διετρίψαμεν ἡμέρας ἑπτά.

7 Ἐν δὲ τῇ μιᾷ τῶν σαββάτων, συνηγμένων τῶν μαθητῶν τοῦ κλάσαι ἄρτον, ὁ Παῦλος διελέγετο αὐτοῖς, μέλλων ἐξιέναι τῇ ἐπαύριον· παρέτεινέ τε τὸν λόγον μέχρι μεσονυκτίου.

8 Ἦσαν δὲ λαμπάδες ἱκαναὶ ἐν τῷ ὑπερῴῳ οὗ ἦμεν συνηγμένοι.

9 Καθήμενος δέ τις νεανίας ὀνόματι Εὔτυχος ἐπὶ τῆς θυρίδος, καταφερόμενος ὕπνῳ βαθεῖ, διαλεγομένου τοῦ Παύλου ἐπὶ πλεῖον, κατενεχθεὶς ἀπὸ τοῦ ὕπνου, ἔπεσεν ἀπὸ τοῦ τριστέγου κάτω, καὶ ἤρθη νεκρός.

10 Καταβὰς δὲ ὁ Παῦλος ἐπέπεσεν αὐτῷ, καὶ συμπεριλαβὼν εἶπε· Μὴ θορυβεῖσθε· ἡ γὰρ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν αὐτῷ ἐστιν.

11 Ἀναβὰς δὲ, καὶ κλάσας ἄρτον καὶ γευσάμενος, ἐφ᾽ ἱκανόν τε ὁμιλήσας ἄχρις αὐγῆς, οὕτως ἐξῆλθεν.

12 Ἤγαγον δὲ τὸν παῖδα ζῶντα, καὶ παρεκλήθησαν οὐ μετρίως.

13 Ἡμεῖς δὲ προελθόντες ἐπὶ τὸ πλοῖον, ἀνήχθημεν εἰς τὴν Ἄσσον, ἐκεῖθεν μέλλοντες ἀναλαμβάνειν τὸν Παῦλον· οὕτω γὰρ ἦν διατεταγμένος, μέλλων αὐτὸς πεζεύειν.

14 Ὡς δὲ συνέβαλεν ἡμῖν εἰς τὴν Ἄσσον, ἀναλαβόντες αὐτὸν ἤλθομεν εἰς Μιτυλήνην.

15 Κἀκεῖθεν ἀποπλεύσαντες, τῇ ἐπιούσῃ κατηντήσαμεν ἀντικρὺ Χίου· τῇ δὲ ἑτέρᾳ παρεβάλομεν εἰς Σάμον· ϗ μείναντες ἐν Τρωγυλλίῳ, τῇ ἐχομένῃ ἤλθομεν εἰς Μίλητον.

16 Ἔκρινε γὰρ ὁ Παῦλος παραπλεῦσαι τὴν Ἔφεσον, ὅπως μὴ γένηται αὐτῷ χρονοτριβῆσαι ἐν τῇ Ἀσίᾳ· ἔσπευδε γὰρ, εἰ δυνατὸν ἦν αὐτῷ, τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς γενέσθαι εἰς Ἱεροσόλυμα.

17 Ἀπὸ δὲ τῆς Μιλήτου πέμψας εἰς Ἔφεσον, μετεκαλέσατο τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἐκκλησίας.

18 Ὡς δὲ παρεγένοντο πρὸς αὐτὸν, εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐπίστασθε, ἀπὸ πρώτης ἡμέρας ἀφ᾽ ἧς ἐπέβην εἰς τὴν Ἀσίαν, πῶς μεθ᾽ ὑμῶν τὸν πάντα χρόνον ἐγενόμην,

19 Δουλεύων τῷ Κυρίῳ μετὰ πάσης ταπεινοφροσύνης, ϗ πολλῶν δακρύων ϗ πειρασμῶν, τῶν συμβάντων μοι ἐν ταῖς ἐπιβουλαῖς τῶν Ἰουδαίων.

20 Ὡς οὐδὲν ὑπεστειλάμην τῶν συμφερόντων, τοῦ μὴ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν ϗ διδάξαι ὑμᾶς δημοσίᾳ ϗ κατ᾽ οἴκους,

21 Διαμαρτυρόμενος Ἰουδαίοις τε ϗ Ἕλλησι τὴν εἰς τὸν Θεὸν μετάνοιαν, ϗ πίστιν τὴν εἰς τὸν Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστόν.

22 Καὶ νῦν ἰδοὺ, ἐγὼ δεδεμένος τῷ πνεύματι, πορεύομαι εἰς Ἱερουσαλὴμ,

τὰ

τὰ ἐν αὐτῇ συναντήσοντά μοι μὴ εἰδώς.

23 Πλὴν ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον κατὰ πό-
λιν διαμαρτύρεται, λέγον ὅτι δεσμά με καὶ
θλίψεις μένουσιν.

24 Ἀλλ' οὐδενὸς λόγον ποιοῦμαι, οὐδὲ
ἔχω τὴν ψυχήν μου τιμίαν ἐμαυτῷ, ὡς τε-
λειῶσαι τὸν δρόμον μου μετὰ χαρᾶς, καὶ τὴν
διακονίαν ἣν ἔλαβον παρὰ τοῦ Κυρίου Ἰη-
σοῦ, διαμαρτύρασθαι τὸ εὐαγγέλιον τῆς
χάριτος τοῦ Θεοῦ.

25 Καὶ νῦν ἰδοὺ, ἐγὼ οἶδα ὅτι οὐκέτι ὄψε-
σθε τὸ πρόσωπόν μου ὑμεῖς πάντες, ἐν οἷς
διῆλθον κηρύσσων τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

26 Διὸ μαρτύρομαι ὑμῖν ἐν τῇ σήμερον
ἡμέρᾳ, ὅτι καθαρὸς ἐγὼ ἀπὸ τοῦ αἵματος
πάντων.

27 Οὐ γὰρ ὑπεστειλάμην τοῦ μὴ ἀναγγεῖ-
λαι ὑμῖν πᾶσαν τὴν βουλὴν τοῦ Θεοῦ.

28 Προσέχετε οὖν ἑαυτοῖς, καὶ παντὶ τῷ
ποιμνίῳ, ἐν ᾧ ὑμᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον
ἔθετο ἐπισκόπους, καὶ ποιμαίνειν τὴν ἐκκλη-
σίαν τοῦ Θεοῦ, ἣν περιεποιήσατο διὰ τοῦ ἰδίου
αἵματος.

29 Ἐγὼ γὰρ οἶδα τοῦτο, ὅτι εἰσελεύσον-
ται μετὰ τὴν ἄφιξίν μου λύκοι βαρεῖς εἰς ὑμᾶς,
μὴ φειδόμενοι τοῦ ποιμνίου.

30 Καὶ ἐξ ὑμῶν αὐτῶν ἀναστήσονται ἄν-
δρες λαλοῦντες διεστραμμένα, τοῦ ἀποσπᾷν
τοὺς μαθητὰς ὀπίσω αὐτῶν.

31 Διὸ γρηγορεῖτε, μνημονεύοντες ὅτι τριε-
τίαν νύκτα καὶ ἡμέραν οὐκ ἐπαυσάμην μετὰ δα-
κρύων νουθετῶν ἕνα ἕκαστον.

32 Καὶ τανῦν παρατίθεμαι ὑμᾶς, ἀδελ-
φοὶ, τῷ Θεῷ καὶ τῷ λόγῳ τῆς χάριτος αὐτοῦ,

τῷ δυναμένῳ ἐποικοδομῆσαι, καὶ δοῦναι ὑμῖν κληρονομίαν ἐν τοῖς ἡγιασμένοις πᾶσιν.

33 Ἀργυρίου ἢ χρυσίου ἢ ἱματισμοῦ οὐδενὸς ἐπεθύμησα.

34 Αὐτοὶ δὲ γινώσκετε, ὅτι ταῖς χρείαις μου καὶ τοῖς οὖσι μετ᾽ ἐμοῦ ὑπηρέτησαν αἱ χεῖρες αὗται.

35 Πάντα ὑπέδειξα ὑμῖν, ὅτι οὕτω κοπιῶντας δεῖ ἀντιλαμβάνεσθαι τῶν ἀσθενούντων, μνημονεύειν τε τῶν λόγων τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, ὅτι αὐτὸς εἶπε· Μακάριόν ἐστι διδόναι μᾶλλον ἢ λαμβάνειν.

36 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, θεὶς τὰ γόνατα αὐτοῦ, σὺν πᾶσιν αὐτοῖς προσηύξατο.

37 Ἱκανὸς δὲ ἐγένετο κλαυθμὸς πάντων· καὶ ἐπιπεσόντες ἐπὶ τὸν τράχηλον τοῦ Παύλου κατεφίλουν αὐτόν·

38 Ὀδυνώμενοι μάλιστα ἐπὶ τῷ λόγῳ ᾧ εἰρήκει, ὅτι οὐκέτι μέλλουσι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ θεωρεῖν· προέπεμπον δὲ αὐτὸν εἰς τὸ πλοῖον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΑ'. 21.

1 ὩΣ δὲ ἐγένετο ἀναχθῆναι ἡμᾶς ἀποσπασθέντας ἀπ᾽ αὐτῶν, εὐθυδρομήσαντες ἤλθομεν εἰς τὴν Κῶν, τῇ δὲ ἑξῆς εἰς τὴν Ῥόδον, κἀκεῖθεν εἰς Πάταρα·

2 Καὶ εὑρόντες πλοῖον διαπερῶν εἰς Φοινίκην, ἐπιβάντες ἀνήχθημεν.

3 Ἀναφανέντες δὲ τὴν Κύπρον, καὶ καταλιπόντες αὐτὴν εὐώνυμον, ἐπλέομεν εἰς Συρίαν, καὶ κατήχθημεν εἰς Τύρον· ἐκεῖσε γὰρ ἦν τὸ πλοῖον ἀποφορτιζόμενον τὸν γόμον.

4 Καὶ ἀνευρόντες τοὺς μαθητὰς, ἐπεμείναμεν αὐτοῦ ἡμέρας ἑπτά· οἵτινες τῷ Παύλῳ

ἔλε-

ἔλεγον διὰ τοῦ Πνεύματος, μὴ ἀναβαίνειν εἰς
Ἰερουσαλήμ.
5 Ὅτε δὲ ἐγένετο ἡμᾶς ἐξαρτίσαι τὰς
ἡμέρας, ἐξελθόντες ἐπορευόμεθα, προπεμ-
πόντων ἡμᾶς πάντων σὺν γυναιξὶ καὶ τέκνοις,
ἕως ἔξω τῆς πόλεως· καὶ θέντες τὰ γόνατα ἐπὶ
τὸν αἰγιαλὸν, προσηυξάμεθα.
6 Καὶ ἀσπασάμενοι ἀλλήλους, ἐπέβη-
μεν εἰς τὸ πλοῖον· ἐκεῖνοι δὲ ὑπέστρεψαν εἰς
τὰ ἴδια.
7 Ἡμεῖς δὲ τὸν πλοῦν διανύσαντες, ἀπὸ
Τύρου κατηντήσαμεν εἰς Πτολεμαΐδα· καὶ
ἀσπασάμενοι τοὺς ἀδελφοὺς ἐμείναμεν ἡμέραν
μίαν παρ' αὐτοῖς.
8 Τῇ δὲ ἐπαύριον ἐξελθόντες οἱ περὶ τὸν
Παῦλον, ἤλθομεν εἰς Καισάρειαν· καὶ εἰ-
σελθόντες εἰς τὸν οἶκον Φιλίππου τοῦ εὐαγ-
γελιστοῦ, (τοῦ ὄντος ἐκ τῶν ἑπτὰ) ἐμείνα-
μεν παρ' αὐτῷ.
9 Τούτῳ δὲ ἦσαν θυγατέρες παρθένοι τέσ-
σαρες προφητεύουσαι·
10 Ἐπιμενόντων δὲ ἡμῶν ἡμέρας πλείους,
κατῆλθέ τις ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας προφήτης ὀνό-
ματι Ἄγαβος.
11 Καὶ ἐλθὼν πρὸς ἡμᾶς, καὶ ἄρας τὴν
ζώνην τοῦ Παύλου, δήσας τε αὐτοῦ τὰς χεῖρας
καὶ τοὺς πόδας, εἶπε· Τάδε λέγει τὸ Πνεῦμα
τὸ ἅγιον· Τὸν ἄνδρα, οὗ ἐστιν ἡ ζώνη αὕτη,
οὕτω δήσουσιν ἐν Ἰερουσαλὴμ οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ
παραδώσουσιν εἰς χεῖρας ἐθνῶν.
12 Ὡς δὲ ἠκούσαμεν ταῦτα, παρεκαλοῦ-
μεν ἡμεῖς τε καὶ οἱ ἐντόπιοι, τοῦ μὴ ἀναβαίνειν
αὐτὸν εἰς Ἰερουσαλήμ.
13 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Παῦλος· Τί ποιεῖτε,
κλαίον-

κλαίοντες καὶ συνθρύπτοντές μου τὴν καρδίαν; ἐγὼ γὰρ οὐ μόνον δεθῆναι, ἀλλὰ καὶ ἀποθανεῖν εἰς Ἱερουσαλὴμ ἑτοίμως ἔχω ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

14 Μὴ πειθομένου δὲ αὐτοῦ, ἡσυχάσαμεν εἰπόντες· Τὸ θέλημα τοῦ Κυρίου γενέσθω.

15 Μετὰ δὲ τὰς ἡμέρας ταύτας ἀποσκευασάμενοι ἀνεβαίνομεν εἰς Ἱερουσαλήμ.

16 Συνῆλθον δὲ καὶ τῶν μαθητῶν ἀπὸ Καισαρείας σὺν ἡμῖν, ἄγοντες παρ' ᾧ ξενισθῶμεν, Μνάσωνί τινι Κυπρίῳ, ἀρχαίῳ μαθητῇ.

17 Γενομένων δὲ ἡμῶν εἰς Ἱεροσόλυμα, ἀσμένως ἐδέξαντο ἡμᾶς οἱ ἀδελφοί.

18 Τῇ δὲ ἐπιούσῃ εἰσῄει ὁ Παῦλος σὺν ἡμῖν πρὸς Ἰάκωβον· πάντες τε παρεγένοντο οἱ πρεσβύτεροι.

19 Καὶ ἀσπασάμενος αὐτοὺς, ἐξηγεῖτο καθ' ἓν ἕκαστον ὧν ἐποίησεν ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ἔθνεσι διὰ τῆς διακονίας αὐτοῦ.

20 Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐδόξαζον τὸν Κύριον· εἰπόντε αὐτῷ· Θεωρεῖς ἀδελφὲ, πόσαι μυριάδες εἰσὶν Ἰουδαίων τῶν πεπιστευκότων· καὶ πάντες ζηλωταὶ τοῦ νόμου ὑπάρχουσι.

21 Κατηχήθησαν δὲ περὶ σοῦ, ὅτι ἀποστασίαν διδάσκεις ἀπὸ Μωσέως τοὺς κατὰ τὰ ἔθνη πάντας Ἰουδαίους, λέγων μὴ περιτέμνειν αὐτοὺς τὰ τέκνα, μηδὲ τοῖς ἔθεσι περιπατεῖν.

22 Τί οὖν ἐστι; πάντως δεῖ πλῆθος συνελθεῖν· ἀκούσονται γὰρ ὅτι ἐλήλυθας.

23 Τοῦτο οὖν ποίησον ὅ σοι λέγομεν· Εἰσὶν ἡμῖν ἄνδρες τέσσαρες εὐχὴν ἔχοντες ἐφ' ἑαυτῶν.

24 Τούτους παραλαβὼν, ἁγνίσθητι σὺν αὐτοῖς, καὶ δαπάνησον ἐπ' αὐτοῖς, ἵνα ξυ-

ρή-

ρήσωνται τὴν κεφαλήν· καὶ γνῶσι πάντες ὅτι
ὧν κατήχηνται περὶ σοῦ οὐδέν ἐστιν, ἀλλὰ στοι-
χεῖς καὶ αὐτὸς τὸν νόμον φυλάσσων.
25 Περὶ δὲ τῶν πεπιστευκότων ἐθνῶν ἡμεῖς
ἐπεστείλαμεν, κρίναντες μηδὲν τοιοῦτον τη-
ρεῖν αὐτοὺς, εἰ μὴ φυλάσσεσθαι αὐτοὺς τό, τε
εἰδωλόθυτον, καὶ τὸ αἷμα, καὶ πνικτὸν, καὶ
πορνείαν.
26 Τότε ὁ Παῦλος παραλαβὼν τοὺς ἄν-
δρας, τῇ ἐχομένῃ ἡμέρᾳ σὺν αὐτοῖς ἁγνισθεὶς
εἰσῄει εἰς τὸ ἱερὸν, διαγγέλλων τὴν ἐκπλήρω-
σιν τῶν ἡμερῶν τοῦ ἁγνισμοῦ, ἕως οὗ προσηνέχ-
θη ὑπὲρ ἑνὸς ἑκάστου αὐτῶν ἡ προσφορά.
27 Ὡς δὲ ἔμελλον αἱ ἑπτὰ ἡμέραι συντε-
λεῖσθαι, οἱ ἀπὸ τῆς Ἀσίας Ἰουδαῖοι θεασά-
μενοι αὐτὸν ἐν τῷ ἱερῷ, συνέχεον πάντα τὸν
ὄχλον, καὶ ἐπέβαλον τὰς χεῖρας ἐπ᾽ αὐτὸν,
28 Κράζοντες· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, βοη-
θεῖτε· οὗτός ἐστιν ὁ ἄνθρωπος ὁ κατὰ τοῦ λαοῦ καὶ
τοῦ νόμου καὶ τοῦ τόπου τούτου πάντας πανταχοῦ δι-
δάσκων· ἔτι τε καὶ Ἕλληνας εἰσήγαγεν εἰς τὸ
ἱερὸν, καὶ κεκοίνωκε τὸν ἅγιον τόπον τοῦτον.
29 (Ἦσαν γὰρ προεωρακότες Τρόφιμον
τὸν Ἐφέσιον ἐν τῇ πόλει σὺν αὐτῷ, ὃν ἐνόμι-
ζον ὅτι εἰς τὸ ἱερὸν εἰσήγαγεν ὁ Παῦλος.)
30 Ἐκινήθη τε ἡ πόλις ὅλη, καὶ ἐγένετο
συνδρομὴ τοῦ λαοῦ· καὶ ἐπιλαβόμενοι τοῦ Παύ-
λου, εἷλκον αὐτὸν ἔξω τοῦ ἱεροῦ· καὶ εὐθέως
ἐκλείσθησαν αἱ θύραι.
31 Ζητούντων δὲ αὐτὸν ἀποκτεῖναι, ἀνέβη
φάσις τῷ χιλιάρχῳ τῆς σπείρης, ὅτι ὅλη συγ-
κέχυται Ἰερουσαλήμ.
32 Ὃς ἐξαυτῆς παραλαβὼν στρατιώτας καὶ
ἑκατοντάρχους, κατέδραμεν ἐπ᾽ αὐτούς· Οἱ
δὲ

δὲ ἰδόντες τὸν χιλίαρχον καὶ τοὺς στρατιώτας, ἐπαύσαντο τύπτοντες τὸν Παῦλον.
33 Τότε ἐγγίσας ὁ χιλίαρχος ἐπελάβετο αὐτοῦ, καὶ ἐκέλευσε δεθῆναι ἁλύσεσι δυσί· καὶ ἐπυνθάνετο τίς ἂν εἴη, καὶ τί ἐστι πεποιηκώς.
34 Ἄλλοι δὲ ἄλλο τι ἐβόων ἐν τῷ ὄχλῳ· μὴ δυνάμενος δὲ γνῶναι τὸ ἀσφαλὲς διὰ τὸν θόρυβον, ἐκέλευσεν ἄγεσθαι αὐτὸν εἰς τὴν παρεμβολήν.
35 Ὅτε δὲ ἐγένετο ἐπὶ τοὺς ἀναβαθμοὺς, συνέβη βαστάζεσθαι αὐτὸν ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν διὰ τὴν βίαν τοῦ ὄχλου.
36 Ἠκολούθει γὰρ τὸ πλῆθος τοῦ λαοῦ κράζον· Αἶρε αὐτόν.
37 Μέλλων τε εἰσάγεσθαι εἰς τὴν παρεμβολὴν ὁ Παῦλος, λέγει τῷ χιλιάρχῳ· Εἰ ἔξεστί μοι εἰπεῖν τι πρὸς σέ; Ὁ δὲ ἔφη· Ἑλληνιστὶ γινώσκεις;
38 Οὐκ ἄρα σὺ εἶ ὁ Αἰγύπτιος ὁ πρὸ τούτων τῶν ἡμερῶν ἀναστατώσας, καὶ ἐξαγαγὼν εἰς τὴν ἔρημον τοὺς τετρακισχιλίους ἄνδρας τῶν σικαρίων;
39 Εἶπε δὲ ὁ Παῦλος· Ἐγὼ ἄνθρωπος μέν εἰμι Ἰουδαῖος Ταρσεὺς, τῆς Κιλικίας οὐκ ἀσήμου πόλεως πολίτης· δέομαι δέ σου, ἐπίτρεψόν μοι λαλῆσαι πρὸς τὸν λαόν·
40 Ἐπιτρέψαντος δὲ αὐτοῦ, ὁ Παῦλος ἑστὼς ἐπὶ τῶν ἀναβαθμῶν κατέσεισε τῇ χειρὶ τῷ λαῷ· πολλῆς δὲ σιγῆς γενομένης, προσεφώνησε τῇ Ἑβραΐδι διαλέκτῳ, λέγων.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΒ'. 22.

1 ἌΝδρες ἀδελφοὶ καὶ πατέρες, ἀκούσατέ μου τῆς πρὸς ὑμᾶς νῦν ἀπολογίας.

2 (Ἀ-

2 (Ἀκούσαντες δὲ ὅτι τῇ Ἑβραΐδι διαλέ-
κτῳ προσεφώνει αὐτοῖς, μᾶλλον παρέσχον
ἡσυχίαν, καί φησιν.)
3 Ἐγὼ μέν εἰμι ἀνὴρ Ἰουδαῖος, γεγεννη-
μένος ἐν Ταρσῷ τῆς Κιλικίας, ἀνατεθραμ-
μένος δὲ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ παρὰ τοὺς πόδας
Γαμαλιὴλ, πεπαιδευμένος κατὰ ἀκρίβειαν
τοῦ πατρῴου νόμου, ζηλωτὴς ὑπάρχων τοῦ Θεοῦ,
καθὼς πάντες ὑμεῖς ἐστε σήμερον
4 Ὃς ταύτην τὴν ὁδὸν ἐδίωξα ἄχρι θανά-
του, δεσμεύων καὶ παραδιδοὺς εἰς φυλακὰς ἄν-
δρας τε καὶ γυναῖκας.
5 Ὡς καὶ ὁ ἀρχιερεὺς μαρτυρεῖ μοι, καὶ πᾶν
τὸ πρεσβυτέριον· παρ᾽ ὧν καὶ ἐπιστολὰς δεξά-
μενος πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς, εἰς Δαμασκὸν ἐπο-
ρευόμην, ἄξων καὶ τοὺς ἐκεῖσε ὄντας, δεδεμέ-
νους εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἵνα τιμωρηθῶσιν.
6 Ἐγένετο δέ μοι πορευομένῳ καὶ ἐγγίζον-
τι τῇ Δαμασκῷ περὶ μεσημβρίαν, ἐξαί-
φνης ἐκ τοῦ οὐρανοῦ περιαστράψαι φῶς ἱκανὸν
περὶ ἐμέ.
7 Ἔπεσόν τε εἰς τὸ ἔδαφος, καὶ ἤκουσα
φωνῆς λεγούσης μοι· Σαοὺλ, Σαοὺλ, τί με
διώκεις;
8 Ἐγὼ δὲ ἀπεκρίθην· Τίς εἶ Κύριε;
Εἶπέ τε πρός με· Ἐγώ εἰμι Ἰησοῦς ὁ Να-
ζωραῖος, ὃν σὺ διώκεις.
9 Οἱ δὲ σὺν ἐμοὶ ὄντες τὸ μὲν φῶς ἐθεά-
σαντο, καὶ ἔμφοβοι ἐγένοντο· τὴν δὲ φωνὴν
οὐκ ἤκουσαν τοῦ λαλοῦντός μοι.
10 Εἶπον δέ· Τί ποιήσω, Κύριε; Ὁ
δὲ Κύριος εἶπε πρός με· Ἀναστὰς πορεύου εἰς
Δαμασκόν· κἀκεῖ σοι λαληθήσεται περὶ
πάντων ὧν τέτακταί σοι ποιῆσαι.

11 Ὡς

11 Ὡς δὲ οὐκ ἐνέβλεπον ἀπὸ τῆς δόξης τοῦ φωτὸς ἐκείνου, χειραγωγούμενος ὑπὸ τῶν συνόντων μοι, ἦλθον εἰς Δαμασκόν·

12 Ἀνανίας δέ τις, ἀνὴρ εὐσεβὴς κατὰ τὸν νόμον, μαρτυρούμενος ὑπὸ πάντων τῶν κατοικούντων Ἰουδαίων,

13 Ἐλθὼν πρός με, καὶ ἐπιστὰς εἶπέ μοι· Σαοὺλ ἀδελφὲ, ἀνάβλεψον· Κἀγὼ αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἀνέβλεψα εἰς αὐτόν.

14 Ὁ δὲ εἶπεν· Ὁ Θεὸς τῶν Πατέρων ἡμῶν προεχειρίσατό σε γνῶναι τὸ θέλημα αὐτοῦ, καὶ ἰδεῖν τὸν δίκαιον, καὶ ἀκοῦσαι φωνὴν ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ.

15 Ὅτι ἔσῃ μάρτυς αὐτῷ πρὸς πάντας ἀνθρώπους, ὧν ἑώρακας καὶ ἤκουσας.

16 Καὶ νῦν τί μέλλεις; ἀναστὰς βάπτισαι, καὶ ἀπόλουσαι τὰς ἁμαρτίας σου, ἐπικαλεσάμενος τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου.

17 Ἐγένετο δέ μοι ὑποστρέψαντι εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ προσευχομένου μου ἐν τῷ ἱερῷ, γενέσθαι με ἐν ἐκστάσει,

18 Καὶ ἰδεῖν αὐτὸν λέγοντά μοι· Σπεῦσον, καὶ ἔξελθε ἐν τάχει ἐξ Ἰερουσαλήμ· διότι οὐ παραδέξονταί σου τὴν μαρτυρίαν περὶ ἐμοῦ.

19 Κἀγὼ εἶπον· Κύριε, αὐτοὶ ἐπίστανται ὅτι ἐγὼ ἤμην φυλακίζων καὶ δέρων κατὰ τὰς συναγωγὰς τοὺς πιστεύοντας ἐπὶ σέ.

20 Καὶ ὅτε ἐξεχεῖτο τὸ αἷμα Στεφάνου τοῦ μάρτυρός σου, καὶ αὐτὸς ἤμην ἐφεστὼς, καὶ συνευδοκῶν τῇ ἀναιρέσει αὐτοῦ, καὶ φυλάσσων τὰ ἱμάτια τῶν ἀναιρούντων αὐτόν.

21 Καὶ εἶπε πρός με· Πορεύου· ὅτι ἐγὼ εἰς ἔθνη μακρὰν ἐξαποστελῶ σε.

22 Ἤκουον δὲ αὐτοῦ ἄχρι τούτου τοῦ λόγου, καὶ

ἐπῆ-

ἐπῆραν τὴν φωνὴν αὐτῶν, λέγοντες· Αἶρε
ἀπὸ τῆς γῆς τὸν τοιοῦτον· οὐ γὰρ καθῆκον
αὐτὸν ζῆν.

23 Κραυγαζόντων δὲ αὐτῶν, καὶ ῥιπτούντων
τὰ ἱμάτια, καὶ κονιορτὸν βαλλόντων εἰς τὸν ἀέρα,

24 Ἐκέλευσεν αὐτὸν ὁ χιλίαρχος ἄγεσθαι
εἰς τὴν παρεμβολήν, εἰπὼν μάστιξιν ἀνετά-
ζεσθαι αὐτόν· ἵνα ἐπιγνῷ δι' ἣν αἰτίαν οὕτως
ἐπεφώνουν αὐτῷ.

25 Ὡς δὲ προέτεινεν αὐτὸν τοῖς ἱμᾶσιν,
εἶπε πρὸς τὸν ἑστῶτα ἑκατόνταρχον ὁ Παῦ-
λος· Εἰ ἄνθρωπον Ῥωμαῖον καὶ ἀκατάκριτον
ἔξεστιν ὑμῖν μαστίζειν;

26 Ἀκούσας δὲ ὁ ἑκατόνταρχος, προσελ-
θὼν ἀπήγγειλε τῷ χιλιάρχῳ, λέγων· Ὅ-
ρα τί μέλλεις ποιεῖν· ὁ γὰρ ἄνθρωπος οὗτος
Ῥωμαῖός ἐστι.

27 Προσελθὼν δὲ ὁ χιλίαρχος εἶπεν αὐ-
τῷ· Λέγε μοι, εἰ σὺ Ῥωμαῖος εἶ; Ὁ δὲ
ἔφη· Ναί.

28 Ἀπεκρίθη τε ὁ χιλίαρχος· Ἐγὼ
πολλοῦ κεφαλαίου τὴν πολιτείαν ταύτην ἐκ-
τησάμην· Ὁ δὲ Παῦλος ἔφη· Ἐγὼ δὲ καὶ
γεγέννημαι.

29 Εὐθέως οὖν ἀπέστησαν ἀπ' αὐτοῦ οἱ μέλ-
λοντες αὐτὸν ἀνετάζειν. καὶ ὁ χιλίαρχος δὲ
ἐφοβήθη ἐπιγνοὺς ὅτι Ῥωμαῖός ἐστι, καὶ ὅτι
ἦν αὐτὸν δεδεκώς.

30 Τῇ δὲ ἐπαύριον βουλόμενος γνῶναι τὸ
ἀσφαλές, τὸ, τί κατηγορεῖται παρὰ τῶν
Ἰουδαίων, ἔλυσεν αὐτὸν ἀπὸ τῶν δεσμῶν,
καὶ ἐκέλευσεν ἐλθεῖν τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ ὅλον
τὸ συνέδριον αὐτῶν· καὶ καταγαγὼν τὸν Παῦ-
λον, ἔστησεν εἰς αὐτούς.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΓ'. 23.

1 Α'Τενίσας δὲ ὁ Παῦλος τῷ συνε-
δρίῳ, εἶπεν· Α'νδρες ἀδελφοὶ,
ἐγὼ πάσῃ συνειδήσει ἀγαθῇ πεπολίτευμαι
τῷ Θεῷ ἄχρι ταύτης τῆς ἡμέρας.
2 Ο' δὲ ἀρχιερεὺς Α'νανίας ἐπέταξε τοῖς
παρεστῶσιν αὐτῷ τύπτειν αὐτοῦ τὸ στόμα.
3 Τότε ὁ Παῦλος πρὸς αὐτὸν εἶπε· Τύ-
πτειν σε μέλλει ὁ Θεὸς, τοῖχε κεκονιαμένε·
καὶ σὺ κάθῃ κρίνων με κατὰ τὸν νόμον, καὶ πα-
ρανομῶν κελεύεις με τύπτεσθαι;
4 Οἱ δὲ παρεστῶτες εἶπον· Τὸν ἀρχιερέα
τοῦ Θεοῦ λοιδορεῖς;
5 Ε'φη τε ὁ Παῦλος· Οὐκ ᾔδειν, ἀδελ-
φοὶ, ὅτι ἐστὶν ἀρχιερεύς· γέγραπται γάρ·
Α'ρχοντα τοῦ λαοῦ σου οὐκ ἐρεῖς κακῶς.
6 Γνοὺς δὲ ὁ Παῦλος ὅτι τὸ ἓν μέρος ἐστὶ
σαδδουκαίων, τὸ δὲ ἕτερον φαρισαίων, ἔκραξεν
ἐν τῷ συνεδρίῳ· Α'νδρες ἀδελφοὶ, ἐγὼ φα-
ρισαῖός εἰμι, Υἱὸς φαρισαίου· περὶ ἐλπίδος
καὶ ἀναστάσεως νεκρῶν ἐγὼ κρίνομαι.
7 Τοῦτο δὲ αὐτοῦ λαλήσαντος, ἐγένετο στά-
σις τῶν φαρισαίων καὶ τῶν σαδδουκαίων· καὶ ἐ-
σχίσθη τὸ πλῆθος.
8 Σαδδουκαῖοι μὲν γὰρ λέγουσι μὴ εἶναι
ἀνάστασιν, μηδὲ ἄγγελον, μήτε Πνεῦμα·
φαρισαῖοι δὲ ὁμολογοῦσι τὰ ἀμφότερα.
9 Ε'γένετο δὲ κραυγὴ μεγάλη. καὶ ἀναστάν-
τες οἱ γραμματεῖς τοῦ μέρους τῶν φαρισαίων διε-
μάχοντο, λέγοντες· Οὐδὲν κακὸν εὑρίσκομεν
ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ· εἰ δὲ Πνεῦμα ἐλάλη-
σεν αὐτῷ, ἢ ἄγγελος, μὴ θεομαχῶμεν.
10 Πολλῆς δὲ γενομένης στάσεως, εὐλα-

βη-

βηθεὶς ὁ χιλίαρχος μὴ διασπασθῇ ὁ Παῦλος
ὑπ' αὐτῶν, ἐκέλευσε τὸ στράτευμα καταβὰν
ἁρπάσαι αὐτὸν ἐκ μέσου αὐτῶν, ἄγειν τε εἰς
τὴν παρεμβολήν.
11 Τῇ δὲ ἐπιούσῃ νυκτὶ ἐπιστὰς αὐτῷ ὁ
Κύριος εἶπε· Θάρσει Παῦλε· ὡς γὰρ διε-
μαρτύρω τὰ περὶ ἐμοῦ εἰς Ἱερουσαλήμ, οὕτω
σε δεῖ καὶ εἰς Ῥώμην μαρτυρῆσαι.
12 Γενομένης δὲ ἡμέρας, ποιήσαντές τι-
νες τῶν Ἰουδαίων συστροφήν. ἀνεθεμάτισαν ἑαυ-
τοὺς, λέγοντες μήτε φαγεῖν, μήτε πιεῖν ἕως οὗ
ἀποκτείνωσι τὸν Παῦλον.
13 Ἦσαν δὲ πλείους τεσσαράκοντα οἱ ταύ-
την τὴν συνωμοσίαν πεποιηκότες.
14 Οἵτινες προσελθόντες τοῖς ἀρχιερεῦσι
καὶ τοῖς πρεσβυτέροις, εἶπον· Ἀναθέματι
ἀνεθεματίσαμεν ἑαυτοὺς, μηδενὸς γεύσασθαι
ἕως οὗ ἀποκτείνωμεν τὸν Παῦλον.
15 Νῦν οὖν ὑμεῖς ἐμφανίσατε τῷ χιλιάρ-
χῳ σὺν τῷ συνεδρίῳ ὅπως αὔριον αὐτὸν κα-
ταγάγῃ πρὸς ὑμᾶς, ὡς μέλλοντας διαγινώ-
σκειν ἀκριβέστερον τὰ περὶ αὐτοῦ. ἡμεῖς δὲ,
πρὸ τοῦ ἐγγίσαι αὐτὸν, ἕτοιμοί ἐσμεν τοῦ
ἀνελεῖν αὐτόν.
16 Ἀκούσας δὲ ὁ Υἱὸς τῆς ἀδελφῆς Παύ-
λου τὴν ἐνέδραν, παραγενόμενος καὶ εἰσελθὼν
εἰς τὴν παρεμβολὴν, ἀπήγγειλε τῷ Παύλῳ.
17 Προσκαλεσάμενος δὲ ὁ Παῦλος ἕνα
τῶν ἑκατοντάρχων, ἔφη· Τὸν νεανίαν τοῦτον
ἀπάγαγε πρὸς τὸν χιλίαρχον. ἔχει γάρ τι
ἀπαγγεῖλαι αὐτῷ.
18 Ὁ μὲν οὖν παραλαβὼν αὐτὸν ἤγαγε
πρὸς τὸν χιλίαρχον, καί φησιν· Ὁ δέσμιος
Παῦλος προσκαλεσάμενός με ἠρώτησε τοῦτον

τὸν

τὸν νεανίαν ἀγαγεῖν πρός σε, ἔχοντά τι λα-
λῆσαί σοι.
19 Ἐπιλαβόμενος δὲ τῆς χειρὸς αὐτοῦ ὁ
χιλίαρχος, καὶ ἀναχωρήσας κατ' ἰδίαν, ἐπυν-
θάνετο· Τί ἐστιν ὃ ἔχεις ἀπαγγεῖλαί μοι;
20 Εἶπε δέ· Ὅτι οἱ Ἰουδαῖοι συνέθεντο
τοῦ ἐρωτῆσαί σε ὅπως αὔριον εἰς τὸ συνέδριον
καταγάγῃς τὸν Παῦλον, ὡς μέλλοντές τι
ἀκριβέστερον πυνθάνεσθαι περὶ αὐτοῦ.
21 Σὺ οὖν μὴ πεισθῇς αὐτοῖς· ἐνεδρεύου-
σι γὰρ αὐτὸν ἐξ αὐτῶν ἄνδρες πλείους τεσσα-
ράκοντα, οἵτινες ἀνεθεμάτισαν ἑαυτοὺς μήτε
φαγεῖν μήτε πιεῖν ἕως οὗ ἀνέλωσιν αὐτόν· καὶ
νῦν ἕτοιμοί εἰσι, προσδεχόμενοι τὴν ἀπὸ
σοῦ ἐπαγγελίαν.
22 Ὁ μὲν οὖν χιλίαρχος ἀπέλυσε τὸν νεα-
νίαν, παραγγείλας μηδενὶ ἐκλαλῆσαι, ὅτι
ταῦτα ἐνεφάνισας πρός με.
23 Καὶ προσκαλεσάμενος δύο τινὰς τῶν
ἑκατοντάρχων, εἶπεν· Ἑτοιμάσατε στρατιώτας
διακοσίους, ὅπως πορευθῶσιν ἕως Καισαρείας,
καὶ ἱππεῖς ἑβδομήκοντα, καὶ δεξιολάβους δια-
κοσίους, ἀπὸ τρίτης ὥρας τῆς νυκτός.
24 Κτήνη τε παραστῆσαι, ἵνα ἐπιβιβά-
σαντες τὸν Παῦλον διασώσωσι πρὸς Φήλι-
κα τὸν ἡγεμόνα.
25 Γράψας ἐπιστολὴν περιέχουσαν τὸν τύ-
πον τοῦτον.
26 Κλαύδιος Λυσίας τῷ κρατίστῳ ἡγε-
μόνι Φήλικι χαίρειν.
27 Τὸν ἄνδρα τοῦτον συλληφθέντα ὑπὸ τῶν
Ἰουδαίων, καὶ μέλλοντα ἀναιρεῖσθαι ὑπ' αὐτῶν,
ἐπιστὰς σὺν τῷ στρατεύματι ἐξειλόμην αὐτόν,
μαθὼν ὅτι Ῥωμαῖός ἐστι.

28 Βου-

28 Βουλόμενος δὲ γνῶναι τὴν αἰτίαν δι' ἣν ἐνεκάλουν αὐτῷ, κατήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ συνέδριον αὐτῶν.

29 Ὃν εὗρον ἐγκαλούμενον περὶ ζητημάτων τοῦ νόμου αὐτῶν, μηδὲν δὲ ἄξιον θανάτου ἢ δεσμῶν ἔγκλημα ἔχοντα.

30 Μηνυθείσης δέ μοι ἐπιβουλῆς εἰς τὸν ἄνδρα μέλλειν ἔσεσθαι ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων, ἐξαυτῆς ἔπεμψα πρὸς σέ, παραγγείλας καὶ τοῖς κατηγόροις λέγειν τὰ πρὸς αὐτὸν ἐπὶ σοῦ. Ἔρρωσο.

31 Οἱ μὲν οὖν στρατιῶται κατὰ τὸ διατεταγμένον αὐτοῖς, ἀναλαβόντες τὸν Παῦλον, ἤγαγον διὰ τῆς νυκτὸς εἰς τὴν Ἀντιπατρίδα.

32 Τῇ δὲ ἐπαύριον ἐάσαντες τοὺς ἱππεῖς πορεύεσθαι σὺν αὐτῷ, ὑπέστρεψαν εἰς τὴν παρεμβολήν.

33 Οἵτινες εἰσελθόντες εἰς τὴν Καισάρειαν, καὶ ἀναδόντες τὴν ἐπιστολὴν τῷ ἡγεμόνι, παρέστησαν καὶ τὸν Παῦλον αὐτῷ.

34 Ἀναγνοὺς δὲ ὁ ἡγεμών, καὶ ἐπερωτήσας ἐκ ποίας ἐπαρχίας ἐστί, καὶ πυθόμενος ὅτι ἀπὸ Κιλικίας.

35 Διακούσομαί σου, ἔφη, ὅταν καὶ οἱ κατήγοροί σου παραγένωνται. Ἐκέλευσέ τε αὐτὸν ἐν τῷ πραιτωρίῳ τοῦ Ἡρώδου φυλάσσεσθαι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΔ'. 24.

1 Μετὰ δὲ πέντε ἡμέρας κατέβη ὁ ἀρχιερεὺς Ἀνανίας μετὰ τῶν πρεσβυτέρων, καὶ ῥήτορος Τερτύλλου τινός, οἵτινες ἐνεφάνισαν τῷ ἡγεμόνι κατὰ τοῦ Παύλου.

2 Κληθέντος δὲ αὐτοῦ, ἤρξατο κατηγορεῖν ὁ Τέρτυλλος, λέγων.

3 Πολλῆς εἰρήνης τυγχάνοντες διὰ σοῦ,
καὶ κατορθωμάτων γινομένων τῷ ἔθνει τούτῳ διὰ
τῆς σῆς προνοίας, πάντῃ τε καὶ πανταχοῦ ἀ-
ποδεχόμεθα, κράτιστε Φῆλιξ, μετὰ πάσης
εὐχαριστίας.

4 Ἵνα δὲ μὴ ἐπὶ πλεῖόν σε ἐγκόπτω,
παρακαλῶ ἀκοῦσαί σε ἡμῶν συντόμως, τῇ
σῇ ἐπιεικείᾳ.

5 Εὑρόντες γὰρ τὸν ἄνδρα τοῦτον λοιμὸν,
καὶ κινοῦντα στάσιν πᾶσι τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς
κατὰ τὴν οἰκουμένην, πρωτοστάτην τε τῆς τῶν
Ναζωραίων αἱρέσεως·

6 Ὃς καὶ τὸ ἱερὸν ἐπείρασε βεβηλῶσαι,
ὃν καὶ ἐκρατήσαμεν, καὶ κατὰ τὸν ἡμέτερον
νόμον ἠθελήσαμεν κρίνειν.

7 Παρελθὼν δὲ Λυσίας ὁ χιλίαρχος, με-
τὰ πολλῆς βίας ἐκ τῶν χειρῶν ἡμῶν ἀπήγαγε,

8 Κελεύσας τοὺς κατηγόρους αὐτοῦ ἔρχεσθαι
ἐπὶ σέ· παρ' οὗ δυνήσῃ αὐτὸς ἀνακρίνας περὶ
πάντων τούτων ἐπιγνῶναι, ὧν ἡμεῖς κατηγοροῦ-
μεν αὐτοῦ.

9 Συνέθεντο δὲ καὶ οἱ Ἰουδαῖοι, φάσκον-
τες ταῦτα οὕτως ἔχειν.

10 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Παῦλος, νεύσαντος
αὐτῷ τοῦ ἡγεμόνος λέγειν· Ἐκ πολλῶν ἐτῶν
ὄντα σε κριτὴν τῷ ἔθνει τούτῳ ἐπιστάμενος,
εὐθυμότερον τὰ περὶ ἐμαυτοῦ ἀπολογοῦμαι.

11 Δυναμένου σου γνῶναι, ὅτι οὐ πλείους εἰ-
σί μοι ἡμέραι ἢ δεκαδύο, ἀφ' ἧς ἀνέβην
προσκυνήσων ἐν Ἱερουσαλήμ.

12 Καὶ οὔτε ἐν τῷ ἱερῷ εὗρόν με πρός
τινα διαλεγόμενον, ἢ ἐπισύστασιν ποιοῦντα
ὄχλου, οὔτε ἐν ταῖς συναγωγαῖς, οὔτε κατὰ
τὴν πόλιν.

13 Οὔ-

13 Οὔτε παραστῆσαι δύνανται περὶ ὧν νῦν κατηγοροῦσί μου.

14 Ὁμολογῶ δὲ τοῦτό σοι, ὅτι κατὰ τὴν ὁδὸν, ἣν λέγουσιν αἵρεσιν, οὕτω λατρεύω τῷ πατρῴῳ Θεῷ, πιστεύων πᾶσι τοῖς κατὰ τὸν νόμον καὶ ἐν τοῖς προφήταις γεγραμμένοις·

15 Ἐλπίδα ἔχων εἰς τὸν Θεὸν, ἣν καὶ αὐτοὶ οὗτοι προσδέχονται, ἀνάστασιν μέλλειν ἔσεσθαι νεκρῶν, δικαίων τε καὶ ἀδίκων.

16 Ἐν τούτῳ δὲ αὐτὸς ἀσκῶ, ἀπρόσκοπον συνείδησιν ἔχειν πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ τοὺς ἀνθρώπους διαπαντός.

17 Δι' ἐτῶν δὲ πλειόνων παρεγενόμην ἐλεημοσύνας ποιήσων εἰς τὸ ἔθνος μου καὶ προσφοράς.

18 Ἐν οἷς εὗρόν με ἡγνισμένον ἐν τῷ ἱερῷ, οὐ μετὰ ὄχλου, οὐδὲ μετὰ θορύβου, τινὲς ἀπὸ τῆς Ἀσίας Ἰουδαῖοι,

19 Οὓς ἔδει ἐπὶ σοῦ παρεῖναι, καὶ κατηγορεῖν εἴ τι ἔχοιεν πρός με.

20 Ἢ αὐτοὶ οὗτοι εἰπάτωσαν εἴ τι εὗρον ἐν ἐμοὶ ἀδίκημα, στάντος μου ἐπὶ τοῦ συνεδρείου,

21 Ἢ περὶ μιᾶς ταύτης φωνῆς, ἧς ἔκραξα ἑστὼς ἐν αὐτοῖς· Ὅτι περὶ ἀναστάσεως νεκρῶν ἐγὼ κρίνομαι σήμερον ὑφ' ὑμῶν.

22 Ἀκούσας δὲ ταῦτα ὁ Φῆλιξ ἀνεβάλετο αὐτοὺς, ἀκριβέστερον εἰδὼς τὰ περὶ τῆς ὁδοῦ, εἰπών· Ὅταν Λυσίας ὁ χιλίαρχος καταβῇ, διαγνώσομαι τὰ καθ' ὑμᾶς.

23 Διαταξάμενός τε τῷ ἑκατοντάρχῃ τηρεῖσθαι τὸν Παῦλον, ἔχειν τε ἄνεσιν, καὶ μηδένα κωλύειν τῶν ἰδίων αὐτοῦ ὑπηρετεῖν, ἢ προσέρχεσθαι αὐτῷ.

24 Μετὰ δὲ ἡμέρας τινὰς παραγενόμενος

ὁ Φῆλιξ σὺν Δρεσίλλῃ τῇ γυναικὶ αὐτῦ ὔσῃ Ἰυδαίᾳ, μετεπέμψατο τὸν Παῦλον, ϗ ἤκυσεν αὐτῦ περὶ τῆς εἰς Χρισὸν πίσεως.

25 Διαλεγομένυ δὲ αὐτῦ περὶ δικαιοσύνης ϗ ἐγκρατείας ϗ τῦ κρίματος τῦ μέλλοντος ἔσεσθαι, ἔμφοβος γενόμενος ὁ Φῆλιξ ἀπεκρίθη· Τὸ νῦν ἔχον πορεύυ· καιρὸν δὲ μεταλαβὼν μετακαλέσομαί σε.

26 Ἅμα δὲ ϗ ἐλπίζων, ὅτι χρήματα δοθήσεται αὐτῷ ὑπὸ τῦ Παύλυ, ὅπως λύσῃ αὐτόν· διὸ ϗ πυκνότερον αὐτὸν μεταπεμπόμενος, ὡμίλει αὐτῷ.

27 Διετίας δὲ πληρωθείσης ἔλαβε διάδοχον ὁ Φῆλιξ Πόρκιον Φῆςον· θέλων τε χάριτας καταθέσθαι τοῖς Ἰουδαίοις ὁ Φῆλιξ, κατέλιπε τὸν Παῦλον δεδεμένον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΕ'. 25.

1 ΦΗ͂ςος ὖν ἐπιβὰς τῇ ἐπαρχίᾳ, μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἀνέβη εἰς Ἱεροσόλυμα ἀπὸ Καισαρείας.

2 Ἐνεφάνισαν δὲ αὐτῷ ὁ ἀρχιερεὺς ϗ οἱ πρῶτοι τῶν Ἰυδαίων κατὰ τῦ Παύλυ, καὶ παρεκάλυν αὐτὸν,

3 Αἰτύμενοι χάριν κατ' αὐτῦ, ὅπως μεταπέμψηται αὐτὸν εἰς Ἱερυσαλήμ· ἐνέδραν ποιῦντες ἀνελεῖν αὐτὸν κατὰ τὴν ὁδόν.

4 Ὁ μὲν ὖν Φῆςος ἀπεκρίθη τηρεῖσθαι τὸν Παῦλον ἐν Καισαρείᾳ, ἑαυτὸν δὲ μέλλειν ἐν τάχει ἐκπορεύεσθαι.

5 Οἱ ὖν δυνατοὶ ἐν ὑμῖν, φησὶ, συγκαταβάντες, εἴ τι ἐςὶν ἐν τῷ ἀνδρὶ τύτῳ, κατηγορείτωσαν αὐτῦ.

6 Διατρίψας δὲ ἐν αὐτοῖς ἡμέρας πλείυς

ἢ δέ-

ἢ δέκα, καταβὰς εἰς Καισάρειαν, τῇ ἐπαύ-
ριον καθίσας ἐπὶ τοῦ βήματος, ἐκέλευσε τὸν
Παῦλον ἀχθῆναι.

7 Παραγενομένου δὲ αὐτοῦ, περιέστησαν οἱ
ἀπὸ Ἱεροσολύμων καταβεβηκότες Ἰουδαῖοι,
πολλὰ καὶ βαρέα αἰτιάματα φέροντες κατὰ τοῦ
Παύλου, ἃ οὐκ ἴσχυον ἀποδεῖξαι.

8 Ἀπολογουμένου αὐτοῦ· Ὅτι οὔτε εἰς τὸν
νόμον τῶν Ἰουδαίων, οὔτε εἰς τὸ ἱερὸν, οὔτε εἰς
Καίσαρά τι ἥμαρτον.

9 Ὁ Φῆστος δὲ τοῖς Ἰουδαίοις θέλων χά-
ριν καταθέσθαι, ἀποκριθεὶς τῷ Παύλῳ εἶ-
πε· Θέλεις εἰς Ἱεροσόλυμα ἀναβὰς, ἐκεῖ
περὶ τούτων κρίνεσθαι ἐπ᾽ ἐμοῦ;

10 Εἶπε δὲ ὁ Παῦλος· Ἐπὶ τοῦ βήμα-
τος Καίσαρος ἑστώς εἰμι, οὗ με δεῖ κρίνεσθαι·
Ἰουδαίους οὐδὲν ἠδίκησα, ὡς καὶ σὺ κάλλιον
ἐπιγινώσκεις.

11 Εἰ μὲν γὰρ ἀδικῶ, καὶ ἄξιον θανάτου
πέπραχά τι, οὐ παραιτοῦμαι τὸ ἀποθανεῖν·
εἰ δὲ οὐδέν ἐστιν ὧν οὗτοι κατηγοροῦσί μου, οὐ-
δείς με δύναται αὐτοῖς χαρίσασθαι. Καί-
σαρα ἐπικαλοῦμαι.

12 Τότε ὁ Φῆστος συλλαλήσας μετὰ τοῦ
συμβουλίου, ἀπεκρίθη· Καίσαρα ἐπικέκλη-
σαι; ἐπὶ Καίσαρα πορεύσῃ.

13 Ἡμερῶν δὲ διαγενομένων τινῶν, Ἀ-
γρίππας ὁ βασιλεὺς καὶ Βερνίκη κατήντησαν
εἰς Καισάρειαν, ἀσπασόμενοι τὸν Φῆστον.

14 Ὡς δὲ πλείους ἡμέρας διέτριβον ἐκεῖ,
ὁ Φῆστος τῷ βασιλεῖ ἀνέθετο τὰ κατὰ τὸν
Παῦλον, λέγων· Ἀνήρ τις ἐστὶ καταλελειμ-
μένος ὑπὸ Φήλικος δέσμιος,

15 Περὶ οὗ, γενομένου μου εἰς Ἱεροσόλυμα,

ἐνεφάνισαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τῶν Ἰουδαίων, αἰτούμενοι κατ' αὐτοῦ δίκην.

16 Πρὸς οὓς ἀπεκρίθην, ὅτι οὐκ ἔστιν ἔθος Ῥωμαίοις χαρίζεσθαί τινα ἄνθρωπον εἰς ἀπώλειαν, πρὶν ἢ ὁ κατηγορούμενος κατὰ πρόσωπον ἔχοι τοὺς κατηγόρους, τόπον τε ἀπολογίας λάβοι περὶ τοῦ ἐγκλήματος.

17 Συνελθόντων οὖν αὐτῶν ἐνθάδε, ἀναβολὴν μηδεμίαν ποιησάμενος, τῇ ἑξῆς καθίσας ἐπὶ τοῦ βήματος, ἐκέλευσα ἀχθῆναι τὸν ἄνδρα.

18 Περὶ οὗ σταθέντες οἱ κατήγοροι οὐδεμίαν αἰτίαν ἐπέφερον ὧν ὑπενόουν ἐγώ·

19 Ζητήματα δέ τινα περὶ τῆς ἰδίας δεισιδαιμονίας εἶχον πρὸς αὐτὸν, καὶ περί τινος Ἰησοῦ τεθνηκότος, ὃν ἔφασκεν ὁ Παῦλος ζῆν.

20 Ἀπορούμενος δὲ ἐγὼ εἰς τὴν περὶ τούτου ζήτησιν, ἔλεγον εἰ βούλοιτο πορεύεσθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, κἀκεῖ κρίνεσθαι περὶ τούτων.

21 Τοῦ δὲ Παύλου ἐπικαλεσαμένου τηρηθῆναι αὐτὸν εἰς τὴν τοῦ Σεβαστοῦ διάγνωσιν, ἐκέλευσα τηρεῖσθαι αὐτὸν, ἕως οὗ πέμψω αὐτὸν πρὸς Καίσαρα.

22 Ἀγρίππας δὲ πρὸς τὸν Φῆστον ἔφη· Ἐβουλόμην καὶ αὐτὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀκοῦσαι. Ὁ δέ· Αὔριον, φησὶν, ἀκούσῃ αὐτοῦ.

23 Τῇ οὖν ἐπαύριον ἐλθόντος τοῦ Ἀγρίππα καὶ τῆς Βερνίκης μετὰ πολλῆς φαντασίας, καὶ εἰσελθόντων εἰς τὸ ἀκροατήριον σύν τε τοῖς χιλιάρχοις, καὶ ἀνδράσι τοῖς κατ' ἐξοχὴν οὖσι τῆς πόλεως, καὶ κελεύσαντος τοῦ Φήστου, ἤχθη ὁ Παῦλος.

24 Καί φησιν ὁ Φῆστος· Ἀγρίππα βασιλεῦ, καὶ πάντες οἱ συμπαρόντες ἡμῖν ἄνδρες,

δρες, θεωρεῖτε τοῦτον περὶ οὗ πᾶν τὸ πλῆθος
τῶν Ἰουδαίων ἐνέτυχόν μοι ἔν τε Ἱεροσολύ-
μοις καὶ ἐνθάδε, ἐπιβοῶντες μὴ δεῖν ζῆν αὐ-
τὸν μηκέτι.
25 Ἐγὼ δὲ καταλαβόμενος μηδὲν ἄξιον
θανάτου αὐτὸν πεπραχέναι, καὶ αὐτοῦ δὲ τούτου
ἐπικαλεσαμένου τὸν Σεβαστὸν, ἔκρινα πέμ-
πειν αὐτόν.
26 Περὶ οὗ ἀσφαλές τι γράψαι τῷ Κυρίῳ
οὐκ ἔχω· διὸ προήγαγον αὐτὸν ἐφ᾽ ὑμῶν, καὶ
μάλιστα ἐπὶ σοῦ, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ὅπως
τῆς ἀνακρίσεως γενομένης σχῶ τι γράψαι.
27 Ἄλογον γάρ μοι δοκεῖ, πέμποντα δέ-
σμιον, μὴ καὶ τὰς κατ᾽ αὐτοῦ αἰτίας σημᾶναι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Κϛ'. 26.

1 Ἀγρίππας δὲ πρὸς τὸν Παῦλον
ἔφη· Ἐπιτρέπεταί σοι ὑπὲρ σε-
αυτοῦ λέγειν. Τότε ὁ Παῦλος ἀπελογεῖτο,
ἐκτείνας τὴν χεῖρα·
2 Περὶ πάντων ὧν ἐγκαλοῦμαι ὑπὸ Ἰου-
δαίων, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ἥγημαι ἐμαυ-
τὸν μακάριον μέλλων ἀπολογεῖσθαι ἐπὶ σοῦ
σήμερον·
3 Μάλιστα γνώστην ὄντα σε πάντων τῶν
κατὰ Ἰουδαίους ἐθῶν τε καὶ ζητημάτων. διὸ
δέομαί σου, μακροθύμως ἀκοῦσαί μου.
4 Τὴν μὲν οὖν βίωσίν μου τὴν ἐκ νεότητος,
τὴν ἀπ᾽ ἀρχῆς γενομένην ἐν τῷ ἔθνει μου ἐν
Ἱεροσολύμοις, ἴσασι πάντες οἱ Ἰουδαῖοι,
5 Προγινώσκοντές με ἄνωθεν, (ἐὰν θέ-
λωσι μαρτυρεῖν,) ὅτι κατὰ τὴν ἀκριβεστά-
την αἵρεσιν τῆς ἡμετέρας θρησκείας ἔζησα
φαρισαῖος.

6 Καὶ νῦν ἐπ᾽ ἐλπίδι τῆς πρὸς τὲς πατέ-
ρας ἐπαγγελίας γενομένης ὑπὸ τῦ Θεῦ, ἕ-
στηκα κρινόμενος.

7 Εἰς ἣν τὸ δωδεκάφυλον ἡμῶν ἐν ἐκτε-
νείᾳ νύκτα καὶ ἡμέραν λατρεῦον ἐλπίζει κα-
ταντῆσαι· περὶ ἧς ἐλπίδος ἐγκαλῦμαι,
βασιλεῦ Α᾽γρίππα, ὑπὸ τῶν Ι᾽εδαίων.

8 Τί; ἄπιςον κρίνεται παρ᾽ ὑμῖν εἰ ὁ
Θεὸς νεκρὲς ἐγείρει;

9 Ε᾽γὼ μὲν ἔν ἔδοξα ἐμαυτῷ πρὸς τὸ ὄ-
νομα Ι᾽ησῦ τῦ Ναζωραίε δεῖν πολλὰ ἐναν-
τία πρᾶξαι.

10 Ο῾ καὶ ἐποίησα ἐν Ι῾εροσολύμοις· καὶ
πολλὲς τῶν ἁγίων ἐγὼ φυλακαῖς κατέκλεισα,
τὴν παρὰ τῶν ἀρχιερέων ἐξεσίαν λαβών· ἀ-
ναιρεμένων τε αὐτῶν κατήνεγκα ψῆφον.

11 Καὶ κατὰ πάσας τὰς συναγωγὰς πολ-
λάκις τιμωρῶν αὐτὲς, ἠνάγκαζον βλασφη-
μεῖν· περισσῶς τε ἐμμαινόμενος αὐτοῖς, ἐ-
δίωκον ἕως καὶ εἰς τὰς ἔξω πόλεις.

12 Ε᾽ν οἷς καὶ πορευόμενος εἰς τὴν Δα-
μασκὸν μετ᾽ ἐξεσίας καὶ ἐπιτροπῆς τῆς παρὰ
τῶν ἀρχιερέων,

13 Η῾μέρας μέσης, κατὰ τὴν ὁδὸν εἶδον,
βασιλεῦ, ἐρανόθεν ὑπὲρ τὴν λαμπρότητα
τῦ ἡλίε, περιλάμψαν με φῶς καὶ τὲς σὺν
ἐμοὶ πορευομένες.

14 Πάντων δὲ καταπεσόντων ἡμῶν εἰς τὴν
γῆν, ἤκεσα φωνὴν λαλῦσαν πρός με, καὶ
λέγεσαν τῇ Ε᾽βραΐδι διαλέκτῳ· Σαὲλ,
Σαὲλ, τί με διώκεις; σκληρόν σοι πρὸς
κέντρα λακτίζειν.

15 Ε᾽γὼ δὲ εἶπον· Τίς εἶ Κύριε; Ο῾ δὲ
εἶπεν· Ε᾽γώ εἰμι Ι᾽ησῦς ὃν σὺ διώκεις.

16 Α᾽λ-

16 Ἀλλὰ ἀνάστηθι, καὶ στῆθι ἐπὶ τοὺς πόδας σου· εἰς τοῦτο γὰρ ὤφθην σοι, προχειρίσασθαί σε ὑπηρέτην καὶ μάρτυρα ὧν τε εἶδες, ὧν τε ὀφθήσομαί σοι.

17 Ἐξαιρούμενός σε ἐκ τοῦ λαοῦ καὶ τῶν ἐθνῶν, εἰς οὓς σε νῦν ἀποστέλλω,

18 Ἀνοῖξαι ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ ἐπιστρέψαι ἀπὸ σκότους εἰς φῶς, καὶ τῆς ἐξουσίας τοῦ Σατανᾶ ἐπὶ τὸν Θεόν, τοῦ λαβεῖν αὐτοὺς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν, καὶ κλῆρον ἐν τοῖς ἡγιασμένοις, πίστει τῇ εἰς ἐμέ.

19 Ὅθεν, βασιλεῦ Ἀγρίππα, οὐκ ἐγενόμην ἀπειθὴς τῇ οὐρανίῳ ὀπτασίᾳ.

20 Ἀλλὰ τοῖς ἐν Δαμασκῷ πρῶτον καὶ Ἱεροσολύμοις, εἰς πᾶσάν τε τὴν χώραν τῆς Ἰουδαίας, καὶ τοῖς ἔθνεσιν, ἀπήγγελλον μετανοεῖν, καὶ ἐπιστρέφειν ἐπὶ τὸν Θεόν, ἄξια τῆς μετανοίας ἔργα πράσσοντας.

21 Ἕνεκα τούτων με οἱ Ἰουδαῖοι συλλαβόμενοι ἐν τῷ ἱερῷ, ἐπειρῶντο διαχειρίσασθαι.

22 Ἐπικουρίας οὖν τυχὼν τῆς παρὰ τοῦ Θεοῦ, ἄχρι τῆς ἡμέρας ταύτης ἕστηκα, μαρτυρούμενος μικρῷ τε καὶ μεγάλῳ, οὐδὲν ἐκτὸς λέγων ὧν τε οἱ προφῆται ἐλάλησαν μελλόντων γίνεσθαι, καὶ Μωσῆς.

23 Εἰ παθητὸς ὁ Χριστός, εἰ πρῶτος ἐξ ἀναστάσεως νεκρῶν φῶς μέλλει καταγγέλλειν τῷ λαῷ καὶ τοῖς ἔθνεσι.

24 Ταῦτα δὲ αὐτοῦ ἀπολογουμένου, ὁ Φῆστος μεγάλῃ τῇ φωνῇ ἔφη· Μαίνῃ Παῦλε· τὰ πολλά σε γράμματα εἰς μανίαν περιτρέπει.

25 Ὁ δέ· Οὐ μαίνομαι, φησί, κράτιστε Φῆστε, ἀλλ' ἀληθείας καὶ σωφροσύνης ῥήματα ἀποφθέγγομαι.

26 Ἐπίσταται γὰρ περὶ τούτων ὁ βασιλεὺς, πρὸς ὃν καὶ παῤῥησιαζόμενος λαλῶ· λανθάνειν γὰρ αὐτόν τι τούτων οὐ πείθομαι οὐδέν· οὐ γάρ ἐστιν ἐν γωνίᾳ πεπραγμένον τοῦτο.

27 Πιστεύεις βασιλεῦ Ἀγρίππα τοῖς προφήταις, οἶδα ὅτι πιστεύεις.

28 Ὁ δὲ Ἀγρίππας πρὸς τὸν Παῦλον ἔφη. Ἐν ὀλίγῳ με πείθεις Χριστιανὸν γενέσθαι.

29 Ὁ δὲ Παῦλος εἶπεν· Εὐξαίμην ἂν τῷ Θεῷ, καὶ ἐν ὀλίγῳ καὶ ἐν πολλῷ οὐ μόνον σὲ, ἀλλὰ καὶ πάντας τοὺς ἀκούοντάς μου σήμερον, γενέσθαι τοιούτους, ὁποῖος κἀγώ εἰμι, παρεκτὸς τῶν δεσμῶν τούτων.

30 Καὶ ταῦτα εἰπόντος αὐτοῦ, ἀνέστη ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ ἡγεμὼν, ἥ τε Βερνίκη, καὶ οἱ συγκαθήμενοι αὐτοῖς.

31 Καὶ ἀναχωρήσαντες ἐλάλουν πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες· Ὅτι οὐδὲν θανάτου ἄξιον, ἢ δεσμῶν πράσσει ὁ ἄνθρωπος οὗτος.

32 Ἀγρίππας δὲ τῷ Φήστῳ ἔφη· Ἀπολελύσθαι ἐδύνατο ὁ ἄνθρωπος οὗτος, εἰ μὴ ἐπεκέκλητο Καίσαρα.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΚΖ'. 27.

1 Ὡς δὲ ἐκρίθη τοῦ ἀποπλεῖν ἡμᾶς εἰς τὴν Ἰταλίαν, παρεδίδουν τόν τε Παῦλον καί τινας ἑτέρους δεσμώτας ἑκατοντάρχῃ, ὀνόματι Ἰουλίῳ, σπείρης Σεβαστῆς.

2 Ἐπιβάντες δὲ πλοίῳ Ἀδραμυττηνῷ, μέλλοντες πλεῖν τοὺς κατὰ τὴν Ἀσίαν τόπους, ἀνήχθημεν, ὄντος σὺν ἡμῖν Ἀριστάρχου Μακεδόνος Θεσσαλονικέως.

3 Τῇ τε ἑτέρᾳ κατήχθημεν εἰς Σιδῶνα·

φι-

φιλανθρώπως τε ὁ Ἰούλιος τῷ Παύλῳ χρησάμενος, ἐπέτρεψε πρὸς φίλους πορευθέντα ἐπιμελείας τυχεῖν.

4 Κἀκεῖθεν ἀναχθέντες ὑπεπλεύσαμεν τὴν Κύπρον, διὰ τὸ τοὺς ἀνέμους εἶναι ἐναντίους.

5 Τό, τε πέλαγος τὸ κατὰ τὴν Κιλικίαν καὶ Παμφυλίαν διαπλεύσαντες, κατήλθομεν εἰς Μύρα τῆς Λυκίας.

6 Κἀκεῖ εὑρὼν ὁ ἑκατόνταρχος πλοῖον Ἀλεξανδρινὸν πλέον εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἐνεβίβασεν ἡμᾶς εἰς αὐτό.

7 Ἐν ἱκαναῖς δὲ ἡμέραις βραδυπλοοῦντες, καὶ μόλις γενόμενοι κατὰ τὴν Κνίδον, μὴ προσεῶντος ἡμᾶς τοῦ ἀνέμου, ὑπεπλεύσαμεν τὴν Κρήτην κατὰ Σαλμώνην.

8 Μόλις τε παραλεγόμενοι αὐτὴν, ἤλθομεν εἰς τόπον τινὰ καλούμενον Καλοὺς λιμένας, ᾧ ἐγγὺς ἦν πόλις Λασαία.

9 Ἱκανοῦ δὲ χρόνου διαγενομένου, καὶ ὄντος ἤδη ἐπισφαλοῦς τοῦ πλοὸς, διὰ τὸ καὶ τὴν νηστείαν ἤδη παρεληλυθέναι, παρῄνει ὁ Παῦλος,

10 Λέγων αὐτοῖς· Ἄνδρες, θεωρῶ ὅτι μετὰ ὕβρεως καὶ πολλῆς ζημίας οὐ μόνον τοῦ φορτίου καὶ τοῦ πλοίου, ἀλλὰ καὶ τῶν ψυχῶν ἡμῶν μέλλειν ἔσεσθαι τὸν πλοῦν.

11 Ὁ δὲ ἑκατόνταρχος τῷ κυβερνήτῃ καὶ τῷ ναυκλήρῳ ἐπείθετο μᾶλλον, ἢ τοῖς ὑπὸ τοῦ Παύλου λεγομένοις.

12 Ἀνευθέτου δὲ τοῦ λιμένος ὑπάρχοντος πρὸς παραχειμασίαν, οἱ πλείους ἔθεντο βουλὴν ἀναχθῆναι κἀκεῖθεν, εἴπως δύναιντο καταντήσαντες εἰς Φοίνικα παραχειμάσαι, λιμένα τῆς Κρήτης βλέποντα κατὰ λίβα καὶ κατὰ χῶρον.

13 Ὑποπνεύσαντος δὲ Νότου, δόξαντες
τῆς προθέσεως κεκρατηκέναι, ἄραντες ἆσσον
παρελέγοντο τὴν Κρήτην.
14 Μετ' οὐ πολὺ δὲ ἔβαλε κατ' αὐτῆς ἄνε-
μος τυφωνικὸς, ὁ καλούμενος Εὐροκλύδων.
15 Συναρπασθέντος δὲ τοῦ πλοίου, καὶ μὴ
δυναμένου ἀντοφθαλμεῖν τῷ ἀνέμῳ, ἐπιδόν-
τες ἐφερόμεθα.
16 Νησίον δέ τι ὑποδραμόντες καλούμε-
νον Κλαύδην, μόλις ἰσχύσαμεν περικρατεῖς
γενέσθαι τῆς σκάφης,
17 Ἣν ἄραντες, βοηθείαις ἐχρῶντο, ὑ-
ποζωννύντες τὸ πλοῖον· φοβούμενοί τε μὴ
εἰς τὴν Σύρτιν ἐκπέσωσι, χαλάσαντες τὸ
σκεῦος, οὕτως ἐφέροντο.
18 Σφοδρῶς δὲ χειμαζομένων ἡμῶν, τῇ
ἑξῆς ἐκβολὴν ἐποιοῦντο.
19 Καὶ τῇ τρίτῃ αὐτόχειρες τὴν σκευὴν
τοῦ πλοίου ἐρρίψαμεν.
20 Μήτε δὲ ἡλίου, μήτε ἄστρων ἐπιφαι-
νόντων ἐπὶ πλείονας ἡμέρας, χειμῶνός τε οὐκ
ὀλίγου ἐπικειμένου, λοιπὸν περιῃρεῖτο πᾶσα
ἐλπὶς τοῦ σώζεσθαι ἡμᾶς.
21 Πολλῆς δὲ ἀσιτίας ὑπαρχούσης, τότε
σταθεὶς ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ αὐτῶν, εἶπεν·
Ἔδει μὲν, ὦ ἄνδρες, πειθαρχήσαντάς μοι,
μὴ ἀνάγεσθαι ἀπὸ τῆς Κρήτης, κερδῆσαί τε
τὴν ὕβριν ταύτην καὶ τὴν ζημίαν.
22 Καὶ τανῦν παραινῶ ὑμᾶς εὐθυμεῖν·
ἀποβολὴ γὰρ ψυχῆς οὐδεμία ἔσται ἐξ ὑμῶν,
πλὴν τοῦ πλοίου.
23 Παρέστη γάρ μοι τῇ νυκτὶ ταύτῃ ἄγγε-
λος τοῦ Θεοῦ οὗ εἰμι, ᾧ καὶ λατρεύω,
24 Λέγων· Μὴ φοβοῦ Παῦλε· Καίσαρί

σε δεῖ παραστῆναι· καὶ ἰδοὺ, κεχάρισταί σοι ὁ
Θεὸς πάντας τοὺς πλέοντας μετὰ σοῦ.
25 Διὸ εὐθυμεῖτε ἄνδρες· πιστεύω γὰρ
τῷ Θεῷ ὅτι οὕτως ἔσται καθ' ὃν τρόπον λελά-
ληταί μοι.
26 Εἰς νῆσον δέ τινα δεῖ ἡμᾶς ἐκπεσεῖν.
27 Ὡς δὲ τεσσαρεσκαιδεκάτη νὺξ ἐγένετο,
διαφερομένων ἡμῶν ἐν τῷ Ἀδρίᾳ, κατὰ μέ-
σον τῆς νυκτὸς ὑπενόουν οἱ ναῦται προσάγειν
τινὰ αὐτοῖς χώραν.
28 Καὶ βολίσαντες, εὗρον ὀργυιὰς εἴκο-
σι· βραχὺ δὲ διαστήσαντες, καὶ πάλιν βολί-
σαντες, εὗρον ὀργυιὰς δεκαπέντε.
29 Φοβούμενοί τε μήπως εἰς τραχεῖς τό-
πους ἐκπέσωσιν, ἐκ πρύμνης ῥίψαντες ἀγ-
κύρας τέσσαρας, ηὔχοντο ἡμέραν γενέσθαι.
30 Τῶν δὲ ναυτῶν ζητούντων φυγεῖν ἐκ τοῦ
πλοίου, καὶ χαλασάντων τὴν σκάφην εἰς τὴν
θάλασσαν, προφάσει ὡς ἐκ πρώρας μελλόν-
των ἀγκύρας ἐκτείνειν,
31 Εἶπεν ὁ Παῦλος τῷ ἑκατοντάρχῃ καὶ
τοῖς στρατιώταις· Ἐὰν μὴ οὗτοι μείνωσιν ἐν
τῷ πλοίῳ, ὑμεῖς σωθῆναι οὐ δύνασθε.
32 Τότε οἱ στρατιῶται ἀπέκοψαν τὰ σχοι-
νία τῆς σκάφης, καὶ εἴασαν αὐτὴν ἐκπεσεῖν.
33 Ἄχρι δὲ οὗ ἔμελλεν ἡμέρα γίνεσθαι,
παρεκάλει ὁ Παῦλος ἅπαντας μεταλαβεῖν
τροφῆς, λέγων· Τεσσαρεσκαιδεκάτην σήμε-
ρον ἡμέραν προσδοκῶντες, ἄσιτοι διατελεῖ-
τε, μηδὲν προσλαβόμενοι.
34 Διὸ παρακαλῶ ὑμᾶς προσλαβεῖν
τροφῆς· τοῦτο γὰρ πρὸς τῆς ὑμετέρας σωτη-
ρίας ὑπάρχει· οὐδενὸς γὰρ ὑμῶν θρὶξ ἐκ τῆς
κεφαλῆς πεσεῖται.

35 Εἰ-

35 Εἰπὼν δὲ ταῦτα, καὶ λαβὼν ἄρτον, εὐχαρίστησε τῷ Θεῷ ἐνώπιον πάντων, καὶ κλάσας ἤρξατο ἐσθίειν.

36 Εὔθυμοι δὲ γενόμενοι πάντες, καὶ αὐτοὶ προσελάβοντο τροφῆς.

37 Ἦμεν δὲ ἐν τῷ πλοίῳ αἱ πᾶσαι ψυχαὶ, διακόσιαι ἑβδομήκοντα ἕξ.

38 Κορεσθέντες δὲ τροφῆς, ἐκούφιζον τὸ πλοῖον, ἐκβαλλόμενοι τὸν σῖτον εἰς τὴν θάλασσαν.

39 Ὅτε δὲ ἡμέρα ἐγένετο, τὴν γῆν οὐκ ἐπεγίνωσκον· κόλπον δέ τινα κατενόουν ἔχοντα αἰγιαλὸν, εἰς ὃν ἐβουλεύσαντο, εἰ δύναιντο, ἐξῶσαι τὸ πλοῖον.

40 Καὶ τὰς ἀγκύρας περιελόντες εἴων εἰς τὴν θάλασσαν, ἅμα ἀνέντες τὰς ζευκτηρίας τῶν πηδαλίων. καὶ ἐπάραντες τὸν ἀρτέμονα τῇ πνεούσῃ, κατεῖχον εἰς τὸν αἰγιαλόν.

41 Περιπεσόντες δὲ εἰς τόπον διθάλασσον, ἐπώκειλαν τὴν ναῦν· καὶ ἡ μὲν πρῶρα ἐρείσασα ἔμενεν ἀσάλευτος, ἡ δὲ πρύμνα ἐλύετο ὑπὸ τῆς βίας τῶν κυμάτων.

42 Τῶν δὲ στρατιωτῶν βουλὴ ἐγένετο, ἵνα τοὺς δεσμώτας ἀποκτείνωσι, μήτις ἐκκολυμβήσας διαφύγοι.

43 Ὁ δὲ ἑκατόνταρχος, βουλόμενος διασῶσαι τὸν Παῦλον, ἐκώλυσεν αὐτοὺς τοῦ βουλήματος, ἐκέλευσέ τε τοὺς δυναμένους κολυμβᾷν, ἀποῤῥίψαντας πρώτους ἐπὶ τὴν γῆν ἐξιέναι.

44 Καὶ τοὺς λοιποὺς, οὓς μὲν ἐπὶ σανίσιν, οὓς δὲ ἐπί τινων τῶν ἀπὸ τοῦ πλοίου. καὶ οὕτως ἐγένετο πάντας διασωθῆναι ἐπὶ τὴν γῆν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΗʹ. 28.

1 Καὶ διασωθέντες, τότε ἐπέγνωσαν ὅτι Μελίτη ἡ νῆσος καλεῖται.

2 Οἱ δὲ βάρβαροι παρεῖχον οὐ τὴν τυχοῦσαν φιλανθρωπίαν ἡμῖν· ἀνάψαντες γὰρ πυρὰν, προσελάβοντο πάντας ἡμᾶς, διὰ τὸν ὑετὸν τὸν ἐφεστῶτα, καὶ διὰ τὸ ψύχος.

3 Συστρέψαντος δὲ τοῦ Παύλου φρυγάνων πλῆθος, καὶ ἐπιθέντος ἐπὶ τὴν πυρὰν, ἔχιδνα ἐκ τῆς θέρμης ἐξελθοῦσα καθῆψε τῆς χειρὸς αὐτοῦ.

4 Ὡς δὲ εἶδον οἱ βάρβαροι κρεμάμενον τὸ θηρίον ἐκ τῆς χειρὸς αὐτοῦ, ἔλεγον πρὸς ἀλλήλους· Πάντως φονεύς ἐστιν ὁ ἄνθρωπος οὗτος, ὃν διασωθέντα ἐκ τῆς θαλάσσης ἡ δίκη ζῆν οὐκ εἴασεν.

5 Ὁ μὲν οὖν, ἀποτινάξας τὸ θηρίον εἰς τὸ πῦρ, ἔπαθεν οὐδὲν κακόν.

6 Οἱ δὲ προσεδόκων αὐτὸν μέλλειν πίμπρασθαι, ἢ καταπίπτειν ἄφνω νεκρόν. Ἐπὶ πολὺ δὲ αὐτῶν προσδοκώντων, καὶ θεωρούντων μηδὲν ἄτοπον εἰς αὐτὸν γινόμενον, μεταβαλλόμενοι ἔλεγον Θεὸν αὐτὸν εἶναι.

7 Ἐν δὲ τοῖς περὶ τὸν τόπον ἐκεῖνον ὑπῆρχε χωρία τῷ πρώτῳ τῆς νήσου, ὀνόματι Ποπλίῳ, ὃς ἀναδεξάμενος ἡμᾶς, τρεῖς ἡμέρας φιλοφρόνως ἐξένισεν.

8 Ἐγένετο δὲ τὸν Πατέρα τοῦ Ποπλίου πυρετοῖς καὶ δυσεντερίᾳ συνεχόμενον κατακεῖσθαι· πρὸς ὃν ὁ Παῦλος εἰσελθὼν, καὶ προσευξάμενος, ἐπιθεὶς τὰς χεῖρας αὐτῷ, ἰάσατο αὐτόν.

9 Τούτου οὖν γενομένου, καὶ οἱ λοιποὶ οἱ

ἔχον-

ἔχοντες ἀσθενείας ἐν τῇ νήσῳ, προσήρχοντο καὶ ἐθεραπεύοντο.

10 Οἳ καὶ πολλαῖς τιμαῖς ἐτίμησαν ἡμᾶς, καὶ ἀναγομένοις ἐπέθεντο τὰ πρὸς τὴν χρείαν.

11 Μετὰ δὲ τρεῖς μῆνας ἀνήχθημεν ἐν πλοίῳ παρακεχειμακότι ἐν τῇ νήσῳ, Ἀλεξανδρινῷ, παρασήμῳ Διοσκούροις,

12 Καὶ καταχθέντες εἰς Συρακούσας, ἐπεμείναμεν ἡμέρας τρεῖς.

13 Ὅθεν περιελθόντες κατηντήσαμεν εἰς Ῥήγιον· καὶ μετὰ μίαν ἡμέραν ἐπιγενομένου νότου, δευτεραῖοι ἤλθομεν εἰς Ποτιόλους.

14 Οὗ εὑρόντες ἀδελφοὺς, παρεκλήθημεν ἐπ' αὐτοῖς ἐπιμεῖναι ἡμέρας ἑπτά· καὶ οὕτως εἰς τὴν Ῥώμην ἤλθομεν.

15 Κἀκεῖθεν οἱ ἀδελφοὶ ἀκούσαντες τὰ περὶ ἡμῶν, ἐξῆλθον εἰς ἀπάντησιν ἡμῖν ἄχρις Ἀππίου φόρου καὶ Τριῶν ταβερνῶν· οὓς ἰδὼν ὁ Παῦλος, εὐχαριστήσας τῷ Θεῷ, ἔλαβε θάρσος.

16 Ὅτε δὲ ἤλθομεν εἰς Ῥώμην, ὁ ἑκατόνταρχος παρέδωκε τοὺς δεσμίους τῷ στρατοπεδάρχῃ· τῷ δὲ Παύλῳ ἐπετράπη μένειν καθ' ἑαυτὸν, σὺν τῷ φυλάσσοντι αὐτὸν στρατιώτῃ.

17 Ἐγένετο δὲ μετὰ ἡμέρας τρεῖς συγκαλέσασθαι τὸν Παῦλον τοὺς ὄντας τῶν Ἰουδαίων πρώτους· συνελθόντων δὲ αὐτῶν, ἔλεγε πρὸς αὐτούς· Ἄνδρες ἀδελφοὶ, ἐγὼ οὐδὲν ἐναντίον ποιήσας τῷ λαῷ, ἢ τοῖς ἔθεσι τοῖς πατρῴοις, δέσμιος ἐξ Ἱεροσολύμων παρεδόθην εἰς τὰς χεῖρας τῶν Ῥωμαίων·

18 Οἵτινες ἀνακρίναντές με ἐβούλοντο ἀπολῦσαι, διὰ τὸ μηδεμίαν αἰτίαν θανάτου ὑπάρχειν ἐν ἐμοί·

19 Ἀν-

19 Ἀντιλεγόντων δὲ τῶν Ἰουδαίων, ἠναγ-
κάσθην ἐπικαλέσασθαι Καίσαρα· οὐχ ὡς τοῦ
ἔθνους μου ἔχων τι κατηγορῆσαι.
20 Διὰ ταύτην οὖν τὴν αἰτίαν παρεκάλε-
σα ὑμᾶς ἰδεῖν καὶ προσλαλῆσαι· ἕνεκεν γὰρ
τῆς ἐλπίδος τοῦ Ἰσραὴλ τὴν ἅλυσιν ταύ-
την περίκειμαι.
21 Οἱ δὲ πρὸς αὐτὸν εἶπον· Ἡμεῖς οὔτε
γράμματα περὶ σοῦ ἐδεξάμεθα ἀπὸ τῆς Ἰου-
δαίας οὔτε παραγενόμενός τις τῶν ἀδελφῶν ἀ-
πήγγειλεν ἢ ἐλάλησέ τι περὶ σοῦ πονηρόν.
22 Ἀξιοῦμεν δὲ παρὰ σοῦ ἀκοῦσαι ἃ φρο-
νεῖς. περὶ μὲν γὰρ τῆς αἱρέσεως ταύτης γνω-
στόν ἐστιν ἡμῖν ὅτι πανταχοῦ ἀντιλέγεται.
23 Ταξάμενοι δὲ αὐτῷ ἡμέραν, ἧκον
πρὸς αὐτὸν εἰς τὴν ξενίαν πλείονες· οἷς ἐξε-
τίθετο διαμαρτυρόμενος τὴν βασιλείαν τοῦ
Θεοῦ, πείθων τε αὐτοὺς τὰ περὶ τοῦ Ἰησοῦ, ἀ-
πό τε τοῦ νόμου Μωσέως καὶ τῶν Προφητῶν,
ἀπὸ πρωῒ ἕως ἑσπέρας.
24 Καὶ οἱ μὲν ἐπείθοντο τοῖς λεγομέ-
νοις, οἱ δὲ ἠπίστουν.
25 Ἀσύμφωνοι δὲ ὄντες πρὸς ἀλλήλους,
ἀπελύοντο, εἰπόντος τοῦ Παύλου ῥῆμα ἕν,
ὅτι καλῶς τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐλάλησε διὰ
Ἡσαΐου τοῦ Προφήτου πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν,
26 Λέγον· Πορεύθητι πρὸς τὸν λαὸν τοῦ-
τον, καὶ εἰπέ· Ἀκοῇ ἀκούσετε, καὶ οὐ μὴ συνῆτε·
καὶ βλέποντες βλέψετε, καὶ οὐ μὴ ἴδητε·
27 Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου
καὶ τοῖς ὠσὶ βαρέως ἤκουσαν, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς
αὐτῶν ἐκάμμυσαν· μήποτε ἴδωσι τοῖς ὀφθαλ-
μοῖς, καὶ τοῖς ὠσὶν ἀκούσωσι, καὶ τῇ καρδίᾳ
συνῶσι, καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσωμαι αὐτούς.

28 Γνω-

28 Γνωστὸν οὖν ἔστω ὑμῖν, ὅτι τοῖς ἔθνεσιν
ἀπεστάλη τὸ σωτήριον τοῦ Θεοῦ, αὐτοὶ καὶ ἀ-
κούσονται.
29 Καὶ ταῦτα αὐτοῦ εἰπόντος, ἀπῆλθον οἱ
Ἰουδαῖοι, πολλὴν ἔχοντες ἐν ἑαυτοῖς συζήτησιν.
30 Ἔμεινε δὲ ὁ Παῦλος διετίαν ὅλην ἐν
ἰδίῳ μισθώματι· καὶ ἀπεδέχετο πάντας τοὺς
εἰσπορευομένους πρὸς αὐτόν·
31 Κηρύσσων τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, καὶ
διδάσκων τὰ περὶ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ με-
τὰ πάσης παῤῥησίας, ἀκωλύτως.

ΠΑΥΛΟΥ τοῦ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ

Η ΠΡΟΣ ΡΩΜΑΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α. 1.

1 Παῦλος δοῦλος Ἰησοῦ Χριστοῦ,
κλητὸς ἀπόστολος, ἀφωρισμέ-
νος εἰς εὐαγγέλιον Θεοῦ,
2 (Ὃ προεπηγγείλατο διὰ τῶν Προφη-
τῶν αὐτοῦ ἐν γραφαῖς ἁγίαις,)
3 Περὶ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ, τοῦ γενομένου ἐκ
σπέρματος Δαβὶδ κατὰ σάρκα.
4 Τοῦ ὁρισθέντος Υἱοῦ Θεοῦ ἐν δυνάμει,
κατὰ Πνεῦμα ἁγιωσύνης, ἐξ ἀναστάσεως νε-
κρῶν,) Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.
5 (Δι' οὗ ἐλάβομεν χάριν καὶ ἀποστολὴν
εἰς

εἰς ὑπακοὴν πίστεως ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν,
ὑπὲρ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ.
6 Ἐν οἷς ἐστε καὶ ὑμεῖς, κλητοὶ Ἰησοῦ
Χριστοῦ.)
7 Πᾶσι τοῖς οὖσιν ἐν Ῥώμῃ, ἀγαπητοῖς
Θεοῦ, κλητοῖς ἁγίοις· Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη
ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
8 Πρῶτον μὲν εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου διὰ
Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὑπὲρ πάντων ὑμῶν, ὅτι ἡ πί-
στις ὑμῶν καταγγέλλεται ἐν ὅλῳ τῷ κόσμῳ.
9 Μάρτυς γάρ μου ἐστὶν ὁ Θεὸς, ᾧ λα-
τρεύω ἐν τῷ Πνεύματί μου, ἐν τῷ εὐαγγε-
λίῳ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ, ὡς ἀδιαλείπτως μνείαν
ὑμῶν ποιοῦμαι.
10 Πάντοτε ἐπὶ τῶν προσευχῶν μου δεόμε-
νος, εἴπως ἤδη ποτὲ εὐοδωθήσομαι ἐν τῷ
θελήματι τοῦ Θεοῦ, ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς.
11 Ἐπιποθῶ γὰρ ἰδεῖν ὑμᾶς, ἵνα τί με-
ταδῶ χάρισμα ὑμῖν πνευματικὸν, εἰς τὸ
στηριχθῆναι ὑμᾶς.
12 Τοῦτο δέ ἐστι, συμπαρακληθῆναι ἐν
ὑμῖν διὰ τῆς ἐν ἀλλήλοις πίστεως, ὑμῶν τε
καὶ ἐμοῦ.
13 Οὐ θέλω δὲ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοὶ,
ὅτι πολλάκις προεθέμην ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς,
(καὶ ἐκωλύθην ἄχρι τοῦ δεῦρο,) ἵνα καρ-
πόν τινα σχῶ καὶ ἐν ὑμῖν, καθὼς καὶ ἐν τοῖς
λοιποῖς ἔθνεσιν.
14 Ἕλλησί τε καὶ βαρβάροις, σοφοῖς τε
καὶ ἀνοήτοις ὀφειλέτης εἰμί.
15 Οὕτω τὸ κατ' ἐμὲ πρόθυμον καὶ ὑμῖν
τοῖς ἐν Ῥώμῃ εὐαγγελίσασθαι.
16 Οὐ γὰρ ἐπαισχύνομαι τὸ εὐαγγέλιον
τοῦ Χριστοῦ· δύναμις γὰρ Θεοῦ ἐστιν εἰς σωτη-
ρίαν

ρίαν παντὶ τῷ πιςεύοντι, Ἰουδαίῳ τε πρῶ-
τον καὶ Ἕλληνι.
17 Δικαιοσύνη γὰρ Θεοῦ ἐν αὐτῷ ἀποκα-
λύπτεται ἐκ πίςεως εἰς πίςιν· καθὼς γέγρα-
πται· Ὁ δὲ δίκαιος ἐκ πίςεως ζήσεται.
18 Ἀποκαλύπτεται γὰρ ὀργὴ Θεοῦ ἀπ'
οὐρανοῦ ἐπὶ πᾶσαν ἀσέβειαν καὶ ἀδικίαν ἀνθρώ-
πων τῶν τὴν ἀλήθειαν ἐν ἀδικίᾳ κατεχόντων.
19 Διότι τὸ γνωςὸν τοῦ Θεοῦ, φανερόν ἐςιν
ἐν αὐτοῖς· ὁ γὰρ Θεὸς αὐτοῖς ἐφανέρωσε.
20 Τὰ γὰρ ἀόρατα αὐτοῦ ἀπὸ κτίσεως κόσ-
μου, τοῖς ποιήμασι νοούμενα καθορᾶται, ἥ
τε ἀΐδιος αὐτοῦ δύναμις καὶ θειότης· εἰς τὸ
εἶναι αὐτοὺς ἀναπολογήτους.
21 Διότι γνόντες τὸν Θεὸν, οὐχ ὡς Θεὸν
ἐδόξασαν, ἢ εὐχαρίςησαν· ἀλλ' ἐματαιώ-
θησαν ἐν τοῖς διαλογισμοῖς αὐτῶν, καὶ ἐσκο-
τίσθη ἡ ἀσύνετος αὐτῶν καρδία.
22 Φάσκοντες εἶναι σοφοὶ, ἐμωράνθησαν.
23 Καὶ ἤλλαξαν τὴν δόξαν τοῦ ἀφθάρτου
Θεοῦ ἐν ὁμοιώματι εἰκόνος φθαρτοῦ ἀνθρώπου,
καὶ πετεινῶν καὶ τετραπόδων καὶ ἑρπετῶν.
24 Διὸ καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς ὁ Θεὸς ἐν ταῖς
ἐπιθυμίαις τῶν καρδιῶν αὐτῶν εἰς ἀκαθαρ-
σίαν, τοῦ ἀτιμάζεσθαι τὰ σώματα αὐτῶν
ἐν ἑαυτοῖς.
25 Οἵτινες μετήλλαξαν τὴν ἀλήθειαν τοῦ
Θεοῦ ἐν τῷ ψεύδει, καὶ ἐσεβάσθησαν καὶ ἐλάτρευ-
σαν τῇ κτίσει παρὰ τὸν κτίσαντα, ὅς ἐςιν
εὐλογητὸς εἰς τοὺς αἰῶνας, ἀμήν.
26 Διὰ τοῦτο παρέδωκεν αὐτοὺς ὁ Θεὸς εἰς
πάθη ἀτιμίας· αἵτε γὰρ θήλειαι αὐτῶν με-
τήλλαξαν τὴν φυσικὴν χρῆσιν εἰς τὴν πα-
ρὰ φύσιν.

27 Ο-

27 Ὁμοίως τε καὶ οἱ ἄρσενες ἀφέντες τὴν φυσικὴν χρῆσιν τῆς θηλείας, ἐξεκαύθησαν ἐν τῇ ὀρέξει αὐτῶν εἰς ἀλλήλους, ἄρσενες ἐν ἄρσεσι τὴν ἀσχημοσύνην κατεργαζόμενοι, καὶ τὴν ἀντιμισθίαν ἣν ἔδει τῆς πλάνης αὐτῶν ἐν ἑαυτοῖς ἀπολαμβάνοντες.

28 Καὶ καθὼς οὐκ ἐδοκίμασαν τὸν Θεὸν ἔχειν ἐν ἐπιγνώσει, παρέδωκεν αὐτοὺς ὁ Θεὸς εἰς ἀδόκιμον νοῦν, ποιεῖν τὰ μὴ καθήκοντα.

29 Πεπληρωμένους πάσῃ ἀδικίᾳ, πορνείᾳ, πονηρίᾳ, πλεονεξίᾳ, κακίᾳ· μεστοὺς φθόνου, φόνου, ἔριδος, δόλου, κακοηθείας·

30 Ψιθυριστὰς, καταλάλους, θεοστυγεῖς, ὑβριστὰς, ὑπερηφάνους, ἀλαζόνας, ἐφευρετὰς κακῶν, γονεῦσιν ἀπειθεῖς,

31 Ἀσυνέτους, ἀσυνθέτους, ἀστόργους, ἀσπόνδους, ἀνελεήμονας.

32 Οἵτινες τὸ δικαίωμα τοῦ Θεοῦ ἐπιγνόντες, (ὅτι οἱ τὰ τοιαῦτα πράσσοντες ἄξιοι θανάτου εἰσὶν) οὐ μόνον αὐτὰ ποιοῦσιν, ἀλλὰ καὶ συνευδοκοῦσι τοῖς πράσσουσι.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 Διὸ ἀναπολόγητος εἶ, ὦ ἄνθρωπε πᾶς ὁ κρίνων· ἐν ᾧ γὰρ κρίνεις τὸν ἕτερον, σεαυτὸν κατακρίνεις· τὰ γὰρ αὐτὰ πράσσεις ὁ κρίνων.

2 Οἴδαμεν δὲ ὅτι τὸ κρίμα τοῦ Θεοῦ ἐστι κατὰ ἀλήθειαν ἐπὶ τοὺς τὰ τοιαῦτα πράσσοντας.

3 Λογίζῃ δὲ τοῦτο, ὦ ἄνθρωπε, ὁ κρίνων τοὺς τὰ τοιαῦτα πράσσοντας, καὶ ποιῶν αὐτὰ, ὅτι σὺ ἐκφεύξῃ τὸ κρίμα τοῦ Θεοῦ;

4 Ἢ τοῦ πλούτου τῆς χρηστότητος αὐτοῦ, καὶ τῆς ἀνοχῆς καὶ τῆς μακροθυμίας καταφρονεῖς,

ἀγνοῶν

ἀγνοῶν ὅτι τὸ χρηστὸν τοῦ Θεοῦ εἰς μετάνοιάν σε
ἄγει;
5 Κατὰ δὲ τὴν σκληρότητά σου καὶ ἀμετα-
νόητον καρδίαν, θησαυρίζεις σεαυτῷ ὀργὴν
ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς καὶ ἀποκαλύψεως δικαιοκρι-
σίας τοῦ Θεοῦ,
6 Ὃς ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.
7 Τοῖς μὲν καθ' ὑπομονὴν ἔργου ἀγαθοῦ,
δόξαν καὶ τιμὴν καὶ ἀφθαρσίαν ζητοῦσι, ζωὴν
αἰώνιον.
8 Τοῖς δὲ ἐξ ἐριθείας, καὶ ἀπειθοῦσι μὲν
τῇ ἀληθείᾳ, πειθομένοις δὲ τῇ ἀδικίᾳ,
θυμὸς καὶ ὀργή.
9 Θλίψις καὶ στενοχωρία ἐπὶ πᾶσαν ψυχὴν
ἀνθρώπου τοῦ κατεργαζομένου τὸ κακόν, Ἰου-
δαίου τε πρῶτον καὶ Ἕλληνος.
10 Δόξα δὲ καὶ τιμὴ καὶ εἰρήνη παντὶ τῷ
ἐργαζομένῳ τὸ ἀγαθόν, Ἰουδαίῳ τε πρῶτον
καὶ Ἕλληνι.
11 Οὐ γάρ ἐστι προσωποληψία παρὰ τῷ
Θεῷ.
12 Ὅσοι γὰρ ἀνόμως ἥμαρτον, ἀνόμως
καὶ ἀπολοῦνται· καὶ ὅσοι ἐν νόμῳ ἥμαρτον, διὰ
νόμου κριθήσονται.
13 (Οὐ γὰρ οἱ ἀκροαταὶ τοῦ νόμου δίκαιοι
παρὰ τῷ Θεῷ· ἀλλ' οἱ ποιηταὶ τοῦ νόμου δι-
καιωθήσονται.
14 Ὅταν γὰρ ἔθνη τὰ μὴ νόμον ἔχοντα,
φύσει τὰ τοῦ νόμου ποιῇ, οὗτοι νόμον μὴ ἔχοντες,
ἑαυτοῖς εἰσι νόμος,
15 Οἵτινες ἐνδείκνυνται τὸ ἔργον τοῦ νόμου
γραπτὸν ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, συμμαρτυρού-
σης αὐτῶν τῆς συνειδήσεως, καὶ μεταξὺ ἀλλήλων
τῶν λογισμῶν κατηγορούντων, ἢ καὶ ἀπολογου-
μένων,)

16 Ἐν ἡμέρᾳ ὅτε κρινεῖ ὁ Θεὸς τὰ κρυπτὰ
τῶν ἀνθρώπων, κατὰ τὸ εὐαγγέλιόν μου,
διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ.
17 Ἴδε, σὺ Ἰουδαῖος ἐπονομάζῃ, καὶ ἐπα-
ναπαύῃ τῷ νόμῳ, καὶ καυχᾶσαι ἐν Θεῷ,
18 Καὶ γινώσκεις τὸ θέλημα, καὶ δοκιμά-
ζεις τὰ διαφέροντα, κατηχούμενος ἐκ τοῦ νόμου.
19 Πέποιθάς τε σεαυτὸν ὁδηγὸν εἶναι
τυφλῶν, φῶς τῶν ἐν σκότει,
20 Παιδευτὴν ἀφρόνων, διδάσκαλον νη-
πίων, ἔχοντα τὴν μόρφωσιν τῆς γνώσεως καὶ
τῆς ἀληθείας ἐν τῷ νόμῳ.
21 Ὁ οὖν διδάσκων ἕτερον, σεαυτὸν οὐ δι-
δάσκεις; ὁ κηρύσσων μὴ κλέπτειν, κλέπτεις;
22 Ὁ λέγων μὴ μοιχεύειν, μοιχεύεις; ὁ
βδελυσσόμενος τὰ εἴδωλα, ἱεροσυλεῖς;
23 Ὃς ἐν νόμῳ καυχᾶσαι, διὰ τῆς πα-
ραβάσεως τοῦ νόμου τὸν Θεὸν ἀτιμάζεις;
24 Τὸ γὰρ ὄνομα τοῦ Θεοῦ δι' ὑμᾶς βλασ-
φημεῖται ἐν τοῖς ἔθνεσι, καθὼς γέγραπται.
25 Περιτομὴ μὲν γὰρ ὠφελεῖ, ἐὰν νόμον
πράσσῃς· ἐὰν δὲ παραβάτης τοῦ νόμου ᾖς, ἡ
περιτομή σου ἀκροβυστία γέγονεν.
26 Ἐὰν οὖν ἡ ἀκροβυστία τὰ δικαιώματα
τοῦ νόμου φυλάσσῃ, οὐχὶ ἡ ἀκροβυστία αὐτοῦ
εἰς περιτομὴν λογισθήσεται;
27 Καὶ κρινεῖ ἡ ἐκ φύσεως ἀκροβυστία τὸν
νόμον τελοῦσα, σὲ τὸν διὰ γράμματος καὶ
περιτομῆς παραβάτην νόμου;
28 Οὐ γὰρ ὁ ἐν τῷ φανερῷ, Ἰουδαῖός ἐστιν·
οὐδὲ ἡ ἐν τῷ φανερῷ, ἐν σαρκὶ, περιτομή·
29 Ἀλλ' ὁ ἐν τῷ κρυπτῷ, Ἰουδαῖος, καὶ πε-
ριτομὴ καρδίας, ἐν Πνεύματι, οὐ γράμματι· οὗ
ὁ ἔπαινος οὐκ ἐξ ἀνθρώπων, ἀλλ' ἐκ τοῦ Θεοῦ.

ΚΕ-

ΚΕΦΑʹΛΑΙΟΝ, Γʹ. 3.

1 ΤΙʹ οὖν τὸ περισσὸν τοῦ Ἰουδαίου, ἢ
τίς ἡ ὠφέλεια τῆς περιτομῆς;
2 Πολὺ κατὰ πάντα τρόπον. Πρῶτον μὲν
γὰρ ὅτι ἐπιστεύθησαν τὰ λόγια τοῦ Θεοῦ.
3 Τί γάρ, εἰ ἠπίστησάν τινες; μὴ ἡ ἀ-
πιστία αὐτῶν τὴν πίστιν τοῦ Θεοῦ καταργήσει;
4 Μὴ γένοιτο· γινέσθω δὲ ὁ Θεὸς ἀλη-
θής, πᾶς δὲ ἄνθρωπος ψεύστης· καθὼς γέ-
γραπται· Ὅπως ἂν δικαιωθῇς ἐν τοῖς λό-
γοις σου, καὶ νικήσῃς ἐν τῷ κρίνεσθαί σε.
5 Εἰ δὲ ἡ ἀδικία ἡμῶν Θεοῦ δικαιοσύ-
νην συνίστησι, τί ἐροῦμεν; μὴ ἄδικος ὁ Θεὸς
ὁ ἐπιφέρων τὴν ὀργήν; (κατὰ ἄνθρωπον λέγω,)
6 Μὴ γένοιτο· ἐπεὶ πῶς κρινεῖ ὁ Θεὸς
τὸν κόσμον;
7 Εἰ γὰρ ἡ ἀλήθεια τοῦ Θεοῦ ἐν τῷ ἐμῷ
ψεύσματι ἐπερίσσευσεν εἰς τὴν δόξαν αὐτοῦ,
τί ἔτι κἀγὼ ὡς ἁμαρτωλὸς κρίνομαι;
8 Καὶ μὴ (καθὼς βλασφημούμεθα, καὶ
καθώς φασί τινες ἡμᾶς λέγειν) ὅτι ποιήσω-
μεν τὰ κακά, ἵνα ἔλθῃ τὰ ἀγαθά; ὧν τὸ
κρίμα ἔνδικόν ἐστι.
9 Τί οὖν; προεχόμεθα; Οὐ πάντως·
προῃτιασάμεθα γὰρ Ἰουδαίους τε καὶ Ἕλληνας
πάντας ὑφ' ἁμαρτίαν εἶναι.
10 Καθὼς γέγραπται· Ὅτι οὐκ ἔστι δί-
καιος οὐδὲ εἷς·
11 Οὐκ ἔστιν ὁ συνιῶν, οὐκ ἔστιν ὁ ἐκζη-
τῶν τὸν Θεόν.
12 Πάντες ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρειώθησαν·
οὐκ ἔστι ποιῶν χρηστότητα, οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός.
13 Τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν·
ταῖς

ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν· ἰὸς ἀσπίδων
ὑπὸ τὰ χείλη αὐτῶν.
14 Ὧν τὸ στόμα ἀρᾶς καὶ πικρίας γέμει.
15 Ὀξεῖς οἱ πόδες αὐτῶν ἐκχέαι αἷμα.
16 Σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς
ὁδοῖς αὐτῶν.
17 Καὶ ὁδὸν εἰρήνης οὐκ ἔγνωσαν.
18 Οὐκ ἔστι φόβος Θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφ-
θαλμῶν αὐτῶν.
19 Οἴδαμεν δὲ ὅτι ὅσα ὁ νόμος λέγει,
τοῖς ἐν τῷ νόμῳ λαλεῖ· ἵνα πᾶν στόμα φραγῇ,
καὶ ὑπόδικος γένηται πᾶς ὁ κόσμος τῷ Θεῷ.
20 Διότι ἐξ ἔργων νόμου οὐ δικαιωθήσε-
ται πᾶσα σὰρξ ἐνώπιον αὐτοῦ· διὰ γὰρ νόμου
ἐπίγνωσις ἁμαρτίας.
21 Νυνὶ δὲ χωρὶς νόμου, δικαιοσύνη Θεοῦ
πεφανέρωται, μαρτυρουμένη ὑπὸ τοῦ νόμου καὶ
τῶν προφητῶν.
22 Δικαιοσύνη δὲ Θεοῦ διὰ πίστεως Ἰησοῦ
Χριστοῦ, εἰς πάντας καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς πιστεύον-
τας· οὐ γάρ ἐστι διαστολή.
23 Πάντες γὰρ ἥμαρτον, καὶ ὑστεροῦνται
τῆς δόξης τοῦ Θεοῦ.
24 Δικαιούμενοι δωρεὰν τῇ αὐτοῦ χάριτι,
διὰ τῆς ἀπολυτρώσεως τῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ·
25 Ὃν προέθετο ὁ Θεὸς ἱλαστήριον διὰ τῆς
πίστεως ἐν τῷ αὐτοῦ αἵματι, εἰς ἔνδειξιν τῆς
δικαιοσύνης αὐτοῦ, διὰ τὴν πάρεσιν τῶν προ-
γεγονότων ἁμαρτημάτων,
26 Ἐν τῇ ἀνοχῇ τοῦ Θεοῦ, πρὸς ἔνδειξιν
τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, ἐν τῷ νῦν καιρῷ· εἰς
τὸ εἶναι αὐτὸν δίκαιον, καὶ δικαιοῦντα τὸν ἐκ
πίστεως Ἰησοῦ.
27 Ποῦ οὖν ἡ καύχησις; ἐξεκλείσθη. Διὰ

ποίȣ νόμȣ; τῶν ἔργων; Οὐχί. ἀλλὰ διὰ νό-
μȣ πίστεως.
28 Λογιζόμεθα οὖν, πίστει δικαιȣ̃σθαι
ἄνθρωπον, χωρὶς ἔργων νόμȣ.
29 Ἢ Ἰȣδαίων ὁ Θεὸς μόνον; ȣ̓χὶ δὲ καὶ
ἐθνῶν; Ναὶ καὶ ἐθνῶν.
30 Ἐπείπερ εἷς ὁ Θεὸς, ὃς δικαιώσει
περιτομὴν ἐκ πίστεως, καὶ ἀκροβυστίαν διὰ τῆς
πίστεως.
31 Νόμον ȣ̓̃ν καταργȣ̃μεν διὰ τῆς πίστεως;
Μὴ γένοιτο· ἀλλὰ νόμον ἱστῶμεν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Δ΄. 4.

1 ΤΙ' ȣ̓̃ν ἐρȣ̃μεν Ἀβραὰμ τὸν πατέρα
ἡμῶν εὑρηκέναι κατὰ σάρκα;
2 Εἰ γὰρ Ἀβραὰμ ἐξ ἔργων ἐδικαιώθη,
ἔχει καύχημα, ἀλλ' ȣ̓ πρὸς τὸν Θεόν.
3 Τί γὰρ ἡ γραφὴ λέγει; Ἐπίστευσε δὲ
Ἀβραὰμ τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δι-
καιοσύνην.
4 Τῷ δὲ ἐργαζομένῳ ὁ μισθὸς ȣ̓ λογίζεται
κατὰ χάριν, ἀλλὰ κατὰ τὸ ὀφείλημα.
5 Τῷ δὲ μὴ ἐργαζομένῳ, πιστεύοντι δὲ
ἐπὶ τὸν δικαιȣ̃ντα τὸν ἀσεβῆ, λογίζεται ἡ πί-
στις αὐτȣ̃ εἰς δικαιοσύνην.
6 Καθάπερ καὶ Δαβὶδ λέγει τὸν μακαρισ-
μὸν τȣ̃ ἀνθρώπȣ, ᾧ ὁ Θεὸς λογίζεται δι-
καιοσύνην χωρὶς ἔργων.
7 Μακάριοι ὧν ἀφέθησαν αἱ ἀνομίαι, καὶ
ὧν ἐπεκαλύφθησαν αἱ ἁμαρτίαι.
8 Μακάριος ἀνὴρ ᾧ ȣ̓ μὴ λογίσηται Κύ-
ριος ἁμαρτίαν.
9 Ὁ μακαρισμὸς οὖν οὗτος, ἐπὶ τὴν πε-
ριτομὴν, ἢ καὶ ἐπὶ τὴν ἀκροβυστίαν; Λέγο-
μεν

μεν γὰρ ὅτι ἐλογίσθη τῷ Ἀβραὰμ ἡ πίστις εἰς δικαιοσύνην.

10 Πῶς οὖν ἐλογίσθη; ἐν περιτομῇ ὄντι, ἢ ἐν ἀκροβυστίᾳ; Οὐκ ἐν περιτομῇ, ἀλλ' ἐν ἀκροβυστίᾳ.

11 Καὶ σημεῖον ἔλαβε περιτομῆς, σφραγίδα τῆς δικαιοσύνης τῆς πίστεως τῆς ἐν τῇ ἀκροβυστίᾳ· εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν πατέρα πάντων τῶν πιστευόντων δι' ἀκροβυστίας, εἰς τὸ λογισθῆναι καὶ αὐτοῖς τὴν δικαιοσύνην.

12 Καὶ πατέρα περιτομῆς, τοῖς οὐκ ἐκ περιτομῆς μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς στοιχοῦσι τοῖς ἴχνεσι τῆς ἐν τῇ ἀκροβυστίᾳ πίστεως τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἀβραάμ.

13 Οὐ γὰρ διὰ νόμου ἡ ἐπαγγελία τῷ Ἀβραὰμ, ἢ τῷ σπέρματι αὐτοῦ, τὸ κληρονόμον αὐτὸν εἶναι τοῦ κόσμου, ἀλλὰ διὰ δικαιοσύνης πίστεως.

14 Εἰ γὰρ οἱ ἐκ νόμου, κληρονόμοι, κεκένωται ἡ πίστις, καὶ κατήργηται ἡ ἐπαγγελία.

15 Ὁ γὰρ νόμος ὀργὴν κατεργάζεται· οὗ γὰρ οὐκ ἔστι νόμος, οὐδὲ παράβασις.

16 Διὰ τοῦτο ἐκ πίστεως, ἵνα κατὰ χάριν, εἰς τὸ εἶναι βεβαίαν τὴν ἐπαγγελίαν παντὶ τῷ σπέρματι, οὐ τῷ ἐκ τοῦ νόμου μόνον, ἀλλὰ καὶ τῷ ἐκ πίστεως Ἀβραὰμ, ὅς ἐστι πατὴρ πάντων ἡμῶν,

17 (Καθὼς γέγραπται· Ὅτι πατέρα πολλῶν ἐθνῶν τέθεικά σε,) κατέναντι οὗ ἐπίστευσε Θεοῦ, τοῦ ζωοποιοῦντος τοὺς νεκροὺς, καὶ καλοῦντος τὰ μὴ ὄντα ὡς ὄντα.

18 Ὃς παρ' ἐλπίδα ἐπ' ἐλπίδι ἐπίστευσεν, εἰς τὸ γενέσθαι αὐτὸν πατέρα πολλῶν ἐθνῶν, κατὰ τὸ εἰρημένον· Οὕτως ἔσται τὸ σπέρμα σου.

19 Καὶ μὴ ἀσθενήσας τῇ πίστει, οὐ κατε-
νόησε τὸ ἑαυτοῦ σῶμα ἤδη νενεκρωμμένον, ἑκα-
τονταέτης που ὑπάρχων, καὶ τὴν νέκρωσιν τῆς
μήτρας Σάῤῥας.

20 Εἰς δὲ τὴν ἐπαγγελίαν τοῦ Θεοῦ οὐ διε-
κρίθη τῇ ἀπιστίᾳ, ἀλλ' ἐνεδυναμώθη τῇ
πίστει, δοὺς δόξαν τῷ Θεῷ.

21 Καὶ πληροφορηθεὶς ὅτι ὃ ἐπήγγελται,
δυνατός ἐστι καὶ ποιῆσαι.

22 Διὸ καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην.

23 Οὐκ ἐγράφη δὲ δι' αὐτὸν μόνον, ὅτι
ἐλογίσθη αὐτῷ·

24 Ἀλλὰ καὶ δι' ἡμᾶς, οἷς μέλλει λογί-
ζεσθαι, τοῖς πιστεύουσιν ἐπὶ τὸν ἐγείραντα Ἰη-
σοῦν τὸν Κύριον ἡμῶν ἐκ νεκρῶν,

25 Ὃς παρεδόθη διὰ τὰ παραπτώματα
ἡμῶν, καὶ ἠγέρθη διὰ τὴν δικαίωσιν ἡμῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 Δικαιωθέντες οὖν ἐκ πίστεως, εἰρήνην
ἔχομεν πρὸς τὸν Θεὸν διὰ τοῦ Κυ-
ρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

2 Δι' οὗ καὶ τὴν προσαγωγὴν ἐσχήκαμεν
τῇ πίστει εἰς τὴν χάριν ταύτην ἐν ᾗ ἑστήκαμεν,
καὶ καυχώμεθα ἐπ' ἐλπίδι τῆς δόξης τοῦ
Θεοῦ.

3 Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ καυχώμεθα ἐν
ταῖς θλίψεσιν· εἰδότες ὅτι ἡ θλίψις ὑπο-
μονὴν κατεργάζεται·

4 Ἡ δὲ ὑπομονὴ δοκιμὴν, ἡ δὲ δοκιμὴ
ἐλπίδα.

5 Ἡ δὲ ἐλπὶς οὐ καταισχύνει· ὅτι ἡ ἀγά-
πη τοῦ Θεοῦ ἐκκέχυται ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν
διὰ πνεύματος ἁγίου τοῦ δοθέντος ἡμῖν.

6 Ἔτι

6 Ε'τι γὰρ Χριςὸς ὄντων ἡμῶν ἀσθενῶν,
κατὰ καιρὸν ὑπὲρ ἀσεβῶν ἀπέθανε.
7 Μόλις γὰρ ὑπὲρ δικαίου τὶς ἀποθανεῖ-
ται· ὑπὲρ γὰρ τοῦ ἀγαθοῦ τάχα τὶς καὶ τολμᾷ
ἀποθανεῖν.
8 Συνίςησι δὲ τὴν ἑαυτοῦ ἀγάπην εἰς
ἡμᾶς ὁ Θεὸς, ὅτι ἔτι ἁμαρτωλῶν ὄντων ἡμῶν
Χριςὸς ὑπὲρ ἡμῶν ἀπέθανε.
9 Πολλῷ οὖν μᾶλλον, δικαιωθέντες νῦν
ἐν τῷ αἵματι αὐτοῦ, σωθησόμεθα δι' αὐτοῦ
ἀπὸ τῆς ὀργῆς.
10 Εἰ γὰρ ἐχθροὶ ὄντες κατηλλάγημεν τῷ
Θεῷ διὰ τοῦ θανάτου τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ, πολλῷ
μᾶλλον καταλλαγέντες σωθησόμεθα ἐν τῇ
ζωῇ αὐτοῦ.
11 Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ καυχώμενοι ἐν
τῷ Θεῷ διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριςοῦ,
δι' οὗ νῦν τὴν καταλλαγὴν ἐλάβομεν.
12 Διὰ τοῦτο ὥσπερ δι' ἑνὸς ἀνθρώπου ἡ
ἁμαρτία εἰς τὸν κόσμον εἰσῆλθε, καὶ διὰ τῆς
ἁμαρτίας ὁ θάνατος, καὶ οὕτως εἰς πάντας ἀν-
θρώπους ὁ θάνατος διῆλθεν, ἐφ' ᾧ πάντες
ἥμαρτον.
13 Α'χρι γὰρ νόμου ἁμαρτία ἦν ἐν κόσ-
μῳ· ἁμαρτία δὲ οὐκ ἐλλογεῖται μὴ ὄντος
νόμου.
14 Α'λλ' ἐβασίλευσεν ὁ θάνατος ἀπὸ Α'-
δὰμ μέχρι Μωσέως, καὶ ἐπὶ τοὺς μὴ ἁμαρ-
τήσαντας ἐπὶ τῷ ὁμοιώματι τῆς παραβάσεως
Α'δὰμ, ὅς ἐςι τύπος τοῦ μέλλοντος.
15 Α'λλ' οὐχ ὡς τὸ παράπτωμα, οὕτω καὶ τὸ
χάρισμα. εἰ γὰρ τῷ τοῦ ἑνὸς παραπτώματι
οἱ πολλοὶ ἀπέθανον, πολλῷ μᾶλλον ἡ
χάρις τοῦ Θεοῦ καὶ ἡ δωρεὰ ἐν χάριτι τῇ τοῦ

ἑνὸς ἀνθρώπου Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς τοὺς πολλοὺς
ἐπερίσσευσε.
16 Καὶ οὐχ' ὡς δι' ἑνὸς ἁμαρτήσαντος, τὸ
δώρημα· τὸ μὲν γὰρ κρίμα ἐξ ἑνὸς εἰς κατά-
κριμα· τὸ δὲ χάρισμα ἐκ πολλῶν παραπτω-
μάτων εἰς δικαίωμα.
17 Εἰ γὰρ τῷ τοῦ ἑνὸς παραπτώματι ὁ
θάνατος ἐβασίλευσε διὰ τοῦ ἑνὸς, πολλῷ μᾶλ-
λον οἱ τὴν περισσείαν τῆς χάριτος καὶ τῆς δω-
ρεᾶς τῆς δικαιοσύνης λαμβάνοντες, ἐν ζωῇ
βασιλεύσουσι διὰ τοῦ ἑνὸς Ἰησοῦ Χριστοῦ.
18 Ἄρα οὖν ὡς δι' ἑνὸς παραπτώματος, εἰς
πάντας ἀνθρώπους, εἰς κατάκριμα· οὕτω καὶ
δι' ἑνὸς δικαιώματος, εἰς πάντας ἀνθρώπους,
εἰς δικαίωσιν ζωῆς.
19 Ὥσπερ γὰρ διὰ τῆς παρακοῆς τοῦ ἑνὸς
ἀνθρώπου ἁμαρτωλοὶ κατεστάθησαν οἱ πολλοὶ,
οὕτω καὶ διὰ τῆς ὑπακοῆς τοῦ ἑνὸς δίκαιοι κα-
τασταθήσονται οἱ πολλοί.
20 Νόμος δὲ παρεισῆλθεν ἵνα πλεονάσῃ
τὸ παράπτωμα. οὗ δὲ ἐπλεόνασεν ἡ ἁμαρ-
τία, ὑπερεπερίσσευσεν ἡ χάρις.
21 Ἵνα ὥσπερ ἐβασίλευσεν ἡ ἁμαρτία ἐν
τῷ θανάτῳ, οὕτω καὶ ἡ χάρις βασιλεύσῃ διὰ
δικαιοσύνης εἰς ζωὴν αἰώνιον, διὰ Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ϛ'. 6.

1 ΤΙ' οὖν ἐροῦμεν; ἐπιμενοῦμεν τῇ
ἁμαρτίᾳ, ἵνα ἡ χάρις πλεο-
νάσῃ;
3 Μὴ γένοιτο· οἵτινες ἀπεθάνομεν τῇ ἁ-
μαρτίᾳ, πῶς ἔτι ζήσομεν ἐν αὐτῇ;
3 Ἢ ἀγνοεῖτε, ὅτι ὅσοι ἐβαπτίσθημεν
εἰς

εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν, εἰς τὸν θάνατον αὐτοῦ
ἐβαπτίσθημεν;
4 Συνετάφημεν οὖν αὐτῷ διὰ τοῦ βαπτίσ-
ματος εἰς τὸν θάνατον· ἵνα ὥσπερ ἠγέρθη
Χριστὸς ἐκ νεκρῶν διὰ τῆς δόξης τοῦ πατρὸς,
οὕτω καὶ ἡμεῖς ἐν καινότητι ζωῆς περιπα-
τήσωμεν.
5 Εἰ γὰρ σύμφυτοι γεγόναμεν τῷ ὁμοιώ-
ματι τοῦ θανάτου αὐτοῦ, ἀλλὰ καὶ τῆς ἀναστά-
σεως ἐσόμεθα.
6 Τοῦτο γινώσκοντες, ὅτι ὁ παλαιὸς ἡμῶν
ἄνθρωπος συνεσταυρώθη, ἵνα καταργηθῇ τὸ
σῶμα τῆς ἁμαρτίας, τοῦ μηκέτι δουλεύειν
ἡμᾶς τῇ ἁμαρτίᾳ.
7 Ὁ γὰρ ἀποθανὼν δεδικαίωται ἀπὸ τῆς
ἁμαρτίας.
8 Εἰ δὲ ἀπεθάνομεν σὺν Χριστῷ, πιστεύο-
μεν ὅτι καὶ συζήσομεν αὐτῷ.
9 Εἰδότες ὅτι Χριστὸς ἐγερθεὶς ἐκ νεκρῶν,
οὐκέτι ἀποθνήσκει· θάνατος αὐτοῦ οὐκέτι κυ-
ριεύει.
10 Ὃ γὰρ ἀπέθανε, τῇ ἁμαρτίᾳ ἀπέ-
θανεν ἐφάπαξ· ὃ δὲ ζῇ, ζῇ τῷ Θεῷ.
11 Οὕτω καὶ ὑμεῖς λογίζεσθε, ἑαυτοὺς νε-
κροὺς μὲν εἶναι τῇ ἁμαρτίᾳ, ζῶντας δὲ τῷ
Θεῷ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.
12 Μὴ οὖν βασιλευέτω ἡ ἁμαρτία ἐν τῷ
θνητῷ ὑμῶν σώματι, εἰς τὸ ὑπακούειν αὐτῇ
ἐν ταῖς ἐπιθυμίαις αὐτοῦ.
13 Μηδὲ παριστάνετε τὰ μέλη ὑμῶν ὅπλα
ἀδικίας τῇ ἁμαρτίᾳ· ἀλλὰ παραστήσατε
ἑαυτοὺς τῷ Θεῷ ὡς ἐκ νεκρῶν ζῶντας, καὶ τὰ
μέλη ὑμῶν ὅπλα δικαιοσύνης τῷ Θεῷ.
14 Ἁμαρτία γὰρ ὑμῶν οὐ κυριεύσει·

οὐ γάρ ἐστε ὑπὸ νόμον, ἀλλ' ὑπὸ χάριν.
15 Τί οὖν; ἁμαρτήσομεν, ὅτι οὐκ ἐσμὲν
ὑπὸ νόμον, ἀλλ' ὑπὸ χάριν; Μὴ γένοιτο.
16 Οὐκ οἴδατε ὅτι ᾧ παριστάνετε ἑαυτοὺς
δούλους εἰς ὑπακοὴν, δοῦλοί ἐστε ᾧ ὑπακούετε
ἤτοι ἁμαρτίας εἰς θάνατον, ἢ ὑπακοῆς εἰς
δικαιοσύνην;
17 Χάρις δὲ τῷ Θεῷ ὅτι ἦτε δοῦλοι τῆς
ἁμαρτίας, ὑπηκούσατε δὲ ἐκ καρδίας εἰς
ὃν παρεδόθητε τύπον διδαχῆς.
18 Ἐλευθερωθέντες δὲ ἀπὸ τῆς ἁμαρ-
τίας, ἐδουλώθητε τῇ δικαιοσύνῃ.
19 Ἀνθρώπινον λέγω, διὰ τὴν ἀσθένειαν
τῆς σαρκὸς ὑμῶν. ὥσπερ γὰρ παρεστήσατε τὰ
μέλη ὑμῶν δοῦλα τῇ ἀκαθαρσίᾳ καὶ τῇ ἀνο-
μίᾳ εἰς τὴν ἀνομίαν· οὕτω νῦν παραστήσατε τὰ
μέλη ὑμῶν δοῦλα τῇ δικαιοσύνῃ εἰς ἁγιασμόν.
20 Ὅτε γὰρ δοῦλοι ἦτε τῆς ἁμαρτίας,
ἐλεύθεροι ἦτε τῇ δικαιοσύνῃ.
21 Τίνα οὖν καρπὸν εἴχετε τότε, ἐφ' οἷς
νῦν ἐπαισχύνεσθε; τὸ γὰρ τέλος ἐκείνων,
θάνατος.
22 Νυνὶ δὲ ἐλευθερωθέντες ἀπὸ τῆς
ἁμαρτίας, δουλωθέντες δὲ τῷ Θεῷ, ἔχε-
τε τὸν καρπὸν ὑμῶν εἰς ἁγιασμόν· τὸ δὲ τέ-
λος, ζωὴν αἰώνιον.
23 Τὰ γὰρ ὀψώνια τῆς ἁμαρτίας, θά-
νατος· τὸ δὲ χάρισμα τοῦ Θεοῦ, ζωὴ αἰώνιος
ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ'. 7.

1 Ἢ ἀγνοεῖτε, ἀδελφοὶ, (γινώσκου-
σι γὰρ νόμον λαλῶ) ὅτι ὁ νόμος
κυριεύει τοῦ ἀνθρώπου ἐφ' ὅσον χρόνον ζῇ;

2. Ἡ

2 Ἡ γὰρ ὕπανδρος γυνὴ τῷ ζῶντι ἀνδρὶ
δέδεται νόμῳ· ἐὰν δὲ ἀποθάνῃ ὁ ἀνὴρ, κα-
τήργηται ἀπὸ τοῦ νόμου τοῦ ἀνδρός·
3 Ἄρα οὖν ζῶντος τοῦ ἀνδρὸς μοιχαλὶς
χρηματίσει, ἐὰν γένηται ἀνδρὶ ἑτέρῳ· ἐὰν
δὲ ἀποθάνῃ ὁ ἀνὴρ, ἐλευθέρα ἐστὶν ἀπὸ τοῦ
νόμου, τοῦ μὴ εἶναι αὐτὴν μοιχαλίδα γενο-
μένην ἀνδρὶ ἑτέρῳ.
4 Ὥστε, ἀδελφοί μου, καὶ ὑμεῖς ἐθανα-
τώθητε τῷ νόμῳ διὰ τοῦ σώματος τοῦ Χριστοῦ,
εἰς τὸ γενέσθαι ὑμᾶς ἑτέρῳ τῷ ἐκ νεκρῶν ἐγερ-
θέντι, ἵνα καρποφορήσωμεν τῷ Θεῷ.
5 Ὅτε γὰρ ἦμεν ἐν τῇ σαρκὶ, τὰ παθή-
ματα τῶν ἁμαρτιῶν τὰ διὰ τοῦ νόμου ἐνηργεῖτο
ἐν τοῖς μέλεσιν ἡμῶν, εἰς τὸ καρποφορῆσαι
τῷ θανάτῳ.
6 Νυνὶ δὲ κατηργήθημεν ἀπὸ τοῦ νόμου,
ἀποθανόντος ἐν ᾧ κατειχόμεθα· ὥστε δουλεύειν
ἡμᾶς ἐν καινότητι πνεύματος, καὶ οὐ παλαιό-
τητι γράμματος.
7 Τί οὖν ἐροῦμεν; Ὁ νόμος ἁμαρτία; Μὴ
γένοιτο· ἀλλὰ τὴν ἁμαρτίαν οὐκ ἔγνων εἰ μὴ
διὰ νόμου· τήν τε γὰρ ἐπιθυμίαν οὐκ ᾔδειν εἰ
μὴ ὁ νόμος ἔλεγεν· Οὐκ ἐπιθυμήσεις.
8 Ἀφορμὴν δὲ λαβοῦσα ἡ ἁμαρτία, διὰ
τῆς ἐντολῆς κατειργάσατο ἐν ἐμοὶ πᾶσαν ἐπι-
θυμίαν. χωρὶς γὰρ νόμου ἁμαρτία νεκρά.
9 Ἐγὼ δὲ ἔζων χωρὶς νόμου ποτέ· ἐλθού-
σης δὲ τῆς ἐντολῆς, ἡ ἁμαρτία ἀνέζησεν.
10 Ἐγὼ δὲ ἀπέθανον· καὶ εὑρέθη μοι ἡ ἐν-
τολὴ ἡ εἰς ζωὴν, αὕτη εἰς θάνατον.
11 Ἡ γὰρ ἁμαρτία ἀφορμὴν λαβοῦσα,
διὰ τῆς ἐντολῆς ἐξηπάτησέ με, καὶ δι' αὐτῆς
ἀπέκτεινεν.

12 Ὥστε ὁ μὲν νόμος ἅγιος· καὶ ἡ ἐντολὴ ἁγία καὶ δικαία καὶ ἀγαθή.

13 Τὸ οὖν ἀγαθὸν, ἐμοὶ γέγονε θάνατος; Μὴ γένοιτο· ἀλλὰ ἡ ἁμαρτία, ἵνα φανῇ ἁμαρτία διὰ τοῦ ἀγαθοῦ μοι κατεργαζομένη θάνατον, ἵνα γένηται καθ' ὑπερβολὴν ἁμαρτωλὸς ἡ ἁμαρτία διὰ τῆς ἐντολῆς.

14 Οἴδαμεν γὰρ ὅτι ὁ νόμος πνευματικός ἐστιν· ἐγὼ δὲ σαρκικός εἰμι, πεπραμένος ὑπὸ τὴν ἁμαρτίαν.

15 Ὃ γὰρ κατεργάζομαι, οὐ γινώσκω· οὐ γὰρ ὃ θέλω, τοῦτο πράσσω, ἀλλ' ὃ μισῶ, τοῦτο ποιῶ.

16 Εἰ δὲ ὃ οὐ θέλω, τοῦτο ποιῶ, σύμφημι τῷ νόμῳ ὅτι καλός.

17 Νυνὶ δὲ οὐκ ἔτι ἐγὼ κατεργάζομαι αὐτὸ, ἀλλ' ἡ οἰκοῦσα ἐν ἐμοὶ ἁμαρτία.

18 Οἶδα γὰρ ὅτι οὐκ οἰκεῖ ἐν ἐμοὶ (τουτέστιν ἐν τῇ σαρκί μου) ἀγαθόν. τὸ γὰρ θέλειν παράκειταί μοι, τὸ δὲ κατεργάζεσθαι τὸ καλὸν, οὐχ εὑρίσκω.

19 Οὐ γὰρ, ὃ θέλω, ποιῶ ἀγαθόν· ἀλλ' ὃ οὐ θέλω κακὸν, τοῦτο πράσσω.

20 Εἰ δὲ ὃ οὐ θέλω ἐγὼ τοῦτο ποιῶ, οὐκ ἔτι ἐγὼ κατεργάζομαι αὐτὸ, ἀλλ' ἡ οἰκοῦσα ἐν ἐμοὶ ἁμαρτία.

21 Εὑρίσκω ἄρα τὸν νόμον τῷ θέλοντι ἐμοὶ ποιεῖν τὸ καλὸν, ὅτι ἐμοὶ τὸ κακὸν παράκειται.

22 Συνήδομαι γὰρ τῷ νόμῳ τοῦ Θεοῦ κατὰ τὸν ἔσω ἄνθρωπον.

23 Βλέπω δὲ ἕτερον νόμον ἐν τοῖς μέλεσί μου ἀντιστρατευόμενον τῷ νόμῳ τοῦ νοός μου, καὶ αἰχμαλωτίζοντά με τῷ νόμῳ τῆς ἁμαρτίας τῷ ὄντι ἐν τοῖς μέλεσί μου.

24 Τα-

24 Ταλαίπωρος ἐγὼ ἄνθρωπος· τίς με
ῥύσεται ἐκ τοῦ σώματος τοῦ θανάτου τούτου;

25 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ
τοῦ Κυρίου ἡμῶν. Ἄρα οὖν αὐτὸς ἐγὼ τῷ μὲν
νοῒ δουλεύω νόμῳ Θεοῦ, τῇ δὲ σαρκὶ, νό-
μῳ ἁμαρτίας.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Η. 8.

1 ΟΥ'δὲν ἄρα νῦν κατάκριμα τοῖς ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ, μὴ κατὰ σάρκα
περιπατοῦσιν, ἀλλὰ κατὰ πνεῦμα.

2 Ὁ γὰρ νόμος τοῦ πνεύματος τῆς ζωῆς ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ, ἠλευθέρωσέ με ἀπὸ τοῦ νόμου
τῆς ἁμαρτίας καὶ τοῦ θανάτου.

3 Τὸ γὰρ ἀδύνατον τοῦ νόμου, ἐν ᾧ ἠσθένει
διὰ τῆς σαρκὸς, ὁ Θεὸς τὸν ἑαυτοῦ Υἱὸν
πέμψας ἐν ὁμοιώματι σαρκὸς ἁμαρτίας, καὶ
περὶ ἁμαρτίας, κατέκρινε τὴν ἁμαρτίαν ἐν
τῇ σαρκί.

4 Ἵνα τὸ δικαίωμα τοῦ νόμου πληρωθῇ ἐν
ἡμῖν τοῖς μὴ κατὰ σάρκα περιπατοῦσιν, ἀλ-
λὰ κατὰ πνεῦμα.

5 Οἱ γὰρ κατὰ σάρκα ὄντες, τὰ τῆς σαρ-
κὸς φρονοῦσιν· οἱ δὲ κατὰ πνεῦμα, τὰ τοῦ πνεύ-
ματος.

6 Τὸ γὰρ φρόνημα τῆς σαρκὸς, θάνατος·
τὸ δὲ φρόνημα τοῦ πνεύματος, ζωὴ καὶ εἰρήνη.

7 Διότι τὸ φρόνημα τῆς σαρκὸς, ἔχθρα
εἰς Θεόν. τῷ γὰρ νόμῳ τοῦ Θεοῦ οὐχ ὑποτάσ-
σεται. οὐδὲ γὰρ δύναται.

8 Οἱ δὲ ἐν σαρκὶ ὄντες, Θεῷ ἀρέσαι οὐ
δύνανται.

9 Ὑμεῖς δὲ οὐκ ἐστὲ ἐν σαρκὶ, ἀλλ' ἐν
πνεύματι, εἴπερ πνεῦμα Θεοῦ οἰκεῖ ἐν ὑμῖν.

εἰ δέ τις πνεῦμα Χριστοῦ οὐκ ἔχει, οὗτος οὐκ
ἔστιν αὐτοῦ.

10 Εἰ δὲ Χριστὸς ἐν ὑμῖν, τὸ μὲν σῶμα
νεκρὸν δι' ἁμαρτίαν· τὸ δὲ πνεῦμα, ζωὴ
διὰ δικαιοσύνην.

11 Εἰ δὲ τὸ πνεῦμα τοῦ ἐγείραντος Ἰησοῦν
ἐκ νεκρῶν οἰκεῖ ἐν ὑμῖν, ὁ ἐγείρας τὸν Χριστὸν
ἐκ νεκρῶν, ζωοποιήσει καὶ τὰ θνητὰ σώματα
ὑμῶν, διὰ τοῦ ἐνοικοῦντος αὐτοῦ πνεύματος
ἐν ὑμῖν.

12 Ἄρα οὖν, ἀδελφοί, ὀφειλέται ἐσμὲν
οὐ τῇ σαρκὶ, τοῦ κατὰ σάρκα ζῆν.

13 Εἰ γὰρ κατὰ σάρκα ζῆτε, μέλλετε
ἀποθνήσκειν· εἰ δὲ πνεύματι τὰς πράξεις τοῦ
σώματος θανατοῦτε, ζήσεσθε.

14 Ὅσοι γὰρ πνεύματι Θεοῦ ἄγονται,
οὗτοί εἰσιν Υἱοὶ Θεοῦ.

15 Οὐ γὰρ ἐλάβετε πνεῦμα δουλείας πά-
λιν εἰς φόβον, ἀλλ' ἐλάβετε πνεῦμα Υἱο-
θεσίας, ἐν ᾧ κράζομεν, Ἀββᾶ ὁ πατήρ.

16 Αὐτὸ τὸ πνεῦμα συμμαρτυρεῖ τῷ πνεύ-
ματι ἡμῶν, ὅτι ἐσμὲν τέκνα Θεοῦ.

17 Εἰ δὲ τέκνα, καὶ κληρονόμοι· κληρονό-
μοι μὲν Θεοῦ, συγκληρονόμοι δὲ Χριστοῦ·
εἴπερ συμπάσχομεν, ἵνα καὶ συνδοξασθῶμεν.

18 Λογίζομαι γὰρ ὅτι οὐκ ἄξια τὰ παθή-
ματα τοῦ νῦν καιροῦ πρὸς τὴν μέλλουσαν δό-
ξαν ἀποκαλυφθῆναι εἰς ἡμᾶς.

19 Ἡ γὰρ ἀποκαραδοκία τῆς κτίσεως τὴν
ἀποκάλυψιν τῶν Υἱῶν τοῦ Θεοῦ ἀπεκδέχεται.

20 Τῇ γὰρ ματαιότητι ἡ κτίσις ὑπετά-
γη, οὐχ ἑκοῦσα, ἀλλὰ διὰ τὸν ὑποτάξαντα.

21 Ἐπ' ἐλπίδι, ὅτι καὶ αὐτὴ ἡ κτίσις
ἐλευθερωθήσεται ἀπὸ τῆς δουλείας τῆς φθορᾶς
εἰς

εἰς τὴν ἐλευθερίαν τῆς δόξης τῶν τέκνων τοῦ Θεοῦ.

22 Οἴδαμεν γὰρ ὅτι πᾶσα ἡ κτίσις συστενάζει καὶ συνωδίνει ἄχρι τοῦ νῦν.

23 Οὐ μόνον δέ, ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ τὴν ἀπαρχὴν τοῦ Πνεύματος ἔχοντες, καὶ ἡμεῖς αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς στενάζομεν, Υἱοθεσίαν ἀπεκδεχόμενοι, τὴν ἀπολύτρωσιν τοῦ σώματος ἡμῶν.

24 Τῇ γὰρ ἐλπίδι ἐσώθημεν. ἐλπὶς δὲ βλεπομένη, οὐκ ἔστιν ἐλπίς· ὃ γὰρ βλέπει τίς, τί καὶ ἐλπίζει;

25 Εἰ δὲ ὃ οὐ βλέπομεν, ἐλπίζομεν, δι' ὑπομονῆς ἀπεκδεχόμεθα.

26 Ὡσαύτως δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα συναντιλαμβάνεται ταῖς ἀσθενείαις ἡμῶν· τὸ γὰρ τί προσευξόμεθα καθὸ δεῖ, οὐκ οἴδαμεν, ἀλλ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ὑπερεντυγχάνει ὑπὲρ ἡμῶν στεναγμοῖς ἀλαλήτοις.

27 Ὁ δὲ ἐρευνῶν τὰς καρδίας, οἶδε τί τὸ φρόνημα τοῦ Πνεύματος, ὅτι κατὰ Θεὸν ἐντυγχάνει ὑπὲρ ἁγίων.

28 Οἴδαμεν δὲ ὅτι τοῖς ἀγαπῶσι τὸν Θεόν, πάντα συνεργεῖ εἰς ἀγαθόν, τοῖς κατὰ πρόθεσιν κλητοῖς οὖσιν.

29 Ὅτι οὓς προέγνω, καὶ προώρισε συμμόρφους τῆς εἰκόνος τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ, εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν πρωτότοκον ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς.

30 Οὓς δὲ προώρισε, τούτους καὶ ἐκάλεσε· καὶ οὓς ἐκάλεσε, τούτους καὶ ἐδικαίωσεν· οὓς δὲ ἐδικαίωσε, τούτους καὶ ἐδόξασε.

31 Τί οὖν ἐροῦμεν πρὸς ταῦτα; εἰ ὁ Θεὸς ὑπὲρ ἡμῶν, τίς καθ' ἡμῶν.

32 Ὅς γε τοῦ ἰδίου Υἱοῦ οὐκ ἐφείσατο, ἀλλ' ὑπὲρ ἡμῶν πάντων παρέδωκεν αὐτόν, πῶς οὐχὶ καὶ σὺν αὐτῷ τὰ πάντα ἡμῖν χαρίσεται;

33 Τίς

33 Τίς ἐγκαλέσει κατὰ ἐκλεκτῶν Θεοῦ;
Θεὸς ὁ δικαιῶν.
34 Τίς ὁ κατακρίνων; Χριστὸς ὁ ἀποθα-
νὼν, μᾶλλον δὲ καὶ ἐγερθεὶς, ὃς καὶ ἔστιν ἐν δε-
ξιᾷ τοῦ Θεοῦ, ὃς καὶ ἐντυγχάνει ὑπὲρ ἡμῶν.
35 Τίς ἡμᾶς χωρίσει ἀπὸ τῆς ἀγάπης
τοῦ Χριστοῦ; θλίψις, ἢ στενοχωρία, ἢ διωγ-
μὸς, ἢ λιμὸς, ἢ γυμνότης, ἢ κίνδυνος,
ἢ μάχαιρα;
36 (Καθὼς γέγραπται· Ὅτι ἕνεκά σου
θανατούμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν· ἐλογίσθημεν
ὡς πρόβατα σφαγῆς.)
37 Ἀλλ' ἐν τούτοις πᾶσιν ὑπερνικῶμεν
διὰ τοῦ ἀγαπήσαντος ἡμᾶς.
38 Πέπεισμαι γὰρ ὅτι οὔτε θάνατος, οὔτε
ζωὴ, οὔτε ἄγγελοι, οὔτε ἀρχαὶ, οὔτε δυνά-
μεις, οὔτε ἐνεστῶτα, οὔτε μέλλοντα,
39 Οὔτε ὕψωμα, οὔτε βάθος, οὔτε τις
κτίσις ἑτέρα δυνήσεται ἡμᾶς χωρίσαι ἀπὸ
τῆς ἀγάπης τοῦ Θεοῦ, τῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ
τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Θ. 9.

1 Ἀλήθειαν λέγω ἐν Χριστῷ, οὐ ψεύ-
δομαι (συμμαρτυρούσης μοι τῆς
συνειδήσεώς μου ἐν Πνεύματι ἁγίῳ,)
2 Ὅτι λύπη μοί ἐστι μεγάλη, καὶ ἀδιάλει-
πτος ὀδύνη τῇ καρδίᾳ μου.
3 Ηὐχόμην γὰρ αὐτὸς ἐγὼ ἀνάθεμα εἶ-
ναι ἀπὸ τοῦ Χριστοῦ ὑπὲρ τῶν ἀδελφῶν μου τῶν
συγγενῶν μου κατὰ σάρκα.
4 Οἵτινές εἰσιν Ἰσραηλῖται, ὧν ἡ υἱο-
θεσία καὶ ἡ δόξα καὶ αἱ διαθῆκαι καὶ ἡ νομοθε-
σία, καὶ ἡ λατρεία, καὶ αἱ ἐπαγγελίαι.

5 Ὧν οἱ πατέρες, καὶ ἐξ ὧν ὁ Χριστὸς τὸ
κατὰ σάρκα, ὁ ὢν ἐπὶ πάντων Θεὸς εὐλογη-
τὸς εἰς τοὺς αἰῶνας ἀμήν.
6 Οὐχ οἷον δὲ ὅτι ἐκπέπτωκεν ὁ λόγος τοῦ
Θεοῦ· οὐ γὰρ πάντες οἱ ἐξ Ἰσραήλ, οὗτοι
Ἰσραήλ.
7 Οὐδ' ὅτι εἰσὶ σπέρμα Ἀβραάμ, πάν-
τες τέκνα· ἀλλ' ἐν Ἰσαὰκ κληθήσεταί σοι
σπέρμα.
8 Τουτέστιν, οὐ τὰ τέκνα τῆς σαρκὸς, ταῦ-
τα τέκνα τοῦ Θεοῦ· ἀλλὰ τὰ τέκνα τῆς ἐπαγ-
γελίας λογίζεται εἰς σπέρμα.
9 Ἐπαγγελίας γὰρ ὁ λόγος οὗτος· Κα-
τὰ τὸν καιρὸν τοῦτον ἐλεύσομαι, καὶ ἔσται τῇ
Σάρρᾳ Υἱός.
10 Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ Ῥεβέκκα, ἐξ
ἑνὸς κοίτην ἔχουσα, Ἰσαὰκ τοῦ πατρὸς ἡμῶν.
11 Μήπω γὰρ γεννηθέντων, μηδὲ πραξάν-
των τι ἀγαθὸν ἢ κακὸν, ἵνα ἡ κατ' ἐκλογὴν
τοῦ Θεοῦ πρόθεσις μένῃ, οὐκ ἐξ ἔργων, ἀλλ'
ἐκ τοῦ καλοῦντος,
12 Ἐῤῥήθη αὐτῇ· Ὅτι ὁ μείζων δουλεύ-
σει τῷ ἐλάσσονι.
13 Καθὼς γέγραπται· Τὸν Ἰακὼβ ἠγά-
πησα, τὸν δὲ Ἡσαῦ ἐμίσησα.
14 Τί οὖν ἐροῦμεν; μὴ ἀδικία παρὰ τῷ
Θεῷ; Μὴ γένοιτο.
15 Τῷ γὰρ Μωσῇ λέγει· Ἐλεήσω ὃν ἂν
ἐλεῶ, καὶ οἰκτειρήσω ὃν ἂν οἰκτείρω.
16 Ἄρα οὖν οὐ τοῦ θέλοντος, οὐδὲ τοῦ τρέ-
χοντος, ἀλλὰ τοῦ ἐλεοῦντος Θεοῦ.
17 Λέγει γὰρ ἡ γραφὴ τῷ Φαραώ· Ὅ-
τι εἰς αὐτὸ τοῦτο ἐξήγειρά σε, ὅπως ἐνδεί-
ξωμαι ἐν σοὶ τὴν δύναμίν μου, καὶ ὅπως

διαγ-

διαγγελῇ τὸ ὄνομά μου ἐν πάσῃ τῇ γῇ.
18 Ἄρα οὖν, ὃν θέλει, ἐλεεῖ· ὃν δὲ θέλει,
σκληρύνει.
19 Ἐρεῖς οὖν μοι· Τί ἔτι μέμφεται; τῷ
βουλήματι αὐτοῦ τίς ἀνθέστηκε;
20 Μενοῦνγε, ὦ ἄνθρωπε, σὺ τίς εἶ ὁ
ἀνταποκρινόμενος τῷ Θεῷ; Μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσ-
μα τῷ πλάσαντι· Τί με ἐποίησας οὕτως;
21 Ἢ οὐκ ἔχει ἐξουσίαν ὁ κεραμεὺς τοῦ πη-
λοῦ, ἐκ τοῦ αὐτοῦ φυράματος ποιῆσαι, ὃ μὲν
τιμὴν σκεῦος, ὃ δὲ εἰς ἀτιμίαν;
22 Εἰ δὲ θέλων ὁ Θεὸς ἐνδείξασθαι τὴν
ὀργὴν, καὶ γνωρίσαι τὸ δυνατὸν αὐτοῦ, ἤνεγκεν
ἐν πολλῇ μακροθυμίᾳ σκεύη ὀργῆς κατηρ-
τισμένα εἰς ἀπώλειαν;
23 Καὶ ἵνα γνωρίσῃ τὸν πλοῦτον τῆς δό-
ξης αὐτοῦ ἐπὶ σκεύη ἐλέους, ἃ προητοίμασεν
εἰς δόξαν;
24 Οὓς καὶ ἐκάλεσεν ἡμᾶς, οὐ μόνον ἐξ
Ἰουδαίων, ἀλλὰ καὶ ἐξ ἐθνῶν.
25 Ὡς καὶ ἐν τῷ Ὡσηὲ λέγει· Καλέσω
τὸν οὐ λαόν μου, λαόν μου· καὶ τὴν οὐκ ἠγαπη-
μένην, ἠγαπημένην.
26 Καὶ ἔσται, ἐν τῷ τόπῳ οὗ ἐρρήθη αὐ-
τοῖς· Οὐ λαός μου ὑμεῖς, ἐκεῖ κληθήσονται
Υἱοὶ Θεοῦ ζῶντος.
27 Ἡσαΐας δὲ κράζει ὑπὲρ τοῦ Ἰσραήλ·
Ἐὰν ᾖ ὁ ἀριθμὸς τῶν Υἱῶν Ἰσραὴλ ὡς ἡ ἄμ-
μος τῆς θαλάσσης, τὸ κατάλειμμα σωθήσεται.
28 Λόγον γὰρ συντελῶν καὶ συντέμνων ἐν
δικαιοσύνῃ, ὅτι λόγον συντετμημένον ποιή-
σει Κύριος ἐπὶ τῆς γῆς.
29 Καὶ καθὼς προείρηκεν Ἡσαΐας· Εἰ
μὴ Κύριος Σαβαὼθ ἐγκατέλιπεν ἡμῖν
σπέρ-

σπέρμα, ὡς Σόδομα ἂν ἐγενήθημεν, καὶ ὡς Γόμορρα ἂν ὡμοιώθημεν.

30 Τί οὖν ἐροῦμεν; ὅτι ἔθνη τὰ μὴ διώκοντα δικαιοσύνην, κατέλαβε δικαιοσύνην, δικαιοσύνην δὲ τὴν ἐκ πίστεως.

31 Ἰσραὴλ δὲ διώκων νόμον δικαιοσύνης, εἰς νόμον δικαιοσύνης οὐκ ἔφθασε;

32 Διατί; Ὅτι οὐκ ἐκ πίστεως, ἀλλ᾽ ὡς ἐξ ἔργων νόμου. προσέκοψαν γὰρ τῷ λίθῳ τοῦ προσκόμματος.

33 Καθὼς γέγραπται· Ἰδοὺ, τίθημι ἐν Σιὼν λίθον προσκόμματος, καὶ πέτραν σκανδάλου· καὶ πᾶς ὁ πιστεύων ἐπ᾽ αὐτῷ, οὐ καταισχυνθήσεται.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ι΄. 10.

1 Ἀδελφοὶ, ἡ μὲν εὐδοκία τῆς ἐμῆς καρδίας, καὶ ἡ δέησις ἡ πρὸς τὸν Θεὸν, ὑπὲρ τοῦ Ἰσραήλ ἐστιν εἰς σωτηρίαν.

2 Μαρτυρῶ γὰρ αὐτοῖς ὅτι ζῆλον Θεοῦ ἔχουσιν, ἀλλ᾽ οὐ κατ᾽ ἐπίγνωσιν.

3 Ἀγνοοῦντες γὰρ τὴν τοῦ Θεοῦ δικαιοσύνην, καὶ τὴν ἰδίαν δικαιοσύνην ζητοῦντες στῆσαι, τῇ δικαιοσύνῃ τοῦ Θεοῦ οὐχ ὑπετάγησαν.

4 Τέλος γὰρ νόμου Χριστὸς, εἰς δικαιοσύνην παντὶ τῷ πιστεύοντι.

5 Μωσῆς γὰρ γράφει τὴν δικαιοσύνην τὴν ἐκ τοῦ νόμου· Ὅτι ὁ ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος, ζήσεται ἐν αὐτοῖς.

6 Ἡ δὲ ἐκ πίστεως δικαιοσύνη οὕτω λέγει· Μὴ εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου· Τίς ἀναβήσεται εἰς τὸν οὐρανόν; Τοῦτ᾽ ἔστι Χριστὸν καταγαγεῖν.

7 Ἢ· τίς καταβήσεται εἰς τὴν ἄβυσσον; Τουτέστι Χριστὸν ἐκ νεκρῶν ἀναγαγεῖν.

8 Ἀλ-

8 Ἀλλὰ τί λέγει; Ἐγγύς σου τὸ ῥῆμά
ἐστιν ἐν τῷ στόματί σου καὶ ἐν τῇ καρδίᾳ σου·
τοῦτ᾽ ἔστι τὸ ῥῆμα τῆς πίστεως ὃ κηρύσσομεν.
9 Ὅτι ἐὰν ὁμολογήσῃς ἐν τῷ στόματί σου
Κύριον Ἰησοῦν, καὶ πιστεύσῃς ἐν τῇ καρδίᾳ
σου, ὅτι ὁ Θεὸς αὐτὸν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν, σω-
θήσῃ.
10 Καρδίᾳ γὰρ πιστεύεται εἰς δικαιοσύ-
νην· στόματι δὲ ὁμολογεῖται εἰς σωτηρίαν.
11 Λέγει γὰρ ἡ γραφή· Πᾶς ὁ πιστεύων
ἐπ᾽ αὐτῷ, οὐ καταισχυνθήσεται.
12 Οὐ γάρ ἐστι διαστολὴ Ἰουδαίου τε καὶ
Ἕλληνος· ὁ γὰρ αὐτὸς Κύριος πάντων, πλου-
τῶν εἰς πάντας τοὺς ἐπικαλουμένους αὐτόν.
13 Πᾶς γὰρ ὃς ἂν ἐπικαλέσηται τὸ ὄνομα
Κυρίου, σωθήσεται.
14 Πῶς οὖν ἐπικαλέσονται εἰς ὃν οὐκ ἐπί-
στευσαν; Πῶς δὲ πιστεύσουσιν οὗ οὐκ ἤκουσαν;
Πῶς δὲ ἀκούσουσι χωρὶς κηρύσσοντος;
15 Πῶς δὲ κηρύξουσιν ἐὰν μὴ ἀποσταλῶ-
σι; Καθὼς γέγραπται· Ὡς ὡραῖοι οἱ πό-
δες τῶν εὐαγγελιζομένων εἰρήνην, τῶν εὐαγ-
γελιζομένων τὰ ἀγαθά.
16 Ἀλλ᾽ οὐ πάντες ὑπήκουσαν τῷ εὐαγγε-
λίῳ. Ἠσαΐας γὰρ λέγει· Κύριε, τίς ἐπί-
στευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν;
17 Ἄρα ἡ πίστις ἐξ ἀκοῆς· ἡ δὲ ἀκοὴ
διὰ ῥήματος Θεοῦ.
18 Ἀλλὰ λέγω· Μὴ οὐκ ἤκουσαν; Με-
νοῦνγε εἰς πᾶσαν τὴν γῆν ἐξῆλθεν ὁ φθόγ-
γος αὐτῶν, καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης
τὰ ῥήματα αὐτῶν.
19 Ἀλλὰ λέγω· Μὴ οὐκ ἔγνω Ἰσραήλ;
Πρῶτος Μωσῆς λέγει· Ἐγὼ παραζηλώσω
ὑμᾶς

ὑμᾶς ἐπ' ὀυκ ἔθνει, ἐπὶ ἔθνει ἀσυνέτῳ παροργιῶ ὑμᾶς.

20 Ἡσαΐας δὲ ἀποτολμᾷ, καὶ λέγει· Εὑρέθην τοῖς ἐμὲ μὴ ζητοῦσιν, ἐμφανὴς ἐγενόμην τοῖς ἐμὲ μὴ ἐπερωτῶσι.

21 Πρὸς τὸν Ἰσραὴλ λέγει· Ὅλην τὴν ἡμέραν ἐξεπέτασα τὰς χεῖράς μου πρὸς λαὸν ἀπειθοῦντα καὶ ἀντιλέγοντα.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

1 ΛΕ'γω οὖν· Μὴ ἀπώσατο ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ; Μὴ γένοιτο· καὶ γὰρ ἐγὼ Ἰσραηλίτης εἰμὶ, ἐκ σπέρματος Ἀβραάμ, φυλῆς Βενιαμίν.

2 Οὐκ ἀπώσατο ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ ὃν προέγνω. Ἢ οὐκ οἴδατε ἐν Ἠλίᾳ τί λέγει ἡ γραφὴ, ὡς ἐντυγχάνει τῷ Θεῷ κατὰ τοῦ Ἰσραὴλ, λέγων·

3 Κύριε, τοὺς προφήτας σου ἀπέκτειναν, καὶ τὰ θυσιαστήριά σου κατέσκαψαν· κἀγὼ ὑπελείφθην μόνος, καὶ ζητοῦσι τὴν ψυχήν μου.

4 Ἀλλὰ τί λέγει αὐτῷ ὁ χρηματισμός; Κατέλιπον ἐμαυτῷ ἑπτακισχιλίους ἄνδρας, οἵτινες οὐκ ἔκαμψαν γόνυ τῇ Βάαλ.

5 Οὕτως οὖν καὶ ἐν τῷ νῦν καιρῷ λεῖμμα κατ' ἐκλογὴν χάριτος γέγονεν.

6 Εἰ δὲ χάριτι, οὐκ ἔτι ἐξ ἔργων· ἐπεὶ ἡ χάρις οὐκ ἔτι γίνεται χάρις· εἰ δὲ ἐξ ἔργων, οὐκ ἔτι ἐστὶ χάρις· ἐπεὶ τὸ ἔργον, οὐκ ἔτι ἐστὶν ἔργον.

7 Τί οὖν; Ὃ ἐπιζητεῖ Ἰσραὴλ, τούτου οὐκ ἐπέτυχεν· ἡ δὲ ἐκλογὴ ἐπέτυχεν, οἱ δὲ λοιποὶ ἐπωρώθησαν.

8 (Κα-

8 (Καθὼς γέγραπται· Ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς πνεῦμα κατανύξεως, ὀφθαλμοὺς τοῦ μὴ βλέπειν, καὶ ὦτα τοῦ μὴ ἀκούειν) ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας.

9 Καὶ Δαβὶδ λέγει· Γενηθήτω ἡ τράπεζα αὐτῶν εἰς παγίδα, καὶ εἰς θήραν, καὶ εἰς σκάνδαλον, καὶ εἰς ἀνταπόδομα αὐτοῖς.

10 Σκοτισθήτωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν τοῦ μὴ βλέπειν· καὶ τὸν νῶτον αὐτῶν διαπαντὸς σύγκαμψον.

11 Λέγω οὖν, μὴ ἔπταισαν ἵνα πέσωσι; Μὴ γένοιτο· ἀλλὰ τῷ αὐτῶν παραπτώματι ἡ σωτηρία τοῖς ἔθνεσιν, εἰς τὸ παραζηλῶσαι αὐτούς.

12 Εἰ δὲ τὸ παράπτωμα αὐτῶν πλοῦτος κόσμου, καὶ τὸ ἥττημα αὐτῶν πλοῦτος ἐθνῶν, πόσῳ μᾶλλον τὸ πλήρωμα αὐτῶν;

13 Ὑμῖν γὰρ λέγω τοῖς ἔθνεσιν, ἐφ' ὅσον μέν εἰμι ἐγὼ ἐθνῶν ἀπόστολος, τὴν διακονίαν μου δοξάζω.

14 Εἴπως παραζηλώσω μου τὴν σάρκα, καὶ σώσω τινὰς ἐξ αὐτῶν.

15 Εἰ γὰρ ἡ ἀποβολὴ αὐτῶν, καταλλαγὴ κόσμου· τίς ἡ πρόσληψις, εἰ μὴ ζωὴ ἐκ νεκρῶν;

16 Εἰ δὲ ἡ ἀπαρχὴ ἁγία, καὶ τὸ φύραμα· καὶ εἰ ἡ ῥίζα ἁγία, καὶ οἱ κλάδοι.

17 Εἰ δέ τινες τῶν κλάδων ἐξεκλάσθησαν, σὺ δὲ ἀγριέλαιος ὢν ἐνεκεντρίσθης ἐν αὐτοῖς, καὶ συγκοινωνὸς τῆς ῥίζης καὶ τῆς πιότητος τῆς ἐλαίας ἐγένου.

18 Μὴ κατακαυχῶ τῶν κλάδων· εἰ δὲ κατακαυχᾶσαι, οὐ σὺ τὴν ῥίζαν βαστάζεις, ἀλλ' ἡ ῥίζα σέ.

19 Ε-

19 Ἐρεῖς οὖν· Ἐξεκλάσθησαν οἱ κλάδοι,
ἵνα ἐγὼ ἐγκεντρισθῶ.

20 Καλῶς· τῇ ἀπιστίᾳ ἐξεκλάσθησαν,
σὺ δὲ τῇ πίστει ἕστηκας· μὴ ὑψηλοφρόνει,
ἀλλὰ φοβοῦ.

21 Εἰ γὰρ ὁ Θεὸς τῶν κατὰ φύσιν κλάδων
οὐκ ἐφείσατο, μήπως οὐδὲ σοῦ φείσεται.

22 Ἴδε οὖν χρηστότητα καὶ ἀποτομίαν Θεοῦ·
ἐπὶ μὲν τοὺς πεσόντας, ἀποτομίαν· ἐπὶ δὲ
σε χρηστότητα, ἐὰν ἐπιμείνῃς τῇ χρηστότητι·
ἐπεὶ καὶ σὺ ἐκκοπήσῃ.

23 Καὶ ἐκεῖνοι δὲ, ἐὰν μὴ ἐπιμείνωσι τῇ
ἀπιστίᾳ, ἐγκεντρισθήσονται· δυνατὸς γάρ ἐστιν
ὁ Θεὸς πάλιν ἐγκεντρίσαι αὐτούς.

24 Εἰ γὰρ σὺ ἐκ τῆς κατὰ φύσιν ἐξεκόπης
ἀγριελαίου, καὶ παρὰ φύσιν ἐνεκεντρίσθης εἰς
καλλιέλαιον, πόσῳ μᾶλλον οὗτοι οἱ κατὰ
φύσιν, ἐγκεντρισθήσονται τῇ ἰδίᾳ ἐλαίᾳ;

25 Οὐ γὰρ θέλω ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοὶ,
τὸ μυστήριον τοῦτο, (ἵνα μὴ ἦτε παρ' ἑαυτοῖς
φρόνιμοι,) ὅτι πώρωσις ἀπὸ μέρους τῷ Ἰσ-
ραὴλ γέγονεν, ἄχρις οὗ τὸ πλήρωμα τῶν ἐθνῶν
εἰσέλθῃ.

26 Καὶ οὕτω πᾶς Ἰσραὴλ σωθήσεται, κα-
θὼς γέγραπται· Ἥξει ἐκ Σιὼν ὁ ῥυόμενος,
καὶ ἀποστρέψει ἀσεβείας ἀπὸ Ἰακώβ.

27 Καὶ αὕτη αὐτοῖς ἡ παρ' ἐμοῦ διαθήκη,
ὅταν ἀφέλωμαι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν.

28 Κατὰ μὲν τὸ εὐαγγέλιον, ἐχθροὶ δι'
ὑμᾶς· κατὰ δὲ τὴν ἐκλογὴν, ἀγαπητοὶ διὰ
τοὺς πατέρας.

29 Ἀμεταμέλητα γὰρ τὰ χαρίσματα, καὶ ἡ
κλῆσις τοῦ Θεοῦ.

30 Ὥσπερ γὰρ καὶ ὑμεῖς ποτε ἠπειθήσατε τῷ
Θεῷ,

Θεῷ, νῦν δὲ ἠλεήθητε τῇ τούτων ἀπειθείᾳ.
31 Οὕτω καὶ οὗτοι νῦν ἠπείθησαν τῷ ὑμετέρῳ ἐλέει, ἵνα καὶ αὐτοὶ ἐλεηθῶσι.
32 Συνέκλεισε γὰρ ὁ Θεὸς τοὺς πάντας εἰς ἀπείθειαν, ἵνα τοὺς πάντας ἐλεήσῃ.
33 Ὦ βάθος πλούτου καὶ σοφίας καὶ γνώσεως Θεοῦ· ὡς ἀνεξερεύνητα τὰ κρίματα αὐτοῦ, καὶ ἀνεξιχνίαστοι αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ.
34 Τίς γὰρ ἔγνω νοῦν Κυρίου; ἢ τίς σύμβουλος αὐτοῦ ἐγένετο;
35 Ἢ τίς προέδωκεν αὐτῷ, καὶ ἀνταποδοθήσεται αὐτῷ;
36 Ὅτι ἐξ αὐτοῦ, καὶ δι' αὐτοῦ, καὶ εἰς αὐτὸν τὰ πάντα. αὐτῷ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας. Ἀμήν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

1 Παρακαλῶ οὖν ὑμᾶς, ἀδελφοί, διὰ τῶν οἰκτιρμῶν τοῦ Θεοῦ, παραστῆσαι τὰ σώματα ὑμῶν θυσίαν ζῶσαν, ἁγίαν, εὐάρεστον τῷ Θεῷ, τὴν λογικὴν λατρείαν ὑμῶν.
2 Καὶ μὴ συσχηματίζεσθε τῷ αἰῶνι τούτῳ. ἀλλὰ μεταμορφοῦσθε τῇ ἀνακαινώσει τοῦ νοὸς ὑμῶν, εἰς τὸ δοκιμάζειν ὑμᾶς τί τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ τὸ ἀγαθὸν καὶ εὐάρεστον καὶ τέλειον.
3 Λέγω γὰρ διὰ τῆς χάριτος τῆς δοθείσης μοι, παντὶ τῷ ὄντι ἐν ὑμῖν, μὴ ὑπερφρονεῖν παρ' ὃ δεῖ φρονεῖν· ἀλλὰ φρονεῖν εἰς τὸ σωφρονεῖν, ἑκάστῳ ὡς ὁ Θεὸς ἐμέρισε μέτρον πίστεως.
4 Καθάπερ γὰρ ἐν ἑνὶ σώματι μέλη πολλὰ ἔχομεν, τὰ δὲ μέλη πάντα οὐ τὴν αὐτὴν ἔχει πρᾶξιν.

5 Οὕ-

5 Οὕτως οἱ πολλοὶ ἓν σῶμά ἐσμεν ἐν Χριςῷ, ὁ δὲ καθ' εἷς ἀλλήλων μέλη.

6 Ἔχοντες δὲ χαρίσματα κατὰ τὴν χάριν τὴν δοθεῖσαν ἡμῖν διάφορα, εἴτε προφητείαν, κατὰ τὴν ἀναλογίαν τῆς πίςεως.

7 Εἴτε διακονίαν, ἐν τῇ διακονίᾳ· εἴτε ὁ διδάσκων, ἐν τῇ διδασκαλίᾳ.

8 Εἴτε ὁ παρακαλῶν, ἐν τῇ παρακλήσει· ὁ μεταδιδοὺς, ἐν ἁπλότητι· ὁ προϊςάμενος, ἐν σπουδῇ· ὁ ἐλεῶν, ἐν ἱλαρότητι.

9 Ἡ ἀγάπη, ἀνυπόκριτος. Ἀποςυγοῦντες τὸ πονηρὸν, κολλώμενοι τῷ ἀγαθῷ.

10 Τῇ φιλαδελφίᾳ εἰς ἀλλήλους φιλόςοργοι. Τῇ τιμῇ ἀλλήλους προηγούμενοι.

11 Τῇ σπουδῇ μὴ ὀκνηροί. Τῷ Πνεύματι ζέοντες. Τῷ Κυρίῳ δουλεύοντες.

12 Τῇ ἐλπίδι χαίροντες. Τῇ θλίψει ὑπομένοντες. Τῇ προσευχῇ προσκαρτεροῦντες.

13 Ταῖς χρείαις τῶν ἁγίων κοινωνοῦντες. Τὴν φιλοξενίαν διώκοντες.

14 Εὐλογεῖτε τοὺς διώκοντας ὑμᾶς· εὐλογεῖτε, καὶ μὴ καταρᾶσθε.

15 Χαίρειν μετὰ χαιρόντων, καὶ κλαίειν μετὰ κλαιόντων.

16 Τὸ αὐτὸ εἰς ἀλλήλους φρονοῦντες. Μὴ τὰ ὑψηλὰ φρονοῦντες, ἀλλὰ τοῖς ταπεινοῖς συναπαγόμενοι. Μὴ γίνεσθε φρόνιμοι παρ' ἑαυτοῖς.

17 Μηδενὶ κακὸν ἀντὶ κακοῦ ἀποδιδόντες· Προνοούμενοι καλὰ ἐνώπιον πάντων ἀνθρώπων.

18 Εἰ δυνατὸν, τὸ ἐξ ὑμῶν, μετὰ πάντων ἀνθρώπων εἰρηνεύοντες.

19 Μὴ ἑαυτοὺς ἐκδικοῦντες, ἀγαπητοί·

ἀλλὰ

ἀλλὰ δότε τόπον τῇ ὀργῇ· γέγραπται γάρ· Ἐμοὶ ἐκδίκησις, ἐγὼ ἀνταποδώσω, λέγει Κύριος.

20 Ἐὰν οὖν πεινᾷ ὁ ἐχθρός σου, ψώμιζε αὐτόν· ἐὰν διψᾷ, πότιζε αὐτόν· τοῦτο γὰρ ποιῶν, ἄνθρακας πυρὸς σωρεύσεις ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ.

21 Μὴ νικῶ ὑπὸ τοῦ κακοῦ· ἀλλὰ νίκα ἐν τῷ ἀγαθῷ, τὸ κακόν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

1 Πᾶσα ψυχὴ ἐξουσίαις ὑπερεχούσαις ὑποτασσέσθω· οὐ γάρ ἐστιν ἐξουσία εἰ μὴ ἀπὸ Θεοῦ· αἱ δὲ οὖσαι ἐξουσίαι, ὑπὸ τοῦ Θεοῦ τεταγμέναι εἰσίν.

2 Ὥστε ὁ ἀντιτασσόμενος τῇ ἐξουσίᾳ, τῇ τοῦ Θεοῦ διαταγῇ ἀνθέστηκεν· οἱ δὲ ἀνθεστηκότες, ἑαυτοῖς κρῖμα λήψονται.

3 Οἱ γὰρ ἄρχοντες οὐκ εἰσὶ φόβος τῶν ἀγαθῶν ἔργων, ἀλλὰ τῶν κακῶν. Θέλεις δὲ μὴ φοβεῖσθαι τὴν ἐξουσίαν; τὸ ἀγαθὸν ποίει, καὶ ἕξεις ἔπαινον ἐξ αὐτῆς.

4 Θεοῦ γὰρ διάκονός ἐστί σοι εἰς τὸ ἀγαθόν· Ἐὰν δὲ τὸ κακὸν ποιῇς, φοβοῦ· οὐ γὰρ εἰκῇ τὴν μάχαιραν φορεῖ. Θεοῦ γὰρ διάκονός ἐστιν, ἔκδικος εἰς ὀργὴν τῷ τὸ κακὸν πράσσοντι.

5 Διὸ ἀνάγκη ὑποτάσσεσθαι, οὐ μόνον διὰ τὴν ὀργήν, ἀλλὰ καὶ διὰ τὴν συνείδησιν.

6 Διὰ τοῦτο γὰρ καὶ φόρους τελεῖτε· λειτουργοὶ γὰρ Θεοῦ εἰσιν, εἰς αὐτὸ τοῦτο προσκαρτεροῦντες.

7 Ἀπόδοτε οὖν πᾶσι τὰς ὀφειλάς. τῷ τὸν φόρον, τὸν φόρον· τῷ τὸ τέλος, τὸ τέλος. τῷ τὸν φόβον, τὸν φόβον· τῷ τὴν τιμήν, τὴν τιμήν.

8 Μη-

8 Μηδενὶ μηδὲν ὀφείλετε, εἰ μὴ τὸ ἀγαπᾷν ἀλλήλους· ὁ γὰρ ἀγαπῶν τὸν ἕτερον, νόμον πεπλήρωκε.

9 Τὸ γάρ· Οὐ μοιχεύσεις· Οὐ φονεύσεις· Οὐ κλέψεις· Οὐ ψευδομαρτυρήσεις· Οὐκ ἐπιθυμήσεις· καὶ εἴ τις ἑτέρα ἐντολὴ, ἐν τούτῳ τῷ λόγῳ ἀνακεφαλαιοῦται, ἐν τῷ· Ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς ἑαυτόν.

10 Ἡ ἀγάπη τῷ πλησίον κακὸν οὐκ ἐργάζεται· πλήρωμα οὖν νόμου ἡ ἀγάπη.

11 Καὶ τοῦτο, εἰδότες τὸν καιρὸν, ὅτι ὥρα ἡμᾶς ἤδη ἐξ ὕπνου ἐγερθῆναι· νῦν γὰρ ἐγγύτερον ἡμῶν ἡ σωτηρία ἢ ὅτε ἐπιστεύσαμεν.

12 Ἡ νὺξ προέκοψεν, ἡ δὲ ἡμέρα ἤγγικεν. ἀποθώμεθα οὖν τὰ ἔργα τοῦ σκότους, καὶ ἐνδυσώμεθα τὰ ὅπλα τοῦ φωτός.

13 Ὡς ἐν ἡμέρᾳ, εὐσχημόνως περιπατήσωμεν· μὴ κώμοις καὶ μέθαις, μὴ κοίταις καὶ ἀσελγείαις. μὴ ἔριδι καὶ ζήλῳ.

14 Ἀλλ' ἐνδύσασθε τὸν Κύριον Ἰησοῦν Χριστὸν, καὶ τῆς σαρκὸς πρόνοιαν μὴ ποιεῖσθε εἰς ἐπιθυμίας.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΔ'. 14.

1 ΤΟν δὲ ἀσθενοῦντα τῇ πίστει, προσλαμβάνεσθε, μὴ εἰς διακρίσεις διαλογισμῶν.

2 Ὃς μὲν πιστεύει φαγεῖν πάντα, ὁ δὲ ἀσθενῶν λάχανα ἐσθίει.

3 Ὁ ἐσθίων, τὸν μὴ ἐσθίοντα μὴ ἐξουθενείτω· καὶ ὁ μὴ ἐσθίων, τὸν ἐσθίοντα μὴ κρινέτω· ὁ Θεὸς γὰρ αὐτὸν προσελάβετο.

4 Σὺ τίς εἶ ὁ κρίνων ἀλλότριον οἰκέτην;

Τῷ ἰδίῳ κυρίῳ στήκει, ἢ πίπτει· σταθήσεται
δέ· δυνατὸς γάρ ἐστιν ὁ Θεὸς στῆσαι αὐτόν.
5 Ὃς μὲν κρίνει ἡμέραν παρ' ἡμέραν, ὃς
δὲ κρίνει πᾶσαν ἡμέραν· ἕκαστος ἐν τῷ ἰδίῳ
νοῒ πληροφορείσθω.
6 Ὁ φρονῶν τὴν ἡμέραν, Κυρίῳ φρονεῖ·
καὶ ὁ μὴ φρονῶν τὴν ἡμέραν, Κυρίῳ οὐ φρο-
νεῖ. ὁ ἐσθίων, Κυρίῳ ἐσθίει· εὐχαριστεῖ γὰρ
τῷ Θεῷ. καὶ ὁ μὴ ἐσθίων, Κυρίῳ οὐκ ἐσθίει,
καὶ εὐχαριστεῖ τῷ Θεῷ.
7 Οὐδεὶς γὰρ ἡμῶν ἑαυτῷ ζῇ, καὶ οὐδεὶς
ἑαυτῷ ἀποθνήσκει.
8 Ἐάν τε γὰρ ζῶμεν, τῷ Κυρίῳ ζῶμεν·
ἐάν τε ἀποθνήσκωμεν, τῷ Κυρίῳ ἀποθνή-
σκομεν. ἐάν τε οὖν ζῶμεν, ἐάν τε ἀποθνή-
σκωμεν, τοῦ Κυρίου ἐσμέν.
9 Εἰς τοῦτο γὰρ Χριστὸς καὶ ἀπέθανε καὶ ἀνέ-
στη καὶ ἀνέζησεν, ἵνα καὶ νεκρῶν καὶ ζώντων κυ-
ριεύσῃ.
10 Σὺ δὲ τί κρίνεις τὸν ἀδελφόν σου; ἢ καὶ
σὺ τί ἐξουθενεῖς τὸν ἀδελφόν σου; πάντες γὰρ
παραστησόμεθα τῷ βήματι τοῦ Χριστοῦ.
11 Γέγραπται γάρ· Ζῶ ἐγώ, λέγει Κύ-
ριος· ὅτι ἐμοὶ κάμψει πᾶν γόνυ, καὶ πᾶσα
γλῶσσα ἐξομολογήσεται τῷ Θεῷ.
12 Ἄρα οὖν ἕκαστος ἡμῶν περὶ ἑαυτοῦ λό-
γον δώσει τῷ Θεῷ.
13 Μηκέτι οὖν ἀλλήλους κρίνωμεν· ἀλλὰ
τοῦτο κρίνατε μᾶλλον, τὸ μὴ τιθέναι πρόσ-
κομμα τῷ ἀδελφῷ, ἢ σκάνδαλον.
14 Οἶδα καὶ πέπεισμαι ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ,
ὅτι οὐδὲν κοινὸν δι' ἑαυτοῦ· εἰ μὴ τῷ λογιζο-
μένῳ τί κοινὸν εἶναι, ἐκείνῳ κοινόν.
15 Εἰ δὲ διὰ βρῶμα ὁ ἀδελφός σου λυ-

πεῖ-

πεῖται, ἐκ ἔτι κατὰ ἀγάπην περιπατεῖς· μὴ τῷ βρώματί σε ἐκεῖνον ἀπόλλυε ὑπὲρ ἑ Χριστὸς ἀπέθανε.

16 Μὴ βλασφημείσθω ἐν ὑμῶν τὸ ἀγαθόν.

17 Οὐ γάρ ἐστιν ἡ βασιλεία τῦ Θεῦ βρῶσις καὶ πόσις, ἀλλὰ δικαιοσύνη, καὶ εἰρήνη, καὶ χαρὰ ἐν Πνεύματι ἁγίῳ.

18 Ὁ γὰρ ἐν τέτοις δελεύων τῷ Χριστῷ, εὐάρεστος τῷ Θεῷ, καὶ δόκιμος τοῖς ἀνθρώποις.

19 Ἄρα ἐν τὰ τῆς εἰρήνης διώκωμεν, καὶ τὰ τῆς οἰκοδομῆς τῆς εἰς ἀλλήλες.

20 Μὴ ἕνεκεν βρώματος κατάλυε τὸ ἔργον τῦ Θεῦ· πάντα μὲν καθαρά· ἀλλὰ κακὸν τῷ ἀνθρώπῳ τῷ διὰ προσκόμματος ἐσθίοντι.

21 Καλὸν τὸ μὴ φαγεῖν κρέα, μηδὲ πιεῖν οἶνον, μηδὲ ἐν ᾧ ὁ ἀδελφός σε προσκόπτει ἢ σκανδαλίζεται ἢ ἀσθενεῖ.

22 Σὺ πίστιν ἔχεις; κατὰ σαυτὸν ἔχε ἐνώπιον τῦ Θεῦ· Μακάριος ὁ μὴ κρίνων ἑαυτὸν ἐν ᾧ δοκιμάζει.

23 Ὁ δὲ διακρινόμενος, ἐὰν φάγῃ, κατακέκριται, ὅτι ἐκ ἐκ πίστεως· πᾶν δὲ ὃ ἐκ ἐκ πίστεως, ἁμαρτία ἐστίν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΕ'. 15.

1 ΟΦείλομεν δὲ ἡμεῖς οἱ δυνατοὶ τὰ ἀσθενήματα τῶν ἀδυνάτων βαστάζειν, καὶ μὴ ἑαυτοῖς ἀρέσκειν.

2 Ἕκαστος γὰρ ἡμῶν τῷ πλησίον ἀρεσκέτω εἰς τὸ ἀγαθὸν πρὸς οἰκοδομήν.

3 Καὶ γὰρ ὁ Χριστὸς ἐχ ἑαυτῷ ἤρεσεν, ἀλλὰ, καθὼς γέγραπται· Οἱ ὀνειδισμοὶ τῶν ὀνειδιζόντων σε ἐπέπεσον ἐπ' ἐμέ.

4 Ὅσα γὰρ προεγράφη, εἰς τὴν ἡμετέραν

διδασκαλίαν προεγράφη· ἵνα διὰ τῆς ὑπο-
μονῆς ϗ τῆς παρακλήσεως τῶν γραφῶν, τὴν
ἐλπίδα ἔχωμεν.
5 Ὁ δὲ Θεὸς τῆς ὑπομονῆς ϗ τῆς πα-
ρακλήσεως δῴη ὑμῖν τὸ αὐτὸ φρονεῖν ἐν ἀλ-
λήλοις κατὰ Χριστὸν Ἰησῦν·
6 Ἵνα ὁμοθυμαδὸν ἐν ἑνὶ στόματι δοξά-
ζητε τὸν Θεὸν καὶ Πατέρα τῦ Κυρίυ ἡμῶν
Ἰησῦ Χριστῦ.
7 Διὸ προσλαμβάνεσθε ἀλλήλυς, καθὼς ϗ
ὁ Χριστὸς προσελάβετο ἡμᾶς εἰς δόξαν Θεῦ.
8 Λέγω δὲ, Ἰησῦν Χριστὸν διάκονον γεγε-
νῆσθαι περιτομῆς ὑπὲρ ἀληθείας Θεῦ, εἰς τὸ
βεβαιῶσαι τὰς ἐπαγγελίας τῶν Πατέρων.
9 Τὰ δὲ ἔθνη ὑπὲρ ἐλέυς δοξάσαι τὸν
Θεόν· καθὼς γέγραπται· Διὰ τῦτο ἐξο-
μολογήσομαί σοι ἐν ἔθνεσι, ϗ τῷ ὀνόματί
συ ψαλῶ.
10 Καὶ πάλιν λέγει· Εὐφράνθητε ἔθνη
μετὰ τῦ λαῦ αὐτῦ.
11 Καὶ πάλιν· Αἰνεῖτε τὸν Κύριον πάντα
τὰ ἔθνη, ϗ ἐπαινέσατε αὐτὸν πάντες οἱ λαοί.
12 Καὶ πάλιν Ἡσαΐας λέγει· Ἔσαι ἡ
ῥίζα τῦ Ἰεσσαὶ, ϗ ὁ ἀνιστάμενος ἄρχειν ἐ-
θνῶν, ἐπ' αὐτῷ ἔθνη ἐλπιῦσιν.
13 Ὁ δὲ Θεὸς τῆς ἐλπίδος πληρώσαι
ὑμᾶς πάσης χαρᾶς ϗ εἰρήνης ἐν τῷ πιστεύειν,
εἰς τὸ περισσεύειν ὑμᾶς ἐν τῇ ἐλπίδι, ἐν δυ-
νάμει Πνεύματος ἁγίυ.
14 Πέπεισμαι δὲ, ἀδελφοί μυ, ϗ αὐ-
τὸς ἐγὼ περὶ ὑμῶν, ὅτι ϗ αὐτοὶ μεστοί ἐστε
ἀγαθωσύνης, πεπληρωμένοι πάσης γνώ-
σεως, δυνάμενοι ϗ ἀλλήλυς νυθετεῖν.
15 Τολμηρότερον δὲ ἔγραψα ὑμῖν, ἀδελ-
φοὶ,

φοὶ, ἀπὸ μέρους, ὡς ἐπαναμιμνήσκων ὑμᾶς
διὰ τὴν χάριν τὴν δοθεῖσάν μοι ὑπὸ τοῦ Θεοῦ,
16 Εἰς τὸ εἶναί με λειτουργὸν Ἰησοῦ Χριστοῦ
εἰς τὰ ἔθνη, ἱερουργοῦντα τὸ εὐαγγέλιον τοῦ
Θεοῦ, ἵνα γένηται ἡ προσφορὰ τῶν ἐθνῶν εὐ-
πρόσδεκτος, ἡγιασμένη ἐν Πνεύματι ἁγίῳ.
17 Ἔχω οὖν καύχησιν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τὰ
πρὸς Θεόν.
18 Οὐ γὰρ τολμήσω λαλεῖν τι ὧν οὐ κα-
τειργάσατο Χριστὸς δι' ἐμοῦ, εἰς ὑπακοὴν ἐ-
θνῶν, λόγῳ καὶ ἔργῳ.
19 Ἐν δυνάμει σημείων καὶ τεράτων, ἐν
δυνάμει Πνεύματος Θεοῦ· ὥστε με ἀπὸ Ἱερου-
σαλὴμ καὶ κύκλῳ μέχρι τοῦ Ἰλλυρικοῦ πε-
πληρωκέναι τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ.
20 Οὕτω δὲ φιλοτιμούμενον εὐαγγελίζε-
σθαι, οὐχ ὅπου ὠνομάσθη Χριστὸς, ἵνα μὴ ἐπ'
ἀλλότριον θεμέλιον οἰκοδομῶ.
21 Ἀλλὰ, καθὼς γέγραπται· Οἷς οὐκ
ἀνηγγέλη περὶ αὐτοῦ, ὄψονται· καὶ οἳ οὐκ ἀ-
κηκόασι, συνήσουσι.
22 Διὸ καὶ ἐνεκοπτόμην τὰ πολλὰ τοῦ ἐλ-
θεῖν πρὸς ὑμᾶς.
23 Νυνὶ δὲ μηκέτι τόπον ἔχων ἐν τοῖς
κλίμασι τούτοις, ἐπιποθίαν δὲ ἔχων τοῦ ἐλ-
θεῖν πρὸς ὑμᾶς ἀπὸ πολλῶν ἐτῶν.
24 Ὡς ἐὰν πορεύωμαι εἰς τὴν Σπανίαν,
ἐλεύσομαι πρὸς ὑμᾶς· ἐλπίζω γὰρ διαπο-
ρευόμενος θεάσασθαι ὑμᾶς, καὶ ὑφ' ὑμῶν προ-
πεμφθῆναι ἐκεῖ, ἐὰν ὑμῶν πρῶτον ἀπὸ μέ-
ρους ἐμπλησθῶ.
25 Νυνὶ δὲ πορεύομαι εἰς Ἱερουσαλὴμ,
διακονῶν τοῖς ἁγίοις.
26 Εὐδόκησαν γὰρ Μακεδονία καὶ Ἀχαΐα

κοινωνίαν τινὰ ποιήσασθαι εἰς τοὺς πτωχοὺς τῶν
ἁγίων τῶν ἐν Ἱερουσαλήμ.
27 Εὐδόκησαν γάρ, καὶ ὀφειλέται αὐτῶν
εἰσιν· εἰ γὰρ τοῖς πνευματικοῖς αὐτῶν ἐκοι-
νώνησαν τὰ ἔθνη, ὀφείλουσι καὶ ἐν τοῖς σαρκι-
κοῖς λειτουργῆσαι αὐτοῖς.
28 Τοῦτο οὖν ἐπιτελέσας, καὶ σφραγισάμε-
νος αὐτοῖς τὸν καρπὸν τοῦτον, ἀπελεύσομαι
δι' ὑμῶν εἰς τὴν Σπανίαν.
29 Οἶδα δὲ ὅτι ἐρχόμενος πρὸς ὑμᾶς,
ἐν πληρώματι εὐλογίας τοῦ εὐαγγελίου τοῦ
Χριστοῦ ἐλεύσομαι.
30 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί, διὰ
τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ διὰ τῆς ἀ-
γάπης τοῦ Πνεύματος, συναγωνίσασθαί μοι
ἐν ταῖς προσευχαῖς ὑπὲρ ἐμοῦ πρὸς τὸν Θεόν.
31 Ἵνα ῥυσθῶ ἀπὸ τῶν ἀπειθούντων ἐν τῇ
Ἰουδαίᾳ· καὶ ἵνα ἡ διακονία μου ἡ εἰς Ἱερουσα-
λὴμ εὐπρόσδεκτος γένηται τοῖς ἁγίοις.
32 Ἵνα ἐν χαρᾷ ἔλθω πρὸς ὑμᾶς διὰ θε-
λήματος Θεοῦ, καὶ συναναπαύσωμαι ὑμῖν.
33 Ὁ δὲ Θεὸς τῆς εἰρήνης μετὰ πάντων
ὑμῶν. Ἀμήν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ιϛ'. 16.

1 Συνίστημι δὲ ὑμῖν Φοίβην τὴν ἀ-
δελφὴν ἡμῶν, οὖσαν διάκονον τῆς
ἐκκλησίας τῆς ἐν Κεγχρεαῖς.
2 Ἵνα αὐτὴν προσδέξησθε ἐν Κυρίῳ ἀξίως
τῶν ἁγίων, καὶ παραστῆτε αὐτῇ ἐν ᾧ ἂν ὑμῶν
χρήζῃ πράγματι. καὶ γὰρ αὕτη προστάτις
πολλῶν ἐγενήθη, καὶ αὐτοῦ ἐμοῦ.
3 Ἀσπάσασθε Πρίσκιλλαν καὶ Ἀκύλαν
τοὺς συνεργούς μου ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

4 (Οἵ-

4 (Οἵτινες ὑπὲρ τῆς ψυχῆς μου τὸν ἑαυ-
τῶν τράχηλον ὑπέθηκαν· οἷς οὐκ ἐγὼ μόνος
εὐχαριστῶ, ἀλλὰ καὶ πᾶσαι αἱ ἐκκλησίαι τῶν
ἐθνῶν.)
5 Καὶ τὴν κατ' οἶκον αὐτῶν ἐκκλησίαν.
Ἀσπάσασθε Ἐπαινετὸν τὸν ἀγαπητόν μου, ὅς
ἐστιν ἀπαρχὴ τῆς Ἀχαΐας εἰς Χριστόν.
6 Ἀσπάσασθε Μαριάμ, ἥτις πολλὰ ἐκο-
πίασεν εἰς ἡμᾶς.
7 Ἀσπάσασθε Ἀνδρόνικον καὶ Ἰουνίαν τοὺς
συγγενεῖς μου, καὶ συναιχμαλώτους μου· οἵτι-
νές εἰσιν ἐπίσημοι ἐν τοῖς ἀποστόλοις, οἳ καὶ
πρὸ ἐμοῦ γεγόνασιν ἐν Χριστῷ.
8 Ἀσπάσασθε Ἀμπλίαν τὸν ἀγαπητόν
μου ἐν Κυρίῳ.
9 Ἀσπάσασθε Οὐρβανὸν τὸν συνεργὸν ἡ-
μῶν ἐν Χριστῷ, καὶ Στάχυν τὸν ἀγαπητόν μου.
10 Ἀσπάσασθε Ἀπελλῆν, τὸν δόκιμον ἐν
Χριστῷ. Ἀσπάσασθε τοὺς ἐκ τῶν Ἀριστοβούλου.
11 Ἀσπάσασθε Ἡρωδίωνα τὸν συγγενῆ
μου. Ἀσπάσασθε τοὺς ἐκ τῶν Ναρκίσσου, τοὺς
ὄντας ἐν Κυρίῳ.
12 Ἀσπάσασθε Τρύφαιναν καὶ Τρυφῶσαν
τὰς κοπιώσας ἐν Κυρίῳ· Ἀσπάσασθε Περ-
σίδα τὴν ἀγαπητήν, ἥτις πολλὰ ἐκοπία-
σεν ἐν Κυρίῳ.
13 Ἀσπάσασθε Ῥοῦφον τὸν ἐκλεκτὸν ἐν Κυ-
ρίῳ, καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ ἐμοῦ.
14 Ἀσπάσασθε Ἀσύγκριτον, Φλέγοντα,
Ἑρμᾶν, Πατρόβαν, Ἑρμῆν, καὶ τοὺς σὺν
αὐτοῖς ἀδελφούς.
15 Ἀσπάσασθε Φιλόλογον καὶ Ἰουλίαν,
Νηρέα, καὶ τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ, καὶ Ὀλυμ-
πᾶν, καὶ τοὺς σὺν αὐτοῖς πάντας ἁγίους.

16 Ἀσπάσασθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἁγίῳ. Ἀσπάζονται ὑμᾶς αἱ ἐκκλησίαι τοῦ Χριστοῦ.

17 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί, σκοπεῖν τοὺς τὰς διχοστασίας καὶ τὰ σκάνδαλα, παρὰ τὴν διδαχὴν ἣν ὑμεῖς ἐμάθετε, ποιοῦντας· καὶ ἐκκλίνατε ἀπ' αὐτῶν.

18 Οἱ γὰρ τοιοῦτοι τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ οὐ δουλεύουσιν, ἀλλὰ τῇ ἑαυτῶν κοιλίᾳ. καὶ διὰ τῆς χρηστολογίας καὶ εὐλογίας ἐξαπατῶσι τὰς καρδίας τῶν ἀκάκων.

19 Ἡ γὰρ ὑμῶν ὑπακοὴ εἰς πάντας ἀφίκετο. Χαίρω οὖν τὸ ἐφ' ὑμῖν· θέλω δὲ ὑμᾶς σοφοὺς μὲν εἶναι εἰς τὸ ἀγαθόν, ἀκεραίους δὲ εἰς τὸ κακόν.

20 Ὁ δὲ Θεὸς τῆς εἰρήνης συντρίψει τὸν Σατανᾶν ὑπὸ τοὺς πόδας ὑμῶν ἐν τάχει. Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μεθ' ὑμῶν. Ἀμήν.

21 Ἀσπάζονται ὑμᾶς Τιμόθεος, ὁ συνεργός μου, καὶ Λούκιος καὶ Ἰάσων καὶ Σωσίπατρος, οἱ συγγενεῖς μου.

22 Ἀσπάζομαι ὑμᾶς ἐγὼ Τέρτιος ὁ γράψας τὴν ἐπιστολὴν ἐν Κυρίῳ.

23 Ἀσπάζεται ὑμᾶς Γάϊος ὁ ξένος μου καὶ τῆς ἐκκλησίας ὅλης. Ἀσπάζεται ὑμᾶς Ἔραστος ὁ οἰκονόμος τῆς πόλεως, καὶ Κούαρτος ὁ ἀδελφός.

24 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

25 Τῷ δὲ δυναμένῳ ὑμᾶς στηρίξαι κατὰ τὸ εὐαγγέλιόν μου, καὶ τὸ κήρυγμα Ἰησοῦ Χριστοῦ, κατὰ ἀποκάλυψιν μυστηρίου χρόνοις αἰωνίοις σεσιγημένου.

26 Φανερωθέντος δὲ νῦν, διά τε γραφῶν
προφητικῶν, κατ' ἐπιταγὴν τοῦ αἰωνίου Θεοῦ,
εἰς ὑπακοὴν πίστεως, εἰς πάντα τὰ ἔθνη
γνωρισθέντος.
27 Μόνῳ σοφῷ Θεῷ, διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ,
ᾧ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας. Ἀμήν.
28 Πρὸς Ῥωμαίους ἐγράφη ἀπὸ Κορίν-
θου διὰ Φοίβης τῆς διακόνου τῆς ἐν Κεγ-
χρεαῖς ἐκκλησίας.

ΠΑΥΛΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ
Η ΠΡΟΣ ΚΟΡΙΝΘΙΟΥΣ
ΕΠΙΣΤΟΛΗ, Α.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α.

1 Παῦλος κλητὸς ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ, διὰ θελήματος Θεοῦ,
καὶ Σωσθένης ὁ ἀδελφός.
2 Τῇ ἐκκλησίᾳ τοῦ Θεοῦ, τῇ οὔσῃ ἐν Κο-
ρίνθῳ, ἡγιασμένοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, κλη-
τοῖς ἁγίοις, σὺν πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις
τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐν
παντὶ τόπῳ, αὐτῶν τε καὶ ἡμῶν.
3 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ, Πα-
τρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
4 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου πάντοτε περὶ
ὑμῶν, ἐπὶ τῇ χάριτι τοῦ Θεοῦ τῇ δοθείσῃ ὑ-
μῖν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

5 Ὅτι ἐν παντὶ ἐπλουτίσθητε ἐν αὐτῷ,
ἐν παντὶ λόγῳ καὶ πάσῃ γνώσει.
6 Καθὼς τὸ μαρτύριον τοῦ Χριστοῦ ἐβεβαιώ-
θη ἐν ὑμῖν.
7 Ὥστε ὑμᾶς μὴ ὑστερεῖσθαι ἐν μηδενὶ χα-
ρίσματι, ἀπεκδεχομένους τὴν ἀποκάλυψιν
τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
8 Ὃς καὶ βεβαιώσει ὑμᾶς ἕως τέλους ἀ-
νεγκλήτους ἐν τῇ ἡμέρᾳ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστοῦ.
9 Πιστὸς ὁ Θεὸς, δι' οὗ ἐκλήθητε εἰς κοινω-
νίαν τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.
10 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοὶ, διὰ
τοῦ ὀνόματος τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ,
ἵνα τὸ αὐτὸ λέγητε πάντες, καὶ μὴ ᾖ ἐν ὑ-
μῖν σχίσματα, ἦτε δὲ κατηρτισμένοι ἐν τῷ
αὐτῷ νοῒ, καὶ ἐν τῇ αὐτῇ γνώμῃ.
11 Ἐδηλώθη γάρ μοι περὶ ὑμῶν, ἀδελφοί
μου, ὑπὸ τῶν Χλόης, ὅτι ἔριδες ἐν ὑμῖν εἰσι.
12 Λέγω δὲ τοῦτο, ὅτι ἕκαστος ὑμῶν λέ-
γει· Ἐγὼ μέν εἰμι Παύλου, ἐγὼ δὲ Ἀπολ-
λὼ, ἐγὼ δὲ Κηφᾶ, ἐγὼ δὲ Χριστοῦ.
13 Μεμέρισται ὁ Χριστός; Μὴ Παῦλος
ἐσταυρώθη ὑπὲρ ὑμῶν, ἢ εἰς τὸ ὄνομα Παύ-
λου ἐβαπτίσθητε;
14 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ, ὅτι οὐδένα ὑμῶν
ἐβάπτισα, εἰ μὴ Κρίσπον καὶ Γάϊον.
15 Ἵνα μή τις εἴπῃ, ὅτι εἰς τὸ ἐμὸν ὄνο-
μα ἐβάπτισα.
16 Ἐβάπτισα δὲ καὶ τὸν Στεφανᾶ οἶκον·
λοιπὸν οὐκ οἶδα εἴ τινα ἄλλον ἐβάπτισα.
17 Οὐ γὰρ ἀπέστειλέ με Χριστὸς βαπτί-
ζειν, ἀλλ' εὐαγγελίζεσθαι· οὐκ ἐν σοφίᾳ λό-
γου, ἵνα μὴ κενωθῇ ὁ σταυρὸς τοῦ Χριστοῦ.

18 Ὁ λόγος γὰρ ὁ τοῦ σταυροῦ τοῖς μὲν ἀπολλυμένοις μωρία ἐστί, τοῖς δὲ σωζομένοις ἡμῖν δύναμις Θεοῦ ἐστι.

19 Γέγραπται γάρ· Ἀπολῶ τὴν σοφίαν τῶν σοφῶν, καὶ τὴν σύνεσιν τῶν συνετῶν ἀθετήσω.

20 Ποῦ σοφός; Ποῦ γραμματεύς; Ποῦ συζητητὴς τοῦ αἰῶνος τούτου; Οὐχὶ ἐμώρανεν ὁ Θεὸς τὴν σοφίαν τοῦ κόσμου τούτου;

21 Ἐπειδὴ γὰρ ἐν τῇ σοφίᾳ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἔγνω ὁ κόσμος διὰ τῆς σοφίας τὸν Θεόν, εὐδόκησεν ὁ Θεὸς διὰ τῆς μωρίας τοῦ κηρύγματος σῶσαι τοὺς πιστεύοντας.

22 Ἐπειδὴ καὶ Ἰουδαῖοι σημεῖον αἰτοῦσι, καὶ Ἕλληνες σοφίαν ζητοῦσιν.

23 Ἡμεῖς δὲ κηρύσσομεν Χριστὸν ἐσταυρωμένον, Ἰουδαίοις μὲν σκάνδαλον, Ἕλλησι δὲ μωρίαν.

24 Αὐτοῖς δὲ τοῖς κλητοῖς Ἰουδαίοις τε καὶ Ἕλλησι Χριστὸν Θεοῦ δύναμιν καὶ Θεοῦ σοφίαν.

25 Ὅτι τὸ μωρὸν τοῦ Θεοῦ, σοφώτερον τῶν ἀνθρώπων ἐστί· καὶ τὸ ἀσθενὲς τοῦ Θεοῦ, ἰσχυρότερον τῶν ἀνθρώπων ἐστί.

26 Βλέπετε γὰρ τὴν κλῆσιν ὑμῶν, ἀδελφοί, ὅτι οὐ πολλοὶ σοφοὶ κατὰ σάρκα, οὐ πολλοὶ δυνατοί, οὐ πολλοὶ εὐγενεῖς.

27 Ἀλλὰ τὰ μωρὰ τοῦ κόσμου ἐξελέξατο ὁ Θεός, ἵνα τοὺς σοφοὺς καταισχύνῃ, καὶ τὰ ἀσθενῆ τοῦ κόσμου ἐξελέξατο ὁ Θεός, ἵνα καταισχύνῃ τὰ ἰσχυρά.

28 Καὶ τὰ ἀγενῆ τοῦ κόσμου καὶ τὰ ἐξουθενημένα ἐξελέξατο ὁ Θεός, καὶ τὰ μὴ ὄντα, ἵνα τὰ ὄντα καταργήσῃ.

29 Ὅπως μὴ καυχήσηται πᾶσα σὰρξ ἐνώπιον αὐτοῦ.

30 Ἐξ αὐτοῦ δὲ ὑμεῖς ἐστε ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὃς ἐγενήθη ἡμῖν σοφία ἀπὸ Θεοῦ, δικαιοσύνη τε καὶ ἁγιασμὸς καὶ ἀπολύτρωσις.

31 Ἵνα, καθὼς γέγραπται· Ὁ καυχώμενος, ἐν Κυρίῳ καυχάσθω.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Β'. 2.

1 Κἀγὼ ἐλθὼν πρὸς ὑμᾶς, ἀδελφοί, ἦλθον οὐ καθ' ὑπεροχὴν λόγου ἢ σοφίας, καταγγέλλων ὑμῖν τὸ μαρτύριον τοῦ Θεοῦ.

2 Οὐ γὰρ ἔκρινα τοῦ εἰδέναι τι ἐν ὑμῖν, εἰ μὴ Ἰησοῦν Χριστὸν, καὶ τοῦτον ἐσταυρωμένον.

3 Καὶ ἐγὼ ἐν ἀσθενείᾳ, καὶ ἐν φόβῳ καὶ ἐν τρόμῳ πολλῷ ἐγενόμην πρὸς ὑμᾶς.

4 Καὶ ὁ λόγος μου καὶ τὸ κήρυγμά μου οὐκ ἐν πειθοῖς ἀνθρωπίνης σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν ἀποδείξει Πνεύματος καὶ δυνάμεως.

5 Ἵνα ἡ πίστις ὑμῶν μὴ ᾖ ἐν σοφίᾳ ἀνθρώπων, ἀλλ' ἐν δυνάμει Θεοῦ.

6 Σοφίαν δὲ λαλοῦμεν ἐν τοῖς τελείοις· σοφίαν δὲ οὐ τοῦ αἰῶνος τούτου, οὐδὲ τῶν ἀρχόντων τοῦ αἰῶνος τούτου τῶν καταργουμένων.

7 Ἀλλὰ λαλοῦμεν σοφίαν Θεοῦ ἐν μυστηρίῳ, τὴν ἀποκεκρυμμένην, ἣν προώρισεν ὁ Θεὸς πρὸ τῶν αἰώνων εἰς δόξαν ἡμῶν.

8 Ἣν οὐδεὶς τῶν ἀρχόντων τοῦ αἰῶνος τούτου ἔγνωκεν· εἰ γὰρ ἔγνωσαν, οὐκ ἂν τὸν Κύριον τῆς δόξης ἐσταύρωσαν.

9 Ἀλλὰ καθὼς γέγραπται· Ἃ ὀφθαλμὸς οὐκ εἶδε, καὶ οὖς οὐκ ἤκουσε, καὶ ἐπὶ καρδίαν ἀνθρώπου οὐκ ἀνέβη, ἃ ἡτοίμασεν ὁ Θεὸς τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν.

10 Ἡμῖν δὲ ὁ Θεὸς ἀπεκάλυψε διὰ τοῦ

Πνεύ-

Πνεύματος αὐτοῦ· τὸ γὰρ Πνεῦμα πάντα
ἐρευνᾷ, καὶ τὰ βάθη τοῦ Θεοῦ.
11 Τίς γὰρ οἶδεν ἀνθρώπων τὰ τοῦ ἀν-
θρώπου, εἰ μὴ τὸ Πνεῦμα τοῦ ἀνθρώπου τὸ ἐν
αὐτῷ; Οὕτω καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ οὐδεὶς οἶδεν, εἰ
μὴ τὸ Πνεῦμα τοῦ Θεοῦ.
12 Ἡμεῖς δὲ οὐ τὸ Πνεῦμα τοῦ κόσμου ἐλά-
βομεν, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ Θεοῦ, ἵνα
εἰδῶμεν τὰ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ χαρισθέντα ἡμῖν.
13 Ἃ καὶ λαλοῦμεν, οὐκ ἐν διδακτοῖς ἀν-
θρωπίνης σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν διδακτοῖς
Πνεύματος ἁγίου, πνευματικοῖς πνευματι-
κὰ συγκρίνοντες.
14 Ψυχικὸς δὲ ἄνθρωπος οὐ δέχεται τὰ
τοῦ Πνεύματος τοῦ Θεοῦ· μωρία γὰρ αὐτῷ ἐ-
στι, καὶ οὐ δύναται γνῶναι, ὅτι πνευματικῶς
ἀνακρίνεται.
15 Ὁ δὲ Πνευματικὸς ἀνακρίνει μὲν
πάντα, αὐτὸς δὲ ὑπ' οὐδενὸς ἀνακρίνεται.
16 Τίς γὰρ ἔγνω νοῦν Κυρίου, ὃς συμβι-
βάσει αὐτόν; Ἡμεῖς δὲ νοῦν Χριστοῦ ἔχομεν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΚΑὶ ἐγὼ, ἀδελφοὶ, οὐκ ἠδυνήθην
λαλῆσαι ὑμῖν ὡς πνευματικοῖς,
ἀλλ' ὡς σαρκικοῖς, ὡς νηπίοις ἐν Χριστῷ.
2 Γάλα ὑμᾶς ἐπότισα, καὶ οὐ βρῶμα· οὔ-
πω γὰρ ἠδύνασθε· ἀλλ' οὔτε ἔτι νῦν δύνασθε.
3 Ἔτι γὰρ σαρκικοί ἐστε· ὅπου γὰρ ἐν ὑμῖν
ζῆλος καὶ ἔρις καὶ διχοστασίαι, οὐχὶ σαρκικοί
ἐστε, καὶ κατὰ ἄνθρωπον περιπατεῖτε;
4 Ὅταν γὰρ λέγῃ τις· Ἐγὼ μέν εἰμι
Παύλου· ἕτερος δέ· Ἐγὼ Ἀπολλώ· οὐχὶ
σαρκικοί ἐστε;

5 Τίς ὖν ἐςι Παῦλος, τίς δὲ Ἀπολ-
λώς, ἀλλʹ ἢ διάκονοι δι' ὧν ἐπιςεύσατε, καὶ
ἑκάςῳ ὡς ὁ Κύριος ἔδωκεν;

6 Ἐγὼ ἐφύτευσα, Ἀπολλὼς ἐπότισεν·
ἀλλʹ ὁ Θεὸς ηὔξανεν.

7 Ὥςε ὔτε ὁ φυτεύων ἐςί τι, ὔτε ὁ πο-
τίζων, ἀλλʹ ὁ αὐξάνων Θεός.

8 Ὁ φυτεύων δὲ καὶ ὁ ποτίζων ἕν εἰσιν·
ἕκαςος δὲ τὸν ἴδιον μισθὸν λήψεται κατὰ τὸν
ἴδιον κόπον.

9 Θεῦ γάρ ἐσμεν συνεργοί· Θεῦ γεώρ-
γιον, Θεῦ οἰκοδομή ἐςε.

10 Κατὰ τὴν χάριν τῦ Θεῦ τὴν δοθεῖσάν
μοι, ὡς σοφὸς ἀρχιτέκτων θεμέλιον τέθει-
κα, ἄλλος δὲ ἐποικοδομεῖ· ἕκαςος δὲ βλε-
πέτω πῶς ἐποικοδομεῖ.

11 Θεμέλιον γὰρ ἄλλον ὐδεὶς δύναται
θεῖναι παρὰ τὸν κείμενον, ὅς ἐςιν Ἰησῦς
ὁ Χριςός.

12 Εἰ δέ τις ἐποικοδομεῖ ἐπὶ τὸν θεμέ-
λιον τῦτον, χρυσὸν, ἄργυρον, λίθυς τιμίυς,
ξύλα, χόρτον, καλάμην.

13 Ἑκάςυ τὸ ἔργον φανερὸν γενήσεται· ἡ
γὰρ ἡμέρα δηλώσει, ὅτι ἐν πυρὶ ἀποκαλύ-
πτεται· καὶ ἑκάςυ τὸ ἔργον ὁποῖόν ἐςι, τὸ
πῦρ δοκιμάσει.

14 Εἴ τινος τὸ ἔργον μένει ὃ ἐπῳκοδόμη-
σε, μισθὸν λήψεται.

15 Εἴ τινος τὸ ἔργον κατακαήσεται, ζη-
μιωθήσεται· αὐτὸς δὲ σωθήσεται, ὕτως δὲ
ὡς διὰ πυρός.

16 Οὐκ οἴδατε ὅτι ναὸς Θεῦ ἐςε, καὶ τὸ
Πνεῦμα τῦ Θεῦ οἰκεῖ ἐν ὑμῖν;

17 Εἴ τις τὸν ναὸν τῦ Θεῦ φθείρει, φθερεῖ
τῦτον

τοῦτον ὁ Θεός· ὁ γὰρ ναὸς τοῦ Θεοῦ ἅγιός ἐ-
στιν, οἵτινές ἐστε ὑμεῖς.
18 Μηδεὶς ἑαυτὸν ἐξαπατάτω· εἴ τις δο-
κεῖ σοφὸς εἶναι ἐν ὑμῖν ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ,
μωρὸς γενέσθω, ἵνα γένηται σοφός.
19 Ἡ γὰρ σοφία τοῦ κόσμου τούτου, μωρία
παρὰ τῷ Θεῷ ἐστι. γέγραπται γάρ· Ὁ δρασ-
σόμενος τοὺς σοφοὺς ἐν τῇ πανουργίᾳ αὐτῶν.
20 Καὶ πάλιν· Κύριος γινώσκει τοὺς δια-
λογισμοὺς τῶν σοφῶν, ὅτι εἰσὶ μάταιοι.
21 Ὥστε μηδεὶς καυχάσθω ἐν ἀνθρώποις·
πάντα γὰρ ὑμῶν ἐστιν.
22 Εἴτε Παῦλος, εἴτε Ἀπολλῶς, εἴ-
τε Κηφᾶς, εἴτε Κόσμος, εἴτε ζωὴ, εἴτε
θάνατος, εἴτε ἐνεστῶτα, εἴτε μέλλοντα·
πάντα ὑμῶν ἐστιν.
23 Ὑμεῖς δὲ Χριστοῦ, Χριστὸς δὲ Θεοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΟΥ'τως ἡμᾶς λογιζέσθω ἄνθρωπος,
ὡς ὑπηρέτας Χριστοῦ, καὶ οἰκονό-
μους μυστηρίων Θεοῦ.
2 Ὃ δὲ λοιπὸν, ζητεῖται ἐν τοῖς οἰκονό-
μοις, ἵνα πιστός τις εὑρεθῇ.
3 Ἐμοὶ δὲ εἰς ἐλάχιστόν ἐστιν ἵνα ὑφ' ὑ-
μῶν ἀνακριθῶ, ἢ ὑπὸ ἀνθρωπίνης ἡμέρας·
ἀλλ' οὐδὲ ἐμαυτὸν ἀνακρίνω.
4 Οὐδὲν γὰρ ἐμαυτῷ σύνοιδα· ἀλλ' οὐκ
ἐν τούτῳ δεδικαίωμαι· ὁ δὲ ἀνακρίνων με,
Κύριός ἐστιν.
5 Ὥστε μὴ πρὸ καιροῦ τι κρίνετε, ἕως ἂν
ἔλθῃ ὁ Κύριος· ὃς καὶ φωτίσει τὰ κρυπτὰ τοῦ
σκότους, καὶ φανερώσει τὰς βουλὰς τῶν καρδιῶν·
καὶ τότε ὁ ἔπαινος γενήσεται ἑκάστῳ ἀπὸ τοῦ Θεοῦ.

6 Ταῦ-

6 Ταῦτα δὲ, ἀδελφοὶ, μετεσχημάτισα εἰς ἐμαυτὸν καὶ Ἀπολλὼ δι' ὑμᾶς· ἵνα ἐν ἡμῖν μάθητε τὸ μὴ ὑπὲρ ὃ γέγραπται φρονεῖν, ἵνα μὴ εἷς ὑπὲρ τοῦ ἑνὸς φυσιοῦσθε κατὰ τοῦ ἑτέρου.

7 Τίς γάρ σε διακρίνει; Τί δὲ ἔχεις ὃ οὐκ ἔλαβες; Εἰ δὲ καὶ ἔλαβες, τί καυχᾶσαι ὡς μὴ λαβών;

8 Ἤδη κεκορεσμένοι ἐστὲ, ἤδη ἐπλουτήσατε, χωρὶς ἡμῶν ἐβασιλεύσατε· καὶ ὄφελόν γε ἐβασιλεύσατε· ἵνα καὶ ἡμεῖς ὑμῖν συμβασιλεύσωμεν.

9 Δοκῶ γὰρ ὅτι ὁ Θεὸς ἡμᾶς τοὺς ἀποστόλους ἐσχάτους ἀπέδειξεν ὡς ἐπιθανατίους, ὅτι θέατρον ἐγενήθημεν τῷ κόσμῳ καὶ ἀγγέλοις καὶ ἀνθρώποις.

10 Ἡμεῖς μωροὶ διὰ Χριστὸν, ὑμεῖς δὲ φρόνιμοι ἐν Χριστῷ· ἡμεῖς ἀσθενεῖς, ὑμεῖς δὲ ἰσχυροί· ὑμεῖς ἔνδοξοι, ἡμεῖς δὲ ἄτιμοι.

11 Ἄχρι τῆς ἄρτι ὥρας καὶ πεινῶμεν, καὶ διψῶμεν, καὶ γυμνητεύομεν, καὶ κολαφιζόμεθα, καὶ ἀστατοῦμεν·

12 Καὶ κοπιῶμεν, ἐργαζόμενοι ταῖς ἰδίαις χερσί· λοιδορούμενοι, εὐλογοῦμεν· διωκόμενοι, ἀνεχόμεθα.

13 Βλασφημούμενοι, παρακαλοῦμεν· ὡς περικαθάρματα τοῦ κόσμου ἐγενήθημεν, πάντων περίψημα ἕως ἄρτι.

14 Οὐκ ἐντρέπων ὑμᾶς γράφω ταῦτα, ἀλλ' ὡς τέκνα μου ἀγαπητὰ νουθετῶ.

15 Ἐὰν γὰρ μυρίους παιδαγωγοὺς ἔχητε ἐν Χριστῷ, ἀλλ' οὐ πολλοὺς πατέρας. ἐν γὰρ Χριστῷ Ἰησοῦ διὰ τοῦ εὐαγγελίου ἐγὼ ὑμᾶς ἐγέννησα.

16 Παρακαλῶ οὖν ὑμᾶς, μιμηταί μου γίνεσθε.

17 Διὰ τοῦτο ἔπεμψα ὑμῖν Τιμόθεον, ὅς
ἐςι τέκνον μου ἀγαπητὸν καὶ πιςὸν ἐν Κυρίῳ,
ὃς ὑμᾶς ἀναμνήσει τὰς ὁδούς μου τὰς ἐν Χρι-
ςῷ, καθὼς πανταχοῦ ἐν πάσῃ ἐκκλησίᾳ
διδάσκω.
18 Ὡς μὴ ἐρχομένου δέ μου πρὸς ὑμᾶς
ἐφυσιώθησάν τινες.
19 Ἐλεύσομαι δὲ ταχέως πρὸς ὑμᾶς ἐὰν
ὁ Κύριος θελήσῃ, καὶ γνώσομαι οὐ τὸν λόγον
τῶν πεφυσιωμένων, ἀλλὰ τὴν δύναμιν.
20 Οὐ γὰρ ἐν λόγῳ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ,
ἀλλ' ἐν δυνάμει.
21 Τί θέλετε; Ἐν ῥάβδῳ ἔλθω πρὸς ὑ-
μᾶς, ἢ ἐν ἀγάπῃ, Πνεύματί τε πρᾳότητος;

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 Ὅλως ἀκούεται ἐν ὑμῖν πορνεία,
καὶ τοιαύτη πορνεία, ἥτις οὐδὲ ἐν
τοῖς ἔθνεσιν ὀνομάζεται, ὥςε γυναῖκά τινα
τοῦ Πατρὸς ἔχειν.
2 Καὶ ὑμεῖς πεφυσιωμένοι ἐςέ, καὶ οὐχὶ
μᾶλλον ἐπενθήσατε, ἵνα ἐξαρθῇ ἐκ μέσου
ὑμῶν ὁ τὸ ἔργον τοῦτο ποιήσας;
3 Ἐγὼ μὲν γὰρ ὡς ἀπὼν τῷ σώματι,
παρὼν δὲ τῷ Πνεύματι, ἤδη κέκρικα ὡς
παρὼν τὸν οὕτω τοῦτο κατεργασάμενον,
4 Ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριςοῦ, συναχθέντων ὑμῶν καὶ τοῦ ἐμοῦ Πνεύ-
ματος, σὺν τῇ δυνάμει τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰη-
σοῦ Χριςοῦ,
5 Παραδοῦναι τὸν τοιοῦτον τῷ Σατανᾷ εἰς
ὄλεθρον τῆς σαρκὸς, ἵνα τὸ Πνεῦμα σωθῇ
ἐν τῇ ἡμέρᾳ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.
6 Οὐ καλὸν τὸ καύχημα ὑμῶν. οὐκ οἴδατε

ὅτι

ὅτι μικρὰ ζύμη ὅλον τὸ φύραμα ζυμοῖ;
7 Ἐκκαθάρατε οὖν τὴν παλαιὰν ζύμην,
ἵνα ἦτε νέον φύραμα, καθώς ἐστε ἄζυμοι· καὶ
γὰρ τὸ πάσχα ἡμῶν ὑπὲρ ὑμῶν ἐθύθη, Χριστός.
8 Ὥστε ἑορτάζωμεν, μὴ ἐν ζύμῃ παλαιᾷ,
μηδὲ ἐν ζύμῃ κακίας καὶ πονηρίας, ἀλλ' ἐν
ἀζύμοις εἰλικρινείας καὶ ἀληθείας.
9 Ἔγραψα ὑμῖν ἐν τῇ ἐπιστολῇ, μὴ συνα-
ναμίγνυσθαι πόρνοις.
10 Καὶ οὐ πάντως τοῖς πόρνοις τοῦ κόσμου
τούτου, ἢ τοῖς πλεονέκταις, ἢ ἅρπαξιν, ἢ εἰ-
δωλολάτραις. ἐπεὶ ὀφείλετε ἄρα ἐκ τοῦ κόσ-
μου ἐξελθεῖν.
11 Νυνὶ δὲ ἔγραψα ὑμῖν μὴ συναναμί-
γνυσθαι, ἐάν τις ἀδελφὸς ὀνομαζόμενος, ἢ
πόρνος, ἢ πλεονέκτης, ἢ εἰδωλολάτρης, ἢ
λοίδορος, ἢ μέθυσος, ἢ ἅρπαξ, τῷ τοιού-
τῳ μηδὲ συνεσθίειν.
12 Τί γάρ μοι καὶ τοὺς ἔξω κρίνειν; Οὐχὶ
τοὺς ἔσω ὑμεῖς κρίνετε;
13 Τοὺς δὲ ἔξω ὁ Θεὸς κρίνει. Καὶ ἐξαι-
ρεῖτε τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ς'. 6.

1 Τολμᾷ τις ὑμῶν, πρᾶγμα ἔχων
πρὸς τὸν ἕτερον, κρίνεσθαι ἐπὶ τῶν
ἀδίκων, καὶ οὐχὶ ἐπὶ τῶν ἁγίων;
2 Οὐκ οἴδατε ὅτι οἱ ἅγιοι τὸν κόσμον κρι-
νοῦσι; Καὶ εἰ ἐν ὑμῖν κρίνεται ὁ κόσμος,
ἀνάξιοί ἐστε κριτηρίων ἐλαχίστων;
3 Οὐκ οἴδατε ὅτι ἀγγέλους κρινοῦμεν;
μήτι γε βιωτικά;
4 Βιωτικὰ μὲν οὖν κριτήρια ἐὰν ἔχητε,
τοὺς ἐξουθενημένους ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, τούτους
καθίζετε.

5 Πρὸς

5 Πρὸς ἐντροπὴν ὑμῖν λέγω· οὕτως οὐκ ἔστιν
ἐν ὑμῖν σοφὸς οὐδὲ εἷς, ὃς δυνήσεται διακρῖ-
ναι ἀνὰ μέσον τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ;
6 Ἀλλὰ ἀδελφὸς μετὰ ἀδελφοῦ κρίνεται,
καὶ τοῦτο ἐπὶ ἀπίστων;
7 Ἤδη μὲν οὖν ὅλως ἥττημα ἐν ὑμῖν ἐστιν,
ὅτι κρίματα ἔχετε μεθ' ἑαυτῶν. διατί οὐχὶ
μᾶλλον ἀδικεῖσθε; διατί οὐχὶ μᾶλλον ἀπο-
στερεῖσθε;
8 Ἀλλὰ ὑμεῖς ἀδικεῖτε καὶ ἀποστερεῖτε,
καὶ ταῦτα ἀδελφούς.
9 Ἢ οὐκ οἴδατε ὅτι ἄδικοι βασιλείαν Θεοῦ
οὐ κληρονομήσουσι; Μὴ πλανᾶσθε, οὔτε πόρ-
νοι, οὔτε εἰδωλολάτραι, οὔτε μοιχοὶ, οὔτε
μαλακοὶ, οὔτε ἀρσενοκοῖται,
10 Οὔτε κλέπται, οὔτε πλεονέκται, οὔτε
μέθυσοι, οὐ λοίδοροι, οὐχ ἅρπαγες, βα-
σιλείαν Θεοῦ οὐ κληρονομήσουσι.
11 Καὶ ταῦτά τινες ἦτε· ἀλλὰ ἀπελούσα-
σθε, ἀλλὰ ἡγιάσθητε, ἀλλ' ἐδικαιώθητε ἐν
τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, καὶ ἐν τῷ Πνεύ-
ματι τοῦ Θεοῦ ἡμῶν.
12 Πάντα μοι ἔξεστιν, ἀλλ' οὐ πάντα συμ-
φέρει· πάντα μοι ἔξεστιν, ἀλλ' οὐκ ἐγὼ ἐξου-
σιασθήσομαι ὑπό τινος.
13 Τὰ βρώματα τῇ κοιλίᾳ, καὶ ἡ κοιλία τοῖς
βρώμασιν· ὁ δὲ Θεὸς καὶ ταύτην καὶ ταῦτα κα-
ταργήσει. τὸ δὲ σῶμα οὐ τῇ πορνείᾳ, ἀλλὰ
τῷ Κυρίῳ, καὶ ὁ Κύριος τῷ σώματι.
14 Ὁ δὲ Θεὸς καὶ τὸν Κύριον ἤγειρε, καὶ
ὑμᾶς ἐξεγερεῖ διὰ τῆς δυνάμεως αὐτοῦ.
15 Οὐκ οἴδατε, ὅτι τὰ σώματα ὑμῶν
μέλη Χριστοῦ ἐστιν; Ἄρα οὖν τὰ μέλη τοῦ Χρι-
στοῦ, ποιήσω πόρνης μέλη; Μὴ γένοιτο.

16 Ἢ

16 Ἢ οὐκ οἴδατε ὅτι ὁ κολλώμενος τῇ
πόρνῃ, ἓν σῶμά ἐστιν; Ἔσονται γάρ, φη-
σιν, οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν.
17 Ὁ δὲ κολλώμενος τῷ Κυρίῳ, ἓν
Πνεῦμά ἐστι.
18 Φεύγετε τὴν πορνείαν· πᾶν ἁμάρτη-
μα ὃ ἐὰν ποιήσῃ ἄνθρωπος, ἐκτὸς τοῦ σώ-
ματός ἐστιν· ὁ δὲ πορνεύων, εἰς τὸ ἴδιον
σῶμα ἁμαρτάνει.
19 Ἢ οὐκ οἴδατε, ὅτι τὸ σῶμα ὑμῶν,
ναὸς τοῦ ἐν ὑμῖν ἁγίου Πνεύματός ἐστιν, οὗ ἔ-
χετε ἀπὸ Θεοῦ; καὶ οὐκ ἐστὲ ἑαυτῶν;
20 Ἠγοράσθητε γὰρ τιμῆς· δοξάσατε δὴ
τὸν Θεὸν ἐν τῷ σώματι ὑμῶν, καὶ ἐν τῷ
Πνεύματι ὑμῶν, ἅτινά ἐστι τοῦ Θεοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ. 7.

1 Περὶ δὲ ὧν ἐγράψατέ μοι, καλὸν
ἀνθρώπῳ γυναικὸς μὴ ἅπτεσθαι.
2 Διὰ δὲ τὰς πορνείας ἕκαστος τὴν ἑαυ-
τοῦ γυναῖκα ἐχέτω, καὶ ἑκάστη τὸν ἴδιον ἄν-
δρα ἐχέτω.
3 Τῇ γυναικὶ ὁ ἀνὴρ τὴν ὀφειλομένην εὔνοιαν
ἀποδιδότω· ὁμοίως δὲ καὶ ἡ γυνὴ τῷ ἀνδρί.
4 Ἡ γυνὴ τοῦ ἰδίου σώματος οὐκ ἐξουσιά-
ζει, ἀλλ' ὁ ἀνήρ· ὁμοίως δὲ καὶ ὁ ἀνὴρ τοῦ
ἰδίου σώματος οὐκ ἐξουσιάζει, ἀλλ' ἡ γυνή.
5 Μὴ ἀποστερεῖτε ἀλλήλους, εἰ μή τι ἂν
ἐκ συμφώνου πρὸς καιρόν, ἵνα σχολάζητε τῇ
νηστείᾳ καὶ τῇ προσευχῇ· καὶ πάλιν ἐπὶ τὸ αὐ-
τὸ συνέρχεσθε, ἵνα μὴ πειράζῃ ὑμᾶς ὁ Σα-
τανᾶς διὰ τὴν ἀκρασίαν ὑμῶν.
6 Τοῦτο δὲ λέγω κατὰ συγγνώμην, οὐ
κατ' ἐπιταγήν.

7 Θέ-

7 Θέλω γὰρ πάντας ἀνθρώπους εἶναι ὡς καὶ ἐμαυτόν· ἀλλ' ἕκαστος ἴδιον χάρισμα ἔχει ἐκ Θεοῦ, ὃς μὲν οὕτως, ὃς δὲ οὕτως.

8 Λέγω δὲ τοῖς ἀγάμοις καὶ ταῖς χήραις, καλὸν αὐτοῖς ἐστιν ἐὰν μείνωσιν ὡς κἀγώ.

9 Εἰ δὲ οὐκ ἐγκρατεύονται, γαμησάτωσαν· κρεῖσσον γάρ ἐστι γαμῆσαι ἢ πυροῦσθαι.

10 Τοῖς δὲ γεγαμηκόσι παραγγέλλω οὐκ ἐγὼ, ἀλλ' ὁ Κύριος, γυναῖκα ἀπὸ ἀνδρὸς μὴ χωρισθῆναι.

11 Ἐὰν δὲ καὶ χωρισθῇ, μενέτω ἄγαμος, ἢ τῷ ἀνδρὶ καταλλαγήτω· καὶ ἄνδρα γυναῖκα μὴ ἀφιέναι.

12 Τοῖς δὲ λοιποῖς ἐγὼ λέγω, οὐχ ὁ Κύριος· Εἴ τις ἀδελφὸς γυναῖκα ἔχει ἄπιστον, καὶ αὐτὴ συνευδοκεῖ οἰκεῖν μετ' αὐτοῦ, μὴ ἀφιέτω αὐτήν.

13 Καὶ γυνὴ ἥτις ἔχει ἄνδρα ἄπιστον, καὶ αὐτὸς συνευδοκεῖ οἰκεῖν μετ' αὐτῆς, μὴ ἀφιέτω αὐτόν.

14 Ἡγίασται γὰρ ὁ ἀνὴρ ὁ ἄπιστος ἐν τῇ γυναικί· καὶ ἡγίασται ἡ γυνὴ ἡ ἄπιστος ἐν τῷ ἀνδρί· ἐπεὶ ἄρα τὰ τέκνα ὑμῶν ἀκάθαρτά ἐστι· νῦν δὲ ἅγιά ἐστιν.

15 Εἰ δὲ ὁ ἄπιστος χωρίζεται, χωριζέσθω. οὐ δεδούλωται ὁ ἀδελφὸς, ἢ ἡ ἀδελφὴ ἐν τοῖς τοιούτοις· ἐν δὲ εἰρήνῃ κέκληκεν ἡμᾶς ὁ Θεός.

16 Τί γὰρ οἶδας, γύναι, εἰ τὸν ἄνδρα σώσεις; Ἢ τί οἶδας, ἄνερ, εἰ τὴν γυναῖκα σώσεις;

17 Εἰ μὴ ἑκάστῳ ὡς ἐμέρισεν ὁ Θεὸς, ἕκαστον ὡς κέκληκεν ὁ Κύριος, οὕτω περιπατείτω, καὶ οὕτως ἐν ταῖς ἐκκλησίαις πάσαις διατάσσομαι.

18 Πε-

18 Περιτετμημένος τίς ἐκλήθη; Μὴ ἐπισπάσθω. ἐν ἀκροβυστίᾳ τίς ἐκλήθη; Μὴ περιτεμνέσθω.

19 Ἡ περιτομὴ οὐδέν ἐστι, καὶ ἡ ἀκροβυστία οὐδέν ἐστιν, ἀλλὰ τήρησις ἐντολῶν Θεοῦ.

20 Ἕκαστος ἐν τῇ κλήσει ᾗ ἐκλήθη, ἐν ταύτῃ μενέτω.

21 Δοῦλος ἐκλήθης; Μή σοι μελέτω· ἀλλ' εἰ καὶ δύνασαι ἐλεύθερος γενέσθαι, μᾶλλον χρῆσαι.

22 Ὁ γὰρ ἐν Κυρίῳ κληθεὶς δοῦλος, ἀπελεύθερος Κυρίου ἐστίν· ὁμοίως καὶ ὁ ἐλεύθερος κληθεὶς, δοῦλός ἐστι Χριστοῦ.

23 Τιμῆς ἠγοράσθητε· μὴ γίνεσθε δοῦλοι ἀνθρώπων.

24 Ἕκαστος ἐν ᾧ ἐκλήθη, ἀδελφοὶ, ἐν τούτῳ μενέτω παρὰ τῷ Θεῷ.

25 Περὶ δὲ τῶν παρθένων ἐπιταγὴν Κυρίου οὐκ ἔχω· γνώμην δὲ δίδωμι ὡς ἠλεημένος ὑπὸ Κυρίου πιστὸς εἶναι.

26 Νομίζω οὖν, τοῦτο καλὸν ὑπάρχειν διὰ τὴν ἐνεστῶσαν ἀνάγκην, ὅτι καλὸν ἀνθρώπῳ τὸ οὕτως εἶναι.

27 Δέδεσαι γυναικί; Μὴ ζήτει λύσιν· λέλυσαι ἀπὸ γυναικός; Μὴ ζήτει γυναῖκα.

28 Ἐὰν δὲ καὶ γήμῃς, οὐχ ἥμαρτες· καὶ ἐὰν γήμῃ ἡ παρθένος, οὐχ ἥμαρτε· θλῖψιν δὲ τῇ σαρκὶ ἕξουσιν οἱ τοιοῦτοι. ἐγὼ δὲ ὑμῶν φείδομαι.

29 Τοῦτο δέ φημι, ἀδελφοὶ, ὅτι ὁ καιρὸς συνεσταλμένος τὸ λοιπόν ἐστιν· ἵνα καὶ ἔχοντες γυναῖκας, ὡς μὴ ἔχοντες ὦσι.

30 Καὶ οἱ κλαίοντες, ὡς μὴ κλαίοντες· καὶ οἱ χαίροντες, ὡς μὴ χαίροντες·

καὶ

καὶ οἱ ἀγοράζοντες, ὡς μὴ κατέχοντες.

31 Καὶ οἱ χρώμενοι τῷ κόσμῳ τούτῳ, ὡς μὴ καταχρώμενοι. παράγει γὰρ τὸ σχῆμα τοῦ κόσμου τούτου.

32 Θέλω δὲ ὑμᾶς ἀμερίμνους εἶναι. ὁ ἄγαμος μεριμνᾷ τὰ τοῦ Κυρίου, πῶς ἀρέσει τῷ Κυρίῳ.

33 Ὁ δὲ γαμήσας μεριμνᾷ τὰ τοῦ κόσμου, πῶς ἀρέσει τῇ γυναικί.

34 Μεμέρισται ἡ γυνὴ καὶ ἡ παρθένος. ἡ ἄγαμος μεριμνᾷ τὰ τοῦ Κυρίου, ἵνα ᾖ ἁγία καὶ σώματι καὶ πνεύματι· ἡ δὲ γαμήσασα μεριμνᾷ τὰ τοῦ κόσμου, πῶς ἀρέσει τῷ ἀνδρί.

35 Τοῦτο δὲ πρὸς τὸ ὑμῶν αὐτῶν συμφέρον λέγω· οὐχ ἵνα βρόχον ὑμῖν ἐπιβάλω, ἀλλὰ πρὸς τὸ εὔσχημον καὶ εὐπρόσεδρον τῷ Κυρίῳ ἀπερισπάστως.

36 Εἰ δέ τις ἀσχημονεῖν ἐπὶ τὴν παρθένον αὐτοῦ νομίζει, ἐὰν ᾖ ὑπέρακμος, καὶ οὕτως ὀφείλει γίνεσθαι· ὃ θέλει ποιείτω, οὐχ ἁμαρτάνει· γαμείτωσαν.

37 Ὃς δὲ ἕστηκεν ἑδραῖος ἐν τῇ καρδίᾳ, μὴ ἔχων ἀνάγκην, ἐξουσίαν δὲ ἔχει περὶ τοῦ ἰδίου θελήματος, καὶ τοῦτο κέκρικεν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, τοῦ τηρεῖν τὴν ἑαυτοῦ παρθένον, καλῶς ποιεῖ.

38 Ὥστε καὶ ὁ ἐκγαμίζων, καλῶς ποιεῖ· ὁ δὲ μὴ ἐκγαμίζων, κρεῖσσον ποιεῖ.

39 Γυνὴ δέδεται νόμῳ ἐφ' ὅσον χρόνον ζῇ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς· ἐὰν δὲ κοιμηθῇ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, ἐλευθέρα ἐστὶν ᾧ θέλει γαμηθῆναι· μόνον ἐν Κυρίῳ.

40 Μακαριωτέρα δέ ἐστιν ἐὰν οὕτω μείνῃ, κατὰ τὴν ἐμὴν γνώμην· δοκῶ δὲ κἀγὼ Πνεῦμα Θεοῦ ἔχειν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

1 Περὶ δὲ τῶν εἰδωλοθύτων, οἴδαμεν
ὅτι πάντες γνῶσιν ἔχομεν· ἡ
γνῶσις φυσιοῖ, ἡ δὲ ἀγάπη οἰκοδομεῖ.
2 Εἰ δέ τις δοκεῖ εἰδέναι τι, οὐδέπω οὐ-
δὲν ἔγνωκε καθὼς δεῖ γνῶναι.
3 Εἰ δέ τις ἀγαπᾷ τὸν Θεὸν, οὗτος ἔγνω-
σται ὑπ' αὐτοῦ.
4 Περὶ τῆς βρώσεως οὖν τῶν εἰδωλοθύτων,
οἴδαμεν ὅτι οὐδὲν εἴδωλον ἐν κόσμῳ, καὶ ὅτι
οὐδεὶς Θεὸς ἕτερος εἰ μὴ εἷς.
5 Καὶ γὰρ εἴπερ εἰσὶ λεγόμενοι θεοὶ εἴτε
ἐν οὐρανῷ, εἴτε ἐπὶ τῆς γῆς· (ὥσπερ εἰσὶ
θεοὶ πολλοὶ, καὶ κύριοι πολλοί.)
6 Ἀλλ' ἡμῖν εἷς Θεὸς ὁ Πατὴρ, ἐξ οὗ τὰ
πάντα, καὶ ἡμεῖς εἰς αὐτόν· καὶ εἷς Κύριος
Ἰησοῦς Χριστὸς, δι' οὗ τὰ πάντα, καὶ ἡμεῖς
δι' αὐτοῦ.
7 Ἀλλ' οὐκ ἐν πᾶσιν ἡ γνῶσις· τινὲς δὲ
τῇ συνειδήσει τοῦ εἰδώλου ἕως ἄρτι ὡς εἰδω-
λόθυτον ἐσθίουσι, καὶ ἡ συνείδησις αὐτῶν ἀ-
σθενὴς οὖσα μολύνεται.
8 Βρῶμα δὲ ἡμᾶς οὐ παρίστησι τῷ Θεῷ·
οὔτε γὰρ ἐὰν φάγωμεν, περισσεύομεν· οὔτε
ἐὰν μὴ φάγωμεν, ὑστερούμεθα.
9 Βλέπετε δὲ μήπως ἡ ἐξουσία ὑμῶν αὕ-
τη πρόσκομμα γένηται τοῖς ἀσθενοῦσιν.
10 Ἐὰν γάρ τις ἴδῃ σε, τὸν ἔχοντα γνῶ-
σιν, ἐν εἰδωλείῳ κατακείμενον, οὐχὶ ἡ συνεί-
δησις αὐτοῦ ἀσθενοῦς ὄντος οἰκοδομηθήσεται
εἰς τὸ τὰ εἰδωλόθυτα ἐσθίειν;
11 Καὶ ἀπολεῖται ὁ ἀσθενῶν ἀδελφὸς ἐπὶ
τῇ σῇ γνώσει, δι' ὃν Χριστὸς ἀπέθανεν.

12 Οὐ-

12 Οὕτω δὲ ἁμαρτάνοντες εἰς τοὺς ἀδελ-
φοὺς, καὶ τύπτοντες αὐτῶν τὴν συνείδησιν ἀσθε-
νοῦσαν, εἰς Χριστὸν ἁμαρτάνετε.

13 Διόπερ εἰ βρῶμα σκανδαλίζει τὸν ἀ-
δελφόν μου, οὐ μὴ φάγω κρέα εἰς τὸν αἰῶνα,
ἵνα μὴ τὸν ἀδελφόν μου σκανδαλίσω.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Θ'. 9.

1 ΟΥ'κ εἰμὶ ἀπόστολος; Οὐκ εἰμὶ
ἐλεύθερος; Οὐχὶ Ἰησοῦν Χριστὸν
τὸν Κύριον ἡμῶν ἑώρακα; Οὐ τὸ ἔργον μου
ὑμεῖς ἐστε ἐν Κυρίῳ;

2 Εἰ ἄλλοις οὐκ εἰμὶ ἀπόστολος, ἀλλά γε
ὑμῖν εἰμι· ἡ γὰρ σφραγὶς τῆς ἐμῆς ἀποστολῆς
ὑμεῖς ἐστε ἐν Κυρίῳ.

3 Ἡ ἐμὴ ἀπολογία τοῖς ἐμὲ ἀνακρίνου-
σιν, αὕτη ἐστί.

4 Μὴ οὐκ ἔχομεν ἐξουσίαν φαγεῖν καὶ πιεῖν;

5 Μὴ οὐκ ἔχομεν ἐξουσίαν ἀδελφὴν γυναῖ-
κα περιάγειν, ὡς καὶ οἱ λοιποὶ Ἀπόστολοι, καὶ
οἱ ἀδελφοὶ τοῦ Κυρίου, καὶ Κηφᾶς;

6 Ἢ μόνος ἐγὼ καὶ Βαρνάβας οὐκ ἔχομεν
ἐξουσίαν τοῦ μὴ ἐργάζεσθαι;

7 Τίς στρατεύεται ἰδίοις ὀψωνίοις ποτέ;
Τίς φυτεύει ἀμπελῶνα, καὶ ἐκ τοῦ καρποῦ αὐ-
τοῦ οὐκ ἐσθίει; Ἢ τίς ποιμαίνει ποίμνην, καὶ
ἐκ τοῦ γάλακτος τῆς ποίμνης οὐκ ἐσθίει;

8 Μὴ κατὰ ἄνθρωπον ταῦτα λαλῶ; Ἢ
οὐχὶ καὶ ὁ νόμος ταῦτα λέγει;

9 Ἐν γὰρ τῷ Μωσέως νόμῳ γέγραπται·
Οὐ φιμώσεις βοῦν ἀλοῶντα. Μὴ τῶν βοῶν
μέλει τῷ Θεῷ;

10 Ἢ δι' ἡμᾶς πάντως λέγει; Δι' ἡμᾶς
γὰρ ἐγράφη, ὅτι ἐπ' ἐλπίδι ὀφείλει ὁ ἀρο-

ξιῶν ἀροτριᾷν· καὶ ὁ ἀλοῶν, τῆς ἐλπίδος αὐτοῦ μετέχειν ἐπ' ἐλπίδι.

11 Εἰ ἡμεῖς ὑμῖν τὰ πνευματικὰ ἐσπείραμεν, μέγα, εἰ ἡμεῖς ὑμῶν τὰ σαρκικὰ θερίσομεν;

12 Εἰ ἄλλοι τῆς ἐξουσίας ὑμῶν μετέχουσιν, οὐ μᾶλλον ἡμεῖς; Ἀλλ' οὐκ ἐχρησάμεθα τῇ ἐξουσίᾳ ταύτῃ· ἀλλὰ πάντα στέγομεν, ἵνα μὴ ἐγκοπήν τινα δῶμεν τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Χριστοῦ.

13 Οὐκ οἴδατε ὅτι οἱ τὰ ἱερὰ ἐργαζόμενοι, ἐκ τοῦ ἱεροῦ ἐσθίουσιν; Οἱ τῷ θυσιαστηρίῳ προσεδρεύοντες, τῷ θυσιαστηρίῳ συμμερίζονται;

14 Οὕτω καὶ ὁ Κύριος διέταξε τοῖς τὸ εὐαγγέλιον καταγγέλλουσιν, ἐκ τοῦ εὐαγγελίου ζῆν.

15 Ἐγὼ δὲ οὐδενὶ ἐχρησάμην τούτων· Οὐκ ἔγραψα δὲ ταῦτα ἵνα οὕτω γένηται ἐν ἐμοί· καλὸν γάρ μοι μᾶλλον ἀποθανεῖν ἢ τὸ καύχημά μου ἵνα τις κενώσῃ.

16 Ἐὰν γὰρ εὐαγγελίζωμαι, οὐκ ἔστι μοι καύχημα· ἀνάγκη γάρ μοι ἐπίκειται· οὐαὶ δέ μοί ἐστιν ἐὰν μὴ εὐαγγελίζωμαι.

17 Εἰ γὰρ ἑκὼν τοῦτο πράσσω, μισθὸν ἔχω· εἰ δὲ ἄκων, οἰκονομίαν πεπίστευμαι.

18 Τίς οὖν μοί ἐστιν ὁ μισθός; Ἵνα εὐαγγελιζόμενος ἀδάπανον θήσω τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ, εἰς τὸ μὴ καταχρήσασθαι τῇ ἐξουσίᾳ μου ἐν τῷ εὐαγγελίῳ.

19 Ἐλεύθερος γὰρ ὢν ἐκ πάντων, πᾶσιν ἐμαυτὸν ἐδούλωσα, ἵνα τοὺς πλείονας κερδήσω.

20 Καὶ ἐγενόμην τοῖς Ἰουδαίοις ὡς Ἰουδαῖος, ἵνα Ἰουδαίους κερδήσω· τοῖς ὑπὸ νόμον ὡς ὑπὸ νόμον, ἵνα τοὺς ὑπὸ νόμον κερδήσω.

21 Τοῖς

21 Τοῖς ἀνόμοις ὡς ἄνομος, (μὴ ὢν ἄνομος Θεῷ, ἀλλ' ἔννομος Χριστῷ) ἵνα κερδήσω ἀνόμους.

22 Ἐγενόμην τοῖς ἀσθενέσιν ὡς ἀσθενὴς, ἵνα τοὺς ἀσθενεῖς κερδήσω· τοῖς πᾶσι γέγονα τὰ πάντα, ἵνα πάντως τινὰς σώσω.

23 Τοῦτο δὲ ποιῶ διὰ τὸ εὐαγγέλιον, ἵνα συγκοινωνὸς αὐτοῦ γένωμαι.

24 Οὐκ οἴδατε, ὅτι οἱ ἐν σταδίῳ τρέχοντες, πάντες μὲν τρέχουσιν, εἷς δὲ λαμβάνει τὸ βραβεῖον; Οὕτω τρέχετε, ἵνα καταλάβητε.

25 Πᾶς δὲ ὁ ἀγωνιζόμενος, πάντα ἐγκρατεύεται, ἐκεῖνοι μὲν οὖν ἵνα φθαρτὸν στέφανον λάβωσιν, ἡμεῖς δὲ, ἄφθαρτον.

26 Ἐγὼ τοίνυν οὕτω τρέχω, ὡς οὐκ ἀδήλως· οὕτω πυκτεύω, ὡς οὐκ ἀέρα δέρων.

27 Ἀλλ' ὑποπιάζω μου τὸ σῶμα καὶ δουλαγωγῶ, μήπως ἄλλοις κηρύξας, αὐτὸς ἀδόκιμος γένωμαι.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ι. 10.

1 ΟΥ' θέλω δὲ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοὶ, ὅτι οἱ πατέρες ἡμῶν πάντες ὑπὸ τὴν νεφέλην ἦσαν· καὶ πάντες διὰ τῆς θαλάσσης διῆλθον.

2 Καὶ πάντες εἰς τὸν Μωϋσῆν ἐβαπτίσαντο ἐν τῇ νεφέλῃ καὶ ἐν τῇ θαλάσσῃ.

3 Καὶ πάντες τὸ αὐτὸ βρῶμα πνευματικὸν ἔφαγον.

4 Καὶ πάντες τὸ αὐτὸ πόμα πνευματικὸν ἔπιον· ἔπινον γὰρ ἐκ πνευματικῆς ἀκολουθούσης πέτρας· ἡ δὲ πέτρα ἦν ὁ Χριστός.

5 Ἀλλ' οὐκ ἐν τοῖς πλείοσιν αὐτῶν εὐδόκησεν ὁ Θεός· κατεστρώθησαν γὰρ ἐν τῇ ἐρήμῳ.

6 Ταῦτα δὲ τύποι ἡμῶν ἐγενήθησαν, εἰς
τὸ μὴ εἶναι ἡμᾶς ἐπιθυμητὰς κακῶν, καθὼς
κἀκεῖνοι ἐπεθύμησαν.
7 Μηδὲ εἰδωλολάτραι γίνεσθε, καθώς
τινες αὐτῶν· ὡς γέγραπται· Ἐκάθισεν ὁ
λαὸς φαγεῖν καὶ πιεῖν, καὶ ἀνέστησαν παίζειν.
8 Μηδὲ πορνεύωμεν, καθώς τινες αὐτῶν
ἐπόρνευσαν, καὶ ἔπεσον ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ εἰκοσι-
τρεῖς χιλιάδες.
9 Μηδὲ ἐκπειράζωμεν τὸν Χριστὸν, κα-
θὼς καί τινες αὐτῶν ἐπείρασαν, καὶ ὑπὸ τῶν
ὄφεων ἀπώλοντο.
10 Μηδὲ γογγύζετε, καθὼς καί τινες αὐ-
τῶν ἐγόγγυσαν, καὶ ἀπώλοντο ὑπὸ τοῦ ὀλοθρευτοῦ.
11 Ταῦτα δὲ πάντα τύποι συνέβαινον
ἐκείνοις· ἐγράφη δὲ πρὸς νουθεσίαν ἡμῶν,
εἰς οὓς τὰ τέλη τῶν αἰώνων κατήντησεν.
12 Ὥστε ὁ δοκῶν ἑστάναι, βλεπέτω μὴ
πέσῃ.
13 Πειρασμὸς ὑμᾶς οὐκ εἴληφεν εἰ μὴ ἀν-
θρώπινος· πιστὸς δὲ ὁ Θεὸς, ὃς οὐκ ἐάσει
ὑμᾶς πειρασθῆναι ὑπὲρ ὃ δύνασθε, ἀλλὰ
ποιήσει σὺν τῷ πειρασμῷ καὶ τὴν ἔκβασιν,
τοῦ δύνασθε ὑμᾶς ὑπενεγκεῖν.
14 Διόπερ, ἀγαπητοί μου, φεύγετε ἀπὸ
τῆς εἰδωλολατρείας.
15 Ὡς φρονίμοις λέγω· κρίνατε ὑμεῖς
ὅ φημι.
16 Τὸ ποτήριον τῆς εὐλογίας ὃ εὐλογοῦ-
μεν, οὐχὶ κοινωνία τοῦ αἵματος τοῦ Χριστοῦ ἐστι;
Τὸν ἄρτον ὃν κλῶμεν, οὐχὶ κοινωνία τοῦ σώ-
ματος τοῦ Χριστοῦ ἐστιν.
17 Ὅτι εἷς ἄρτος, ἓν σῶμα, οἱ πολλοί ἐσ-
μεν· οἱ γὰρ πάντες ἐκ τοῦ ἑνὸς ἄρτου μετέχομεν.

18 Βλέ-

18 Βλέπετε τὸν Ἰσραὴλ κατὰ σάρκα· οὐ-
χὶ οἱ ἐσθίοντες τὰς θυσίας, κοινωνοὶ τοῦ θυ-
σιαστηρίου εἰσί;
19 Τί οὖν φημι; ὅτι εἴδωλον τί ἐστιν; ἢ
ὅτι εἰδωλόθυτον τί ἐστιν;
20 Ἀλλ' ὅτι ἃ θύει τὰ ἔθνη, δαιμονίοις
θύει, καὶ οὐ Θεῷ. οὐ θέλω δὲ ὑμᾶς κοινω-
νοὺς τῶν δαιμονίων γίνεσθαι.
21 Οὐ δύνασθε ποτήριον Κυρίου πίνειν καὶ
ποτήριον δαιμονίων. οὐ δύνασθε τραπέζης Κυ-
ρίου μετέχειν, καὶ τραπέζης δαιμονίων.
22 Ἢ παραζηλοῦμεν τὸν Κύριον; Μὴ
ἰσχυρότεροι αὐτοῦ ἐσμεν;
23 Πάντα μοι ἔξεστιν, ἀλλ' οὐ πάντα συμ-
φέρει· πάντα μοι ἔξεστιν, ἀλλ' οὐ πάντα οἰ-
κοδομεῖ.
24 Μηδεὶς τὸ ἑαυτοῦ ζητείτω, ἀλλὰ τὸ τοῦ
ἑτέρου ἕκαστος.
25 Πᾶν τὸ ἐν μακέλλῳ πωλούμενον ἐσθίε-
τε, μηδὲν ἀνακρίνοντες διὰ τὴν συνείδησιν.
26 Τοῦ γὰρ Κυρίου ἡ γῆ καὶ τὸ πλήρωμα
αὐτῆς.
27 Εἰ δέ τις καλεῖ ὑμᾶς τῶν ἀπίστων,
καὶ θέλετε πορεύεσθαι, πᾶν τὸ παρατιθέμε-
νον ὑμῖν ἐσθίετε, μηδὲν ἀνακρίνοντες διὰ
τὴν συνείδησιν.
28 Ἐὰν δέ τις ὑμῖν εἴπῃ. Τοῦτο εἰδωλό-
θυτόν ἐστι, μὴ ἐσθίετε, δι' ἐκεῖνον τὸν μηνύ-
σαντα, καὶ τὴν συνείδησιν· τοῦ γὰρ Κυρίου ἡ
γῆ καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς.
29 Συνείδησιν δὲ λέγω, οὐχὶ τὴν ἑαυτοῦ,
ἀλλὰ τὴν τοῦ ἑτέρου. ἵνα τί γὰρ ἡ ἐλευθερία
μου κρίνεται ὑπὸ ἄλλης συνειδήσεως;
30 Εἰ δὲ ἐγὼ χάριτι μετέχω, τί βλασ-

 φη-

φημοῦμαι ὑπὲρ οὗ ἐγὼ εὐχαριστῶ;
31 Εἴτε οὖν ἐσθίετε, εἴτε πίνετε, εἴτε τι
ποιεῖτε, πάντα εἰς δόξαν Θεοῦ ποιεῖτε.
32 Ἀπρόσκοποι γίνεσθε καὶ Ἰουδαίοις καὶ
Ἕλλησι καὶ τῇ ἐκκλησίᾳ τοῦ Θεοῦ.
33 Καθὼς κἀγὼ πάντα πᾶσιν ἀρέσκω,
μὴ ζητῶν τὸ ἐμαυτοῦ συμφέρον, ἀλλὰ τὸ τῶν
πολλῶν, ἵνα σωθῶσι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

1 Μιμηταί μου γίνεσθε, καθὼς κἀ-
γὼ Χριστοῦ.
2 Ἐπαινῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοὶ, ὅτι πάν-
τα μου μέμνησθε, καὶ καθὼς παρέδωκα ὑμῖν,
τὰς παραδόσεις κατέχετε.
3 Θέλω δὲ ὑμᾶς εἰδέναι ὅτι παντὸς ἀνδρὸς
ἡ κεφαλὴ ὁ Χριστός ἐστι· κεφαλὴ δὲ γυναικὸς,
ὁ ἀνήρ· κεφαλὴ δὲ Χριστοῦ, ὁ Θεός.
4 Πᾶς ἀνὴρ προσευχόμενος ἢ προφητεύων,
κατὰ κεφαλῆς ἔχων, καταισχύνει τὴν κεφα-
λὴν αὐτοῦ.
5 Πᾶσα δὲ γυνὴ προσευχομένη ἢ προφη-
τεύουσα ἀκατακαλύπτῳ τῇ κεφαλῇ, καταισχύ-
νει τὴν κεφαλὴν ἑαυτῆς· ἓν γάρ ἐστι καὶ τὸ αὐ-
τὸ τῇ ἐξυρημένῃ.
6 Εἰ γὰρ οὐ κατακαλύπτεται γυνὴ, καὶ κει-
ράσθω· εἰ δὲ αἰσχρὸν γυναικὶ τὸ κείρασθαι ἢ
ξυρᾶσθαι, κατακαλυπτέσθω.
7 Ἀνὴρ μὲν γὰρ οὐκ ὀφείλει κατακαλύπτε-
σθαι τὴν κεφαλὴν, εἰκὼν καὶ δόξα Θεοῦ ὑπάρ-
χων· γυνὴ δὲ δόξα ἀνδρός ἐστιν.
8 Οὐ γάρ ἐστιν ἀνὴρ ἐκ γυναικὸς, ἀλλὰ
γυνὴ ἐξ ἀνδρός.
9 Καὶ γὰρ οὐκ ἐκτίσθη ἀνὴρ διὰ τὴν γυ-
ναῖκα, ἀλλὰ γυνὴ διὰ τὸν ἄνδρα.

10 Διὰ τοῦτο ὀφείλει ἡ γυνὴ ἐξουσίαν ἔχειν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς, διὰ τοὺς ἀγγέλους.

11 Πλὴν οὔτε ἀνὴρ χωρὶς γυναικός, οὔτε γυνὴ χωρὶς ἀνδρός, ἐν Κυρίῳ.

12 Ὥσπερ γὰρ ἡ γυνὴ ἐκ τοῦ ἀνδρός, οὕτω καὶ ὁ ἀνὴρ διὰ τῆς γυναικός· τὰ δὲ πάντα ἐκ τοῦ Θεοῦ.

13 Ἐν ὑμῖν αὐτοῖς κρίνατε, πρέπον ἐστὶ γυναῖκα ἀκατακάλυπτον τῷ Θεῷ προσεύχεσθαι;

14 Ἢ οὐδὲ αὐτὴ ἡ φύσις διδάσκει ὑμᾶς, ὅτι ἀνὴρ μὲν ἐὰν κομᾷ, ἀτιμία αὐτῷ ἐστι.

15 Γυνὴ δὲ ἐὰν κομᾷ, δόξα αὐτῇ ἐστιν, ὅτι ἡ κόμη ἀντὶ περιβολαίου δέδοται αὐτῇ.

16 Εἰ δέ τις δοκεῖ φιλόνεικος εἶναι, ἡμεῖς τοιαύτην συνήθειαν οὐκ ἔχομεν, οὐδὲ αἱ ἐκκλησίαι τοῦ Θεοῦ.

17 Τοῦτο δὲ παραγγέλλων οὐκ ἐπαινῶ, ὅτι οὐκ εἰς τὸ κρεῖττον, ἀλλ' εἰς τὸ ἧττον συνέρχεσθε.

18 Πρῶτον μὲν γὰρ συνερχομένων ὑμῶν ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, ἀκούω σχίσματα ἐν ὑμῖν ὑπάρχειν· καὶ μέρος τι πιστεύω.

19 Δεῖ γὰρ καὶ αἱρέσεις ἐν ὑμῖν εἶναι, ἵνα οἱ δόκιμοι φανεροὶ γένωνται ἐν ὑμῖν.

20 Συνερχομένων οὖν ὑμῶν ἐπὶ τὸ αὐτὸ οὐκ ἔστι Κυριακὸν δεῖπνον φαγεῖν.

21 Ἕκαστος γὰρ τὸ ἴδιον δεῖπνον προλαμβάνει ἐν τῷ φαγεῖν, καὶ ὃς μὲν πεινᾷ, ὃς δὲ μεθύει.

22 Μὴ γὰρ οἰκίας οὐκ ἔχετε εἰς τὸ ἐσθίειν καὶ πίνειν; Ἢ τῆς ἐκκλησίας τοῦ Θεοῦ καταφρονεῖτε, καὶ καταισχύνετε τοὺς μὴ ἔχοντας; Τί ὑμῖν εἴπω; ἐπαινέσω ὑμᾶς; Ἐν τούτῳ οὐκ ἐπαινῶ.

23 Ἐγὼ γὰρ παρέλαβον ἀπὸ τοῦ Κυρίου ὃ
καὶ παρέδωκα ὑμῖν, ὅτι ὁ Κύριος Ἰησοῦς ἐν
τῇ νυκτὶ ᾗ παρεδίδοτο, ἔλαβεν ἄρτον·
24 Καὶ εὐχαριστήσας ἔκλασε, καὶ εἶπε·
Λάβετε, φάγετε· τοῦτό μου ἐστὶ τὸ σῶμα τὸ
ὑπὲρ ὑμῶν κλώμενον· τοῦτο ποιεῖτε εἰς τὴν
ἐμὴν ἀνάμνησιν.
25 Ὡσαύτως καὶ τὸ ποτήριον, μετὰ τὸ δει-
πνῆσαι, λέγων· Τοῦτο τὸ ποτήριον, ἡ καινὴ
διαθήκη ἐστὶν ἐν τῷ ἐμῷ αἵματι· τοῦτο ποιεῖτε
ὁσάκις ἂν πίνητε, εἰς τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν.
26 Ὁσάκις γὰρ ἂν ἐσθίητε τὸν ἄρτον τοῦτον,
καὶ τὸ ποτήριον τοῦτο πίνητε, τὸν θάνατον τοῦ
Κυρίου καταγγέλλετε, ἄχρις οὗ ἂν ἔλθῃ.
27 Ὥστε ὃς ἂν ἐσθίῃ τὸν ἄρτον τοῦτον, ἢ πί-
νῃ τὸ ποτήριον τοῦ Κυρίου ἀναξίως, ἔνοχος
ἔσται τοῦ σώματος καὶ αἵματος τοῦ Κυρίου.
28 Δοκιμαζέτω δὲ ἄνθρωπος ἑαυτὸν, καὶ
οὕτως ἐκ τοῦ ἄρτου ἐσθιέτω, καὶ ἐκ τοῦ ποτηρίου
πινέτω.
29 Ὁ γὰρ ἐσθίων καὶ πίνων ἀναξίως, κρῖ-
μα ἑαυτῷ ἐσθίει καὶ πίνει, μὴ διακρίνων τὸ
σῶμα τοῦ Κυρίου.
30 Διὰ τοῦτο ἐν ὑμῖν πολλοὶ ἀσθενεῖς καὶ
ἄῤῥωστοι, καὶ κοιμῶνται ἱκανοί·
31 Εἰ γὰρ ἑαυτοὺς διεκρίνομεν, οὐκ ἂν
ἐκρινόμεθα.
32 Κρινόμενοι δὲ, ὑπὸ Κυρίου παιδευόμε-
θα, ἵνα μὴ σὺν τῷ κόσμῳ κατακριθῶμεν.
33 Ὥστε, ἀδελφοί μου, συνερχόμενοι εἰς
τὸ φαγεῖν, ἀλλήλους ἐκδέχεσθε.
34 Εἰ δέ τις πεινᾷ, ἐν οἴκῳ ἐσθιέτω,
ἵνα μὴ εἰς κρῖμα συνέρχησθε. Τὰ δὲ λοιπὰ,
ὡς ἂν ἔλθω, διατάξομαι·

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

1 ΠΕρὶ δὲ τῶν πνευματικῶν, ἀδελ-
φοὶ, οὐ θέλω ὑμᾶς ἀγνοεῖν.
2 Οἴδατε ὅτι ἔθνη ἦτε, πρὸς τὰ εἴδωλα
τὰ ἄφωνα, ὡς ἂν ἤγεσθε, ἀπαγόμενοι.
3 Διὸ γνωρίζω ὑμῖν ὅτι οὐδεὶς, ἐν Πνεύ-
ματι Θεοῦ λαλῶν, λέγει ἀνάθεμα Ἰησοῦν·
καὶ οὐδεὶς δύναται εἰπεῖν Κύριον Ἰησοῦν, εἰ
μὴ ἐν πνεύματι ἁγίῳ.
4 Διαιρέσεις δὲ χαρισμάτων εἰσὶ, τὸ δὲ
αὐτὸ Πνεῦμα.
5 Καὶ διαιρέσεις διακονιῶν εἰσι, καὶ ὁ αὐ-
τὸς Κύριος.
6 Καὶ διαιρέσεις ἐνεργημάτων εἰσὶν, ὁ
δὲ αὐτός ἐστι Θεὸς, ὁ ἐνεργῶν τὰ πάντα ἐν
πᾶσιν.
7 Ἑκάστῳ δὲ δίδοται ἡ φανέρωσις τοῦ
Πνεύματος πρὸς τὸ συμφέρον.
8 Ὧ μὲν γὰρ διὰ τοῦ Πνεύματος δίδοται
λόγος σοφίας, ἄλλῳ δὲ λόγος γνώσεως,
κατὰ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα.
9 Ἑτέρῳ δὲ πίστις, ἐν τῷ αὐτῷ Πνεύ-
ματι· ἄλλῳ δὲ χαρίσματα ἰαμάτων, ἐν
τῷ αὐτῷ Πνεύματι.
10 Ἄλλῳ δὲ ἐνεργήματα δυνάμεων, ἄλ-
λῳ δὲ προφητεία, ἄλλῳ δὲ διακρίσεις πνευ-
μάτων, ἑτέρῳ δὲ γένη γλωσσῶν, ἄλλῳ δὲ
ἑρμηνεία γλωσσῶν.
11 Πάντα δὲ ταῦτα ἐνεργεῖ τὸ ἓν καὶ τὸ αὐ-
τὸ Πνεῦμα, διαιροῦν ἰδίᾳ ἑκάστῳ καθὼς
βούλεται.
12 Καθάπερ γὰρ τὸ σῶμα ἕν ἐστι, καὶ μέ-
λη ἔχει πολλὰ, πάντα δὲ τὰ μέλη τοῦ σώμα-

τος τοῦ ἑνὸς, πολλὰ ὄντα, ἕν ἐστι σῶμα· οὕτω
καὶ ὁ Χριστός.
13 Καὶ γὰρ ἐν ἑνὶ Πνεύματι ἡμεῖς πάντες
εἰς ἓν σῶμα ἐβαπτίσθημεν, εἴτε Ἰουδαῖοι,
εἴτε Ἕλληνες, εἴτε δοῦλοι, εἴτε ἐλεύθεροι·
καὶ πάντες εἰς ἓν Πνεῦμα ἐποτίσθημεν.
14 Καὶ γὰρ τὸ σῶμα οὐκ ἔστιν ἓν μέλος,
ἀλλὰ πολλά·
15 Ἐὰν εἴπῃ ὁ πούς· Ὅτι οὐκ εἰμὶ χείρ,
οὐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ σώματος· οὐ παρὰ τοῦτο οὐκ ἔστιν
ἐκ τοῦ σώματος;
16 Καὶ ἐὰν εἴπῃ τὸ οὖς· Ὅτι οὐκ εἰμὶ ὀφ-
θαλμὸς, οὐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ σώματος· οὐ παρὰ
τοῦτο οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ σώματος;
17 Εἰ ὅλον τὸ σῶμα ὀφθαλμὸς, ποῦ ἡ
ἀκοή; Εἰ ὅλον ἀκοὴ, ποῦ ἡ ὄσφρησις;
18 Νυνὶ δὲ ὁ Θεὸς ἔθετο τὰ μέλη, ἓν ἕκα-
στον αὐτῶν ἐν τῷ σώματι, καθὼς ἠθέλησεν.
19 Εἰ δὲ ἦν τὰ πάντα ἓν μέλος, ποῦ τὸ
σῶμα;
20 Νῦν δὲ πολλὰ μὲν μέλη, ἓν δὲ σῶμα.
21 Οὐ δύναται δὲ ὀφθαλμὸς εἰπεῖν τῇ
χειρί· Χρείαν σου οὐκ ἔχω· ἢ πάλιν ἡ κεφαλὴ
τοῖς ποσί· Χρείαν ὑμῶν οὐκ ἔχω.
22 Ἀλλὰ πολλῷ μᾶλλον τὰ δοκοῦντα μέ-
λη τοῦ σώματος ἀσθενέστερα ὑπάρχειν, ἀναγ-
καῖά ἐστι.
23 Καὶ ἃ δοκοῦμεν ἀτιμότερα εἶναι τοῦ
σώματος, τούτοις τιμὴν περισσοτέραν περιτί-
θεμεν· καὶ τὰ ἀσχήμονα ἡμῶν εὐσχημοσύνην
περισσοτέραν ἔχει.
24 Τὰ δὲ εὐσχήμονα ἡμῶν οὐ χρείαν ἔχει·
ἀλλ' ὁ Θεὸς συνεκέρασε τὸ σῶμα, τῷ ὑστεροῦν-
τι περισσοτέραν δοὺς τιμήν.

25 Ἵνα

25 Ἵνα μὴ ᾖ σχίσμα ἐν τῷ σώματι, ἀλλὰ τὸ αὐτὸ ὑπὲρ ἀλλήλων μεριμνῶσι τὰ μέλη.

26 Καὶ εἴτε πάσχει ἓν μέλος, συμπάσχει πάντα τὰ μέλη· εἴτε δοξάζεται ἓν μέλος, συγχαίρει πάντα τὰ μέλη.

27 Ὑμεῖς δέ ἐστε σῶμα Χριστοῦ, καὶ μέλη ἐκ μέρους.

28 Καὶ οὓς μὲν ἔθετο ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ πρῶτον ἀποστόλους, δεύτερον προφήτας, τρίτον διδασκάλους, ἔπειτα δυνάμεις, εἶτα χαρίσματα ἰαμάτων, ἀντιλήψεις, κυβερνήσεις, γένη γλωσσῶν.

29 Μὴ πάντες ἀπόστολοι; μὴ πάντες προφῆται; μὴ πάντες διδάσκαλοι; μὴ πάντες δυνάμεις;

30 Μὴ πάντες χαρίσματα ἔχουσιν ἰαμάτων; μὴ πάντες γλώσσαις λαλοῦσι; μὴ πάντες διερμηνεύουσι;

31 Ζηλοῦτε δὲ τὰ χαρίσματα τὰ κρείττονα, καὶ ἔτι καθ᾽ ὑπερβολὴν ὁδὸν ὑμῖν δείκνυμι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

1 ἘΑν ταῖς γλώσσαις τῶν ἀνθρώπων λαλῶ καὶ τῶν ἀγγέλων, ἀγάπην δὲ μὴ ἔχω, γέγονα χαλκὸς ἠχῶν, ἢ κύμβαλον ἀλαλάζον.

2 Καὶ ἐὰν ἔχω προφητείαν, καὶ εἰδῶ τὰ μυστήρια πάντα καὶ πᾶσαν τὴν γνῶσιν, καὶ ἐὰν ἔχω πᾶσαν τὴν πίστιν, ὥστε ὄρη μεθιστάνειν, ἀγάπην δὲ μὴ ἔχω, οὐδέν εἰμι.

3 Καὶ ἐὰν ψωμίσω πάντα τὰ ὑπάρχοντά μου, καὶ ἐὰν παραδῶ τὸ σῶμά μου ἵνα καυθήσομαι, ἀγάπην δὲ μὴ ἔχω, οὐδὲν ὠφελοῦμαι.

4 Ἡ ἀγάπη μακροθυμεῖ, χρηστεύεται· ἡ
ἀγάπη οὐ ζηλοῖ· ἡ ἀγάπη οὐ περπερεύεται,
οὐ φυσιοῦται,
5 Οὐκ ἀσχημονεῖ, οὐ ζητεῖ τὰ ἑαυτῆς,
οὐ παροξύνεται, οὐ λογίζεται τὸ κακὸν,
6 Οὐ χαίρει ἐπὶ τῇ ἀδικίᾳ, συγχαίρει
δὲ τῇ ἀληθείᾳ.
7 Πάντα στέγει, πάντα πιστεύει, πάντα
ἐλπίζει, πάντα ὑπομένει.
8 Ἡ ἀγάπη οὐδέποτε ἐκπίπτει· εἴτε δὲ
προφητεῖαι καταργηθήσονται, εἴτε γλῶσσαι
παύσονται, εἴτε γνῶσις καταργηθήσεται.
9 Ἐκ μέρους γὰρ γινώσκομεν, καὶ ἐκ μέ-
ρους προφητεύομεν.
10 Ὅταν δὲ ἔλθῃ τὸ τέλειον, τότε τὸ ἐκ
μέρους καταργηθήσεται.
11 Ὅτε ἤμην νήπιος, ὡς νήπιος ἐλά-
λουν, ὡς νήπιος ἐφρόνουν, ὡς νήπιος ἐλογι-
ζόμην· ὅτε δὲ γέγονα ἀνὴρ, κατήργηκα τὰ
τοῦ νηπίου.
12 Βλέπομεν γὰρ ἄρτι δι᾽ ἐσόπτρου ἐν αἰ-
νίγματι, τότε δὲ πρόσωπον πρὸς πρόσωπον·
ἄρτι γινώσκω ἐκ μέρους, τότε δὲ ἐπιγνώσο-
μαι καθὼς καὶ ἐπεγνώσθην.
13 Νυνὶ δὲ μένει πίστις, ἐλπὶς, ἀγά-
πη, τὰ τρία ταῦτα· μείζων δὲ τούτων ἡ ἀγάπη.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΔ'. 14.

1 Διώκετε τὴν ἀγάπην, ζηλοῦτε δὲ
τὰ πνευματικά. μᾶλλον δὲ ἵνα
προφητεύητε.
2 Ὁ γὰρ λαλῶν γλώσσῃ, οὐκ ἀνθρώ-
ποις λαλεῖ, ἀλλὰ τῷ Θεῷ· οὐδεὶς γὰρ
ἀκούει, πνεύματι δὲ λαλεῖ μυστήρια.

3 Ὁ

3 Ὁ δὲ προφητεύων, ἀνθρώποις λαλεῖ
οἰκοδομὴν καὶ παράκλησιν καὶ παραμυθίαν.
4 Ὁ λαλῶν γλώσσῃ, ἑαυτὸν οἰκοδομεῖ·
ὁ δὲ προφητεύων, ἐκκλησίαν οἰκοδομεῖ.
5 Θέλω δὲ πάντας ὑμᾶς λαλεῖν γλώσ-
σαις, μᾶλλον δὲ ἵνα προφητεύητε. μείζων
γὰρ ὁ προφητεύων ἢ ὁ λαλῶν γλώσσαις, ἐκ-
τὸς εἰ μὴ διερμηνεύῃ, ἵνα ἡ ἐκκλησία οἰκο-
δομὴν λάβῃ.
6 Νυνὶ δὲ, ἀδελφοὶ, ἐὰν ἔλθω πρὸς ὑμᾶς
γλώσσαις λαλῶν, τί ὑμᾶς ὠφελήσω, ἐὰν
μὴ ὑμῖν λαλήσω, ἢ ἐν ἀποκαλύψει, ἢ ἐν
γνώσει, ἢ ἐν προφητείᾳ, ἢ ἐν διδαχῇ;
7 Ὅμως τὰ ἄψυχα φωνὴν διδόντα, εἴτε
αὐλὸς, εἴτε κιθάρα, ἐὰν διαστολὴν τοῖς φθόγ-
γοις μὴ δῷ, πῶς γνωσθήσεται τὸ αὐλούμε-
νον ἢ τὸ κιθαριζόμενον.
9 Καὶ γὰρ ἐὰν ἄδηλον φωνὴν σάλπιγξ δῷ,
τίς παρασκευάσεται εἰς πόλεμον;
9 Οὕτω καὶ ὑμεῖς διὰ τῆς γλώσσης ἐὰν μὴ
εὔσημον λόγον δῶτε, πῶς γνωσθήσεται τὸ
λαλούμενον; ἔσεσθε γὰρ εἰς ἀέρα λαλοῦντες.
10 Τοσαῦτα, εἰ τύχοι, γένη φωνῶν ἐστιν
ἐν κόσμῳ, καὶ οὐδὲν αὐτῶν ἄφωνον.
11 Ἐὰν οὖν μὴ εἰδῶ τὴν δύναμιν τῆς φω-
νῆς, ἔσομαι τῷ λαλοῦντι βάρβαρος· καὶ ὁ λα-
λῶν, ἐν ἐμοὶ βάρβαρος.
12 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ἐπεὶ ζηλωταί ἐστε πνευ-
μάτων, πρὸς τὴν οἰκοδομὴν τῆς ἐκκλησίας
ζητεῖτε ἵνα περισσεύητε.
13 Διόπερ ὁ λαλῶν γλώσσῃ, προσευ-
χέσθω ἵνα διερμηνεύῃ.
14 Ἐὰν γὰρ προσεύχωμαι γλώσσῃ, τὸ πνεῦ-
μά μου προσεύχεται ὁ δὲ νοῦς μου ἄκαρπός ἐστι.

15 Τί-

15 Τί οὖν ἐστι; Προσεύξομαι τῷ πνεύματι, προσεύξομαι δὲ καὶ τῷ νοΐ· ψαλῶ τῷ πνεύματι, ψαλῶ δὲ καὶ τῷ νοΐ.

16 Ἐπεὶ ἐὰν εὐλογήσῃς τῷ πνεύματι, ὁ ἀναπληρῶν τὸν τόπον τοῦ ἰδιώτου, πῶς ἐρεῖ τὸ ἀμὴν ἐπὶ τῇ σῇ εὐχαριστίᾳ; ἐπειδὴ τί λέγεις οὐκ οἶδε.

17 Σὺ μὲν γὰρ καλῶς εὐχαριστεῖς, ἀλλ' ὁ ἕτερος οὐκ οἰκοδομεῖται.

18 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου, πάντων ὑμῶν μᾶλλον γλώσσαις λαλῶν.

19 Ἀλλ' ἐν ἐκκλησίᾳ θέλω πέντε λόγους διὰ τοῦ νοός μου λαλῆσαι, ἵνα καὶ ἄλλους κατηχήσω, ἢ μυρίους λόγους ἐν γλώσσῃ.

20 Ἀδελφοί, μὴ παιδία γίνεσθε ταῖς φρεσίν· ἀλλὰ τῇ κακίᾳ νηπιάζετε, ταῖς δὲ φρεσὶ τέλειοι γίνεσθε.

21 Ἐν τῷ νόμῳ γέγραπται· Ὅτι ἐν ἑτερογλώσσοις, καὶ ἐν χείλεσιν ἑτέροις, λαλήσω τῷ λαῷ τούτῳ, καὶ οὐδ' οὕτως εἰσακούσονταί μου, λέγει Κύριος.

22 Ὥστε αἱ γλῶσσαι εἰς σημεῖόν εἰσιν, οὐ τοῖς πιστεύουσιν, ἀλλὰ τοῖς ἀπίστοις· ἡ δὲ προφητεία οὐ τοῖς ἀπίστοις, ἀλλὰ τοῖς πιστεύουσιν.

23 Ἐὰν οὖν συνέλθῃ ἡ ἐκκλησία ὅλη ἐπὶ τὸ αὐτὸ, καὶ πάντες γλώσσαις λαλῶσιν, εἰσέλθωσι δὲ ἰδιῶται, ἢ ἄπιστοι, οὐκ ἐροῦσιν ὅτι μαίνεσθε.

24 Ἐὰν δὲ πάντες προφητεύωσιν, εἰσέλθῃ δέ τις ἄπιστος, ἢ ἰδιώτης, ἐλέγχεται ὑπὸ πάντων, ἀνακρίνεται ὑπὸ πάντων.

25 Καὶ οὕτω τὰ κρυπτὰ τῆς καρδίας αὐτοῦ φανερὰ γίνεται· καὶ οὕτω πεσὼν ἐπὶ πρόσωπον, προσκυνήσει τῷ Θεῷ, ἀπαγγέλ-

γέλλων ὅτι ὁ Θεὸς ὄντως ἐν ὑμῖν ἐστι.

26 Τί οὖν ἐστιν, ἀδελφοί; Ὅταν συνέρχησθε ἕκαστος ὑμῶν ψαλμὸν ἔχει, διδαχὴν ἔχει, γλῶσσαν ἔχει, ἀποκάλυψιν ἔχει, ἑρμηνείαν ἔχει· πάντα πρὸς οἰκοδομὴν γενέσθω.

27 Εἴτε γλώσσῃ τις λαλεῖ, κατὰ δύο, ἢ τὸ πλεῖστον τρεῖς, καὶ ἀνὰ μέρος· καὶ εἷς διερμηνευέτω.

28 Ἐὰν δὲ μὴ ᾖ διερμηνευτὴς, σιγάτω ἐν ἐκκλησίᾳ· ἑαυτῷ δὲ λαλείτω καὶ τῷ Θεῷ.

29 Προφῆται δὲ δύο ἢ τρεῖς λαλείτωσαν, καὶ οἱ ἄλλοι διακρινέτωσαν.

30 Ἐὰν δὲ ἄλλῳ ἀποκαλυφθῇ καθημένῳ, ὁ πρῶτος σιγάτω.

31 Δύνασθε γὰρ καθ᾽ ἕνα πάντες προφητεύειν, ἵνα πάντες μανθάνωσι, καὶ πάντες παρακαλῶνται.

32 Καὶ πνεύματα προφητῶν προφήταις ὑποτάσσεται.

33 Οὐ γάρ ἐστιν ἀκαταστασίας ὁ Θεὸς, ἀλλ᾽ εἰρήνης, ὡς ἐν πάσαις ταῖς ἐκκλησίαις τῶν ἁγίων.

34 Αἱ γυναῖκες ὑμῶν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις σιγάτωσαν· οὐ γὰρ ἐπιτέτραπται αὐταῖς λαλεῖν, ἀλλ᾽ ὑποτάσσεσθαι, καθὼς καὶ ὁ νόμος λέγει.

35 Εἰ δέ τι μαθεῖν θέλουσιν, ἐν οἴκῳ τοὺς ἰδίους ἄνδρας ἐπερωτάτωσαν. αἰσχρὸν γάρ ἐστι γυναιξὶν ἐν ἐκκλησίᾳ λαλεῖν.

36 Ἢ ἀφ᾽ ὑμῶν ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ἐξῆλθεν; ἢ εἰς ὑμᾶς μόνους κατήντησεν;

37 Εἴ τις δοκεῖ προφήτης εἶναι, ἢ πνευματικός, ἐπιγινωσκέτω ἃ γράφω ὑμῖν, ὅτι τοῦ Κυρίου εἰσὶν ἐντολαί.

38 Εἰ δέ τις ἀγνοεῖ, ἀγνοείτω.

39 Ὥστε,

39 Ὥστε, ἀδελφοὶ, ζηλοῦτε τὸ προφητεύειν· καὶ τὸ λαλεῖν γλώσσαις μὴ κωλύετε.
40 Πάντα εὐσχημόνως καὶ κατὰ τάξιν γινέσθω.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΕ΄. 15.

1 ΓΝωρίζω δὲ ὑμῖν, ἀδελφοὶ, τὸ εὐαγγέλιον, ὃ εὐηγγελισάμην ὑμῖν, ὃ καὶ παρελάβετε, ἐν ᾧ καὶ ἑστήκατε·
2 Δι᾽ οὗ καὶ σώζεσθε, τίνι λόγῳ εὐηγγελισάμην ὑμῖν εἰ κατέχετε· ἐκτὸς εἰ μὴ εἰκῇ ἐπιστεύσατε.
3 Παρέδωκα γὰρ ὑμῖν ἐν πρώτοις ὃ καὶ παρέλαβον, ὅτι Χριστὸς ἀπέθανεν ὑπὲρ τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν, κατὰ τὰς γραφάς.
4 Καὶ ὅτι ἐτάφη, καὶ ὅτι ἐγήγερται τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ, κατὰ τὰς γραφάς.
5 Καὶ ὅτι ὤφθη Κηφᾷ, εἶτα τοῖς δώδεκα.
6 Ἔπειτα ὤφθη ἐπάνω πεντακοσίοις ἀδελφοῖς ἐφάπαξ, ἐξ ὧν οἱ πλείους μένουσιν ἕως ἄρτι, τινὲς δὲ καὶ ἐκοιμήθησαν.
7 Ἔπειτα ὤφθη Ἰακώβῳ· εἶτα τοῖς ἀποστόλοις πᾶσιν.
8 Ἔσχατον δὲ πάντων, ὡσπερεὶ τῷ ἐκτρώματι, ὤφθη κἀμοί.
9 Ἐγὼ γάρ εἰμι ὁ ἐλάχιστος τῶν ἀποστόλων· ὃς οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς καλεῖσθαι ἀπόστολος, διότι ἐδίωξα τὴν ἐκκλησίαν τοῦ Θεοῦ.
10 Χάριτι δὲ Θεοῦ εἰμι ὅ εἰμι· καὶ ἡ χάρις αὐτοῦ ἡ εἰς ἐμὲ, οὐ κενὴ ἐγενήθη, ἀλλὰ περισσότερον αὐτῶν πάντων ἐκοπίασα. οὐκ ἐγὼ δὲ, ἀλλ᾽ ἡ χάρις τοῦ Θεοῦ ἡ σὺν ἐμοί.

11 Εἰ-

11 Εἴτε οὖν ἐγὼ, εἴτε ἐκεῖνοι, οὕτω κηρύσσομεν, καὶ οὕτως ἐπιστεύσατε.
12 Εἰ δὲ Χριστὸς κηρύσσεται ὅτι ἐκ νεκρῶν ἐγήγερται, πῶς λέγουσί τινες ἐν ὑμῖν, ὅτι ἀνάστασις νεκρῶν οὐκ ἔστιν;
13 Εἰ δὲ ἀνάστασις νεκρῶν οὐκ ἔστιν, οὐδὲ Χριστὸς ἐγήγερται.
14 Εἰ δὲ Χριστὸς οὐκ ἐγήγερται, κενὸν ἄρα τὸ κήρυγμα ὑμῶν, κενὴ δὲ καὶ ἡ πίστις ὑμῶν.
15 Εὑρισκόμεθα δὲ καὶ ψευδομάρτυρες τοῦ Θεοῦ· ὅτι ἐμαρτυρήσαμεν κατὰ τοῦ Θεοῦ ὅτι ἤγειρε τὸν Χριστόν· ὃν οὐκ ἤγειρεν, εἴπερ ἄρα νεκροὶ οὐκ ἐγείρονται.
16 Εἰ γὰρ νεκροὶ οὐκ ἐγείρονται, οὐδὲ Χριστὸς ἐγήγερται.
17 Εἰ δὲ Χριστὸς οὐκ ἐγήγερται, ματαία ἡ πίστις ὑμῶν· ἔτι ἐστὲ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν.
18 Ἄρα καὶ οἱ κοιμηθέντες ἐν Χριστῷ, ἀπώλοντο.
19 Εἰ ἐν τῇ ζωῇ ταύτῃ ἠλπικότες ἐσμὲν ἐν Χριστῷ μόνον, ἐλεεινότεροι πάντων ἀνθρώπων ἐσμέν.
20 Νυνὶ δὲ, Χριστὸς ἐγήγερται ἐκ νεκρῶν· ἀπαρχὴ τῶν κεκοιμημένων ἐγένετο.
21 Ἐπειδὴ γὰρ δι' ἀνθρώπου ὁ θάνατος, καὶ δι' ἀνθρώπου ἀνάστασις νεκρῶν.
22 Ὥσπερ γὰρ ἐν τῷ Ἀδὰμ πάντες ἀποθνήσκουσιν, οὕτω καὶ ἐν τῷ Χριστῷ πάντες ζωοποιηθήσονται.
23 Ἕκαστος δὲ ἐν τῷ ἰδίῳ τάγματι· ἀπαρχὴ Χριστὸς, ἔπειτα οἱ τοῦ Χριστοῦ, ἐν τῇ παρουσίᾳ αὐτοῦ.
24 Εἶτα τὸ τέλος, ὅταν παραδῷ τὴν βα-

βασιλείαν τῷ Θεῷ καὶ πατρί· ὅταν καταρ-
γήσῃ πᾶσαν ἀρχὴν καὶ πᾶσαν ἐξουσίαν καὶ
δύναμιν.
25 Δεῖ γὰρ αὐτὸν βασιλεύειν ἄχρις οὗ ἂν
θῇ πάντας τοὺς ἐχθροὺς ὑπὸ τοὺς πόδας αὐτοῦ.
26 Ἔσχατος ἐχθρὸς καταργεῖται ὁ θά-
νατος.
27 Πάντα γὰρ ὑπέταξεν ὑπὸ τοὺς πόδας
αὐτοῦ. Ὅταν δὲ εἴπῃ ὅτι πάντα ὑποτέτακ-
ται, δῆλον ὅτι ἐκτὸς τοῦ ὑποτάξαντος αὐτῷ
τὰ πάντα.
28 Ὅταν δὲ ὑποταγῇ αὐτῷ τὰ πάντα,
τότε καὶ αὐτὸς ὁ Υἱὸς ὑποταγήσεται τῷ ὑπο-
τάξαντι αὐτῷ τὰ πάντα, ἵνα ᾖ ὁ Θεὸς τὰ
πάντα ἐν πᾶσι.
29 Ἐπεὶ τί ποιήσουσιν οἱ βαπτιζόμενοι
ὑπὲρ τῶν νεκρῶν, εἰ ὅλως νεκροὶ οὐκ ἐγείρονται;
τί καὶ βαπτίζονται ὑπὲρ τῶν νεκρῶν;
30 Τί καὶ ἡμεῖς κινδυνεύομεν πᾶσαν
ὥραν;
31 Καθ' ἡμέραν ἀποθνήσκω, νὴ τὴν
ὑμετέραν καύχησιν, ἣν ἔχω ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ
τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.
32 Εἰ κατὰ ἄνθρωπον ἐθηριομάχησα ἐν
Ἐφέσῳ, τί μοι τὸ ὄφελος, εἰ νεκροὶ οὐκ ἐγεί-
ρονται; Φάγωμεν καὶ πίωμεν· αὔριον γὰρ
ἀποθνήσκομεν.
33 Μὴ πλανᾶσθε· Φθείρουσιν ἤθη χρηστὰ
ὁμιλίαι κακαί.
34 Ἐκνήψατε δικαίως, καὶ μὴ ἁμαρτάνε-
τε· ἀγνωσίαν γὰρ Θεοῦ τινες ἔχουσι· πρὸς ἐν-
τροπὴν ὑμῖν λέγω.
35 Ἀλλ' ἐρεῖ τις· Πῶς ἐγείρονται οἱ νε-
κροί; ποίῳ δὲ σώματι ἔρχονται;

36 Ἄφρον, σὺ ὃ σπείρεις οὐ ζωοποιεῖται, ἐὰν μὴ ἀποθάνῃ.

37 Καὶ ὃ σπείρεις, οὐ τὸ σῶμα τὸ γενησόμενον σπείρεις, ἀλλὰ γυμνὸν κόκκον, εἰ τύχοι, σίτου, ἤ τινος τῶν λοιπῶν.

38 Ὁ δὲ Θεὸς αὐτῷ δίδωσι σῶμα, καθὼς ἠθέλησε, καὶ ἑκάστῳ τῶν σπερμάτων τὸ ἴδιον σῶμα.

39 Οὐ πᾶσα σὰρξ, ἡ αὐτὴ σάρξ, ἀλλὰ ἄλλη μὲν σὰρξ ἀνθρώπων, ἄλλη δὲ σὰρξ κτηνῶν, ἄλλη δὲ ἰχθύων, ἄλλη δὲ πτηνῶν.

40 Καὶ σώματα ἐπουράνια, καὶ σώματα ἐπίγεια· ἀλλ᾽ ἑτέρα μὲν ἡ τῶν ἐπουρανίων δόξα, ἑτέρα δὲ ἡ τῶν ἐπιγείων.

41 Ἄλλη δόξα ἡλίου, καὶ ἄλλη δόξα σελήνης, καὶ ἄλλη δόξα ἀστέρων· ἀστὴρ γὰρ ἀστέρος διαφέρει ἐν δόξῃ.

42 Οὕτω καὶ ἡ ἀνάστασις τῶν νεκρῶν· σπείρεται ἐν φθορᾷ, ἐγείρεται ἐν ἀφθαρσίᾳ.

43 Σπείρεται ἐν ἀτιμίᾳ, ἐγείρεται ἐν δόξῃ. σπείρεται ἐν ἀσθενείᾳ, ἐγείρεται ἐν δυνάμει.

44 Σπείρεται σῶμα ψυχικόν, ἐγείρεται σῶμα πνευματικόν. ἔστι σῶμα ψυχικόν, καὶ ἔστι σῶμα πνευματικόν.

45 Οὕτω καὶ γέγραπται· Ἐγένετο ὁ πρῶτος ἄνθρωπος Ἀδὰμ εἰς ψυχὴν ζῶσαν· ὁ ἔσχατος Ἀδὰμ εἰς πνεῦμα ζωοποιοῦν.

46 Ἀλλ᾽ οὐ πρῶτον τὸ πνευματικόν, ἀλλὰ τὸ ψυχικόν, ἔπειτα τὸ πνευματικόν.

47 Ὁ πρῶτος ἄνθρωπος ἐκ γῆς, χοϊκός· ὁ δεύτερος ἄνθρωπος, ὁ Κύριος ἐξ οὐρανοῦ.

48 Οἷος ὁ χοϊκός, τοιοῦτοι καὶ οἱ χοϊκοί· καὶ οἷος ὁ ἐπουράνιος, τοιοῦτοι καὶ οἱ ἐπουράνιοι.

49 Καὶ

49 Καὶ καθὼς ἐφορέσαμεν τὴν εἰκόνα τοῦ
χοϊκοῦ, φορέσομεν καὶ τὴν εἰκόνα τοῦ ἐπουρανίου.

50 Τοῦτο δέ φημι, ἀδελφοὶ, ὅτι σὰρξ καὶ
αἷμα βασιλείαν Θεοῦ κληρονομῆσαι οὐ δύναν-
ται, οὐδὲ ἡ φθορὰ τὴν ἀφθαρσίαν κληρονομεῖ.

51 Ἰδοὺ, μυστήριον ὑμῖν λέγω· Πάντες
μὲν οὐ κοιμηθησόμεθα, πάντες δὲ ἀλλα-
γησόμεθα.

52 Ἐν ἀτόμῳ, ἐν ῥιπῇ ὀφθαλμοῦ, ἐν τῇ
ἐσχάτῃ σάλπιγγι, (σαλπίσει γὰρ) καὶ οἱ
νεκροὶ ἐγερθήσονται ἄφθαρτοι, καὶ ἡμᾶς ἀλ-
λαγησόμεθα.

53 Δεῖ γὰρ τὸ φθαρτὸν τοῦτο ἐνδύσασθαι
ἀφθαρσίαν, καὶ τὸ θνητὸν τοῦτο ἐνδύσασθαι
ἀθανασίαν.

54 Ὅταν δὲ τὸ φθαρτὸν τοῦτο ἐνδύσηται ἀ-
φθαρσίαν, καὶ τὸ θνητὸν τοῦτο ἐνδύσηται ἀθα-
νασίαν, τότε γενήσεται ὁ λόγος ὁ γεγραμμέ-
νος. Κατεπόθη ὁ θάνατος εἰς νῖκος.

55 Ποῦ σου, θάνατε, τὸ κέντρον; Ποῦ σου,
ᾅδη, τὸ νῖκος;

56 Τὸ δὲ κέντρον τοῦ θανάτου, ἡ ἁμαρτία·
ἡ δὲ δύναμις τῆς ἁμαρτίας, ὁ νόμος.

57 Τῷ δὲ Θεῷ χάρις τῷ διδόντι ἡμῖν τὸ
νῖκος διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

58 Ὥστε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοὶ, ἑδραῖοι
γίνεσθε, ἀμετακίνητοι, περισσεύοντες ἐν τῷ
ἔργῳ τοῦ Κυρίου πάντοτε, εἰδότες ὅτι ὁ κόπος
ὑμῶν οὐκ ἔστι κενὸς ἐν Κυρίῳ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ιϛ'. 16.

1 Περὶ δὲ τῆς λογίας τῆς εἰς τοὺς ἁ-
γίους, ὥσπερ διέταξα ταῖς ἐκκλη-
σίαις τῆς Γαλατίας, οὕτω καὶ ὑμεῖς ποιή-
σατε.

2 Κα-

2 Κατὰ μίαν σαββάτων ἕκαστος ὑμῶν παρ᾽
ἑαυτῷ τιθέτω, θησαυρίζων ὅ, τι ἂν εὐοδῶται·
ἵνα μὴ ὅταν ἔλθω, τότε λογίαι γίνωνται.
3 Ὅταν δὲ παραγένωμαι, οὓς ἐὰν δοκι-
μάσητε δι᾽ ἐπιστολῶν, τούτους πέμψω ἀπενεγ-
κεῖν τὴν χάριν ὑμῶν εἰς Ἱερουσαλήμ.
4 Ἐὰν δὲ ᾖ ἄξιον τοῦ κἀμὲ πορεύεσθαι,
σὺν ἐμοὶ πορεύσονται.
5 Ἐλεύσομαι δὲ πρὸς ὑμᾶς ὅταν Μακε-
δονίαν διέλθω· (Μακεδονίαν γὰρ διέρχομαι.)
6 Πρὸς ὑμᾶς δὲ τυχὸν παραμενῶ, ἢ καὶ
παραχειμάσω, ἵνα ὑμεῖς με προπέμψητε οὗ
ἐὰν πορεύωμαι.
7 Οὐ θέλω γὰρ ὑμᾶς ἄρτι ἐν παρόδῳ
ἰδεῖν· ἐλπίζω δὲ χρόνον τινὰ ἐπιμεῖναι πρὸς
ὑμᾶς, ἐὰν ὁ Κύριος ἐπιτρέπῃ.
8 Ἐπιμενῶ δὲ ἐν Ἐφέσῳ ἕως τῆς πεντηκοστῆς.
9 Θύρα γάρ μοι ἀνέῳγε μεγάλη καὶ ἐνερ-
γής, καὶ ἀντικείμενοι πολλοί.
10 Ἐὰν δὲ ἔλθῃ Τιμόθεος, βλέπετε
ἵνα ἀφόβως γένηται πρὸς ὑμᾶς· τὸ γὰρ ἔργον
Κυρίου ἐργάζεται ὡς καὶ ἐγώ.
11 Μή τις οὖν αὐτὸν ἐξουθενήσῃ. προπέμ-
ψατε δὲ αὐτὸν ἐν εἰρήνῃ, ἵνα ἔλθῃ πρός με·
ἐκδέχομαι γὰρ αὐτὸν μετὰ τῶν ἀδελφῶν.
12 Περὶ δὲ Ἀπολλὼ τοῦ ἀδελφοῦ, πολλὰ
παρεκάλεσα αὐτὸν, ἵνα ἔλθῃ πρὸς ὑμᾶς μετὰ
τῶν ἀδελφῶν· καὶ πάντως οὐκ ἦν θέλημα ἵνα
νῦν ἔλθῃ. ἐλεύσεται δὲ ὅταν εὐκαιρήσῃ.
13 Γρηγορεῖτε, στήκετε ἐν τῇ πίστει, ἀν-
δρίζεσθε, κραταιοῦσθε.
14 Πάντα ὑμῶν ἐν ἀγάπῃ γινέσθω.
15 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί· οἴδατε τὴν
οἰκίαν Στεφανᾶ, ὅτι ἐστὶν ἀπαρχὴ τῆς Ἀχαΐας,

καὶ εἰς διακονίαν τοῖς ἁγίοις ἔταξαν ἑαυτούς.
16 Ἵνα καὶ ὑμεῖς ὑποτάσσησθε τοῖς τοιού-
τοις, καὶ παντὶ τῷ συνεργοῦντι, καὶ κοπιῶντι.
17 Χαίρω δὲ ἐπὶ τῇ παρουσίᾳ Στεφανᾶ
καὶ Φουρτουνάτου καὶ Ἀχαϊκοῦ, ὅτι τὸ ὑμῶν ὑστέ-
ρημα οὗτοι ἀνεπλήρωσαν.
18 Ἀνέπαυσαν γὰρ τὸ ἐμὸν πνεῦμα καὶ τὸ
ὑμῶν· ἐπιγινώσκετε οὖν τοὺς τοιούτους.
19 Ἀσπάζονται ὑμᾶς αἱ ἐκκλησίαι τῆς
Ἀσίας· Ἀσπάζονται ὑμᾶς ἐν Κυρίῳ πολλὰ
Ἀκύλας καὶ Πρίσκιλλα, σὺν τῇ κατ' οἶκον
αὐτῶν ἐκκλησίᾳ.
20 Ἀσπάζονται ὑμᾶς οἱ ἀδελφοὶ πάν-
τες· Ἀσπάσασθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι
ἁγίῳ.
21 Ὁ ἀσπασμὸς τῇ ἐμῇ χειρὶ Παύλου.
22 Εἴ τις οὐ φιλεῖ τὸν Κύριον Ἰησοῦν Χρι-
στόν, ἤτω ἀνάθεμα, μαρὰν ἀθά.
23 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ μεθ'
ὑμῶν.
24 Ἡ ἀγάπη μου μετὰ πάντων ὑμῶν ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ. Ἀμήν.

Πρὸς Κορινθίους πρώτη ἐγράφη ἀπὸ Φιλίππων διὰ Στεφανᾶ, καὶ Φουρτουνάτου, καὶ Ἀχαϊκοῦ, καὶ Τιμοθέου.

ΠΑΥ-

ΠΑΥ'ΛΟΥ τοῦ Α'ΠΟΣΤΟ'ΛΟΥ Η' ΠΡΟ'Σ ΚΟΡΙΝΘΙ'ΟΥΣ Ε'ΠΙΣΤΟΛΗ', Β'.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑΥ͂ΛΟΣ Α'πόςολος Ι'ησοῦ
Χριςοῦ, διὰ θελήματος Θεοῦ,
καὶ Τιμόθεος ὁ ἀδελφός, τῇ
ἐκκλησίᾳ τοῦ Θεοῦ τῇ οὔσῃ ἐν Κορίνθῳ, σὺν
τοῖς ἁγίοις πᾶσι τοῖς οὖσιν ἐν ὅλῃ τῇ Α'-
χαΐᾳ·
2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς
ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ι'ησοῦ Χριςοῦ.
3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς καὶ πατὴρ τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ι'ησοῦ Χριςοῦ, ὁ πατὴρ τῶν οἰκτιρμῶν,
καὶ Θεὸς πάσης παρακλήσεως.
4 Ο' παρακαλῶν ἡμᾶς ἐπὶ πάσῃ τῇ θλί-
ψει ἡμῶν, εἰς τὸ δύνασθαι ἡμᾶς παρακαλεῖν
τοὺς ἐν πάσῃ θλίψει, διὰ τῆς παρακλήσεως
ἧς παρακαλούμεθα αὐτοὶ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ.
5 Ο'τι καθὼς περισσεύει τὰ παθήματα τοῦ
Χριςοῦ εἰς ἡμᾶς, οὕτω διὰ Χριςοῦ περισσεύει καὶ
ἡ παράκλησις ἡμῶν.
6 Εἴτε δὲ θλιβόμεθα, ὑπὲρ τῆς ὑμῶν
παρακλήσεως καὶ σωτηρίας, τῆς ἐνεργουμένης
ἐν ὑπομονῇ τῶν αὐτῶν παθημάτων ὧν καὶ ἡμεῖς
πάσχομεν· εἴτε παρακαλούμεθα, ὑπὲρ τῆς
ὑμῶν παρακλήσεως καὶ σωτηρίας καὶ ἡ ἐλπὶς
ὑμῶν βεβαία ὑπὲρ ἡμῶν.
7 Εἰδότες ὅτι ὥσπερ κοινωνοί ἐςε τῶν πα-
θημάτων, οὕτω καὶ τῆς παρακλήσεως.
8 Οὐ γὰρ θέλομεν ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελ-

φοί,

ὑπὲρ τῆς θλίψεως ἡμῶν τῆς γενομένης ἡμῖν ἐν τῇ Ἀσίᾳ, ὅτι καθ' ὑπερβολὴν ἐβαρήθημεν ὑπὲρ δύναμιν, ὥστε ἐξαπορηθῆναι ἡμᾶς καὶ τοῦ ζῆν.

9 Ἀλλὰ αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς τὸ ἀπόκριμα τοῦ θανάτου ἐσχήκαμεν, ἵνα μὴ πεποιθότες ὦμεν ἐφ' ἑαυτοῖς, ἀλλ' ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ ἐγείροντι τοὺς νεκρούς.

10 Ὃς ἐκ τηλικούτου θανάτου ἐρρύσατο ἡμᾶς, καὶ ῥύεται· εἰς ὃν ἠλπίκαμεν, ὅτι καὶ ἔτι ῥύσεται.

11 Συνυπουργούντων καὶ ὑμῶν ὑπὲρ ὑμῶν τῇ δεήσει, ἵνα ἐκ πολλῶν προσώπων τὸ εἰς ἡμᾶς χάρισμα διὰ πολλῶν εὐχαριστηθῇ ὑπὲρ ἡμῶν.

12 Ἡ γὰρ καύχησις ἡμῶν αὕτη ἐστί, τὸ μαρτύριον τῆς συνειδήσεως ἡμῶν, ὅτι ἐν ἁπλότητι καὶ εἰλικρινείᾳ Θεοῦ, οὐκ ἐν σοφίᾳ σαρκικῇ, ἀλλ' ἐν χάριτι Θεοῦ ἀνεστράφημεν ἐν τῷ κόσμῳ, περισσοτέρως δὲ πρὸς ὑμᾶς.

13 Οὐ γὰρ ἄλλα γράφομεν ὑμῖν, ἀλλ' ἢ ἃ ἀναγινώσκετε, ἢ καὶ ἐπιγινώσκετε, ἐλπίζω δὲ ὅτι καὶ ἕως τέλους ἐπιγνώσεσθε.

14 Καθὼς δὲ ἐπέγνωτε ὑμᾶς ἀπὸ μέρους, ὅτι καύχημα ὑμῶν ἐσμεν, καθάπερ καὶ ὑμεῖς ἡμῶν, ἐν τῇ ἡμέρᾳ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

15 Καὶ ταύτῃ τῇ πεποιθήσει ἐβουλόμην πρὸς ὑμᾶς ἐλθεῖν πρότερον, ἵνα δευτέραν χάριν ἔχητε.

16 Καὶ δι' ὑμῶν διελθεῖν εἰς Μακεδονίαν, καὶ πάλιν ἀπὸ Μακεδονίας ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς, καὶ ὑφ' ὑμῶν προπεμφθῆναι εἰς τὴν Ἰουδαίαν.

17 Τοῦτο οὖν βουλευόμενος, μή τι ἄρα τῇ

ἐλα-

ἐλαφρείᾳ ἐχρησάμην; ἢ ἃ βουλεύομαι, κατὰ
σάρκα βουλεύομαι; ἵνα ᾖ παρ' ἐμοὶ τὸ ναὶ
ναὶ, καὶ τὸ οὒ οὔ;
18 Πιστὸς δὲ ὁ Θεὸς, ὅτι ὁ λόγος ἡμῶν
ὁ πρὸς ὑμᾶς οὐκ ἐγένετο ναὶ καὶ οὔ.
19 Ὁ γὰρ τοῦ Θεοῦ Υἱὸς Ἰησοῦς Χριστὸς ὁ
ἐν ὑμῖν δι' ἡμῶν κηρυχθεὶς, δι' ἐμοῦ καὶ Σι-
λουανοῦ καὶ Τιμοθέου οὐκ ἐγένετο ναὶ καὶ οὔ, ἀλ-
λὰ ναὶ ἐν αὐτῷ γέγονεν.
20 (Ὅσαι γὰρ ἐπαγγελίαι Θεοῦ, ἐν αὐ-
τῷ τὸ ναὶ, καὶ ἐν αὐτῷ τὸ ἀμήν) τῷ Θεῷ
πρὸς δόξαν δι' ἡμῶν.
21 Ὁ δὲ βεβαιῶν ἡμᾶς σὺν ὑμῖν εἰς Χρι-
στὸν, καὶ χρίσας ἡμᾶς, Θεὸς,
22 Ὁ καὶ σφραγισάμενος ἡμᾶς, καὶ δοὺς
τὸν ἀῤῥαβῶνα τοῦ Πνεύματος ἐν ταῖς καρ-
δίαις ἡμῶν.
23 Ἐγὼ δὲ μάρτυρα τὸν Θεὸν ἐπικαλοῦμαι
ἐπὶ τὴν ἐμὴν ψυχὴν, ὅτι φειδόμενος ὑμῶν,
οὐκέτι ἦλθον εἰς Κόρινθον.
24 Οὐχ ὅτι κυριεύομεν ὑμῶν τῆς πίστεως,
ἀλλὰ συνεργοί ἐσμεν τῆς χαρᾶς ὑμῶν· τῇ
γὰρ πίστει ἑστήκατε.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 Ἔκρινα δὲ ἐμαυτῷ τοῦτο, τὸ μὴ πά-
λιν ἐλθεῖν ἐν λύπῃ πρὸς ὑμᾶς.
2 Εἰ γὰρ ἐγὼ λυπῶ ὑμᾶς, καὶ τίς ἐστιν ὁ
εὐφραίνων με, εἰ μὴ ὁ λυπούμενος ἐξ ἐμοῦ;
3 Καὶ ἔγραψα ὑμῖν τοῦτο αὐτὸ, ἵνα μὴ
ἐλθὼν λύπην ἔχω ἀφ' ὧν ἔδει με χαίρειν·
πεποιθὼς ἐπὶ πάντας ὑμᾶς, ὅτι ἡ ἐμὴ χα-
ρὰ, πάντων ὑμῶν ἐστιν.
4 Ἐκ γὰρ πολλῆς θλίψεως καὶ συνοχῆς

καρδίας ἔγραψα ὑμῖν διὰ πολλῶν δακρύων,
οὐχ ἵνα λυπηθῆτε, ἀλλὰ τὴν ἀγάπην ἵνα
γνῶτε ἣν ἔχω περισσοτέρως εἰς ὑμᾶς.
5 Εἰ δέ τις λελύπηκεν, οὐκ ἐμὲ λελύ-
πηκεν, ἀλλ' ἀπὸ μέρους, ἵνα μὴ ἐπιβαρῶ
πάντας ὑμᾶς.
6 Ἱκανὸν τῷ τοιούτῳ ἡ ἐπιτιμία αὕτη ἡ
ὑπὸ τῶν πλειόνων.
7 Ὥστε τοὐναντίον μᾶλλον ὑμᾶς χαρίσα-
σθαι, καὶ παρακαλέσαι, μήπως τῇ περισσο-
τέρᾳ λύπῃ καταποθῇ ὁ τοιοῦτος.
8 Διὸ παρακαλῶ ὑμᾶς κυρῶσαι εἰς αὐ-
τὸν ἀγάπην.
9 Εἰς τοῦτο γὰρ καὶ ἔγραψα, ἵνα γνῶ τὴν
δοκιμὴν ὑμῶν, εἰ εἰς πάντα ὑπήκοοί ἐστε.
10 Ὧ δέ τι χαρίζεσθε, καὶ ἐγώ· καὶ γὰρ
ἐγὼ εἴ τι κεχάρισμαι, ᾧ κεχάρισμαι, δι'
ὑμᾶς, ἐν προσώπῳ Χριστοῦ, ἵνα μὴ πλεονεκ-
τηθῶμεν ὑπὸ τοῦ Σατανᾶ.
11 Οὐ γὰρ αὐτοῦ τὰ νοήματα ἀγνοοῦμεν.
12 Ἐλθὼν δὲ εἰς τὴν Τρωάδα εἰς τὸ
εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ, καὶ θύρας μοι ἀνεῳγ-
μένης ἐν Κυρίῳ, οὐκ ἔσχηκα ἄνεσιν τῷ Πνεύ-
ματί μου, τῷ μὴ εὑρεῖν με Τίτον τὸν ἀ-
δελφόν μου·
13 Ἀλλὰ ἀποταξάμενος αὐτοῖς, ἐξῆλ-
θον εἰς Μακεδονίαν.
14 Τῷ δὲ Θεῷ χάρις τῷ πάντοτε θριαμ-
βεύοντι ἡμᾶς ἐν τῷ Χριστῷ, καὶ τὴν ὀσμὴν
τῆς γνώσεως αὐτοῦ φανεροῦντι δι' ἡμῶν ἐν παν-
τὶ τόπῳ.
15 Ὅτι Χριστοῦ εὐωδία ἐσμὲν τῷ Θεῷ ἐν
τοῖς σωζομένοις καὶ ἐν τοῖς ἀπολλυμένοις.
16 Οἷς μέν, ὀσμὴ θανάτου εἰς θάνατον·
οἷς

οἷς δὲ, ὀσμὴ ζωῆς εἰς ζωήν· καὶ πρὸς ταῦ-
τα τίς ἱκανός;
17 Οὐ γάρ ἐσμεν, ὡς οἱ πολλοὶ, καπη-
λεύοντες τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀλλ᾽ ὡς ἐξ εἰλι-
κρινείας, ἀλλ᾽ ὡς ἐκ Θεοῦ, κατενώπιον τοῦ
Θεοῦ, ἐν Χριστῷ λαλοῦμεν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Α'Ρχόμεθα πάλιν ἑαυτοὺς συνιστά-
νειν; Εἰ μὴ χρῄζομεν, ὥς τινες,
συστατικῶν ἐπιστολῶν πρὸς ὑμᾶς, ἢ ἐξ ὑμῶν
συστατικῶν;
2 Ἡ ἐπιστολὴ ἡμῶν ὑμεῖς ἐστε, ἐγγεγραμ-
μένη ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν, γινωσκομένη καὶ
ἀναγινωσκομένη ὑπὸ πάντων ἀνθρώπων.
3 Φανερούμενοι ὅτι ἐστὲ ἐπιστολὴ Χριστοῦ
διακονηθεῖσα ὑφ᾽ ἡμῶν, ἐγγεγραμμένη οὐ
μέλανι, ἀλλὰ Πνεύματι Θεοῦ ζῶντος, οὐκ
ἐν πλαξὶ λιθίναις, ἀλλ᾽ ἐν πλαξὶ καρ-
δίας σαρκίναις.
4 Πεποίθησιν δὲ τοιαύτην ἔχομεν διὰ τοῦ
Χριστοῦ πρὸς τὸν Θεόν.
5 Οὐχ ὅτι ἱκανοί ἐσμεν ἀφ᾽ ἑαυτῶν λογί-
σασθαί τι, ὡς ἐξ ἑαυτῶν, ἀλλ᾽ ἡ ἱκανότης
ἡμῶν ἐκ τοῦ Θεοῦ.
6 Ὃς καὶ ἱκάνωσεν ἡμᾶς διακόνους καινῆς
διαθήκης, οὐ γράμματος, ἀλλὰ Πνεύματος·
τὸ γὰρ γράμμα ἀποκτείνει, τὸ δὲ Πνεῦ-
μα ζωοποιεῖ.
7 Εἰ δὲ ἡ διακονία τοῦ θανάτου ἐν γράμμα-
σιν, ἐντετυπωμένη ἐν λίθοις, ἐγενήθη ἐν
δόξῃ, ὥστε μὴ δύνασθαι ἀτενίσαι τοὺς Υἱοὺς
Ἰσραὴλ εἰς τὸ πρόσωπον Μωσέως, διὰ τὴν
δόξαν τοῦ προσώπου αὐτοῦ, τὴν καταργ[ουμένην]

8 Πῶς οὐχὶ μᾶλλον ἡ διακονία τοῦ Πνεύματος ἔσαι ἐν δόξῃ;

9 Εἰ γὰρ ἡ διακονία τῆς κατακρίσεως, δόξα, πολλῷ μᾶλλον περισσεύει ἡ διακονία τῆς δικαιοσύνης ἐν δόξῃ.

10 Καὶ γὰρ οὐδὲ δεδόξασαι τὸ δεδοξασμένον, ἐν τούτῳ τῷ μέρει, ἕνεκεν τῆς ὑπερβαλλούσης δόξης.

11 Εἰ γὰρ τὸ καταργούμενον διὰ δόξης, πολλῷ μᾶλλον τὸ μένον, ἐν δόξῃ.

12 Ἔχοντες οὖν τοιαύτην ἐλπίδα, πολλῇ παῤῥησίᾳ χρώμεθα.

13 Καὶ οὐ καθάπερ Μωσῆς ἐτίθει κάλυμμα ἐπὶ τὸ πρόσωπον ἑαυτοῦ, πρὸς τὸ μὴ ἀτενίσαι τοὺς Υἱοὺς Ἰσραὴλ εἰς τὸ τέλος τοῦ καταργουμένου.

14 Ἀλλ' ἐπωρώθη τὰ νοήματα αὐτῶν. ἄχει γὰρ τῆς σήμερον τὸ αὐτὸ κάλυμμα ἐπὶ τῇ ἀναγνώσει τῆς παλαιᾶς διαθήκης μένει, μὴ ἀνακαλυπτόμενον, ὅ, τι ἐν Χριςῷ καταργεῖται.

15 Ἀλλ' ἕως σήμερον, ἡνίκα ἀναγινώσκεται Μωσῆς, κάλυμμα ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτῶν κεῖται.

16 Ἡνίκα δ' ἂν ἐπιςρέψῃ πρὸς Κύριον, περιαιρεῖται τὸ κάλυμμα.

17 Ὁ δὲ Κύριος τὸ Πνεῦμά ἐστιν· οὗ δὲ τὸ Πνεῦμα Κυρίου, ἐκεῖ ἐλευθερία.

18 Ἡμεῖς δὲ πάντες ἀνακεκαλυμμένῳ προσώπῳ τὴν δόξαν Κυρίου κατοπτριζόμενοι τὴν αὐτὴν εἰκόνα μεταμορφούμεθα ἀπὸ δόξης εἰς δόξαν, καθάπερ ἀπὸ Κυρίου Πνεύματος.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΔΙὰ τοῦτο ἔχοντες τὴν διακονίαν ταύ-
την, καθὼς ἠλεήθημεν, οὐκ
ἐκκακοῦμεν.
2 Ἀλλ' ἀπειπάμεθα τὰ κρυπτὰ τῆς αἰ-
σχύνης, μὴ περιπατοῦντες ἐν πανουργίᾳ, μη-
δὲ δολοῦντες τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τῇ φανε-
ρώσει τῆς ἀληθείας συνιστῶντες ἑαυτοὺς πρὸς
πᾶσαν συνείδησιν ἀνθρώπων, ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.
3 Εἰ δὲ καὶ ἔστι κεκαλυμμένον τὸ εὐαγγέ-
λιον ἡμῶν, ἐν τοῖς ἀπολλυμένοις ἐστὶ κεκα-
λυμμένον.
4 Ἐν οἷς ὁ Θεὸς τοῦ αἰῶνος τούτου ἐτύφλωσε
τὰ νοήματα τῶν ἀπίστων, εἰς τὸ μὴ αὐγάσαι
αὐτοῖς τὸν φωτισμὸν τοῦ εὐαγγελίου τῆς δόξης
τοῦ Χριστοῦ, ὅς ἐστιν εἰκὼν τοῦ Θεοῦ.
5 Οὐ γὰρ ἑαυτοὺς κηρύσσομεν, ἀλλὰ Χρι-
στὸν Ἰησοῦν Κύριον· ἑαυτοὺς δὲ, δούλους ὑμῶν
διὰ Ἰησοῦν.
6 Ὅτι ὁ Θεὸς ὁ εἰπὼν ἐκ σκότους φῶς
λάμψαι, ὃς ἔλαμψεν ἐν ταῖς καρδίαις ἡ-
μῶν, πρὸς φωτισμὸν τῆς γνώσεως τῆς δόξης
τοῦ Θεοῦ ἐν προσώπῳ Ἰησοῦ Χριστοῦ.
7 Ἔχομεν δὲ τὸν θησαυρὸν τοῦτον ἐν ὀστρα-
κίνοις σκεύεσιν, ἵνα ἡ ὑπερβολὴ τῆς δυνά-
μεως ᾖ τοῦ Θεοῦ, καὶ μὴ ἐξ ἡμῶν.
8 Ἐν παντὶ θλιβόμενοι, ἀλλ' οὐ στενοχωρού-
μενοι· ἀπορούμενοι, ἀλλ' οὐκ ἐξαπορούμενοι.
9 Διωκόμενοι, ἀλλ' οὐκ ἐγκαταλειπόμε-
νοι· καταβαλλόμενοι, ἀλλ' οὐκ ἀπολλύμενοι.
10 Πάντοτε τὴν νέκρωσιν τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ
ἐν τῷ σώματι περιφέροντες, ἵνα καὶ ἡ ζωὴ τοῦ
Ἰησοῦ ἐν τῷ σώματι ἡμῶν φανερωθῇ.

11 Ἀεὶ γὰρ ἡμεῖς οἱ ζῶντες, εἰς θάνατον παραδιδόμεθα διὰ Ἰησοῦν, ἵνα καὶ ἡ ζωὴ τοῦ Ἰησοῦ φανερωθῇ ἐν τῇ θνητῇ σαρκὶ ἡμῶν.

12 Ὥστε ὁ μὲν θάνατος ἐν ἡμῖν ἐνεργεῖται, ἡ δὲ ζωὴ ἐν ὑμῖν.

13 Ἔχοντες δὲ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα τῆς πίστεως, κατὰ τὸ γεγραμμένον· Ἐπίστευσα, διὸ ἐλάλησα· καὶ ἡμεῖς πιστεύομεν, διὸ καὶ λαλοῦμεν.

14 Εἰδότες ὅτι ὁ ἐγείρας τὸν Κύριον Ἰησοῦν, καὶ ἡμᾶς διὰ Ἰησοῦ ἐγερεῖ, καὶ παραστήσει σὺν ὑμῖν.

15 Τὰ γὰρ πάντα δι' ὑμᾶς, ἵνα ἡ χάρις πλεονάσασα, διὰ τῶν πλειόνων τὴν εὐχαριστίαν περισσεύσῃ εἰς τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ.

16 Διὸ οὐκ ἐκκακοῦμεν· ἀλλ' εἰ καὶ ὁ ἔξω ἡμῶν ἄνθρωπος διαφθείρεται, ἀλλ' ὁ ἔσωθεν ἀνακαινοῦται ἡμέρᾳ καὶ ἡμέρᾳ.

17 Τὸ γὰρ παραυτίκα ἐλαφρὸν τῆς θλίψεως ἡμῶν, καθ' ὑπερβολὴν εἰς ὑπερβολὴν, αἰώνιον βάρος δόξης κατεργάζεται ἡμῖν·

18 Μὴ σκοπούντων ἡμῶν τὰ βλεπόμενα, ἀλλὰ τὰ μὴ βλεπόμενα. τὰ γὰρ βλεπόμενα, πρόσκαιρα· τὰ δὲ μὴ βλεπόμενα, αἰώνια.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 ΟΙ'δαμεν γὰρ, ὅτι, ἐὰν ἡ ἐπίγειος ἡμῶν οἰκία τοῦ σκήνους καταλυθῇ, οἰκοδομὴν ἐκ Θεοῦ ἔχομεν, οἰκίαν ἀχειροποίητον, αἰώνιον ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

2 Καὶ γὰρ ἐν τούτῳ στενάζομεν, τὸ οἰκητήριον ἡμῶν τὸ ἐξ οὐρανοῦ ἐπενδύσασθαι ἐπιποθοῦντες.

3 Εἴ γε καὶ ἐνδυσάμενοι, οὐ γυμνοὶ εὑρεθησόμεθα.

4 Καὶ γὰρ οἱ ὄντες ἐν τῷ σκήνει στενάζομεν βαρούμενοι· ἐφ᾽ ᾧ οὐ θέλομεν ἐκδύσασθαι, ἀλλ᾽ ἐπενδύσασθαι, ἵνα καταποθῇ τὸ θνητὸν ὑπὸ τῆς ζωῆς.

5 Ὁ δὲ κατεργασάμενος ἡμᾶς εἰς αὐτὸ τοῦτο, Θεός, ὁ καὶ δοὺς ἡμῖν τὸν ἀῤῥαβῶνα τοῦ Πνεύματος.

6 Θαῤῥοῦντες οὖν πάντοτε, καὶ εἰδότες ὅτι ἐνδημοῦντες ἐν τῷ σώματι, ἐκδημοῦμεν ἀπὸ τοῦ Κυρίου.

7 (Διὰ πίστεως γὰρ περιπατοῦμεν, οὐ διὰ εἴδους.

8 Θαῤῥοῦμεν δέ, καὶ εὐδοκοῦμεν μᾶλλον ἐκδημῆσαι ἐκ τοῦ σώματος, καὶ ἐνδημῆσαι πρὸς τὸν Κύριον.

9 Διὸ καὶ φιλοτιμούμεθα, εἴτε ἐνδημοῦντες, εἴτε ἐκδημοῦντες, εὐάρεστοι αὐτῷ εἶναι.

10 Τοὺς γὰρ πάντας ἡμᾶς φανερωθῆναι δεῖ ἔμπροσθεν τοῦ βήματος τοῦ Χριστοῦ, ἵνα κομίσηται ἕκαστος τὰ διὰ τοῦ σώματος, πρὸς ἃ ἔπραξεν, εἴτε ἀγαθόν, εἴτε κακόν.

11 Εἰδότες οὖν τὸν φόβον τοῦ Κυρίου, ἀνθρώπους πείθομεν, Θεῷ δὲ πεφανερώμεθα· ἐλπίζω δὲ καὶ ἐν ταῖς συνειδήσεσιν ὑμῶν πεφανερῶσθαι.

12 Οὐ γὰρ πάλιν ἑαυτοὺς συνιστάνομεν ὑμῖν, ἀλλὰ ἀφορμὴν διδόντες ὑμῖν καυχήματος ὑπὲρ ἡμῶν· ἵνα ἔχητε πρὸς τοὺς ἐν προσώπῳ καυχωμένους, καὶ οὐ καρδίᾳ.

13 Εἴτε γὰρ ἐξέστημεν, Θεῷ· εἴτε σωφρονοῦμεν, ὑμῖν.

14 Ἡ γὰρ ἀγάπη τοῦ Χριστοῦ συνέχει ἡμᾶς·

15 Κρίναντας τοῦτο, ὅτι εἰ εἷς ὑπὲρ πάντων ἀπέθανεν, ἄρα οἱ πάντες ἀπέθανον· καὶ

ὑπὲρ πάντων ἀπέθανεν, ἵνα οἱ ζῶντες μη-
κέτι ἑαυτοῖς ζῶσιν, ἀλλὰ τῷ ὑπὲρ αὐτῶν ἀ-
ποθανόντι καὶ ἐγερθέντι.
16 Ὥστε ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ νῦν οὐδένα οἴδαμεν
κατὰ σάρκα· εἰ δὲ καὶ ἐγνώκαμεν κατὰ Χρι-
στὸν, ἀλλὰ νῦν οὐκ ἔτι γινώσκομεν.
17 Ὥστε εἴ τις ἐν Χριστῷ, καινὴ κτίσις·
τὰ ἀρχαῖα παρῆλθεν, ἰδοὺ γέγονε καινὰ τὰ
πάντα.
18 Τὰ δὲ πάντα ἐκ τοῦ Θεοῦ τοῦ καταλλά-
ξαντος ἡμᾶς ἑαυτῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ δόν-
τος ἡμῖν τὴν διακονίαν τῆς καταλλαγῆς.
19 Ὡς ὅτι Θεὸς ἦν ἐν Χριστῷ κόσμον κα-
ταλλάσσων ἑαυτῷ, μὴ λογιζόμενος αὐτοῖς τὰ
παραπτώματα αὐτῶν, καὶ θέμενος ἐν ἡμῖν
τὸν λόγον τῆς καταλλαγῆς.
20 Ὑπὲρ Χριστοῦ οὖν πρεσβεύομεν, ὡς τοῦ
Θεοῦ παρακαλοῦντος δι' ἡμῶν· δεόμεθα ὑπὲρ
Χριστοῦ, Καταλλάγητε τῷ Θεῷ.
21 Τὸν γὰρ μὴ γνόντα ἁμαρτίαν, ὑπὲρ
ἡμῶν ἁμαρτίαν ἐποίησεν, ἵνα ἡμεῖς γινώ-
μεθα δικαιοσύνη Θεοῦ ἐν αὐτῷ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ϛʹ. 6.

1 ΣΥνεργοῦντες δὲ καὶ παρακαλοῦμεν
μὴ εἰς κενὸν τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ
δέξασθαι ὑμᾶς.
2 Λέγει γάρ· Καιρῷ δεκτῷ ἐπήκουσά σου,
καὶ ἐν ἡμέρᾳ σωτηρίας ἐβοήθησά σοι· ἰδοὺ
νῦν καιρὸς εὐπρόσδεκτος, ἰδοὺ νῦν ἡμέρα
σωτηρίας.
3 Μηδεμίαν ἐν μηδενὶ διδόντες προσκο-
πὴν, ἵνα μὴ μωμηθῇ ἡ διακονία.
4 Ἀλλ' ἐν παντὶ συνιστῶντες ἑαυτοὺς ὡς

Θεοῦ

Θεοῦ διάκονοι, ἐν ὑπομονῇ πολλῇ, ἐν θλί-
ψεσιν, ἐν ἀνάγκαις, ἐν στενοχωρίαις.
5 Ἐν πληγαῖς, ἐν φυλακαῖς, ἐν ἀκαταστα-
σίαις, ἐν κόποις, ἐν ἀγρυπνίαις, ἐν νηστείαις.
6 Ἐν ἁγνότητι, ἐν γνώσει, ἐν μακροθυ-
μίᾳ, ἐν χρηστότητι, ἐν Πνεύματι ἁγίῳ, ἐν
ἀγάπῃ ἀνυποκρίτῳ.
7 Ἐν λόγῳ ἀληθείας, ἐν δυνάμει Θεοῦ,
διὰ τῶν ὅπλων τῆς δικαιοσύνης τῶν δεξιῶν
καὶ ἀριστερῶν.
8 Διὰ δόξης καὶ ἀτιμίας, διὰ δυσφημίας
καὶ εὐφημίας· ὡς πλάνοι, καὶ ἀληθεῖς.
9 Ὡς ἀγνοούμενοι, καὶ ἐπιγινωσκόμενοι·
ὡς ἀποθνήσκοντες, καὶ ἰδοὺ ζῶμεν· ὡς παι-
δευόμενοι, καὶ μὴ θανατούμενοι.
10 Ὡς λυπούμενοι, ἀεὶ δὲ χαίροντες·
ὡς πτωχοὶ, πολλοὺς δὲ πλουτίζοντες· ὡς
μηδὲν ἔχοντες, καὶ πάντα κατέχοντες.
11 Τὸ στόμα ἡμῶν ἀνέῳγε πρὸς ὑμᾶς,
Κορίνθιοι, ἡ καρδία ἡμῶν πεπλάτυνται.
12 Οὐ στενοχωρεῖσθε ἐν ἡμῖν. στενοχωρεῖσθε
δὲ ἐν τοῖς σπλάγχνοις ὑμῶν,
13 Τὴν δὲ αὐτὴν ἀντιμισθίαν ὡς τέκνοις
λέγω· Πλατύνθητε καὶ ὑμεῖς.
14 Μὴ γίνεσθε ἑτεροζυγοῦντες ἀπίστοις.
Τίς γὰρ μετοχὴ δικαιοσύνῃ καὶ ἀνομίᾳ; Τίς
δὲ κοινωνία φωτὶ πρὸς σκότος;
15 Τίς δὲ συμφώνησις Χριστῷ πρὸς Βε-
λίαλ; Ἢ τίς μερὶς πιστῷ μετὰ ἀπίστου;
16 Τίς δὲ συγκατάθεσις ναῷ Θεοῦ μετὰ
εἰδώλων; ὑμεῖς γὰρ ναὸς Θεοῦ ἐστε ζῶντος,
καθὼς εἶπεν ὁ Θεός· Ὅτι ἐνοικήσω ἐν αὐ-
τοῖς, καὶ ἐμπεριπατήσω· καὶ ἔσομαι αὐτῶν
Θεὸς, καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι λαός.

17 Διὸ ἐξέλθετε ἐκ μέσου αὐτῶν, καὶ ἀ-
φορίσθητε, λέγει Κύριος· καὶ ἀκαθάρτου μὴ
ἅπτεσθε· κἀγὼ εἰσδέξομαι ὑμᾶς.
18 Καὶ ἔσομαι ὑμῖν εἰς πατέρα, καὶ ὑμεῖς
ἔσεσθέ μοι εἰς Υἱοὺς καὶ θυγατέρας, λέγει
Κύριος παντοκράτωρ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ΄. 7.

1 ΤΑύτας οὖν ἔχοντες τὰς ἐπαγγελίας,
ἀγαπητοὶ, καθαρίσωμεν ἑαυτοὺς
ἀπὸ παντὸς μολυσμοῦ σαρκὸς καὶ Πνεύματος,
ἐπιτελοῦντες ἁγιωσύνην ἐν φόβῳ Θεοῦ.
2 Χωρήσατε ἡμᾶς· οὐδένα ἠδικήσαμεν,
οὐδένα ἐφθείραμεν, οὐδένα ἐπλεονεκτήσαμεν.
3 Οὐ πρὸς κατάκρισιν λέγω· προείρηκα
γὰρ ὅτι ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν ἐστε εἰς τὸ συ-
ναποθανεῖν καὶ συζῆν.
4 Πολλή μοι παῤῥησία πρὸς ὑμᾶς, πολ-
λή μοι καύχησις ὑπὲρ ὑμῶν. πεπλήρωμαι
τῇ παρακλήσει, ὑπερπερισσεύομαι τῇ χαρᾷ
ἐπὶ πάσῃ τῇ θλίψει ἡμῶν.
5 Καὶ γὰρ ἐλθόντων ἡμῶν εἰς Μακεδο-
νίαν, οὐδεμίαν ἔσχηκεν ἄνεσιν ἡ σὰρξ ἡμῶν,
ἀλλ' ἐν παντὶ θλιβόμενοι· ἔξωθεν μάχαι,
ἔσωθεν φόβοι.
6 Ἀλλ' ὁ παρακαλῶν τοὺς ταπεινοὺς, παρεκά-
λεσεν ἡμᾶς, ὁ Θεὸς, ἐν τῇ παρουσίᾳ Τίτου.
7 Οὐ μόνον δὲ ἐν τῇ παρουσίᾳ αὐτοῦ, ἀλ-
λὰ καὶ ἐν τῇ παρακλήσει ᾗ παρεκλήθη ἐφ' ὑ-
μῖν, ἀναγγέλλων ἡμῖν τὴν ὑμῶν ἐπιπόθη-
σιν, τὸν ὑμῶν ὀδυρμὸν, τὸν ὑμῶν ζῆλον ὑπὲρ
ἐμοῦ· ὥστε με μᾶλλον χαρῆναι.
8 Ὅτι εἰ καὶ ἐλύπησα ὑμᾶς ἐν τῇ ἐπιστολῇ,
οὐ μεταμέλομαι, εἰ καὶ μετεμελόμην. βλέπω
γὰρ

γὰρ ὅτι ἡ ἐπιστολὴ ἐκείνη, εἰ καὶ πρὸς ὥραν,
ἐλύπησεν ὑμᾶς.
9 Νῦν χαίρω, οὐχ ὅτι ἐλυπήθητε, ἀλλ'
ὅτι ἐλυπήθητε εἰς μετάνοιαν. ἐλυπήθητε
γὰρ κατὰ Θεὸν, ἵνα ἐν μηδενὶ ζημιωθῆτε
ἐξ ἡμῶν.
10 Ἡ γὰρ κατὰ Θεὸν λύπη μετάνοιαν εἰς
σωτηρίαν ἀμεταμέλητον κατεργάζεται. ἡ δὲ
τοῦ κόσμου λύπη θάνατον κατεργάζεται.
11 Ἰδοὺ γὰρ αὐτὸ τοῦτο τὸ κατὰ Θεὸν λυπηθῆναι
ὑμᾶς, πόσην κατειργάσατο ὑμῖν σπουδήν;
ἀλλὰ ἀπολογίαν, ἀλλὰ ἀγανάκτησιν,
ἀλλὰ φόβον, ἀλλὰ ἐπιπόθησιν, ἀλλὰ
ζῆλον, ἀλλ' ἐκδίκησιν; Ἐν παντὶ συνεστήσατε
ἑαυτοὺς ἁγνοὺς εἶναι ἐν τῷ πράγματι.
12 Ἄρα εἰ καὶ ἔγραψα ὑμῖν, οὐχ ἕνεκεν
τοῦ ἀδικήσαντος, οὐδὲ ἕνεκεν τοῦ ἀδικηθέντος.
ἀλλ' ἕνεκεν τοῦ φανερωθῆναι τὴν σπουδὴν ἡμῶν
τὴν ὑπὲρ ὑμῶν πρὸς ὑμᾶς, ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.
13 Διὰ τοῦτο παρακεκλήμεθα ἐπὶ τῇ παρακλήσει
ὑμῶν· περισσοτέρως δὲ μᾶλλον
ἐχάρημεν ἐπὶ τῇ χαρᾷ Τίτου, ὅτι ἀναπέπαυται
τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ ἀπὸ πάντων ὑμῶν.
14 Ὅτι εἴ τι αὐτῷ ὑπὲρ ὑμῶν κεκαύχημαι,
οὐ κατῃσχύνθην· ἀλλ' ὡς πάντα ἐν ἀληθείᾳ
ἐλαλήσαμεν ὑμῖν, οὕτω καὶ ἡ καύχησις
ἡμῶν ἡ ἐπὶ Τίτου, ἀλήθεια ἐγενήθη.
15 Καὶ τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ περισσοτέρως
εἰς ὑμᾶς ἐστιν, ἀναμιμνησκομένου τὴν πάντων
ὑμῶν ὑπακοήν· ὡς μετὰ φόβου καὶ τρόμου ἐδέξασθε
αὐτόν.
16 Χαίρω οὖν ὅτι ἐν παντὶ θαῤῥῶ ἐν ὑμῖν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Η΄. 8.

1 Γνωρίζομεν δὲ ὑμῖν, ἀδελφοὶ, τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ τὴν δεδομένην ἐν ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Μακεδονίας.

2 Ὅτι ἐν πολλῇ δοκιμῇ θλίψεως ἡ περισσεία τῆς χαρᾶς αὐτῶν, καὶ ἡ κατὰ βάθους πτωχεία αὐτῶν ἐπερίσσευσεν εἰς τὸν πλοῦτον τῆς ἁπλότητος αὐτῶν.

3 Ὅτι κατὰ δύναμιν (μαρτυρῶ) καὶ ὑπὲρ δύναμιν αὐθαίρετοι.

4 Μετὰ πολλῆς παρακλήσεως δεόμενοι ἡμῶν, τὴν χάριν καὶ τὴν κοινωνίαν τῆς διακονίας, τῆς εἰς τοὺς ἁγίους, δέξασθαι ἡμᾶς.

5 Καὶ οὐ καθὼς ἠλπίσαμεν, ἀλλ᾽ ἑαυτοὺς ἔδωκαν πρῶτον τῷ Κυρίῳ καὶ ἡμῖν, διὰ θελήματος Θεοῦ.

6 Εἰς τὸ παρακαλέσαι ἡμᾶς Τίτον, ἵνα καθὼς προενήρξατο, οὕτω καὶ ἐπιτελέσῃ εἰς ὑμᾶς καὶ τὴν χάριν ταύτην.

7 Ἀλλ᾽ ὥσπερ ἐν παντὶ περισσεύετε πίστει, καὶ λόγῳ, καὶ γνώσει, καὶ πάσῃ σπουδῇ, καὶ τῇ ἐξ ὑμῶν ἐν ἡμῖν ἀγάπῃ, ἵνα καὶ ἐν ταύτῃ τῇ χάριτι περισσεύητε.

8 Οὐ κατ᾽ ἐπιταγὴν λέγω, ἀλλὰ διὰ τῆς ἑτέρων σπουδῆς, καὶ τὸ τῆς ὑμετέρας ἀγάπης γνήσιον δοκιμάζων.

9 Γινώσκετε γὰρ τὴν χάριν τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὅτι δι᾽ ὑμᾶς ἐπτώχευσε, πλούσιος ὤν. ἵνα ὑμεῖς τῇ ἐκείνου πτωχείᾳ πλουτήσητε.

10 Καὶ γνώμην ἐν τούτῳ δίδωμι· τοῦτο γὰρ ὑμῖν συμφέρει, οἵτινες οὐ μόνον τὸ ποιῆσαι, ἀλλὰ καὶ τὸ θέλειν προενήρξασθε ἀπὸ πέρυσι.

11 Νυνὶ δὲ καὶ τὸ ποιῆσαι ἐπιτελέσατε· ὅπως καθάπερ ἡ προθυμία τοῦ θέλειν, οὕτω καὶ τὸ ἐπιτελέσαι ἐκ τοῦ ἔχειν.

12 Εἰ γὰρ ἡ προθυμία πρόκειται, καθὸ ἐὰν ἔχῃ τις, εὐπρόσδεκτος, οὐ καθὸ οὐκ ἔχει·

13 Οὐ γὰρ ἵνα ἄλλοις ἄνεσις, ὑμῖν δὲ θλίψις· ἀλλ' ἐξ ἰσότητος, ἐν τῷ νῦν καιρῷ τὸ ὑμῶν περίσσευμα εἰς τὸ ἐκείνων ὑστέρημα.

14 Ἵνα καὶ τὸ ἐκείνων περίσσευμα γένηται εἰς τὸ ὑμῶν ὑστέρημα, ὅπως γένηται ἰσότης.

15 Καθὼς γέγραπται· Ὁ τὸ πολὺ, οὐκ ἐπλεόνασε· καὶ ὁ τὸ ὀλίγον, οὐκ ἠλαττόνησε.

16 Χάρις δὲ τῷ Θεῷ τῷ διδόντι τὴν αὐτὴν σπουδὴν ὑπὲρ ὑμῶν ἐν τῇ καρδίᾳ Τίτου.

17 Ὅτι τὴν μὲν παράκλησιν ἐδέξατο, σπουδαιότερος δὲ ὑπάρχων, αὐθαίρετος ἐξῆλθε πρὸς ὑμᾶς.

18 Συνεπέμψαμεν δὲ μετ' αὐτοῦ τὸν ἀδελφὸν, οὗ ἔπαινος ἐν τῷ εὐαγγελίῳ διὰ πασῶν τῶν ἐκκλησιῶν.

19 Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ χειροτονηθεὶς ὑπὸ τῶν ἐκκλησιῶν συνέκδημος ἡμῶν, σὺν τῇ χάριτι ταύτῃ τῇ διακονουμένῃ ὑφ' ἡμῶν πρὸς τὴν αὐτοῦ τοῦ Κυρίου δόξαν καὶ προθυμίαν ὑμῶν.

20 Στελλόμενοι τοῦτο, μή τις ὑμᾶς μωμήσηται ἐν τῇ ἁδρότητι ταύτῃ τῇ διακονουμένῃ ὑφ' ἡμῶν.

21 Προνοούμενοι καλὰ οὐ μόνον ἐνώπιον Κυρίου, ἀλλὰ καὶ ἐνώπιον ἀνθρώπων.

22 Συνεπέμψαμεν δὲ αὐτοῖς τὸν ἀδελφὸν ἡμῶν, ὃν ἐδοκιμάσαμεν ἐν πολλοῖς πολλάκις σπουδαῖον ὄντα· νυνὶ δὲ πολὺ σπουδαιότερον, πεποιθήσει πολλῇ τῇ εἰς ὑμᾶς.

23 Εἰ-

23 Εἴτε ὑπὲρ Τίτου, κοινωνὸς ἐμὸς καὶ εἰς ὑμᾶς συνεργός· εἴτε ἀδελφοὶ ἡμῶν, ἀπόστολοι ἐκκλησιῶν, δόξα Χριστοῦ.

24 Τὴν οὖν ἔνδειξιν τῆς ἀγάπης ὑμῶν, καὶ ἡμῶν καυχήσεως ὑπὲρ ὑμῶν, εἰς αὐτοὺς ἐνδείξασθε, καὶ εἰς πρόσωπον τῶν ἐκκλησιῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Θ'. 9.

1 Περὶ μὲν γὰρ τῆς διακονίας τῆς εἰς τοὺς ἁγίους περισσόν μοι ἐστὶ τὸ γράφειν ὑμῖν.

2 Οἶδα γὰρ τὴν προθυμίαν ὑμῶν, ἣν ὑπὲρ ὑμῶν καυχῶμαι Μακεδόσιν, ὅτι Ἀχαΐα παρεσκεύασται ἀπὸ πέρυσι· καὶ ὁ ἐξ ὑμῶν ζῆλος ἠρέθισε τοὺς πλείονας.

3 Ἔπεμψα δὲ τοὺς ἀδελφούς, ἵνα μὴ τὸ καύχημα ἡμῶν τὸ ὑπὲρ ὑμῶν κενωθῇ ἐν τῷ μέρει τούτῳ· ἵνα (καθὼς ἔλεγον) παρεσκευασμένοι ἦτε.

4 Μήπως ἐὰν ἔλθωσι σὺν ἐμοὶ Μακεδόνες, καὶ εὕρωσιν ὑμᾶς ἀπαρασκευάστους, καταισχυνθῶμεν ἡμεῖς (ἵνα μὴ λέγωμεν ὑμεῖς) ἐν τῇ ὑποστάσει ταύτῃ τῆς καυχήσεως.

5 Ἀναγκαῖον οὖν ἡγησάμην παρακαλέσαι τοὺς ἀδελφούς, ἵνα προέλθωσιν εἰς ὑμᾶς, καὶ προκαταρτίσωσι τὴν προκατηγγελμένην εὐλογίαν ὑμῶν, ταύτην ἑτοίμην εἶναι οὕτως ὡς εὐλογίαν, καὶ μὴ ὥσπερ πλεονεξίαν.

6 Τοῦτο δέ, ὁ σπείρων φειδομένως, φειδομένως καὶ θερίσει· καὶ ὁ σπείρων ἐπ' εὐλογίαις, ἐπ' εὐλογίαις καὶ θερίσει.

7 Ἕκαστος καθὼς προαιρεῖται τῇ καρδίᾳ· μὴ ἐκ λύπης, ἢ ἐξ ἀνάγκης· ἱλαρὸν γὰρ δότην ἀγαπᾷ ὁ Θεός.

8 Δυνατὸς δὲ ὁ Θεὸς πᾶσαν χάριν περισ-
σεῦσαι εἰς ὑμᾶς· ἵνα ἐν παντὶ πάντοτε πᾶ-
σαν αὐτάρκειαν ἔχοντες, περισσεύητε εἰς πᾶν
ἔργον ἀγαθόν·
9 (Καθὼς γέγραπται· Ἐσκόρπισεν,
ἔδωκε τοῖς πένησιν· ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μέ-
νει εἰς τὸν αἰῶνα.
10 Ὁ δὲ ἐπιχορηγῶν σπέρμα τῷ σπείρον-
τι, καὶ ἄρτον εἰς βρῶσιν χορηγήσαι, καὶ πλη-
θύναι τὸν σπόρον ὑμῶν, καὶ αὐξήσαι τὰ γεν-
νήματα τῆς δικαιοσύνης ὑμῶν·)
11 Ἐν παντὶ πλουτιζόμενοι εἰς πᾶσαν ἁ-
πλότητα, ἥτις κατεργάζεται δι' ἡμῶν εὐ-
χαριστίαν τῷ Θεῷ.
12 Ὅτι ἡ διακονία τῆς λειτουργίας ταύτης
οὐ μόνον ἐστὶ προσαναπληροῦσα τὰ ὑστερήματα
τῶν ἁγίων, ἀλλὰ καὶ περισσεύουσα διὰ πολ-
λῶν εὐχαριστιῶν τῷ Θεῷ,
13 (Διὰ τῆς δοκιμῆς τῆς διακονίας ταύτης
δοξάζοντες τὸν Θεὸν ἐπὶ τῇ ὑποταγῇ τῆς ὁμολο-
γίας ὑμῶν εἰς τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ, καὶ ἁ-
πλότητι τῆς κοινωνίας εἰς αὐτοὺς καὶ εἰς πάντας,)
14 Καὶ αὐτῶν δεήσει ὑπὲρ ὑμῶν, ἐπιπο-
θούντων ὑμᾶς διὰ τὴν ὑπερβάλλουσαν χάριν τοῦ
Θεοῦ ἐφ' ὑμῖν.
15 Χάρις δὲ τῷ Θεῷ ἐπὶ τῇ ἀνεκδιηγή-
τῳ αὐτοῦ δωρεᾷ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ι΄. 10.

1 Αὐτὸς δὲ ἐγὼ Παῦλος παρακαλῶ
ὑμᾶς διὰ τῆς πραότητος καὶ ἐπιει-
κείας τοῦ Χριστοῦ, ὃς κατὰ πρόσωπον μὲν τα-
πεινὸς ἐν ὑμῖν, ἀπὼν δὲ θαῤῥῶ εἰς ὑμᾶς.
2 Δέομαι δὲ τὸ μὴ παρὼν θαῤῥῆσαι τῇ

πεποι-

πεποιθήσει ᾗ λογίζομαι τολμῆσαι ἐπί τι-
νας τοὺς λογιζομένους ἡμᾶς ὡς κατὰ σάρκα
περιπατοῦντας.
3 Εʼν σαρκὶ γὰρ περιπατοῦντες, οὐ κατὰ
σάρκα στρατευόμεθα·
4 (Τὰ γὰρ ὅπλα τῆς στρατείας ἡμῶν οὐ
σαρκικὰ, ἀλλὰ δυνατὰ τῷ Θεῷ πρὸς κα-
θαίρεσιν ὀχυρωμάτων.)
5 Λογισμοὺς καθαιροῦντες, καὶ πᾶν ὕψω-
μα ἐπαιρόμενον κατὰ τῆς γνώσεως τοῦ Θεοῦ,
καὶ αἰχμαλωτίζοντες πᾶν νόημα εἰς τὴν ὑ-
πακοὴν τοῦ Χριστοῦ.
6 Καὶ ἐν ἑτοίμῳ ἔχοντες ἐκδικῆσαι πᾶσαν
παρακοὴν, ὅταν πληρωθῇ ὑμῶν ἡ ὑπακοή.
7 Τὰ κατὰ πρόσωπον βλέπετε; Εἴ τις
πέποιθεν ἑαυτῷ Χριστοῦ εἶναι, τοῦτο λογιζέ-
σθω πάλιν ἀφʼ ἑαυτοῦ, ὅτι καθὼς αὐτὸς Χρι-
στοῦ, οὕτω καὶ ἡμεῖς Χριστοῦ.
8 Εʼάν τε γὰρ καὶ περισσότερόν τι καυχήσω-
μαι περὶ τῆς ἐξουσίας ἡμῶν, ἧς ἔδωκεν ὁ
Κύριος ἡμῖν εἰς οἰκοδομὴν, καὶ οὐκ εἰς κα-
θαίρεσιν ὑμῶν, οὐκ αἰσχυνθήσομαι.
9 Ἵνα μὴ δόξω ὡς ἂν ἐκφοβεῖν ὑμᾶς διὰ
τῶν ἐπιστολῶν.
10 Οʼτι αἱ μὲν ἐπιστολαὶ, φησὶ, βαρεῖαι
καὶ ἰσχυραί. ἡ δὲ παρουσία τοῦ σώματος ἀσθε-
νὴς, καὶ ὁ λόγος ἐξουθενημένος.
11 Τοῦτο λογιζέσθω ὁ τοιοῦτος, ὅτι οἷοί
ἐσμεν τῷ λόγῳ διʼ ἐπιστολῶν ἀπόντες, τοιοῦ-
τοι καὶ παρόντες τῷ ἔργῳ.
12 Οὐ γὰρ τολμῶμεν ἐγκρῖναι ἢ συγκρῖ-
ναι ἑαυτούς τισι τῶν ἑαυτοὺς συνιστανόντων· ἀλ-
λὰ αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς ἑαυτοὺς μετροῦντες, καὶ συγ-
κρίνοντες ἑαυτοὺς ἑαυτοῖς οὐ συνιοῦσιν.

13 Ηʼ-

13 Ἡμεῖς δὲ οὐχὶ εἰς τὰ ἄμετρα καυχη-
σόμεθα, ἀλλὰ κατὰ τὸ μέτρον τοῦ κανόνος
οὗ ἐμέρισεν ἡμῖν ὁ Θεὸς μέτρου, ἐφικέσθαι
ἄχρι καὶ ὑμῶν.
14 Οὐ γὰρ ὡς μὴ ἐφικνούμενοι εἰς ὑμᾶς,
ὑπερεκτείνομεν ἑαυτούς· ἄχρι γὰρ καὶ ὑμῶν
ἐφθάσαμεν ἐν τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Χριστοῦ.
15 Οὐκ εἰς τὰ ἄμετρα καυχώμενοι ἐν ἀλ-
λοτρίοις κόποις, ἐλπίδα δὲ ἔχοντες, αὐξα-
νομένης τῆς πίστεως ὑμῶν, ἐν ὑμῖν μεγαλυν-
θῆναι κατὰ τὸν κανόνα ἡμῶν εἰς περισσείαν.
16 Εἰς τὰ ὑπερέκεινα ὑμῶν εὐαγγελίσα-
σθαι· οὐκ ἐν ἀλλοτρίῳ κανόνι εἰς τὰ ἕτοιμα
καυχήσασθαι.
17 Ὁ δὲ καυχώμενος, ἐν Κυρίῳ καυχάσθω.
18 Οὐ γὰρ ὁ ἑαυτὸν συνιστῶν, ἐκεῖνός ἐστι
δόκιμος, ἀλλ' ὃν ὁ Κύριος συνίστησιν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

1 Ὄφελον ἀνείχεσθέ μου μικρόν τι τῆς
ἀφροσύνης· ἀλλὰ καὶ ἀνέχεσθέ μου.
2 Ζηλῶ γὰρ ὑμᾶς Θεοῦ ζήλῳ· ἡρμοσά-
μην γὰρ ὑμᾶς ἑνὶ ἀνδρὶ παρθένον ἁγνὴν
παραστῆσαι τῷ Χριστῷ.
3 Φοβοῦμαι δὲ μήπως ὡς ὁ ὄφις Εὔαν
ἐξηπάτησεν ἐν τῇ πανουργίᾳ αὐτοῦ, οὕτω φθα-
ρῇ τὰ νοήματα ὑμῶν ἀπὸ τῆς ἁπλότητος
τῆς εἰς τὸν Χριστόν.
4 Εἰ μὲν γὰρ ὁ ἐρχόμενος ἄλλον Ἰησοῦν
κηρύσσει ὃν οὐκ ἐκηρύξαμεν, ἢ Πνεῦμα ἕτερον
λαμβάνετε ὃ οὐκ ἐλάβετε, ἢ εὐαγγέλιον ἕ-
τερον ὃ οὐκ ἐδέξασθε, καλῶς ἠνείχεσθε.
5 Λογίζομαι γὰρ μηδὲν ὑστερηκέναι τῶν ὑ-
περλίαν ἀποστόλων.

6 Εἰ

6 Εἰ δὲ καὶ ἰδιώτης τῷ λόγῳ, ἀλλ' οὐ τῇ
γνώσει· ἀλλ' ἐν παντὶ φανερωθέντες ἐν πᾶ-
σιν εἰς ὑμᾶς.
7 Ἢ ἁμαρτίαν ἐποίησα ἐμαυτὸν ταπει-
νῶν, ἵνα ὑμεῖς ὑψωθῆτε; ὅτι δωρεὰν τὸ τοῦ
Θεοῦ εὐαγγέλιον εὐηγγελισάμην ὑμῖν;
8 Ἄλλας ἐκκλησίας ἐσύλησα, λαβὼν
ὀψώνιον, πρὸς τὴν ὑμῶν διακονίαν· καὶ πα-
ρὼν πρὸς ὑμᾶς καὶ ὑστερηθεὶς, οὐ κατενάρκησα
οὐδενός.
9 Τὸ γὰρ ὑστέρημά μου προσανεπλήρωσαν
οἱ ἀδελφοὶ ἐλθόντες ἀπὸ Μακεδονίας· καὶ
ἐν παντὶ ἀβαρῆ ὑμῖν ἐμαυτὸν ἐτήρησα, καὶ
τηρήσω.
10 Ἔστιν ἀλήθεια Χριστοῦ ἐν ἐμοὶ, ὅτι ἡ
καύχησις αὕτη οὐ σφραγήσεται εἰς ἐμὲ ἐν τοῖς
κλίμασι τῆς Ἀχαΐας.
11 Διατί; ὅτι οὐκ ἀγαπῶ ὑμᾶς; Ὁ
Θεὸς οἶδεν.
12 Ὃ δὲ ποιῶ, καὶ ποιήσω, ἵνα ἐκκόψω
τὴν ἀφορμὴν τῶν θελόντων ἀφορμὴν, ἵνα ἐν
ᾧ καυχῶνται, εὑρεθῶσι καθὼς καὶ ἡμεῖς.
13 Οἱ γὰρ τοιοῦτοι ψευδαπόστολοι, ἐργά-
ται δόλιοι, μετασχηματιζόμενοι εἰς ἀποστό-
λους Χριστοῦ.
14 Καὶ οὐ θαυμαστόν· αὐτὸς γὰρ ὁ Σατα-
νᾶς μετασχηματίζεται εἰς ἄγγελον φωτός.
15 Οὐ μέγα οὖν εἰ καὶ οἱ διάκονοι αὐτοῦ
μετασχηματίζονται ὡς διάκονοι δικαιοσύνης·
ὧν τὸ τέλος ἔσται κατὰ τὰ ἔργα αὐτῶν.
16 Πάλιν λέγω, μή τις με δόξῃ ἄφρονα
εἶναι. εἰ δὲ μήγε, κἂν ὡς ἄφρονα δέξασθέ
με, ἵνα μικρόν τι κἀγὼ καυχήσωμαι.
17 Ὃ λαλῶ, οὐ λαλῶ κατὰ Κύριον,
ἀλλ'

ἀλλ᾽ ὡς ἐν ἀφροσύνῃ, ἐν ταύτῃ τῇ ὑποστάσει
τῆς καυχήσεως.
18 Ἐπεὶ πολλοὶ καυχῶνται κατὰ τὴν
σάρκα, κἀγὼ καυχήσομαι.
19 Ἡδέως γὰρ ἀνέχεσθε τῶν ἀφρόνων,
φρόνιμοι ὄντες.
20 Ἀνέχεσθε γάρ, εἴ τις ὑμᾶς καταδουλοῖ,
εἴ τις κατεσθίει, εἴ τις λαμβάνει, εἴ τις ἐ-
παίρεται, εἴ τις ὑμᾶς εἰς πρόσωπον δέρει.
21 Κατὰ ἀτιμίαν λέγω, ὡς ὅτι ἡμεῖς ἠ-
σθενήσαμεν· ἐν ᾧ δ᾽ ἄν τις τολμᾷ, (ἐν ἀ-
φροσύνῃ λέγω) τολμῶ κἀγώ.
22 Ἑβραῖοί εἰσι; κἀγώ· Ἰσραηλῖταί
εἰσι; κἀγώ· σπέρμα Ἀβραάμ εἰσι; κἀγώ.
23 Διάκονοι Χριστοῦ εἰσι; (παραφρονῶν
λαλῶ) ὑπὲρ ἐγώ· ἐν κόποις περισσοτέρως,
ἐν πληγαῖς ὑπερβαλλόντως, ἐν φυλακαῖς
περισσοτέρως, ἐν θανάτοις πολλάκις.
24 Ὑπὸ Ἰουδαίων πεντάκις τεσσαράκοντα
παρὰ μίαν ἔλαβον.
25 Τρὶς ἐῤῥαβδίσθην, ἅπαξ ἐλιθάσθην,
τρὶς ἐναυάγησα, νυχθήμερον ἐν τῷ βυθῷ
πεποίηκα.
26 Ὁδοιπορίαις πολλάκις, κινδύνοις πο-
ταμῶν, κινδύνοις λῃστῶν, κινδύνοις ἐκ γέ-
νους, κινδύνοις ἐξ ἐθνῶν, κινδύνοις ἐν πό-
λει, κινδύνοις ἐν ἐρημίᾳ, κινδύνοις ἐν θα-
λάσσῃ, κινδύνοις ἐν ψευδαδέλφοις.
27 Ἐν κόπῳ καὶ μόχθῳ, ἐν ἀγρυπνίαις
πολλάκις, ἐν λιμῷ καὶ δίψει, ἐν νηστείαις
πολλάκις, ἐν ψύχει καὶ γυμνότητι.
28 Χωρὶς τῶν παρεκτός, ἡ ἐπισύστασίς
μου ἡ καθ᾽ ἡμέραν, ἡ μέριμνα πασῶν τῶν
ἐκκλησιῶν.

29 Τίς

29 Τίς ἀσθενεῖ, καὶ οὐκ ἀσθενῶ; Τίς σκαν-
δαλίζεται, καὶ οὐκ ἐγὼ πυροῦμαι;
30 Εἰ καυχᾶσθαι δεῖ, τὰ τῆς ἀσθενείας
μου καυχήσομαι.
31 Ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ οἶδεν, ὁ ὢν εὐλογητὸς εἰς τοὺς αἰῶ-
νας, ὅτι οὐ ψεύδομαι.
32 Ἐν Δαμασκῷ ὁ ἐθνάρχης Ἀρέτα τοῦ
βασιλέως ἐφρούρει τὴν Δαμασκηνῶν πόλιν,
πιάσαι με θέλων·
33 Καὶ διὰ θυρίδος ἐν σαργάνῃ ἐχαλάσθην
διὰ τοῦ τείχους, καὶ ἐξέφυγον τὰς χεῖρας αὐτοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

1 Καυχᾶσθαι δὴ οὐ συμφέρει μοι. ἐ-
λεύσομαι γὰρ εἰς ὀπτασίας καὶ
ἀποκαλύψεις Κυρίου.
2 Οἶδα ἄνθρωπον ἐν Χριστῷ πρὸ ἐτῶν δε-
κατεσσάρων (εἴτε ἐν σώματι, οὐκ οἶδα· εἴτε
ἐκτὸς τοῦ σώματος, οὐκ οἶδα· ὁ Θεὸς οἶδεν)
ἁρπαγέντα τὸν τοιοῦτον ἕως τρίτου οὐρανοῦ.
3 Καὶ οἶδα τὸν τοιοῦτον ἄνθρωπον, (εἴτε
ἐν σώματι, εἴτε ἐκτὸς τοῦ σώματος, οὐκ οἶ-
δα· ὁ Θεὸς οἶδεν.)
4 Ὅτι ἡρπάγη εἰς τὸν παράδεισον, καὶ
ἤκουσεν ἄρρητα ῥήματα, ἃ οὐκ ἐξὸν ἀνθρώπῳ
λαλῆσαι.
5 Ὑπὲρ τοῦ τοιούτου καυχήσομαι· ὑπὲρ
δὲ ἐμαυτοῦ οὐ καυχήσομαι, εἰ μὴ ἐν ταῖς ἀ-
σθενείαις μου.
6 Ἐὰν γὰρ θελήσω καυχήσασθαι, οὐκ ἔ-
σομαι ἄφρων· ἀλήθειαν γὰρ ἐρῶ. φείδομαι
δὲ, μή τις εἰς ἐμὲ λογίσηται ὑπὲρ ὃ βλέ-
πει με, ἢ ἀκούει τι ἐξ ἐμοῦ.

7 Καὶ τῇ ὑπερβολῇ τῶν ἀποκαλύψεων
ἵνα μὴ ὑπεραίρωμαι, ἐδόθη μοι σκόλοψ τῇ
σαρκὶ, ἄγγελος Σατᾶν, ἵνα με κολαφίζῃ,
ἵνα μὴ ὑπεραίρωμαι.

8 Ὑπὲρ τούτου τρὶς τὸν Κύριον παρεκάλε-
σα, ἵνα ἀποστῇ ἀπ' ἐμοῦ.

9 Καὶ εἴρηκέ μοι· Ἀρκεῖ σοι ἡ χάρις μου·
ἡ γὰρ δύναμίς μου ἐν ἀσθενείᾳ τελειοῦται.
Ἥδιστα οὖν μᾶλλον καυχήσομαι ἐν ταῖς ἀ-
σθενείαις μου, ἵνα ἐπισκηνώσῃ ἐπ' ἐμὲ ἡ δύ-
ναμις τοῦ Χριστοῦ.

10 Διὸ εὐδοκῶ ἐν ἀσθενείαις, ἐν ὕβρε-
σιν, ἐν ἀνάγκαις, ἐν διωγμοῖς, ἐν στενοχω-
ρίαις ὑπὲρ Χριστοῦ. ὅταν γὰρ ἀσθενῶ, τότε
δυνατός εἰμι.

11 Γέγονα ἄφρων καυχώμενος· ὑμεῖς με
ἠναγκάσατε· ἐγὼ γὰρ ὤφειλον ὑφ' ὑμῶν συ-
νίστασθαι· οὐδὲν γὰρ ὑστέρησα τῶν ὑπὲρ λίαν
ἀποστόλων, εἰ καὶ οὐδέν εἰμι.

12 Τὰ μὲν σημεῖα τοῦ ἀποστόλου κατειρ-
γάσθη ἐν ὑμῖν ἐν πάσῃ ὑπομονῇ, ἐν σημείοις
καὶ τέρασι καὶ δυνάμεσι.

13 Τί γάρ ἐστιν ὃ ἡττήθητε ὑπὲρ τὰς
λοιπὰς ἐκκλησίας, εἰ μὴ ὅτι αὐτὸς ἐγὼ οὐ
κατενάρκησα ὑμῶν; Χαρίσασθέ μοι τὴν ἀ-
δικίαν ταύτην.

14 Ἰδοὺ, τρίτον ἑτοίμως ἔχω ἐλθεῖν πρὸς
ὑμᾶς, καὶ οὐ καταναρκήσω ὑμῶν· οὐ γὰρ ζη-
τῶ τὰ ὑμῶν, ἀλλ' ὑμᾶς. οὐ γὰρ ὀφείλει τὰ
τέκνα τοῖς γονεῦσι θησαυρίζειν, ἀλλ' οἱ
γονεῖς τοῖς τέκνοις.

15 Ἐγὼ δὲ ἥδιστα δαπανήσω καὶ ἐκδαπα-
νηθήσομαι ὑπὲρ τῶν ψυχῶν ὑμῶν· εἰ καὶ περισ-
σοτέρως ὑμᾶς ἀγαπῶν, ἧττον ἀγαπῶμαι.

16 Ἔστω

16 Ἔστω δὲ, ἐγὼ οὐ κατεβάρησα ὑμᾶς·
ἀλλʼ ὑπάρχων πανοῦργος, δόλῳ ὑμᾶς ἔλαβον.
17 Μή τινα ὧν ἀπέσταλκα πρὸς ὑμᾶς,
διʼ αὐτοῦ ἐπλεονέκτησα ὑμᾶς;
18 Παρεκάλεσα Τίτον, καὶ συναπέστειλα
τὸν ἀδελφόν. Μή τι ἐπλεονέκτησεν ὑμᾶς
Τίτος; οὐ τῷ αὐτῷ Πνεύματι περιεπατή-
σαμεν; οὐ τοῖς αὐτοῖς ἴχνεσι;
19 Πάλιν δοκεῖτε ὅτι ὑμῖν ἀπολογούμε-
θα; κατενώπιον τοῦ Θεοῦ, ἐν Χριστῷ λαλοῦ-
μεν· τὰ δὲ πάντα, ἀγαπητοὶ, ὑπὲρ τῆς ὑ-
μῶν οἰκοδομῆς.
20 Φοβοῦμαι γὰρ, μήπως ἐλθὼν οὐχ οἵους
θέλω εὕρω ὑμᾶς, κἀγὼ εὑρεθῶ ὑμῖν οἷον
οὐ θέλετε· μήπως ἔρεις, ζῆλοι, θυμοὶ,
ἐριθεῖαι, καταλαλιαὶ, ψιθυρισμοὶ, φυ-
σιώσεις, ἀκαταστασίαι.
21 Μὴ πάλιν ἐλθόντα με ταπεινώσῃ ὁ
Θεός μου πρὸς ὑμᾶς, καὶ πενθήσω πολλοὺς
τῶν προημαρτηκότων, καὶ μὴ μετανοησάντων
ἐπὶ τῇ ἀκαθαρσίᾳ, καὶ πορνείᾳ, καὶ ἀσελγείᾳ
ᾗ ἔπραξαν.

ΚΕΦΑʼΛΑΙΟΝ, ΙΓʹ. 13.

1 ΤΡίτον τοῦτο ἔρχομεν πρὸς ὑμᾶς·
ἐπὶ στόματος δύο μαρτύρων καὶ
τριῶν σταθήσεται πᾶν ῥῆμα.
2 Προείρηκα καὶ προλέγω, ὡς παρὼν τὸ
δεύτερον. καὶ ἀπὼν νῦν γράφω τοῖς προημαρ-
τηκόσι καὶ τοῖς λοιποῖς πᾶσιν, ὅτι ἐὰν ἔλθω
εἰς τὸ πάλιν, οὐ φείσομαι·
3 Ἐπεὶ δοκιμὴν ζητεῖτε τοῦ ἐν ἐμοὶ λα-
λοῦντος Χριστοῦ, ὃς εἰς ὑμᾶς οὐκ ἀσθενεῖ, ἀλ-
λὰ δυνατεῖ ἐν ὑμῖν.

4 Καὶ

4 Καὶ γὰρ εἰ ἐσταυρώθη ἐξ ἀσθενείας, ἀλλὰ ζῇ ἐκ δυνάμεως Θεοῦ· καὶ γὰρ καὶ ἡμεῖς ἀσθενοῦμεν ἐν αὐτῷ, ἀλλὰ ζησόμεθα σὺν αὐτῷ ἐκ δυνάμεως Θεοῦ εἰς ὑμᾶς.

5 Ἑαυτοὺς πειράζετε εἰ ἐστὲ ἐν τῇ πίστει, ἑαυτοὺς δοκιμάζετε, ἢ οὐκ ἐπιγινώσκετε ἑαυτοὺς, ὅτι Ἰησοῦς Χριστὸς ἐν ὑμῖν ἐστιν; εἰ μή τι ἀδόκιμοί ἐστε.

6 Ἐλπίζω δὲ ὅτι γνώσεσθε, ὅτι ἡμεῖς οὐκ ἐσμὲν ἀδόκιμοι.

7 Εὔχομαι δὲ πρὸς τὸν Θεὸν μὴ ποιῆσαι ὑμᾶς κακὸν μηδέν· οὐχ ἵνα ἡμεῖς δόκιμοι φανῶμεν, ἀλλ' ἵνα ὑμεῖς τὸ καλὸν ποιῆτε, ἡμεῖς δὲ ὡς ἀδόκιμοι ὦμεν.

8 Οὐ γὰρ δυνάμεθά τι κατὰ τῆς ἀληθείας, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς ἀληθείας.

9 Χαίρομεν γὰρ ὅταν ἡμεῖς ἀσθενῶμεν, ὑμεῖς δὲ δυνατοὶ ἦτε. τοῦτο δὲ καὶ εὐχόμεθα, τὴν ὑμῶν κατάρτισιν.

10 Διὰ τοῦτο ταῦτα ἀπὼν γράφω, ἵνα παρὼν μὴ ἀποτόμως χρήσωμαι, κατὰ τὴν ἐξουσίαν, ἣν ἔδωκέ μοι ὁ Κύριος εἰς οἰκοδομὴν, καὶ οὐκ εἰς καθαίρεσιν.

11 Λοιπὸν, ἀδελφοὶ, χαίρετε, καταρτίζεσθε, παρακαλεῖσθε, τὸ αὐτὸ φρονεῖτε, εἰρηνεύετε· καὶ ὁ Θεὸς τῆς ἀγάπης καὶ εἰρήνης ἔσται μεθ' ὑμῶν.

12 Ἀσπάσασθε ἀλλήλους ἐν ἁγίῳ φιλήματι· ἀσπάζονται ὑμᾶς οἱ ἅγιοι πάντες.

13 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ, καὶ ἡ κοινωνία τοῦ ἁγίου Πνεύματος μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Κορινθίους δευτέρα ἐγράφη ἀπὸ Φιλίππων τῆς Μακεδονίας, διὰ Τίτου καὶ Λουκᾶ.

ΠΑΥ-

ΠΑΥ'ΛΟΥ τοῦ Α'ΠΟΣΤΟ'ΛΟΥ Η῾ ΠΡΟ'Σ ΓΑΛΑ'ΤΑΣ Ε'ΠΙΣΤΟΛΗ'.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑῦλος Ἀπόστολος (οὐκ ἀπ' ἀν-
θρώπων, οὐδὲ δι' ἀνθρώπου,
ἀλλὰ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ
Θεοῦ Πατρὸς, τοῦ ἐγείραντος αὐτὸν ἐκ νε-
κρῶν,)
2 Καὶ οἱ σὺν ἐμοὶ πάντες ἀδελφοὶ, ταῖς
ἐκκλησίαις τῆς Γαλατίας·
3 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς
καὶ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
4 Τοῦ δόντος ἑαυτὸν ὑπὲρ τῶν ἁμαρτιῶν
ἡμῶν, ὅπως ἐξέληται ἡμᾶς ἐκ τοῦ ἐνεστῶτος
αἰῶνος πονηροῦ, κατὰ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ καὶ
Πατρὸς ἡμῶν.
5 Ὧ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων·
ἀμήν.
6 Θαυμάζω ὅτι οὕτω ταχέως μετατίθεσθε
ἀπὸ τοῦ καλέσαντος ὑμᾶς ἐν χάριτι Χριστοῦ,
εἰς ἕτερον εὐαγγέλιον.
7 Ὃ οὐκ ἔστιν ἄλλο· εἰ μή τινές εἰσιν οἱ
ταράσσοντες ὑμᾶς, καὶ θέλοντες μεταστρέψαι
τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ.
8 Ἀλλὰ καὶ ἐὰν ἡμεῖς ἢ ἄγγελος ἐξ οὐρα-

τοῦ εὐαγγελίζηται ὑμῖν παρ' ὃ εὐηγγελισά-
μεθα ὑμῖν, ἀνάθεμα ἔστω.
9 Ὡς προειρήκαμεν, καὶ ἄρτι πάλιν λέ-
γω, εἴ τις ὑμᾶς εὐαγγελίζεται παρ' ὃ πα-
ρελάβετε, ἀνάθεμα ἔστω.
10 Ἄρτι γὰρ ἀνθρώπους πείθω ἢ τὸν Θεόν;
Ἢ ζητῶ ἀνθρώποις ἀρέσκειν; εἰ γὰρ ἔτι ἀν-
θρώποις ἤρεσκον, Χριστοῦ δοῦλος οὐκ ἂν ἤμην.
11 Γνωρίζω δὲ ὑμῖν, ἀδελφοί, τὸ εὐαγ-
γέλιον τὸ εὐαγγελισθὲν ὑπ' ἐμοῦ, ὅτι οὐκ ἔστι
κατὰ ἄνθρωπον.
12 Οὐδὲ γὰρ ἐγὼ παρὰ ἀνθρώπου παρέ-
λαβον αὐτό, οὔτε ἐδιδάχθην· ἀλλὰ δι' ἀπο-
καλύψεως Ἰησοῦ Χριστοῦ.
13 Ἠκούσατε γὰρ τὴν ἐμὴν ἀναστροφήν
ποτε ἐν τῷ Ἰουδαϊσμῷ, ὅτι καθ' ὑπερβο-
λὴν ἐδίωκον τὴν ἐκκλησίαν τοῦ Θεοῦ, καὶ
ἐπόρθουν αὐτήν.
14 Καὶ προέκοπτον ἐν τῷ Ἰουδαϊσμῷ ὑ-
πὲρ πολλοὺς συνηλικιώτας ἐν τῷ γένει μου,
περισσοτέρως ζηλωτὴς ὑπάρχων τῶν πατρικῶν
μου παραδόσεων.
15 Ὅτε δὲ εὐδόκησεν ὁ Θεὸς ὁ ἀφορίσας
με ἐκ κοιλίας μητρός μου, καὶ καλέσας διὰ
τῆς χάριτος αὐτοῦ,
16 Ἀποκαλύψαι τὸν Υἱὸν αὐτοῦ ἐν ἐμοί,
ἵνα εὐαγγελίζωμαι αὐτὸν ἐν τοῖς ἔθνεσιν,
εὐθέως οὐ προσανεθέμην σαρκὶ καὶ αἵματι.
17 Οὐδὲ ἀνῆλθον εἰς Ἱεροσόλυμα πρὸς
τοὺς πρὸ ἐμοῦ ἀποστόλους· ἀλλ' ἀπῆλθον εἰς Ἀ-
ραβίαν, καὶ πάλιν ὑπέστρεψα εἰς Δαμασκόν.
18 Ἔπειτα μετὰ ἔτη τρία ἀνῆλθον εἰς Ἱε-
ροσόλυμα ἱστορῆσαι Πέτρον· καὶ ἐπέμεινα
πρὸς αὐτὸν ἡμέρας δεκαπέντε.

19 Ἕτερον δὲ τῶν ἀποστόλων οὐκ εἶδον εἰ
μὴ Ἰάκωβον τὸν ἀδελφὸν τοῦ Κυρίου.
20 Ἃ δὲ γράφω ὑμῖν, ἰδοὺ ἐνώπιον τοῦ
Θεοῦ, ὅτι οὐ ψεύδομαι.
21 Ἔπειτα ἦλθον εἰς τὰ κλίματα τῆς
Συρίας καὶ τῆς Κιλικίας.
22 Ἤμην δὲ ἀγνοούμενος τῷ προσώπῳ
ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Ἰουδαίας ταῖς ἐν Χριστῷ.
23 Μόνον δὲ ἀκούοντες ἦσαν· Ὅτι ὁ διώ-
κων ἡμᾶς ποτε, νῦν εὐαγγελίζεται τὴν πί-
στιν ἥν ποτε ἐπόρθει.
24 Καὶ ἐδόξαζον ἐν ἐμοὶ τὸν Θεόν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ἜΠειτα διὰ δεκατεσσάρων ἐτῶν πά-
λιν ἀνέβην εἰς Ἱεροσόλυμα μετὰ
Βαρνάβα, συμπαραλαβὼν καὶ Τίτον.
2 Ἀνέβην δὲ κατὰ ἀποκάλυψιν· καὶ ἀνε-
θέμην αὐτοῖς τὸ εὐαγγέλιον ὃ κηρύσσω ἐν τοῖς
ἔθνεσι· κατ' ἰδίαν δὲ τοῖς δοκοῦσι, μήπως
εἰς κενὸν τρέχω, ἢ ἔδραμον.
3 Ἀλλ' οὐδὲ Τίτος ὁ σὺν ἐμοὶ, Ἕλλην
ὢν, ἠναγκάσθη περιτμηθῆναι.
4 Διὰ δὲ τοὺς παρεισάκτους ψευδαδέλφους,
οἵτινες παρεισῆλθον κατασκοπῆσαι τὴν ἐλευ-
θερίαν ἡμῶν ἣν ἔχομεν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἵνα
ἡμᾶς καταδουλώσωνται.
5 Οἷς οὐδὲ πρὸς ὥραν εἴξαμεν τῇ ὑποτα-
γῇ, ἵνα ἡ ἀλήθεια τοῦ εὐαγγελίου διαμείνῃ
πρὸς ὑμᾶς.
6 Ἀπὸ δὲ τῶν δοκούντων εἶναί τι, ὁποῖοί
ποτε ἦσαν, οὐδέν μοι διαφέρει· πρόσωπον
Θεὸς ἀνθρώπου οὐ λαμβάνει. ἐμοὶ γὰρ οἱ
δοκοῦντες, οὐδὲν προσανέθεντο.

7 Ἀλλὰ τἀναντίον, ἰδόντες ὅτι πεπίστευ-
μαι τὸ εὐαγγέλιον τῆς ἀκροβυστίας, καθὼς
Πέτρος τῆς περιτομῆς.
8 (Ὁ γὰρ ἐνεργήσας Πέτρῳ εἰς ἀποστο-
λὴν τῆς περιτομῆς, ἐνήργησε καὶ ἐμοὶ εἰς τὰ
ἔθνη.)
9 Καὶ γνόντες τὴν χάριν τὴν δοθεῖσάν μοι
Ἰάκωβος καὶ Κηφᾶς καὶ Ἰωάννης, οἱ δοκοῦντες
στύλοι εἶναι, δεξιὰς ἔδωκαν ἐμοὶ καὶ Βαρνά-
βᾳ κοινωνίας· ἵνα ἡμεῖς εἰς τὰ ἔθνη, αὐτοὶ
δὲ εἰς τὴν περιτομήν.
10 Μόνον τῶν πτωχῶν ἵνα μνημονεύωμεν·
ὃ καὶ ἐσπούδασα αὐτὸ τοῦτο ποιῆσαι.
11 Ὅτε δὲ ἦλθε Πέτρος εἰς Ἀντιόχειαν,
κατὰ πρόσωπον αὐτῷ ἀντέστην, ὅτι κατε-
γνωσμένος ἦν.
12 Πρὸ τοῦ γὰρ ἐλθεῖν τινας ἀπὸ Ἰακώ-
βου, μετὰ τῶν ἐθνῶν συνήσθιεν· ὅτε δὲ ἦλ-
θον, ὑπέστελλε καὶ ἀφώριζεν ἑαυτὸν, φοβού-
μενος τοὺς ἐκ περιτομῆς.
13 Καὶ συνυπεκρίθησαν αὐτῷ καὶ οἱ λοι-
ποὶ Ἰουδαῖοι· ὥστε καὶ Βαρνάβας συναπήχθη
αὐτῶν τῇ ὑποκρίσει.
14 Ἀλλ᾽ ὅτε εἶδον ὅτι οὐκ ὀρθοποδοῦσι πρὸς
τὴν ἀλήθειαν τοῦ εὐαγγελίου, εἶπον τῷ Πέ-
τρῳ ἔμπροσθεν πάντων. Εἰ σὺ Ἰουδαῖος ὑπάρ-
χων, ἐθνικῶς ζῇς, καὶ οὐκ Ἰουδαϊκῶς, τί τὰ
ἔθνη ἀναγκάζεις ἰουδαΐζειν;
15 Ἡμεῖς φύσει Ἰουδαῖοι, καὶ οὐκ ἐξ ἐθνῶν
ἁμαρτωλοί.
16 Εἰδότες ὅτι οὐ δικαιοῦται ἄνθρωπος ἐξ
ἔργων νόμου, ἐὰν μὴ διὰ πίστεως Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ, καὶ ἡμεῖς εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν ἐπιστεύσαμεν,
ἵνα δικαιωθῶμεν ἐκ πίστεως Χριστοῦ, καὶ οὐκ

ἐξ ἔργων νόμου· διότι οὐ δικαιωθήσεται ἐξ
ἔργων νόμου πᾶσα σάρξ.
17 Εἰ δὲ ζητοῦντες δικαιωθῆναι ἐν Χριστῷ,
εὑρέθημεν καὶ αὐτοὶ ἁμαρτωλοὶ, ἆρα Χριστὸς
ἁμαρτίας διάκονος; Μὴ γένοιτο.
18 Εἰ γὰρ ἃ κατέλυσα, ταῦτα πάλιν οἰ-
κοδομῶ, παραβάτην ἐμαυτὸν συνίστημι.
19 Ἐγὼ γὰρ διὰ νόμου νόμῳ ἀπέθανον,
α Θεῷ ζήσω.
20 Χριστῷ συνεσταύρωμαι· ζῶ δὲ, οὐκ
ἔτι ἐγὼ, ζῇ δὲ ἐν ἐμοὶ Χριστός· ὃ δὲ νῦν
ζῶ ἐν σαρκὶ, ἐν πίστει ζῶ τῇ τοῦ Υἱοῦ τοῦ
Θεοῦ, τοῦ ἀγαπήσαντός με, καὶ παραδόντος
ἑαυτὸν ὑπὲρ ἐμοῦ.
21 Οὐκ ἀθετῶ τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ· εἰ γὰρ
διὰ νόμου δικαιοσύνη, ἄρα Χριστὸς δωρεὰν
ἀπέθανεν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Ὦ Ἀνόητοι Γαλάται, τίς ὑμᾶς
ἐβάσκανε τῇ ἀληθείᾳ μὴ πεί-
θεσθαι; οἷς κατ' ὀφθαλμοὺς Ἰησοῦς Χριστὸς
προεγράφη, ἐν ὑμῖν ἐσταυρωμένος;
2 Τοῦτο μόνον θέλω μαθεῖν ἀφ' ὑμῶν, ἐξ
ἔργων νόμου τὸ Πνεῦμα ἐλάβετε, ἢ ἐξ ἀ-
κοῆς πίστεως;
3 Οὕτως ἀνόητοί ἐστε; ἐναρξάμενοι Πνεύ-
ματι, νῦν σαρκὶ ἐπιτελεῖσθε;
4 Τοσαῦτα ἐπάθετε εἰκῇ; εἴγε καὶ εἰκῇ.
5 Ὁ οὖν ἐπιχορηγῶν ὑμῖν τὸ Πνεῦμα, καὶ
ἐνεργῶν δυνάμεις ἐν ὑμῖν, ἐξ ἔργων νόμου ἢ
ἐξ ἀκοῆς πίστεως;
6 Καθὼς Ἀβραὰμ ἐπίστευσε τῷ Θεῷ, καὶ
ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην.

7 Γι-

7 Γινώσκετε ἄρα ὅτι οἱ ἐκ πίστεως, ἔτοί
εἰσιν Υἱοὶ Α'βραάμ.
8 Προϊδοῦσα δὲ ἡ γραφὴ ὅτι ἐκ πίστεως
δικαιοῖ τὰ ἔθνη ὁ Θεὸς, προευηγγελίσατο
τῷ Α'βραάμ· Ο'τι ἐνευλογηθήσονται ἐν σοὶ
πάντα τὰ ἔθνη·
9 Ω'στε οἱ ἐκ πίστεως, εὐλογοῦνται σὺν τῷ
πιστῷ Α'βραάμ.
10 Ο'σοι γὰρ ἐξ ἔργων νόμου εἰσὶν, ὑπὸ
κατάραν εἰσί. γέγραπται γάρ· Ε'πικατάρατος
πᾶς ὃς οὐκ ἐμμένει ἐν πᾶσι τοῖς γεγραμμέ-
νοις ἐν τῷ βιβλίῳ τοῦ νόμου, τοῦ ποιῆσαι αὐτά.
11 Ο'τι δὲ ἐν νόμῳ οὐδεὶς δικαιοῦται παρὰ τῷ
Θεῷ, δῆλον, ὅτι ὁ δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται·
12 Ο' δὲ νόμος οὐκ ἔστιν ἐκ πίστεως· ἀλλ' ὁ
ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος, ζήσεται ἐν αὐτοῖς.
13 Χριστὸς ἡμᾶς ἐξηγόρασεν ἐκ τῆς κα-
τάρας τοῦ νόμου, γενόμενος ὑπὲρ ἡμῶν κατά-
ρα. γέγραπται γάρ· Ε'πικατάρατος πᾶς
ὁ κρεμάμενος ἐπὶ ξύλου.
14 Ι'να εἰς τὰ ἔθνη εὐλογία τοῦ Α'βραὰμ
γένηται ἐν Χριστῷ Ι'ησοῦ, ἵνα τὴν ἐπαγγε-
λίαν τοῦ Πνεύματος λάβωμεν διὰ τῆς πίστεως.
15 Α'δελφοὶ, κατὰ ἄνθρωπον λέγω· ὅ-
μως ἀνθρώπου κεκυρωμένην διαθήκην οὐδεὶς
ἀθετεῖ ἢ ἐπιδιατάσσεται.
16 Τῷ δὲ Α'βραὰμ ἐρρήθησαν αἱ ἐπαγ-
γελίαι, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ. οὐ λέγει. Καὶ
τοῖς σπέρμασιν, ὡς ἐπὶ πολλῶν, ἀλλ' ὡς ἐφ'
ἑνός· Καὶ τῷ σπέρματί σου, ὅς ἐστι Χριστός.
17 Τοῦτο δὲ λέγω, διαθήκην προκεκυρω-
μένην ὑπὸ τοῦ Θεοῦ εἰς Χριστὸν, ὁ μετὰ ἔτη τε-
τρακόσια καὶ τριάκοντα γεγονὼς νόμος οὐκ ἀκυ-
ροῖ, εἰς τὸ καταργῆσαι τὴν ἐπαγγελίαν.

18 Εἰ γὰρ ἐκ νόμου ἡ κληρονομία, οὐκ ἔτι ἐξ ἐπαγγελίας· τῷ δὲ Ἀβραὰμ δι᾽ ἐπαγγελίας κεχάρισαι ὁ Θεός.

19 Τί οὖν ὁ νόμος; Τῶν παραβάσεων χάριν προσετέθη, ἄχρις οὗ ἔλθῃ τὸ σπέρμα ᾧ ἐπήγγελται, διαταγεὶς δι᾽ ἀγγέλων, ἐν χειρὶ μεσίτου.

20 Ὁ δὲ μεσίτης, ἑνὸς οὐκ ἔστιν· ὁ δὲ Θεὸς, εἷς ἐστιν.

21 Ὁ οὖν νόμος κατὰ τῶν ἐπαγγελιῶν τοῦ Θεοῦ; Μὴ γένοιτο. εἰ γὰρ ἐδόθη νόμος ὁ δυνάμενος ζωοποιῆσαι, ὄντως ἂν ἐκ νόμου ἦν ἡ δικαιοσύνη.

22 Ἀλλὰ συνέκλεισεν ἡ γραφὴ τὰ πάντα ὑπὸ ἁμαρτίαν, ἵνα ἡ ἐπαγγελία ἐκ πίστεως Ἰησοῦ Χριστοῦ δοθῇ τοῖς πιστεύουσι.

23 Πρὸ τοῦ δὲ ἐλθεῖν τὴν πίστιν, ὑπὸ νόμον ἐφρουρούμεθα, συγκεκλεισμένοι εἰς τὴν μέλλουσαν πίστιν ἀποκαλυφθῆναι.

24 Ὥστε ὁ νόμος παιδαγωγὸς ἡμῶν γέγονεν εἰς Χριστὸν, ἵνα ἐκ πίστεως δικαιωθῶμεν.

25 Ἐλθούσης δὲ τῆς πίστεως, οὐκ ἔτι ὑπὸ παιδαγωγόν ἐσμεν.

26 Πάντες γὰρ Υἱοὶ Θεοῦ ἐστε διὰ τῆς πίστεως ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

27 Ὅσοι γὰρ εἰς Χριστὸν ἐβαπτίσθητε, Χριστὸν ἐνεδύσασθε.

28 Οὐκ ἔνι Ἰουδαῖος, οὐδὲ Ἕλλην· οὐκ ἔνι δοῦλος, οὐδὲ ἐλεύθερος· οὐκ ἔνι ἄρσεν καὶ θῆλυ· πάντες γὰρ ὑμεῖς εἷς ἐστε ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

29 Εἰ δὲ ὑμεῖς Χριστοῦ, ἄρα τοῦ Ἀβραὰμ σπέρμα ἐστὲ, καὶ κατ᾽ ἐπαγγελίαν κληρονόμοι.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΛΕ'γω δὲ, ἐφ' ὅσον χρόνον ὁ κληρο-
νόμος νήπιός ἐστιν, οὐδὲν διαφέρει
δούλου, κύριος πάντων ὤν.
2 Α'λλὰ ὑπὸ ἐπιτρόπους ἐστὶ καὶ οἰκονόμους
ἄχρι τῆς προθεσμίας τοῦ Πατρός.
3 Οὕτω καὶ ἡμεῖς, ὅτε ἦμεν νήπιοι, ὑπὸ
τὰ στοιχεῖα τοῦ κόσμου ἦμεν δεδουλωμένοι.
4 Ο'τε δὲ ἦλθε τὸ πλήρωμα τοῦ χρόνου,
ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτοῦ γενόμε-
νον ἐκ γυναικὸς, γενόμενον ὑπὸ νόμον.
5 Ι"να τοὺς ὑπὸ νόμον ἐξαγοράσῃ, ἵνα
τὴν Υἱοθεσίαν ἀπολάβωμεν.
6 Ο"τι δέ ἐστε Υἱοὶ, ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς
τὸ Πνεῦμα τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ εἰς τὰς καρδίας ὑ-
μῶν, κρᾶζον, Α'ββᾶ, Ὁ Πατήρ.
7 Ω"στε οὐκ ἔτι εἶ δοῦλος, ἀλλ' Υἱός· εἰ
δὲ Υἱὸς, καὶ κληρονόμος Θεοῦ διὰ Χριστοῦ.
8 Α'λλὰ τότε μὲν οὐκ εἰδότες Θεὸν, ἐδου-
λεύσατε τοῖς μὴ φύσει οὖσι θεοῖς.
9 Νῦν δὲ, γνόντες Θεὸν, μᾶλλον δὲ γνω-
σθέντες ὑπὸ Θεοῦ, πῶς ἐπιστρέφετε πάλιν ἐπὶ
τὰ ἀσθενῆ καὶ πτωχὰ στοιχεῖα, οἷς πάλιν ἄ-
νωθεν δουλεύειν θέλετε;
10 Η'μέρας παρατηρεῖσθε, καὶ μῆνας, καὶ
καιροὺς, καὶ ἐνιαυτούς.
11 Φοβοῦμαι ὑμᾶς, μήπως εἰκῇ κεκο-
πίακα εἰς ὑμᾶς.
12 Γίνεσθε ὡς ἐγὼ, ὅτι κἀγὼ ὡς ὑμεῖς.
ἀδελφοὶ, δέομαι ὑμῶν. οὐδέν με ἠδικήσατε.
13 Οἴδατε δὲ ὅτι δι' ἀσθένειαν τῆς σαρκὸς
εὐηγγελισάμην ὑμῖν τὸ πρότερον.
14 Καὶ τὸν πειρασμόν μου τὸν ἐν τῇ σαρκί

μου οὐκ ἐξουθενήσατε, οὐδὲ ἐξεπτύσατε·
ἀλλ' ὡς ἄγγελον Θεοῦ ἐδέξασθέ με, ὡς
Χριστὸν Ἰησοῦν.
15 Τίς οὖν ἦν ὁ μακαρισμὸς ὑμῶν; μαρ-
τυρῶ γὰρ ὑμῖν ὅτι, εἰ δυνατὸν, τοὺς ὀφθαλ-
μοὺς ὑμῶν ἐξορύξαντες ἂν ἐδώκατέ μοι.
16 Ὥστε ἐχθρὸς ὑμῶν γέγονα ἀληθεύων
ὑμῖν;
17 Ζηλοῦσιν ὑμᾶς οὐ καλῶς, ἀλλὰ ἐκκλεῖ-
σαι ἡμᾶς θέλουσιν, ἵνα αὐτοὺς ζηλοῦτε.
18 Καλὸν δὲ τὸ ζηλοῦσθαι ἐν καλῷ πάντο-
τε, καὶ μὴ μόνον ἐν τῷ παρεῖναί με πρὸς ὑμᾶς.
19 Τεκνία μου, οὓς πάλιν ὠδίνω, ἄχρις
οὗ μορφωθῇ Χριστὸς ἐν ὑμῖν.
20 Ἤθελον δὲ παρεῖναι πρὸς ὑμᾶς ἄρ-
τι, καὶ ἀλλάξαι τὴν φωνήν μου· ὅτι ἀποροῦ-
μαι ἐν ὑμῖν.
21 Λέγετέ μοι οἱ ὑπὸ νόμον θέλοντες εἶ-
ναι, τὸν νόμον οὐκ ἀκούετε;
22 Γέγραπται γάρ· ὅτι Ἀβραὰμ δύο
Υἱοὺς ἔσχεν· ἕνα ἐκ τῆς παιδίσκης, καὶ ἕνα
ἐκ τῆς ἐλευθέρας.
23 Ἀλλ' ὁ μὲν ἐκ τῆς παιδίσκης, κατὰ
σάρκα γεγέννηται· ὁ δὲ ἐκ τῆς ἐλευθέρας,
διὰ τῆς ἐπαγγελίας.
24 Ἅτινά ἐστιν ἀλληγορούμενα· αὗται γάρ
εἰσιν αἱ δύο διαθῆκαι· μία μὲν ἀπὸ ὄρους Σι-
νᾶ, εἰς δουλείαν γεννῶσα, ἥτις ἐστὶν Ἄγαρ.
25 Τὸ γὰρ Ἄγαρ Σινᾶ ὄρος ἐστὶν ἐν τῇ
Ἀραβίᾳ, συστοιχεῖ δὲ τῇ νῦν Ἱερουσαλὴμ,
δουλεύει δὲ μετὰ τῶν τέκνων αὐτῆς.
26 Ἡ δὲ ἄνω Ἱερουσαλὴμ, ἐλευθέρα ἐστὶν,
ἥτις ἐστὶ μήτηρ πάντων ἡμῶν.
27 Γέγραπται γάρ· Εὐφράνθητι στεῖρα

ἡ οὐ τίκτουσα· ῥῆξον καὶ βόησον ἡ οὐκ ὠδίνουσα,
ὅτι πολλὰ τὰ τέκνα τῆς ἐρήμου μᾶλλον ἢ τῆς
ἐχούσης τὸν ἄνδρα.
28 Ἡμεῖς δὲ, ἀδελφοὶ, κατὰ Ἰσαὰκ,
ἐπαγγελίας τέκνα ἐσμέν.
29 Ἀλλ' ὥσπερ τότε ὁ κατὰ σάρκα γεννη-
θεὶς, ἐδίωκε τὸν κατὰ Πνεῦμα· οὕτω καὶ νῦν.
30 Ἀλλὰ τί λέγει ἡ γραφή; Ἔκβαλε
τὴν παιδίσκην καὶ τὸν Υἱὸν αὐτῆς· οὐ γὰρ μὴ
κληρονομήσῃ ὁ Υἱὸς τῆς παιδίσκης μετὰ τοῦ
Υἱοῦ τῆς ἐλευθέρας.
31 Ἄρα, ἀδελφοὶ, οὐκ ἐσμὲν παιδίσκης
τέκνα, ἀλλὰ τῆς ἐλευθέρας.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 ΤΗ͂Ι ἐλευθερίᾳ οὖν ᾗ Χριστὸς ἡμᾶς
ἠλευθέρωσε, στήκετε, καὶ μὴ πά-
λιν ζυγῷ δουλείας ἐνέχεσθε.
2 Ἴδε ἐγὼ Παῦλος λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐὰν
περιτέμνησθε, Χριστὸς ὑμᾶς οὐδὲν ὠφελήσει.
3 Μαρτύρομαι δὲ πάλιν παντὶ ἀνθρώπῳ
περιτεμνομένῳ, ὅτι ὀφειλέτης ἐστὶν ὅλον τὸν
νόμον ποιῆσαι.
4 Κατηργήθητε ἀπὸ τοῦ Χριστοῦ οἵτινες ἐν
νόμῳ δικαιοῦσθε, τῆς χάριτος ἐξεπέσατε.
5 Ἡμεῖς γὰρ Πνεύματι ἐκ πίστεως ἐλπί-
δα δικαιοσύνης ἀπεκδεχόμεθα.
6 Ἐν γὰρ Χριστῷ Ἰησοῦ οὔτε περιτομή τι
ἰσχύει, οὔτε ἀκροβυστία, ἀλλὰ πίστις δι' ἀ-
γάπης ἐνεργουμένη.
7 Ἐτρέχετε καλῶς· τίς ὑμᾶς ἀνέκοψε
τῇ ἀληθείᾳ μὴ πείθεσθαι;
8 Ἡ πεισμονὴ οὐκ ἐκ τοῦ καλοῦντος ὑμᾶς.
9 Μικρὰ ζύμη ὅλον τὸ φύραμα ζυμοῖ.

10 Ἐγὼ πέποιθα εἰς ὑμᾶς ἐν Κυρίῳ, ὅτι
οὐδὲν ἄλλο φρονήσετε· ὁ δὲ ταράσσων ὑμᾶς
βαστάσει τὸ κρίμα, ὅστις ἂν ᾖ.
11 Ἐγὼ δὲ, ἀδελφοὶ, εἰ περιτομὴν ἔτι
κηρύσσω, τί ἔτι διώκομαι; ἄρα κατήργηται
τὸ σκάνδαλον τοῦ σταυροῦ.
12 Ὄφελον καὶ ἀποκόψονται οἱ ἀναστατοῦν-
τες ἡμᾶς.
13 Ὑμεῖς γὰρ ἐπ' ἐλευθερίᾳ ἐκλήθητε,
ἀδελφοί· μόνον μὴ τὴν ἐλευθερίαν εἰς ἀφορ-
μὴν τῇ σαρκὶ, ἀλλὰ διὰ τῆς ἀγάπης δου-
λεύετε ἀλλήλοις.
14 Ὁ γὰρ πᾶς νόμος ἐν ἑνὶ λόγῳ πλη-
ροῦται, ἐν τῷ, Ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου
ὡς ἑαυτόν.
15 Εἰ δὲ ἀλλήλους δάκνετε καὶ κατεσθίετε,
βλέπετε μὴ ὑπὸ ἀλλήλων ἀναλωθῆτε.
16 Λέγω δέ· Πνεύματι περιπατεῖτε,
καὶ ἐπιθυμίαν σαρκὸς οὐ μὴ τελέσητε.
17 Ἡ γὰρ σὰρξ ἐπιθυμεῖ κατὰ τοῦ Πνεύ-
ματος· τὸ δὲ Πνεῦμα κατὰ τῆς σαρκός·
ταῦτα δὲ ἀντίκειται ἀλλήλοις, ἵνα μὴ ἃ ἂν
θέλητε, ταῦτα ποιῆτε.
18 Εἰ δὲ Πνεύματι ἄγεσθε, οὐκ ἐστὲ ὑπὸ
νόμον.
19 Φανερὰ δέ ἐστι τὰ ἔργα τῆς σαρκός·
ἅτινά ἐστι, μοιχεία, πορνεία, ἀκαθαρσία,
ἀσέλγεια,
20 Εἰδωλολατρεία, φαρμακεία, ἔχθραι,
ἔρεις, ζῆλοι, θυμοὶ, ἐριθεῖαι, διχοστα-
σίαι, αἱρέσεις,
21 Φθόνοι, φόνοι, μέθαι, κῶμοι, καὶ
τὰ ὅμοια τούτοις, ἃ προλέγω ὑμῖν, καθὼς
καὶ προεῖπον, ὅτι οἱ τὰ τοιαῦτα πράσσον-

τες

τες βασιλείαν Θεοῦ οὐ κληρονομήσουσιν.
22 Ὁ δὲ καρπὸς τοῦ Πνεύματός ἐστιν ἀγά-
πη, χαρά, εἰρήνη, μακροθυμία, χρηστότης,
ἀγαθωσύνη, πίστις, πραότης, ἐγκράτεια.
23 Κατὰ τῶν τοιούτων οὐκ ἔστι νόμος.
24 Οἱ δὲ τοῦ Χριστοῦ, τὴν σάρκα ἐσταύρω-
σαν σὺν τοῖς παθήμασι καὶ ταῖς ἐπιθυμίαις.
25 Εἰ ζῶμεν Πνεύματι, Πνεύματι καὶ
στοιχῶμεν.
26 Μὴ γινώμεθα κενόδοξοι, ἀλλήλους
προκαλούμενοι, ἀλλήλοις φθονοῦντες.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ς'. 6.

1 Ἀδελφοί, ἐὰν καὶ προληφθῇ ἄν-
θρωπος ἔν τινι παραπτώματι,
ὑμεῖς οἱ πνευματικοὶ καταρτίζετε τὸν τοιοῦτον
ἐν Πνεύματι πραότητος· σκοπῶν σεαυτὸν,
μὴ καὶ σὺ πειρασθῇς.
2 Ἀλλήλων τὰ βάρη βαστάζετε, καὶ οὕτως
ἀναπληρώσατε τὸν νόμον τοῦ Χριστοῦ.
3 Εἰ γὰρ δοκεῖ τις εἶναί τι, μηδὲν ὤν,
ἑαυτὸν φρεναπατᾷ.
4 Τὸ δὲ ἔργον ἑαυτοῦ δοκιμαζέτω ἕκαστος,
καὶ τότε εἰς ἑαυτὸν μόνον τὸ καύχημα ἕξει, καὶ
οὐκ εἰς τὸν ἕτερον.
5 Ἕκαστος γὰρ τὸ ἴδιον φορτίον βαστάσει.
6 Κοινωνείτω δὲ ὁ κατηχούμενος τὸν λόγον
τῷ κατηχοῦντι ἐν πᾶσιν ἀγαθοῖς.
7 Μὴ πλανᾶσθε· Θεὸς οὐ μυκτηρίζεται· ὃ
γὰρ ἐὰν σπείρῃ ἄνθρωπος, τοῦτο καὶ θερίσει.
8 Ὅτι ὁ σπείρων εἰς τὴν σάρκα ἑαυτοῦ,
ἐκ τῆς σαρκὸς θερίσει φθοράν· ὁ δὲ σπείρων
εἰς τὸ Πνεῦμα, ἐκ τοῦ Πνεύματος θερίσει
ζωὴν αἰώνιον.

9 Τὸ δὲ καλὸν ποιοῦντες μὴ ἐκκακῶμεν·
καιρῷ γὰρ ἰδίῳ θερίσομεν, μὴ ἐκλυόμενοι.
10 Ἄρα οὖν ὡς καιρὸν ἔχομεν, ἐργαζώ-
μεθα τὸ ἀγαθὸν πρὸς πάντας, μάλιστα δὲ
πρὸς τοὺς οἰκείους τῆς πίστεως.
11 Ἴδετε πηλίκοις ὑμῖν γράμμασιν ἔ-
γραψα τῇ ἐμῇ χειρί.
12 Ὅσοι θέλουσιν εὐπροσωπῆσαι ἐν σαρ-
κὶ, οὗτοι ἀναγκάζουσιν ὑμᾶς περιτέμνεσθαι,
μόνον ἵνα μὴ τῷ σταυρῷ τοῦ Χριστοῦ διώκωνται.
13 Οὐδὲ γὰρ οἱ περιτεμνόμενοι αὐτοὶ
νόμον φυλάσσουσιν· ἀλλὰ θέλουσιν ὑμᾶς πε-
ριτέμνεσθαι, ἵνα ἐν τῇ ἡμετέρᾳ σαρκὶ καυ-
χήσωνται.
14 Ἐμοὶ δὲ μὴ γένοιτο καυχᾶσθαι εἰ μὴ
ἐν τῷ σταυρῷ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ,
δι' οὗ ἐμοὶ κόσμος ἐσταύρωται, κἀγὼ τῷ
κόσμῳ.
15 Ἐν γὰρ Χριστῷ Ἰησοῦ οὔτε περιτομή τι
ἰσχύει, οὔτε ἀκροβυστία, ἀλλὰ καινὴ κτίσις.
16 Καὶ ὅσοι τῷ κανόνι τούτῳ στοιχήσουσιν,
εἰρήνη ἐπ' αὐτοὺς καὶ ἔλεος, καὶ ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ
τοῦ Θεοῦ.
17 Τοῦ λοιποῦ, κόπους μοι μηδεὶς παρε-
χέτω· ἐγὼ γὰρ τὰ στίγματα τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ
ἐν τῷ σώματί μου βαστάζω.
18 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
μετὰ τοῦ Πνεύματος ὑμῶν, ἀδελφοί. Ἀμήν.

Πρὸς Γαλάτας ἐγράφη ἀπὸ Ῥώμης.

ΠΑΥ'ΛΟΥ τοῦ Α'ΠΟΣΤΟ'ΛΟΥ

Η' ΠΡΟ'Σ Ε'ΦΕΣΙ'ΟΥΣ

Ε'ΠΙΣΤΟΛΗ'.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑΥ'ΛΟΣ Ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ, διὰ θελήματος Θεοῦ,
τοῖς ἁγίοις τοῖς οὖσιν ἐν Ἐφέ-
σῳ, καὶ πιστοῖς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς
ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ εὐλογήσας ἡμᾶς ἐν
πάσῃ εὐλογίᾳ Πνευματικῇ ἐν τοῖς ἐπουρα-
νίοις ἐν Χριστῷ.
4 Καθὼς ἐξελέξατο ἡμᾶς ἐν αὐτῷ πρὸ
καταβολῆς κόσμου, εἶναι ἡμᾶς ἁγίους καὶ ἀ-
μώμους κατενώπιον αὐτοῦ ἐν ἀγάπῃ.
5 Προορίσας ἡμᾶς εἰς Υἱοθεσίαν διὰ
Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς αὐτὸν, κατὰ τὴν εὐδοκίαν
τοῦ θελήματος αὐτοῦ,
6 Εἰς ἔπαινον δόξης τῆς χάριτος αὐτοῦ,
ἐν ᾗ ἐχαρίτωσεν ἡμᾶς ἐν τῷ ἠγαπημένῳ.
7 Ἐν ᾧ ἔχομεν τὴν ἀπολύτρωσιν διὰ τοῦ
αἵματος αὐτοῦ, τὴν ἄφεσιν τῶν παραπτωμά-
των, κατὰ τὸν πλοῦτον τῆς χάριτος αὐτοῦ.
8 Ἧς ἐπερίσσευσεν εἰς ἡμᾶς ἐν πάσῃ σο-
φίᾳ καὶ φρονήσει.

9 Γνω-

9 Γνωρίσας ἡμῖν τὸ μυστήριον τοῦ θελήμα-
τος αὐτοῦ κατὰ τὴν εὐδοκίαν αὐτοῦ, ἣν προέ-
θετο ἐν αὐτῷ,
10 Εἰς οἰκονομίαν τοῦ πληρώματος τῶν και-
ρῶν, ἀνακεφαλαιώσασθαι τὰ πάντα ἐν τῷ
Χριστῷ, τά τε ἐν τοῖς οὐρανοῖς καὶ τὰ ἐπὶ τῆς γῆς.
11 Ἐν αὐτῷ, ἐν ᾧ καὶ ἐκληρώθημεν, προο-
ρισθέντες κατὰ πρόθεσιν τοῦ τὰ πάντα ἐνεργοῦν-
τος κατὰ τὴν βουλὴν τοῦ θελήματος αὐτοῦ.
12 Εἰς τὸ εἶναι ἡμᾶς εἰς ἔπαινον τῆς δόξης
αὐτοῦ, τοὺς προηλπικότας ἐν τῷ Χριστῷ.
13 Ἐν ᾧ καὶ ὑμεῖς, ἀκούσαντες τὸν λόγον
τῆς ἀληθείας, τὸ εὐαγγέλιον τῆς σωτηρίας
ὑμῶν· ἐν ᾧ καὶ πιστεύσαντες ἐσφραγίσθητε τῷ
Πνεύματι τῆς ἐπαγγελίας τῷ ἁγίῳ·
14 Ὅς ἐστιν ἀῤῥαβὼν τῆς κληρονομίας ἡ-
μῶν, εἰς ἀπολύτρωσιν τῆς περιποιήσεως,
εἰς ἔπαινον τῆς δόξης αὐτοῦ.
15 Διὰ τοῦτο κἀγώ, ἀκούσας τὴν καθ' ὑ-
μᾶς πίστιν ἐν τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦ, καὶ τὴν ἀγά-
πην τὴν εἰς πάντας τοὺς ἁγίους,
16 Οὐ παύομαι εὐχαριστῶν ὑπὲρ ὑμῶν,
μνείαν ὑμῶν ποιούμενος ἐπὶ τῶν προσευχῶν μου·
17 Ἵνα ὁ Θεὸς τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ, ὁ Πατὴρ τῆς δόξης, δῴη ὑμῖν Πνεῦμα
σοφίας καὶ ἀποκαλύψεως, ἐν ἐπιγνώσει αὐτοῦ.
18 Πεφωτισμένους τοὺς ὀφθαλμοὺς τῆς δια-
νοίας ὑμῶν, εἰς τὸ εἰδέναι ὑμᾶς τίς ἐστιν ἡ
ἐλπὶς τῆς κλήσεως αὐτοῦ, καὶ τίς ὁ πλοῦτος
τῆς δόξης τῆς κληρονομίας αὐτοῦ ἐν τοῖς ἁγίοις.
19 Καὶ τί τὸ ὑπερβάλλον μέγεθος τῆς
δυνάμεως αὐτοῦ εἰς ἡμᾶς τοὺς πιστεύοντας κατὰ
τὴν ἐνέργειαν τοῦ κράτους τῆς ἰσχύος αὐτοῦ,
20 Ἣν ἐνήργησεν ἐν τῷ Χριστῷ, ἐγείρας
αὐ-

αὐτὸν ἐκ νεκρῶν, καὶ ἐκάθισεν ἐν δεξιᾷ αὐτοῦ
ἐν τοῖς ἐπουρανίοις,

21 Ὑπεράνω πάσης ἀρχῆς καὶ ἐξουσίας καὶ
δυνάμεως καὶ κυριότητος, καὶ παντὸς ὀνόματος
ὀνομαζομένου οὐ μόνον ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ, ἀλ-
λὰ καὶ ἐν τῷ μέλλοντι.

22 Καὶ πάντα ὑπέταξεν ὑπὸ τοὺς πόδας
αὐτοῦ· καὶ αὐτὸν ἔδωκε κεφαλὴν ὑπὲρ πάντα
τῇ ἐκκλησίᾳ,

23 Ἥτις ἐστὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ, τὸ πλήρω-
μα τοῦ πάντα ἐν πᾶσι πληρουμένου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β΄. 2.

1 Καὶ ὑμᾶς ὄντας νεκροὺς τοῖς παρα-
πτώμασι καὶ ταῖς ἁμαρτίαις·

2 Ἐν αἷς ποτε περιεπατήσατε κατὰ τὸν
αἰῶνα τοῦ κόσμου τούτου, κατὰ τὸν ἄρχοντα τῆς
ἐξουσίας τοῦ ἀέρος, τοῦ Πνεύματος τοῦ νῦν ἐνερ-
γοῦντος ἐν τοῖς Υἱοῖς τῆς ἀπειθείας,

3 Ἐν οἷς καὶ ἡμεῖς πάντες ἀνεστράφημέν
ποτε ἐν ταῖς ἐπιθυμίαις τῆς σαρκὸς ἡμῶν,
ποιοῦντες τὰ θελήματα τῆς σαρκὸς καὶ τῶν δια-
νοιῶν· καὶ ἦμεν τέκνα φύσει ὀργῆς, ὡς καὶ οἱ λοιποί.

4 Ὁ δὲ Θεὸς, πλούσιος ὢν ἐν ἐλέει, διὰ
τὴν πολλὴν ἀγάπην αὐτοῦ ἣν ἠγάπησεν ἡμᾶς.

5 Καὶ ὄντας ἡμᾶς νεκροὺς τοῖς παραπτώ-
μασι, συνεζωοποίησε τῷ Χριστῷ· (χάριτί
ἐστε σεσωσμένοι.)

6 Καὶ συνήγειρε, καὶ συνεκάθισεν ἐν τοῖς
ἐπουρανίοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ·

7 Ἵνα ἐνδείξηται ἐν τοῖς αἰῶσι τοῖς ἐπερ-
χομένοις τὸν ὑπερβάλλοντα πλοῦτον τῆς χά-
ριτος αὐτοῦ, ἐν χρηστότητι ἐφ᾽ ἡμᾶς ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ.

8 Τῇ γὰρ χάριτί ἐστε σεσωσμένοι διὰ τῆς
πίστεως, καὶ τοῦτο οὐκ ἐξ ὑμῶν· Θεοῦ τὸ δῶρον·
9 Οὐκ ἐξ ἔργων, ἵνα μήτις καυχήσηται.
10 Αὐτοῦ γάρ ἐσμεν ποίημα, κτισθέντες
ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ ἐπὶ ἔργοις ἀγαθοῖς, οἷς
προητοίμασεν ὁ Θεὸς, ἵνα ἐν αὐτοῖς περι-
πατήσωμεν.
11 Διὸ μνημονεύετε, ὅτι ὑμεῖς ποτε τὰ ἔ-
θνη ἐν σαρκὶ, οἱ λεγόμενοι ἀκροβυστία ὑπὸ τῆς
λεγομένης περιτομῆς ἐν σαρκὶ χειροποιήτου.
12 Ὅτι ἦτε ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ χωρὶς
Χριστοῦ, ἀπηλλοτριωμένοι τῆς πολιτείας τοῦ
Ἰσραὴλ, καὶ ξένοι τῶν διαθηκῶν τῆς ἐπαγ-
γελίας, ἐλπίδα μὴ ἔχοντες, καὶ ἄθεοι ἐν
τῷ κόσμῳ.
13 Νυνὶ δὲ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὑμεῖς οἱ
ποτὲ ὄντες μακρὰν, ἐγγὺς ἐγενήθητε ἐν τῷ
αἵματι τοῦ Χριστοῦ.
14 Αὐτὸς γάρ ἐστιν ἡ εἰρήνη ἡμῶν, ὁ
ποιήσας τὰ ἀμφότερα ἓν, καὶ τὸ μεσότοιχον
τοῦ φραγμοῦ λύσας·
15 Τὴν ἔχθραν ἐν τῇ σαρκὶ αὐτοῦ, τὸν
νόμον τῶν ἐντολῶν ἐν δόγμασι καταργήσας·
ἵνα τοὺς δύο κτίσῃ ἐν ἑαυτῷ εἰς ἕνα καινὸν
ἄνθρωπον, ποιῶν εἰρήνην,
16 Καὶ ἀποκαταλλάξῃ τοὺς ἀμφοτέρους ἐν
ἑνὶ σώματι τῷ Θεῷ διὰ τοῦ σταυροῦ, ἀποκτεί-
νας τὴν ἔχθραν ἐν αὐτῷ.
17 Καὶ ἐλθὼν εὐηγγελίσατο εἰρήνην ὑ-
μῖν τοῖς μακρὰν, καὶ τοῖς ἐγγύς·
18 Ὅτι δι' αὐτοῦ ἔχομεν τὴν προσαγωγὴν
οἱ ἀμφότεροι ἐν ἑνὶ Πνεύματι πρὸς τὸν πατέρα.
19 Ἄρα οὖν οὐκέτι ἐστὲ ξένοι καὶ πάροικοι ἀλ-
λὰ συμπολῖται τῶν ἁγίων καὶ οἰκεῖοι τοῦ Θεοῦ,

20 Ἐποι-

20 Ἐποικοδομηθέντες ἐπὶ τῷ θεμελίῳ
τῶν ἀποστόλων καὶ προφητῶν, ὄντος ἀκρογω-
νιαίου αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ.
21 Ἐν ᾧ πᾶσα ἡ οἰκοδομὴ συναρμολο-
γουμένη αὔξει εἰς ναὸν ἅγιον ἐν Κυρίῳ.
22 Ἐν ᾧ καὶ ὑμεῖς συνοικοδομεῖσθε εἰς κα-
τοικητήριον τοῦ Θεοῦ ἐν Πνεύματι.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΤΟύτου χάριν ἐγὼ Παῦλος ὁ δέσ-
μιος τοῦ Χριστοῦ Ἰησοῦ ὑπὲρ ὑμῶν
τῶν ἐθνῶν.
2 Εἴγε ἠκούσατε τὴν οἰκονομίαν τῆς χά-
ριτος τοῦ Θεοῦ τῆς δοθείσης μοι εἰς ὑμᾶς.
3 Ὅτι κατὰ ἀποκάλυψιν ἐγνώρισέ μοι τὸ
μυστήριον, καθὼς προέγραψα ἐν ὀλίγῳ.
4 Πρὸς ὃ δύνασθε ἀναγινώσκοντες νοῆσαι
τὴν σύνεσίν μου ἐν τῷ μυστηρίῳ τοῦ Χριστοῦ,
5 Ὃ ἐν ἑτέραις γενεαῖς οὐκ ἐγνωρίσθη τοῖς
Υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων, ὡς νῦν ἀπεκαλύφθη
τοῖς ἁγίοις ἀποστόλοις αὐτοῦ καὶ προφήταις ἐν
Πνεύματι.
6 Εἶναι τὰ ἔθνη συγκληρονόμα καὶ σύσσω-
μα, καὶ συμμέτοχα τῆς ἐπαγγελίας αὐτοῦ
ἐν τῷ Χριστῷ, διὰ τοῦ εὐαγγελίου·
7 Οὗ ἐγενόμην διάκονος κατὰ τὴν δωρεὰν
τῆς χάριτος τοῦ Θεοῦ τὴν δοθεῖσάν μοι κατὰ
τὴν ἐνέργειαν τῆς δυνάμεως αὐτοῦ.
8 Ἐμοὶ τῷ ἐλαχιστοτέρῳ πάντων τῶν ἁ-
γίων ἐδόθη ἡ χάρις αὕτη, ἐν τοῖς ἔθνεσιν
εὐαγγελίσασθαι τὸν ἀνεξιχνίαστον πλοῦτον τοῦ
Χριστοῦ,
9 Καὶ φωτίσαι πάντας τίς ἡ κοινωνία τοῦ
μυστηρίου τοῦ ἀποκεκρυμμένου ἀπὸ τῶν αἰώνων

ἐν τῷ Θεῷ τῷ τὰ πάντα κτίσαντι διὰ Ἰησοῦ
Χριστοῦ.
10 Ἵνα γνωρισθῇ νῦν ταῖς ἀρχαῖς καὶ ταῖς
ἐξουσίαις ἐν τοῖς ἐπουρανίοις, διὰ τῆς ἐκκλη-
σίας, ἡ πολυποίκιλος σοφία τοῦ Θεοῦ.
11 Κατὰ πρόθεσιν τῶν αἰώνων, ἣν ἐποίη-
σεν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.
12 Ἐν ᾧ ἔχομεν τὴν παῤῥησίαν καὶ τὴν
προσαγωγὴν ἐν πεποιθήσει, διὰ τῆς πί-
στεως αὐτοῦ.
13 Διὸ αἰτοῦμαι μὴ ἐκκακεῖν ἐν ταῖς θλί-
ψεσί μου ὑπὲρ ὑμῶν, ἥτις ἐστὶ δόξα ὑμῶν.
14 Τούτου χάριν κάμπτω τὰ γόνατά μου πρὸς
τὸν Πατέρα τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ,
15 Ἐξ οὗ πᾶσα πατριὰ ἐν οὐρανοῖς καὶ ἐπὶ
γῆς ὀνομάζεται,
16 Ἵνα δῴη ὑμῖν κατὰ τὸν πλοῦτον τῆς
δόξης αὐτοῦ, δυνάμει κραταιωθῆναι διὰ τοῦ
Πνεύματος αὐτοῦ εἰς τὸν ἔσω ἄνθρωπον.
17 Κατοικῆσαι τὸν Χριστὸν διὰ τῆς πίστεως
ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν·
18 Ἐν ἀγάπῃ ἐῤῥιζωμένοι καὶ τεθεμελιω-
μένοι· ἵνα ἐξισχύσητε καταλαβέσθαι σὺν πᾶ-
σι τοῖς ἁγίοις, τί τὸ πλάτος καὶ μῆκος, καὶ
βάθος καὶ ὕψος,
19 Γνῶναί τε τὴν ὑπερβάλλουσαν τῆς γνώ-
σεως ἀγάπην τοῦ Χριστοῦ· ἵνα πληρωθῆτε εἰς
πᾶν τὸ πλήρωμα τοῦ Θεοῦ.
20 Τῷ δὲ δυναμένῳ ὑπὲρ πάντα ποιῆσαι
ὑπὲρ ἐκπερισσοῦ ὧν αἰτούμεθα ἢ νοοῦμεν, κατὰ
τὴν δύναμιν τὴν ἐνεργουμένην ἐν ἡμῖν,
21 Αὐτῷ ἡ δόξα ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ἐν Χρι-
στῷ Ἰησοῦ, εἰς πάσας τὰς γενεὰς τοῦ αἰῶνος
τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Δ΄. 4.

1 ΠΑρακαλῶ οὖν ὑμᾶς ἐγὼ ὁ δέσμιος
ἐν Κυρίῳ, ἀξίως περιπατῆσαι
τῆς κλήσεως ἧς ἐκλήθητε,
2 Μετὰ πάσης ταπεινοφροσύνης καὶ πραό-
τητος, μετὰ μακροθυμίας, ἀνεχόμενοι ἀλ-
λήλων ἐν ἀγάπῃ.
3 Σπουδάζοντες τηρεῖν τὴν ἑνότητα τοῦ
Πνεύματος ἐν τῷ συνδέσμῳ τῆς εἰρήνης.
4 Ἓν σῶμα καὶ ἓν Πνεῦμα, καθὼς καὶ ἐκ-
λήθητε ἐν μιᾷ ἐλπίδι τῆς κλήσεως ὑμῶν.
5 Εἷς Κύριος, μία πίστις, ἓν βάπτισμα.
6 Εἷς Θεὸς καὶ Πατὴρ πάντων, ὁ ἐπὶ πάν-
των καὶ διὰ πάντων, καὶ ἐν πᾶσιν ὑμῖν.
7 Ἑνὶ δὲ ἑκάστῳ ἡμῶν ἐδόθη ἡ χάρις κα-
τὰ τὸ μέτρον τῆς δωρεᾶς τοῦ Χριστοῦ.
8 Διὸ λέγει· Ἀναβὰς εἰς ὕψος, ᾐχμα-
λώτευσεν αἰχμαλωσίαν, καὶ ἔδωκε δόματα
τοῖς ἀνθρώποις.
9 Τὸ δὲ, ἀνέβη, τί ἐστιν εἰ μὴ ὅτι καὶ κα-
τέβη πρῶτον εἰς τὰ κατώτερα μέρη τῆς γῆς,
10 Ὁ καταβὰς, αὐτός ἐστι καὶ ὁ ἀναβὰς
ὑπεράνω πάντων τῶν οὐρανῶν, ἵνα πληρώσῃ
τὰ πάντα.
11 Καὶ αὐτὸς ἔδωκε, τοὺς μὲν, ἀποστό-
λους, τοὺς δὲ, προφήτας, τοὺς δὲ, εὐαγγε-
λιστάς, τοὺς δὲ, ποιμένας καὶ διδασκάλους.
12 Πρὸς τὸν καταρτισμὸν τῶν ἁγίων, εἰς
ἔργον διακονίας, εἰς οἰκοδομὴν τοῦ σώματος
τοῦ Χριστοῦ.
13 Μέχρι καταντήσωμεν οἱ πάντες εἰς
τὴν ἑνότητα τῆς πίστεως, καὶ τῆς ἐπιγνώσεως
τοῦ Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ, εἰς ἄνδρα τέλειον, εἰς μέ-
τρον ἡλικίας τοῦ πληρώματος τοῦ Χριστοῦ.

14 Ἵνα

14 Ἵνα μηκέτι ὦμεν νήπιοι, κλυδωνιζό-
μενοι καὶ περιφερόμενοι παντὶ ἀνέμῳ τῆς δι-
δασκαλίας, ἐν τῇ κυβείᾳ τῶν ἀνθρώπων, ἐν
πανουργίᾳ πρὸς τὴν μεθοδείαν τῆς πλάνης·
15 Ἀληθεύοντες δὲ ἐν ἀγάπῃ αὐξήσωμεν
εἰς αὐτὸν τὰ πάντα, ὅς ἐστιν ἡ κεφαλὴ, ὁ
Χριστός.
16 Ἐξ οὗ πᾶν τὸ σῶμα συναρμολογούμενον
καὶ συμβιβαζόμενον διὰ πάσης ἁφῆς τῆς ἐπι-
χορηγίας, κατ' ἐνέργειαν ἐν μέτρῳ ἑνὸς ἑκά-
στου μέρους τὴν αὔξησιν τοῦ σώματος ποιεῖται,
εἰς οἰκοδομὴν ἑαυτοῦ ἐν ἀγάπῃ.
17 Τοῦτο οὖν λέγω, καὶ μαρτύρομαι ἐν
Κυρίῳ, μηκέτι ὑμᾶς περιπατεῖν, καθὼς
καὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη περιπατεῖ, ἐν ματαιότητι
τοῦ νοὸς αὐτῶν,
18 Ἐσκοτισμένοι τῇ διανοίᾳ, ὄντες ἀ-
πηλλοτριωμένοι τῆς ζωῆς τοῦ Θεοῦ, διὰ τὴν
ἄγνοιαν τὴν οὖσαν ἐν αὐτοῖς, διὰ τὴν πώ-
ρωσιν τῆς καρδίας αὐτῶν.
19 Οἵτινες ἀπηλγηκότες ἑαυτοὺς παρέδω-
καν τῇ ἀσελγείᾳ, εἰς ἐργασίαν ἀκαθαρσίας
πάσης ἐν πλεονεξίᾳ·
20 Ὑμεῖς δὲ οὐχ οὕτως ἐμάθετε τὸν Χριστόν.
21 Εἴγε αὐτὸν ἠκούσατε, καὶ ἐν αὐτῷ ἐδι-
δάχθητε, καθώς ἐστιν ἀλήθεια ἐν τῷ Ἰησοῦ.
22 Ἀποθέσθαι ὑμᾶς, κατὰ τὴν προτέραν
ἀναστροφὴν, τὸν παλαιὸν ἄνθρωπον τὸν φθει-
ρόμενον κατὰ τὰς ἐπιθυμίας τῆς ἀπάτης.
23 Ἀνανεοῦσθαι δὲ τῷ Πνεύματι τοῦ νοὸς ὑμῶν,
24 Καὶ ἐνδύσασθαι τὸν καινὸν ἄνθρωπον,
τὸν κατὰ Θεὸν κτισθέντα ἐν δικαιοσύνῃ καὶ
ὁσιότητι τῆς ἀληθείας.
25 Διὸ ἀποθέμενοι τὸ ψεῦδος, λαλεῖτε

ἀλήθειαν, ἕκαστος μετὰ τοῦ πλησίον αὐτοῦ·
ὅτι ἐσμὲν ἀλλήλων μέλη.
26 Ὀργίζεσθε, καὶ μὴ ἁμαρτάνετε· ὁ ἥ-
λιος μὴ ἐπιδυέτω ἐπὶ τῷ παροργισμῷ ὑμῶν.
27 Μήτε δίδοτε τόπον τῷ διαβόλῳ.
28 Ὁ κλέπτων μηκέτι κλεπτέτω, μᾶλλον
δὲ κοπιάτω, ἐργαζόμενος τὸ ἀγαθὸν ταῖς χερ-
σίν, ἵνα ἔχῃ μεταδιδόναι τῷ χρείαν ἔχοντι.
29 Πᾶς λόγος σαπρὸς ἐκ τοῦ στόματος ὑ-
μῶν μὴ ἐκπορευέσθω, ἀλλ' εἴ τις ἀγαθὸς
πρὸς οἰκοδομὴν τῆς χρείας, ἵνα δῷ χάριν
τοῖς ἀκούουσι.
30 Καὶ μὴ λυπεῖτε τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον
τοῦ Θεοῦ, ἐν ᾧ ἐσφραγίσθητε εἰς ἡμέραν ἀπο-
λυτρώσεως.
31 Πᾶσα πικρία, καὶ θυμὸς, καὶ ὀργὴ,
καὶ κραυγὴ, καὶ βλασφημία, ἀρθήτω ἀφ' ὑ-
μῶν, σὺν πάσῃ κακίᾳ.
32 Γίνεσθε δὲ εἰς ἀλλήλους χρηστοὶ, εὔ-
σπλαγχνοι, χαριζόμενοι ἑαυτοῖς, καθὼς καὶ
ὁ Θεὸς ἐν Χριστῷ ἐχαρίσατο ὑμῖν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 ΓΙ'νεσθε οὖν μιμηταὶ τοῦ Θεοῦ, ὡς τέ-
κνα ἀγαπητά.
2 Καὶ περιπατεῖτε ἐν ἀγάπῃ, καθὼς καὶ
ὁ Χριστὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς, καὶ παρέδωκεν
ἑαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν προσφορὰν καὶ θυσίαν τῷ
Θεῷ, εἰς ὀσμὴν εὐωδίας.
3 Πορνεία δὲ καὶ πᾶσα ἀκαθαρσία ἢ
πλεονεξία μηδὲ ὀνομαζέσθω ἐν ὑμῖν, κα-
θὼς πρέπει ἁγίοις.
4 Καὶ αἰσχρότης, καὶ μωρολογία, ἢ εὐτραπε-
λία, τὰ οὐκ ἀνήκοντα· ἀλλὰ μᾶλλον εὐχαριστία.
5 Τοῦ-

5 Τοῦτο γάρ ἐστε γινώσκοντες, ὅτι πᾶς
πόρνος, ἢ ἀκάθαρτος, ἢ πλεονέκτης, ὅς
ἐστιν εἰδωλολάτρης, οὐκ ἔχει κληρονομίαν ἐν
τῇ βασιλείᾳ τοῦ Χριστοῦ καὶ Θεοῦ.
6 Μηδεὶς ὑμᾶς ἀπατάτω κενοῖς λόγοις·
διὰ ταῦτα γὰρ ἔρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τοὺς
Υἱοὺς τῆς ἀπειθείας.
7 Μὴ οὖν γίνεσθε συμμέτοχοι αὐτῶν.
8 Ἦτε γάρ ποτε σκότος, νῦν δὲ φῶς ἐν
Κυρίῳ· ὡς τέκνα φωτὸς περιπατεῖτε·
9 (Ὁ γὰρ καρπὸς τοῦ Πνεύματος ἐν πά-
σῃ ἀγαθωσύνῃ καὶ δικαιοσύνῃ καὶ ἀληθείᾳ,)
10 Δοκιμάζοντες τί ἐστιν εὐάρεστον τῷ Κυρίῳ.
11 Καὶ μὴ συγκοινωνεῖτε τοῖς ἔργοις τοῖς
ἀκάρποις τοῦ σκότους, μᾶλλον δὲ καὶ ἐλέγχετε·
12 Τὰ γὰρ κρυφῇ γινόμενα ὑπ' αὐτῶν, αἰ-
σχρόν ἐστι καὶ λέγειν.
13 Τὰ δὲ πάντα ἐλεγχόμενα, ὑπὸ τοῦ
φωτὸς φανεροῦται· πᾶν γὰρ τὸ φανερούμενον,
φῶς ἐστι.
14 Διὸ λέγει· Ἔγειραι ὁ καθεύδων, καὶ
ἀνάστα ἐκ τῶν νεκρῶν, καὶ ἐπιφαύσει σοι ὁ
Χριστός.
15 Βλέπετε οὖν πῶς ἀκριβῶς περιπατεῖ-
τε· μὴ ὡς ἄσοφοι, ἀλλ' ὡς σοφοί.
16 Ἐξαγοραζόμενοι τὸν καιρὸν, ὅτι αἱ
ἡμέραι πονηραί εἰσι.
17 Διὰ τοῦτο μὴ γίνεσθε ἄφρονες, ἀλλὰ
συνιέντες τί τὸ θέλημα τοῦ Κυρίου.
18 Καὶ μὴ μεθύσκεσθε οἴνῳ, ἐν ᾧ ἐστιν
ἀσωτία, ἀλλὰ πληροῦσθε ἐν Πνεύματι.
19 Λαλοῦντες ἑαυτοῖς ψαλμοῖς καὶ ὕμνοις,
καὶ ᾠδαῖς Πνευματικαῖς, ᾄδοντες καὶ ψάλ-
λοντες ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τῷ Κυρίῳ.

20 Εὐ-

20 Εὐχαριστοῦντες πάντοτε ὑπὲρ πάντων, ἐν ὀνόματι τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, τῷ Θεῷ καὶ Πατρί.

21 Ὑποτασσόμενοι ἀλλήλοις ἐν φόβῳ Θεοῦ.

22 Αἱ γυναῖκες, τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ὑποτάσσεσθε, ὡς τῷ Κυρίῳ.

23 Ὅτι ὁ ἀνήρ ἐστι κεφαλὴ τῆς γυναικὸς, ὡς καὶ ὁ Χριστὸς κεφαλὴ τῆς ἐκκλησίας· καὶ αὐτός ἐστι Σωτὴρ τοῦ σώματος.

24 Ἀλλ' ὥσπερ ἡ ἐκκλησία ὑποτάσσεται τῷ Χριστῷ, οὕτω καὶ αἱ γυναῖκες τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν ἐν παντί.

25 Οἱ ἄνδρες ἀγαπᾶτε τὰς γυναῖκας ἑαυτῶν, καθὼς καὶ ὁ Χριστὸς ἠγάπησε τὴν ἐκκλησίαν, καὶ ἑαυτὸν παρέδωκεν ὑπὲρ αὐτῆς·

26 Ἵνα αὐτὴν ἁγιάσῃ, καθαρίσας τῷ λουτρῷ τοῦ ὕδατος ἐν ῥήματι.

27 Ἵνα παραστήσῃ αὐτὴν ἑαυτῷ ἔνδοξον, τὴν ἐκκλησίαν μὴ ἔχουσαν σπῖλον, ἢ ῥυτίδα, ἤ τι τῶν τοιούτων, ἀλλ' ἵνα ᾖ ἁγία καὶ ἄμωμος.

28 Οὕτως ὀφείλουσιν οἱ ἄνδρες ἀγαπᾷν τὰς ἑαυτῶν γυναῖκας ὡς τὰ ἑαυτῶν σώματα. ὁ ἀγαπῶν τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα, ἑαυτὸν ἀγαπᾷ.

29 Οὐδεὶς γάρ ποτε τὴν ἑαυτοῦ σάρκα ἐμίσησεν, ἀλλ' ἐκτρέφει καὶ θάλπει αὐτὴν, καθὼς καὶ ὁ Κύριος τὴν ἐκκλησίαν.

30 Ὅτι μέλη ἐσμὲν τοῦ σώματος αὐτοῦ, ἐκ τῆς σαρκὸς αὐτοῦ, καὶ ἐκ τῶν ὀστέων αὐτοῦ.

31 Ἀντὶ τούτου καταλείψει ἄνθρωπος τὸν Πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν Μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν.

32 Τὸ μυστήριον τοῦτο μέγα ἐστίν. ἐγὼ δὲ λέγω εἰς Χριστὸν, καὶ εἰς τὴν ἐκκλησίαν.

33 Πλὴν

33 Πλὴν καὶ ὑμεῖς οἱ καθ' ἕνα, ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα οὕτως ἀγαπάτω ὡς ἑαυτόν· ἡ δὲ γυνὴ ἵνα φοβῆται τὸν ἄνδρα.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ϛʹ. 6.

1 ΤΑ τέκνα ὑπακούετε τοῖς γονεῦσιν ὑμῶν ἐν Κυρίῳ· τοῦτο γάρ ἐστι δίκαιον.

2 Τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα· (ἥτις ἐστὶν ἐντολὴ πρώτη ἐν ἐπαγγελίᾳ·)

3 Ἵνα εὖ σοι γένηται, καὶ ἔσῃ μακροχρόνιος ἐπὶ τῆς γῆς.

4 Καὶ οἱ πατέρες μὴ παροργίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν, ἀλλ' ἐκτρέφετε αὐτὰ ἐν παιδείᾳ καὶ νουθεσίᾳ Κυρίου.

5 Οἱ δοῦλοι ὑπακούετε τοῖς κυρίοις κατὰ σάρκα, μετὰ φόβου καὶ τρόμου, ἐν ἁπλότητι τῆς καρδίας ὑμῶν, ὡς τῷ Χριστῷ.

6 Μὴ κατ' ὀφθαλμοδουλείαν ὡς ἀνθρωπάρεσκοι, ἀλλ' ὡς δοῦλοι τοῦ Χριστοῦ, ποιοῦντες τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ ἐκ ψυχῆς,

7 Μετ' εὐνοίας δουλεύοντες τῷ Κυρίῳ, καὶ οὐκ ἀνθρώποις·

8 Εἰδότες ὅτι ὃ ἐάν τι ἕκαστος ποιήσῃ ἀγαθόν, τοῦτο κομιεῖται παρὰ τοῦ Κυρίου, εἴτε δοῦλος, εἴτε ἐλεύθερος.

9 Καὶ οἱ κύριοι τὰ αὐτὰ ποιεῖτε πρὸς αὐτούς, ἀνιέντες τὴν ἀπειλήν, εἰδότες ὅτι καὶ ὑμῶν αὐτῶν ὁ Κύριός ἐστιν ἐν οὐρανοῖς, καὶ προσωποληψία οὐκ ἔστι παρ' αὐτῷ.

10 Τὸ λοιπόν, ἀδελφοί μου, ἐνδυναμοῦσθε ἐν Κυρίῳ, καὶ ἐν τῷ κράτει τῆς ἰσχύος αὐτοῦ.

11 Ἐνδύσασθε τὴν πανοπλίαν τοῦ Θεοῦ, πρὸς τὸ δύνασθαι ὑμᾶς στῆναι πρὸς τὰς μεθοδείας τοῦ διαβόλου·

12 Ὅτι

12 Ὅτι οὐκ ἔστιν ἡμῖν ἡ πάλη πρὸς αἷμα καὶ
σάρκα, ἀλλὰ πρὸς τὰς ἀρχὰς, πρὸς τὰς ἐξου-
σίας, πρὸς τοὺς κοσμοκράτορας τοῦ σκότους τοῦ
αἰῶνος τούτου, πρὸς τὰ πνευματικὰ τῆς πονη-
ρίας ἐν τοῖς ἐπουρανίοις.

13 Διὰ τοῦτο ἀναλάβετε τὴν πανοπλίαν
τοῦ Θεοῦ, ἵνα δυνηθῆτε ἀντιστῆναι ἐν τῇ ἡμέ-
ρᾳ τῇ πονηρᾷ, καὶ ἅπαντα κατεργασάμενοι
στῆναι.

14 Στῆτε οὖν περιζωσάμενοι τὴν ὀσφὺν
ὑμῶν ἐν ἀληθείᾳ, καὶ ἐνδυσάμενοι τὸν θώρα-
κα τῆς δικαιοσύνης,

15 Καὶ ὑποδησάμενοι τοὺς πόδας ἐν ἑτοι-
μασίᾳ τοῦ εὐαγγελίου τῆς εἰρήνης.

16 Ἐπὶ πᾶσιν ἀναλαβόντες τὸν θυρεὸν
τῆς πίστεως, ἐν ᾧ δυνήσεσθε πάντα τὰ βέλη
τοῦ πονηροῦ τὰ πεπυρωμένα σβέσαι.

17 Καὶ τὴν περικεφαλαίαν τοῦ σωτηρίου
δέξασθε, καὶ τὴν μάχαιραν τοῦ πνεύματος,
ὅ ἐστι ῥῆμα Θεοῦ.

18 Διὰ πάσης προσευχῆς καὶ δεήσεως προ-
σευχόμενοι ἐν παντὶ καιρῷ ἐν Πνεύματι, καὶ
εἰς αὐτὸ τοῦτο ἀγρυπνοῦντες ἐν πάσῃ προσκαρτε-
ρήσει καὶ δεήσει περὶ πάντων τῶν ἁγίων,

19 Καὶ ὑπὲρ ἐμοῦ, ἵνα μοι δοθείη λόγος ἐν
ἀνοίξει τοῦ στόματός μου ἐν παῤῥησίᾳ, γνωρί-
σαι τὸ μυστήριον τοῦ εὐαγγελίου,

20 Ὑπὲρ οὗ πρεσβεύω ἐν ἁλύσει, ἵνα ἐν
αὐτῷ παῤῥησιάσωμαι, ὡς δεῖ με λαλῆσαι.

21 Ἵνα δὲ εἰδῆτε καὶ ὑμεῖς τὰ κατ᾽ ἐμὲ,
τί πράσσω, πάντα ὑμῖν γνωρίσει Τυχικὸς ὁ
ἀγαπητὸς ἀδελφὸς καὶ πιστὸς διάκονος ἐν
Κυρίῳ.

22 Ὃν ἔπεμψα πρὸς ὑμᾶς εἰς αὐτὸ τοῦτο,

ἵνα γνῶτε τὰ περὶ ἡμῶν, καὶ παρακαλέσῃ τὰς
καρδίας ὑμῶν.
23 Εἰρήνη τοῖς ἀδελφοῖς καὶ ἀγάπη μετὰ
πίστεως ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ
Χριστοῦ.
24 Ἡ χάρις μετὰ πάντων τῶν ἀγαπώντων
τὸν Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν ἀφθαρ-
σίᾳ. Ἀμήν.

Πρὸς Ἐφεσίους ἐγράφη ἀπὸ Ῥώμης διὰ
Τυχικοῦ.

ΠΑΥʹΛΟΥ τοῦ ΑʹΠΟΣΤΟʹΛΟΥ

Ἡ ΠΡΟʹΣ ΦΙΛΙΠΠΗΣΙʹΟΥΣ

ΕʹΠΙΣΤΟΛΗʹ.

ΚΕΦΑʹΛΑΙΟΝ, Αʹ. 1.

1 ΠΑΥʹΛΟΣ καὶ Τιμόθεος δοῦ-
λοι Ἰησοῦ Χριστοῦ, πᾶσι τοῖς
ἁγίοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, τοῖς
οὖσιν ἐν Φιλίπποις, σὺν ἐπισκόποις καὶ δια-
κόνοις.
2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς
ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
3 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου ἐπὶ πάσῃ τῇ
μνείᾳ ὑμῶν,
4 (Πάντοτε ἐν πάσῃ δεήσει μου ὑπὲρ πάν-
των ὑμῶν μετὰ χαρᾶς τὴν δέησιν ποιούμενος,)

5 Ἐπὶ τῇ κοινωνίᾳ ὑμῶν εἰς τὸ εὐαγγέ-
λιον, ἀπὸ πρώτης ἡμέρας ἄχρι τοῦ νῦν.
6 Πεποιθὼς αὐτὸ τοῦτο, ὅτι ὁ ἐναρξάμενος
ἐν ὑμῖν ἔργον ἀγαθὸν, ἐπιτελέσει ἄχρις ἡμέ-
ρας Ἰησοῦ Χριστοῦ.
7 Καθώς ἐστι δίκαιον ἐμοὶ τοῦτο φρονεῖν
ὑπὲρ πάντων ὑμῶν, διὰ τὸ ἔχειν με ἐν τῇ
καρδίᾳ ὑμᾶς, ἔν τε τοῖς δεσμοῖς μου, καὶ τῇ
ἀπολογίᾳ, καὶ βεβαιώσει τοῦ εὐαγγελίου, συγ-
κοινωνούς μου τῆς χάριτος πάντας ὑμᾶς ὄντας.
8 Μάρτυς γάρ μου ἐστὶν ὁ Θεὸς ὡς ἐπιπο-
θῶ πάντας ὑμᾶς ἐν σπλάγχνοις Ἰησοῦ Χριστοῦ.
9 Καὶ τοῦτο προσεύχομαι, ἵνα ἡ ἀγάπη
ὑμῶν ἔτι μᾶλλον καὶ μᾶλλον περισσεύῃ ἐν ἐπι-
γνώσει καὶ πάσῃ αἰσθήσει·
10 Εἰς τὸ δοκιμάζειν ὑμᾶς τὰ διαφέρον-
τα, ἵνα ἦτε εἰλικρινεῖς καὶ ἀπρόσκοποι εἰς ἡμέ-
ραν Χριστοῦ.
11 Πεπληρωμένοι καρπῶν δικαιοσύνης
τῶν διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, εἰς δόξαν καὶ ἔπαι-
νον Θεοῦ.
12 Γινώσκειν δὲ ὑμᾶς βούλομαι, ἀδελ-
φοί, ὅτι τὰ κατ' ἐμὲ μᾶλλον εἰς προκοπὴν
τοῦ εὐαγγελίου ἐλήλυθεν.
13 Ὥστε τοὺς δεσμούς μου φανεροὺς ἐν Χρι-
στῷ γενέσθαι ἐν ὅλῳ τῷ πραιτωρίῳ, καὶ τοῖς λοι-
ποῖς πᾶσι.
14 Καὶ τοὺς πλείονας τῶν ἀδελφῶν ἐν Κυ-
ρίῳ, πεποιθότας τοῖς δεσμοῖς μου, περισσο-
τέρως τολμᾷν ἀφόβως τὸν λόγον λαλεῖν.
15 Τινὲς μὲν καὶ διὰ φθόνον καὶ ἔριν· τινὲς
δὲ καὶ δι' εὐδοκίαν τὸν Χριστὸν κηρύσσουσιν.
16 Οἱ μὲν ἐξ ἐριθείας τὸν Χριστὸν κα-
ταγγέλλουσιν οὐχ ἁγνῶς, οἰόμενοι θλί-

ψιν ἐπιφέρειν τοῖς δεσμοῖς μου.
17 Οἱ δὲ, ἐξ ἀγάπης, εἰδότες ὅτι εἰς
ἀπολογίαν τοῦ εὐαγγελίου κεῖμαι.
18 Τί γάρ; πλὴν παντὶ τρόπῳ, εἴτε προ-
φάσει, εἴτε ἀληθείᾳ, Χριστὸς καταγγέλλε-
ται· καὶ ἐν τούτῳ χαίρω, ἀλλὰ καὶ χαρήσομαι.
19 Οἶδα γὰρ, ὅτι τοῦτό μοι ἀποβήσεται εἰς
σωτηρίαν διὰ τῆς ὑμῶν δεήσεως, καὶ ἐπιχορη-
γίας τοῦ πνεύματος Ἰησοῦ Χριστοῦ.
20 Κατὰ τὴν ἀποκαραδοκίαν καὶ ἐλπίδα
μου, ὅτι ἐν οὐδενὶ αἰσχυνθήσομαι, ἀλλ' ἐν πά-
σῃ παῤῥησίᾳ, ὡς πάντοτε, καὶ νῦν μεγαλυν-
θήσεται Χριστὸς ἐν τῷ σώματί μου, εἴτε διὰ
ζωῆς, εἴτε διὰ θανάτου.
21 Ἐμοὶ γὰρ τὸ ζῆν, Χριστός· καὶ τὸ ἀπο-
θανεῖν, κέρδος.
22 Εἰ δὲ τὸ ζῆν ἐν σαρκὶ, τοῦτό μοι καρ-
πὸς ἔργου· καὶ τί αἱρήσομαι, οὐ γνωρίζω.
23 Συνέχομαι γὰρ ἐκ τῶν δύο, τὴν ἐπιθυ-
μίαν ἔχων εἰς τὸ ἀναλῦσαι, καὶ σὺν Χριστῷ
εἶναι. πολλῷ γὰρ μᾶλλον κρεῖσσον.
24 Τὸ δὲ ἐπιμένειν ἐν τῇ σαρκὶ, ἀναγ-
καιότερον δι' ὑμᾶς.
25 Καὶ τοῦτο πεποιθὼς οἶδα, ὅτι μενῶ καὶ
συμπαραμενῶ πᾶσιν ὑμῖν, εἰς τὴν ὑμῶν
προκοπὴν καὶ χαρὰν τῆς πίστεως,
26 Ἵνα τὸ καύχημα ὑμῶν περισσεύῃ ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ ἐν ἐμοὶ, διὰ τῆς ἐμῆς παρου-
σίας πάλιν πρὸς ὑμᾶς.
27 Μόνον ἀξίως τοῦ εὐαγγελίου τοῦ Χριστοῦ
πολιτεύεσθε, ἵνα εἴτε ἐλθὼν καὶ ἰδὼν ὑμᾶς,
εἴτε ἀπὼν, ἀκούσω τὰ περὶ ὑμῶν, ὅτι στήκε-
τε ἐν ἑνὶ πνεύματι, μιᾷ ψυχῇ συναθλοῦντες
τῇ πίστει τοῦ εὐαγγελίου.

28 Καὶ

28 Καὶ μὴ πτυρόμενοι ἐν μηδενὶ ὑπὸ τῶν ἀντικειμένων· ἥτις αὐτοῖς μέν ἐστιν ἔνδειξις ἀπωλείας, ὑμῖν δὲ σωτηρίας, καὶ τοῦτο ἀπὸ Θεοῦ.

29 Ὅτι ὑμῖν ἐχαρίσθη τὸ ὑπὲρ Χριστοῦ, οὐ μόνον τὸ εἰς αὐτὸν πιστεύειν, ἀλλὰ καὶ τὸ ὑπὲρ αὐτοῦ πάσχειν·

30 Τὸν αὐτὸν ἀγῶνα ἔχοντες οἷον ἴδετε ἐν ἐμοί, καὶ νῦν ἀκούετε ἐν ἐμοί.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 Εἴ τις οὖν παράκλησις ἐν Χριστῷ, εἴτε παραμύθιον ἀγάπης, εἴ τις κοινωνία Πνεύματος, εἴ τινα σπλάγχνα καὶ οἰκτιρμοί,

2 Πληρώσατέ μου τὴν χαράν, ἵνα τὸ αὐτὸ φρονῆτε, τὴν αὐτὴν ἀγάπην ἔχοντες, σύμψυχοι, τὸ ἓν φρονοῦντες.

3 Μηδὲν κατὰ ἐρίθειαν, ἢ κενοδοξίαν, ἀλλὰ τῇ ταπεινοφροσύνῃ ἀλλήλους ἡγούμενοι ὑπερέχοντας ἑαυτῶν

4 Μὴ τὰ ἑαυτῶν ἕκαστος σκοπεῖτε, ἀλλὰ καὶ τὰ ἑτέρων ἕκαστος.

5 Τοῦτο γὰρ φρονείσθω ἐν ὑμῖν, ὃ καὶ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ

6 Ὃς ἐν μορφῇ Θεοῦ ὑπάρχων, οὐχ ἁρπαγμὸν ἡγήσατο τὸ εἶναι ἴσα Θεῷ·

7 Ἀλλ' ἑαυτὸν ἐκένωσε, μορφὴν δούλου λαβών, ἐν ὁμοιώματι ἀνθρώπων γενόμενος,

8 Καὶ σχήματι εὑρεθεὶς ὡς ἄνθρωπος, ἐταπείνωσεν ἑαυτόν, γενόμενος ὑπήκοος μέχρι θανάτου, θανάτου δὲ σταυροῦ·

9 Διὸ καὶ ὁ Θεὸς αὐτὸν ὑπερύψωσε, καὶ ἐχαρίσατο αὐτῷ ὄνομα τὸ ὑπὲρ πᾶν ὄνομα.

10 Ἵνα ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ πᾶν γόνυ κάμψῃ ἐπουρανίων καὶ ἐπιγείων καὶ καταχθονίων·

11 Καὶ πᾶσα γλῶσσα ἐξομολογήσηται ὅτι Κύριος Ἰησοῦς Χριστὸς, εἰς δόξαν Θεοῦ πατρός.

12 Ὥστε, ἀγαπητοί μου, καθὼς πάντοτε ὑπηκούσατε, μὴ ὡς ἐν τῇ παρουσίᾳ μου μόνον, ἀλλὰ νῦν πολλῷ μᾶλλον ἐν τῇ ἀπουσίᾳ μου, μετὰ φόβου καὶ τρόμου τὴν ἑαυτῶν σωτηρίαν κατεργάζεσθε.

13 Ὁ Θεὸς γάρ ἐστιν ὁ ἐνεργῶν ἐν ὑμῖν καὶ τὸ θέλειν καὶ τὸ ἐνεργεῖν, ὑπὲρ τῆς εὐδοκίας.

14 Πάντα ποιεῖτε χωρὶς γογγυσμῶν καὶ διαλογισμῶν.

15 Ἵνα γένησθε ἄμεμπτοι καὶ ἀκέραιοι, τέκνα Θεοῦ ἀμώμητα ἐν μέσῳ γενεᾶς σκολιᾶς καὶ διεστραμμένης· ἐν οἷς φαίνεσθε ὡς φωστῆρες ἐν κόσμῳ.

16 Λόγον ζωῆς ἐπέχοντες, εἰς καύχημα ἐμοὶ εἰς ἡμέραν Χριστοῦ, ὅτι οὐκ εἰς κενὸν ἔδραμον, οὐδὲ εἰς κενὸν ἐκοπίασα·

17 Ἀλλ' εἰ καὶ σπένδομαι ἐπὶ τῇ θυσίᾳ καὶ λειτουργίᾳ τῆς πίστεως ὑμῶν, χαίρω καὶ συγχαίρω πᾶσιν ὑμῖν.

18 Τὸ δ' αὐτὸ καὶ ὑμεῖς χαίρετε, καὶ συγχαίρετέ μοι.

19 Ἐλπίζω δὲ ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, Τιμόθεον ταχέως πέμψαι ὑμῖν, ἵνα κἀγὼ εὐψυχῶ, γνοὺς τὰ περὶ ὑμῶν.

20 Οὐδένα γὰρ ἔχω ἰσόψυχον, ὅστις γνησίως τὰ περὶ ὑμῶν μεριμνήσει·

21 Οἱ πάντες γὰρ τὰ ἑαυτῶν ζητοῦσιν, οὐ τὰ τοῦ Χριστοῦ Ἰησοῦ.

22 Τὴν δὲ δοκιμὴν αὐτοῦ γινώσκετε, ὅτι ὡς πατρὶ τέκνον, σὺν ἐμοὶ

ἐδου-

ἐδούλευσεν εἰς τὸ εὐαγγέλιον.
23 Τοῦτον μὲν οὖν ἐλπίζω πέμψαι, ὡς ἂν
ἀπίδω τὰ περὶ ἐμὲ ἐξαυτῆς.
24 Πέποιθα δὲ ἐν Κυρίῳ, ὅτι καὶ αὐτὸς
ταχέως ἐλεύσομαι.
25 Ἀναγκαῖον δὲ ἡγησάμην Ἐπαφρόδι-
τον τὸν ἀδελφὸν καὶ συνεργὸν καὶ συστρατιώτην
μου, ὑμῶν δὲ ἀπόστολον, καὶ λειτουργὸν τῆς
χρείας μου, πέμψαι πρὸς ὑμᾶς.
26 Ἐπειδὴ ἐπιποθῶν ἦν πάντας ὑμᾶς,
καὶ ἀδημονῶν, διότι ἠκούσατε ὅτι ἠσθένησε.
27 Καὶ γὰρ ἠσθένησε παραπλήσιον θα-
νάτῳ· ἀλλ' ὁ Θεὸς αὐτὸν ἠλέησεν· οὐκ αὐτὸν
δὲ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐμέ, ἵνα μὴ λύπην ἐπὶ
λύπῃ σχῶ.
28 Σπουδαιοτέρως οὖν ἔπεμψα αὐτὸν,
ἵνα ἰδόντες αὐτὸν πάλιν, χαρῆτε, κἀγὼ
ἀλυπότερος ὦ.
29 Προσδέχεσθε οὖν αὐτὸν ἐν Κυρίῳ μετὰ
πάσης χαρᾶς, καὶ τοὺς τοιούτους ἐντίμους ἔχετε·
30 Ὅτι διὰ τὸ ἔργον τοῦ Χριστοῦ μέχρι θα-
νάτου ἤγγισε, παραβουλευσάμενος τῇ ψυχῇ,
ἵνα ἀναπληρώσῃ τὸ ὑμῶν ὑστέρημα τῆς πρός
με λειτουργίας.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ. 3.

1 ΤΟ' λοιπὸν, ἀδελφοί μου, χαίρετε
ἐν Κυρίῳ. τὰ αὐτὰ γράφειν ὑμῖν
ἐμοὶ μὲν οὐκ ὀκνηρὸν, ὑμῖν δὲ ἀσφαλές.
2 Βλέπετε τοὺς κύνας, βλέπετε τοὺς κα-
κοὺς ἐργάτας, βλέπετε τὴν κατατομήν.
3 Ἡμεῖς γάρ ἐσμεν ἡ περιτομὴ, οἱ πνεύ-
ματι Θεῷ λατρεύοντες, καὶ καυχώμενοι ἐν Χρι-
στῷ Ἰησοῦ, καὶ οὐκ ἐν σαρκὶ πεποιθότες.

4 Καίπερ ἐγὼ ἔχων πεποίθησιν καὶ ἐν σαρ-
κί. Εἴ τις δοκεῖ ἄλλος πεποιθέναι ἐν σαρκὶ,
ἐγὼ μᾶλλον.
5 Περιτομῇ ὀκταήμερος, ἐκ γένους Ἰσραὴλ,
φυλῆς Βενιαμὶν, Ἑβραῖος ἐξ Ἑβραίων,
κατὰ νόμον Φαρισαῖος,
6 Κατὰ ζῆλον διώκων τὴν ἐκκλησίαν,
κατὰ δικαιοσύνην τὴν ἐν νόμῳ γενόμενος ἄ-
μεμπτος.
7 Ἀλλ' ἅτινα ἦν μοι κέρδη, ταῦτα ἥγη-
μαι διὰ τὸν Χριστὸν ζημίαν.
8 Ἀλλὰ μενοῦνγε καὶ ἡγοῦμαι πάντα ζη-
μίαν εἶναι διὰ τὸ ὑπερέχον τῆς γνώσεως Χρι-
στοῦ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου μου, δι' ὃν τὰ πάντα ἐζη-
μιώθην, καὶ ἡγοῦμαι σκύβαλα εἶναι, ἵνα
Χριστὸν κερδήσω,
9 Καὶ εὑρεθῶ ἐν αὐτῷ, μὴ ἔχων ἐμὴν
δικαιοσύνην τὴν ἐκ νόμου, ἀλλὰ τὴν διὰ
πίστεως Χριστοῦ, τὴν ἐκ Θεοῦ δικαιοσύνην
ἐπὶ τῇ πίστει.
10 Τοῦ γνῶναι αὐτὸν, καὶ τὴν δύναμιν
τῆς ἀναστάσεως αὐτοῦ, καὶ τὴν κοινωνίαν τῶν
παθημάτων αὐτοῦ, συμμορφούμενος τῷ θα-
νάτῳ αὐτοῦ.
11 Εἴ πως καταντήσω εἰς τὴν ἐξανάστασιν
τῶν νεκρῶν.
12 Οὐχ ὅτι ἤδη ἔλαβον, ἢ ἤδη τετελείω-
μαι· διώκω δὲ εἰ καὶ καταλάβω, ἐφ' ᾧ καὶ κα-
τελήφθην ὑπὸ τοῦ Χριστοῦ Ἰησοῦ.
13 Ἀδελφοὶ, ἐγὼ ἐμαυτὸν οὐ λογίζομαι
κατειληφέναι.
14 Ἓν δὲ, τὰ μὲν, ὀπίσω ἐπιλαν-
θανόμενος, τοῖς δὲ ἔμπροσθεν ἐπεκτει-
νόμενος, κατὰ σκοπὸν διώκω ἐπὶ τὸ βρα-
βεῖον

βεῖον τῆς ἄνω κλήσεως τοῦ Θεοῦ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

15 Ὅσοι οὖν τέλειοι, τοῦτο φρονῶμεν· καὶ εἴ τι ἑτέρως φρονεῖτε, καὶ τοῦτο ὁ Θεὸς ὑμῖν ἀποκαλύψει.

16 Πλὴν εἰς ὃ ἐφθάσαμεν, τῷ αὐτῷ στοιχεῖν κανόνι, τὸ αὐτὸ φρονεῖν.

17 Συμμιμηταί μου γίνεσθε, ἀδελφοί, καὶ σκοπεῖτε τοὺς οὕτω περιπατοῦντας, καθὼς ἔχετε τύπον ἡμᾶς.

18 Πολλοὶ γὰρ περιπατοῦσι, οὓς πολλάκις ἔλεγον ὑμῖν, νῦν δὲ καὶ κλαίων λέγω, τοὺς ἐχθροὺς τοῦ σταυροῦ τοῦ Χριστοῦ.

19 Ὧν τὸ τέλος ἀπώλεια, ὧν ὁ Θεὸς ἡ κοιλία, καὶ ἡ δόξα ἐν τῇ αἰσχύνῃ αὐτῶν, οἱ τὰ ἐπίγεια φρονοῦντες.

20 Ἡμῶν γὰρ τὸ πολίτευμα ἐν οὐρανοῖς ὑπάρχει, ἐξ οὗ καὶ σωτῆρα ἀπεκδεχόμεθα Κύριον Ἰησοῦν Χριστόν.

21 Ὃς μετασχηματίσει τὸ σῶμα τῆς ταπεινώσεως ἡμῶν, εἰς τὸ γενέσθαι αὐτὸ σύμμορφον τῷ σώματι τῆς δόξης αὐτοῦ, κατὰ τὴν ἐνέργειαν τοῦ δύνασθαι αὐτὸν καὶ ὑποτάξαι ἑαυτῷ τὰ πάντα.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 Ὥστε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοὶ καὶ ἐπιπόθητοι, χαρὰ καὶ στέφανός μου, οὕτω στήκετε ἐν Κυρίῳ, ἀγαπητοί.

2 Εὐοδίαν παρακαλῶ, καὶ Συντύχην παρακαλῶ τὸ αὐτὸ φρονεῖν ἐν Κυρίῳ.

3 Καὶ ἐρωτῶ καί σε σύζυγε γνήσιε, συλλαμβάνου αὐταῖς, αἵτινες ἐν τῷ εὐαγγελίῳ συνήθλησάν μοι, μετὰ καὶ Κλήμεντος καὶ τῶν λοιπῶν συνεργῶν μου, ὧν τὰ ὀνόματα ἐν βίβλῳ ζωῆς.

4 Χαίρετε ἐν Κυρίῳ πάντοτε· πάλιν ἐρῶ,
χαίρετε.
5 Τὸ ἐπιεικὲς ὑμῶν γνωσθήτω πᾶσιν ἀν-
θρώποις. ὁ Κύριος ἐγγύς.
6 Μηδὲν μεριμνᾶτε· ἀλλ' ἐν παντὶ τῇ
προσευχῇ καὶ τῇ δεήσει μετὰ εὐχαριστίας τὰ αἰ-
τήματα ὑμῶν γνωριζέσθω πρὸς τὸν Θεόν.
7 Καὶ ἡ εἰρήνη τοῦ Θεοῦ ἡ ὑπερέχουσα πάν-
τα νοῦν, φρουρήσει τὰς καρδίας ὑμῶν καὶ τὰ νοή-
ματα ὑμῶν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
8 Τὸ λοιπὸν, ἀδελφοὶ, ὅσα ἐστὶν ἀληθῆ,
ὅσα σεμνὰ, ὅσα δίκαια, ὅσα ἁγνὰ, ὅσα
προσφιλῆ, ὅσα εὔφημα, εἴ τις ἀρετὴ καὶ εἴ τις
ἔπαινος, ταῦτα λογίζεσθε.
9 Ἃ καὶ ἐμάθετε καὶ παρελάβετε, καὶ ἠκού-
σατε, καὶ εἴδετε ἐν ἐμοὶ, ταῦτα πράσσετε, καὶ
ὁ Θεὸς τῆς εἰρήνης ἔσται μεθ' ὑμῶν.
10 Ἐχάρην δὲ ἐν Κυρίῳ μεγάλως, ὅτι
ἤδη ποτὲ ἀνεθάλετε τὸ ὑπὲρ ἐμοῦ φρονεῖν· ἐφ'
ᾧ καὶ ἐφρονεῖτε, ἠκαιρεῖσθε δέ.
11 Οὐχ ὅτι καθ' ὑστέρησιν λέγω· ἐγὼ γὰρ
ἔμαθον, ἐν οἷς εἰμι, αὐτάρκης εἶναι.
12 Οἶδα δὲ ταπεινοῦσθαι, οἶδα καὶ πε-
ρισσεύειν· ἐν παντὶ καὶ ἐν πᾶσι μεμύημαι καὶ
χορτάζεσθαι καὶ πεινᾷν, καὶ περισσεύειν καὶ
ὑστερεῖσθαι.
13 Πάντα ἰσχύω ἐν τῷ ἐνδυναμοῦντί με
Χριστῷ.
14 Πλὴν καλῶς ἐποιήσατε, συγκοινω-
νήσαντές μου τῇ θλίψει.
15 Οἴδατε δὲ καὶ ὑμεῖς, Φιλιππή-
σιοι, ὅτι ἐν ἀρχῇ τοῦ εὐαγγελίου, ὅτε
ἐξῆλθον ἀπὸ Μακεδονίας, οὐδεμία μοι
ἐκκλησία ἐκοινώνησεν εἰς λόγον δόσεως

καὶ λήψεως, εἰ μὴ ὑμεῖς μόνοι·
16 Ὅτι καὶ ἐν Θεσσαλονίκῃ καὶ ἅπαξ καὶ δὶς
εἰς τὴν χρείαν μοι ἐπέμψατε.
17 Οὐχ ὅτι ἐπιζητῶ τὸ δόμα, ἀλλ' ἐπι-
ζητῶ τὸν καρπὸν τὸν πλεονάζοντα εἰς λόγον
ὑμῶν.
18 Ἀπέχω δὲ πάντα, καὶ περισσεύω·
πεπλήρωμαι, δεξάμενος παρὰ Ἐπαφροδίτου
τὰ παρ' ὑμῶν, ὀσμὴν εὐωδίας, θυσίαν δε-
κτὴν, εὐάρεστον τῷ Θεῷ.
19 Ὁ δὲ Θεός μου πληρώσει πᾶσαν χρείαν
ὑμῶν κατὰ τὸν πλοῦτον αὐτοῦ, ἐν δόξῃ, ἐν
Χριστῷ Ἰησοῦ.
20 Τῷ δὲ Θεῷ καὶ πατρὶ ἡμῶν ἡ δόξα εἰς
τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.
21 Ἀσπάσασθε πάντα ἅγιον ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ. ἀσπάζονται ὑμᾶς οἱ σὺν ἐμοὶ
ἀδελφοί.
22 Ἀσπάζονται ὑμᾶς πάντες οἱ ἅγιοι,
μάλιστα δὲ οἱ ἐκ τῆς Καίσαρος οἰκίας.
23 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Φιλιππησίους ἐγράφη ἀπὸ Ῥώμης
διὰ Ἐπαφροδίτου.

ΠΑΥΛΟΥ τοῦ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
Ἡ ΠΡΟΣ ΚΟΛΑΣΣΑΗΣ
ἘΠΙΣΤΟΛΗ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Α΄. α.

1 ΠΑΥΛΟΣ Ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ, διὰ θελήματος Θεοῦ,
καὶ Τιμόθεος ὁ ἀδελφὸς,
2 Τοῖς ἐν Κολασσαῖς ἁγίοις καὶ πιστοῖς
ἀδελφοῖς ἐν Χριστῷ· Χάρις ὑμῖν εἰρήνη ἀπὸ
Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ.
3 Εὐχαριστοῦμεν τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ τοῦ Κυ-
ρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, πάντοτε περὶ ὑμῶν
προσευχόμενοι.
4 Ἀκούσαντες τὴν πίστιν ὑμῶν ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ, καὶ τὴν ἀγάπην τὴν εἰς πάντας τοὺς
ἁγίους,
5 Διὰ τὴν ἐλπίδα τὴν ἀποκειμένην ὑμῖν
ἐν τοῖς οὐρανοῖς, ἣν προηκούσατε ἐν τῷ λόγῳ
τῆς ἀληθείας τοῦ εὐαγγελίου.
6 Τοῦ παρόντος εἰς ὑμᾶς, καθὼς καὶ ἐν παν-
τὶ τῷ κόσμῳ· καί ἐστι καρποφορούμενον, καθὼς
καὶ ἐν ὑμῖν, ἀφ' ἧς ἡμέρας ἠκούσατε καὶ ἐπέγνω-
τε τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ ἐν ἀληθείᾳ,
7 Καθὼς καὶ ἐμάθετε ἀπὸ Ἐπαφρᾶ τοῦ ἀ-
γαπητοῦ συνδούλου ἡμῶν, ὅς ἐστι πιστὸς ὑπὲρ
ὑμῶν διάκονος τοῦ Χριστοῦ.

8 Ὁ καὶ δηλώσας ἡμῖν τὴν ὑμῶν ἀγάπην ἐν πνεύματι.

9 Διὰ τοῦτο καὶ ἡμεῖς, ἀφ' ἧς ἡμέρας ἠκούσαμεν, οὐ παυόμεθα ὑπὲρ ὑμῶν προσευχόμενοι, καὶ αἰτούμενοι ἵνα πληρωθῆτε τὴν ἐπίγνωσιν τοῦ θελήματος αὐτοῦ ἐν πάσῃ σοφίᾳ καὶ συνέσει πνευματικῇ.

10 Περιπατῆσαι ὑμᾶς ἀξίως τοῦ Κυρίου εἰς πᾶσαν ἀρέσκειαν, ἐν παντὶ ἔργῳ ἀγαθῷ καρποφοροῦντες καὶ αὐξανόμενοι εἰς τὴν ἐπίγνωσιν τοῦ Θεοῦ.

11 Ἐν πάσῃ δυνάμει δυναμούμενοι κατὰ τὸ κράτος τῆς δόξης αὐτοῦ, εἰς πᾶσαν ὑπομονὴν καὶ μακροθυμίαν μετὰ χαρᾶς.

12 Εὐχαριστοῦντες τῷ πατρὶ τῷ ἱκανώσαντι ἡμᾶς εἰς τὴν μερίδα τοῦ κλήρου τῶν ἁγίων ἐν τῷ φωτί.

13 Ὃς ἐρρύσατο ἡμᾶς ἐκ τῆς ἐξουσίας τοῦ σκότους, καὶ μετέστησεν εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Υἱοῦ τῆς ἀγάπης αὐτοῦ.

14 Ἐν ᾧ ἔχομεν τὴν ἀπολύτρωσιν διὰ τοῦ αἵματος αὐτοῦ, τὴν ἄφεσιν τῶν ἁμαρτιῶν·

15 Ὅς ἐστιν εἰκὼν τοῦ Θεοῦ τοῦ ἀοράτου, πρωτότοκος πάσης κτίσεως.

16 Ὅτι ἐν αὐτῷ ἐκτίσθη τὰ πάντα τὰ ἐν τοῖς οὐρανοῖς καὶ τὰ ἐπὶ τῆς γῆς, τὰ ὁρατὰ καὶ τὰ ἀόρατα, εἴτε θρόνοι, εἴτε κυριότητες, εἴτε ἀρχαί, εἴτε ἐξουσίαι· τὰ πάντα δι' αὐτοῦ καὶ εἰς αὐτὸν ἔκτισται.

17 Καὶ αὐτός ἐστι πρὸ πάντων, καὶ τὰ πάντα ἐν αὐτῷ συνέστηκε·

18 Καὶ αὐτός ἐστιν ἡ κεφαλὴ τοῦ σώματος τῆς ἐκκλησίας, ὅς ἐστιν ἀρχὴ πρωτότοκος ἐκ τῶν νεκρῶν, ἵνα γένηται ἐν

πᾶ-

πᾶσιν αὐτὸς πρωτεύων·

19 Ὅτι ἐν αὐτῷ εὐδόκησε πᾶν τὸ πλήρωμα κατοικῆσαι.

20 Καὶ δι' αὐτοῦ ἀποκαταλλάξαι τὰ πάντα εἰς αὐτὸν, εἰρηνοποιήσας διὰ τοῦ αἵματος τοῦ σταυροῦ αὐτοῦ, δι' αὐτοῦ, εἴτε τὰ ἐπὶ τῆς γῆς, εἴτε τὰ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

21 Καὶ ὑμᾶς ποτε ὄντας ἀπηλλοτριωμένους καὶ ἐχθροὺς τῇ διανοίᾳ ἐν τοῖς ἔργοις τοῖς πονηροῖς, νυνὶ δὲ ἀποκατήλλαξεν,

22 Ἐν τῷ σώματι τῆς σαρκὸς αὐτοῦ, διὰ τοῦ θανάτου, παραστῆσαι ὑμᾶς ἁγίους καὶ ἀμώμους καὶ ἀνεγκλήτους κατενώπιον αὐτοῦ.

23 Εἴγε ἐπιμένετε τῇ πίστει τεθεμελιωμένοι καὶ ἑδραῖοι, καὶ μὴ μετακινούμενοι ἀπὸ τῆς ἐλπίδος τοῦ εὐαγγελίου οὗ ἠκούσατε, τοῦ κηρυχθέντος ἐν πάσῃ τῇ κτίσει τῇ ὑπὸ τὸν οὐρανόν· οὗ ἐγενόμην ἐγὼ Παῦλος διάκονος.

24 Νῦν χαίρω ἐν τοῖς παθήμασί μου ὑπὲρ ὑμῶν, καὶ ἀνταναπληρῶ τὰ ὑστερήματα τῶν θλίψεων τοῦ Χριστοῦ ἐν τῇ σαρκί μου, ὑπὲρ τοῦ σώματος αὐτοῦ, ὅ ἐστιν ἡ ἐκκλησία·

25 Ἧς ἐγενόμην ἐγὼ διάκονος, κατὰ τὴν οἰκονομίαν τοῦ Θεοῦ, τὴν δοθεῖσάν μοι εἰς ὑμᾶς, πληρῶσαι τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ.

26 Τὸ μυστήριον τὸ ἀποκεκρυμμένον ἀπὸ τῶν αἰώνων καὶ ἀπὸ τῶν γενεῶν, νυνὶ δὲ ἐφανερώθη τοῖς ἁγίοις αὐτοῦ.

27 Οἷς ἠθέλησεν ὁ Θεὸς γνωρίσαι τίς ὁ πλοῦτος τῆς δόξης τοῦ μυστηρίου τούτου ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὅς ἐστι Χριστὸς ἐν ὑμῖν, ἡ ἐλπὶς τῆς δόξης.

28 Ὃν ἡμεῖς καταγγέλλομεν, νουθετοῦντες πάντα ἄνθρωπον, καὶ διδάσκοντες πάντα ἄνθρω-

θρω-

θρωπον ἐν πάσῃ σοφίᾳ, ἵνα παραςήσωμεν
πάντα ἄνθρωπον τέλειον ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
29 Εἰς ὃ καὶ κοπιῶ, ἀγωνιζόμενος κατὰ τὴν
ἐνέργειαν αὐτοῦ τὴν ἐνεργουμένην ἐν ἐμοὶ ἐν δυ-
νάμει.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΘΕ'λω γὰρ ὑμᾶς εἰδέναι ἡλίκον ἀ-
γῶνα ἔχω περὶ ὑμῶν, καὶ τῶν ἐν
Λαοδικείᾳ, καὶ ὅσοι οὐχ ἑωράκασι τὸ πρόσω-
πόν μου ἐν σαρκί.
2 Ἵνα παρακληθῶσιν αἱ καρδίαι αὐτῶν,
συμβιβασθέντων ἐν ἀγάπῃ, καὶ εἰς πάντα πλοῦ-
τον τῆς πληροφορίας τῆς συνέσεως εἰς ἐπί-
γνωσιν τοῦ μυστηρίου τοῦ Θεοῦ καὶ πατρὸς καὶ τοῦ
Χριστοῦ.
3 Ἐν ᾧ εἰσι πάντες οἱ θησαυροὶ τῆς σο-
φίας καὶ τῆς γνώσεως ἀπόκρυφοι.
4 Τοῦτο δὲ λέγω ἵνα μή τις ὑμᾶς παρα-
λογίζηται ἐν πιθανολογίᾳ.
5 Εἰ γὰρ τῇ σαρκὶ ἄπειμι, ἀλλὰ τῷ πνεύ-
ματι σὺν ὑμῖν εἰμι, χαίρων καὶ βλέπων ὑμῶν
τὴν τάξιν, καὶ τὸ ςερέωμα τῆς εἰς Χριστὸν πί-
ςεως ὑμῶν.
6 Ὡς οὖν παρελάβετε τὸν Χριςὸν Ἰησοῦν τὸν
Κύριον, ἐν αὐτῷ περιπατεῖτε.
7 Ἐρριζωμένοι καὶ ἐποικοδομούμενοι ἐν αὐ-
τῷ, καὶ βεβαιούμενοι ἐν τῇ πίςει, καθὼς ἐδι-
δάχθητε, περισσεύοντες ἐν αὐτῇ ἐν εὐχα-
ριστίᾳ.
8 Βλέπετε μή τις ὑμᾶς ἔσται ὁ συλαγω-
γῶν διὰ τῆς φιλοσοφίας καὶ κενῆς ἀπάτης, κα-
τὰ τὴν παράδοσιν τῶν ἀνθρώπων, κατὰ τὰ
στοιχεῖα τοῦ κόσμου, καὶ οὐ κατὰ Χριστόν

9 Ὅτι

9 Ὅτι ἐν αὐτῷ κατοικεῖ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς θεότητος σωματικῶς.

10 Καί ἐστε ἐν αὐτῷ πεπληρωμένοι, ὅς ἐστιν ἡ κεφαλὴ πάσης ἀρχῆς καὶ ἐξουσίας·

11 Ἐν ᾧ καὶ περιετμήθητε περιτομῇ ἀχειροποιήτῳ, ἐν τῇ ἀπεκδύσει τοῦ σώματος τῶν ἁμαρτιῶν τῆς σαρκὸς, ἐν τῇ περιτομῇ τοῦ Χριστοῦ·

12 Συνταφέντες αὐτῷ ἐν τῷ βαπτίσματι, ἐν ᾧ καὶ συνηγέρθητε διὰ τῆς πίστεως τῆς ἐνεργείας τοῦ Θεοῦ τοῦ ἐγείραντος αὐτὸν ἐκ τῶν νεκρῶν.

13 Καὶ ὑμᾶς νεκροὺς ὄντας ἐν τοῖς παραπτώμασι καὶ τῇ ἀκροβυστίᾳ τῆς σαρκὸς ὑμῶν, συνεζωοποίησε σὺν αὐτῷ, χαρισάμενος ὑμῖν πάντα τὰ παραπτώματα.

14 Ἐξαλείψας τὸ καθ' ἡμῶν χειρόγραφον τοῖς δόγμασιν, ὃ ἦν ὑπεναντίον ἡμῖν, καὶ αὐτὸ ἦρκεν ἐκ τοῦ μέσου, προσηλώσας αὐτὸ τῷ σταυρῷ.

15 Ἀπεκδυσάμενος τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς ἐξουσίας ἐδειγμάτισεν ἐν παῤῥησίᾳ, θριαμβεύσας αὐτοὺς ἐν αὐτῷ.

16 Μὴ οὖν τις ὑμᾶς κρινέτω ἐν βρώσει, ἢ ἐν πόσει, ἢ ἐν μέρει ἑορτῆς, ἢ νουμηνίας, ἢ σαββάτων·

17 Ἅ ἐστι σκιὰ τῶν μελλόντων, τὸ δὲ σῶμα τοῦ Χριστοῦ.

18 Μηδεὶς ὑμᾶς καταβραβευέτω θέλων ἐν ταπεινοφροσύνῃ καὶ θρησκείᾳ τῶν ἀγγέλων, ἃ μὴ ἑώρακεν ἐμβατεύων, εἰκῆ φυσιούμενος ὑπὸ τοῦ νοὸς τῆς σαρκὸς αὐτοῦ,

19 Καὶ οὐ κρατῶν τὴν κεφαλὴν, ἐξ οὗ πᾶν τὸ σῶμα διὰ τῶν ἁφῶν καὶ συνδέσμων ἐπιχορηγούμενον καὶ συμβιβαζόμενον, αὔξει τὴν αὔξησιν τοῦ Θεοῦ.

20 Εἰ οὖν ἀπεθάνετε σὺν τῷ Χριστῷ ἀπὸ
τῶν στοιχείων τοῦ κόσμου, τί ὡς ζῶντες ἐν
κόσμῳ δογματίζεσθε;

21 Μὴ ἅψῃ, μηδὲ γεύσῃ, μηδὲ θίγῃς.

22 Ἅ ἐστι πάντα εἰς φθορὰν τῇ ἀποχρή-
σει, κατὰ τὰ ἐντάλματα καὶ διδασκαλίας τῶν
ἀνθρώπων.

23 Ἅτινά ἐστι λόγον μὲν ἔχοντα σοφίας ἐν
ἐθελοθρησκείᾳ καὶ ταπεινοφροσύνῃ καὶ ἀφειδίᾳ
σώματος, οὐκ ἐν τιμῇ τινι πρὸς πλησμονὴν
τῆς σαρκός.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Εἰ οὖν συνηγέρθητε τῷ Χριστῷ, τὰ
ἄνω ζητεῖτε, οὗ ὁ Χριστός ἐστιν ἐν
δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ καθήμενος.

2 Τὰ ἄνω φρονεῖτε, μὴ τὰ ἐπὶ τῆς γῆς.

3 Ἀπεθάνετε γάρ, καὶ ἡ ζωὴ ὑμῶν κέκρυ-
πται σὺν τῷ Χριστῷ ἐν τῷ Θεῷ.

4 Ὅταν ὁ Χριστὸς φανερωθῇ, ἡ ζωὴ ἡμῶν,
τότε καὶ ὑμεῖς σὺν αὐτῷ φανερωθήσεσθε ἐν δό-
ξῃ.

5 Νεκρώσατε οὖν τὰ μέλη ὑμῶν τὰ ἐπὶ
τῆς γῆς, πορνείαν, ἀκαθαρσίαν, πάθος,
ἐπιθυμίαν κακήν, καὶ τὴν πλεονεξίαν, ἥτις
ἐστὶν εἰδωλολατρεία·

6 Δι' ἃ ἔρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τοὺς
υἱοὺς τῆς ἀπειθείας.

7 Ἐν οἷς καὶ ὑμεῖς περιεπατήσατέ ποτε,
ὅτε ἐζῆτε ἐν αὐτοῖς.

8 Νυνὶ δὲ ἀπόθεσθε καὶ ὑμεῖς τὰ πάντα,
ὀργήν, θυμόν, κακίαν, βλασφημίαν, αἰ-
σχρολογίαν ἐκ τοῦ στόματος ὑμῶν.

9 Μὴ ψεύδεσθε εἰς ἀλλήλους, ἀπεκδυσάμε-

νοι τὸν παλαιὸν ἄνθρωπον σὺν ταῖς πράξε-
σιν αὐτοῦ.
10 Καὶ ἐνδυσάμενοι τὸν νέον, τὸν ἀνακαι-
νούμενον εἰς ἐπίγνωσιν κατ' εἰκόνα τοῦ κτίσαν-
τος αὐτόν.
11 Ὅπου οὐκ ἔνι Ἕλλην καὶ Ἰουδαῖος· περι-
τομὴ καὶ ἀκροβυστία· Βάρβαρος, Σκύθης·
δοῦλος, ἐλεύθερος· ἀλλὰ τὰ πάντα καὶ ἐν πᾶ-
σι Χριστός.
12 Ἐνδύσασθε οὖν, ὡς ἐκλεκτοὶ τοῦ Θεοῦ
ἅγιοι καὶ ἠγαπημένοι, σπλάγχνα οἰκτιρμῶν,
χρηστότητα, ταπεινοφροσύνην, πρᾳότητα,
μακροθυμίαν.
13 Ἀνεχόμενοι ἀλλήλων, καὶ χαριζόμενοι
ἑαυτοῖς, ἐάν τις πρός τινα ἔχῃ μομφήν· κα-
θὼς καὶ ὁ Χριστὸς ἐχαρίσατο ὑμῖν, οὕτω καὶ
ὑμεῖς.
14 Ἐπὶ πᾶσι δὲ τούτοις τὴν ἀγάπην, ἥτις
ἐστὶ σύνδεσμος τῆς τελειότητος.
15 Καὶ ἡ εἰρήνη τοῦ Θεοῦ βραβευέτω ἐν ταῖς
καρδίαις ὑμῶν, εἰς ἣν καὶ ἐκλήθητε ἐν ἑνὶ σώ-
ματι, καὶ εὐχάριστοι γίνεσθε.
16 Ὁ λόγος τοῦ Χριστοῦ ἐνοικείτω ἐν ὑμῖν
πλουσίως, ἐν πάσῃ σοφίᾳ· διδάσκοντες καὶ
νουθετοῦντες ἑαυτοὺς, ψαλμοῖς καὶ ὕμνοις καὶ ᾠ-
δαῖς πνευματικαῖς, ἐν χάριτι ᾄδοντες ἐν τῇ
καρδίᾳ ὑμῶν τῷ Κυρίῳ.
17 Καὶ πᾶν ὅ, τι ἂν ποιῆτε, ἐν λόγῳ,
ἢ ἐν ἔργῳ, πάντα ἐν ὀνόματι Κυρίου Ἰησοῦ,
εὐχαριστοῦντες τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ δι' αὐτοῦ.
18 Αἱ γυναῖκες, ὑποτάσσεσθε τοῖς ἰδίοις
ἀνδράσιν, ὡς ἀνῆκεν ἐν Κυρίῳ.
19 Οἱ ἄνδρες, ἀγαπᾶτε τὰς γυναῖκας,
καὶ μὴ πικραίνεσθε πρὸς αὐτάς.

20 Τὰ

20 Τὰ τέκνα, ὑπακούετε τοῖς γονεῦσι κατὰ πάντα· τοῦτο γάρ ἐστιν εὐάρεστον τῷ Κυρίῳ.

21 Οἱ πατέρες, μὴ ἐρεθίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν, ἵνα μὴ ἀθυμῶσιν.

22 Οἱ δοῦλοι, ὑπακούετε κατὰ πάντα τοῖς κατὰ σάρκα κυρίοις, μὴ ἐν ὀφθαλμοδουλείαις ὡς ἀνθρωπάρεσκοι, ἀλλ' ἐν ἁπλότητι καρδίας, φοβούμενοι τὸν Θεόν.

23 Καὶ πᾶν ὅ, τι ἐὰν ποιῆτε, ἐκ ψυχῆς ἐργάζεσθε, ὡς τῷ Κυρίῳ καὶ οὐκ ἀνθρώποις·

24 Εἰδότες ὅτι ἀπὸ Κυρίου ἀπολήψεσθε τὴν ἀνταπόδοσιν τῆς κληρονομίας· τῷ γὰρ Κυρίῳ Χριστῷ δουλεύετε.

25 Ὁ δὲ ἀδικῶν κομιεῖται ὃ ἠδίκησε. καὶ οὐκ ἔστι προσωποληψία.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΟΙ κύριοι, τὸ δίκαιον καὶ τὴν ἰσότητα τοῖς δούλοις παρέχεσθε. εἰδότες ὅτι καὶ ὑμεῖς ἔχετε Κύριον ἐν οὐρανοῖς.

2 Τῇ προσευχῇ προσκαρτερεῖτε, γρηγοροῦντες ἐν αὐτῇ ἐν εὐχαριστίᾳ·

3 Προσευχόμενοι ἅμα καὶ περὶ ἡμῶν, ἵνα ὁ Θεὸς ἀνοίξῃ ἡμῖν θύραν τοῦ λόγου, λαλῆσαι τὸ μυστήριον τοῦ Χριστοῦ, δι' ὃ καὶ δέδεμαι.

4 Ἵνα φανερώσω αὐτό, ὡς δεῖ με λαλῆσαι.

5 Ἐν σοφίᾳ περιπατεῖτε πρὸς τοὺς ἔξω, τὸν καιρὸν ἐξαγοραζόμενοι.

6 Ὁ λόγος ὑμῶν πάντοτε ἐν χάριτι, ἅλατι ἠρτυμένος, εἰδέναι πῶς δεῖ ὑμᾶς ἑνὶ ἑκάστῳ ἀποκρίνεσθαι.

7 Τὰ κατ' ἐμὲ πάντα γνωρίσει ὑμῖν Τυχικὸς ὁ ἀγαπητὸς ἀδελφὸς, καὶ πιστὸς

'στὸς διάκονος, καὶ σύνδουλος ἐν Κυρίῳ·
8 Ὃν ἔπεμψα πρὸς ὑμᾶς εἰς αὐτὸ τοῦτο,
ἵνα γνῷ τὰ περὶ ὑμῶν, καὶ παρακαλέσῃ τὰς
καρδίας ὑμῶν.
9 Σὺν Ὀνησίμῳ τῷ πιστῷ καὶ ἀγαπητῷ
ἀδελφῷ, ὅς ἐστιν ἐξ ὑμῶν· πάντα ὑμῖν γνω-
ριοῦσι τὰ ὧδε.
10 Ἀσπάζεται ὑμᾶς Ἀρίσταρχος ὁ συ-
ναιχμάλωτός μου, καὶ Μάρκος ὁ ἀνεψιὸς Βαρ-
νάβα, περὶ οὗ ἐλάβετε ἐντολάς· ἐὰν ἔλθῃ
πρὸς ὑμᾶς, δέξασθε αὐτόν.
11 Καὶ Ἰησοῦς ὁ λεγόμενος Ἰοῦστος, οἱ ὄν-
τες ἐκ περιτομῆς· οὗτοι μόνοι συνεργοὶ εἰς τὴν
βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, οἵτινες ἐγενήθησάν μοι
παρηγορία.
12 Ἀσπάζεται ὑμᾶς Ἐπαφρᾶς ὁ ἐξ ὑμῶν
δοῦλος Χριστοῦ, πάντοτε ἀγωνιζόμενος ὑπὲρ
ὑμῶν ἐν ταῖς προσευχαῖς, ἵνα στῆτε τέλειοι καὶ
πεπληρωμένοι ἐν παντὶ θελήματι τοῦ Θεοῦ.
13 Μαρτυρῶ γὰρ αὐτῷ, ὅτι ἔχει ζῆλον πο-
λὺν ὑπὲρ ὑμῶν, καὶ τῶν ἐν Λαοδικείᾳ, καὶ τῶν
ἐν Ἱεραπόλει.
14 Ἀσπάζεται ὑμᾶς Λουκᾶς ὁ ἰατρὸς ὁ
ἀγαπητός, καὶ Δημᾶς.
15 Ἀσπάσασθε τοὺς ἐν Λαοδικείᾳ ἀδελ-
φούς, καὶ Νυμφᾶν, καὶ τὴν κατ' οἶκον αὐτοῦ
ἐκκλησίαν.
16 Καὶ ὅταν ἀναγνωσθῇ παρ' ὑμῖν ἡ ἐπιστο-
λή, ποιήσατε ἵνα καὶ ἐν τῇ Λαοδικέων ἐκκλη-
σίᾳ ἀναγνωσθῇ· καὶ τὴν ἐκ Λαοδικείας ἵνα καὶ
ὑμεῖς ἀναγνῶτε.
17 Καὶ εἴπατε Ἀρχίππῳ· Βλέπε τὴν
διακονίαν ἣν παρέλαβες ἐν Κυρίῳ ἵνα αὐτὴν
πληροῖς.

18 Ο' ἀσπασμὸς τῇ ἐμῇ χειρὶ Παύλυ· Μνημονεύετέ μυ τῶν δεσμῶν. Η' χάρις μεθ' ὑμῶν· ἀμήν.

Πρὸς Κολασσαεῖς ἐγράφη ἀπὸ Ρ'ώμης διὰ Τυχικοῦ καὶ Ο'νησίμυ.

ΠΑΥ'ΛΟΥ τῦ Α'ΠΟΣΤΟ'ΛΟΥ

Η' ΠΡΟ'Σ ΘΕΣΣΑΛΟΝΙΚ.

Ε'ΠΙΣΤΟΛΗ' Α'.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑΥ'ΛΟΣ καὶ Σιλυανὸς καὶ Τιμόθεος τῇ ἐκκλησίᾳ Θεσσαλονικέων, ἐν Θεῷ πατρὶ, καὶ Κυρίῳ Ι'ησῦ Χριςῷ, χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ Κυρίυ Ι'ησῦ Χριςτῦ.

2 Εὐχαριςῦμεν τῷ Θεῷ πάντοτε περὶ πάντων ὑμῶν, μνείαν ὑμῶν ποιούμενοι ἐπὶ τῶν προσευχῶν ἡμῶν.

3 Α'διαλείπτως μνημονεύοντες ὑμῶν τῦ ἔργυ τῆς πίςεως, καὶ τῦ κόπυ τῆς ἀγάπης, καὶ τῆς ὑπομονῆς τῆς ἐλπίδος τῦ Κυρίυ ἡμῶν Ι'ησῦ Χῦ ἔμπροσθεν τῦ Θεῦ καὶ πατρὸς ἡμῶν.

4 Εἰδότες, ἀδελφοὶ ἠγαπημένοι, ὑπὸ Θεοῦ τὴν ἐκλογὴν ὑμῶν·

5 Ο'τι τὸ εὐαγγέλιον ἡμῶν ὐκ ἐγενήθη εἰς ὑμᾶς ἐν λόγῳ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν δυνάμει, καὶ

ἐν

ἐν Πνεύματι ἁγίῳ, καὶ ἐν πληροφορίᾳ πολ-
λῇ· καθὼς οἴδατε οἷοι ἐγενήθημεν ἐν ὑμῖν
δι' ὑμᾶς.
6 Καὶ ὑμεῖς μιμηταὶ ἡμῶν ἐγενήθητε καὶ
τοῦ Κυρίου, δεξάμενοι τὸν λόγον ἐν θλίψει
πολλῇ, μετὰ χαρᾶς Πνεύματος ἁγίου.
7 Ὥστε γενέσθαι ὑμᾶς τύπους πᾶσι τοῖς πι-
στεύουσιν ἐν τῇ Μακεδονίᾳ καὶ τῇ Ἀχαΐᾳ.
8 Ἀφ' ὑμῶν γὰρ ἐξήχηται ὁ λόγος τοῦ Κυ-
ρίου οὐ μόνον ἐν τῇ Μακεδονίᾳ καὶ Ἀχαΐᾳ, ἀλ-
λὰ καὶ ἐν παντὶ τόπῳ ἡ πίστις ὑμῶν ἡ πρὸς τὸν
Θεὸν ἐξελήλυθεν, ὥστε μὴ χρείαν ἡμᾶς
ἔχειν λαλεῖν τι.
9 Αὐτοὶ γὰρ περὶ ἡμῶν ἀπαγγέλλουσιν
ὁποίαν εἴσοδον ἔχομεν πρὸς ὑμᾶς, καὶ πῶς
ἐπεστρέψατε πρὸς τὸν Θεὸν ἀπὸ τῶν εἰδώλων,
δουλεύειν Θεῷ ζῶντι καὶ ἀληθινῷ.
10 Καὶ ἀναμένειν τὸν Υἱὸν αὐτοῦ ἐκ τῶν οὐ-
ρανῶν, ὃν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν, Ἰησοῦν τὸν ῥυό-
μενον ἡμᾶς ἀπὸ τῆς ὀργῆς τῆς ἐρχομένης.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΑΥτοὶ γὰρ οἴδατε, ἀδελφοί, τὴν
εἴσοδον ἡμῶν τὴν πρὸς ὑμᾶς,
ὅτι οὐ κενὴ γέγονεν·
2 Ἀλλὰ καὶ προπαθόντες καὶ ὑβρισθέντες,
καθὼς οἴδατε, ἐν Φιλίπποις, ἐπαρρησια-
σάμεθα ἐν τῷ Θεῷ ἡμῶν λαλῆσαι πρὸς ὑμᾶς
τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Θεοῦ ἐν πολλῷ ἀγῶνι.
3 Ἡ γὰρ παράκλησις ἡμῶν οὐκ ἐκ πλάνης,
οὐδὲ ἐξ ἀκαθαρσίας, οὔτε ἐν δόλῳ·
4 Ἀλλὰ καθὼς δεδοκιμάσμεθα ὑπὸ τοῦ
Θεοῦ πιστευθῆναι τὸ εὐαγγέλιον, οὕτω λα-
λοῦμεν, οὐχ ὡς ἀνθρώποις ἀρέσκοντες, ἀλλὰ
τῷ

τῷ Θεῷ τῷ δοκιμάζοντι τὰς καρδίας ἡμῶν.

5 Οὔτε γάρ ποτε ἐν λόγῳ κολακείας ἐγενήθημεν, καθὼς οἴδατε, οὔτε ἐν προφάσει πλεονεξίας· Θεὸς μάρτυς.

6 Οὔτε ζητοῦντες ἐξ ἀνθρώπων δόξαν, οὔτε ἀφ' ὑμῶν, οὔτε ἀπ' ἄλλων· δυνάμενοι ἐν βάρει εἶναι, ὡς Χριστοῦ ἀπόστολοι·

7 Ἀλλ' ἐγενήθημεν ἤπιοι ἐν μέσῳ ὑμῶν, ὡς ἂν τροφὸς θάλπῃ τὰ ἑαυτῆς τέκνα.

8 Οὕτως, ἱμειρόμενοι ὑμῶν, εὐδοκοῦμεν μεταδοῦναι ὑμῖν οὐ μόνον τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ καὶ τὰς ἑαυτῶν ψυχὰς, διότι ἀγαπητοὶ ἡμῖν γεγένησθε.

9 Μνημονεύετε γὰρ, ἀδελφοὶ, τὸν κόπον ἡμῶν καὶ τὸν μόχθον· νυκτὸς γὰρ καὶ ἡμέρας ἐργαζόμενοι, πρὸς τὸ μὴ ἐπιβαρῆσαί τινα ὑμῶν, ἐκηρύξαμεν εἰς ὑμᾶς τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Θεοῦ.

10 Ὑμεῖς μάρτυρες καὶ ὁ Θεὸς, ὡς ὁσίως καὶ δικαίως καὶ ἀμέμπτως ὑμῖν τοῖς πιστεύουσιν ἐγενήθημεν.

11 Καθάπερ οἴδατε ὡς ἕνα ἕκαστον ὑμῶν, ὡς πατὴρ τέκνα ἑαυτοῦ, παρακαλοῦντες ὑμᾶς καὶ παραμυθούμενοι.

12 Καὶ μαρτυρούμενοι, εἰς τὸ περιπατῆσαι ὑμᾶς ἀξίως τοῦ Θεοῦ τοῦ καλοῦντος ὑμᾶς εἰς τὴν ἑαυτοῦ βασιλείαν καὶ δόξαν.

13 Διὰ τοῦτο καὶ ἡμεῖς εὐχαριστοῦμεν τῷ Θεῷ ἀδιαλείπτως, ὅτι παραλαβόντες λόγον ἀκοῆς παρ' ἡμῶν, τοῦ Θεοῦ, ἐδέξασθε οὐ λόγον ἀνθρώπων, ἀλλὰ (καθώς ἐστιν ἀληθῶς) λόγον Θεοῦ, ὃς καὶ ἐνεργεῖται ἐν ὑμῖν τοῖς πιστεύουσιν.

14 Ὑμεῖς γὰρ μιμηταὶ ἐγενήθητε, ἀδελφοί,

φοὶ, τῶν ἐκκλησιῶν τοῦ Θεοῦ τῶν οὐσῶν ἐν τῇ
Ἰουδαίᾳ, ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὅτι ταῦτα ἐπάθε-
τε καὶ ὑμεῖς ὑπὸ τῶν ἰδίων συμφυλετῶν, κα-
θὼς καὶ αὐτοὶ ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων·
15 Τῶν καὶ τὸν Κύριον ἀποκτεινάντων Ἰη-
σοῦν, καὶ τοὺς ἰδίους προφήτας, καὶ ἡμᾶς ἐκδιω-
ξάντων, καὶ Θεῷ μὴ ἀρεσκόντων, καὶ πᾶσιν
ἀνθρώποις ἐναντίων.
16 Κωλυόντων ἡμᾶς τοῖς ἔθνεσι λαλῆσαι
ἵνα σωθῶσιν, εἰς τὸ ἀναπληρῶσαι αὐτῶν τὰς
ἁμαρτίας πάντοτε· ἔφθασε δὲ ἐπ' αὐτοὺς ἡ
ὀργὴ εἰς τέλος.
17 Ἡμεῖς δὲ, ἀδελφοὶ, ἀπορφανισθέντες
ἀφ' ὑμῶν πρὸς καιρὸν ὥρας, προσώπῳ, οὐ
καρδίᾳ, περισσοτέρως ἐσπουδάσαμεν τὸ πρό-
σωπον ὑμῶν ἰδεῖν ἐν πολλῇ ἐπιθυμίᾳ.
18 Διὸ ἠθελήσαμεν ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς
(ἐγὼ μὲν Παῦλος) καὶ ἅπαξ καὶ δὶς, καὶ ἐνέ-
κοψεν ἡμᾶς ὁ Σατανᾶς.
19 Τίς γὰρ ἡμῶν ἐλπὶς, ἢ χαρὰ, ἢ στέφανος
καυχήσεως; ἢ οὐχὶ καὶ ὑμεῖς ἔμπροσθεν τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐν τῇ αὐτοῦ παρουσίᾳ;
20 Ὑμεῖς γάρ ἐστε ἡ δόξα ἡμῶν καὶ ἡ
χαρά.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΔΙὸ μηκέτι στέγοντες, εὐδοκήσα-
μεν καταλειφθῆναι ἐν Ἀθήναις
μόνοι,
2 Καὶ ἐπέμψαμεν Τιμόθεον τὸν ἀδελ-
φὸν ἡμῶν καὶ διάκονον τοῦ Θεοῦ καὶ συνεργὸν ἡμῶν
ἐν τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Χριστοῦ, εἰς τὸ στηρίξαι
ὑμᾶς καὶ παρακαλέσαι ὑμᾶς περὶ τῆς πί-
στεως ἡμῶν.

3 Τῷ

3 Τῷ μηδένα σαίνεσθαι ἐν ταῖς θλίψε-
σι ταύταις· αὐτοὶ γὰρ οἴδατε ὅτι εἰς τοῦτο
κείμεθα.
4 Καὶ γὰρ ὅτε πρὸς ὑμᾶς ἦμεν, προελέ-
γομεν ὑμῖν ὅτι μέλλομεν θλίβεσθαι, κα-
θὼς ἐγένετο, καὶ οἴδατε.
5 Διὰ τοῦτο κἀγὼ μηκέτι στέγων, ἔπεμ-
ψα εἰς τὸ γνῶναι τὴν πίστιν ὑμῶν· μήπως
ἐπείρασεν ὑμᾶς ὁ πειράζων, καὶ εἰς κενὸν
γένηται ὁ κόπος ἡμῶν.
6 Ἄρτι δὲ ἐλθόντος Τιμοθέου πρὸς ἡμᾶς
ἀφ' ὑμῶν, καὶ εὐαγγελισαμένου ἡμῖν τὴν πί-
στιν καὶ τὴν ἀγάπην ὑμῶν, καὶ ὅτι ἔχετε μνείαν
ἡμῶν ἀγαθὴν πάντοτε, ἐπιποθοῦντες ἡμᾶς
ἰδεῖν, καθάπερ καὶ ἡμεῖς ὑμᾶς·
7 Διὰ τοῦτο παρεκλήθημεν, ἀδελφοὶ,
ἐφ' ὑμῖν, ἐπὶ πάσῃ τῇ θλίψει καὶ ἀνάγκῃ
ἡμῶν, διὰ τῆς ὑμῶν πίστεως.
8 Ὅτι νῦν ζῶμεν, ἐὰν ὑμεῖς στήκητε ἐν
Κυρίῳ.
9 Τίνα γὰρ εὐχαριστίαν δυνάμεθα τῷ
Θεῷ ἀνταποδοῦναι περὶ ὑμῶν, ἐπὶ πάσῃ τῇ
χαρᾷ ᾗ χαίρομεν δι' ὑμᾶς ἔμπροσθεν τοῦ
Θεοῦ ἡμῶν,
10 Νυκτὸς καὶ ἡμέρας ὑπερεκπερισσοῦ δεό-
μενοι εἰς τὸ ἰδεῖν ὑμῶν τὸ πρόσωπον, καὶ κα-
ταρτίσαι τὰ ὑστερήματα τῆς πίστεως ὑμῶν;
11 Αὐτὸς δὲ ὁ Θεὸς, καὶ Πατὴρ ἡμῶν,
καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς κατευθύναι
τὴν ὁδὸν ἡμῶν πρὸς ὑμᾶς.
12 Ὑμᾶς δὲ ὁ Κύριος πλεονάσαι καὶ πε-
ρισσεύσαι τῇ ἀγάπῃ εἰς ἀλλήλους καὶ εἰς πάν-
τας, καθάπερ καὶ ἡμεῖς εἰς ὑμᾶς·
13 Εἰς τὸ στηρίξαι ὑμῶν τὰς καρδίας ἀμέμ-

πτους ἐν ἁγιωσύνῃ, ἔμπροσθεν τοῦ Θεοῦ καὶ Πατρὸς ἡμῶν, ἐν τῇ παρουσίᾳ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάντων τῶν ἁγίων αὐτοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΤΟ λοιπὸν οὖν, ἀδελφοί, ἐρωτῶμεν ὑμᾶς καὶ παρακαλοῦμεν ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, καθὼς παρελάβετε παρ' ἡμῶν τὸ πῶς δεῖ ὑμᾶς περιπατεῖν καὶ ἀρέσκειν Θεῷ, ἵνα περισσεύητε μᾶλλον.

2 Οἴδατε γὰρ τίνας παραγγελίας ἐδώκαμεν ὑμῖν διὰ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ.

3 Τοῦτο γάρ ἐστι θέλημα τοῦ Θεοῦ, ὁ ἁγιασμὸς ὑμῶν, ἀπέχεσθαι ὑμᾶς ἀπὸ τῆς πορνείας·

4 Εἰδέναι ἕκαστον ὑμῶν τὸ ἑαυτοῦ σκεῦος κτᾶσθαι ἐν ἁγιασμῷ καὶ τιμῇ·

5 Μὴ ἐν πάθει ἐπιθυμίας, καθάπερ καὶ τὰ ἔθνη τὰ μὴ εἰδότα τὸν Θεόν.

6 Τὸ μὴ ὑπερβαίνειν καὶ πλεονεκτεῖν ἐν τῷ πράγματι τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ· διότι ἔκδικος ὁ Κύριος περὶ πάντων τούτων, καθὼς καὶ προείπαμεν ὑμῖν, καὶ διεμαρτυράμεθα·

7 Οὐ γὰρ ἐκάλεσεν ἡμᾶς ὁ Θεὸς ἐπὶ ἀκαθαρσίᾳ, ἀλλ' ἐν ἁγιασμῷ.

8 Τοιγαροῦν ὁ ἀθετῶν, οὐκ ἄνθρωπον ἀθετεῖ, ἀλλὰ τὸν Θεὸν τὸν καὶ δόντα τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ τὸ ἅγιον εἰς ἡμᾶς.

9 Περὶ δὲ τῆς φιλαδελφίας οὐ χρείαν ἔχετε γράφειν ὑμῖν· αὐτοὶ γὰρ ὑμεῖς θεοδίδακτοί ἐστε εἰς τὸ ἀγαπᾷν ἀλλήλους.

10 Καὶ γὰρ ποιεῖτε αὐτὸ εἰς πάντας τοὺς ἀδελφοὺς τοὺς ἐν ὅλῃ τῇ Μακεδονίᾳ· παρακαλοῦμεν δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί, περισσεύειν μᾶλλον,

11 Καὶ φιλοτιμεῖσθαι ἡσυχάζειν, καὶ

πράσ-

πράσσειν τὰ ἴδια, καὶ ἐργάζεσθαι ταῖς ἰδίαις
χερσὶν ὑμῶν, καθὼς ὑμῖν παρηγγείλαμεν.
12 Ἵνα περιπατῆτε εὐσχημόνως πρὸς τοὺς
ἔξω, καὶ μηδενὸς χρείαν ἔχητε.
13 Οὐ θέλω δὲ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί,
περὶ τῶν κεκοιμημένων, ἵνα μὴ λυπῆσθε, κα-
θὼς καὶ οἱ λοιποὶ οἱ μὴ ἔχοντες ἐλπίδα.
14 Εἰ γὰρ πιστεύομεν ὅτι Ἰησοῦς ἀπέθα-
νε καὶ ἀνέστη, οὕτω καὶ ὁ Θεὸς τοὺς κοιμηθέντας
διὰ τοῦ Ἰησοῦ ἄξει σὺν αὐτῷ.
15 Τοῦτο γὰρ ὑμῖν λέγομεν ἐν λόγῳ Κυ-
ρίου, ὅτι ἡμεῖς οἱ ζῶντες οἱ περιλειπόμενοι
εἰς τὴν παρουσίαν τοῦ Κυρίου, οὐ μὴ φθάσω-
μεν τοὺς κοιμηθέντας.
16 Ὅτι αὐτὸς ὁ Κύριος ἐν κελεύσματι,
ἐν φωνῇ ἀρχαγγέλου, καὶ ἐν σάλπιγγι Θεοῦ
καταβήσεται ἀπ' οὐρανοῦ, καὶ οἱ νεκροὶ ἐν Χρι-
στῷ ἀναστήσονται πρῶτον·
17 Ἔπειτα ἡμεῖς οἱ ζῶντες οἱ περιλει-
πόμενοι, ἅμα σὺν αὐτοῖς ἁρπαγησόμεθα
ἐν νεφέλαις εἰς ἀπάντησιν τοῦ Κυρίου εἰς ἀέ-
ρα· καὶ οὕτω πάντοτε σὺν Κυρίῳ ἐσόμεθα.
18 Ὥστε παρακαλεῖτε ἀλλήλους ἐν τοῖς
λόγοις τούτοις.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 ΠΕρὶ δὲ τῶν χρόνων καὶ τῶν καιρῶν,
ἀδελφοί, οὐ χρείαν ἔχετε ὑμῖν
γράφεσθαι.
2 Αὐτοὶ γὰρ ἀκριβῶς οἴδατε ὅτι ἡ ἡμέρα
Κυρίου ὡς κλέπτης ἐν νυκτί, οὕτως ἔρχεται.
3 Ὅταν γὰρ λέγωσιν· Εἰρήνη καὶ ἀσφά-
λεια, τότε αἰφνίδιος αὐτοῖς ἐφίσταται ὄλε-
θρος, ὥσπερ ἡ ὠδὶν τῇ ἐν γαστρὶ ἐχούσῃ· καὶ οὐ
μὴ ἐκφύγωσιν.

4 Ὑμεῖς δὲ, ἀδελφοὶ, οὐκ ἐστὲ ἐν σκότει,
ἵνα ἡ ἡμέρα ὑμᾶς ὡς κλέπτης καταλάβῃ.
5 Πάντες ὑμεῖς Υἱοὶ φωτός ἐστε, καὶ Υἱοὶ
ἡμέρας· οὐκ ἐσμὲν νυκτὸς, οὐδὲ σκότους.
6 Ἄρα οὖν μὴ καθεύδωμεν ὡς καὶ οἱ λοι-
ποὶ, ἀλλὰ γρηγορῶμεν καὶ νήφωμεν.
7 Οἱ γὰρ καθεύδοντες, νυκτὸς καθεύδου-
σι· καὶ οἱ μεθυσκόμενοι, νυκτὸς μεθύουσιν.
8 Ἡμεῖς δὲ ἡμέρας ὄντες, νήφωμεν, ἐν-
δυσάμενοι θώρακα πίστεως καὶ ἀγάπης, καὶ
περικεφαλαίαν, ἐλπίδα σωτηρίας.
9 Ὅτι οὐκ ἔθετο ἡμᾶς ὁ Θεὸς εἰς ὀργὴν,
ἀλλ' εἰς περιποίησιν σωτηρίας διὰ τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ,
10 Τοῦ ἀποθανόντος ὑπὲρ ἡμῶν, ἵνα εἴ-
τε γρηγορῶμεν, εἴτε καθεύδωμεν, ἅμα σὺν
αὐτῷ ζήσωμεν.
11 Διὸ παρακαλεῖτε ἀλλήλους, καὶ οἰκο-
δομεῖτε εἷς τὸν ἕνα, καθὼς καὶ ποιεῖτε.
12 Ἐρωτῶμεν δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοὶ, εἰδέ-
ναι τοὺς κοπιῶντας ἐν ὑμῖν, καὶ προϊσταμένους
ὑμῶν ἐν Κυρίῳ, καὶ νουθετοῦντας ὑμᾶς.
13 Καὶ ἡγεῖσθαι αὐτοὺς ὑπὲρ ἐκπερισσοῦ ἐν
ἀγάπῃ, διὰ τὸ ἔργον αὐτῶν. εἰρηνεύετε ἐν
ἑαυτοῖς.
14 Παρακαλοῦμεν δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοὶ,
νουθετεῖτε τοὺς ἀτάκτους, παραμυθεῖσθε τοὺς
ὀλιγοψύχους, ἀντέχεσθε τῶν ἀσθενῶν, μακρο-
θυμεῖτε πρὸς πάντας.
15 Ὁρᾶτε μή τις κακὸν ἀντὶ κακοῦ τινι
ἀποδῷ· ἀλλὰ πάντοτε τὸ ἀγαθὸν διώκετε καὶ
εἰς ἀλλήλους, καὶ εἰς πάντας.
16 Πάντοτε χαίρετε.
17 Ἀδιαλείπτως προσεύχεσθε.

18 Ε'ν παντὶ εὐχαριστεῖτε· τοῦτο γὰρ θέ-
λημα Θεοῦ ἐν Χριστῷ Ι'ησοῦ εἰς ὑμᾶς.
19 Τὸ Πνεῦμα μὴ σβέννυτε.
20 Προφητείας μὴ ἐξουθενεῖτε.
21 Πάντα δοκιμάζετε· τὸ καλὸν κατέχετε.
22 Α'πὸ παντὸς εἴδους πονηροῦ ἀπέχεσθε.
23 Αὐτὸς δὲ ὁ Θεὸς τῆς εἰρήνης ἁγιάσαι ὑμᾶς
ὁλοτελεῖς, καὶ ὁλόκληρον ὑμῶν τὸ Πνεῦμα, καὶ
ἡ ψυχὴ, καὶ τὸ σῶμα ἀμέμπτως ἐν τῇ παρουσίᾳ
τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ι'ησοῦ Χριστοῦ τηρηθείη.
24 Πιστὸς ὁ καλῶν ὑμᾶς, ὃς καὶ ποιήσει.
25 Α'δελφοὶ, προσεύχεσθε περὶ ἡμῶν.
26 Α'σπάσασθε τοὺς ἀδελφοὺς πάντας ἐν
φιλήματι ἁγίῳ.
27 Ο'ρκίζω ὑμᾶς τὸν Κύριον, ἀναγνωσθῆναι
τὴν ἐπιστολὴν πᾶσι τοῖς ἁγίοις ἀδελφοῖς.
28 Η' χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ι'ησοῦ Χρι-
στοῦ μεθ' ὑμῶν. Α'μήν.

Πρὸς Θεσσαλονικεῖς πρώτη ἐγράφη ἀπὸ
Α'θηνῶν.

ΠΑΥ'ΛΟΥ τοῦ Α'ΠΟΣΤΟ'ΛΟΥ
Η' ΠΡΟ'Σ ΘΕΣΣΑΛΟΝΙΚΕΙ'Σ
Ε'ΠΙΣΤΟΛΗ', Β'.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑΥ'ΛΟΣ Καὶ Σιλουανὸς καὶ
Τιμόθεος τῇ ἐκκλησίᾳ Θεσσα-
λονικέων ἐν Θεῷ Πατρὶ ἡμῶν,
καὶ Κυρίῳ Ι'ησοῦ Χριστῷ.

2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς
ἡμῶν, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
3 Εὐχαριστεῖν ὀφείλομεν τῷ Θεῷ πάντοτε
περὶ ὑμῶν, ἀδελφοὶ, καθὼς ἄξιόν ἐστιν,
ὅτι ὑπεραυξάνει ἡ πίστις ὑμῶν, καὶ πλεονά-
ζει ἡ ἀγάπη ἑνὸς ἑκάστου πάντων ὑμῶν εἰς
ἀλλήλους·
4 Ὥστε ἡμᾶς αὐτοὺς ἐν ὑμῖν καυχᾶσθαι ἐν
ταῖς ἐκκλησίαις τοῦ Θεοῦ ὑπὲρ τῆς ὑπομονῆς
ὑμῶν καὶ πίστεως ἐν πᾶσι τοῖς διωγμοῖς ὑμῶν,
καὶ ταῖς θλίψεσιν αἷς ἀνέχεσθε·
5 Ἔνδειγμα τῆς δικαίας κρίσεως τοῦ
Θεοῦ, εἰς τὸ καταξιωθῆναι ὑμᾶς τῆς βασι-
λείας τοῦ Θεοῦ, ὑπὲρ ἧς καὶ πάσχετε.
6 Εἴπερ δίκαιον παρὰ Θεῷ ἀνταποδοῦναι
τοῖς θλίβουσιν ὑμᾶς θλίψιν·
7 Καὶ ὑμῖν τοῖς θλιβομένοις ἄνεσιν μεθ'
ἡμῶν, ἐν τῇ ἀποκαλύψει τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ
ἀπ' οὐρανοῦ μετ' ἀγγέλων δυνάμεως αὐτοῦ.
8 Ἐν πυρὶ φλογὸς, διδόντος ἐκδίκησιν
τοῖς μὴ εἰδόσι Θεὸν, καὶ τοῖς μὴ ὑπακούουσι
τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ·
9 Οἵτινες δίκην τίσουσιν, ὄλεθρον αἰώ-
νιον, ἀπὸ προσώπου τοῦ Κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς
δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ·
10 Ὅταν ἔλθῃ ἐνδοξασθῆναι ἐν τοῖς ἁγίοις
αὐτοῦ, καὶ θαυμασθῆναι ἐν πᾶσι τοῖς πιστεύου-
σιν, (ὅτι ἐπιστεύθη τὸ μαρτύριον ἡμῶν ἐφ'
ὑμᾶς) ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.
11 Εἰς ὃ καὶ προσευχόμεθα πάντοτε περὶ
ὑμῶν, ἵνα ὑμᾶς ἀξιώσῃ τῆς κλήσεως ὁ Θεὸς
ἡμῶν, καὶ πληρώσῃ πᾶσαν εὐδοκίαν ἀγαθω-
σύνης, καὶ ἔργον πίστεως ἐν δυνάμει·
12 Ὅπως ἐνδοξασθῇ τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου

ἡμῶν

ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐν ὑμῖν, καὶ ὑμεῖς ἐν αὐ-
τῷ, κατὰ τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ Κυ-
ρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΕΡωτῶμεν δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί, ὑπὲρ
τῆς παρουσίας τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστοῦ, καὶ ἡμῶν ἐπισυναγωγῆς ἐπ' αὐτόν,
2 Εἰς τὸ μὴ ταχέως σαλευθῆναι ὑμᾶς ἀπὸ
τοῦ νοός, μήτε θροεῖσθαι, μήτε διὰ Πνεύμα-
τος, μήτε διὰ λόγου, μήτε δι' ἐπιστολῆς ὡς δι'
ἡμῶν, ὡς ὅτι ἐνέστηκεν ἡ ἡμέρα τοῦ Χριστοῦ.
3 Μή τις ὑμᾶς ἐξαπατήσῃ κατὰ μηδένα
τρόπον· ὅτι ἐὰν μὴ ἔλθῃ ἡ ἀποστασία πρῶ-
τον, καὶ ἀποκαλυφθῇ ὁ ἄνθρωπος τῆς ἁμαρ-
τίας, ὁ Υἱὸς τῆς ἀπωλείας,
4 Ὁ ἀντικείμενος καὶ ὑπεραιρόμενος ἐπὶ
πάντα λεγόμενον Θεὸν ἢ σέβασμα· ὥστε αὐ-
τὸν εἰς τὸν ναὸν τοῦ Θεοῦ ὡς Θεὸν καθίσαι, ἀ-
ποδεικνύντα ἑαυτὸν ὅτι ἐστὶ Θεός.
5 Οὐ μνημονεύετε ὅτι ἔτι ὢν πρὸς ὑμᾶς,
ταῦτα ἔλεγον ὑμῖν;
6 Καὶ νῦν τὸ κατέχον οἴδατε, εἰς τὸ ἀπο-
καλυφθῆναι αὐτὸν ἐν τῷ ἑαυτοῦ καιρῷ·
7 Τὸ γὰρ μυστήριον ἤδη ἐνεργεῖται τῆς ἀ-
νομίας, μόνον ὁ κατέχων ἄρτι ἕως ἐκ μέσου
γένηται.
8 Καὶ τότε ἀποκαλυφθήσεται ὁ ἄνομος,
ὃν ὁ Κύριος ἀναλώσει τῷ Πνεύματι τοῦ στό-
ματος αὐτοῦ, καὶ καταργήσει τῇ ἐπιφανείᾳ τῆς
παρουσίας αὐτοῦ·
9 Οὗ ἐστιν ἡ παρουσία κατ' ἐνέργειαν τοῦ
Σατανᾶ ἐν πάσῃ δυνάμει, καὶ σημείοις, καὶ
τέρασι ψεύδους,

10 Καὶ ἐν πάσῃ ἀπάτῃ τῆς ἀδικίας ἐν τοῖς
ἀπολλυμένοις· ἀνθ' ὧν τὴν ἀγάπην τῆς ἀ-
ληθείας οὐκ ἐδέξαντο εἰς τὸ σωθῆναι αὐτούς·
11 Καὶ διὰ τοῦτο πέμψει αὐτοῖς ὁ Θεὸς
ἐνέργειαν πλάνης, εἰς τὸ πιστεῦσαι αὐτοὺς τῷ
ψεύδει.
12 Ἵνα κριθῶσι πάντες οἱ μὴ πιστεύσαντες
τῇ ἀληθείᾳ, ἀλλ' εὐδοκήσαντες ἐν τῇ ἀδικίᾳ.
13 Ἡμεῖς δὲ ὀφείλομεν εὐχαριστεῖν τῷ
Θεῷ πάντοτε περὶ ὑμῶν, ἀδελφοὶ ἠγαπη-
μένοι ὑπὸ Κυρίου, ὅτι εἵλετο ὑμᾶς ὁ Θεὸς
ἀπ' ἀρχῆς εἰς σωτηρίαν ἐν ἁγιασμῷ Πνεύ-
ματος, καὶ πίστει ἀληθείας·
14 Εἰς ὃ ἐκάλεσεν ὑμᾶς διὰ τοῦ εὐαγγε-
λίου ἡμῶν, εἰς περιποίησιν δόξης τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
15 Ἄρα οὖν, ἀδελφοί, στήκετε, καὶ κρα-
τεῖτε τὰς παραδόσεις, ἃς ἐδιδάχθητε εἴτε
διὰ λόγου, εἴτε δι' ἐπιστολῆς ἡμῶν.
16 Αὐτὸς δὲ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χρι-
στὸς, καὶ ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ ἡμῶν ὁ ἀγαπήσας
ἡμᾶς, καὶ δοὺς παράκλησιν αἰωνίαν καὶ ἐλπί-
δα ἀγαθὴν ἐν χάριτι,
17 Παρακαλέσαι ὑμῶν τὰς καρδίας,
καὶ στηρίξαι ὑμᾶς ἐν παντὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ
ἀγαθῷ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΤΟ' λοιπὸν προσεύχεσθε, ἀδελ-
φοὶ, περὶ ἡμῶν, ἵνα ὁ λόγος
τοῦ Κυρίου τρέχῃ, καὶ δοξάζηται καθὼς καὶ
πρὸς ὑμᾶς·
2 Καὶ ἵνα ῥυσθῶμεν ὑπὸ τῶν ἀτόπων καὶ
πονηρῶν ἀνθρώπων. οὐ γὰρ πάντων ἡ πίστις.

3 Πιστὸς δέ ἐστιν ὁ Κύριος, ὃς στηρίξει ὑ-
μᾶς καὶ φυλάξει ἀπὸ τοῦ πονηροῦ.
4 Πεποίθαμεν δὲ ἐν Κυρίῳ ἐφ' ὑμᾶς, ὅτι ἃ
παραγγέλλομεν ὑμῖν καὶ ποιεῖτε, καὶ ποιήσετε.
5 Ὁ δὲ Κύριος κατευθύναι ὑμῶν τὰς
καρδίας εἰς τὴν ἀγάπην τοῦ Θεοῦ, καὶ εἰς ὑ-
πομονὴν τοῦ Χριστοῦ.
6 Παραγγέλλομεν δὲ ὑμῖν, ἀδελφοὶ,
ἐν ὀνόματι τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ,
στέλλεσθαι ὑμᾶς ἀπὸ παντὸς ἀδελφοῦ ἀτάκτως
περιπατοῦντος, καὶ μὴ κατὰ τὴν παράδοσιν ἣν
παρέλαβε παρ' ἡμῶν.
7 Αὐτοὶ γὰρ οἴδατε πῶς δεῖ μιμεῖσθαι
ἡμᾶς, ὅτι οὐκ ἠτακτήσαμεν ἐν ὑμῖν·
8 Οὐδὲ δωρεὰν ἄρτον ἐφάγομεν παρά τι-
νος, ἀλλ' ἐν κόπῳ καὶ μόχθῳ, νύκτα καὶ ἡμέ-
ραν ἐργαζόμενοι, πρὸς τὸ μὴ ἐπιβαρῆσαί
τινα ὑμῶν.
9 Οὐχ ὅτι οὐκ ἔχομεν ἐξουσίαν, ἀλλ' ἵνα
ἑαυτοὺς τύπον δῶμεν ὑμῖν εἰς τὸ μιμεῖσθαι
ἡμᾶς.
10 Καὶ γὰρ ὅτε ἦμεν πρὸς ὑμᾶς, τοῦτο
παρηγγέλλομεν ὑμῖν, ὅτι εἴ τις οὐ θέλει
ἐργάζεσθαι, μηδὲ ἐσθιέτω.
11 Ἀκούομεν γάρ τινας περιπατοῦντας ἐν
ὑμῖν ἀτάκτως, μηδὲν ἐργαζομένους, ἀλλὰ
περιεργαζομένους.
12 Τοῖς δὲ τοιούτοις παραγγέλλομεν, καὶ
παρακαλοῦμεν διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ, ἵνα μετὰ ἡσυχίας ἐργαζόμενοι, τὸν
ἑαυτῶν ἄρτον ἐσθίωσιν.
13 Ὑμεῖς δὲ, ἀδελφοὶ, μὴ ἐκκακήσητε
καλοποιοῦντες.
14 Εἰ δέ τις οὐχ ὑπακούει τῷ λόγῳ ἡμῶν

διὰ τῆς ἐπιστολῆς, τοῦτον σημειοῦσθε, καὶ μὴ
συναναμίγνυσθε αὐτῷ, ἵνα ἐντραπῇ.
15 Καὶ μὴ ὡς ἐχθρὸν ἡγεῖσθε, ἀλλὰ νου-
θετεῖτε ὡς ἀδελφόν.
16 Αὐτὸς δὲ ὁ Κύριος τῆς εἰρήνης δῴη
ὑμῖν τὴν εἰρήνην διὰ παντὸς ἐν παντὶ τρόπῳ·
ὁ Κύριος μετὰ πάντων ὑμῶν.
17 Ὁ ἀσπασμὸς τῇ ἐμῇ χειρὶ Παύλου, ὅ
ἐστι σημεῖον ἐν πάσῃ ἐπιστολῇ. οὕτω γράφω.
18 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Θεσσαλονικεῖς δευτέρα ἐγράφη ἀπὸ
Ἀθηνῶν.

ΠΑΥʼΛΟΥ τοῦ ἈΠΟΣΤΟʼΛΟΥ

Ἡ ΠΡΟʼΣ ΤΙΜΟʼΘΕΟΝ

ΕʼΠΙΣΤΟΛΗʼ, Αʹ.

ΚΕΦΑʼΛΑΙΟΝ, Αʹ. r.

1 ΠΑΥʼΛΟΣ Ἀπόστολος Ἰησοῦ
Χριστοῦ κατ' ἐπιταγὴν Θεοῦ Σω-
τῆρος ἡμῶν καὶ Κυρίου Ἰησοῦ
Χριστοῦ, τῆς ἐλπίδος ἡμῶν,
2 Τιμοθέῳ γνησίῳ τέκνῳ ἐν πίστει, χά-
ρις, ἔλεος, εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἡμῶν 2.
καὶ Χριστοῦ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.
3 Καθὼς παρεκάλεσά σε προσμεῖναι ἐν
Ἐφέ-

Ἐφέσῳ, πορευόμενος εἰς Μακεδονίαν, ἵνα
παραγγείλῃς τισὶ μὴ ἑτεροδιδασκαλεῖν.
4 Μηδὲ προσέχειν μύθοις καὶ γενεαλογίαις
ἀπεράντοις, αἵτινες ζητήσεις παρέχουσι μᾶλ-
λον ἢ οἰκοδομίαν Θεοῦ τὴν ἐν πίστει.
5 Τὸ δὲ τέλος τῆς παραγγελίας ἐστὶν
ἀγάπη ἐκ καθαρᾶς καρδίας, καὶ συνειδήσεως
ἀγαθῆς, καὶ πίστεως ἀνυποκρίτου·
6 Ὧν τινες ἀστοχήσαντες, ἐξετράπησαν
εἰς ματαιολογίαν·
7 Θέλοντες εἶναι νομοδιδάσκαλοι, μὴ
νοοῦντες μήτε ἃ λέγουσι, μήτε περὶ τίνων
διαβεβαιοῦνται.
8 Οἴδαμεν δὲ ὅτι καλὸς ὁ νόμος, ἐάν
τις αὐτῷ νομίμως χρῆται·
9 Εἰδὼς τοῦτο, ὅτι δικαίῳ νόμος οὐ κεῖται,
ἀνόμοις δὲ καὶ ἀνυποτάκτοις, ἀσεβέσι καὶ ἁ-
μαρτωλοῖς, ἀνοσίοις καὶ βεβήλοις, πατρα-
λῴαις καὶ μητραλῴαις, ἀνδροφόνοις,
10 Πόρνοις, ἀρσενοκοίταις, ἀνδραποδι-
σταῖς, ψεύσταις, ἐπιόρκοις, καὶ εἴ τι ἕτερον τῇ
ὑγιαινούσῃ διδασκαλίᾳ ἀντίκειται.
11 Κατὰ τὸ εὐαγγέλιον τῆς δόξης τοῦ μα-
καρίου Θεοῦ, ὃ ἐπιστεύθην ἐγώ.
12 Καὶ χάριν ἔχω τῷ ἐνδυναμώσαντί με
Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν, ὅτι πιστόν με
ἡγήσατο, θέμενος εἰς διακονίαν.
13 Τὸν πρότερον ὄντα βλάσφημον καὶ διώκ-
την καὶ ὑβριστήν· ἀλλ' ἠλεήθην, ὅτι ἀγνοῶν
ἐποίησα ἐν ἀπιστίᾳ·
14 Ὑπερεπλεόνασε δὲ ἡ χάρις τοῦ Κυρίου
ἡμῶν μετὰ πίστεως καὶ ἀγάπης τῆς ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ.
15 Πιστὸς ὁ λόγος, καὶ πάσης ἀποδοχῆς
 ἄξιος,

ἄξιος, ὅτι Χριστὸς Ἰησοῦς ἦλθεν εἰς τὸν κόσ-
μον ἁμαρτωλοὺς σῶσαι, ὧν πρῶτός εἰμι ἐγώ.
16 Ἀλλὰ διὰ τοῦτο ἠλεήθην, ἵνα ἐν ἐμοὶ
πρώτῳ ἐνδείξηται Ἰησοῦς Χριστὸς τὴν πᾶσαν
μακροθυμίαν, πρὸς ὑποτύπωσιν τῶν μελ-
λόντων πιστεύειν ἐπ' αὐτῷ εἰς ζωὴν αἰώνιον.
17 Τῷ δὲ βασιλεῖ τῶν αἰώνων ἀφθάρτῳ,
ἀοράτῳ, μόνῳ σοφῷ Θεῷ τιμὴ καὶ δόξα εἰς
τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.
18 Ταύτην τὴν παραγγελίαν παρατίθε-
μαί σοι, τέκνον Τιμόθεε, κατὰ τὰς προα-
γούσας ἐπὶ σὲ προφητείας, ἵνα στρατεύῃ ἐν
αὐταῖς τὴν καλὴν στρατείαν,
19 Ἔχων πίστιν καὶ ἀγαθὴν συνείδησιν, ἥν
τινες ἀπωσάμενοι, περὶ τὴν πίστιν ἐναυάγησαν.
20 Ὧν ἐστιν Ὑμέναιος καὶ Ἀλέξανδρος,
οὓς παρέδωκα τῷ Σατανᾷ, ἵνα παιδευθῶ-
σι μὴ βλασφημεῖν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΠΑρακαλῶ οὖν πρῶτον πάντων ποιεῖ-
σθαι δεήσεις, προσευχάς, ἐντεύ-
ξεις, εὐχαριστίας ὑπὲρ πάντων ἀνθρώπων.
2 Ὑπὲρ βασιλέων καὶ πάντων τῶν ἐν ὑπε-
ροχῇ ὄντων· ἵνα ἤρεμον καὶ ἡσύχιον βίον διά-
γωμεν ἐν πάσῃ εὐσεβείᾳ καὶ σεμνότητι·
3 Τοῦτο γὰρ καλὸν καὶ ἀπόδεκτον ἐνώπιον
τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ.
4 Ὃς πάντας ἀνθρώπους θέλει σωθῆναι,
καὶ εἰς ἐπίγνωσιν ἀληθείας ἐλθεῖν.
5 Εἷς γὰρ Θεός, εἷς καὶ μεσίτης Θεοῦ καὶ
ἀνθρώπων, ἄνθρωπος Χριστὸς Ἰησοῦς.
6 Ὁ δοὺς ἑαυτὸν ἀντίλυτρον ὑπὲρ πάντων,
τὸ μαρτύριον καιροῖς ἰδίοις.

7 Εἰς ὃ ἐτέθην ἐγὼ κήρυξ καὶ ἀπόστολος,
(ἀλήθειαν λέγω ἐν Χριστῷ, οὐ ψεύδομαι)
διδάσκαλος ἐθνῶν ἐν πίστει καὶ ἀληθείᾳ.
8 Βούλομαι οὖν προσεύχεσθαι τοὺς ἄνδρας
ἐν παντὶ τόπῳ, ἐπαίροντας ὁσίους χεῖρας
χωρὶς ὀργῆς καὶ διαλογισμοῦ.
9 Ὡσαύτως καὶ τὰς γυναῖκας ἐν καταστολῇ
κοσμίῳ, μετὰ αἰδοῦς καὶ σωφροσύνης κοσμεῖν
ἑαυτὰς, μὴ ἐν πλέγμασιν, ἢ χρυσῷ, ἢ
μαργαρίταις, ἢ ἱματισμῷ πολυτελεῖ.
10 Ἀλλ' (ὃ πρέπει γυναιξὶν ἐπαγγελ-
λομέναις θεοσέβειαν) δι' ἔργων ἀγαθῶν.
11 Γυνὴ ἐν ἡσυχίᾳ μανθανέτω ἐν πάσῃ
ὑποταγῇ.
12 Γυναικὶ δὲ διδάσκειν οὐκ ἐπιτρέπω, οὐ-
δὲ αὐθεντεῖν ἀνδρὸς, ἀλλ' εἶναι ἐν ἡσυχίᾳ.
13 Ἀδὰμ γὰρ πρῶτος ἐπλάσθη, εἶτα
Εὔα.
14 Καὶ Ἀδὰμ οὐκ ἠπατήθη, ἡ δὲ γυνὴ
ἀπατηθεῖσα, ἐν παραβάσει γέγονε.
15 Σωθήσεται δὲ διὰ τῆς τεκνογονίας,
ἐὰν μείνωσιν ἐν πίστει καὶ ἀγάπῃ καὶ ἁγιασμῷ
μετὰ σωφροσύνης.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Πιστὸς ὁ λόγος· Εἴ τις ἐπισκοπῆς
ὀρέγεται, καλοῦ ἔργου ἐπιθυμεῖ.
2 Δεῖ οὖν τὸν ἐπίσκοπον ἀνεπίληπτον εἶ-
ναι, μιᾶς γυναικὸς ἄνδρα, νηφάλιον, σώ-
φρονα, κόσμιον, φιλόξενον, διδακτικόν·
3 Μὴ πάροινον, μὴ πλήκτην, μὴ αἰσχρο-
κερδῆ· ἀλλ' ἐπιεικῆ, ἄμαχον, ἀφιλάργυρον·
4 Τοῦ ἰδίου οἴκου καλῶς προϊστάμενον, τέκνα
ἔχοντα ἐν ὑποταγῇ μετὰ πάσης σεμνότητος.



5 (Εἰ δέ τις τοῦ ἰδίου οἴκου προστῆναι οὐκ
οἶδε, πῶς ἐκκλησίας Θεοῦ ἐπιμελήσεται;)
6 Μὴ νεόφυτον· ἵνα μὴ τυφωθεὶς, εἰς
κρῖμα ἐμπέσῃ τοῦ διαβόλου.
7 Δεῖ δὲ αὐτὸν καὶ μαρτυρίαν καλὴν ἔχειν
ἀπὸ τῶν ἔξωθεν, ἵνα μὴ εἰς ὀνειδισμὸν ἐμ-
πέσῃ καὶ παγίδα τοῦ διαβόλου.
8 Διακόνους ὡσαύτως σεμνοὺς, μὴ διλό-
γους, μὴ οἴνῳ πολλῷ προσέχοντας, μὴ αἰ-
σχροκερδεῖς.
9 Ἔχοντας τὸ μυστήριον τῆς πίστεως ἐν κα-
θαρᾷ συνειδήσει·
10 Καὶ οὗτοι δὲ δοκιμαζέσθωσαν πρῶτον,
εἶτα διακονείτωσαν, ἀνέγκλητοι ὄντες.
11 Γυναῖκας ὡσαύτως σεμνὰς, μὴ δια-
βόλους, νηφαλίους, πιστὰς ἐν πᾶσι.
12 Διάκονοι ἔστωσαν μιᾶς γυναικὸς ἄν-
δρες, τέκνων καλῶς προϊστάμενοι καὶ τῶν ἰδίων
οἴκων·
13 Οἱ γὰρ καλῶς διακονήσαντες, βαθ-
μὸν ἑαυτοῖς καλὸν περιποιοῦνται, καὶ πολλὴν
παῤῥησίαν ἐν πίστει τῇ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
14 Ταῦτά σοι γράφω, ἐλπίζων ἐλθεῖν
πρός σε τάχιον.
15 Ἐὰν δὲ βραδύνω, ἵνα εἰδῇς πῶς δεῖ
οἴκῳ Θεοῦ ἀναστρέφεσθαι, ἥτις ἐστὶν ἐκκλησία
Θεοῦ ζῶντος, στύλος καὶ ἑδραίωμα τῆς ἀληθείας.
16 Καὶ ὁμολογουμένως μέγα ἐστὶ τὸ τῆς
εὐσεβείας μυστήριον, Θεὸς ἐφανερώθη ἐν σαρ-
κὶ, ἐδικαιώθη ἐν Πνεύματι, ὤφθη ἀγγέ-
λοις, ἐκηρύχθη ἐν ἔθνεσιν, ἐπιστεύθη ἐν
κόσμῳ, ἀνελήφθη ἐν δόξῃ.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΤΟ' δὲ Πνεῦμα ῥητῶς λέγει, ὅτι
ἐν ὑςέροις καιροῖς ἀποςήσονταί
τινες τῆς πίςεως, προσέχοντες πνεύμασι
πλάνοις, καὶ διδασκαλίαις δαιμονίων,
2 Ε'ν ὑποκρίσει ψευδολόγων, κεκαυτηριασμένων τὴν ἰδίαν συνείδησιν,
3 Κωλυόντων γαμεῖν, ἀπέχεσθαι βρωμάτων
ἃ ὁ Θεὸς ἔκτισεν εἰς μετάληψιν μετὰ εὐχαριςίας τοῖς πιςοῖς καὶ ἐπεγνωκόσι τὴν ἀλήθειαν.
4 Ο'τι πᾶν κτίσμα Θεοῦ καλὸν, καὶ οὐδὲν
ἀπόβλητον, μετὰ εὐχαριςίας λαμβανόμενον.
5 Α'γιάζεται γὰρ διὰ λόγου Θεοῦ καὶ ἐντεύξεως.
6 Ταῦτα ὑποτιθέμενος τοῖς ἀδελφοῖς,
καλὸς ἔσῃ διάκονος Ι'ησοῦ Χριςοῦ, ἐντρεφόμενος τοῖς λόγοις τῆς πίςεως, καὶ τῆς καλῆς
διδασκαλίας, ᾗ παρηκολούθηκας.
7 Τοὺς δὲ βεβήλους καὶ γραώδεις μύθους παραιτοῦ· γύμναζε δὲ σεαυτὸν πρὸς εὐσέβειαν.
8 Η' γὰρ σωματικὴ γυμνασία πρὸς ὀλίγον ἐςὶν ὠφέλιμος· ἡ δὲ εὐσέβεια πρὸς πάντα ὠφέλιμός ἐστιν, ἐπαγγελίαν ἔχουσα
ζωῆς τῆς νῦν καὶ τῆς μελλούσης.
9 Πιςὸς ὁ λόγος καὶ πάσης ἀποδοχῆς
ἄξιος.
10 Εἰς τοῦτο γὰρ καὶ κοπιῶμεν καὶ ὀνειδιζόμεθα, ὅτι ἠλπίκαμεν ἐπὶ Θεῷ ζῶντι, ὅς
ἐςι σωτὴρ πάντων ἀνθρώπων, μάλιςα πιςῶν.
11 Παράγγελλε ταῦτα καὶ δίδασκε.
12 Μηδείς σου τῆς νεότητος καταφρονείτω,
ἀλλὰ τύπος γίνου τῶν πιςῶν ἐν λόγῳ, ἐν ἀναςροφῇ, ἐν ἀγάπῃ, ἐν πνεύματι, ἐν πίςει, ἐν ἁγνείᾳ.

13 Ε'ως



13 Ἕως ἔρχομαι πρόσεχε τῇ ἀναγνώσει, τῇ παρακλήσει, τῇ διδασκαλίᾳ.

14 Μὴ ἀμέλει τοῦ ἐν σοὶ χαρίσματος, ὃ ἐδόθη σοι διὰ προφητείας, μετὰ ἐπιθέσεως τῶν χειρῶν τοῦ πρεσβυτερίου.

15 Ταῦτα μελέτα, ἐν τούτοις ἴσθι· ἵνα σου ἡ προκοπὴ φανερὰ ᾖ ἐν πᾶσιν.

16 Ἔπεχε σεαυτῷ, καὶ τῇ διδασκαλίᾳ. ἐπίμενε αὐτοῖς. τοῦτο γὰρ ποιῶν, καὶ σεαυτὸν σώσεις καὶ τοὺς ἀκούοντάς σου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 Πρεσβυτέρῳ μὴ ἐπιπλήξῃς, ἀλλὰ παρακάλει ὡς πατέρα· νεωτέρους, ὡς ἀδελφούς.

2 Πρεσβυτέρας, ὡς μητέρας· νεωτέρας, ὡς ἀδελφὰς, ἐν πάσῃ ἁγνείᾳ.

3 Χήρας τίμα τὰς ὄντως χήρας.

4 Εἰ δέ τις χήρα τέκνα ἢ ἔκγονα ἔχει, μανθανέτωσαν πρῶτον τὸν ἴδιον οἶκον εὐσεβεῖν, καὶ ἀμοιβὰς ἀποδιδόναι τοῖς προγόνοις. τοῦτο γάρ ἐστι καλὸν, καὶ ἀπόδεκτον ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

5 Ἡ δὲ ὄντως χήρα καὶ μεμονωμένη ἤλπικεν ἐπὶ τὸν Θεὸν, καὶ προσμένει ταῖς δεήσεσι καὶ ταῖς προσευχαῖς νυκτὸς καὶ ἡμέρας.

6 Ἡ δὲ σπαταλῶσα, ζῶσα τέθνηκε.

7 Καὶ ταῦτα παράγγελλε, ἵνα ἀνεπίληπτοι ὦσιν.

8 Εἰ δέ τις τῶν ἰδίων καὶ μάλιστα τῶν οἰκείων οὐ προνοεῖ, τὴν πίστιν ἤρνηται, καὶ ἔστιν ἀπίστου χείρων.

9 Χήρα καταλεγέσθω μὴ ἔλαττον ἐτῶν ἑξήκοντα, γεγονυῖα ἑνὸς ἀνδρὸς γυνή·

10 Ἐν

10 Ἐν ἔργοις καλοῖς μαρτυρουμένη, εἰ ἐτεκνοτρόφησεν, εἰ ἐξενοδόχησεν, εἰ ἁγίων πόδας ἔνιψεν, εἰ θλιβομένοις ἐπήρκεσεν, εἰ παντὶ ἔργῳ ἀγαθῷ ἐπηκολούθησε.

11 Νεωτέρας δὲ χήρας παραιτοῦ· ὅταν γὰρ καταστρηνιάσωσι τοῦ Χριστοῦ, γαμεῖν θέλουσιν·

12 Ἔχουσαι κρῖμα, ὅτι τὴν πρώτην πίστιν ἠθέτησαν.

13 Ἅμα δὲ καὶ ἀργαὶ μανθάνουσι περιερχόμεναι τὰς οἰκίας· οὐ μόνον δὲ ἀργαὶ, ἀλλὰ καὶ φλύαροι καὶ περίεργοι, λαλοῦσαι τὰ μὴ δέοντα.

14 Βούλομαι οὖν νεωτέρας γαμεῖν, τεκνογονεῖν, οἰκοδεσποτεῖν, μηδεμίαν ἀφορμὴν διδόναι τῷ ἀντικειμένῳ λοιδορίας χάριν.

15 Ἤδη γάρ τινες ἐξετράπησαν ὀπίσω τοῦ Σατανᾶ.

16 Εἴ τις πιστὸς, ἢ πιστὴ ἔχει χήρας, ἐπαρκείτω αὐταῖς, καὶ μὴ βαρείσθω ἡ ἐκκλησία, ἵνα ταῖς ὄντως χήραις ἐπαρκέσῃ.

17 Οἱ καλῶς προεστῶτες πρεσβύτεροι διπλῆς τιμῆς ἀξιούσθωσαν· μάλιστα οἱ κοπιῶντες ἐν λόγῳ καὶ διδασκαλίᾳ.

18 Λέγει γὰρ ἡ γραφή· Βοῦν ἀλοῶντα οὐ φιμώσεις. Καί· Ἄξιος ὁ ἐργάτης τοῦ μισθοῦ αὐτοῦ.

19 Κατὰ πρεσβυτέρου κατηγορίαν μὴ παραδέχου, ἐκτὸς εἰ μὴ ἐπὶ δύο, ἢ τριῶν μαρτύρων.

20 Τοὺς ἁμαρτάνοντας ἐνώπιον πάντων ἔλεγχε, ἵνα καὶ οἱ λοιποὶ φόβον ἔχωσι.

21 Διαμαρτύρομαι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ τῶν ἐκλεκτῶν ἀγγέλων, ἵνα ταῦτα φυλάξῃς χωρὶς προκρίματος, μηδὲν ποιῶν κατὰ πρόσκλισιν.

22 Χει-

22 Χεῖρας ταχέως μηδενὶ ἐπιτίθει, μηδὲ κοινώνει ἁμαρτίαις ἀλλοτρίαις. σεαυτὸν ἁγνὸν τήρει.

23 Μηκέτι ὑδροπότει, ἀλλ' οἴνῳ ὀλίγῳ χρῶ διὰ τὸν στόμαχόν σου, καὶ τὰς πυκνάς σου ἀσθενείας.

24 Τινῶν ἀνθρώπων αἱ ἁμαρτίαι πρόδηλοί εἰσι, προάγουσαι εἰς κρίσιν· τισὶ δὲ καὶ ἐπακολουθοῦσιν·

25 Ὡσαύτως καὶ τὰ καλὰ ἔργα πρόδηλά ἐστι· καὶ τὰ ἄλλως ἔχοντα, κρυβῆναι οὐ δύναται.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ϛʹ. 6.

1 Ὅσοι εἰσὶν ὑπὸ ζυγὸν δοῦλοι, τοὺς ἰδίους δεσπότας πάσης τιμῆς ἀξίους ἡγείσθωσαν· ἵνα μὴ τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ καὶ ἡ διδασκαλία βλασφημῆται.

2 Οἱ δὲ πιστοὺς ἔχοντες δεσπότας, μὴ καταφρονείτωσαν, ὅτι ἀδελφοί εἰσιν, ἀλλὰ μᾶλλον δουλευέτωσαν, ὅτι πιστοί εἰσι καὶ ἀγαπητοὶ, οἱ τῆς εὐεργεσίας ἀντιλαμβανόμενοι. Ταῦτα δίδασκε, καὶ παρακάλει.

3 Εἴ τις ἑτεροδιδασκαλεῖ, καὶ μὴ προσέρχεται ὑγιαίνουσι λόγοις τοῖς τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ τῇ κατ' εὐσέβειαν διδασκαλίᾳ,

4 Τετύφωται, μηδὲν ἐπιστάμενος, ἀλλὰ νοσῶν περὶ ζητήσεις καὶ λογομαχίας· ἐξ ὧν γίνεται φθόνος, ἔρις, βλασφημίαι, ὑπόνοιαι πονηραὶ,

5 Παραδιατριβαὶ διεφθαρμένων ἀνθρώπων τὸν νοῦν, καὶ ἀπεστερημένων τῆς ἀληθείας, νομιζόντων πορισμὸν εἶναι τὴν εὐσέβειαν. ἀφίστασο ἀπὸ τῶν τοιούτων.

6 Ἔστι δὲ πορισμὸς μέγας ἡ εὐσέβεια μετὰ αὐταρκείας.

7 Οὐδὲν γὰρ εἰσηνέγκαμεν εἰς τὸν κόσμον, δῆλον ὅτι οὐδὲ ἐξενεγκεῖν τι δυνάμεθα.

8 Ἔχοντες δὲ διατροφὰς καὶ σκεπάσματα, τούτοις ἀρκεσθησόμεθα.

9 Οἱ δὲ βουλόμενοι πλουτεῖν, ἐμπίπτουσιν εἰς πειρασμὸν καὶ παγίδα, καὶ ἐπιθυμίας πολλὰς ἀνοήτους καὶ βλαβερὰς, αἵτινες βυθίζουσι τοὺς ἀνθρώπους εἰς ὄλεθρον καὶ ἀπώλειαν.

10 Ῥίζα γὰρ πάντων τῶν κακῶν ἐστιν ἡ φιλαργυρία· ἧς τινες ὀρεγόμενοι ἀπεπλανήθησαν ἀπὸ τῆς πίστεως, καὶ ἑαυτοὺς περιέπειραν ὀδύναις πολλαῖς.

11 Σὺ δὲ, ὦ ἄνθρωπε τοῦ Θεοῦ, ταῦτα φεῦγε· δίωκε δὲ δικαιοσύνην, εὐσέβειαν, πίστιν, ἀγάπην, ὑπομονὴν, πρᾳότητα.

12 Ἀγωνίζου τὸν καλὸν ἀγῶνα τῆς πίστεως, ἐπιλαβοῦ τῆς αἰωνίου ζωῆς, εἰς ἣν καὶ ἐκλήθης, καὶ ὡμολόγησας τὴν καλὴν ὁμολογίαν ἐνώπιον πολλῶν μαρτύρων.

13 Παραγγέλλω σοι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ τοῦ ζωοποιοῦντος τὰ πάντα, καὶ Χριστοῦ Ἰησοῦ τοῦ μαρτυρήσαντος ἐπὶ Ποντίου Πιλάτου τὴν καλὴν ὁμολογίαν.

14 Τηρῆσαί σε τὴν ἐντολὴν ἄσπιλον, ἀνεπίληπτον, μέχρι τῆς ἐπιφανείας τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

15 Ἣν καιροῖς ἰδίοις δείξει ὁ μακάριος καὶ μόνος δυνάστης, ὁ βασιλεὺς τῶν βασιλευόντων, καὶ Κύριος τῶν κυριευόντων,

16 Ὁ μόνος ἔχων ἀθανασίαν, φῶς οἰκῶν ἀπρόσιτον, ὃν εἶδεν οὐδεὶς ἀνθρώπων, οὐδὲ ἰδεῖν δύναται. ᾧ τιμὴ καὶ κράτος αἰώνιον. ἀμήν.

17 Τοῖς πλουσίοις ἐν τῷ νῦν αἰῶνι παράγγελλε μὴ ὑψηλοφρονεῖν, μηδὲ ἠλπικέναι ἐπὶ πλούτου ἀδηλότητι, ἀλλ᾽ ἐν τῷ Θεῷ τῷ ζῶντι, τῷ παρέχοντι ἡμῖν πλουσίως πάντα εἰς ἀπόλαυσιν·

18 Ἀγαθοεργεῖν, πλουτεῖν ἐν ἔργοις καλοῖς, εὐμεταδότους εἶναι, κοινωνικούς·

19 Ἀποθησαυρίζοντας ἑαυτοῖς θεμέλιον καλὸν εἰς τὸ μέλλον, ἵνα ἐπιλάβωνται τῆς αἰωνίου ζωῆς.

20 Ὦ Τιμόθεε, τὴν παρακαταθήκην φύλαξον, ἐκτρεπόμενος τὰς βεβήλους κενοφωνίας, καὶ ἀντιθέσεις τῆς ψευδωνύμου γνώσεως·

21 Ἥν τινες ἐπαγγελλόμενοι, περὶ τὴν πίστιν ἠστόχησαν. Ἡ χάρις μετὰ σοῦ. Ἀμήν.

Πρὸς Τιμόθεον πρώτη ἐγράφη ἀπὸ Λαοδικείας, ἥτις ἐστὶ μητρόπολις Φρυγίας τῆς Πακατιανῆς.

ΠΑΥΛΟΥ τοῦ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ

Ἡ ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘΕΟΝ

ἘΠΙΣΤΟΛΗʼ, Β'.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑΥ͂ΛΟΣ Ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ διὰ θελήματος Θεοῦ, κατ᾽ ἐπαγγελίαν ζωῆς τῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ,

2 Τι-

2 Τιμοθέῳ ἀγαπητῷ τέκνῳ, χάρις, ἔλεος, εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς, καὶ Χριστοῦ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.

3 Χάριν ἔχω τῷ Θεῷ, ᾧ λατρεύω ἀπὸ προγόνων ἐν καθαρᾷ συνειδήσει, ὡς ἀδιάλειπτον ἔχω τὴν περὶ σοῦ μνείαν ἐν ταῖς δεήσεσί μου νυκτὸς καὶ ἡμέρας.

4 Ἐπιποθῶν σε ἰδεῖν, μεμνημένος σου τῶν δακρύων, ἵνα χαρᾶς πληρωθῶ·

5 Ὑπόμνησιν λαμβάνων τῆς ἐν σοὶ ἀνυποκρίτου πίστεως, ἥτις ἐνῴκησε πρῶτον ἐν τῇ μάμμῃ σου Λωΐδι καὶ τῇ μητρί σου Εὐνίκῃ· πέπεισμαι δὲ ὅτι καὶ ἐν σοί.

6 Δι' ἣν αἰτίαν ἀναμιμνήσκω σε ἀναζωπυρεῖν τὸ χάρισμα τοῦ Θεοῦ, ὅ ἐστιν ἐν σοὶ διὰ τῆς ἐπιθέσεως τῶν χειρῶν μου.

7 Οὐ γὰρ ἔδωκεν ἡμῖν ὁ Θεὸς Πνεῦμα δειλίας, ἀλλὰ δυνάμεως καὶ ἀγάπης καὶ σωφρονισμοῦ.

8 Μὴ οὖν ἐπαισχυνθῇς τὸ μαρτύριον τοῦ Κυρίου ἡμῶν, μηδὲ ἐμὲ τὸν δέσμιον αὐτοῦ· ἀλλὰ συγκακοπάθησον τῷ εὐαγγελίῳ κατὰ δύναμιν Θεοῦ,

9 Τοῦ σώσαντος ἡμᾶς, καὶ καλέσαντος κλήσει ἁγίᾳ· οὐ κατὰ τὰ ἔργα ἡμῶν, ἀλλὰ κατ' ἰδίαν πρόθεσιν, καὶ χάριν τὴν δοθεῖσαν ἡμῖν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ πρὸ χρόνων αἰωνίων·

10 Φανερωθεῖσαν δὲ νῦν διὰ τῆς ἐπιφανείας τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καταργήσαντος μὲν τὸν θάνατον, φωτίσαντος δὲ ζωὴν καὶ ἀφθαρσίαν διὰ τοῦ εὐαγγελίου·

11 Εἰς ὃ ἐτέθην ἐγὼ κήρυξ καὶ ἀπόστολος, καὶ διδάσκαλος ἐθνῶν.

12 Δι' ἣν αἰτίαν καὶ ταῦτα πάσχω· ἀλλ'

οὐκ

οὐκ ἐπαισχύνομαι· οἶδα γὰρ ᾧ πεπίστευκα, καὶ πέπεισμαι ὅτι δυνατός ἐστι τὴν παραθήκην μου φυλάξαι εἰς ἐκείνην τὴν ἡμέραν.

13 Ὑποτύπωσιν ἔχε ὑγιαινόντων λόγων, ὧν παρ' ἐμοῦ ἤκουσας ἐν πίστει καὶ ἀγάπῃ τῇ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

14 Τὴν καλὴν παρακαταθήκην φύλαξον διὰ Πνεύματος ἁγίου τοῦ ἐνοικοῦντος ἐν ἡμῖν.

15 Οἶδας τοῦτο, ὅτι ἀπεστράφησάν με πάντες οἱ ἐν τῇ Ἀσίᾳ, ὧν ἐστι Φύγελλος καὶ Ἑρμογένης.

16 Δῴη ἔλεος ὁ Κύριος τῷ Ὀνησιφόρου οἴκῳ· ὅτι πολλάκις με ἀνέψυξε, καὶ τὴν ἅλυσίν μου οὐκ ἐπῃσχύνθη·

17 Ἀλλὰ γενόμενος ἐν Ῥώμῃ, σπουδαιότερον ἐζήτησέ με, καὶ εὗρε.

18 Δῴη αὐτῷ ὁ Κύριος εὑρεῖν ἔλεος παρὰ Κυρίου ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ· καὶ ὅσα ἐν Ἐφέσῳ διηκόνησε, βέλτιον σὺ γινώσκεις.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 Σὺ οὖν, τέκνον μου, ἐνδυναμοῦ ἐν τῇ χάριτι τῇ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

2 Καὶ ἃ ἤκουσας παρ' ἐμοῦ διὰ πολλῶν μαρτύρων, ταῦτα παράθου πιστοῖς ἀνθρώποις, οἵτινες ἱκανοὶ ἔσονται καὶ ἑτέρους διδάξαι.

3 Σὺ οὖν κακοπάθησον ὡς καλὸς στρατιώτης Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Οὐδεὶς στρατευόμενος ἐμπλέκεται ταῖς τοῦ βίου πραγματείαις, ἵνα τῷ στρατολογήσαντι ἀρέσῃ.

5 Ἐὰν δὲ καὶ ἀθλῇ τις, οὐ στεφανοῦται ἐὰν μὴ νομίμως ἀθλήσῃ.

6 Τὸν κοπιῶντα γεωργὸν δεῖ πρῶτον τῶν καρπῶν μεταλαμβάνειν.

7 Νόει ἃ λέγω· δῴη γάρ σοι ὁ Κύριος σύνεσιν ἐν πᾶσι.
8 Μνημόνευε Ἰησοῦν Χριστὸν ἐγηγερμένον ἐκ νεκρῶν, ἐκ σπέρματος Δαβίδ, κατὰ τὸ εὐαγγέλιόν μου·
9 Ἐν ᾧ κακοπαθῶ μέχρι δεσμῶν, ὡς κακοῦργος· ἀλλ' ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ οὐ δέδεται.
10 Διὰ τοῦτο πάντα ὑπομένω διὰ τοὺς ἐκλεκτοὺς, ἵνα καὶ αὐτοὶ σωτηρίας τύχωσι τῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, μετὰ δόξης αἰωνίου·
11 Πιστὸς ὁ λόγος· εἰ γὰρ συναπεθάνομεν, καὶ συζήσομεν·
12 Εἰ ὑπομένομεν, καὶ συμβασιλεύσομεν· εἰ ἀρνούμεθα, κἀκεῖνος ἀρνήσεται ἡμᾶς·
13 Εἰ ἀπιστοῦμεν, ἐκεῖνος πιστὸς μένει· ἀρνήσασθαι ἑαυτὸν οὐ δύναται.
14 Ταῦτα ὑπομίμνησκε, διαμαρτυρόμενος ἐνώπιον τοῦ Κυρίου μὴ λογομαχεῖν εἰς οὐδὲν χρήσιμον, ἐπὶ καταστροφῇ τῶν ἀκουόντων.
15 Σπούδασον σεαυτὸν δόκιμον παραστῆσαι τῷ Θεῷ, ἐργάτην ἀνεπαίσχυντον, ὀρθοτομοῦντα τὸν λόγον τῆς ἀληθείας.
16 Τὰς δὲ βεβήλους κενοφωνίας περιΐστασο· ἐπὶ πλεῖον γὰρ προκόψουσιν ἀσεβείας·
17 Καὶ ὁ λόγος αὐτῶν ὡς γάγγραινα νομὴν ἕξει· ὧν ἐστιν Ὑμέναιος καὶ Φιλητός.
18 Οἵτινες περὶ τὴν ἀλήθειαν ἠστόχησαν, λέγοντες τὴν ἀνάστασιν ἤδη γεγονέναι· καὶ ἀνατρέπουσι τήν τινων πίστιν·
19 Ὁ μέντοι στερεὸς θεμέλιος τοῦ Θεοῦ ἕστηκεν, ἔχων τὴν σφραγίδα ταύτην· Ἔγνω Κύριος τοὺς ὄντας αὐτοῦ. καὶ· Ἀποστήτω ἀπὸ ἀδικίας πᾶς ὁ ὀνομάζων τὸ ὄνομα Χριστοῦ.
20 Ἐν μεγάλῃ δὲ οἰκίᾳ οὐκ ἔστι μόνον σκεύη

χρυ-

χρυσᾶ ϗ ἀργυρᾶ, ἀλλὰ ϗ ξύλινα ϗ ὀστράκι-
να· ϗ ἃ μὲν εἰς τιμὴν, ἃ δὲ εἰς ἀτιμίαν.
21 Ἐὰν οὖν τις ἐκκαθάρῃ ἑαυτὸν ἀπὸ τού-
των, ἔσται σκεῦος εἰς τιμὴν, ἡγιασμένον ϗ
εὔχρηστον τῷ δεσπότῃ, εἰς πᾶν ἔργον ἀγα-
θὸν ἡτοιμασμένον.
22 Τὰς δὲ νεωτερικὰς ἐπιθυμίας φεῦγε·
δίωκε δὲ δικαιοσύνην, πίστιν, ἀγάπην,
εἰρήνην μετὰ τῶν ἐπικαλουμένων τὸν Κύριον ἐκ
καθαρᾶς καρδίας.
23 Τὰς δὲ μωρὰς ϗ ἀπαιδεύτους ζητήσεις
παραιτοῦ, εἰδὼς ὅτι γεννῶσι μάχας·
24 Δοῦλον δὲ Κυρίου οὐ δεῖ μάχεσθαι,
ἀλλ' ἤπιον εἶναι πρὸς πάντας, διδακτικὸν,
ἀνεξίκακον·
25 Ἐν πρᾳότητι παιδεύοντα τοὺς ἀντιδια-
τιθεμένους· μήποτε δῷ αὐτοῖς ὁ Θεὸς με-
τάνοιαν εἰς ἐπίγνωσιν ἀληθείας·
26 Καὶ ἀνανήψωσιν ἐκ τῆς τοῦ διαβόλου
παγίδος, ἐζωγρημένοι ὑπ' αὐτοῦ εἰς τὸ ἐκεί-
νου θέλημα.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΤΟῦτο δὲ γίνωσκε, ὅτι ἐν ἐσχά-
ταις ἡμέραις ἐνστήσονται καιροὶ
χαλεποί.
2 Ἔσονται γὰρ οἱ ἄνθρωποι φίλαυτοι,
φιλάργυροι, ἀλαζόνες, ὑπερήφανοι, βλά-
σφημοι, γονεῦσιν ἀπειθεῖς, ἀχάριστοι, ἀ-
νόσιοι,
3 Ἄστοργοι, ἄσπονδοι, διάβολοι, ἀκρα-
τεῖς, ἀνήμεροι, ἀφιλάγαθοι,
4 Προδόται, προπετεῖς, τετυφωμένοι,
φιλήδονοι μᾶλλον ἢ φιλόθεοι·

5 Ἔχον-

5 Ἔχοντες μόρφωσιν εὐσεβείας, τὴν δὲ
δύναμιν αὐτῆς ἠρνημένοι· καὶ τούτους ἀποτρέπου.
6 Ἐκ τούτων γάρ εἰσιν οἱ ἐνδύνοντες εἰς τὰς
οἰκίας, καὶ αἰχμαλωτεύοντες τὰ γυναικάρια
σεσωρευμένα ἁμαρτίαις, ἀγόμενα ἐπιθυ-
μίαις ποικίλαις.
7 Πάντοτε μανθάνοντα, καὶ μηδέποτε εἰς
ἐπίγνωσιν ἀληθείας ἐλθεῖν δυνάμενα.
8 Ὃν τρόπον δὲ Ἰαννῆς καὶ Ἰαμβρῆς ἀντέ-
στησαν Μωϋσεῖ, οὕτω καὶ οὗτοι ἀνθίστανται τῇ
ἀληθείᾳ, ἄνθρωποι κατεφθαρμένοι τὸν νοῦν,
ἀδόκιμοι περὶ τὴν πίστιν.
9 Ἀλλ' οὐ προκόψουσιν ἐπὶ πλεῖον· ἡ γὰρ
ἄνοια αὐτῶν ἔκδηλος ἔσται πᾶσιν, ὡς καὶ ἡ
ἐκείνων ἐγένετο.
10 Σὺ δὲ παρηκολούθηκάς μου τῇ διδασ-
καλίᾳ, τῇ ἀγωγῇ, τῇ προθέσει, τῇ πίστει,
τῇ μακροθυμίᾳ, τῇ ἀγάπῃ, τῇ ὑπομονῇ,
11 Τοῖς διωγμοῖς, τοῖς παθήμασιν, οἷά
μοι ἐγένετο ἐν Ἀντιοχείᾳ, ἐν Ἰκονίῳ, ἐν
Λύστροις· οἵους διωγμοὺς ὑπήνεγκα, καὶ ἐκ
πάντων με ἐρρύσατο ὁ Κύριος.
12 Καὶ πάντες δὲ οἱ θέλοντες εὐσεβῶς
ζῆν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, διωχθήσονται.
13 Πονηροὶ δὲ ἄνθρωποι καὶ γόητες προ-
κόψουσιν ἐπὶ τὸ χεῖρον, πλανῶντες, καὶ πλα-
νώμενοι.
14 Σὺ δὲ μένε ἐν οἷς ἔμαθες καὶ ἐπιστώθης,
εἰδὼς παρὰ τίνος ἔμαθες.
15 Καὶ ὅτι ἀπὸ βρέφους τὰ ἱερὰ γράμματα
οἶδας, τὰ δυνάμενά σε σοφίσαι εἰς σωτηρίαν
διὰ πίστεως τῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.
16 Πᾶσα γραφὴ, θεόπνευστος, καὶ ὠφέ-
λιμος πρὸς διδασκαλίαν, πρὸς ἔλεγχον,

πρὸς ἐπανόρθωσιν, πρὸς παιδείαν τὴν ἐν
δικαιοσύνῃ.
17 Ἵνα ἄρτιος ᾖ ὁ τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπος, πρὸς
πᾶν ἔργον ἀγαθὸν ἐξηρτισμένος.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 Διαμαρτύρομαι οὖν ἐγὼ ἐνώπιον τοῦ
Θεοῦ, καὶ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ
τοῦ μέλλοντος κρίνειν ζῶντας καὶ νεκροὺς κατὰ
τὴν ἐπιφάνειαν αὐτοῦ, καὶ τὴν βασιλείαν αὐτοῦ·
2 Κήρυξον τὸν λόγον, ἐπίστηθι εὐκαίρως,
ἀκαίρως· ἔλεγξον, ἐπιτίμησον, παρακάλε-
σον ἐν πάσῃ μακροθυμίᾳ καὶ διδαχῇ.
3 Ἔσται γὰρ καιρὸς ὅτε τῆς ὑγιαινούσης δι-
δασκαλίας οὐκ ἀνέξονται· ἀλλὰ κατὰ τὰς ἐπι-
θυμίας τὰς ἰδίας ἑαυτοῖς ἐπισωρεύσουσι διδα-
σκάλους, κνηθόμενοι τὴν ἀκοήν·
4 Καὶ ἀπὸ μὲν τῆς ἀληθείας τὴν ἀκοὴν
ἀποστρέψουσιν, ἐπὶ δὲ τοὺς μύθους ἐκτραπή-
σονται.
5 Σὺ δὲ νῆφε ἐν πᾶσι, κακοπάθησον,
ἔργον ποίησον εὐαγγελιστοῦ, τὴν διακονίαν σου
πληροφόρησον.
6 Ἐγὼ γὰρ ἤδη σπένδομαι, καὶ ὁ καιρὸς
τῆς ἐμῆς ἀναλύσεως ἐφέστηκε.
7 Τὸν ἀγῶνα τὸν καλὸν ἠγώνισμαι, τὸν
δρόμον τετέλεκα, τὴν πίστιν τετήρηκα.
8 Λοιπὸν, ἀπόκειταί μοι ὁ τῆς δικαιο-
σύνης στέφανος, ὃν ἀποδώσει μοι ὁ Κύριος ἐν
ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, ὁ δίκαιος κριτής· οὐ μόνον
δὲ ἐμοὶ, ἀλλὰ καὶ πᾶσι τοῖς ἠγαπηκόσι τὴν
ἐπιφάνειαν αὐτοῦ.
9 Σπούδασον ἐλθεῖν πρός με ταχέως·
10 Δημᾶς γάρ με ἐγκατέλιπεν, ἀγα-
πή-

-πήσας τὸν νῦν αἰῶνα, καὶ ἐπορεύθη εἰς Θεσσαλονίκην· Κρήσκης εἰς Γαλατίαν, Τίτος εἰς Δαλματίαν.

11 Λουκᾶς ἐστι μόνος μετ' ἐμοῦ. Μάρκον ἀναλαβὼν, ἄγε μετὰ σεαυτοῦ· ἔστι γάρ μοι εὔχρηστος εἰς διακονίαν.

12 Τυχικὸν δὲ ἀπέστειλα εἰς Ἔφεσον.

13 Τὸν φελόνην, ὃν ἀπέλιπον ἐν Τρωάδι παρὰ Κάρπῳ, ἐρχόμενος φέρε, καὶ τὰ βιβλία, μάλιστα τὰς μεμβράνας.

14 Ἀλέξανδρος ὁ χαλκεὺς πολλά μοι κακὰ ἐνεδείξατο· ἀποδῴη αὐτῷ ὁ Κύριος κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.

15 Ὃν καὶ σὺ φυλάσσου· λίαν γὰρ ἀνθέστηκε τοῖς ἡμετέροις λόγοις.

16 Ἐν τῇ πρώτῃ μου ἀπολογίᾳ οὐδείς μοι συμπαρεγένετο, ἀλλὰ πάντες με ἐγκατέλιπον. (μὴ αὐτοῖς λογισθείη·)

17 Ὁ δὲ Κύριός μοι παρέστη, καὶ ἐνεδυνάμωσέ με, ἵνα δι' ἐμοῦ τὸ κήρυγμα πληροφορηθῇ, καὶ ἀκούσῃ πάντα τὰ ἔθνη· καὶ ἐῤῥύσθην ἐκ στόματος λέοντος.

18 Καὶ ῥύσεταί με ὁ Κύριος ἀπὸ παντὸς ἔργου πονηροῦ, καὶ σώσει εἰς τὴν βασιλείαν αὐτοῦ τὴν ἐπουράνιον· ᾧ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.

19 Ἄσπασαι Πρίσκαν καὶ Ἀκύλαν, καὶ τὸν Ὀνησιφόρου οἶκον.

20 Ἔραστος ἔμεινεν ἐν Κορίνθῳ. Τρόφιμον δὲ ἀπέλιπον ἐν Μιλήτῳ ἀσθενοῦντα.

21 Σπούδασον πρὸ χειμῶνος ἐλθεῖν. Ἀσπάζεταί σε Εὔβουλος, καὶ Πούδης, καὶ Λῖνος, καὶ Κλαυδία, καὶ οἱ ἀδελφοὶ πάντες.

22 Ὁ Κύριος Ἰησοῦς Χριστὸς μετὰ τοῦ πνεύματός σου. ἡ χάρις μεθʼ ὑμῶν. ἀμήν.

Πρὸς Τιμόθεον δευτέρα τῆς Ἐφεσίων ἐκκλησίας πρῶτον ἐπίσκοπον χειροτονηθέντα, ἐγράφη ἀπὸ Ῥώμης, ὅτε ἐκ δευτέρου παρέστη Παῦλος τῷ Καίσαρι Νέρωνι.

ΠΑΥʼΛΟΥ τοῦ ἈΠΟΣΤΟʼΛΟΥ

Ἡ ΠΡΟʼΣ ΤΙʼΤΟΝ.

ἘΠΙΣΤΟΛΗʼ.

ΚΕΦΑʼΛΑΙΟΝ, Αʹ. 1.

1 ΠΑΥʼΛΟΣ δοῦλος Θεοῦ, ἀπόστολος δὲ Ἰησοῦ Χριστοῦ κατὰ πίστιν ἐκλεκτῶν Θεοῦ, καὶ ἐπίγνωσιν ἀληθείας τῆς κατʼ εὐσέβειαν·

2 Ἐπʼ ἐλπίδι ζωῆς αἰωνίου, ἣν ἐπηγγείλατο ὁ ἀψευδὴς Θεὸς πρὸ χρόνων αἰωνίων,

3 Ἐφανέρωσε δὲ καιροῖς ἰδίοις τὸν λόγον αὐτοῦ, ἐν κηρύγματι ὃ ἐπιστεύθην ἐγὼ κατʼ ἐπιταγὴν τοῦ σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ.

4 Τίτῳ γνησίῳ τέκνῳ κατὰ κοινὴν πίστιν· χάρις, ἔλεος, εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ σωτῆρος ἡμῶν.

5 Τούτου χάριν κατέλιπόν σε ἐν Κρήτῃ, ἵνα τὰ λείποντα ἐπιδιορθώσῃ, καὶ καταστήσῃς κατὰ

πόλιν πρεσβυτέρους, ὡς ἐγώ σοι διεταξάμην·
6 Εἴτις ἐστὶν ἀνέγκλητος, μιᾶς γυναικὸς
ἀνὴρ, τέκνα ἔχων πιστὰ, μὴ ἐν κατηγορίᾳ
ἀσωτίας, ἢ ἀνυπότακτα.
7 Δεῖ γὰρ τὸν ἐπίσκοπον ἀνέγκλητον εἶ-
ναι, ὡς Θεοῦ οἰκονόμον, μὴ αὐθάδη, μὴ
ὀργίλον, μὴ πάροινον, μὴ πλήκτην, μὴ
αἰσχροκερδῆ.
8 Ἀλλὰ φιλόξενον, φιλάγαθον, σώφρο-
να, δίκαιον, ὅσιον, ἐγκρατῆ·
9 Ἀντεχόμενον τοῦ κατὰ τὴν διδαχὴν πι-
στοῦ λόγου, ἵνα δυνατὸς ᾖ καὶ παρακαλεῖν ἐν τῇ
διδασκαλίᾳ τῇ ὑγιαινούσῃ, καὶ τοὺς ἀντιλέ-
γοντας ἐλέγχειν.
10 Εἰσὶ γὰρ πολλοὶ καὶ ἀνυπότακτοι, μα-
ταιολόγοι καὶ φρεναπάται, μάλιστα οἱ ἐκ
περιτομῆς·
11 Οὓς δεῖ ἐπιστομίζειν· οἵτινες ὅλους οἴ-
κους ἀνατρέπουσι, διδάσκοντες ἃ μὴ δεῖ, αἰ-
σχροῦ κέρδους χάριν.
12 Εἶπέ τις ἐξ αὐτῶν ἴδιος αὐτῶν προφήτης·
Κρῆτες ἀεὶ ψεῦσται, κακὰ θηρία, γαστέρες ἀργαί.
13 Ἡ μαρτυρία αὕτη ἐστὶν ἀληθής· δι'
ἣν αἰτίαν ἔλεγχε αὐτοὺς ἀποτόμως, ἵνα ὑγιαί-
νωσιν ἐν τῇ πίστει·
14 Μὴ προσέχοντες Ἰουδαϊκοῖς μύθοις,
καὶ ἐντολαῖς ἀνθρώπων ἀποστρεφομένων τὴν ἀ-
λήθειαν.
15 Πάντα μὲν καθαρὰ τοῖς καθαροῖς· τοῖς
δὲ μεμιασμένοις καὶ ἀπίστοις οὐδὲν καθαρὸν, ἀλ-
λὰ μεμίανται αὐτῶν καὶ ὁ νοῦς καὶ ἡ συνείδησις.
16 Θεὸν ὁμολογοῦσιν εἰδέναι, τοῖς δὲ ἔρ-
γοις ἀρνοῦνται, βδελυκτοὶ ὄντες καὶ ἀπειθεῖς,
καὶ πρὸς πᾶν ἔργον ἀγαθὸν ἀδόκιμοι.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΣΥ δὲ λάλει ἃ πρέπει τῇ ὑγιαινούσῃ διδασκαλίᾳ.

2 Πρεσβύτας νηφαλίους εἶναι, σεμνούς, σώφρονας, ὑγιαίνοντας τῇ πίστει, τῇ ἀγάπῃ, τῇ ὑπομονῇ.

3 Πρεσβύτιδας ὡσαύτως ἐν καταστήματι ἱεροπρεπεῖς, μὴ διαβόλους, μὴ οἴνῳ πολλῷ δεδουλωμένας, καλοδιδασκάλους,

4 Ἵνα σωφρονίζωσι τὰς νέας, φιλάνδρους εἶναι, φιλοτέκνους.

5 Σώφρονας, ἁγνὰς, οἰκουροὺς, ἀγαθὰς, ὑποτασσομένας τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν, ἵνα μὴ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ βλασφημῆται.

6 Τοὺς νεωτέρους ὡσαύτως παρακάλει σωφρονεῖν,

7 Περὶ πάντα σεαυτὸν παρεχόμενος τύπον καλῶν ἔργων, ἐν τῇ διδασκαλίᾳ ἀδιαφθορίαν, σεμνότητα.

8 Λόγον ὑγιῆ, ἀκατάγνωστον, ἵνα ὁ ἐξ ἐναντίας ἐντραπῇ, μηδὲν ἔχων περὶ ἡμῶν λέγειν φαῦλον.

9 Δούλους ἰδίοις δεσπόταις ὑποτάσσεσθαι, ἐν πᾶσιν εὐαρέστους εἶναι, μὴ ἀντιλέγοντας.

10 Μὴ νοσφιζομένους, ἀλλὰ πίστιν πᾶσαν ἐνδεικνυμένους ἀγαθήν· ἵνα τὴν διδασκαλίαν τοῦ σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ κοσμῶσιν ἐν πᾶσιν.

11 Ἐπεφάνη γὰρ ἡ χάρις τοῦ Θεοῦ ἡ σωτήριος πᾶσιν ἀνθρώποις.

12 Παιδεύουσα ἡμᾶς, ἵνα ἀρνησάμενοι τὴν ἀσέβειαν καὶ τὰς κοσμικὰς ἐπιθυμίας, σωφρόνως καὶ δικαίως καὶ εὐσε-

βῶς

βῶς ζήσωμεν ἐν τῷ νῦν αἰῶνι.
13 Προσδεχόμενοι τὴν μακαρίαν ἐλπίδα,
καὶ ἐπιφάνειαν τῆς δόξης τοῦ μεγάλου Θεοῦ καὶ
σωτῆρος ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ·
14 Ὅς ἔδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ ὑμῶν, ἵνα λυ-
τρώσηται ἡμᾶς ἀπὸ πάσης ἀνομίας, καὶ κα-
θαρίσῃ ἑαυτῷ λαὸν περιούσιον, ζηλωτὴν κα-
λῶν ἔργων.
15 Ταῦτα λάλει, καὶ παρακάλει, καὶ ἔλεγ-
χε μετὰ πάσης ἐπιταγῆς. μηδείς σου περι-
φρονείτω.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Γ'; 3.

1 Υ'Πομίμνησκε αὐτοὺς ἀρχαῖς καὶ ἐξου-
σίαις ὑποτάσσεσθαι, πειθαρχεῖν,
πρὸς πᾶν ἔργον ἀγαθὸν ἑτοίμους εἶναι.
2 Μηδένα βλασφημεῖν, ἀμάχους εἶναι,
ἐπιεικεῖς, πᾶσαν ἐνδεικνυμένους πρᾳότητα πρὸς
πάντας ἀνθρώπους.
3 Ἦμεν γάρ ποτε καὶ ἡμεῖς ἀνόητοι, ἀπει-
θεῖς, πλανώμενοι, δουλεύοντες ἐπιθυμίαις
καὶ ἡδοναῖς ποικίλαις, ἐν κακίᾳ καὶ φθόνῳ διά-
γοντες, στυγητοὶ, μισοῦντες ἀλλήλους·
4 Ὅτε δὲ ἡ χρηστότης καὶ ἡ φιλανθρωπία
ἐπεφάνη τοῦ σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ,
5 Οὐκ ἐξ ἔργων τῶν ἐν δικαιοσύνῃ ὧν ἐποιή-
σαμεν ἡμεῖς, ἀλλὰ κατὰ τὸν αὐτοῦ ἔλεον ἔσω-
σεν ἡμᾶς, διὰ λουτροῦ παλιγγενεσίας, καὶ ἀνα-
καινώσεως Πνεύματος ἁγίου.
6 Οὗ ἐξέχεεν ἐφ' ἡμᾶς πλουσίως, διὰ Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ τοῦ σωτῆρος ἡμῶν·
7 Ἵνα δικαιωθέντες τῇ ἐκείνου χάριτι,
κληρονόμοι γενώμεθα κατ' ἐλπίδα ζωῆς
αἰωνίου.

8 Πιστὸς ὁ λόγος· καὶ περὶ τούτων βούλομαί σε διαβεβαιοῦσθαι, ἵνα φροντίζωσι καλῶν ἔργων προΐστασθαι οἱ πεπιστευκότες τῷ Θεῷ· ταῦτά ἐστι τὰ καλὰ καὶ ὠφέλιμα τοῖς ἀνθρώποις.

9 Μωρὰς δὲ ζητήσεις, καὶ γενεαλογίας, καὶ ἔρεις, καὶ μάχας νομικὰς περιΐστασο· εἰσὶ γὰρ ἀνωφελεῖς καὶ μάταιοι.

10 Αἱρετικὸν ἄνθρωπον μετὰ μίαν καὶ δευτέραν νουθεσίαν παραιτοῦ.

11 Εἰδὼς ὅτι ἐξέστραπται ὁ τοιοῦτος, καὶ ἁμαρτάνει, ὢν αὐτοκατάκριτος.

12 Ὅταν πέμψω Ἀρτεμᾶν πρὸς σὲ, ἢ Τυχικὸν, σπούδασον ἐλθεῖν πρός με εἰς Νικόπολιν· ἐκεῖ γὰρ κέκρικα παραχειμάσαι.

13 Ζηνᾶν τὸν νομικὸν καὶ Ἀπολλὼ σπουδαίως πρόπεμψον, ἵνα μηδὲν αὐτοῖς λείπῃ.

14 Μανθανέτωσαν δὲ καὶ οἱ ἡμέτεροι καλῶν ἔργων προΐστασθαι εἰς τὰς ἀναγκαίας χρείας, ἵνα μὴ ὦσιν ἄκαρποι.

15 Ἀσπάζονταί σε οἱ μετ' ἐμοῦ πάντες· ἄσπασαι τοὺς φιλοῦντας ἡμᾶς ἐν πίστει· ἡ χάρις μετὰ πάντων ὑμῶν. ἀμήν.

Πρὸς Τίτον τῆς Κρητῶν ἐκκλησίας πρῶτον ἐπίσκοπον χειροτονηθέντα, ἐγράφη ἀπὸ Νικοπόλεως τῆς Μακεδονίας.

ΠΑΥΛΟΥ τοῦ ἈΠΟΣΤΟΛΟΥ
Ἡ ΠΡΟΣ ΦΙΛΗΜΟΝΑ.
ἘΠΙΣΤΟΛΗ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΑΥΛΟΣ δέσμιος Χριστοῦ Ἰη-
σοῦ, καὶ Τιμόθεος ὁ ἀδελφὸς,
Φιλήμονι τῷ ἀγαπητῷ καὶ συν-
εργῷ ἡμῶν.
2 Καὶ Ἀπφίᾳ τῇ ἀγαπητῇ, καὶ Ἀρχίπ-
πῳ τῷ συστρατιώτῃ ἡμῶν, καὶ τῇ κατ' οἶκόν
σου ἐκκλησίᾳ·
3 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς
ἡμῶν καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
4 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου, πάντοτε μνείαν
σου ποιούμενος ἐπὶ τῶν προσευχῶν μου.
5 Ἀκούων σου τὴν ἀγάπην, καὶ τὴν πίστιν ἣν
ἔχεις πρὸς τὸν Κύριον Ἰησοῦν, καὶ εἰς πάντας
τοὺς ἁγίους·
6 Ὅπως ἡ κοινωνία τῆς πίστεώς σου ἐνεργὴς
γένηται ἐν ἐπιγνώσει παντὸς ἀγαθοῦ τοῦ ἐν
ὑμῖν εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν.
7 Χαρὰν γὰρ ἔχομεν πολλὴν καὶ παράκλη-
σιν ἐπὶ τῇ ἀγάπῃ σου, ὅτι τὰ σπλάγχνα τῶν
ἁγίων ἀναπέπαυται διὰ σοῦ, ἀδελφέ.
8 Διὸ πολλὴν ἐν Χριστῷ παρρησίαν ἔχων
ἐπιτάσσειν σοι τὸ ἀνῆκον·

9 Διὰ τὴν ἀγάπην μᾶλλον παρακαλῶ, τοιοῦτος ὢν ὡς Παῦλος πρεσβύτης, νυνὶ δὲ καὶ δέσμιος Ἰησοῦ Χριστοῦ.

10 Παρακαλῶ σε περὶ τοῦ ἐμοῦ τέκνου, ὃν ἐγέννησα ἐν τοῖς δεσμοῖς μου, Ὀνήσιμον,

11 Τόν ποτέ σοι ἄχρηστον, νυνὶ δέ σοι καὶ ἐμοὶ εὔχρηστον, ὃν ἀνέπεμψα·

12 Σὺ δὲ αὐτὸν, τουτέστι, τὰ ἐμὰ σπλάγχνα, προσλαβοῦ·

13 Ὃν ἐγὼ ἐβουλόμην πρὸς ἐμαυτὸν κατέχειν, ἵνα ὑπὲρ σοῦ διακονῇ μοι ἐν τοῖς δεσμοῖς τοῦ εὐαγγελίου.

14 Χωρὶς δὲ τῆς σῆς γνώμης οὐδὲν ἠθέλησα ποιῆσαι· ἵνα μὴ ὡς κατὰ ἀνάγκην τὸ ἀγαθόν σου ᾖ, ἀλλὰ κατὰ ἑκούσιον.

15 Τάχα γὰρ διὰ τοῦτο ἐχωρίσθη πρὸς ὥραν, ἵνα αἰώνιον αὐτὸν ἐπέχῃς.

16 Οὐκέτι ὡς δοῦλον, ἀλλ' ὑπὲρ δοῦλον, ἀδελφὸν, ἀγαπητὸν μάλιστα, ἐμοὶ, πόσῳ δὲ μᾶλλον σοὶ καὶ ἐν σαρκὶ καὶ ἐν Κυρίῳ;

17 Εἰ οὖν ἐμὲ ἔχεις κοινωνὸν, προσλαβοῦ αὐτὸν ὡς ἐμέ.

18 Εἰ δέ τι ἠδίκησέ σε, ἢ ὀφείλει, τοῦτο ἐμοὶ ἐλλόγει.

19 Ἐγὼ Παῦλος ἔγραψα τῇ ἐμῇ χειρὶ, ἐγὼ ἀποτίσω· ἵνα μὴ λέγω σοι, ὅτι καὶ σεαυτόν μοι προσοφείλεις.

20 Ναὶ, ἀδελφὲ, ἐγώ σου ὀναίμην ἐν Κυρίῳ· ἀνάπαυσόν μου τὰ σπλάγχνα ἐν Κυρίῳ.

21 Πεποιθὼς τῇ ὑπακοῇ σου ἔγραψά σοι, εἰδὼς ὅτι καὶ ὑπὲρ ὃ λέγω ποιήσεις.

22 Ἅμα δὲ καὶ ἑτοίμαζέ μοι ξενίαν. ἐλπίζω γὰρ ὅτι διὰ τῶν προσευχῶν ὑμῶν χαρισθήσομαι ὑμῖν.

23 Ἀσπάζονταί σε, Ἐπαφρᾶς, (ὁ συν-
αιχμάλωτός μου ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ) Μάρκος,
24 Ἀρίσταρχος, Δημᾶς, Λουκᾶς, οἱ
συνεργοί μου.
25 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
μετὰ τοῦ πνεύματος ὑμῶν. ἀμήν.

Πρὸς Φιλήμονα ἐγράφη ἀπὸ Ῥώμης διὰ Ὀνησίμου οἰκέτου.

ΠΑΥ'ΛΟΥ τοῦ Α'ΠΟΣΤΟ'ΛΟΥ

Η' ΠΡΟ'Σ Ε'ΒΡΑΙ'ΟΥΣ

Ε'ΠΙΣΤΟΛΗ'.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΟΛΥΜΕΡΩ'Σ καὶ πολυτρό-
πως πάλαι ὁ Θεὸς λαλήσας
τοῖς πατράσιν ἐν τοῖς προφήταις,
ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν τούτων ἐλάλησεν ἡμῖν
ἐν Υἱῷ,
2 Ὃν ἔθηκε κληρονόμον πάντων, δι' οὗ καὶ
τοὺς αἰῶνας ἐποίησεν.
3 Ὃς ὢν ἀπαύγασμα τῆς δόξης, καὶ χαρα-
κτὴρ τῆς ὑποστάσεως αὐτοῦ, φέρων τε τὰ πάντα
τῷ ῥήματι τῆς δυνάμεως αὐτοῦ, δι' ἑαυτοῦ
καθαρισμὸν ποιησάμενος τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν,
ἐκάθησεν ἐν δεξιᾷ τῆς μεγαλωσύνης ἐν ὑψη-
λοῖς.

4 Τοσούτῳ κρείττων γενόμενος τῶν ἀγγέ-
λων, ὅσῳ διαφορώτερον παρ' αὐτοὺς κεκληρονό-
μηκεν ὄνομα.

5 Τίνι γὰρ εἶπέ ποτε τῶν ἀγγέλων· Υἱός
μου εἶ σὺ, ἐγὼ σήμερον γεγέννηκά σε; Καὶ
πάλιν· Ἐγὼ ἔσομαι αὐτῷ εἰς πατέρα, καὶ
αὐτὸς ἔσται μοι εἰς Υἱόν;

6 Ὅταν δὲ πάλιν εἰσαγάγῃ τὸν πρωτότο-
κον εἰς τὴν οἰκουμένην, λέγει· Καὶ προσκυνη-
σάτωσαν αὐτῷ πάντες ἄγγελοι Θεοῦ.

7 Καὶ πρὸς μὲν τοὺς ἀγγέλους λέγει· Ὁ
ποιῶν τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ πνεύματα, καὶ τοὺς
λειτουργοὺς αὐτοῦ πυρὸς φλόγα·

8 Πρὸς δὲ τὸν Υἱόν· Ὁ θρόνος σου ὁ Θεὸς,
εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος· ῥάβδος εὐθύτητος ἡ
ῥάβδος τῆς βασιλείας σου.

9 Ἠγάπησας δικαιοσύνην, καὶ ἐμίσησας
ἀνομίαν· διὰ τοῦτο ἔχρισέ σε ὁ Θεὸς, ὁ Θεός
σου ἔλαιον ἀγαλλιάσεως παρὰ τοὺς μετόχους σου.

10 Καί· Σὺ κατ' ἀρχὰς, Κύριε, τὴν
γῆν ἐθεμελίωσας, καὶ ἔργα τῶν χειρῶν σου εἰ-
σὶν οἱ οὐρανοί.

11 Αὐτοὶ ἀπολοῦνται, σὺ δὲ διαμένεις·
καὶ πάντες ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσονται·

12 Καὶ ὡσεὶ περιβόλαιον ἑλίξεις αὐτοὺς,
καὶ ἀλλαγήσονται· σὺ δὲ ὁ αὐτὸς εἶ, καὶ τὰ ἔτη
σου οὐκ ἐκλείψουσι.

13 Πρὸς τίνα δὲ τῶν ἀγγέλων εἴρηκέ ποτε·
Κάθου ἐκ δεξιῶν μου, ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς
σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου;

14 Οὐχὶ πάντες εἰσὶ λειτουργικὰ πνεύ-
ματα, εἰς διακονίαν ἀποστελλόμενα διὰ τοὺς
μέλλοντας κληρονομεῖν σωτηρίαν;

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΔΙὰ τοῦτο δεῖ περισσοτέρως ἡμᾶς
προσέχειν τοῖς ἀκουσθεῖσι, μή πο-
τε παραῤῥυῶμεν.
2 Εἰ γὰρ ὁ δι' ἀγγέλων λαληθεὶς λόγος
ἐγένετο βέβαιος, καὶ πᾶσα παράβασις καὶ πα-
ρακοὴ ἔλαβεν ἔνδικον μισθαποδοσίαν·
3 Πῶς ἡμεῖς ἐκφευξόμεθα τηλικαύτης
ἀμελήσαντες σωτηρίας, ἥτις ἀρχὴν λαβοῦ-
σα λαλεῖσθαι διὰ τοῦ Κυρίου, ὑπὸ τῶν ἀκου-
σάντων εἰς ἡμᾶς ἐβεβαιώθη.
4 Συνεπιμαρτυροῦντος τοῦ Θεοῦ σημείοις τε
καὶ τέρασι, καὶ ποικίλαις δυνάμεσι, καὶ Πνεύ-
ματος ἁγίου μερισμοῖς, κατὰ τὴν αὐτοῦ θέλησιν;
5 Οὐ γὰρ ἀγγέλοις ὑπέταξε τὴν οἰκουμέ-
νην τὴν μέλλουσαν, περὶ ἧς λαλοῦμεν.
6 Διεμαρτύρατο δέ πού τις, λέγων· Τί
ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι μιμνήσκῃ αὐτοῦ, ἢ Υἱὸς
ἀνθρώπου, ὅτι ἐπισκέπτῃ αὐτόν;
7 Ἠλάττωσας αὐτὸν βραχύ τι παρ' ἀγγέ-
λους· δόξῃ καὶ τιμῇ ἐστεφάνωσας αὐτὸν, καὶ κα-
τέστησας αὐτὸν ἐπὶ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν σου.
8 Πάντα ὑπέταξας ὑποκάτω τῶν ποδῶν
αὐτοῦ. Ἐν γὰρ τῷ ὑποτάξαι αὐτῷ τὰ πάντα,
οὐδὲν ἀφῆκεν αὐτῷ ἀνυπότακτον· νῦν δὲ οὔπω
ὁρῶμεν αὐτῷ τὰ πάντα ὑποτεταγμένα.
9 Τὸν δὲ βραχύ τι παρ' ἀγγέλους ἠλαττω-
μένον βλέπομεν Ἰησοῦν, διὰ τὸ πάθημα τοῦ
θανάτου, δόξῃ καὶ τιμῇ ἐστεφανωμένον· ὅπως
χάριτι Θεοῦ ὑπὲρ παντὸς γεύσηται θανάτου.
10 Ἔπρεπε γὰρ αὐτῷ δι' ὃν τὰ πάντα καὶ
δι' οὗ τὰ πάντα, πολλοὺς Υἱοὺς εἰς δόξαν ἀ-
γαγόντα, τὸν ἀρχηγὸν τῆς σωτηρίας αὐτῶν διὰ
παθημάτων τελειῶσαι.

11 Ὅ,

11 Ὅ, τε γὰρ ἁγιάζων ϗ οἱ ἁγιαζόμε-
νοι, ἐξ ἑνὸς πάντες· δι' ἣν αἰτίαν οὐκ ἐπαι-
σχύνεται ἀδελφοὺς αὐτοὺς καλεῖν,
12 Λέγων· Ἀπαγγελῶ τὸ ὄνομά σου τοῖς
ἀδελφοῖς μου, ἐν μέσῳ ἐκκλησίας ὑμνήσω σε.
13 Καὶ πάλιν· Ἐγὼ ἔσομαι πεποιθὼς
ἐπ' αὐτῷ· Καὶ πάλιν· Ἰδοὺ ἐγὼ ϗ τὰ παι-
δία ἅ μοι ἔδωκεν ὁ Θεός.
14 Ἐπεὶ οὖν τὰ παιδία κεκοινώνηκε σαρκὸς
ϗ αἵματος, ϗ αὐτὸς παραπλησίως μετέσχε τῶν
αὐτῶν, ἵνα διὰ τοῦ θανάτου καταργήσῃ τὸν τὸ κρά-
τος ἔχοντα τοῦ θανάτου, τουτέστι τὸν διάβολον.
15 Καὶ ἀπαλλάξῃ τούτους ὅσοι φόβῳ θανάτου
διὰ παντὸς τοῦ ζῆν ἔνοχοι ἦσαν δουλείας.
16 Οὐ γὰρ δήπου ἀγγέλων ἐπιλαμβάνε-
ται, ἀλλὰ σπέρματος Ἀβραὰμ ἐπιλαμβάνεται.
17 Ὅθεν ὤφειλε κατὰ πάντα τοῖς ἀδελ-
φοῖς ὁμοιωθῆναι, ἵνα ἐλεήμων γένηται ϗ πι-
στὸς ἀρχιερεὺς τὰ πρὸς τὸν Θεόν, εἰς τὸ ἱλάσ-
κεσθαι τὰς ἁμαρτίας τοῦ λαοῦ.
18 Ἐν ᾧ γὰρ πέπονθεν αὐτὸς πειραθεὶς,
δύναται τοῖς πειραζομένοις βοηθῆσαι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Ὅθεν, ἀδελφοὶ ἅγιοι, κλήσεως
ἐπουρανίου μέτοχοι, κατανοήσατε
τὸν ἀπόστολον ϗ ἀρχιερέα τῆς ὁμολογίας ἡ-
μῶν Χριστὸν Ἰησοῦν·
2 Πιστὸν ὄντα τῷ ποιήσαντι αὐτὸν, ὡς ϗ
Μωσῆς ἐν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ.
3 Πλείονος γὰρ δόξης οὗτος παρὰ Μωσῆν
ἠξίωται, καθ' ὅσον πλείονα τιμὴν ἔχει τοῦ
οἴκου ὁ κατασκευάσας αὐτόν.
4 Πᾶς γὰρ οἶκος κατασκευάζεται ὑπό τι-
νος· ὁ δὲ τὰ πάντα κατασκευάσας, Θεός.

5 Καὶ Μωσῆς μὲν πιστὸς ἐν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, ὡς θεράπων, εἰς μαρτύριον τῶν λαληθησομένων.

6 Χριστὸς δὲ, ὡς Υἱὸς ἐπὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ· οὗ οἶκός ἐσμεν ἡμεῖς, ἐάν περ τὴν παῤῥησίαν καὶ τὸ καύχημα τῆς ἐλπίδος μέχρι τέλους βεβαίαν κατάσχωμεν.

7 Διὸ, καθὼς λέγει τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον· σήμερον, ἐὰν τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσητε.

8 Μὴ σκληρώνητε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὡς ἐν τῷ παραπικρασμῷ, κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ πειρασμοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ.

9 Οὗ ἐπείρασάν με οἱ πατέρες ὑμῶν, ἐδοκίμασάν με, καὶ εἶδον τὰ ἔργα μου τεσσαράκοντα ἔτη.

10 Διὸ προσώχθισα τῇ γενεᾷ ἐκείνῃ, καὶ εἶπον· Ἀεὶ πλανῶνται τῇ καρδίᾳ· αὐτοὶ δὲ οὐκ ἔγνωσαν τὰς ὁδούς μου,

11 Ὡς ὤμοσα ἐν τῇ ὀργῇ μου· Εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατάπαυσίν μου.

12 Βλέπετε, ἀδελφοὶ, μήποτε ἔσται ἔν τινι ὑμῶν καρδία πονηρὰ ἀπιστίας, ἐν τῷ ἀποστῆναι ἀπὸ Θεοῦ ζῶντος·

13 Ἀλλὰ παρακαλεῖτε ἑαυτοὺς καθ' ἑκάστην ἡμέραν, ἄχρις οὗ τὸ σήμερον καλεῖται· ἵνα μὴ σκληρυνθῇ τις ἐξ ὑμῶν ἀπάτῃ τῆς ἁμαρτίας.

14 Μέτοχοι γὰρ γεγόναμεν τοῦ Χριστοῦ, ἐάν περ τὴν ἀρχὴν τῆς ὑποστάσεως μέχρι τέλους βεβαίαν κατάσχωμεν.

15 Ἐν τῷ λέγεσθαι· Σήμερον ἐὰν τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσητε, μὴ σκληρώνητε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὡς ἐν τῷ παραπικρασμῷ.

16 Τινὲς γὰρ ἀκούσαντες παρεπίκραναν,



ἀλλ' οὐ πάντες οἱ ἐξελθόντες ἐξ Αἰγύπτου διὰ Μωσέως.

17 Τίσι δὲ προσώχθισε τεσσαράκοντα ἔτη; Οὐχὶ τοῖς ἁμαρτήσασιν, ὧν τὰ κῶλα ἔπεσεν ἐν τῇ ἐρήμῳ;

18 Τίσι δὲ ὤμοσε μὴ εἰσελεύσεσθαι εἰς τὴν κατάπαυσιν αὐτοῦ, εἰ μὴ τοῖς ἀπειθήσασι;

19 Καὶ βλέπομεν ὅτι οὐκ ἠδυνήθησαν εἰσελθεῖν δι' ἀπιστίαν.

ΚΕΦΑʹΛΑΙΟΝ, Δʹ. 4.

1 ΦΟβηθῶμεν οὖν μή ποτε καταλειπομένης ἐπαγγελίας εἰσελθεῖν εἰς τὴν κατάπαυσιν αὐτοῦ, δοκῇ τις ἐξ ὑμῶν ὑστερηκέναι.

2 Καὶ γάρ ἐσμεν εὐηγγελισμένοι, καθάπερ κἀκεῖνοι· ἀλλ' οὐκ ὠφέλησεν ὁ λόγος τῆς ἀκοῆς ἐκείνους, μὴ συγκεκραμένος τῇ πίστει τοῖς ἀκούσασιν.

3 Εἰσερχόμεθα γὰρ εἰς τὴν κατάπαυσιν οἱ πιστεύσαντες, καθὼς εἴρηκεν· Ὡς ὤμοσα ἐν τῇ ὀργῇ μου, εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατάπαυσίν μου· καίτοι τῶν ἔργων ἀπὸ καταβολῆς κόσμου γενηθέντων.

4 Εἴρηκε γάρ που περὶ τῆς ἑβδόμης οὕτω· Καὶ κατέπαυσεν ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἀπὸ πάντων τῶν ἔργων αὐτοῦ.

5 Καὶ ἐν τούτῳ πάλιν· Εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατάπαυσίν μου.

6 Ἐπεὶ οὖν ἀπολείπεταί τινας εἰσελθεῖν εἰς αὐτήν, καὶ οἱ πρότερον εὐαγγελισθέντες οὐκ εἰσῆλθον δι' ἀπείθειαν·

7 Πάλιν τινὰ ὁρίζει ἡμέραν, σήμερον, ἐν Δαβὶδ λέγων, μετὰ τοσοῦτον χρόνον (καθὼς

εἴρη-

εἴρηται) Σήμερον ἐὰν τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσητε, μὴ σκληρύνητε τὰς καρδίας ὑμῶν.

8 Εἰ γὰρ αὐτοὺς Ἰησοῦς κατέπαυσεν, οὐκ ἂν περὶ ἄλλης ἐλάλει μετὰ ταῦτα ἡμέρας.

9 Ἄρα ἀπολείπεται σαββατισμὸς τῷ λαῷ τοῦ Θεοῦ.

10 Ὁ γὰρ εἰσελθὼν εἰς τὴν κατάπαυσιν αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς κατέπαυσεν ἀπὸ τῶν ἔργων αὐτοῦ, ὥσπερ ἀπὸ τῶν ἰδίων ὁ Θεός.

11 Σπουδάσωμεν οὖν εἰσελθεῖν εἰς ἐκείνην τὴν κατάπαυσιν· ἵνα μὴ ἐν τῷ αὐτῷ τις ὑποδείγματι πέσῃ τῆς ἀπειθείας.

12 Ζῶν γὰρ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐνεργὴς, καὶ τομώτερος ὑπὲρ πᾶσαν μάχαιραν δίστομον, καὶ διϊκνούμενος ἄχρι μερισμοῦ ψυχῆς τε καὶ πνεύματος, ἁρμῶν τε καὶ μυελῶν, καὶ κριτικὸς ἐνθυμήσεων καὶ ἐννοιῶν καρδίας.

13 Καὶ οὐκ ἔστι κτίσις ἀφανὴς ἐνώπιον αὐτοῦ· πάντα δὲ γυμνὰ καὶ τετραχηλισμένα τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ πρὸς ὃν ἡμῖν ὁ λόγος.

14 Ἔχοντες οὖν ἀρχιερέα μέγαν, διεληλυθότα τοὺς οὐρανοὺς, Ἰησοῦν τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ, κρατῶμεν τῆς ὁμολογίας·

15 Οὐ γὰρ ἔχομεν ἀρχιερέα μὴ δυνάμενον συμπαθῆσαι ταῖς ἀσθενείαις ἡμῶν, πεπειρασμένον δὲ κατὰ πάντα καθ' ὁμοιότητα, χωρὶς ἁμαρτίας.

16 Προσερχώμεθα οὖν μετὰ παῤῥησίας τῷ θρόνῳ τῆς χάριτος, ἵνα λάβωμεν ἔλεον, καὶ χάριν εὕρωμεν εἰς εὔκαιρον βοήθειαν.

ΚΕΦΑʼΛΑΙΟΝ, Εʹ. 5.

1 Πᾶς γὰρ ἀρχιερεὺς ἐξ ἀνθρώπων λαμβανόμενος, ὑπὲρ ἀνθρώπων καθίσταται τὰ πρὸς τὸν Θεὸν, ἵνα προσφέρῃ

φέρῃ

φέρῃ δῶρά τε καὶ θυσίας ὑπὲρ ἁμαρτιῶν·

2 Μετριοπαθεῖν δυνάμενος τοῖς ἀγνοοῦσι καὶ
πλανωμένοις· ἐπεὶ καὶ αὐτὸς περίκειται ἀσθέ-
νειαν.

3 Καὶ διὰ ταύτην ὀφείλει, καθὼς περὶ τοῦ
λαοῦ, οὕτω καὶ περὶ ἑαυτοῦ προσφέρειν ὑπὲρ ἁ-
μαρτιῶν.

4 Καὶ οὐχ ἑαυτῷ τις λαμβάνει τὴν τιμὴν,
ἀλλὰ ὁ καλούμενος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, καθάπερ
καὶ ὁ Ἀαρών.

5 Οὕτω καὶ ὁ Χριστὸς οὐχ ἑαυτὸν ἐδόξασε γε-
νηθῆναι ἀρχιερέα, ἀλλ' ὁ λαλήσας πρὸς αὐτόν·
Υἱός μου εἶ σὺ, ἐγὼ σήμερον γεγέννηκά σε.

6 Καθὼς καὶ ἐν ἑτέρῳ λέγει· Σὺ ἱερεὺς εἰς
τὸν αἰῶνα κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.

7 Ὃς ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς σαρκὸς αὐτοῦ,
δεήσεις τε καὶ ἱκετηρίας πρὸς τὸν δυνάμενον σώ-
ζειν αὐτὸν ἐκ θανάτου, μετὰ κραυγῆς ἰσχυρᾶς
καὶ δακρύων προσενέγκας, καὶ εἰσακουσθεὶς ἀπὸ
τῆς εὐλαβείας,

8 Καίπερ ὢν Υἱὸς, ἔμαθεν ἀφ' ὧν ἔπα-
θε τὴν ὑπακοήν.

9 Καὶ τελειωθεὶς ἐγένετο τοῖς ὑπακούουσιν
αὐτῷ πᾶσιν αἴτιος σωτηρίας αἰωνίου.

10 Προσαγορευθεὶς ὑπὸ τοῦ Θεοῦ ἀρχιερεὺς
κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.

11 Περὶ οὗ πολὺς ἡμῖν ὁ λόγος καὶ δυσερ-
μήνευτος λέγειν· ἐπεὶ νωθροὶ γεγόνατε ταῖς
ἀκοαῖς.

12 Καὶ γὰρ ὀφείλοντες εἶναι διδάσκαλοι
διὰ τὸν χρόνον, πάλιν χρείαν ἔχετε τοῦ διδάσ-
κειν ὑμᾶς, τίνα τὰ στοιχεῖα τῆς ἀρχῆς τῶν λο-
γίων τοῦ Θεοῦ· καὶ γεγόνατε χρείαν ἔχοντες γά-
λακτος, καὶ οὐ στερεᾶς τροφῆς.

13 Πα

13 Πᾶς γὰρ ὁ μετέχων γάλακτος, ἄπειρος λόγου δικαιοσύνης· (νήπιος γάρ ἐστι.)

14 Τελείων δέ ἐστιν ἡ στερεὰ τροφὴ, τῶν διὰ τὴν ἕξιν τὰ αἰσθητήρια γεγυμνασμένα ἐχόντων πρὸς διάκρισιν καλοῦ τε καὶ κακοῦ.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ϛ'. 6.

1 ΔΙὸ ἀφέντες τὸν τῆς ἀρχῆς τοῦ Χριστοῦ λόγον, ἐπὶ τὴν τελειότητα φερώμεθα· μὴ πάλιν θεμέλιον καταβαλλόμενοι μετανοίας ἀπὸ νεκρῶν ἔργων, καὶ πίστεως ἐπὶ Θεόν,

2 Βαπτισμῶν διδαχῆς, ἐπιθέσεώς τε χειρῶν, ἀναστάσεώς τε νεκρῶν, καὶ κρίματος αἰωνίου.

3 Καὶ τοῦτο ποιήσομεν, ἐάνπερ ἐπιτρέπῃ ὁ Θεός.

4 Ἀδύνατον γὰρ τοὺς ἅπαξ φωτισθέντας, γευσαμένους τε τῆς δωρεᾶς τῆς ἐπουρανίου, καὶ μετόχους γενηθέντας Πνεύματος ἁγίου,

5 Καὶ καλὸν γευσαμένους Θεοῦ ῥῆμα, δυνάμεις τε μέλλοντος αἰῶνος,

6 Καὶ παραπεσόντας, πάλιν ἀνακαινίζειν εἰς μετάνοιαν, ἀνασταυροῦντας ἑαυτοῖς τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ καὶ παραδειγματίζοντας.

7 Γῆ γὰρ ἡ πιοῦσα τὸν ἐπ' αὐτῆς πολλάκις ἐρχόμενον ὑετὸν, καὶ τίκτουσα βοτάνην εὔθετον ἐκείνοις δι' οὓς καὶ γεωργεῖται, μεταλαμβάνει εὐλογίας ἀπὸ τοῦ Θεοῦ·

8 Ἐκφέρουσα δὲ ἀκάνθας καὶ τριβόλους, ἀδόκιμος καὶ κατάρας ἐγγὺς, ἧς τὸ τέλος εἰς καῦσιν.

9 Πεπείσμεθα δὲ περὶ ὑμῶν, ἀγαπητοὶ, τὰ κρείττονα καὶ ἐχόμενα σωτηρίας, εἰ καὶ οὕτω λαλοῦμεν.

10 Οὐ-

10 Οὐ γὰρ ἄδικος ὁ Θεὸς, ἐπιλαθέσθαι
τοῦ ἔργου ὑμῶν, καὶ τοῦ κόπου τῆς ἀγάπης ἧς
ἐνεδείξασθε εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ, διακονήσαντες
τοῖς ἁγίοις καὶ διακονοῦντες.
11 Ἐπιθυμοῦμεν δὲ ἕκαστον ὑμῶν τὴν
αὐτὴν ἐνδείκνυσθαι σπουδὴν πρὸς τὴν πληρο-
φορίαν τῆς ἐλπίδος ἄχρι τέλους·
12 Ἵνα μὴ νωθροὶ γένησθε, μιμηταὶ δὲ
τῶν διὰ πίστεως καὶ μακροθυμίας κληρονομούν-
των τὰς ἐπαγγελίας.
13 Τῷ γὰρ Ἀβραὰμ ἐπαγγειλάμενος ὁ
Θεὸς, ἐπεὶ κατ' οὐδενὸς εἶχε μείζονος ὀμό-
σαι, ὤμοσε καθ' ἑαυτοῦ,
14 Λέγων· Ἦ μὴν εὐλογῶν εὐλογήσω
σε, καὶ πληθύνων πληθυνῶ σε.
15 Καὶ οὕτω μακροθυμήσας ἐπέτυχε τῆς
ἐπαγγελίας.
16 Ἄνθρωποι μὲν γὰρ κατὰ τοῦ μείζονος
ὀμνύουσι, καὶ πάσης αὐτοῖς ἀντιλογίας πέ-
ρας εἰς βεβαίωσιν ὁ ὅρκος.
17 Ἐν ᾧ περισσότερον βουλόμενος ὁ Θεὸς
ἐπιδεῖξαι τοῖς κληρονόμοις τῆς ἐπαγγελίας
τὸ ἀμετάθετον τῆς βουλῆς αὐτοῦ, ἐμεσίτευ-
σεν ὅρκῳ·
18 Ἵνα διὰ δύο πραγμάτων ἀμεταθέτων,
ἐν οἷς ἀδύνατον ψεύσασθαι Θεὸν, ἰσχυρὰν
παράκλησιν ἔχωμεν οἱ καταφυγόντες κρατῆ-
σαι τῆς προκειμένης ἐλπίδος·
19 Ἣν ὡς ἄγκυραν ἔχομεν τῆς ψυχῆς
ἀσφαλῆ τε καὶ βεβαίαν, καὶ εἰσερχομένην εἰς
τὸ ἐσώτερον τοῦ καταπετάσματος.
20 Ὅπου πρόδρομος ὑπὲρ ἡμῶν εἰσῆλθεν
Ἰησοῦς, κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδὲκ, ἀρ-
χιερεὺς γενόμενος εἰς τὸν αἰῶνα.

ΚΕ

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ'. 7.

1 ΟΥ῟τος γὰρ ὁ Μελχισεδὲκ, βασι-
λεὺς Σαλὴμ, ἱερεὺς τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑ-
ψίστου, ὁ συναντήσας Ἀβραὰμ ὑποστρέφοντι
ἀπὸ τῆς κοπῆς τῶν βασιλέων, καὶ εὐλογήσας αὐτόν.
2 Ὧ καὶ δεκάτην ἀπὸ πάντων ἐμέρισεν
Ἀβραάμ· πρῶτον μὲν ἑρμηνευόμενος βασι-
λεὺς δικαιοσύνης, ἔπειτα δὲ καὶ βασιλεὺς
Σαλήμ· ὅ ἐστι βασιλεὺς εἰρήνης·
3 Ἀπάτωρ, ἀμήτωρ, ἀγενεαλόγητος·
μήτε ἀρχὴν ἡμερῶν, μήτε ζωῆς τέλος ἔ-
χων· ἀφωμοιωμένος δὲ τῷ Υἱῷ τοῦ Θεοῦ,
μένει ἱερεὺς εἰς τὸ διηνεκές.
4 Θεωρεῖτε δὲ πηλίκος οὗτος, ᾧ καὶ δεκά-
την Ἀβραὰμ ἔδωκεν ἐκ τῶν ἀκροθινίων ὁ
Πατριάρχης.
5 Καὶ οἱ μὲν ἐκ τῶν Υἱῶν Λευῒ τὴν ἱε-
ρατείαν λαμβάνοντες, ἐντολὴν ἔχουσιν ἀπο-
δεκατοῦν τὸν λαὸν κατὰ τὸν νόμον, τουτέστι, τοὺς
ἀδελφοὺς αὐτῶν, καίπερ ἐξεληλυθότας ἐκ
τῆς ὀσφύος Ἀβραάμ.
6 Ὁ δὲ μὴ γενεαλογούμενος ἐξ αὐτῶν,
δεδεκάτωκε τὸν Ἀβραάμ, καὶ τὸν ἔχοντα τὰς
ἐπαγγελίας εὐλόγηκε.
7 Χωρὶς δὲ πάσης ἀντιλογίας, τὸ ἔλατ-
τον ὑπὸ τοῦ κρείττονος εὐλογεῖται.
8 Καὶ ὧδε μὲν δεκάτας ἀποθνήσκοντες
ἄνθρωποι λαμβάνουσιν· ἐκεῖ δὲ, μαρτυρού-
μενος ὅτι ζῇ.
9 Καὶ (ὡς ἔπος εἰπεῖν) διὰ Ἀβραὰμ καὶ
Λευῒ ὁ δεκάτας λαμβάνων δεδεκάτωται.
10 Ἔτι γὰρ ἐν τῇ ὀσφύϊ τοῦ πατρὸς ἦν, ὅτε
συνήντησεν αὐτῷ ὁ Μελχισεδέκ.

11 Εἰ

11 Εἰ μὲν οὖν τελείωσις διὰ τῆς Λευϊτικῆς
ἱερωσύνης ἦν· (ὁ λαὸς γὰρ ἐπ' αὐτῇ νενομο-
θέτητο) τίς ἔτι χρεία, κατὰ τὴν τάξιν Μελ-
χισεδὲκ ἕτερον ἀνίστασθαι ἱερέα, καὶ οὐ κατὰ τὴν
τάξιν Ἀαρὼν λέγεσθαι;
12 Μετατιθεμένης γὰρ τῆς ἱερωσύνης, ἐξ
ἀνάγκης καὶ νόμου μετάθεσις γίνεται.
13 Ἐφ' ὃν γὰρ λέγεται ταῦτα, φυλῆς ἑτέ-
ρας μετέσχηκεν, ἀφ' ἧς οὐδεὶς προσέσχηκε τῷ
θυσιαστηρίῳ.
14 Πρόδηλον γὰρ ὅτι ἐξ Ἰούδα ἀνατέταλ-
κεν ὁ Κύριος ἡμῶν· εἰς ἣν φυλὴν οὐδὲν περὶ
ἱερωσύνης Μωσῆς ἐλάλησε·
15 Καὶ περισσότερον ἔτι κατάδηλόν ἐστιν,
εἰ κατὰ τὴν ὁμοιότητα Μελχισεδὲκ ἀνίσταται
ἱερεὺς ἕτερος,
16 Ὃς οὐ κατὰ νόμον ἐντολῆς σαρκικῆς γέ-
γονεν, ἀλλὰ κατὰ δύναμιν ζωῆς ἀκαταλύτου.
17 Μαρτυρεῖ γάρ· Ὅτι σὺ ἱερεὺς εἰς τὸν
αἰῶνα κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.
18 Ἀθέτησις μὲν γὰρ γίνεται προαγούσης
ἐντολῆς, διὰ τὸ αὐτῆς ἀσθενὲς καὶ ἀνωφελές.
19 Οὐδὲν γὰρ ἐτελείωσεν ὁ νόμος, ἐπει-
σαγωγὴ δὲ κρείττονος ἐλπίδος, δι' ἧς ἐγγί-
ζομεν τῷ Θεῷ.
20 Καὶ καθ' ὅσον οὐ χωρὶς ὁρκωμοσίας.
21 (Οἱ μὲν γὰρ, χωρὶς ὁρκωμοσίας εἰσὶν
ἱερεῖς γεγονότες· ὁ δὲ, μετὰ ὁρκωμοσίας,
διὰ τοῦ λέγοντος πρὸς αὐτόν· Ὤμοσε Κύριος,
καὶ οὐ μεταμεληθήσεται· Σὺ ἱερεὺς εἰς τὸν αἰῶ-
να κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.)
22 Κατὰ τοσοῦτον κρείττονος διαθήκης γέ-
γονεν ἔγγυος Ἰησοῦς.
23 Καὶ οἱ μὲν, πλείονες εἰσὶ γεγονότες ἱε-

ρεῖς,

ρεῖς, διὰ τὸ θανάτῳ κωλύεσθαι παραμένειν.
24 Ὁ δὲ, διὰ τὸ μένειν αὐτὸν εἰς τὸν αἰῶ-
να, ἀπαράβατον ἔχει τὴν ἱερωσύνην·
25 Ὅθεν καὶ σώζειν εἰς τὸ παντελὲς δύνα-
ται τοὺς προσερχομένους δι' αὐτοῦ τῷ Θεῷ, πάν-
τοτε ζῶν εἰς τὸ ἐντυγχάνειν ὑπὲρ αὐτῶν.
26 Τοιοῦτος γὰρ ἡμῖν ἔπρεπεν ἀρχιερεὺς,
ὅσιος, ἄκακος, ἀμίαντος, κεχωρισμένος ἀ-
πὸ τῶν ἁμαρτωλῶν, καὶ ὑψηλότερος τῶν οὐρα-
νῶν γενόμενος.
27 Ὃς οὐκ ἔχει καθ' ἡμέραν ἀνάγκην, ὥσ-
περ οἱ ἀρχιερεῖς, πρότερον ὑπὲρ τῶν ἰδίων ἁ-
μαρτιῶν θυσίας ἀναφέρειν, ἔπειτα τῶν τοῦ λαοῦ·
τοῦτο γὰρ ἐποίησεν ἐφάπαξ, ἑαυτὸν ἀνενέγκας,
28 Ὁ νόμος γὰρ ἀνθρώπους καθίστησιν ἀρ-
χιερεῖς, ἔχοντας ἀσθένειαν· ὁ λόγος δὲ τῆς
ὁρκωμοσίας τῆς μετὰ τὸν νόμον, Υἱὸν εἰς τὸν
αἰῶνα τετελειωμένον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

1 Κεφάλαιον δὲ ἐπὶ τοῖς λεγομένοις
τοιοῦτον ἔχομεν ἀρχιερέα, ὃς ἐκά-
θισεν ἐν δεξιᾷ τοῦ θρόνου τῆς μεγαλωσύνης ἐν
τοῖς οὐρανοῖς,
2 Τῶν ἁγίων λειτουργὸς, καὶ τῆς σκηνῆς
τῆς ἀληθινῆς, ἣν ἔπηξεν ὁ Κύριος, καὶ οὐκ
ἄνθρωπος.
3 Πᾶς γὰρ ἀρχιερεὺς εἰς τὸ προσφέρειν δῶ-
ρά τε καὶ θυσίας καθίσταται· ὅθεν ἀναγκαῖον
ἔχειν τὶ καὶ τοῦτον ὃ προσενέγκῃ.
4 Εἰ μὲν γὰρ ἦν ἐπὶ γῆς, οὐδ' ἂν ἦν ἱερεὺς,
ὄντων τῶν ἱερέων τῶν προσφερόντων κατὰ τὸν νό-
μον τὰ δῶρα·
5 Οἵτινες ὑποδείγματι καὶ σκιᾷ λατρεύου-
σι

σιν τῶν ἐπουρανίων, καθὼς κεχρημάτισται Μω-
σῆς, μέλλων ἐπιτελεῖν τὴν σκηνήν· Ὅρα
γάρ, φησι, ποιήσῃς πάντα κατὰ τὸν τύπον
τὸν δειχθέντα σοι ἐν τῷ ὄρει.
6 Νυνὶ δὲ διαφορωτέρας τέτευχε λειτουργί-
ας, ὅσῳ καὶ κρείττονός ἐστι διαθήκης μεσίτης, ἥ-
τις ἐπὶ κρείττοσιν ἐπαγγελίαις νενομοθέτηται.
7 Εἰ γὰρ ἡ πρώτη ἐκείνη ἦν ἄμεμπτος,
οὐκ ἂν δευτέρας ἐζητεῖτο τόπος.
8 Μεμφόμενος γὰρ αὐτοῖς λέγει· Ἰδού,
ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ συντε-
λέσω ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰσραήλ, καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον
Ἰούδα διαθήκην καινήν.
9 Οὐ κατὰ τὴν διαθήκην ἣν ἐποίησα τοῖς
πατράσιν αὐτῶν, ἐν ἡμέρᾳ ἐπιλαβομένου μου τῆς
χειρὸς αὐτῶν, ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύ-
πτου· ὅτι αὐτοὶ οὐκ ἐνέμειναν ἐν τῇ διαθήκῃ μου,
κἀγὼ ἠμέλησα αὐτῶν, λέγει Κύριος.
10 Ὅτι αὕτη ἡ διαθήκη ἣν διαθήσομαι
τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ μετὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας,
λέγει Κύριος, διδοὺς νόμους μου εἰς τὴν διά-
νοιαν αὐτῶν, καὶ ἐπὶ καρδίας αὐτῶν ἐπιγράψω
αὐτούς· καὶ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς Θεόν, καὶ αὐτοὶ
ἔσονταί μοι εἰς λαόν·
11 Καὶ οὐ μὴ διδάξωσιν ἕκαστος τὸν πλη-
σίον αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, λέ-
γων· Γνῶθι τὸν Κύριον, ὅτι πάντες εἰδήσου-
σί με, ἀπὸ μικροῦ αὐτῶν ἕως μεγάλου αὐτῶν·
12 Ὅτι ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐ-
τῶν, καὶ ἁμαρτιῶν αὐτῶν, καὶ τῶν ἀνομιῶν αὐ-
τῶν οὐ μὴ μνησθῶ ἔτι.
13 Ἐν τῷ λέγειν καινήν, πεπαλαίωκε
τὴν πρώτην· τὸ δὲ παλαιούμενον καὶ γηρά-
σκον, ἐγγὺς ἀφανισμοῦ.

ΚΕ-

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Θ'. 9.

1 Εἶχε μὲν οὖν καὶ ἡ πρώτη σκηνὴ δι-
καιώματα λατρείας, τό, τε ἅ-
γιον κοσμικόν.
2 Σκηνὴ γὰρ κατεσκευάσθη ἡ πρώτη, ἐν
ᾗ ἥτε λυχνία καὶ ἡ τράπεζα, καὶ ἡ πρόθεσις
τῶν ἄρτων, ἥτις λέγεται ἅγια.
3 Μετὰ δὲ τὸ δεύτερον καταπέτασμα σκη-
νὴ ἡ λεγομένη ἅγια ἁγίων·
4 Χρυσοῦν ἔχουσα θυμιατήριον, καὶ τὴν
κιβωτὸν τῆς διαθήκης περικεκαλυμμένην παν-
τόθεν χρυσίῳ, ἐν ᾗ στάμνος χρυσῆ ἔχουσα τὸ
μάννα, καὶ ἡ ῥάβδος Ἀαρὼν ἡ βλαστήσασα,
καὶ αἱ πλάκες τῆς διαθήκης.
5 Ὑπεράνω δὲ αὐτῆς Χερουβὶμ δόξης,
κατασκιάζοντα τὸ ἱλαστήριον· περὶ ὧν οὐκ ἔστι
νῦν λέγειν κατὰ μέρος.
6 Τούτων δὲ οὕτω κατεσκευασμένων, εἰς
μὲν τὴν πρώτην σκηνὴν διαπαντὸς εἰσίασιν
οἱ ἱερεῖς τὰς λατρείας ἐπιτελοῦντες·
7 Εἰς δὲ τὴν δευτέραν ἅπαξ τοῦ ἐνιαυτοῦ μόνος
ὁ ἀρχιερεύς, οὐ χωρὶς αἵματος, ὃ προσφέρει
ὑπὲρ ἑαυτοῦ καὶ τῶν τοῦ λαοῦ ἀγνοημάτων.
8 Τοῦτο δηλοῦντος τοῦ Πνεύματος τοῦ ἁγίου,
μήπω πεφανερῶσθαι τὴν τῶν ἁγίων ὁδόν, ἔτι
τῆς πρώτης σκηνῆς ἐχούσης στάσιν.
9 Ἥτις παραβολὴ εἰς τὸν καιρὸν τὸν ἐνε-
στηκότα, καθ' ὃν δῶρά τε καὶ θυσίαι προσφέ-
ρονται, μὴ δυνάμεναι κατὰ συνείδησιν τε-
λειῶσαι τὸν λατρεύοντα.
10 Μόνον ἐπὶ βρώμασι καὶ πόμασι, καὶ
διαφόροις βαπτισμοῖς, καὶ δικαιώμασι σαρ-
κός, μέχρι καιροῦ διορθώσεως ἐπικείμενα·

11 Χριστὸς δὲ παραγενόμενος ἀρχιερεὺς τῶν μελλόντων ἀγαθῶν, διὰ τῆς μείζονος καὶ τελειοτέρας σκηνῆς, οὐ χειροποιήτου, τουτέστιν, οὐ ταύτης τῆς κτίσεως,

12 Οὐδὲ δι᾽ αἵματος τράγων καὶ μόσχων, διὰ δὲ τοῦ ἰδίου αἵματος εἰσῆλθεν ἐφάπαξ εἰς τὰ ἅγια, αἰωνίαν λύτρωσιν εὑράμενος.

13 Εἰ γὰρ τὸ αἷμα ταύρων καὶ τράγων, καὶ σποδὸς δαμάλεως ῥαντίζουσα τοὺς κεκοινωμένους, ἁγιάζει πρὸς τὴν τῆς σαρκὸς καθαρότητα,

14 Πόσῳ μᾶλλον τὸ αἷμα τοῦ Χριστοῦ, ὃς διὰ Πνεύματος αἰωνίου ἑαυτὸν προσήνεγκεν ἄμωμον τῷ Θεῷ, καθαριεῖ τὴν συνείδησιν ὑμῶν ἀπὸ νεκρῶν ἔργων, εἰς τὸ λατρεύειν Θεῷ ζῶντι;

15 Καὶ διὰ τοῦτο διαθήκης καινῆς μεσίτης ἐστὶν, ὅπως θανάτου γενομένου, εἰς ἀπολύτρωσιν τῶν ἐπὶ τῇ πρώτῃ διαθήκῃ παραβάσεων, τὴν ἐπαγγελίαν λάβωσιν οἱ κεκλημένοι τῆς αἰωνίου κληρονομίας.

16 Ὅπου γὰρ διαθήκη, θάνατον ἀνάγκη φέρεσθαι τοῦ διαθεμένου.

17 Διαθήκη γὰρ ἐπὶ νεκροῖς βεβαία, ἐπεὶ μήποτε ἰσχύει ὅτε ζῇ ὁ διαθέμενος.

18 Ὅθεν οὐδ᾽ ἡ πρώτη χωρὶς αἵματος ἐγκεκαίνισται·

19 Λαληθείσης γὰρ πάσης ἐντολῆς κατὰ νόμον ὑπὸ Μωϋσέως παντὶ τῷ λαῷ, λαβὼν τὸ αἷμα τῶν μόσχων καὶ τράγων μετὰ ὕδατος καὶ ἐρίου κοκκίνου καὶ ὑσσώπου, αὐτό τε τὸ βιβλίον καὶ πάντα τὸν λαὸν ἐρράντισε,

20 Λέγων· Τοῦτο τὸ αἷμα τῆς διαθήκης, ἧς ἐνετείλατο πρὸς ὑμᾶς ὁ Θεός.

21 Καὶ

21 Καὶ τὴν σκηνὴν δὲ καὶ πάντα τὰ σκεύη
τῆς λειτουργίας τῷ αἵματι ὁμοίως ἐῤῥάντισε.
22 Καὶ σχεδὸν ἐν αἵματι πάντα καθαρί-
ζεται κατὰ τὸν νόμον, καὶ χωρὶς αἱματεκχυ-
σίας οὐ γίνεται ἄφεσις.
23 Ἀνάγκη οὖν τὰ μὲν ὑποδείγματα τῶν
ἐν τοῖς οὐρανοῖς, τούτοις καθαρίζεσθαι. αὐ-
τὰ δὲ τὰ ἐπουράνια κρείττοσι θυσίαις παρὰ
ταύτας.
24 Οὐ γὰρ εἰς χειροποίητα ἅγια εἰσῆλ-
θεν ὁ Χριστὸς, ἀντίτυπα τῶν ἀληθινῶν,
ἀλλ᾽ εἰς αὐτὸν τὸν οὐρανὸν, νῦν ἐμφανισθῆναι
τῷ προσώπῳ τοῦ Θεοῦ ὑπὲρ ἡμῶν·
25 Οὐδ᾽ ἵνα πολλάκις προσφέρῃ ἑαυτὸν,
ὥσπερ ὁ ἀρχιερεὺς εἰσέρχεται εἰς τὰ ἅγια
κατ᾽ ἐνιαυτὸν ἐν αἵματι ἀλλοτρίῳ.
26 (Ἐπεὶ ἔδει αὐτὸν πολλάκις παθεῖν
ἀπὸ καταβολῆς κόσμου) νῦν δὲ ἅπαξ ἐπὶ
συντελείᾳ τῶν αἰώνων, εἰς ἀθέτησιν ἁμαρ-
τίας, διὰ τῆς θυσίας αὐτοῦ πεφανέρωται.
27 Καὶ καθ᾽ ὅσον ἀπόκειται τοῖς ἀνθρώ-
ποις ἅπαξ ἀποθανεῖν, μετὰ δὲ τοῦτο κρίσις.
28 Οὕτως ὁ Χριστὸς ἅπαξ προσενεχθεὶς
εἰς τὸ πολλῶν ἀνενεγκεῖν ἁμαρτίας, ἐκ δευ-
τέρου χωρὶς ἁμαρτίας ὀφθήσεται τοῖς αὐτὸν
ἀπεκδεχομένοις εἰς σωτηρίαν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ι. 10.

1 ΣΚιὰν γὰρ ἔχων ὁ νόμος τῶν μελλόν-
των ἀγαθῶν, οὐκ αὐτὴν τὴν εἰκό-
να τῶν πραγμάτων, κατ᾽ ἐνιαυτὸν ταῖς αὐ-
ταῖς θυσίαις ἃς προσφέρουσιν εἰς τὸ διηνε-
κὲς, οὐδέποτε δύναται τοὺς προσερχομένους
τελειῶσαι.

2 Ἐπεὶ οὐκ ἂν ἐπαύσαντο προσφερόμεναι, διὰ τὸ μηδεμίαν ἔχειν ἔτι συνείδησιν ἁμαρτιῶν τοὺς λατρεύοντας, ἅπαξ κεκαθαρμένους.
3 Ἀλλ' ἐν αὐταῖς ἀνάμνησις ἁμαρτιῶν κατ' ἐνιαυτόν.
4 Ἀδύνατον γὰρ αἷμα ταύρων καὶ τράγων ἀφαιρεῖν ἁμαρτίας·
5 Διὸ εἰσερχόμενος εἰς τὸν κόσμον, λέγει· Θυσίαν καὶ προσφορὰν οὐκ ἠθέλησας, σῶμα δὲ κατηρτίσω μοι.
6 Ὁλοκαυτώματα καὶ περὶ ἁμαρτίας οὐκ εὐδόκησας.
7 Τότε εἶπον· Ἰδοὺ ἥκω (ἐν κεφαλίδι βιβλίου γέγραπται περὶ ἐμοῦ) τοῦ ποιῆσαι, ὁ Θεὸς, τὸ θέλημά σου·
8 Ἀνώτερον λέγων· Ὅτι θυσίαν καὶ προσφορὰν καὶ ὁλοκαυτώματα καὶ περὶ ἁμαρτίας οὐκ ἠθέλησας, οὐδὲ εὐδόκησας· (αἵτινες κατὰ τὸν νόμον προσφέρονται.)
9 Τότε εἴρηκεν· Ἰδοὺ ἥκω τοῦ ποιῆσαι, ὁ Θεὸς, τὸ θέλημά σου· Ἀναιρεῖ τὸ πρῶτον, ἵνα τὸ δεύτερον στήσῃ.
10 Ἐν ᾧ θελήματι ἡγιασμένοι ἐσμὲν διὰ τῆς προσφορᾶς τοῦ σώματος τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐφάπαξ.
11 Καὶ πᾶς μὲν ἱερεὺς ἕστηκε καθ' ἡμέραν λειτουργῶν, καὶ τὰς αὐτὰς πολλάκις προσφέρων θυσίας, αἵτινες οὐδέποτε δύνανται περιελεῖν ἁμαρτίας.
12 Αὐτὸς δὲ μίαν ὑπὲρ ἁμαρτιῶν προσενέγκας θυσίαν, εἰς τὸ διηνεκὲς ἐκάθισεν ἐν δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ·
13 Τὸ λοιπὸν ἐκδεχόμενος ἕως τεθῶσιν οἱ ἐχθροὶ αὐτοῦ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν αὐτοῦ.

14 Μιᾷ

14 Μιᾷ γὰρ προσφορᾷ τετελείωκεν εἰς
τὸ διηνεκὲς τοὺς ἁγιαζομένους.
15 Μαρτυρεῖ δὲ ἡμῖν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ ἅ-
γιον· μετὰ γὰρ τὸ προειρηκέναι,
16 Αὕτη ἡ διαθήκη ἣν διαθήσομαι πρὸς
αὐτοὺς μετὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας, λέγει Κύ-
ριος, διδοὺς νόμους μου ἐπὶ καρδίας αὐτῶν, καὶ
ἐπὶ τῶν διανοιῶν αὐτῶν ἐπιγράψω αὐτούς.
17 Καὶ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν καὶ τῶν ἀνο-
μιῶν αὐτῶν οὐ μὴ μνησθῶ ἔτι.
18 Ὅπου δὲ ἄφεσις τούτων, οὐκ ἔτι προσ-
φορὰ περὶ ἁμαρτίας.
19 Ἔχοντες οὖν, ἀδελφοὶ, παῤῥησίαν εἰς
τὴν εἴσοδον τῶν ἁγίων ἐν τῷ αἵματι Ἰησοῦ,
20 Ἣν ἐνεκαίνισεν ἡμῖν ὁδὸν πρόσφατον
καὶ ζῶσαν, διὰ τοῦ καταπετάσματος, τουτέστι
τῆς σαρκὸς αὐτοῦ·
21 Καὶ ἱερέα μέγαν ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ·
22 Προσερχώμεθα μετὰ ἀληθινῆς καρδίας
ἐν πληροφορίᾳ πίστεως, ἐῤῥαντισμένοι τὰς
καρδίας ἀπὸ συνειδήσεως πονηρᾶς.
23 Καὶ λελουμένοι τὸ σῶμα ὕδατι καθα-
ρῷ, κατέχωμεν τὴν ὁμολογίαν τῆς ἐλπίδος
ἀκλινῆ· (πιστὸς γὰρ ὁ ἐπαγγειλάμενος·)
24 Καὶ κατανοῶμεν ἀλλήλους εἰς παρο-
ξυσμὸν ἀγάπης καὶ καλῶν ἔργων·
25 Μὴ ἐγκαταλείποντες τὴν ἐπισυναγω-
γὴν ἑαυτῶν, καθὼς ἔθος τισὶν, ἀλλὰ πα-
ρακαλοῦντες· καὶ τοσούτῳ μᾶλλον, ὅσῳ βλέ-
πετε ἐγγίζουσαν τὴν ἡμέραν.
26 Ἑκουσίως γὰρ ἁμαρτανόντων ἡμῶν με-
τὰ τὸ λαβεῖν τὴν ἐπίγνωσιν τῆς ἀληθείας,
οὐκ ἔτι περὶ ἁμαρτιῶν ἀπολείπεται θυσία·
27 Φοβερὰ δέ τις ἐκδοχὴ κρίσεως, καὶ

πυρὸς ζῆλος, ἐσθίειν μέλλοντος τοὺς ὑπεναντίους.

28 Ἀθετήσας τὶς νόμον Μωσέως, χωρὶς οἰκτιρμῶν ἐπὶ δυσὶν ἢ τρισὶ μάρτυσιν ἀποθνήσκει·

29 Πόσῳ (δοκεῖτε) χείρονος ἀξιωθήσεται τιμωρίας ὁ τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ καταπατήσας, καὶ τὸ αἷμα τῆς διαθήκης κοινὸν ἡγησάμενος ἐν ᾧ ἡγιάσθη, καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς χάριτος ἐνυβρίσας;

30 Οἴδαμεν γὰρ τὸν εἰπόντα· Ἐμοὶ ἐκδίκησις, ἐγὼ ἀνταποδώσω, λέγει Κύριος. Καὶ πάλιν· Κύριος κρινεῖ τὸν λαὸν αὐτοῦ.

31 Φοβερὸν τὸ ἐμπεσεῖν εἰς χεῖρας Θεοῦ ζῶντος.

32 Ἀναμιμνήσκεσθε δὲ τὰς πρότερον ἡμέρας, ἐν αἷς φωτισθέντες, πολλὴν ἄθλησιν ὑπεμείνατε παθημάτων.

33 Τοῦτο μὲν, ὀνειδισμοῖς τε καὶ θλίψεσι θεατριζόμενοι· τοῦτο δὲ, κοινωνοὶ τῶν οὕτως ἀναστρεφομένων γενηθέντες·

34 Καὶ γὰρ τοῖς δεσμοῖς μου συνεπαθήσατε, καὶ τὴν ἁρπαγὴν τῶν ὑπαρχόντων ὑμῶν μετὰ χαρᾶς προσεδέξασθε, γινώσκοντες ἔχειν ἐν ἑαυτοῖς κρείττονα ὕπαρξιν ἐν οὐρανοῖς, καὶ μένουσαν.

35 Μὴ ἀποβάλητε οὖν τὴν παῤῥησίαν ὑμῶν, ἥτις ἔχει μισθαποδοσίαν μεγάλην.

36 Ὑπομονῆς γὰρ ἔχετε χρείαν· ἵνα τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ ποιήσαντες, κομίσησθε τὴν ἐπαγγελίαν·

37 Ἔτι γὰρ μικρὸν ὅσον ὅσον, ὁ ἐρχόμενος ἥξει, καὶ οὐ χρονιεῖ.

38 Ὁ δὲ δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται· καὶ ἐὰν ὑποστείληται, οὐκ εὐδοκεῖ ἡ ψυχή μου ἐν αὐτῷ.

39 Ἡμεῖς

39 Η'μεῖς δὲ οὐκ ἐσμὲν ὑποστολῆς εἰς ἀπώ-
λειαν, ἀλλὰ πίστεως εἰς περιποίησιν ψυχῆς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΑ'. 11.

1 Ε"Στι δὲ πίστις, ἐλπιζομένων ὑ-
πόστασις, πραγμάτων ἔλεγχος οὐ
βλεπομένων.
2 Ε'ν ταύτῃ γὰρ ἐμαρτυρήθησαν οἱ πρεσ-
βύτεροι.
3 Πίστει νοοῦμεν κατηρτίσθαι τοὺς αἰῶνας
ῥήματι Θεοῦ, εἰς τὸ μὴ ἐκ φαινομένων τὰ
βλεπόμενα γεγονέναι.
4 Πίστει πλείονα θυσίαν Α"βελ παρὰ
Κάϊν προσήνεγκε τῷ Θεῷ, δι' ἧς ἐμαρτυ-
ρήθη εἶναι δίκαιος, μαρτυροῦντος ἐπὶ τοῖς δώ-
ροις αὐτοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ δι' αὐτῆς ἀποθανὼν
ἔτι λαλεῖται.
5 Πίστει Ε'νὼχ μετετέθη τοῦ μὴ ἰδεῖν θά-
νατον· καὶ οὐχ εὑρίσκετο, διότι μετέθηκεν αὐ-
τὸν ὁ Θεός· πρὸ γὰρ τῆς μεταθέσεως αὐτοῦ
μεμαρτύρηται εὐηρεστηκέναι τῷ Θεῷ·
6 Χωρὶς δὲ πίστεως ἀδύνατον εὐαρεστῆσαι·
πιστεῦσαι γὰρ δεῖ τὸν προσερχόμενον τῷ Θεῷ,
ὅτι ἐστὶ, καὶ τοῖς ἐκζητοῦσιν αὐτὸν μισθαπο-
δότης γίνεται.
7 Πίστει χρηματισθεὶς Νῶε περὶ τῶν μη-
δέπω βλεπομένων, εὐλαβηθεὶς κατεσκεύα-
σε κιβωτὸν εἰς σωτηρίαν τοῦ οἴκου αὐτοῦ. δι'
ἧς κατέκρινε τὸν κόσμον, καὶ τῆς κατὰ πίστιν
δικαιοσύνης ἐγένετο κληρονόμος.
8 Πίστει, καλούμενος Α'βραὰμ ὑπήκουσεν
ἐξελθεῖν εἰς τὸν τόπον ὃν ἤμελλε λαμβάνειν
εἰς κληρονομίαν, καὶ ἐξῆλθε, μὴ ἐπιστάμενος
ποῦ ἔρχεται.

9 Πίστει παρῴκησεν εἰς τὴν γῆν τῆς ἐπαγγελίας ὡς ἀλλοτρίαν, ἐν σκηναῖς κατοικήσας μετὰ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ τῶν συγκληρονόμων τῆς ἐπαγγελίας τῆς αὐτῆς·

10 Ἐξεδέχετο γὰρ τὴν τοὺς θεμελίους ἔχουσαν πόλιν, ἧς τεχνίτης καὶ δημιουργὸς ὁ Θεός.

11 Πίστει καὶ αὐτὴ Σάῤῥα δύναμιν εἰς καταβολὴν σπέρματος ἔλαβε, καὶ παρὰ καιρὸν ἡλικίας ἔτεκεν, ἐπεὶ πιστὸν ἡγήσατο τὸν ἐπαγγειλάμενον.

12 Διὸ καὶ ἀφ' ἑνὸς ἐγεννήθησαν, καὶ ταῦτα νενεκρωμένου, καθὼς τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ τῷ πλήθει, καὶ ὡσεὶ ἄμμος ἡ παρὰ τὸ χεῖλος τῆς θαλάσσης ἡ ἀναρίθμητος.

13 Κατὰ πίστιν ἀπέθανον οὗτοι πάντες, μὴ λαβόντες τὰς ἐπαγγελίας, ἀλλὰ πόῤῥωθεν αὐτὰς ἰδόντες, καὶ πεισθέντες, καὶ ἀσπασάμενοι, καὶ ὁμολογήσαντες ὅτι ξένοι καὶ παρεπίδημοί εἰσιν ἐπὶ τῆς γῆς.

14 Οἱ γὰρ τοιαῦτα λέγοντες, ἐμφανίζουσιν ὅτι πατρίδα ἐπιζητοῦσι.

15 Καὶ εἰ μὲν ἐκείνης ἐμνημόνευον ἀφ' ἧς ἐξῆλθον, εἶχον ἂν καιρὸν ἀνακάμψαι·

16 Νυνὶ δὲ κρείττονος ὀρέγονται, τουτέστιν, ἐπουρανίου. διὸ οὐκ ἐπαισχύνεται αὐτοὺς ὁ Θεὸς, Θεὸς ἐπικαλεῖσθαι αὐτῶν· ἡτοίμασε γὰρ αὐτοῖς πόλιν.

17 Πίστει προσενήνοχεν Ἀβραὰμ τὸν Ἰσαὰκ πειραζόμενος, καὶ τὸν μονογενῆ προσέφερεν ὁ τὰς ἐπαγγελίας ἀναδεξάμενος.

18 Πρὸς ὃν ἐλαλήθη· Ὅτι ἐν Ἰσαὰκ κληθήσεταί σοι σπέρμα·

19 Λογισάμενος ὅτι καὶ ἐκ νεκρῶν ἐγείρειν

δυνα-

δυνατὸς ὁ Θεός· ὅθεν αὐτὸν καὶ ἐν παραβο-
λῇ ἐκομίσατο.
20 Πίστει περὶ μελλόντων εὐλόγησεν Ἰ-
σαὰκ τὸν Ἰακὼβ καὶ τὸν Ἠσαῦ.
21 Πίστει Ἰακὼβ ἀποθνήσκων ἕκαστον τῶν
Υἱῶν Ἰωσὴφ εὐλόγησε· καὶ προσεκύνησεν ἐπὶ
τὸ ἄκρον τῆς ῥάβδου αὐτοῦ.
22 Πίστει Ἰωσὴφ τελευτῶν περὶ τῆς ἐξό-
δου τῶν Υἱῶν Ἰσραὴλ ἐμνημόνευσε, καὶ περὶ
τῶν ὀστέων αὐτοῦ ἐνετείλατο.
23 Πίστει Μωσῆς γεννηθεὶς ἐκρύβη τρί-
μηνον ὑπὸ τῶν πατέρων αὐτοῦ, διότι εἶδον
ἀστεῖον τὸ παιδίον· καὶ οὐκ ἐφοβήθησαν τὸ
διάταγμα τοῦ βασιλέως.
24 Πίστει Μωσῆς μέγας γενόμενος ἠρνή-
σατο λέγεσθαι Υἱὸς θυγατρὸς Φαραώ,
25 Μᾶλλον ἑλόμενος συγκακουχεῖσθαι τῷ
λαῷ τοῦ Θεοῦ, ἢ πρόσκαιρον ἔχειν ἁμαρτίας
ἀπόλαυσιν·
26 Μείζονα πλοῦτον ἡγησάμενος τῶν ἐν
Αἰγύπτῳ θησαυρῶν τὸν ὀνειδισμὸν τοῦ Χρι-
στοῦ· ἀπέβλεπε γὰρ εἰς τὴν μισθαποδοσίαν.
27 Πίστει κατέλιπεν Αἴγυπτον, μὴ φο-
βηθεὶς τὸν θυμὸν τοῦ βασιλέως· τὸν γὰρ ἀό-
ρατον ὡς ὁρῶν ἐκαρτέρησε.
28 Πίστει πεποίηκε τὸ πάσχα καὶ τὴν πρόσ-
χυσιν τοῦ αἵματος, ἵνα μὴ ὁ ὀλοθρεύων τὰ
πρωτότοκα, θίγῃ αὐτῶν.
29 Πίστει διέβησαν τὴν ἐρυθρὰν θάλασ-
σαν ὡς διὰ ξηρᾶς· ἧς πεῖραν λαβόντες οἱ
Αἰγύπτιοι κατεπόθησαν.
30 Πίστει τὰ τείχη Ἱεριχὼ ἔπεσε, κυ-
κλωθέντα ἐπὶ ἑπτὰ ἡμέρας.
31 Πίστει Ῥαὰβ ἡ πόρνη οὐ συναπώλετο

τοῖς ἀπειθήσασι, δεξαμένη τοὺς κατασκόπους
μετ' εἰρήνης.
32 Καὶ τί ἔτι λέγω; Ἐπιλείψει γάρ με
διηγούμενον ὁ χρόνος περὶ Γεδεὼν, Βαράκ τε
καὶ Σαμψὼν, καὶ Ἰεφθάε, Δαβίδ τε καὶ Σα-
μουὴλ, καὶ τῶν Προφητῶν·
33 Οἳ διὰ πίστεως κατηγωνίσαντο βασι-
λείας, εἰργάσαντο δικαιοσύνην, ἐπέτυχον
ἐπαγγελιῶν, ἔφραξαν στόματα λεόντων,
34 Ἔσβεσαν δύναμιν πυρὸς, ἔφυγον στό-
ματα μαχαίρας, ἐνεδυναμώθησαν ἀπὸ ἀ-
σθενείας, ἐγενήθησαν ἰσχυροὶ ἐν πολέμῳ,
παρεμβολὰς ἔκλιναν ἀλλοτρίων·
35 Ἔλαβον γυναῖκες ἐξ ἀναστάσεως τοὺς
νεκροὺς αὐτῶν· ἄλλοι δὲ ἐτυμπανίσθησαν, οὐ
προσδεξάμενοι τὴν ἀπολύτρωσιν, ἵνα κρείτ-
τονος ἀναστάσεως τύχωσιν·
36 Ἕτεροι δὲ ἐμπαιγμῶν καὶ μαστίγων
πεῖραν ἔλαβον, ἔτι δὲ δεσμῶν καὶ φυλακῆς·
37 Ἐλιθάσθησαν, ἐπρίσθησαν, ἐπειρά-
σθησαν, ἐν φόνῳ μαχαίρας ἀπέθανον· πε-
ριῆλθον ἐν μηλωταῖς, ἐν αἰγείοις δέρμασιν,
ὑστερούμενοι, θλιβόμενοι, κακουχούμενοι·
38 (Ὧν οὐκ ἦν ἄξιος ὁ κόσμος) ἐν ἐρη-
μίαις πλανώμενοι καὶ ὄρεσι καὶ σπηλαίοις καὶ
ταῖς ὀπαῖς τῆς γῆς.
39 Καὶ οὗτοι πάντες μαρτυρηθέντες διὰ
τῆς πίστεως, οὐκ ἐκομίσαντο τὴν ἐπαγγελίαν·
40 Τοῦ Θεοῦ περὶ ἡμῶν κρεῖττόν τι προβλε-
ψαμένου, ἵνα μὴ χωρὶς ἡμῶν τελειωθῶσι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

1 Τοιγαροῦν καὶ ἡμεῖς τοσοῦτον ἔχοντες
περικείμενον ἡμῖν νέφος μαρτύ-
ρων,

ρων, ὄγκον ἀποθέμενοι πάντα, καὶ τὴν εὐ-
περίστατον ἁμαρτίαν, δι᾽ ὑπομονῆς τρέχω-
μεν τὸν προκείμενον ἡμῖν ἀγῶνα,
2 Ἀφορῶντες εἰς τὸν τῆς πίστεως ἀρχηγὸν
καὶ τελειωτὴν Ἰησοῦν, ὃς ἀντὶ τῆς προκειμέ-
νης αὐτῷ χαρᾶς, ὑπέμεινε σταυρὸν, αἰσχύ-
νης καταφρονήσας, ἐν δεξιᾷ τε τοῦ θρόνου τοῦ
Θεοῦ ἐκάθισεν.
3 Ἀναλογίσασθε γὰρ τὸν τοιαύτην ὑπο-
μεμενηκότα ὑπὸ τῶν ἁμαρτωλῶν εἰς αὐτὸν
ἀντιλογίαν, ἵνα μὴ κάμητε, ταῖς ψυχαῖς
ὑμῶν ἐκλυόμενοι.
4 Οὔπω μέχρις αἵματος ἀντικατέστητε,
πρὸς τὴν ἁμαρτίαν ἀνταγωνιζόμενοι·
5 Καὶ ἐκλέλησθε τῆς παρακλήσεως, ἥτις
ὑμῖν ὡς Υἱοῖς διαλέγεται· Υἱέ μου, μὴ
ὀλιγώρει παιδείας Κυρίου, μηδὲ ἐκλύου ὑπ᾽
αὐτοῦ ἐλεγχόμενος·
6 Ὃν γὰρ ἀγαπᾷ Κύριος, παιδεύει·
μαστιγοῖ δὲ πάντα Υἱὸν ὃν παραδέχεται.
7 Εἰ παιδείαν ὑπομένετε, ὡς Υἱοῖς ὑ-
μῖν προσφέρεται ὁ Θεός· τίς γάρ ἐστιν Υἱὸς
ὃν οὐ παιδεύει Πατήρ;
8 Εἰ δὲ χωρίς ἐστε παιδείας, ἧς μέτοχοι
γεγόνασι πάντες, ἄρα νόθοι ἐστὲ καὶ οὐχ
Υἱοί.
9 Εἰ δὲ τοὺς μὲν τῆς σαρκὸς ἡμῶν πατέ-
ρας εἴχομεν παιδευτὰς, καὶ ἐνετρεπόμεθα· οὐ
πολλῷ μᾶλλον ὑποταγησόμεθα τῷ Πατρὶ
τῶν πνευμάτων, καὶ ζήσομεν;
10 Οἱ μὲν γὰρ πρὸς ὀλίγας ἡμέρας,
κατὰ τὸ δοκοῦν αὐτοῖς, ἐπαίδευον· ὁ δὲ ἐπὶ
τὸ συμφέρον, εἰς τὸ μεταλαβεῖν τῆς ἁγιό-
τητος αὐτοῦ.

11 Πᾶσα δὲ παιδεία πρὸς μὲν τὸ παρὸν
οὐ δοκεῖ χαρᾶς εἶναι, ἀλλὰ λύπης· ὕστερον
δὲ καρπὸν εἰρηνικὸν τοῖς δι' αὐτῆς γεγυμνασ-
μένοις ἀποδίδωσι δικαιοσύνης.
12 Διὸ τὰς παρειμένας χεῖρας, καὶ τὰ πα-
ραλελυμένα γόνατα ἀνορθώσατε·
13 Καὶ τροχιὰς ὀρθὰς ποιήσατε τοῖς πο-
σὶν ὑμῶν, ἵνα μὴ τὸ χωλὸν ἐκτραπῇ, ἰα-
θῇ δὲ μᾶλλον.
14 Εἰρήνην διώκετε μετὰ πάντων, καὶ
τὸν ἁγιασμὸν, οὗ χωρὶς οὐδεὶς ὄψεται τὸν
Κύριον.
15 Ἐπισκοποῦντες μή τις ὑστερῶν ἀπὸ τῆς
χάριτος τοῦ Θεοῦ, μή τις ῥίζα πικρίας ἄνω
φύουσα ἐνοχλῇ, καὶ διὰ ταύτης μιανθῶσι
πολλοί.
16 Μή τις πόρνος, ἢ βέβηλος, ὡς Ἠ-
σαῦ, ὃς ἀντὶ βρώσεως μιᾶς ἀπέδοτο τὰ
πρωτοτόκια αὐτοῦ·
17 Ἴστε γὰρ ὅτι καὶ μετέπειτα θέλων κλη-
ρονομῆσαι τὴν εὐλογίαν, ἀπεδοκιμάσθη·
μετανοίας γὰρ τόπον οὐχ εὗρε, καίπερ μετὰ
δακρύων ἐκζητήσας αὐτήν.
18 Οὐ γὰρ προσεληλύθατε ψηλαφημένῳ
ὄρει, καὶ κεκαυμένῳ πυρὶ, καὶ γνόφῳ, καὶ σκό-
τῳ, καὶ θυέλλῃ,
19 Καὶ σάλπιγγος ἤχῳ, καὶ φωνῇ ῥημά-
των, ἧς οἱ ἀκούσαντες παρῃτήσαντο μὴ προ-
στεθῆναι αὐτοῖς λόγον.
20 (Οὐκ ἔφερον γὰρ τὸ διαστελλόμενον.
Κἂν θηρίον θίγῃ τοῦ ὄρους, λιθοβοληθήσε-
ται, ἢ βολίδι κατατοξευθήσεται.
21 Καὶ οὕτω φοβερὸν ἦν τὸ φανταζόμενον,
Μωσῆς εἶπεν· Ἔκφοβός εἰμι καὶ ἔντρομος.)

22 Ἀλλὰ προσεληλύθατε Σιὼν ὄρει, καὶ
πόλει Θεοῦ ζῶντος, Ἱερουσαλὴμ ἐπουρανίῳ,
καὶ μυριάσιν ἀγγέλων,
23 Πανηγύρει καὶ ἐκκλησίᾳ πρωτοτόκων ἐν
οὐρανοῖς ἀπογεγραμμένων, καὶ κριτῇ Θεῷ πάν-
των, καὶ πνεύμασι δικαίων τετελειωμένων,
24 Καὶ διαθήκης νέας μεσίτῃ Ἰησοῦ, καὶ
αἵματι ῥαντισμοῦ, κρείττονα λαλοῦντι παρὰ
τὸν Ἄβελ.
25 Βλέπετε μὴ παραιτήσησθε τὸν λαλοῦντα.
εἰ γὰρ ἐκεῖνοι οὐκ ἔφυγον, τὸν ἐπὶ τῆς γῆς
παραιτησάμενοι χρηματίζοντα, πολλῷ μᾶλ-
λον ἡμεῖς οἱ τὸν ἀπ' οὐρανῶν ἀποστρεφόμενοι.
26 Οὗ ἡ φωνὴ τὴν γῆν ἐσάλευσε τότε·
νῦν δὲ ἐπήγγελται, λέγων· Ἔτι ἅπαξ ἐγὼ
σείω οὐ μόνον τὴν γῆν, ἀλλὰ καὶ τὸν οὐρανόν.
27 Τὸ δὲ, ἔτι ἅπαξ, δηλοῖ τῶν σαλευο-
μένων τὴν μετάθεσιν, ὡς πεποιημένων, ἵνα
μείνῃ τὰ μὴ σαλευόμενα.
28 Διὸ βασιλείαν ἀσάλευτον παραλαμ-
βάνοντες, ἔχωμεν χάριν, δι' ἧς λατρεύω-
μεν εὐαρέστως τῷ Θεῷ, μετὰ αἰδοῦς καὶ εὐ-
λαβείας.
29 Καὶ γὰρ ὁ Θεὸς ἡμῶν πῦρ καταναλίσκον.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΓ'. 13.

1 Ἡ Φιλαδελφία μενέτω.
2 Τῆς φιλοξενίας μὴ ἐπιλαν-
θάνεσθε· διὰ ταύτης γὰρ ἔλαθόν τινες ξενί-
σαντες ἀγγέλους.
3 Μιμνήσκεσθε τῶν δεσμίων, ὡς συνδε-
δεμένοι· τῶν κακουχουμένων, ὡς καὶ αὐτοὶ ὄν-
τες ἐν σώματι.

4 Τίμιος ὁ γάμος ἐν πᾶσι, καὶ ἡ κοίτη
ἀμίαντος· πόρνους δὲ καὶ μοιχοὺς κρινεῖ ὁ
Θεός.
5 Ἀφιλάργυρος ὁ τρόπος· ἀρκούμενοι τοῖς
παροῦσιν· αὐτὸς γὰρ εἴρηκεν· Οὐ μή σε ἀνῶ,
οὐδ᾽ οὐ μή σε ἐγκαταλίπω·
6 Ὥστε θαῤῥοῦντας ἡμᾶς λέγειν· Κύριος
ἐμοὶ βοηθὸς, καὶ οὐ φοβηθήσομαι τί ποιήσει
μοι ἄνθρωπος.
7 Μνημονεύετε τῶν ἡγουμένων ὑμῶν, οἵ-
τινες ἐλάλησαν ὑμῖν τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ· ὧν
ἀναθεωροῦντες τὴν ἔκβασιν τῆς ἀναστροφῆς,
μιμεῖσθε τὴν πίστιν.
8 Ἰησοῦς Χριστὸς χθὲς καὶ σήμερον ὁ αὐτὸς,
καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας.
9 Διδαχαῖς ποικίλαις καὶ ξέναις μὴ περι-
φέρεσθε. καλὸν γὰρ χάριτι βεβαιοῦσθαι τὴν
καρδίαν, οὐ βρώμασιν, ἐν οἷς οὐκ ὠφελήθη-
σαν οἱ περιπατήσαντες.
10 Ἔχομεν θυσιαστήριον, ἐξ οὗ φαγεῖν οὐκ
ἔχουσιν ἐξουσίαν οἱ τῇ σκηνῇ λατρεύοντες.
11 Ὧν γὰρ εἰσφέρεται ζώων τὸ αἷμα πε-
ρὶ ἁμαρτίας εἰς τὰ ἅγια διὰ τοῦ ἀρχιερέως,
τούτων τὰ σώματα κατακαίεται ἔξω τῆς πα-
ρεμβολῆς·
12 Διὸ καὶ Ἰησοῦς, ἵνα ἁγιάσῃ διὰ τοῦ ἰ-
δίου αἵματος τὸν λαὸν, ἔξω τῆς πύλης ἔπαθε.
13 Τοίνυν ἐξερχώμεθα πρὸς αὐτὸν ἔξω τῆς
παρεμβολῆς, τὸν ὀνειδισμὸν αὐτοῦ φέροντες·
14 Οὐ γὰρ ἔχομεν ὧδε μένουσαν πόλιν,
ἀλλὰ τὴν μέλλουσαν ἐπιζητοῦμεν.
15 Δι᾽ αὐτοῦ οὖν ἀναφέρωμεν θυσίαν αἰνέ-
σεως διαπαντὸς τῷ Θεῷ, τουτέστι καρπὸν χει-
λέων ὁμολογούντων τῷ ὀνόματι αὐτοῦ.

16 Τῆς

16 Τῆς δὲ εὐποΐας καὶ κοινωνίας μὴ ἐπι-
λανθάνεσθε· τοιαύταις γὰρ θυσίαις εὐαρε-
στεῖται ὁ Θεός.

17 Πείθεσθε τοῖς ἡγουμένοις ὑμῶν, καὶ ὑ-
πείκετε· αὐτοὶ γὰρ ἀγρυπνοῦσιν ὑπὲρ τῶν ψυ-
χῶν ὑμῶν, ὡς λόγον ἀποδώσοντες· ἵνα με-
τὰ χαρᾶς τοῦτο ποιῶσι, καὶ μὴ στενάζοντες· ἀ-
λυσιτελὲς γὰρ ὑμῖν τοῦτο.

18 Προσεύχεσθε περὶ ἡμῶν· πεποίθαμεν
γὰρ ὅτι καλὴν συνείδησιν ἔχωμεν, ἐν πᾶσι
καλῶς θέλοντες ἀναστρέφεσθαι.

19 Περισσοτέρως δὲ παρακαλῶ τοῦτο ποιῆ-
σαι, ἵνα τάχιον ἀποκατασταθῶ ὑμῖν.

20 Ὁ δὲ Θεὸς τῆς εἰρήνης, ὁ ἀναγαγὼν
ἐκ νεκρῶν τὸν ποιμένα τῶν προβάτων τὸν μέ-
γαν ἐν αἵματι διαθήκης αἰωνίου, τὸν Κύριον
ἡμῶν Ἰησοῦν,

21 Καταρτίσαι ὑμᾶς ἐν παντὶ ἔργῳ ἀ-
γαθῷ, εἰς τὸ ποιῆσαι τὸ θέλημα αὐτοῦ,
ποιῶν ἐν ὑμῖν τὸ εὐάρεστον ἐνώπιον αὐτοῦ,
διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ· ᾧ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας
τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

22 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί, ἀνέ-
χεσθε τοῦ λόγου τῆς παρακλήσεως· καὶ γὰρ διὰ
βραχέων ἐπέστειλα ὑμῖν.

23 Γινώσκετε τὸν ἀδελφὸν Τιμόθεον ἀ-
πολελυμένον, μεθ' οὗ (ἐὰν τάχιον ἔρχηται)
ὄψομαι ὑμᾶς.

24 Ἀσπάσασθε πάντας τοὺς ἡγουμένους ὑ-
μῶν καὶ πάντας τοὺς ἁγίους. Ἀσπάζονται ὑ-
μᾶς οἱ ἀπὸ τῆς Ἰταλίας.

25 Ἡ χάρις μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Ἑβραίους ἐγράφη ἀπὸ τῆς Ἰταλίας
διὰ Τιμοθέου.

ΙΑΚΩΒΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

ΚΑΘΟΛΙΚΗ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΙΑΚΩΒΟΣ Θεοῦ καὶ Κυρίου Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ δοῦλος, ταῖς δώδεκα
φυλαῖς ταῖς ἐν τῇ διασπορᾷ, χαίρειν.
2 Πᾶσαν χαρὰν ἡγήσασθε, ἀδελφοί μου,
ὅταν πειρασμοῖς περιπέσητε ποικίλοις·
3 Γινώσκοντες ὅτι τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆς
πίστεως κατεργάζεται ὑπομονήν·
4 Ἡ δὲ ὑπομονὴ ἔργον τέλειον ἐχέτω,
ἵνα ἦτε τέλειοι καὶ ὁλόκληροι, ἐν μηδενὶ
λειπόμενοι.
5 Εἰ δέ τις ὑμῶν λείπεται σοφίας, αἰ-
τείτω παρὰ τοῦ διδόντος Θεοῦ πᾶσιν ἁπλῶς,
καὶ μὴ ὀνειδίζοντος, καὶ δοθήσεται αὐτῷ.
6 Αἰτείτω δὲ ἐν πίστει, μηδὲν διακρινό-
μενος. ὁ γὰρ διακρινόμενος ἔοικε κλύδωνι
θαλάσσης ἀνεμιζομένῳ καὶ ῥιπιζομένῳ.
7 Μὴ γὰρ οἰέσθω ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος ὅτι
λήψεταί τι παρὰ τοῦ Κυρίου.
8 Ἀνὴρ δίψυχος, ἀκατάστατος ἐν πά-
σαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ.
9 Καυχάσθω δὲ ὁ ἀδελφὸς ὁ ταπεινὸς ἐν
τῷ ὕψει αὐτοῦ.
10 Ὁ δὲ πλούσιος, ἐν τῇ ταπεινώσει αὐ-
τοῦ, ὅτι ὡς ἄνθος χόρτου παρελεύσεται·

11 Ἀνέ-

11 Ἀνέτειλε γὰρ ὁ ἥλιος σὺν τῷ καύσω-
νι, καὶ ἐξήρανε τὸν χόρτον, καὶ τὸ ἄνθος αὐ-
τοῦ ἐξέπεσε, καὶ ἡ εὐπρέπεια τοῦ προσώπου
αὐτοῦ ἀπώλετο· οὕτω καὶ ὁ πλούσιος ἐν ταῖς
πορείαις αὐτοῦ μαρανθήσεται.
12 Μακάριος ἀνὴρ, ὃς ὑπομένει πειρασ-
μόν· ὅτι δόκιμος γενόμενος λήψεται τὸν στέ-
φανον τῆς ζωῆς, ὃν ἐπηγγείλατο ὁ Κύριος
τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν.
13 Μηδεὶς πειραζόμενος λεγέτω, Ὅτι ἀ-
πὸ τοῦ Θεοῦ πειράζομαι· ὁ γὰρ Θεὸς ἀπείρα-
στός ἐστι κακῶν, πειράζει δὲ αὐτὸς οὐδένα.
14 Ἕκαστος δὲ πειράζεται, ὑπὸ τῆς ἰδίας
ἐπιθυμίας ἐξελκόμενος καὶ δελεαζόμενος.
15 Εἶτα ἡ ἐπιθυμία συλλαβοῦσα τίκτει
ἁμαρτίαν· ἡ δὲ ἁμαρτία ἀποτελεσθεῖσα ἀ-
ποκύει θάνατον.
16 Μὴ πλανᾶσθε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί.
17 Πᾶσα δόσις ἀγαθὴ, καὶ πᾶν δώρημα
τέλειον ἄνωθέν ἐστι, καταβαῖνον ἀπὸ τοῦ Πα-
τρὸς τῶν φώτων, παρ' ᾧ οὐκ ἔνι παραλλαγὴ,
ἢ τροπῆς ἀποσκίασμα.
18 Βουληθεὶς ἀπεκύησεν ἡμᾶς λόγῳ ἀ-
ληθείας, εἰς τὸ εἶναι ἡμᾶς ἀπαρχήν τινα
τῶν αὐτοῦ κτισμάτων.
19 Ὥστε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοὶ, ἔστω
πᾶς ἄνθρωπος ταχὺς εἰς τὸ ἀκοῦσαι, βρα-
δὺς εἰς τὸ λαλῆσαι, βραδὺς εἰς ὀργήν.
20 Ὀργὴ γὰρ ἀνδρὸς, δικαιοσύνην Θεοῦ
οὐ κατεργάζεται.
21 Διὸ ἀποθέμενοι πᾶσαν ῥυπαρίαν καὶ
περισσείαν κακίας, ἐν πραΰτητι δέξασθε
τὸν ἔμφυτον λόγον, τὸν δυνάμενον σῶσαι
τὰς ψυχὰς ὑμῶν.

22 Γίνεσθε δὲ ποιηταὶ λόγου, καὶ μὴ μόνον
ἀκροαταὶ, παραλογιζόμενοι ἑαυτούς.
23 Ὅτι εἴτις ἀκροατὴς λόγου ἐστὶ καὶ οὐ
ποιητὴς, οὗτος ἔοικεν ἀνδρὶ κατανοοῦντι τὸ
πρόσωπον τῆς γενέσεως αὐτοῦ ἐν ἐσόπτρῳ·
24 Κατενόησε γὰρ ἑαυτὸν, καὶ ἀπελήλυ-
θε, καὶ εὐθέως ἐπελάθετο ὁποῖος ἦν.
25 Ὁ δὲ παρακύψας εἰς νόμον τέλειον
τὸν τῆς ἐλευθερίας, καὶ παραμείνας, οὗτος
οὐκ ἀκροατὴς ἐπιλησμονῆς γενόμενος, ἀλλὰ
ποιητὴς ἔργου, οὗτος μακάριος ἐν τῇ ποιήσει
αὐτοῦ ἔσται.
26 Εἴτις δοκεῖ θρῆσκος εἶναι ἐν ὑμῖν,
μὴ χαλιναγωγῶν γλῶσσαν αὐτοῦ, ἀλλ' ἀπατῶν
καρδίαν αὐτοῦ, τούτου μάταιος ἡ θρησκεία.
27 Θρησκεία καθαρὰ καὶ ἀμίαντος παρὰ
τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ, αὕτη ἐστὶν, ἐπισκέπτεσθαι
ὀρφανοὺς καὶ χήρας ἐν τῇ θλίψει αὐτῶν, ἄ-
σπιλον ἑαυτὸν τηρεῖν ἀπὸ τοῦ κόσμου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 Ἀδελφοί μου, μὴ ἐν προσωπολη-
ψίαις ἔχετε τὴν πίστιν τοῦ Κυρίου
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ τῆς δόξης.
2 Ἐὰν γὰρ εἰσέλθῃ εἰς τὴν συναγωγὴν ὑ-
μῶν ἀνὴρ χρυσοδακτύλιος ἐν ἐσθῆτι λαμπρᾷ,
εἰσέλθῃ δὲ καὶ πτωχὸς ἐν ῥυπαρᾷ ἐσθῆτι,
3 Καὶ ἐπιβλέψητε ἐπὶ τὸν φοροῦντα τὴν ἐσθῆτα
τὴν λαμπρὰν, καὶ εἴπητε αὐτῷ. Σὺ κάθου ὧ-
δε καλῶς· καὶ τῷ πτωχῷ εἴπητε· Σὺ στῆθι
ἐκεῖ, ἢ κάθου ὧδε ὑπὸ τὸ ὑποπόδιόν μου·
4 Καὶ οὐ διεκρίθητε ἐν ἑαυτοῖς, καὶ ἐγέ-
νεσθε κριταὶ διαλογισμῶν πονηρῶν;
5 Ἀκούσατε ἀδελφοί μου ἀγαπητοὶ, οὐχ ὁ

Θεὸς

Θεὸς ἐξελέξατο τοὺς πτωχοὺς τοῦ κόσμου τούτου,
πλουσίους ἐν πίστει, καὶ κληρονόμους τῆς βασι-
λείας ἧς ἐπηγγείλατο τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν;
6 Ὑμεῖς δὲ ἠτιμάσατε τὸν πτωχόν· οὐχ
οἱ πλούσιοι καταδυναστεύουσιν ὑμῶν, καὶ αὐ-
τοὶ ἕλκουσιν ὑμᾶς εἰς κριτήρια;
7 Οὐκ αὐτοὶ βλασφημοῦσι τὸ καλὸν ὄνο-
μα τὸ ἐπικληθὲν ἐφ' ὑμᾶς;
8 Εἰ μέντοι νόμον τελεῖτε βασιλικὸν,
κατὰ τὴν γραφήν. Ἀγαπήσεις τὸν πλησίον
σου ὡς σεαυτὸν, καλῶς ποιεῖτε·
9 Εἰ δὲ προσωποληπτεῖτε, ἁμαρτίαν
ἐργάζεσθε, ἐλεγχόμενοι ὑπὸ τοῦ νόμου ὡς πα-
ραβάται.
10 Ὅστις γὰρ ὅλον τὸν νόμον τηρήσει,
πταίσει δὲ ἐν ἑνὶ, γέγονε πάντων ἔνοχος.
11 Ὁ γὰρ εἰπών· Μὴ μοιχεύσῃς, εἶπε
καὶ μὴ φονεύσῃς· εἰ δὲ οὐ μοιχεύσεις, φονεύ-
σεις δὲ, γέγονας παραβάτης νόμου.
12 Οὕτω λαλεῖτε καὶ οὕτω ποιεῖτε, ὡς διὰ
νόμου ἐλευθερίας μέλλοντες κρίνεσθαι·
13 Ἡ γὰρ κρίσις ἀνίλεως τῷ μὴ ποιήσαν-
τι ἔλεος· καὶ κατακαυχᾶται ἔλεον κρίσεως·
14 Τί τὸ ὄφελος, ἀδελφοί μου, ἐὰν πί-
στιν λέγῃ τις ἔχειν, ἔργα δὲ μὴ ἔχῃ; μὴ δύ-
ναται ἡ πίστις σῶσαι αὐτόν;
15 Ἐὰν δὲ ἀδελφὸς ἢ ἀδελφὴ γυμνοὶ ὑπάρ-
χωσι, καὶ λειπόμενοι ὦσι τῆς ἐφημέρου τροφῆς,
16 Εἴπῃ δέ τις αὐτοῖς ἐξ ὑμῶν· Ὑπά-
γετε ἐν εἰρήνῃ, θερμαίνεσθε καὶ χορτάζεσθε·
μὴ δῶτε δὲ αὐτοῖς τὰ ἐπιτήδεια τοῦ σώμα-
τος, τί τὸ ὄφελος,
17 Οὕτω καὶ ἡ πίστις, ἐὰν μὴ ἔργα ἔχῃ,
νεκρά ἐστι καθ' ἑαυτήν.

18 Ἀλλ'

18 Ἀλλ' ἐρεῖ τις· Σὺ πίστιν ἔχεις, κἀγὼ ἔργα ἔχω· δεῖξόν μοι τὴν πίστιν σου ἐκ τῶν ἔργων σου, κἀγὼ δείξω σοι ἐκ τῶν ἔργων μου τὴν πίστιν μου.

19 Σὺ πιστεύεις ὅτι ὁ Θεὸς εἷς ἐστι; καλῶς ποιεῖς· καὶ τὰ δαιμόνια πιστεύουσι, καὶ φρίσσουσι.

20 Θέλεις δὲ γνῶναι, ὦ ἄνθρωπε κενὲ, ὅτι ἡ πίστις χωρὶς τῶν ἔργων νεκρά ἐστιν;

21 Ἀβραὰμ ὁ Πατὴρ ἡμῶν οὐκ ἐξ ἔργων ἐδικαιώθη, ἀνενέγκας Ἰσαὰκ τὸν Υἱὸν αὐτοῦ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον;

22 Βλέπεις ὅτι ἡ πίστις συνήργει τοῖς ἔργοις αὐτοῦ, καὶ ἐκ τῶν ἔργων ἡ πίστις ἐτελειώθη;

23 Καὶ ἐπληρώθη ἡ γραφὴ ἡ λέγουσα· Ἐπίστευσε δὲ Ἀβραὰμ τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην, καὶ φίλος Θεοῦ ἐκλήθη.

24 Ὁρᾶτε τοίνυν ὅτι ἐξ ἔργων δικαιοῦται ἄνθρωπος, καὶ οὐκ ἐκ πίστεως μόνον;

25 Ὁμοίως δὲ καὶ Ῥαὰβ ἡ πόρνη οὐκ ἐξ ἔργων ἐδικαιώθη, ὑποδεξαμένη τοὺς ἀγγέλους, καὶ ἑτέρᾳ ὁδῷ ἐκβαλοῦσα;

26 Ὥσπερ γὰρ τὸ σῶμα χωρὶς Πνεύματος νεκρόν ἐστιν, οὕτω καὶ ἡ πίστις χωρὶς τῶν ἔργων νεκρά ἐστι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΜΗ' πολλοὶ διδάσκαλοι γίνεσθε, ἀδελφοί μου, εἰδότες ὅτι μεῖζον κρῖμα ληψόμεθα.

2 Πολλὰ γὰρ πταίομεν ἅπαντες· εἴ τις ἐν λόγῳ οὐ πταίει, οὗτος τέλειος ἀνὴρ, δυνατὸς χαλιναγωγῆσαι καὶ ὅλον τὸ σῶμα.

3 Ἰδοὺ τῶν ἵππων τοὺς χαλινοὺς εἰς τὰ στό-

ματα

ματα βάλλομεν πρὸς τὸ πείθεσθαι αὐτοὺς ἡμῖν, καὶ ὅλον τὸ σῶμα αὐτῶν μετάγομεν.
4 Ἰδοὺ, καὶ τὰ πλοῖα τηλικαῦτα ὄντα, καὶ
ὑπὸ σκληρῶν ἀνέμων ἐλαυνόμενα, μετάγεται ὑπὸ ἐλαχίστου πηδαλίου, ὅπου ἂν ἡ ὁρμὴ τοῦ εὐθύνοντος βούληται·
5 Οὕτω καὶ ἡ γλῶσσα μικρὸν μέλος ἐστὶ,
καὶ μεγαλαυχεῖ· ἰδοὺ, ὀλίγον πῦρ ἡλίκην ὕλην ἀνάπτει.
6 Καὶ ἡ γλῶσσα πῦρ, ὁ κόσμος τῆς ἀ-
δικίας· οὕτως ἡ γλῶσσα καθίσαται ἐν τοῖς μέλεσιν ἡμῶν, ἡ σπιλοῦσα ὅλον τὸ σῶμα, καὶ φλογίζουσα τὸν τροχὸν τῆς γενέσεως, καὶ φλογιζομένη ὑπὸ τῆς γεέννης.
7 Πᾶσα γὰρ φύσις θηρείων τε καὶ πετεινῶν,
ἑρπετῶν τε καὶ ἐναλίων δαμάζεται καὶ δεδάμασαι τῇ φύσει τῇ ἀνθρωπίνῃ·
8 Τὴν δὲ γλῶσσαν οὐδεὶς δύναται ἀν-
θρώπων δαμάσαι, ἀκατάσχετον κακόν· μεστὴ ἰοῦ θανατηφόρου·
9 Ἐν αὐτῇ εὐλογοῦμεν τὸν Θεὸν καὶ πατέ-
ρα, καὶ ἐν αὐτῇ καταρώμεθα τοὺς ἀνθρώπους τοὺς καθ' ὁμοίωσιν Θεοῦ γεγονότας,
10 Ἐκ τοῦ αὐτοῦ στόματος ἐξέρχεται εὐλο-
γία καὶ κατάρα· Οὐ χρὴ, ἀδελφοί μου, ταῦτα οὕτω γίνεσθαι.
11 Μήτι ἡ πηγὴ ἐκ τῆς αὐτῆς ὀπῆς βρύει
τὸ γλυκὺ καὶ τὸ πικρόν;
12 Μὴ δύναται, ἀδελφοί μου, συκῆ ἐ-
λαίας ποιῆσαι, ἢ ἄμπελος σῦκα; Οὕτως οὐδεμία πηγὴ ἁλυκὸν καὶ γλυκὺ ποιῆσαι ὕδωρ.
13 Τίς σοφὸς καὶ ἐπιστήμων ἐν ὑμῖν; δει-
ξάτω ἐκ τῆς καλῆς ἀναστροφῆς τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐν πραΰτητι σοφίας.

14 Εἰ

14 Εἰ δὲ ζῆλον πικρὸν ἔχετε καὶ ἐρίθειαν
ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν, μὴ κατακαυχᾶσθε καὶ
ψεύδεσθε κατὰ τῆς ἀληθείας.
15 Οὐκ ἔστιν αὕτη ἡ σοφία ἄνωθεν κατερ-
χομένη, ἀλλ᾽ ἐπίγειος, ψυχικὴ, δαιμονιώδης.
16 Ὅπου γὰρ ζῆλος καὶ ἐρίθεια, ἐκεῖ ἀ-
καταστασία καὶ πᾶν φαῦλον πρᾶγμα.
17 Ἡ δὲ ἄνωθεν σοφία πρῶτον μὲν ἁγνή
ἐστιν, ἔπειτα εἰρηνικὴ, ἐπιεικὴς, εὐπειθὴς,
μεστὴ ἐλέους καὶ καρπῶν ἀγαθῶν, ἀδιάκρι-
τος, καὶ ἀνυπόκριτος.
18 Καρπὸς δὲ τῆς δικαιοσύνης ἐν εἰρήνῃ
σπείρεται τοῖς ποιοῦσιν εἰρήνην.

ΚΕΦΑʹΛΑΙΟΝ, Δʹ. 4.

1 ΠΟʹθεν πόλεμοι καὶ μάχαι ἐν ὑ-
μῖν; Οὐκ ἐντεῦθεν, ἐκ τῶν ἡ-
δονῶν ὑμῶν τῶν στρατευομένων ἐν τοῖς μέλε-
σιν ὑμῶν;
2 Ἐπιθυμεῖτε, καὶ οὐκ ἔχετε, φονεύετε
καὶ ζηλοῦτε, καὶ οὐ δύνασθε ἐπιτυχεῖν· μάχε-
σθε καὶ πολεμεῖτε, οὐκ ἔχετε δὲ, διὰ τὸ μὴ
αἰτεῖσθαι ὑμᾶς.
3 Αἰτεῖτε, καὶ οὐ λαμβάνετε, διότι κα-
κῶς αἰτεῖσθε· ἵνα ἐν ταῖς ἡδοναῖς ὑμῶν δα-
πανήσητε.
4 Μοιχοὶ καὶ μοιχαλίδες, οὐκ οἴδατε ὅτι
ἡ φιλία τοῦ κόσμου, ἔχθρα τοῦ Θεοῦ ἐστιν; ὃς
ἂν οὖν βουληθῇ φίλος εἶναι τοῦ κόσμου, ἐχ-
θρὸς τοῦ Θεοῦ καθίσταται.
5 Ἢ δοκεῖτε ὅτι κενῶς ἡ γραφὴ λέγει·
Πρὸς φθόνον ἐπιποθεῖ τὸ Πνεῦμα ὃ κατῴ-
κησεν ἐν ἡμῖν;
6 Μείζονα δὲ δίδωσι χάριν, διὸ λέγει·
Ο᾽

Ὁ Θεὸς ὑπερηφάνοις ἀντιτάσσεται, ταπεινοῖς δὲ δίδωσι χάριν.

7 Ὑποτάγητε οὖν τῷ Θεῷ, ἀντίστητε τῷ διαβόλῳ, καὶ φεύξεται ἀφ' ὑμῶν.

8 Ἐγγίσατε τῷ Θεῷ, καὶ ἐγγιεῖ ὑμῖν· καθαρίσατε χεῖρας ἁμαρτωλοὶ, καὶ ἁγνίσατε καρδίας δίψυχοι.

9 Ταλαιπωρήσατε καὶ πενθήσατε καὶ κλαύσατε. ὁ γέλως ὑμῶν εἰς πένθος μεταστραφήτω, καὶ ἡ χαρὰ εἰς κατήφειαν.

10 Ταπεινώθητε ἐνώπιον τοῦ Κυρίου, καὶ ὑψώσει ὑμᾶς.

11 Μὴ καταλαλεῖτε ἀλλήλων, ἀδελφοί· ὁ καταλαλῶν ἀδελφοῦ, καὶ κρίνων τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καταλαλεῖ νόμου, καὶ κρίνει νόμον· εἰ δὲ νόμον κρίνεις, οὐκ εἶ ποιητὴς νόμου, ἀλλὰ κριτής.

12 Εἷς ἐστιν ὁ νομοθέτης ὁ δυνάμενος σῶσαι καὶ ἀπολέσαι· σὺ τίς εἶ, ὃς κρίνεις τὸν ἕτερον;

13 Ἄγε νῦν οἱ λέγοντες· Σήμερον ἢ αὔριον πορευσόμεθα εἰς τήνδε τὴν πόλιν, καὶ ποιήσομεν ἐκεῖ ἐνιαυτὸν ἕνα, καὶ ἐμπορευσόμεθα, καὶ κερδήσομεν·

14 Οἵτινες οὐκ ἐπίστασθε τὸ τῆς αὔριον· ποία γὰρ ἡ ζωὴ ὑμῶν; ἀτμὶς γάρ ἐστιν ἡ πρὸς ὀλίγον φαινομένη, ἔπειτα δὲ ἀφανιζομένη.

15 Ἀντὶ τοῦ λέγειν ὑμᾶς· Ἐὰν ὁ Κύριος θελήσῃ, καὶ ζήσωμεν, καὶ ποιήσωμεν τοῦτο ἢ ἐκεῖνο.

16 Νῦν δὲ καυχᾶσθε ἐν ταῖς ἀλαζονείαις ὑμῶν· πᾶσα καύχησις τοιαύτη, πονηρά ἐστιν.

17 Εἰδότι οὖν καλὸν ποιεῖν καὶ μὴ ποιοῦντι, ἁμαρτία αὐτῷ ἐστιν.

ΚΕ-

ΚΕΦΑʼΛΑΙΟΝ, Εʹ. 5.

1 Ἄγε νῦν οἱ πλούσιοι, κλαύσατε
ὀλολύζοντες ἐπὶ ταῖς ταλαιπω-
ρίαις ὑμῶν ταῖς ἐπερχομέναις.
2 Ὁ πλοῦτος ὑμῶν σέσηπε, καὶ τὰ ἱμά-
τια ὑμῶν σητόβρωτα γέγονεν·
3 Ὁ χρυσὸς ὑμῶν καὶ ὁ ἄργυρος κατίω-
ται, καὶ ὁ ἰὸς αὐτῶν εἰς μαρτύριον ὑμῖν ἔσαι,
καὶ φάγεται τὰς σάρκας ὑμῶν ὡς πῦρ· ἐθη-
σαυρίσατε ἐν ἐσχάταις ἡμέραις.
4 Ἰδοὺ, ὁ μισθὸς τῶν ἐργατῶν τῶν ἀμησάν-
των τὰς χώρας ὑμῶν, ὁ ἀπεσερημένος ἀφʼ ὑ-
μῶν, κράζει, καὶ αἱ βοαὶ τῶν θερισάντων εἰς
τὰ ὦτα Κυρίου Σαβαὼθ εἰσεληλύθασιν.
5 Ἐτρυφήσατε ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐσπαταλή-
σατε· ἐθρέψατε τὰς καρδίας ὑμῶν ὡς ἐν ἡ-
μέρᾳ σφαγῆς.
6 Κατεδικάσατε, ἐφονεύσατε τὸν δίκαιον,
οὐκ ἀντιτάσσεται ὑμῖν.
7 Μακροθυμήσατε οὖν, ἀδελφοὶ, ἕως
τῆς παρουσίας τοῦ Κυρίου, ἰδοὺ, ὁ γεωργὸς
ἐκδέχεται τὸν τίμιον καρπὸν τῆς γῆς, μα-
κροθυμῶν ἐπʼ αὐτῷ, ἕως ἂν λάβῃ ὑετὸν
πρώϊμον καὶ ὄψιμον.
8 Μακροθυμήσατε καὶ ὑμεῖς, στηρίξατε
τὰς καρδίας ὑμῶν, ὅτι ἡ παρουσία τοῦ Κυ-
ρίου ἤγγικε.
9 Μὴ στενάζετε κατʼ ἀλλήλων, ἀδελφοὶ,
ἵνα μὴ κατακριθῆτε· ἰδοὺ, κριτὴς πρὸ τῶν
θυρῶν ἕστηκεν.
10 Ὑπόδειγμα λάβετε τῆς κακοπαθείας,
ἀδελφοί μου, καὶ τῆς μακροθυμίας, τοὺς προ-
φήτας οἳ ἐλάλησαν τῷ ὀνόματι Κυρίου.

11 Ἰδοὺ,

11 Ἰδοὺ, μακαρίζομεν τοὺς ὑπομένοντας· τὴν ὑπομονὴν Ἰὼβ ἠκούσατε, καὶ τὸ τέλος Κυρίου εἴδετε, ὅτι πολύσπλαγχνός ἐστιν ὁ Κύριος καὶ οἰκτίρμων.

12 Πρὸ πάντων δὲ, ἀδελφοί μου, μὴ ὀμνύετε μήτε τὸν οὐρανὸν, μήτε τὴν γῆν, μήτε ἄλλον τινὰ ὅρκον· ἤτω δὲ ὑμῶν τὸ ναὶ, καὶ τὸ οὔ, οὔ· ἵνα μὴ εἰς ὑπόκρισιν πέσητε.

13 Κακοπαθεῖ τις ἐν ὑμῖν; Προσευχέσθω· εὐθυμεῖ τις; ψαλλέτω.

14 Ἀσθενεῖ τις ἐν ὑμῖν; προσκαλεσάσθω τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἐκκλησίας, καὶ προσευξάσθωσαν ἐπ᾽ αὐτὸν, ἀλείψαντες αὐτὸν ἐλαίῳ ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου.

15 Καὶ ἡ εὐχὴ τῆς πίστεως σώσει τὸν κάμνοντα, καὶ ἐγερεῖ αὐτὸν ὁ Κύριος· κἂν ἁμαρτίας ᾖ πεποιηκὼς, ἀφεθήσεται αὐτῷ.

16 Ἐξομολογεῖσθε ἀλλήλοις τὰ παραπτώματα, καὶ εὔχεσθε ὑπὲρ ἀλλήλων, ὅπως ἰαθῆτε. πολὺ ἰσχύει δέησις δικαίου ἐνεργουμένη.

17 Ἠλίας ἄνθρωπος ἦν ὁμοιοπαθὴς ἡμῖν, καὶ προσευχῇ προσηύξατο τοῦ μὴ βρέξαι· καὶ οὐκ ἔβρεξεν ἐπὶ τῆς γῆς ἐνιαυτοὺς τρεῖς καὶ μῆνας ἕξ.

18 Καὶ πάλιν προσηύξατο, καὶ ὁ οὐρανὸς ὑετὸν ἔδωκε, καὶ ἡ γῆ ἐβλάστησε τὸν καρπὸν αὐτῆς.

19 Ἀδελφοὶ, ἐάν τις ἐν ὑμῖν πλανηθῇ ἀπὸ τῆς ἀληθείας, καὶ ἐπιστρέψῃ τις αὐτὸν,

20 Γινωσκέτω ὅτι ὁ ἐπιστρέψας ἁμαρτωλὸν ἐκ πλάνης ὁδοῦ αὐτοῦ, σώσει ψυχὴν ἐκ θανάτου, καὶ καλύψει πλῆθος ἁμαρτιῶν.

ΠΕΤΡΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ
ΕΠΙΣΤΟΛΗ
ΚΑΘΟΛΙΚΗ, Α'.
ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΠΕΤΡΟΣ Ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ
ἐκλεκτοῖς τοῖς παρεπιδήμοις
διασπορᾶς Πόντου, Γαλατίας,
Καππαδοκίας, Ἀσίας, καὶ Βιθυνίας.
2 Κατὰ πρόγνωσιν Θεοῦ πατρὸς ἐν ἁγιασμῷ
Πνεύματος, εἰς ὑπακοὴν καὶ ῥαντισμὸν αἵμα-
τος Ἰησοῦ Χριστοῦ· χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη πλη-
θυνθείη.
3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς καὶ πατὴρ τοῦ Κυρίου ἡ-
μῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ κατὰ τὸ πολὺ αὐτοῦ ἔλεος
ἀναγεννήσας ὑμᾶς εἰς ἐλπίδα ζῶσαν δι' ἀνα-
στάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐκ νεκρῶν,
4 Εἰς κληρονομίαν ἄφθαρτον καὶ ἀμίαντον καὶ
ἀμάραντον, τετηρημένην ἐν οὐρανοῖς εἰς ἡμᾶς.
5 Τοὺς ἐν δυνάμει Θεοῦ φρουρουμένους διὰ πί-
στεως, εἰς σωτηρίαν ἑτοίμην ἀποκαλυφθῆναι
ἐν καιρῷ ἐσχάτῳ.
6 Ἐν ᾧ ἀγαλλιᾶσθε, ὀλίγον ἄρτι (εἰ δέον
ἐστὶ) λυπηθέντες ἐν ποικίλοις πειρασμοῖς·
7 Ἵνα τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆς πίστεως πολὺ
τιμιώτερον χρυσίου τοῦ ἀπολλυμένου, διὰ πυρὸς
δὲ δοκιμαζομένου, εὑρεθῇ εἰς ἔπαινον καὶ τι-
μὴν καὶ δόξαν, ἐν ἀποκαλύψει Ἰησοῦ Χριστοῦ.
8 Ὃν οὐκ εἰδότες ἀγαπᾶτε, εἰς ὃν ἄρτι μὴ

ὁρῶντες, πιστεύοντες δὲ, ἀγαλλιᾶσθε χαρᾷ
ἀνεκλαλήτῳ καὶ δεδοξασμένῃ.
9 Κομιζόμενοι τὸ τέλος τῆς πίστεως ὑμῶν,
σωτηρίαν ψυχῶν.
10 Περὶ ἧς σωτηρίας ἐξεζήτησαν καὶ ἐξη-
ρεύνησαν προφῆται οἱ περὶ τῆς εἰς ὑμᾶς χά-
ριτος προφητεύσαντες.
11 Ἐρευνῶντες εἰς τίνα ἢ ποῖον καιρὸν ἐδή-
λου τὸ ἐν αὐτοῖς Πνεῦμα Χριστοῦ, προμαρτυ-
ρόμενον τὰ εἰς Χριστὸν παθήματα, καὶ τὰς με-
τὰ ταῦτα δόξας,
12 Οἷς ἀπεκαλύφθη ὅτι οὐχ ἑαυτοῖς, ἡ-
μῖν δὲ διηκόνουν αὐτὰ, ἃ νῦν ἀνηγγέλη ὑμῖν
διὰ τῶν εὐαγγελισαμένων ὑμᾶς ἐν Πνεύμα-
τι ἁγίῳ ἀποσταλέντι ἀπ' οὐρανοῦ, εἰς ἃ ἐπιθυ-
μοῦσιν ἄγγελοι παρακύψαι.
13 Διὸ ἀναζωσάμενοι τὰς ὀσφύας τῆς
διανοίας ὑμῶν, νήφοντες, τελείως ἐλπίσα-
τε ἐπὶ τὴν φερομένην ὑμῖν χάριν ἐν ἀποκα-
λύψει Ἰησοῦ Χριστοῦ.
14 Ὡς τέκνα ὑπακοῆς, μὴ συσχηματι-
ζόμενοι ταῖς πρότερον ἐν τῇ ἀγνοίᾳ ὑμῶν
ἐπιθυμίαις.
15 Ἀλλὰ κατὰ τὸν καλέσαντα ὑμᾶς ἅγιον,
καὶ αὐτοὶ ἅγιοι ἐν πάσῃ ἀναστροφῇ γενήθητε.
16 Διότι γέγραπται· Ἅγιοι γένεσθε,
ὅτι ἐγὼ ἅγιός εἰμι.
17 Καὶ εἰ πατέρα ἐπικαλεῖσθε τὸν ἀπροσω-
πολήπτως κρίνοντα κατὰ τὸ ἑκάστου ἔργον, ἐν φό-
βῳ τὸν τῆς παροικίας ὑμῶν χρόνον ἀναστράφητε.
18 Εἰδότες ὅτι οὐ φθαρτοῖς, ἀργυρίῳ ἢ χρυ-
σίῳ ἐλυτρώθητε ἐκ τῆς ματαίας ὑμῶν ἀνα-
στροφῆς πατροπαραδότου.
19 Ἀλλὰ τιμίῳ αἵματι ὡς ἀμνοῦ ἀ-

μώμου καὶ ἀσπίλου Χριστοῦ·
20 Προεγνωσμένου μὲν πρὸ καταβολῆς
κόσμου, φανερωθέντος δὲ ἐπ' ἐσχάτων τῶν χρό-
νων δι' ὑμᾶς.
21 Τοὺς δι' αὐτοῦ πιστεύοντας εἰς Θεὸν τὸν
ἐγείραντα αὐτὸν ἐκ νεκρῶν, καὶ δόξαν αὐτῷ
δόντα, ὥστε τὴν πίστιν ὑμῶν καὶ ἐλπίδα εἶναι
εἰς Θεόν.
22 Τὰς ψυχὰς ὑμῶν ἡγνικότες ἐν τῇ ὑπα-
κοῇ τῆς ἀληθείας διὰ Πνεύματος, εἰς φιλα-
δελφίαν ἀνυπόκριτον, ἐκ καθαρᾶς καρδίας
ἀλλήλους ἀγαπήσατε ἐκτενῶς.
23 Ἀναγεγεννημένοι οὐκ ἐκ σπορᾶς φθαρ-
τῆς, ἀλλὰ ἀφθάρτου, διὰ λόγου ζῶντος Θεοῦ
καὶ μένοντος εἰς τὸν αἰῶνα.
24 Διότι πᾶσα σὰρξ ὡς χόρτος, καὶ πᾶσα
δόξα ἀνθρώπου ὡς ἄνθος χόρτου· ἐξηράνθη ὁ
χόρτος, καὶ τὸ ἄνθος αὐτοῦ ἐξέπεσε.
25 Τὸ δὲ ῥῆμα Κυ̃ μένει εἰς τὸν αἰῶνα· τοῦ-
το δέ ἐστι τὸ ῥῆμα τὸ εὐαγγελισθὲν εἰς ὑμᾶς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 Ἀ'Ποθέμενοι οὖν πᾶσαν κακίαν καὶ
πάντα δόλον, καὶ ὑποκρίσεις καὶ
φθόνους καὶ πάσας καταλαλιάς,
2 Ὡς ἀρτιγέννητα βρέφη, τὸ λογικὸν ἄδο-
λον γάλα ἐπιποθήσατε, ἵνα ἐν αὐτῷ αὐξηθῆτε.
3 Εἴπερ ἐγεύσασθε ὅτι χρηστὸς ὁ Κύριος.
4 Πρὸς ὃν προσερχόμενοι, λίθον ζῶντα,
ὑπὸ ἀνθρώπων μὲν ἀποδεδοκιμασμένον, πα-
ρὰ δὲ Θεῷ ἐκλεκτόν, ἔντιμον.
5 Καὶ αὐτοὶ ὡς λίθοι ζῶντες οἰκοδομεῖ-
σθε, οἶκος πνευματικός, ἱεράτευμα ἅγιον,
ἀνενέγκαι πνευματικὰς θυσίας, εὐπροσδέκ-
τους τῷ Θεῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

6 Διὸ καὶ περιέχει ἐν τῇ γραφῇ· Ἰδοὺ τί-
θημι ἐν Σιὼν λίθον ἀκρογωνιαῖον, ἐκλεκτὸν,
ἔντιμον· καὶ ὁ πιστεύων ἐπ' αὐτῷ, οὐ μὴ κα-
ταισχυνθῇ.

7 Ὑμῖν οὖν ἡ τιμὴ τοῖς πιστεύουσιν· ἀπειθοῦσι
δὲ, λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες,
οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας, καὶ λίθος
προσκόμματος, καὶ πέτρα σκανδάλου.

8 Οἳ προσκόπτουσι τῷ λόγῳ, ἀπειθοῦν-
τες, εἰς ὃ καὶ ἐτέθησαν.

9 Ὑμεῖς δὲ, γένος ἐκλεκτὸν, βασίλειον ἱε-
ράτευμα, ἔθνος ἅγιον, λαὸς εἰς περιποίησιν·
ὅπως τὰς ἀρετὰς ἐξαγγείλητε τοῦ ἐκ σκότους ὑ-
μᾶς καλέσαντος εἰς τὸ θαυμαστὸν αὐτοῦ φῶς.

10 Οἵ ποτε οὐ λαὸς, νῦν δὲ λαὸς Θεοῦ·
οἱ οὐκ ἠλεημένοι, νῦν δὲ ἐλεηθέντες.

11 Ἀγαπητοὶ, παρακαλῶ ὡς παροίκους
καὶ παρεπιδήμους, ἀπέχεσθαι τῶν σαρκικῶν ἐπι-
θυμιῶν, αἵτινες στρατεύονται κατὰ τῆς ψυχῆς·

12 Τὴν ἀναστροφὴν ὑμῶν ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἔ-
χοντες καλήν· ἵνα ἐν ᾧ καταλαλοῦσιν ὑμῶν
ὡς κακοποιῶν, ἐκ τῶν καλῶν ἔργων ἐποπτεύ-
σαντες, δοξάσωσι τὸν Θεὸν ἐν ἡμέρᾳ ἐπισκοπῆς.

13 Ὑποτάγητε οὖν πάσῃ ἀνθρωπίνῃ κτίσει
διὰ τὸν Κύριον· εἴτε βασιλεῖ, ὡς ὑπερέχοντι.

14 Εἴτε ἡγεμόσιν, ὡς δι' αὐτοῦ πεμπο-
μένοις εἰς ἐκδίκησιν μὲν κακοποιῶν, ἔπαι-
νον δὲ ἀγαθοποιῶν.

15 Ὅτι οὕτως ἐστὶ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, ἀ-
γαθοποιοῦντας φιμοῦν τὴν τῶν ἀφρόνων ἀνθρώ-
πων ἀγνωσίαν.

16 Ὡς ἐλεύθεροι, καὶ μὴ ὡς ἐπικάλυμμα
ἔχοντες τῆς κακίας τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ὡς
δοῦλοι Θεοῦ.

17 Πάντας τιμήσατε· τὴν ἀδελφότητα ἀγα-
πᾶτε· τὸν Θεὸν φοβεῖσθε· τὸν βασιλέα τιμᾶτε.

18 Οἱ οἰκέται, ὑποτασσόμενοι ἐν παντὶ
φόβῳ τοῖς δεσπόταις, οὐ μόνον τοῖς ἀγαθοῖς
καὶ ἐπιεικέσιν, ἀλλὰ καὶ τοῖς σκολιοῖς.

19 Τοῦτο γὰρ χάρις, εἰ διὰ συνείδησιν Θεοῦ
ὑποφέρει τις λύπας, πάσχων ἀδίκως.

20 Ποῖον γὰρ κλέος, εἰ ἁμαρτάνοντες καὶ
κολαφιζόμενοι ὑπομενεῖτε; ἀλλ' εἰ ἀγαθο-
ποιοῦντες καὶ πάσχοντες ὑπομενεῖτε, τοῦτο χά-
ρις παρὰ Θεῷ.

21 Εἰς τοῦτο γὰρ ἐκλήθητε, ὅτι καὶ Χειςὸς
ἔπαθεν ὑπὲρ ἡμῶν, ὑμῖν ὑπολιμπάνων
ὑπογραμμὸν, ἵνα ἐπακολουθήσητε τοῖς ἴχνε-
σιν αὐτοῦ.

22 Ὃς ἁμαρτίαν οὐκ ἐποίησεν, οὐδὲ εὑρέ-
θη δόλος ἐν τῷ σόματι αὐτοῦ.

23 Ὃς λοιδορούμενος οὐκ ἀντελοιδόρει,
πάσχων οὐκ ἠπείλει· παρεδίδου δὲ τῷ κρί-
νοντι δικαίως·

24 Ὃς τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν αὐτὸς ἀνήνεγ-
κεν ἐν τῷ σώματι αὐτοῦ ἐπὶ τὸ ξύλον· ἵνα ταῖς
ἁμαρτίαις ἀπογενόμενοι, τῇ δικαιοσύνῃ ζή-
σωμεν· οὗ τῷ μώλωπι αὐτοῦ ἰάθητε.

25 Ἦτε γὰρ ὡς πρόβατα πλανώμενα·
ἀλλ' ἐπεστράφητε νῦν ἐπὶ τὸν ποιμένα καὶ ἐπίσ-
κοπον τῶν ψυχῶν ἡμῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Ὁμοίως αἱ γυναῖκες, ὑποτασσόμε-
ναι τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν, ἵνα καὶ
εἴτινες ἀπειθοῦσι τῷ λόγῳ, διὰ τῆς τῶν γυναι-
κῶν ἀναστροφῆς ἄνευ λόγου κερδηθήσωνται.

2 Ἐποπτεύσαντες τὴν ἐν φόβῳ ἁγνὴν ἀ-
ναστροφὴν ὑμῶν.

3 Ὧν ἔστω οὐχ ὁ ἔξωθεν ἐμπλοκῆς τριχῶν, καὶ περιθέσεως χρυσίων, ἢ ἐνδύσεως ἱματίων κόσμος·

4 Ἀλλ' ὁ κρυπτὸς τῆς καρδίας ἄνθρωπος, ἐν τῷ ἀφθάρτῳ τοῦ πραέος καὶ ἡσυχίου πνεύματος, ὅ ἐστιν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ πολυτελές.

5 Οὕτω γάρ ποτε καὶ αἱ ἅγιαι γυναῖκες αἱ ἐλπίζουσαι ἐπὶ τὸν Θεὸν, ἐκόσμουν ἑαυτὰς, ὑποτασσόμεναι τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν.

6 Ὡς Σάῤῥα ὑπήκουσε τῷ Ἀβραὰμ, κύριον αὐτὸν καλοῦσα, ἧς ἐγενήθητε τέκνα, ἀγαθοποιοῦσαι, καὶ μὴ φοβούμεναι μηδεμίαν πτόησιν.

7 Οἱ ἄνδρες ὁμοίως, συνοικοῦντες κατὰ γνῶσιν, ὡς ἀσθενεστέρῳ σκεύει τῷ γυναικείῳ ἀπονέμοντες τιμὴν, ὡς καὶ συγκληρονόμοι χάριτος ζωῆς, εἰς τὸ μὴ ἐκκόπτεσθαι τὰς προσευχὰς ὑμῶν.

8 Τὸ δὲ τέλος, πάντες ὁμόφρονες, συμπαθεῖς, φιλάδελφοι, εὔσπλαγχνοι, φιλόφρονες.

9 Μὴ ἀποδιδόντες κακὸν ἀντὶ κακοῦ, ἢ λοιδορίαν ἀντὶ λοιδορίας· τοὐναντίον δὲ, εὐλογοῦντες, εἰδότες ὅτι εἰς τοῦτο ἐκλήθητε, ἵνα εὐλογίαν κληρονομήσητε.

10 Ὁ γὰρ θέλων ζωὴν ἀγαπᾷν, καὶ ἰδεῖν ἡμέρας ἀγαθὰς, παυσάτω τὴν γλῶσσαν αὐτοῦ ἀπὸ κακοῦ, καὶ χείλη αὐτοῦ τοῦ μὴ λαλῆσαι δόλον.

11 Ἐκκλινάτω ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποιησάτω ἀγαθόν· ζητησάτω εἰρήνην, καὶ διωξάτω αὐτήν.

12 Ὅτι οἱ ὀφθαλμοὶ Κυρίου ἐπὶ δικαίους, καὶ ὦτα αὐτοῦ εἰς δέησιν αὐτῶν· πρόσωπον δὲ Κυρίου ἐπὶ ποιοῦντας κακά.

13 Καὶ τίς ὁ κακώσων ὑμᾶς, ἐὰν τοῦ ἀγαθοῦ μιμηταὶ γένησθε;

14 Ἀλλ' εἰ καὶ πάσχοιτε διὰ δικαιοσύνην,

μακάριοι· τὸν δὲ φόβον αὐτῶν μὴ φοβηθῆτε,
μηδὲ ταραχθῆτε.
15 Κύριον δὲ τὸν Θεὸν ἁγιάσατε ἐν ταῖς
καρδίαις ὑμῶν. ἕτοιμοι δὲ ἀεὶ πρὸς ἀπολογίαν
παντὶ τῷ αἰτοῦντι ὑμᾶς λόγον περὶ τῆς ἐν ὑμῖν
ἐλπίδος, μετὰ πραΰτητος καὶ φόβου.
16 Συνείδησιν ἔχοντες ἀγαθήν· ἵνα ἐν ᾧ
καταλαλῶσιν ὑμῶν ὡς κακοποιῶν, καται-
σχυνθῶσιν οἱ ἐπηρεάζοντες ὑμῶν τὴν ἀγαθὴν
ἐν Χριστῷ ἀναστροφήν.
17 Κρεῖττον γὰρ ἀγαθοποιοῦντας, εἰ θέλει τὸ
θέλημα τοῦ Θεοῦ, πάσχειν, ἢ κακοποιοῦντας.
18 Ὅτι καὶ Χριστὸς ἅπαξ περὶ ἁμαρτιῶν
ἔπαθε, δίκαιος ὑπὲρ ἀδίκων· ἵνα ἡμᾶς προ-
σαγάγῃ τῷ Θεῷ, θανατωθεὶς μὲν σαρκὶ,
ζωοποιηθεὶς δὲ τῷ Πνεύματι.
19 Ἐν ᾧ καὶ τοῖς ἐν φυλακῇ πνεύμασι πο-
ρευθεὶς ἐκήρυξεν.
20 Ἀπειθήσασί ποτε, ὅτε ἅπαξ ἐξεδέχε-
το ἡ τοῦ Θεοῦ μακροθυμία ἐν ἡμέραις Νῶε, κα-
τασκευαζομένης κιβωτοῦ, εἰς ἣν ὀλίγαι (τοῦ-
τέστιν ὀκτὼ) ψυχαὶ διεσώθησαν δι' ὕδατος.
21 Ὃ καὶ ἡμᾶς ἀντίτυπον νῦν σώζει βά-
πτισμα, (οὐ σαρκὸς ἀπόθεσις ῥύπου, ἀλλὰ
συνειδήσεως ἀγαθῆς ἐπερώτημα εἰς Θεὸν)
δι' ἀναστάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ.
22 Ὅς ἐστιν ἐν δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ, πορευθεὶς
εἰς οὐρανὸν, ὑποταγέντων αὐτῷ ἀγγέλων καὶ
ἐξουσιῶν καὶ δυνάμεων.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΧΡιστοῦ οὖν παθόντος ὑπὲρ ἡμῶν σαρ-
κὶ, καὶ ὑμεῖς τὴν αὐτὴν ἔννοιαν
ὁπλίσασθε, ὅτι ὁ παθὼν ἐν σαρκὶ, πέπαυ-
ται ἁμαρτίας,

2 Εἰς

2 Εἰς τὸ μηκέτι ἀνθρώπων ἐπιθυμίαις, ἀλλὰ θελήματι Θεοῦ τὸν ἐπίλοιπον ἐν σαρκὶ βιῶσαι χρόνον.

3 Ἀρκετὸς γὰρ ἡμῖν ὁ παρεληλυθὼς χρόνος τοῦ βίου τὸ θέλημα τῶν ἐθνῶν κατεργάσασθε, πεπορευμένους ἐν ἀσελγείαις, ἐπιθυμίαις, οἰνοφλυγίαις, κώμοις, πότοις, καὶ ἀθεμίτοις εἰδωλολατρείαις.

4 Ἐν ᾧ ξενίζονται, μὴ συντρεχόντων ὑμῶν εἰς τὴν αὐτὴν τῆς ἀσωτίας ἀνάχυσιν, βλασφημοῦντες.

5 Οἳ ἀποδώσουσι λόγον τῷ ἑτοίμως ἔχοντι κρῖναι ζῶντας καὶ νεκρούς·

6 Εἰς τοῦτο γὰρ καὶ νεκροῖς εὐηγγελίσθη, ἵνα κριθῶσι μὲν κατὰ ἀνθρώπους σαρκὶ, ζῶσι δὲ κατὰ Θεὸν πνεύματι.

7 Πάντων δὲ τὸ τέλος ἤγγικε· σωφρονήσατε οὖν καὶ νήψατε εἰς τὰς προσευχάς.

8 Πρὸ πάντων δὲ τὴν εἰς ἑαυτοὺς ἀγάπην ἐκτενῆ ἔχοντες· ὅτι ἡ ἀγάπη καλύψει πλῆθος ἁμαρτιῶν.

9 Φιλόξενοι εἰς ἀλλήλους, ἄνευ γογγυσμῶν.

10 Ἕκαστος καθὼς ἔλαβε χάρισμα, εἰς ἑαυτοὺς αὐτὸ διακονοῦντες, ὡς καλοὶ οἰκονόμοι ποικίλης χάριτος Θεοῦ.

11 Εἴ τις λαλεῖ, ὡς λόγια Θεοῦ· εἴ τις διακονεῖ, ὡς ἐξ ἰσχύος ἧς χορηγεῖ ὁ Θεός· ἵνα ἐν πᾶσι δοξάζηται ὁ Θεὸς διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ᾧ ἐστιν ἡ δόξα καὶ τὸ κράτος εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.

12 Ἀγαπητοὶ, μὴ ξενίζεσθε τῇ ἐν ὑμῖν πυρώσει πρὸς πειρασμὸν ὑμῖν γενομένῃ, ὡς ξένου ὑμῖν συμβαίνοντος.

13 Ἀλλὰ καθὼς κοινωνεῖτε τοῖς τοῦ Χριστοῦ παθήμασι, χαίρετε, ἵνα καὶ ἐν τῇ ἀπο-

καλύψει τῆς δόξης αὐτοῦ χαρῆτε ἀγαλλιώ-
μενοι.

14 Εἰ ὀνειδίζεσθε ἐν ὀνόματι Χριστοῦ, μα-
κάριοι· ὅτι τὸ τῆς δόξης καὶ τὸ τοῦ Θεοῦ Πνεῦμα
ἐφ' ὑμᾶς ἀναπαύεται· κατὰ μὲν αὐτοὺς βλασ-
φημεῖται, κατὰ δὲ ὑμᾶς δοξάζεται.

15 Μὴ γάρ τις ὑμῶν πασχέτω ὡς φονεὺς,
ἢ κλέπτης, ἢ κακοποιὸς, ἢ ὡς ἀλλοτριοεπίσ-
κοπος.

16 Εἰ δὲ ὡς Χριστιανὸς, μὴ αἰσχυνέσθω,
δοξαζέτω δὲ τὸν Θεὸν ἐν τῷ μέρει τούτῳ.

17 Ὅτι ὁ καιρὸς τοῦ ἄρξασθαι τὸ κρῖμα
ἀπὸ τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ. εἰ δὲ πρῶτον ἀφ' ἡμῶν,
τί τὸ τέλος τῶν ἀπειθούντων τῷ τοῦ Θεοῦ εὐαγ-
γελίῳ;

18 Καὶ εἰ ὁ δίκαιος μόλις σώζεται, ὁ
ἀσεβὴς καὶ ἁμαρτωλὸς ποῦ φανεῖται;

19 Ὥστε καὶ οἱ πάσχοντες κατὰ τὸ θέλημα
τοῦ Θεοῦ, ὡς πιστῷ κτίστῃ παρατιθέσθωσαν τὰς
ψυχὰς ἑαυτῶν ἐν ἀγαθοποιΐᾳ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 ΠΡεσβυτέρους τοὺς ἐν ὑμῖν παρακα-
λῶ ὁ συμπρεσβύτερος καὶ μάρτυς
τῶν τοῦ Χριστοῦ παθημάτων, ὁ καὶ τῆς μελλού-
σης ἀποκαλύπτεσθαι δόξης κοινωνός·

2 Ποιμάνατε τὸ ἐν ὑμῖν ποίμνιον τοῦ Θεοῦ,
ἐπισκοποῦντες μὴ ἀναγκαστῶς, ἀλλ' ἑκουσίως·
μηδὲ αἰσχροκερδῶς, ἀλλὰ προθύμως·

3 Μηδ' ὡς κατακυριεύοντες τῶν κλήρων,
ἀλλὰ τύποι γινόμενοι τοῦ ποιμνίου.

4 Καὶ φανερωθέντος τοῦ ἀρχιποίμενος, κο-
μιεῖσθε τὸν ἀμαράντινον τῆς δόξης στέφανον.

5 Ὁμοίως νεώτεροι ὑποτάγητε πρεσβυτέ-

ροις.

ροις· πάντες δὲ ἀλλήλοις ὑποτασσόμενοι, τὴν
ταπεινοφροσύνην ἐγκομβώσασθε, ὅτι ὁ Θεὸς
ὑπερηφάνοις ἀντιτάσσεται, ταπεινοῖς δὲ δί-
δωσι χάριν.
6 Ταπεινώθητε οὖν ὑπὸ τὴν κραταιὰν χεῖ-
ρα τοῦ Θεοῦ, ἵνα ὑμᾶς ὑψώσῃ ἐν καιρῷ.
7 Πᾶσαν τὴν μέριμναν ὑμῶν ἐπιῤῥίψαντες
ἐπ' αὐτὸν, ὅτι αὐτῷ μέλει περὶ ὑμῶν.
8 Νήψατε, γρηγορήσατε, ὅτι ὁ ἀντίδι-
κος ὑμῶν διάβολος, ὡς λέων ὠρυόμενος πε-
ριπατεῖ, ζητῶν τίνα καταπίῃ.
9 Ὧ ἀντίστητε στερεοὶ τῇ πίστει, εἰδότες
τὰ αὐτὰ τῶν παθημάτων τῇ ἐν κόσμῳ ὑμῶν ἀ-
δελφότητι ἐπιτελεῖσθαι.
10 Ὁ δὲ Θεὸς πάσης χάριτος, ὁ καλέ-
σας ἡμᾶς εἰς τὴν αἰώνιον αὐτοῦ δόξαν ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ, ὀλίγον παθόντας, αὐτὸς καταρτίσαι
ὑμᾶς, στηρίξαι, σθενώσαι, θεμελιώσαι.
11 Αὐτῷ ἡ δόξα, καὶ τὸ κράτος εἰς τοὺς αἰῶ-
νας τῶν αἰώνων. ἀμήν.
12 Διὰ Σιλουανοῦ ὑμῖν τοῦ πιστοῦ ἀδελφοῦ
(ὡς λογίζομαι) δι' ὀλίγων ἔγραψα, παρα-
καλῶν καὶ ἐπιμαρτυρῶν ταύτην εἶναι ἀληθῆ
χάριν τοῦ Θεοῦ εἰς ἣν ἑστήκατε.
13 Ἀσπάζεται ὑμᾶς ἡ ἐν Βαβυλῶνι συ-
νεκλεκτὴ, καὶ Μάρκος ὁ Υἱός μου.
14 Ἀσπάσασθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἀ-
γάπης. Εἰρήνη ὑμῖν πᾶσι τοῖς ἐν Χριστῷ
Ἰησοῦ. ἀμήν.

ΠΕΤΡΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ ΕΠΙΣΤΟΛΗ ΚΑΘΟΛΙΚΗ, Β'.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΣΙΜΩΝ Πέτρος, δοῦλος καὶ
ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ,
τοῖς ἰσότιμον ἡμῖν λαχοῦσι πί-
στιν ἐν δικαιοσύνῃ τοῦ Θεοῦ ἡμῶν καὶ σωτῆρος
ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
2 Χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη πληθυνθείη ἐν ἐ-
πιγνώσει τοῦ Θεοῦ, καὶ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.
3 Ὡς πάντα ἡμῖν τῆς θείας δυνάμεως
αὐτοῦ τὰ πρὸς ζωὴν καὶ εὐσέβειαν δεδωρημένης,
διὰ τῆς ἐπιγνώσεως τοῦ καλέσαντος ὑμᾶς διὰ
δόξης καὶ ἀρετῆς.
4 Δι' ὧν τὰ μέγιστα ἡμῖν καὶ τίμια ἐπαγ-
γέλματα δεδώρηται, ἵνα διὰ τούτων γένησθε
θείας κοινωνοὶ φύσεως, ἀποφυγόντες τῆς ἐν
κόσμῳ ἐν ἐπιθυμίᾳ φθορᾶς.
5 Καὶ αὐτὸ τοῦτο δὲ σπουδὴν πᾶσαν παρει-
σενέγκαντες, ἐπιχορηγήσατε ἐν τῇ πίστει ὑμῶν
τὴν ἀρετήν, ἐν δὲ τῇ ἀρετῇ τὴν γνῶσιν,
6 Ἐν δὲ τῇ γνώσει τὴν ἐγκράτειαν, ἐν δὲ
τῇ ἐγκρατείᾳ τὴν ὑπομονήν, ἐν δὲ τῇ ὑπο-
μονῇ τὴν εὐσέβειαν,
7 Ἐν δὲ τῇ εὐσεβείᾳ τὴν φιλαδελφίαν,
ἐν δὲ τῇ φιλαδελφίᾳ τὴν ἀγάπην.
8 Ταῦτα γὰρ ὑμῖν ὑπάρχοντα, καὶ πλεονά-

ζοντα, ὐκ ἀργὺς ὐδὲ ἀκάρπυς καθίςησιν εἰς τὴν τῦ Κυρίυ ἡμῶν Ἰησῦ Χειςῦ ἐπίγνωσιν.

9 Ὧ γὰρ μὴ πάρεςι ταῦτα, τυφλός ἐςι μυωπάζων, λήθlω λαβὼν τῦ καθαεισμοῦ τῶν πάλαι αὐτῦ ἁμαρτιῶν.

10 Διὸ μᾶλλον, ἀδελφοὶ, σπυδάσατε βεβαίαν ὑμῶν τlὼ κλῆσιν ϗ ἐκλογlὼ ποιεῖσθαι· ταῦτα γὰρ ποιῦντες ὐ μὴ πταίσητέ ποτε.

11 Οὕτω γὰρ πλυσίως ἐπιχορηγηθήσεται ὑμῖν ἡ εἴσοδος εἰς τὴν αἰώνιον βασιλείαν τῦ Κυρίυ ἡμῶν ϗ σωτῆρος Ἰησῦ Χειςῦ.

12 Διὸ ὐκ ἀμελήσω ὑμᾶς ἀεὶ ὑπομιμνήσκειν περὶ τύτων, καίπερ εἰδότας, ϗ ἐςηειγμένυς ἐν τῇ παρούσῃ ἀληθείᾳ.

13 Δίκαιον δὲ ἡγοῦμαι, ἐφ' ὅσον εἰμὶ ἐν τύτῳ τῷ σκlωώματι, διεγείρειν ὑμᾶς ἐν ὑπομνήσει·

14 Εἰδὼς ὅτι ταχινή ἐςιν ἡ ἀπόθεσις τῦ σκlωώματός μυ, καθὼς ϗ ὁ Κύειος ἡμῶν Ἰησοῦς Χειςὸς ἐδήλωσέ μοι.

15 Σπυδάσω δὲ ϗ ἑκάςοτε ἔχειν ὑμᾶς μετὰ τlὼ ἐμlὼ ἔξοδον, τlὼ τύτων μνήμlω ποιεῖσθαι.

16 Οὐ γὰρ σεσοφισμένοις μύθοις ἐξακολυθήσαντες ἐγνωρίσαμεν ὑμῖν τὴν τῦ Κυ ἡμῶν Ἰησῦ Χειςῦ δύναμιν ϗ παρυσίαν, ἀλλ' ἐπόπται γενηθέντες τῆς ἐκείνυ μεγαλειότητος.

17 Λαβὼν γὰρ παρὰ Θεῦ πατρὸς τιμὴν ϗ δόξαν, φωνῆς ἐνεχθείσης αὐτῷ τοιᾶσδε ὑπὸ τῆς μεγαλοπρεπῦς δόξης· Οὗτός ἐςιν ὁ Υἱός μυ ὁ ἀγαπητὸς, εἰς ὃν ἐγὼ εὐδόκησα.

18 Καὶ ταύτlω τὴν φωνὴν ἡμεῖς ἠκύσαμεν ἐξ οὐρανοῦ ἐνεχθεῖσαν, σὺν αὐτῷ ὄντες ἐν τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ.

19 Καὶ

19 Καὶ ἔχομεν βεβαιότερον τὸν προφητικὸν λόγον, ᾧ καλῶς ποιεῖτε προσέχοντες, ὡς λύχνῳ φαίνοντι ἐν αὐχμηρῷ τόπῳ, ἕως οὗ ἡμέρα διαυγάσῃ, καὶ φωσφόρος ἀνατείλῃ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν.

20 Τοῦτο πρῶτον γινώσκοντες, ὅτι πᾶσα προφητεία γραφῆς, ἰδίας ἐπιλύσεως οὐ γίνεται.

21 Οὐ γὰρ θελήματι ἀνθρώπου ἠνέχθη ποτὲ προφητεία, ἀλλ' ὑπὸ Πνεύματος ἁγίου φερόμενοι ἐλάλησαν οἱ ἅγιοι Θεοῦ ἄνθρωποι.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β. 2.

1 Ἐγένοντο δὲ καὶ ψευδοπροφῆται ἐν τῷ λαῷ, ὡς καὶ ἐν ὑμῖν ἔσονται ψευδοδιδάσκαλοι, οἵτινες παρεισάξουσιν αἱρέσεις ἀπωλείας, καὶ τὸν ἀγοράσαντα αὐτοὺς δεσπότην ἀρνούμενοι, ἐπάγοντες ἑαυτοῖς ταχινὴν ἀπώλειαν.

2 Καὶ πολλοὶ ἐξακολουθήσουσιν αὐτῶν ταῖς ἀπωλείαις, δι' οὓς ἡ ὁδὸς τῆς ἀληθείας βλασφημηθήσεται.

3 Καὶ ἐν πλεονεξίᾳ πλαστοῖς λόγοις ὑμᾶς ἐμπορεύσονται· οἷς τὸ κρῖμα ἔκπαλαι οὐκ ἀργεῖ, καὶ ἡ ἀπώλεια αὐτῶν οὐ νυστάζει.

4 Εἰ γὰρ ὁ Θεὸς ἀγγέλων ἁμαρτησάντων οὐκ ἐφείσατο, ἀλλὰ σειραῖς ζόφου ταρταρώσας, παρέδωκεν εἰς κρίσιν τετηρημένους.

5 Καὶ ἀρχαίου κόσμου οὐκ ἐφείσατο, ἀλλ' ὄγδοον Νῶε δικαιοσύνης κήρυκα ἐφύλαξε, κατακλυσμὸν κόσμῳ ἀσεβῶν ἐπάξας.

6 Καὶ πόλεις Σοδόμων καὶ Γομάρρας τεφρώσας καταστροφῇ κατέκρινεν, ὑπόδειγμα μελλόντων ἀσεβεῖν τεθεικώς.

7 Καὶ

7 Καὶ δίκαιον Λὼτ καταπονούμενον ὑπὸ
τῆς τῶν ἀθέσμων ἐν ἀσελγείᾳ ἀναστροφῆς
ἐῤῥύσατο.
8 (Βλέμματι γὰρ καὶ ἀκοῇ ὁ δίκαιος, ἐγ-
κατοικῶν ἐν αὐτοῖς, ἡμέραν ἐξ ἡμέρας ψυχὴν
δικαίαν ἀνόμοις ἔργοις ἐβασάνιζεν·)
9 Οἶδε Κύριος εὐσεβεῖς ἐκ πειρασμοῦ ῥύε-
σθαι, ἀδίκους δὲ εἰς ἡμέραν κρίσεως κολα-
ζομένους τηρεῖν.
10 Μάλιστα δὲ τοὺς ὀπίσω σαρκὸς ἐν ἐπι-
θυμίᾳ μιασμοῦ πορευομένους, καὶ κυριότητος
καταφρονοῦντας· τολμηταὶ, αὐθάδεις, δό-
ξας οὐ τρέμουσι βλασφημοῦντες.
11 Ὅπου ἄγγελοι ἰσχύϊ καὶ δυνάμει μείζο-
νες ὄντες, οὐ φέρουσι κατ' αὐτῶν παρὰ Κυρίῳ
βλάσφημον κρίσιν.
12 Οὗτοι δὲ, ὡς ἄλογα ζῶα φυσικὰ,
γεγεννημένα εἰς ἅλωσιν καὶ φθορὰν, ἐν οἷς ἀ-
γνοοῦσι βλασφημοῦντες, ἐν τῇ φθορᾷ αὐτῶν
καταφθαρήσονται·
13 Κομιούμενοι μισθὸν ἀδικίας, ἡδονὴν
ἡγούμενοι τὴν ἐν ἡμέρᾳ τρυφὴν, σπῖλοι καὶ
μῶμοι, ἐντρυφῶντες ἐν ταῖς ἀπάταις αὐτῶν,
συνευωχούμενοι ὑμῖν.
14 Ὀφθαλμοὺς ἔχοντες μεστοὺς μοιχαλί-
δος, καὶ ἀκαταπαύστους ἁμαρτίας, δελεά-
ζοντες ψυχὰς ἀστηρίκτους, καρδίαν γεγυμνασ-
μένην πλεονεξίαις ἔχοντες, κατάρας τέκνα·
15 Καταλιπόντες τὴν εὐθεῖαν ὁδὸν, ἐπλα-
νήθησαν, ἐξακολουθήσαντες τῇ ὁδῷ τοῦ Βα-
λαὰμ τοῦ Βοσὸρ, ὃς μισθὸν ἀδικίας ἠγάπησεν·
16 Ἔλεγξιν δὲ ἔσχεν ἰδίας παρανομίας·
ὑποζύγιον ἄφωνον, ἐν ἀνθρώπου φωνῇ φθεγξά-
μενον, ἐκώλυσε τὴν τοῦ προφήτου παραφρονίαν.

17 Οὗ-

17 Οὗτοί εἰσι πηγαὶ ἄνυδροι, νεφέλαι
ὑπὸ λαίλαπος ἐλαυνόμεναι, οἷς ὁ ζόφος τοῦ
σκότους εἰς αἰῶνα τετήρηται.
18 Ὑπέρογκα γὰρ ματαιότητος φθεγγό-
μεναι δελεάζουσιν ἐν ἐπιθυμίαις σαρκὸς, ἐν
ἀσελγείαις, τοὺς ὄντως ἀποφυγόντας τοὺς ἐν
πλάνῃ ἀναστρεφομένους.
19 Ἐλευθερίαν αὐτοῖς ἐπαγγελλόμενοι,
αὐτοὶ δοῦλοι ὑπάρχοντες τῆς φθορᾶς· ᾧ γάρ
τις ἥττηται, τούτῳ καὶ δεδούλωται.
20 Εἰ γὰρ ἀποφυγόντες τὰ μιάσματα τοῦ
κόσμου ἐν ἐπιγνώσει τοῦ Κυρίου καὶ σωτῆρος Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ, τούτοις δὲ πάλιν ἐμπλακέντες
ἡττῶνται, γέγονεν αὐτοῖς τὰ ἔσχατα χείρονα
τῶν πρώτων.
21 Κρεῖττον γὰρ ἦν αὐτοῖς μὴ ἐπεγνωκέ-
ναι τὴν ὁδὸν τῆς δικαιοσύνης, ἢ ἐπιγνοῦσιν
ἐπιστρέψαι ἐκ τῆς παραδοθείσης αὐτοῖς ἁ-
γίας ἐντολῆς.
22 Συμβέβηκε δὲ αὐτοῖς τὸ τῆς ἀληθοῦς
παροιμίας. Κύων ἐπιστρέψας ἐπὶ τὸ ἴδιον
ἐξέραμα· καὶ ὗς λουσαμένη, εἰς κύλισμα
βορβόρου.

ΚΕΦΑʹΛΑΙΟΝ, Γʹ. 3.

1 ΤΑύτην ἤδη, ἀγαπητοὶ, δευτέραν
ὑμῖν γράφω ἐπιστολὴν, ἐν αἷς διε-
γείρω ὑμῶν ἐν ὑπομνήσει τὴν εἰλικρινῆ διά-
νοιαν.
2 Μνησθῆναι τῶν προειρημένων ῥημάτων
ὑπὸ τῶν ἁγίων προφητῶν, καὶ τῆς τῶν ἀποστό-
λων ἡμῶν ἐντολῆς, τοῦ Κυρίου καὶ σωτῆρος.
3 Τοῦτο πρῶτον γινώσκοντες, ὅτι ἐλεύσον-
ται ἐπ᾽ ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν ἐμπαῖκται, κατὰ
τὰς ἰδίας αὐτῶν ἐπιθυμίας πορευόμενοι.

4 Καὶ λέγοντες· Ποῦ ἐστιν ἡ ἐπαγγελία
τῆς παρουσίας αὐτοῦ; ἀφ' ἧς γὰρ οἱ πατέρες
ἐκοιμήθησαν, πάντα οὕτω διαμένει ἀπ' ἀρ-
χῆς κτίσεως.
5 Λανθάνει γὰρ αὐτοὺς τοῦτο θέλοντας, ὅτι
οὐρανοὶ ἦσαν ἔκπαλαι, καὶ γῆ ἐξ ὕδατος καὶ δι'
ὕδατος συνεστῶσα, τῷ τοῦ Θεοῦ λόγῳ·
6 Δι' ὧν ὁ τότε κόσμος ὕδατι κατακλυ-
σθεὶς ἀπώλετο.
7 Οἱ δὲ νῦν οὐρανοὶ καὶ ἡ γῆ τῷ αὐτῷ λό-
γῳ τεθησαυρισμένοι εἰσὶ, πυρὶ τηρούμενοι
εἰς ἡμέραν κρίσεως καὶ ἀπωλείας τῶν ἀσεβῶν
ἀνθρώπων.
8 Ἓν δὲ τοῦτο μὴ λανθανέτω ὑμᾶς, ἀγα-
πητοὶ, ὅτι μία ἡμέρα παρὰ Κυρίῳ ὡς χίλια
ἔτη, καὶ χίλια ἔτη ὡς ἡμέρα μία.
9 Οὐ βραδύνει ὁ Κύριος τῆς ἐπαγγε-
λίας, (ὥς τινες βραδυτῆτα ἡγοῦνται·) ἀλ-
λὰ μακροθυμεῖ εἰς ἡμᾶς, μὴ βουλόμενός τι-
νας ἀπολέσθαι, ἀλλὰ πάντας εἰς μετάνοιαν
χωρῆσαι.
10 Ἥξει δὲ ἡ ἡμέρα Κυρίου ὡς κλέπτης
ἐν νυκτὶ, ἐν ᾗ οἱ οὐρανοὶ ῥοιζηδὸν παρελεύ-
σονται, στοιχεῖα δὲ καυσούμενα λυθήσονται,
καὶ γῆ καὶ τὰ ἐν αὐτῇ ἔργα κατακαήσεται.
11 Τούτων οὖν πάντων λυομένων, ποτα-
ποὺς δεῖ ὑπάρχειν ὑμᾶς ἐν ἁγίαις ἀναστροφαῖς
καὶ εὐσεβείαις·
12 Προσδοκῶντας καὶ σπεύδοντας τὴν παρου-
σίαν τῆς τοῦ Θεοῦ ἡμέρας, δι' ἣν οὐρανοὶ πυρούμενοι
λυθήσονται, καὶ στοιχεῖα καυσούμενα τήκεται;
13 Καινοὺς δὲ οὐρανοὺς καὶ γῆν καινὴν κατὰ
τὸ ἐπάγγελμα αὐτοῦ προσδοκῶμεν, ἐν οἷς
δικαιοσύνη κατοικεῖ.

14 Διὸ,

14 Διὸ, ἀγαπητοὶ, ταῦτα προσδοκῶν-
τες, σπεδάσατε ἄσπιλοι καὶ ἀμώμητοι αὐτῷ
εὑρεθῆναι ἐν εἰρήνῃ·
15 Καὶ τὴν τοῦ Κυρίου ἡμῶν μακροθυμίαν,
σωτηρίαν ἡγεῖσθε· καθὼς καὶ ὁ ἀγαπητὸς ἡ-
μῶν ἀδελφὸς Παῦλος κατὰ τὴν αὐτῷ δοθεῖ-
σαν σοφίαν ἔγραψεν ὑμῖν,
16 Ὡς καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἐπιστολαῖς, λα-
λῶν ἐν αὐταῖς περὶ τούτων, ἐν οἷς ἐστι δυσνό-
ητά τινα, ἃ οἱ ἀμαθεῖς καὶ ἀστήρικτοι στρεβλοῦ-
σιν, ὡς καὶ τὰς λοιπὰς γραφὰς, πρὸς τὴν ἰδίαν
αὐτῶν ἀπώλειαν.
17 Ὑμεῖς οὖν, ἀγαπητοὶ, προγινώσκοντες,
φυλάσσεσθε, ἵνα μὴ τῇ τῶν ἀθέσμων πλάνῃ
συναπαχθέντες, ἐκπέσητε τοῦ ἰδίου στηριγμοῦ.
18 Αὐξάνετε δὲ ἐν χάριτι καὶ γνώσει τοῦ
Κυρίου ἡμῶν καὶ σωτῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ· αὐτῷ ἡ
δόξα καὶ νῦν καὶ εἰς ἡμέραν αἰῶνος. Ἀμήν.

ΙΩΑΝΝΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

ΚΑΘΟΛΙΚΗ, Α.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α. 1.

1 Ὃ Ἦν ἀπ' ἀρχῆς, ὃ ἀκηκόαμεν
ὃ ἑωράκαμεν τοῖς ὀφθαλμοῖς
ἡμῶν, ὃ ἐθεασάμεθα, καὶ αἱ
χεῖρες ἡμῶν ἐψηλάφησαν περὶ τοῦ λόγου τῆς
ζωῆς.

2 (Καὶ

2 (Καὶ ἡ ζωὴ ἐφανερώθη, ϗ ἑωράκαμεν,
ϗ μαρτυροῦμεν, ϗ ἀπαγγέλλομεν ὑμῖν τὴν
ζωὴν τὴν αἰώνιον, ἥτις ἦν πρὸς τὸν πατέρα,
ϗ ἐφανερώθη ἡμῖν.)
3 Ὃ ἑωράκαμεν ϗ ἀκηκόαμεν, ἀπαγγέλ-
λομεν ὑμῖν, ἵνα ϗ ὑμεῖς κοινωνίαν ἔχητε
μεθ' ἡμῶν· ϗ ἡ κοινωνία δὲ ἡ ἡμετέρα μετὰ
τοῦ πατρὸς ϗ μετὰ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ.
4 Καὶ ταῦτα γράφομεν ὑμῖν, ἵνα ἡ χαρὰ
ὑμῶν ᾖ πεπληρωμένη.
5 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία, ἣν ἀκη-
κόαμεν ἀπ' αὐτοῦ, ϗ ἀναγγέλλομεν ὑμῖν,
ὅτι ὁ Θεὸς φῶς ἐστι, ϗ σκοτία ἐν αὐτῷ οὐκ
ἔστιν οὐδεμία.
6 Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι κοινωνίαν ἔχομεν μετ'
αὐτοῦ, ϗ ἐν τῷ σκότει περιπατῶμεν, ψευδό-
μεθα, ϗ οὐ ποιοῦμεν τὴν ἀλήθειαν·
7 Ἐὰν δὲ ἐν τῷ φωτὶ περιπατῶμεν, ὡς
αὐτός ἐστιν ἐν τῷ φωτὶ, κοινωνίαν ἔχομεν μετ'
ἀλλήλων, ϗ τὸ αἷμα Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Υἱοῦ
αὐτοῦ καθαρίζει ἡμᾶς ἀπὸ πάσης ἁμαρτίας.
8 Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι ἁμαρτίαν οὐκ ἔχομεν,
ἑαυτοὺς πλανῶμεν, ϗ ἡ ἀλήθεια οὐκ ἔστιν ἐν
ἡμῖν.
9 Ἐὰν ὁμολογῶμεν τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν,
πιστός ἐστι ϗ δίκαιος, ἵνα ἀφῇ ἡμῖν τὰς
ἁμαρτίας, ϗ καθαρίσῃ ἡμᾶς ἀπὸ πάσης
ἀδικίας.
10 Ἐὰν εἴπωμεν ὅτι οὐχ ἡμαρτήκαμεν,
ψεύστην ποιοῦμεν αὐτὸν, ϗ ὁ λόγος αὐτοῦ οὐκ
ἔστιν ἐν ἡμῖν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΤΕκνία μου, ταῦτα γράφω ὑμῖν, ἵνα
μὴ ἁμάρτητε· ϗ ἐάν τις ἁμάρ-

τῃ,

τη, παράκλητον ἔχομεν πρὸς τὸν πατέρα,
Ἰησοῦν Χριστὸν δίκαιον.
2 Καὶ αὐτὸς ἱλασμός ἐστι περὶ τῶν ἁμαρ-
τιῶν ἡμῶν· οὐ περὶ τῶν ἡμετέρων δὲ μόνον,
ἀλλὰ καὶ περὶ ὅλου τοῦ κόσμου.
3 Καὶ ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐγνώκαμεν
αὐτὸν, ἐὰν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηρῶμεν.
4 Ὁ λέγων, ἔγνωκα αὐτὸν, καὶ τὰς ἐντο-
λὰς αὐτοῦ μὴ τηρῶν, ψεύστης ἐστὶ, καὶ ἐν τούτῳ
ἡ ἀλήθεια οὐκ ἔστιν.
5 Ὃς δ' ἂν τηρῇ αὐτοῦ τὸν λόγον, ἀληθῶς
ἐν τούτῳ ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ τετελείωται· ἐν τού-
τῳ γινώσκομεν ὅτι ἐν αὐτῷ ἐσμεν.
6 Ὁ λέγων ἐν αὐτῷ μένειν, ὀφείλει, κα-
θὼς ἐκεῖνος περιεπάτησε, καὶ αὐτὸς οὕτως πε-
ριπατεῖν.
7 Ἀδελφοὶ, οὐκ ἐντολὴν καινὴν γράφω
ὑμῖν. ἀλλ' ἐντολὴν παλαιὰν, ἣν εἴχετε ἀπ'
ἀρχῆς· ἡ ἐντολὴ ἡ παλαιά ἐστιν ὁ λόγος ὃν
ἠκούσατε ἀπ' ἀρχῆς.
8 Πάλιν ἐντολὴν καινὴν γράφω ὑμῖν, ὅ
ἐστιν ἀληθὲς ἐν αὐτῷ, καὶ ἐν ὑμῖν· ὅτι ἡ
σκοτία παράγεται, καὶ τὸ φῶς τὸ ἀληθινὸν
ἤδη φαίνει.
9 Ὁ λέγων ἐν τῷ φωτὶ εἶναι, καὶ τὸν ἀδελ-
φὸν αὐτοῦ μισῶν, ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐστὶν ἕως ἄρτι.
10 Ὁ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῷ
φωτὶ μένει, καὶ σκάνδαλον ἐν αὐτῷ οὐκ ἔστιν.
11 Ὁ δὲ μισῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῇ
σκοτίᾳ ἐστὶ, καὶ ἐν τῇ σκοτίᾳ περιπατεῖ,
καὶ οὐκ οἶδε ποῦ ὑπάγει, ὅτι ἡ σκοτία ἐτύ-
φλωσε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ.
12 Γράφω ὑμῖν, τεκνία, ὅτι ἀφέωνται
ὑμῖν αἱ ἁμαρτίαι διὰ τὸ ὄνομα αὐτοῦ.

13 Γρά-

13 Γράφω ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε
τὸν ἀπ' ἀρχῆς. γράφω ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι
νενικήκατε τὸν πονηρόν. γράφω ὑμῖν, παιδία,
ὅτι ἐγνώκατε τὸν πατέρα.

14 Ἔγραψα ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώ-
κατε τὸν ἀπ' ἀρχῆς· ἔγραψα ὑμῖν, νεανίσ-
κοι, ὅτι ἰσχυροί ἐστε, καὶ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ἐν
ὑμῖν μένει, καὶ νενικήκατε τὸν πονηρόν.

15 Μὴ ἀγαπᾶτε τὸν κόσμον, μηδὲ τὰ ἐν
τῷ κόσμῳ· ἐάν τις ἀγαπᾷ τὸν κόσμον, οὐκ
ἔστιν ἡ ἀγάπη τοῦ πατρὸς ἐν αὐτῷ·

16 Ὅτι πᾶν τὸ ἐν τῷ κόσμῳ, ἡ ἐπιθυ-
μία τῆς σαρκὸς, καὶ ἡ ἐπιθυμία τῶν ὀφθαλμῶν,
καὶ ἡ ἀλαζονεία τοῦ βίου οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ πα-
τρὸς, ἀλλ' ἐκ τοῦ κόσμου ἐστί.

17 Καὶ ὁ κόσμος παράγεται, καὶ ἡ ἐπιθυ-
μία αὐτοῦ· ὁ δὲ ποιῶν τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ,
μένει εἰς τὸν αἰῶνα.

18 Παιδία, ἐσχάτη ὥρα ἐστί· καὶ καθὼς
ἠκούσατε ὅτι ὁ ἀντίχριστος ἔρχεται, καὶ νῦν
ἀντίχριστοι πολλοὶ γεγόνασιν· ὅθεν γινώσ-
κομεν ὅτι ἐσχάτη ὥρα ἐστίν.

19 Ἐξ ἡμῶν ἐξῆλθον, ἀλλ' οὐκ ἦσαν ἐξ
ἡμῶν· εἰ γὰρ ἦσαν ἐξ ἡμῶν, μεμενήκεισαν
ἂν μεθ' ἡμῶν· ἀλλ' ἵνα φανερωθῶσιν ὅτι οὐκ
εἰσὶ πάντες ἐξ ἡμῶν.

20 Καὶ ὑμεῖς χρίσμα ἔχετε ἀπὸ τοῦ ἁγίου,
καὶ οἴδατε πάντα.

21 Οὐκ ἔγραψα ὑμῖν ὅτι οὐκ οἴδατε τὴν
ἀλήθειαν, ἀλλ' ὅτι οἴδατε αὐτὴν, καὶ ὅτι
πᾶν ψεῦδος ἐκ τῆς ἀληθείας οὐκ ἔστι.

22 Τίς ἐστιν ὁ ψεύστης, εἰ μὴ ὁ ἀρνούμενος ὅτι
Ἰησοῦς οὐκ ἔστιν ὁ Χριστός; οὗτός ἐστιν ὁ ἀντίχρι-
στος, ὁ ἀρνούμενος τὸν πατέρα, καὶ τὸν Υἱόν.

23 Πᾶς

23 Πᾶς ὁ ἀρνούμενος τὸν Υἱὸν, οὐδὲ τὸν
πατέρα ἔχει.
24 Ὑμεῖς οὖν ὃ ἠκούσατε ἀπ' ἀρχῆς, ἐν
ὑμῖν μενέτω. ἐὰν ἐν ὑμῖν μείνῃ ὃ ἀπ' ἀρχῆς
ἠκούσατε, καὶ ὑμεῖς ἐν τῷ Υἱῷ καὶ ἐν τῷ πα-
τρὶ μενεῖτε.
25 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία, ἣν αὐ-
τὸς ἐπηγγείλατο ἡμῖν, τὴν ζωὴν τὴν αἰώνιον.
26 Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν περὶ τῶν πλανών-
των ὑμᾶς.
27 Καὶ ὑμεῖς τὸ χρίσμα ὃ ἐλάβετε ἀπ' αὐ-
τοῦ, ἐν ὑμῖν μένει, καὶ οὐ χρείαν ἔχετε ἵνα τις
διδάσκῃ ὑμᾶς· ἀλλ' ὡς τὸ αὐτὸ χρίσμα δι-
δάσκει ὑμᾶς περὶ πάντων, καὶ ἀληθές ἐστι,
καὶ οὐκ ἔστι ψεῦδος. καὶ καθὼς ἐδίδαξεν ὑμᾶς,
μενεῖτε ἐν αὐτῷ.
28 Καὶ νῦν, τεκνία, μένετε ἐν αὐτῷ· ἵνα
ὅταν φανερωθῇ, ἔχωμεν παῤῥησίαν, καὶ μὴ αἰ-
σχυνθῶμεν ἀπ' αὐτοῦ, ἐν τῇ παρουσίᾳ αὐτοῦ.
29 Ἐὰν εἰδῆτε ὅτι δίκαιός ἐστι, γινώσ-
κετε ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὴν δικαιοσύνην, ἐξ
αὐτοῦ γεγέννηται.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 Ἴδετε ποταπὴν ἀγάπην δέδωκεν
ἡμῖν ὁ πατὴρ, ἵνα τέκνα Θεοῦ
κληθῶμεν· διὰ τοῦτο ὁ κόσμος οὐ γινώσκει
ἡμᾶς, ὅτι οὐκ ἔγνω αὐτόν.
2 Ἀγαπητοὶ, νῦν τέκνα Θεοῦ ἐσμεν, καὶ
οὔπω ἐφανερώθη τί ἐσόμεθα. οἴδαμεν δὲ ὅτι
ἐὰν φανερωθῇ, ὅμοιοι αὐτῷ ἐσόμεθα· ὅτι
ὀψόμεθα αὐτὸν καθώς ἐστι.
3 Καὶ πᾶς ὁ ἔχων τὴν ἐλπίδα ταύτην ἐπ'
αὐτῷ, ἁγνίζει ἑαυτὸν, καθὼς ἐκεῖνος ἁγνός ἐστι.

4 Πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἁμαρτίαν, καὶ τὴν ἀνο-
μίαν ποιεῖ· καὶ ἡ ἁμαρτία ἐστὶν ἡ ἀνομία.
5 Καὶ οἴδατε ὅτι ἐκεῖνος ἐφανερώθη, ἵνα
τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν ἄρῃ· καὶ ἁμαρτία ἐν αὐ-
τῷ οὐκ ἔστι.
6 Πᾶς ὁ ἐν αὐτῷ μένων, οὐχ ἁμαρτάνει·
πᾶς ὁ ἁμαρτάνων, οὐχ ἑώρακεν αὐτὸν, οὐδὲ
ἔγνωκεν αὐτόν.
7 Τεκνία, μηδεὶς πλανάτω ὑμᾶς· ὁ
ποιῶν τὴν δικαιοσύνην, δίκαιός ἐστι, κα-
θὼς ἐκεῖνος δίκαιός ἐστιν.
8 Ὁ ποιῶν τὴν ἁμαρτίαν, ἐκ τοῦ διαβό-
λου ἐστίν· ὅτι ἀπ' ἀρχῆς ὁ διάβολος ἁμαρ-
τάνει. εἰς τοῦτο ἐφανερώθη ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ἵνα
λύσῃ τὰ ἔργα τοῦ διαβόλου.
9 Πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ τοῦ Θεοῦ, ἁμαρ-
τίαν οὐ ποιεῖ, ὅτι σπέρμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ μέ-
νει· καὶ οὐ δύναται ἁμαρτάνειν, ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ
γεγέννηται.
10 Ἐν τούτῳ φανερά ἐστι τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ, καὶ
τὰ τέκνα τοῦ διαβόλου· πᾶς ὁ μὴ ποιῶν δικαιο-
σύνην, οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ Θεοῦ, καὶ ὁ μὴ ἀγα-
πῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ.
11 Ὅτι αὕτη ἐστὶν ἡ ἀγγελία ἣν ἠκούσα-
τε ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα ἀγαπῶμεν ἀλλήλους·
12 Οὐ καθὼς Κάϊν ἐκ τοῦ πονηροῦ ἦν, καὶ
ἔσφαξε τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ. καὶ χάριν τίνος ἔσ-
φαξεν αὐτόν; ὅτι τὰ ἔργα αὐτοῦ πονηρὰ ἦν,
τὰ δὲ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, δίκαια.
13 Μὴ θαυμάζετε, ἀδελφοί μου, εἰ μι-
σεῖ ὑμᾶς ὁ κόσμος.
14 Ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι μεταβεβήκα-
μεν ἐκ τοῦ θανάτου εἰς τὴν ζωὴν,
ὅτι ἀγαπῶμεν τοὺς ἀδελφούς. ὁ μὴ

ἀγα-

ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν, μένει ἐν τῷ θανάτῳ.

15 Πᾶς ὁ μισῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἀνθρωποκτόνος ἐστί· καὶ οἴδατε ὅτι πᾶς ἀνθρωποκτόνος οὐκ ἔχει ζωὴν αἰώνιον ἐν αὐτῷ μένουσαν.

16 Ἐν τούτῳ ἐγνώκαμεν τὴν ἀγάπην, ὅτι ἐκεῖνος ὑπὲρ ἡμῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἔθηκε· καὶ ἡμεῖς ὀφείλομεν ὑπὲρ τῶν ἀδελφῶν τὰς ψυχὰς τιθέναι.

17 Ὃς δ᾽ ἂν ἔχῃ τὸν βίον τοῦ κόσμου, καὶ θεωρῇ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ χρείαν ἔχοντα, καὶ κλείσῃ τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ ἀπ᾽ αὐτοῦ, πῶς ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ μένει ἐν αὐτῷ;

18 Τεκνία μου, μὴ ἀγαπῶμεν λόγῳ, μηδὲ γλώσσῃ, ἀλλ᾽ ἔργῳ καὶ ἀληθείᾳ.

19 Καὶ ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐκ τῆς ἀληθείας ἐσμὲν, καὶ ἔμπροσθεν αὐτοῦ πείσομεν τὰς καρδίας ἡμῶν.

20 Ὅτι ἐὰν καταγινώσκῃ ἡμῶν ἡ καρδία, ὅτι μείζων ἐστὶν ὁ Θεὸς τῆς καρδίας ἡμῶν, καὶ γινώσκει πάντα.

21 Ἀγαπητοὶ, ἐὰν ἡ καρδία ἡμῶν μὴ καταγινώσκῃ ἡμῶν, παῤῥησίαν ἔχομεν πρὸς τὸν Θεόν.

22 Καὶ ὃ ἐὰν αἰτῶμεν, λαμβάνομεν παρ᾽ αὐτοῦ, ὅτι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηροῦμεν, καὶ τὰ ἀρεστὰ ἐνώπιον αὐτοῦ ποιοῦμεν.

23 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολὴ αὐτοῦ, ἵνα πιστεύσωμεν τῷ ὀνόματι τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ, Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, καθὼς ἔδωκεν ἐντολὴν ἡμῖν.

24 Καὶ ὁ τηρῶν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, ἐν αὐτῷ μένει, καὶ αὐτὸς ἐν αὐτῷ· καὶ ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι μένει ἐν ἡμῖν, ἐκ τοῦ Πνεύματος οὗ ἡμῖν ἔδωκεν.

ΚΕ-

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ἈΓαπητοί, μὴ παντὶ Πνεύματι
πιστεύετε, ἀλλὰ δοκιμάζετε τὰ
Πνεύματα εἰ ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστιν· ὅτι πολλοὶ ψευ-
δοπροφῆται ἐξεληλύθασιν εἰς τὸν κόσμον.
2 Ἐν τούτῳ γινώσκετε τὸ Πνεῦμα τοῦ Θεοῦ·
πᾶν Πνεῦμα ὃ ὁμολογεῖ Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν
σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστι.
3 Καὶ πᾶν Πνεῦμα ὃ μὴ ὁμολογεῖ τὸν
Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ τοῦ
Θεοῦ οὐκ ἔστι. καὶ τοῦτό ἐστι τὸ τοῦ ἀντιχρίστου, ὃ
ἀκηκόατε ὅτι ἔρχεται, καὶ νῦν ἐν τῷ κόσμῳ
ἐστὶν ἤδη.
4 Ὑμεῖς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστε, τεκνία, καὶ νε-
νικήκατε αὐτούς· ὅτι μείζων ἐστὶν ὁ ἐν ὑμῖν ἢ
ὁ ἐν τῷ κόσμῳ.
5 Αὐτοὶ ἐκ τοῦ κόσμου εἰσί, διὰ τοῦτο ἐκ
τοῦ κόσμου λαλοῦσι, καὶ ὁ κόσμος αὐτῶν ἀκούει.
6 Ἡμεῖς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμεν· ὁ γινώσκων τὸν
Θεόν, ἀκούει ἡμῶν· ὃς οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ Θεοῦ, οὐκ
ἀκούει ἡμῶν. ἐκ τούτου γινώσκομεν τὸ Πνεῦμα
τῆς ἀληθείας καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς πλάνης.
7 Ἀγαπητοί, ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, ὅτι
ἡ ἀγάπη ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστι· καὶ πᾶς ὁ ἀγαπῶν,
ἐκ Θεοῦ γεγέννηται, καὶ γινώσκει τὸν Θεόν.
8 Ὁ μὴ ἀγαπῶν, οὐκ ἔγνω τὸν Θεόν· ὅτι
ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστίν.
9 Ἐν τούτῳ ἐφανερώθη ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ
ἐν ἡμῖν, ὅτι τὸν Υἱὸν αὐτοῦ τὸν μονογενῆ ἀ-
πέσταλκεν ὁ Θεὸς εἰς τὸν κόσμον, ἵνα ζή-
σωμεν δι' αὐτοῦ.
10 Ἐν τούτῳ ἐστὶν ἡ ἀγάπη, οὐχ ὅτι ἡμεῖς
ἠγαπήσαμεν τὸν Θεόν, ἀλλ' ὅτι αὐτὸς ἠγά-

πησεν ἡμᾶς, καὶ ἀπέστειλε τὸν Υἱὸν αὐτοῦ ἱλασμὸν περὶ τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν.

11 Ἀγαπητοί, εἰ οὕτως ὁ Θεὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς, καὶ ἡμεῖς ὀφείλομεν ἀλλήλους ἀγαπᾶν.

12 Θεὸν οὐδεὶς πώποτε τεθέαται. ἐὰν ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν μένει, καὶ ἡ ἀγάπη αὐτοῦ τετελειωμένη ἐστὶν ἐν ἡμῖν.

13 Ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐν αὐτῷ μένομεν, καὶ αὐτὸς ἐν ἡμῖν, ὅτι ἐκ τοῦ Πνεύματος αὐτοῦ δέδωκεν ἡμῖν.

14 Καὶ ἡμεῖς τεθεάμεθα, καὶ μαρτυροῦμεν ὅτι ὁ Πατὴρ ἀπέσταλκε τὸν Υἱὸν Σωτῆρα τοῦ κόσμου.

15 Ὃς ἂν ὁμολογήσῃ ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ μένει, καὶ αὐτὸς ἐν τῷ Θεῷ.

16 Καὶ ἡμεῖς ἐγνώκαμεν καὶ πεπιστεύκαμεν τὴν ἀγάπην ἣν ἔχει ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν. ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστί· καὶ ὁ μένων ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἐν τῷ Θεῷ μένει, καὶ ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ.

17 Ἐν τούτῳ τετελείωται ἡ ἀγάπη μεθ' ἡμῶν, ἵνα παῤῥησίαν ἔχομεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς κρίσεως, ὅτι καθὼς ἐκεῖνός ἐστι, καὶ ἡμεῖς ἐσμεν ἐν τῷ κόσμῳ τούτῳ.

18 Φόβος οὐκ ἔστιν ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἀλλ' ἡ τελεία ἀγάπη ἔξω βάλλει τὸν φόβον· ὅτι ὁ φόβος κόλασιν ἔχει· ὁ δὲ φοβούμενος οὐ τετελείωται ἐν τῇ ἀγάπῃ.

19 Ἡμεῖς ἀγαπῶμεν αὐτὸν, ὅτι αὐτὸς πρῶτος ἠγάπησεν ἡμᾶς.

20 Ἐάν τις εἴπῃ· Ὅτι ἀγαπῶ τὸν Θεὸν, καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ μισῇ, ψεύστης ἐστίν· ὁ γὰρ μὴ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ὃν ἑώρακε, τὸν Θεὸν ὃν οὐχ ἑώρακε, πῶς δύναται ἀγαπᾶν;

21 Καὶ

21 Καὶ ταύτην τὴν ἐντολὴν ἔχομεν ἀπ' αὐτοῦ, ἵνα ὁ ἀγαπῶν τὸν Θεὸν, ἀγαπᾷ καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 Πᾶς ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Χριστὸς, ἐκ τοῦ Θεοῦ γεγέννηται· καὶ πᾶς ὁ ἀγαπῶν τὸν γεννήσαντα, ἀγαπᾷ καὶ τὸν γεγεννημένον ἐξ αὐτοῦ.

2 Ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἀγαπῶμεν τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ, ὅταν τὸν Θεὸν ἀγαπῶμεν, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηρῶμεν.

3 Αὕτη γάρ ἐστιν ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ, ἵνα τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηρῶμεν· καὶ αἱ ἐντολαὶ αὐτοῦ βαρεῖαι οὐκ εἰσίν.

4 Ὅτι πᾶν τὸ γεγεννημένον ἐκ τοῦ Θεοῦ νικᾷ τὸν κόσμον· καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ νίκη ἡ νικήσασα τὸν κόσμον, ἡ πίστις ἡμῶν.

5 Τίς ἐστιν ὁ νικῶν τὸν κόσμον, εἰ μὴ ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ;

6 Οὗτός ἐστιν ὁ ἐλθὼν δι' ὕδατος καὶ αἵματος, Ἰησοῦς ὁ Χριστός· οὐκ ἐν τῷ ὕδατι μόνον, ἀλλ' ἐν τῷ ὕδατι καὶ τῷ αἵματι· καὶ τὸ Πνεῦμά ἐστι τὸ μαρτυροῦν, ὅτι τὸ Πνεῦμά ἐστιν ἡ ἀλήθεια.

7 Ὅτι τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῷ οὐρανῷ, ὁ Πατὴρ, ὁ Λόγος, καὶ τὸ ἅγιον Πνεῦμα· καὶ οὗτοι οἱ τρεῖς ἕν εἰσι.

8 Καὶ τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῇ γῇ, τὸ Πνεῦμα, καὶ τὸ ὕδωρ, καὶ τὸ αἷμα· καὶ οἱ τρεῖς εἰς τὸ ἕν εἰσι.

9 Εἰ τὴν μαρτυρίαν τῶν ἀνθρώπων λαμβάνομεν, ἡ μαρτυρία τοῦ Θεοῦ μείζων ἐστίν· ὅτι αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ Θεοῦ ἣν μεμαρτύρηκε περὶ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ.

10 Ὁ πιστεύων εἰς τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ, ἔ-
χει τὴν μαρτυρίαν ἐν ἑαυτῷ· ὁ μὴ πιστεύων
τῷ Θεῷ, ψεύστην πεποίηκεν αὐτὸν, ὅτι οὐ
πεπίστευκεν εἰς τὴν μαρτυρίαν ἣν μεμαρτύ-
ρηκεν ὁ Θεὸς περὶ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ.
11 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία, ὅτι ζωὴν
αἰώνιον ἔδωκεν ἡμῖν ὁ Θεός· καὶ αὕτη ἡ
ζωὴ ἐν τῷ Υἱῷ αὐτοῦ ἐστιν.
12 Ὁ ἔχων τὸν Υἱὸν, ἔχει τὴν ζωήν· ὁ μὴ
ἔχων τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ, τὴν ζωὴν οὐκ ἔχει.
13 Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν τοῖς πιστεύουσιν
εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ· ἵνα εἰδῆτε ὅτι
ζωὴν ἔχετε αἰώνιον, καὶ ἵνα πιστεύητε εἰς τὸ
ὄνομα τοῦ Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.
14 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ παῤῥησία ἣν ἔχομεν
πρὸς αὐτὸν, ὅτι ἐάν τι αἰτώμεθα κατὰ τὸ
θέλημα αὐτοῦ, ἀκούει ἡμῶν.
15 Καὶ ἐὰν οἴδαμεν ὅτι ἀκούει ἡμῶν, ὃ
ἂν αἰτώμεθα, οἴδαμεν ὅτι ἔχομεν τὰ αἰτή-
ματα ἃ ᾐτήκαμεν παρ' αὐτοῦ.
16 Ἐάν τις ἴδῃ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἁμαρ-
τάνοντα ἁμαρτίαν μὴ πρὸς θάνατον, αἰτήσει,
καὶ δώσει αὐτῷ ζωὴν, τοῖς ἁμαρτάνουσι μὴ
πρὸς θάνατον. ἔστιν ἁμαρτία πρὸς θάνατον·
οὐ περὶ ἐκείνης λέγω ἵνα ἐρωτήσῃ.
17 Πᾶσα ἀδικία ἁμαρτία ἐστί· καὶ ἔστιν
ἁμαρτία οὐ πρὸς θάνατον.
18 Οἴδαμεν ὅτι πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ
τοῦ Θεοῦ, οὐχ ἁμαρτάνει· ἀλλ' ὁ γεννηθεὶς ἐκ
τοῦ Θεοῦ, τηρεῖ ἑαυτὸν, καὶ ὁ πονηρὸς οὐχ ἅ-
πτεται αὐτοῦ.
19 Οἴδαμεν ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμεν, καὶ ὁ
κόσμος ὅλος ἐν τῷ πονηρῷ κεῖται.
20 Οἴδαμεν δὲ ὅτι ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ ἥκει,
καὶ

καὶ δέδωκεν ἡμῖν διάνοιαν ἵνα γινώσκωμεν τὸν ἀληθινόν· καί ἐσμεν ἐν τῷ ἀληθινῷ, καὶ τῷ Υἱῷ αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστῷ· οὗτός ἐστιν ὁ ἀληθινὸς Θεὸς, καὶ ἡ ζωὴ αἰώνιος.

21 Τεκνία, φυλάξατε ἑαυτοὺς ἀπὸ τῶν εἰδώλων. Ἀμήν.

ΙΩΑΝΝΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

ΚΑΘΟΛΙΚΗ, Β'.

1 Ὁ Πρεσβύτερος ἐκλεκτῇ κυρίᾳ, καὶ τοῖς τέκνοις αὐτῆς, οὓς ἐγὼ ἀγαπῶ ἐν ἀληθείᾳ, καὶ οὐκ ἐγὼ μόνος, ἀλλὰ καὶ πάντες οἱ ἐγνωκότες τὴν ἀλήθειαν·

2 Διὰ τὴν ἀλήθειαν τὴν μένουσαν ἐν ἡμῖν, καὶ μεθ' ἡμῶν ἔσται εἰς τὸν αἰῶνα.

3 Ἔσται μεθ' ὑμῶν χάρις, ἔλεος, εἰρήνη παρὰ Θεοῦ Πατρὸς, καὶ παρὰ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Υἱοῦ τοῦ Πατρὸς, ἐν ἀληθείᾳ καὶ ἀγάπῃ.

4 Ἐχάρην λίαν ὅτι εὕρηκα ἐκ τῶν τέκνων σου περιπατοῦντας ἐν ἀληθείᾳ, καθὼς ἐντολὴν ἐλάβομεν παρὰ τοῦ Πατρός.

5 Καὶ νῦν ἐρωτῶ σε, κυρία, οὐχ ὡς ἐντολὴν γράφων σοι καινὴν, ἀλλὰ ἣν εἴχομεν ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα ἀγαπῶμεν ἀλλήλους.

6 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἀγάπη, ἵνα περιπατῶμεν κατὰ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ. αὕτη ἐστὶν ἡ

ἐντολὴ, καθὼς ἠκούσατε ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα ἐν
αὐτῇ περιπατῆτε.
7 Ὅτι πολλοὶ πλάνοι εἰσῆλθον εἰς τὸν
κόσμον, οἱ μὴ ὁμολογοῦντες Ἰησοῦν Χριστὸν
ἐρχόμενον ἐν σαρκί· οὗτός ἐστιν ὁ πλάνος καὶ ὁ
ἀντίχριστος.
8 Βλέπετε ἑαυτοὺς, ἵνα μὴ ἀπολέσωμεν
ἃ εἰργασάμεθα, ἀλλὰ μισθὸν πλήρη ἀπο-
λάβωμεν.
9 Πᾶς ὁ παραβαίνων, καὶ μὴ μένων ἐν
τῇ διδαχῇ τοῦ Χριστοῦ, Θεὸν οὐκ ἔχει. ὁ μέ-
νων ἐν τῇ διδαχῇ τοῦ Χριστοῦ, οὗτος καὶ τὸν
Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ἔχει.
10 Εἴτις ἔρχεται πρὸς ὑμᾶς, καὶ ταύτην
τὴν διδαχὴν οὐ φέρει, μὴ λαμβάνετε αὐτὸν
εἰς οἰκίαν, καὶ χαίρειν αὐτῷ μὴ λέγετε·
11 Ὁ γὰρ λέγων αὐτῷ χαίρειν, κοινω-
νεῖ τοῖς ἔργοις αὐτοῦ τοῖς πονηροῖς.
12 Πολλὰ ἔχων ὑμῖν γράφειν, οὐκ ἐβου-
λήθην διὰ χάρτου καὶ μέλανος· ἀλλὰ ἐλπίζω
ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς, καὶ στόμα πρὸς στόμα λα-
λῆσαι, ἵνα ἡ χαρὰ ἡμῶν ᾖ πεπληρωμένη.
13 Ἀσπάζεταί σε τὰ τέκνα τῆς ἀδελφῆς
σου τῆς ἐκλεκτῆς. Ἀμήν.

ΙΩΑΝ-

ΙΩΑΝΝΟΥ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ
ΕΠΙΣΤΟΛΗ
ΚΑΘΟΛΙΚΗ, Γ'.

1 Ὁ Πρεσβύτερος Γαΐῳ τῷ ἀγαπη-
τῷ, ὃν ἐγὼ ἀγαπῶ ἐν ἀληθείᾳ.
2 Ἀγαπητὲ, περὶ πάντων εὔχομαί σε
εὐοδοῦσθαι καὶ ὑγιαίνειν, καθὼς εὐοδοῦταί σου
ἡ ψυχή.
3 Ἐχάρην γὰρ λίαν ἐρχομένων ἀδελφῶν,
καὶ μαρτυρούντων σου τῇ ἀληθείᾳ, καθὼς σὺ
ἐν ἀληθείᾳ περιπατεῖς.
4 Μειζοτέραν τούτων οὐκ ἔχω χαρὰν, ἵνα
ἀκούω τὰ ἐμὰ τέκνα ἐν ἀληθείᾳ περιπατοῦντα.
5 Ἀγαπητὲ, πιστὸν ποιεῖς ὃ ἐὰν ἐργάσῃ
εἰς τοὺς ἀδελφοὺς καὶ εἰς τοὺς ξένους,
6 Οἳ ἐμαρτύρησάν σου τῇ ἀγάπῃ ἐνώπιον
ἐκκλησίας· οὓς καλῶς ποιήσεις προπέμψας
ἀξίως τοῦ Θεοῦ.
7 Ὑπὲρ γὰρ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ ἐξῆλθον
μηδὲν λαμβάνοντες ἀπὸ τῶν ἐθνῶν.
8 Ἡμεῖς οὖν ὀφείλομεν ἀπολαμβάνειν τοὺς
τοιούτους, ἵνα συνεργοὶ γινώμεθα τῇ ἀληθείᾳ.
9 Ἔγραψα τῇ ἐκκλησίᾳ· ἀλλ' ὁ φιλο-
πρωτεύων αὐτῶν Διοτρεφὴς οὐκ ἐπιδέχεται
ἡμᾶς.
10 Διὰ τοῦτο, ἐὰν ἔλθω, ὑπομνήσω αὐ-
τοῦ τὰ ἔργα ἃ ποιεῖ, λόγοις πονηροῖς φλυαρῶν

ἡμᾶς· καὶ μὴ ἀρκούμενος ἐπὶ τούτοις, οὔτε αὐ-
τὸς ἐπιδέχεται τοὺς ἀδελφοὺς, καὶ τοὺς βουλο-
μένους κωλύει, καὶ ἐκ τῆς ἐκκλησίας ἐκ-
βάλλει.
11 Ἀγαπητὲ, μὴ μιμοῦ τὸ κακὸν, ἀλλὰ
τὸ ἀγαθόν· ὁ ἀγαθοποιῶν, ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐ-
στιν· ὁ δὲ κακοποιῶν, οὐχ ἑώρακε τὸν Θεόν.
12 Δημητρίῳ μεμαρτύρηται ὑπὸ πάντων,
καὶ ὑπ' αὐτῆς τῆς ἀληθείας· καὶ ἡμεῖς δὲ μαρ-
τυροῦμεν, καὶ οἴδατε ὅτι ἡ μαρτυρία ἡμῶν
ἀληθής ἐστι.
13 Πολλὰ εἶχον γράφειν, ἀλλ' οὐ θέλω
διὰ μέλανος καὶ καλάμου σοι γράψαι.
14 Ἐλπίζω δὲ εὐθέως ἰδεῖν σε, καὶ στόμα
πρὸς στόμα λαλήσομεν.
15 Εἰρήνη σοι. ἀσπάζονταί σε οἱ φίλοι.
Ἀσπάζου τοὺς φίλους κατ' ὄνομα.

ΙΟΥΔΑ τοῦ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

ΚΑΘΟΛΙΚΗ.

1 ΙΟΥΔΑΣ Ἰησοῦ Χριστοῦ δοῦλος,
ἀδελφὸς δὲ Ἰακώβου, τοῖς ἐν Θεῷ
Πατρὶ ἡγιασμένοις, καὶ Ἰησοῦ Χρι-
στῷ τετηρημένοις κλητοῖς·
2 Ἔλεος ὑμῖν καὶ εἰρήνη καὶ ἀγάπη πλη-
θυνθείη.
3 Ἀγαπητοὶ, πᾶσαν σπουδὴν ποιούμενος
γράφειν ὑμῖν περὶ τῆς κοινῆς σωτηρίας, ἀνάγ-

κίω ἔχον γράψαι ὑμῖν, παρακαλῶν ἐπαγωνί-
ζεσθαι τῇ ἅπαξ παραδοθείσῃ τοῖς ἁγίοις πίστει.
4 Παρεισέδυσαν γάρ τινες ἄνθρωποι οἱ
πάλαι προγεγραμμένοι εἰς τοῦτο τὸ κρῖμα, ἀ-
σεβεῖς, τὴν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν χάριν μετατιθέντες
εἰς ἀσέλγειαν, καὶ τὸν μόνον δεσπότην Θεὸν
καὶ Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν ἀρνούμενοι.
5 Ὑπομνῆσαι δὲ ὑμᾶς βούλομαι, εἰδό-
τας ὑμᾶς ἅπαξ τοῦτο, ὅτι ὁ Κύριος λαὸν ἐκ
γῆς Αἰγύπτου σώσας, τὸ δεύτερον τοὺς μὴ πι-
στεύσαντας ἀπώλεσεν.
6 Ἀγγέλους τε τοὺς μὴ τηρήσαντας τὴν
ἑαυτῶν ἀρχὴν, ἀλλὰ ἀπολιπόντας τὸ ἴδιον
οἰκητήριον, εἰς κρίσιν μεγάλης ἡμέρας,
δεσμοῖς ἀϊδίοις ὑπὸ ζόφον τετήρηκεν.
7 Ὡς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ αἱ περὶ
αὐτὰς πόλεις τὸν ὅμοιον τούτοις τρόπον ἐκπορ-
νεύσασαι, καὶ ἀπελθοῦσαι ὀπίσω σαρκὸς ἑτέ-
ρας, πρόκεινται δεῖγμα, πυρὸς αἰωνίου δί-
κην ὑπέχουσαι.
8 Ὁμοίως μέντοι καὶ οὗτοι ἐνυπνιαζόμενοι,
σάρκα μὲν μιαίνουσι, κυριότητα δὲ ἀθετοῦσι,
δόξας δὲ βλασφημοῦσιν.
9 Ὁ δὲ Μιχαὴλ ὁ ἀρχάγγελος ὅτε τῷ
διαβόλῳ διακρινόμενος διελέγετο περὶ τοῦ
Μωσέως σώματος, οὐκ ἐτόλμησε κρίσιν ἐ-
πενεγκεῖν βλασφημίας· ἀλλ' εἶπεν· Ἐπι-
τιμήσαι σοι Κύριος.
10 Οὗτοι δὲ ὅσα μὲν οὐκ οἴδασι βλασφη-
μοῦσιν· ὅσα δὲ φυσικῶς, ὡς τὰ ἄλογα ζῶα,
ἐπίστανται, ἐν τούτοις φθείρονται.
11 Οὐαὶ αὐτοῖς ὅτι τῇ ὁδῷ τοῦ Κάϊν ἐπορεύ-
θησαν, καὶ τῇ πλάνῃ τοῦ Βαλαὰμ μισθοῦ ἐξε-
χύθησαν, καὶ τῇ ἀντιλογίᾳ τοῦ Κορὲ ἀπώλοντο.



12 Οὗτοί εἰσιν ἐν ταῖς ἀγάπαις ὑμῶν σπι-
λάδες, συνευωχούμενοι, ἀφόβως ἑαυτοὺς ποι-
μαίνοντες· νεφέλαι ἄνυδροι, ὑπὸ ἀνέμων
περιφερόμεναι, δένδρα φθινοπωρινὰ, ἄκαρ-
πα, δὶς ἀποθανόντα, ἐκριζωθέντα.
13 Κύματα ἄγρια θαλάσσης, ἐπαφρίζον-
τα τὰς ἑαυτῶν αἰσχύνας· ἀστέρες πλανῆται,
οἷς ὁ ζόφος τοῦ σκότους εἰς τὸν αἰῶνα τετήρηται.
14 Προεφήτευσε δὲ καὶ τούτοις ἕβδομος ἀ-
πὸ Ἀδὰμ Ἐνώχ, λέγων· Ἰδοὺ, ἦλθε
Κύριος ἐν μυριάσιν ἁγίαις αὐτοῦ.
15 Ποιῆσαι κρίσιν κατὰ πάντων, καὶ ἐξε-
λέγξαι πάντας τοὺς ἀσεβεῖς αὐτῶν περὶ πάν-
των τῶν ἔργων ἀσεβείας αὐτῶν ὧν ἠσέβησαν,
καὶ περὶ πάντων τῶν σκληρῶν ὧν ἐλάλησαν
κατ᾽ αὐτοῦ ἁμαρτωλοὶ ἀσεβεῖς.
16 Οὗτοί εἰσι γογγυσταὶ, μεμψίμοιροι,
κατὰ τὰς ἐπιθυμίας αὐτῶν πορευόμενοι· καὶ
τὸ στόμα αὐτῶν λαλεῖ ὑπέρογκα, θαυμά-
ζοντες πρόσωπα, ὠφελείας χάριν·
17 Ὑμεῖς δὲ ἀγαπητοὶ μνήσθητε τῶν ῥη-
μάτων τῶν προειρημένων ὑπὸ τῶν ἀποστόλων
τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
18 Ὅτι ἔλεγον ὑμῖν, ὅτι ἐν ἐσχάτῳ χρό-
νῳ ἔσονται ἐμπαῖκται, κατὰ τὰς ἑαυτῶν ἐπι-
θυμίας πορευόμενοι τῶν ἀσεβειῶν.
19 Οὗτοί εἰσιν οἱ ἀποδιορίζοντες ἑαυτοὺς,
ψυχικοὶ, Πνεῦμα μὴ ἔχοντες.
20 Ὑμεῖς δὲ, ἀγαπητοὶ, τῇ ἁγιωτάτῃ
ὑμῶν πίστει ἐποικοδομοῦντες ἑαυτοὺς, ἐν
Πνεύματι ἁγίῳ προσευχόμενοι,
21 Ἑαυτοὺς ἐν ἀγάπῃ Θεοῦ τηρήσατε,
προσδεχόμενοι τὸ ἔλεος τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰη-
σοῦ Χριστοῦ εἰς ζωὴν αἰώνιον.

22 Καὶ

22 Καὶ οὓς μὲν ἐλεεῖτε διακρινόμενοι·
23 Οὓς δὲ ἐν φόβῳ σώζετε, ἐκ τοῦ πυ-
ρὸς ἁρπάζοντες, μισοῦντες καὶ τὸν ἀπὸ τῆς
σαρκὸς ἐσπιλωμένον χιτῶνα.
24 Τῷ δὲ δυναμένῳ φυλάξαι ὑμᾶς ἀπ-
ταίστους, καὶ στῆσαι κατενώπιον τῆς δόξης αὐ-
τοῦ ἀμώμους ἐν ἀγαλλιάσει.
25 Μόνῳ σοφῷ Θεῷ σωτῆρι ἡμῶν δόξα
καὶ μεγαλωσύνη, κράτος καὶ ἐξουσία, καὶ νῦν
καὶ εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας. Ἀμήν.

ΑΠΟΚΑΛΥΨΙΣ

ΙΩΑΝΝΟΥ

ΤΟΥ ΘΕΟΛΟΓΟΥ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Α'. 1.

1 ΑΠΟΚΑΛΥΨΙΣ Ἰησοῦ
Χριστοῦ, ἣν ἔδωκεν αὐτῷ ὁ Θεὸς,
δεῖξαι τοῖς δούλοις αὐτοῦ ἃ δεῖ
γενέσθαι ἐν τάχει· καὶ ἐσήμανεν ἀποστείλας
διὰ τοῦ ἀγγέλου αὐτοῦ τῷ δούλῳ αὐτοῦ Ἰωάννῃ·
2 Ὃς ἐμαρτύρησε τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, καὶ
τὴν μαρτυρίαν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὅσα τε εἶδε.
3 Μακάριος ὁ ἀναγινώσκων, καὶ οἱ ἀκούον-
τες τοὺς λόγους τῆς προφητείας, καὶ τηροῦντες
τὰ ἐν αὐτῇ γεγραμμένα. ὁ γὰρ καιρὸς ἐγγύς.
4 Ἰωάννης ταῖς ἑπτὰ ἐκκλησίαις ταῖς ἐν
τῇ Ἀσίᾳ· χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη ἀπὸ τοῦ ὁ ὢν

ϗ ὁ ἦν ϗ ὁ ἐρχόμενος· ϗ ἀπὸ τῶν ἑπτὰ Πνευ-
μάτων ἃ ἐστιν ἐνώπιον τοῦ θρόνου αὐτοῦ·

5 Καὶ ἀπὸ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ μάρτυς ὁ πι-
στὸς, ὁ πρωτότοκος ἐκ τῶν νεκρῶν, ϗ ὁ ἄρχων
τῶν βασιλέων τῆς γῆς· τῷ ἀγαπήσαντι ἡ-
μᾶς, ϗ λούσαντι ἡμᾶς ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν ἡ-
μῶν ἐν τῷ αἵματι αὐτοῦ.

6 Καὶ ἐποίησεν ἡμᾶς βασιλεῖς ϗ ἱερεῖς
τῷ Θεῷ ϗ Πατρὶ αὐτοῦ· αὐτῷ ἡ δόξα ϗ τὸ
κράτος εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

7 Ἰδοὺ, ἔρχεται μετὰ τῶν νεφελῶν, ϗ ὄ-
ψεται αὐτὸν πᾶς ὀφθαλμὸς, ϗ οἵτινες αὐτὸν
ἐξεκέντησαν· ϗ κόψονται ἐπ' αὐτὸν πᾶσαι
αἱ φυλαὶ τῆς γῆς. ναὶ, ἀμήν.

8 Ἐγώ εἰμι τὸ Α ϗ τὸ Ω, ἀρχὴ ϗ τέ-
λος, λέγει ὁ Κύριος, ὁ ὢν ϗ ὁ ἦν ϗ ὁ ἐρ-
χόμενος, ὁ παντοκράτωρ.

9 Ἐγὼ Ἰωάννης ὁ ϗ ἀδελφὸς ὑμῶν, καὶ
συγκοινωνὸς ἐν τῇ θλίψει καὶ ἐν τῇ βασι-
λείᾳ ϗ ὑπομονῇ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐγενόμην ἐν
τῇ νήσῳ τῇ καλουμένῃ Πάτμῳ, διὰ τὸν λό-
γον τοῦ Θεοῦ καὶ διὰ τὴν μαρτυρίαν Ἰησοῦ
Χριστοῦ.

10 Ἐγενόμην ἐν Πνεύματι ἐν τῇ κυρια-
κῇ ἡμέρᾳ· ϗ ἤκουσα ὀπίσω μου φωνὴν μεγά-
λην ὡς σάλπιγγος,

11 Λεγούσης· Ἐγώ εἰμι τὸ Α ϗ τὸ Ω,
ὁ πρῶτος καὶ ὁ ἔσχατος· καὶ· Ὃ βλέπεις
γράψον εἰς βιβλίον, ϗ πέμψον ταῖς ἐκκλη-
σίαις ταῖς ἐν Ἀσίᾳ, εἰς Ἔφεσον, καὶ εἰς
Σμύρναν, ϗ εἰς Πέργαμον, ϗ εἰς Θυάτει-
ρα, ϗ εἰς Σάρδεις, ϗ εἰς Φιλαδέλφειαν,
καὶ εἰς Λαοδίκειαν.

12 Καὶ ἐπέστρεψα βλέπειν τὴν φωνὴν ἥτις
ἐλά-

ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ· καὶ ἐπιστρέψας εἶδον ἑπτὰ
λυχνίας χρυσᾶς.
13 Καὶ ἐν μέσῳ τῶν ἑπτὰ λυχνιῶν ὅμοιον
Υἱῷ ἀνθρώπου, ἐνδεδυμένον ποδήρη, καὶ πε-
ριεζωσμένον πρὸς τοῖς μαστοῖς ζώνην χρυσῆν.
14 Ἡ δὲ κεφαλὴ αὐτοῦ καὶ αἱ τρίχες λευκαὶ
ὡσεὶ ἔριον λευκὸν, ὡς χιών· καὶ οἱ ὀφθαλ-
μοὶ αὐτοῦ ὡς φλὸξ πυρός·
15 Καὶ οἱ πόδες αὐτοῦ ὅμοιοι χαλκολι-
βάνῳ, ὡς ἐν καμίνῳ πεπυρωμένοι· καὶ ἡ φω-
νὴ αὐτοῦ ὡς φωνὴ ὑδάτων πολλῶν.
16 Καὶ ἔχων ἐν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ χειρὶ ἀστέρας
ἑπτά. καὶ ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ ῥομφαία δί-
στομος ὀξεῖα ἐκπορευομένη· καὶ ἡ ὄψις αὐτοῦ
ὡς ὁ ἥλιος φαίνει ἐν τῇ δυνάμει αὐτοῦ.
17 Καὶ ὅτε εἶδον αὐτὸν, ἔπεσα πρὸς τοὺς
πόδας αὐτοῦ ὡς νεκρός· καὶ ἐπέθηκε τὴν δε-
ξιὰν αὐτοῦ χεῖρα ἐπ' ἐμὲ, λέγων μοι· Μὴ
φοβοῦ· ἐγώ εἰμι ὁ πρῶτος καὶ ὁ ἔσχατος.
18 Καὶ ὁ ζῶν, καὶ ἐγενόμην νεκρὸς, καὶ
ἰδοὺ ζῶν εἰμι εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων· ἀ-
μήν· καὶ ἔχω τὰς κλεῖς τοῦ ᾅδου καὶ τοῦ θανάτου.
19 Γράψον ἃ εἶδες, καὶ ἅ εἰσι, καὶ ἃ μέλ-
λει γίνεσθαι μετὰ ταῦτα.
20 Τὸ μυστήριον τῶν ἑπτὰ ἀστέρων ὧν εἶ-
δες ἐπὶ τῆς δεξιᾶς μου, καὶ τὰς ἑπτὰ λυχνίας
τὰς χρυσᾶς· οἱ ἑπτὰ ἀστέρες, ἄγγελοι τῶν
ἑπτὰ ἐκκλησιῶν εἰσι· καὶ αἱ ἑπτὰ λυχνίαι ἃς
εἶδες, ἑπτὰ ἐκκλησίαι εἰσί.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Β'. 2.

1 ΤΩ ἀγγέλῳ τῆς Ἐφεσίνης ἐκκλησίας
γράψον· Τάδε λέγει ὁ κρατῶν τοὺς
ἑπτὰ ἀστέρας ἐν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, ὁ περιπατῶν
ἐν μέσῳ τῶν ἑπτὰ λυχνιῶν τῶν χρυσῶν.

2 Οἰ-

2 Οἶδα τὰ ἔργα σου, καὶ τὸν κόπον σου, καὶ
τὴν ὑπομονήν σου, καὶ ὅτι οὐ δύνῃ βαστάσαι κα-
κούς· καὶ ἐπειράσω τοὺς φάσκοντας εἶναι ἀποστό-
λους, καὶ οὐκ εἰσί· καὶ εὗρες αὐτοὺς ψευδεῖς·
3 Καὶ ἐβάστασας, καὶ ὑπομονὴν ἔχεις, καὶ διὰ
τὸ ὄνομά μου κεκοπίακας, καὶ οὐ κέκμηκας.
4 Ἀλλ' ἔχω κατὰ σοῦ, ὅτι τὴν ἀγάπην σου
τὴν πρώτην ἀφῆκας.
5 Μνημόνευε οὖν πόθεν ἐκπέπτωκας, καὶ
μετανόησον, καὶ τὰ πρῶτα ἔργα ποίησον· εἰ
δὲ μή, ἔρχομαί σοι ταχύ, καὶ κινήσω τὴν λυ-
χνίαν σου ἐκ τοῦ τόπου αὐτῆς, ἐὰν μὴ μετανοήσῃς.
6 Ἀλλὰ τοῦτο ἔχεις, ὅτι μισεῖς τὰ ἔργα
τῶν Νικολαϊτῶν, ἃ κἀγὼ μισῶ.
7 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις. Τῷ νικῶντι δώσω
αὐτῷ φαγεῖν ἐκ τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς, ὅ ἐστιν ἐν
μέσῳ τοῦ παραδείσου τοῦ Θεοῦ.
8 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐκκλησίας Σμυρ-
ναίων γράψον· Τάδε λέγει ὁ πρῶτος καὶ ὁ ἔ-
σχατος, ὃς ἐγένετο νεκρὸς καὶ ἔζησεν·
9 Οἶδά σου τὰ ἔργα καὶ τὴν θλῖψιν καὶ τὴν
πτωχείαν, (πλούσιος δὲ εἶ) καὶ τὴν βλασφη-
μίαν τῶν λεγόντων Ἰουδαίους εἶναι ἑαυτούς, καὶ
οὐκ εἰσίν, ἀλλὰ συναγωγὴ τοῦ σατανᾶ.
10 Μηδὲν φοβοῦ ἃ μέλλεις πάσχειν· ἰδού,
μέλλει βαλεῖν ἐξ ὑμῶν ὁ διάβολος εἰς φυλα-
κήν, ἵνα πειρασθῆτε. καὶ ἕξετε θλῖψιν ἡμε-
ρῶν δέκα· γίνου πιστὸς ἄχρι θανάτου, καὶ δώ-
σω σοι τὸν στέφανον τῆς ζωῆς.
11 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις· Ὁ νικῶν οὐ μὴ ἀδι-
κηθῇ ἐκ τοῦ θανάτου τοῦ δευτέρου.
12 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐν Περγάμῳ ἐκ-

κλη-

κλησίας γράψον· Τάδε λέγει ὁ ἔχων τὴν
ῥομφαίαν τὴν δίστομον τὴν ὀξεῖαν.
τ 13 Οἶδα τὰ ἔργα σου, καὶ ποῦ κατοικεῖς,
ὅπου ὁ θρόνος τοῦ σατανᾶ, καὶ κρατεῖς τὸ ὄνο-
μά μου, καὶ οὐκ ἠρνήσω τὴν πίστιν μου, καὶ ἐν
ταῖς ἡμέραις ἐν αἷς Ἀντίπας ὁ μάρτυς μου ὁ
πιστὸς, ὃς ἀπεκτάνθη παρ' ὑμῖν, ὅπου κα-
τοικεῖ ὁ σατανᾶς.
ε 14 Ἀλλ' ἔχω κατὰ σοῦ ὀλίγα, ὅτι ἔχεις
ἐκεῖ κρατοῦντας τὴν διδαχὴν Βαλαὰμ, ὃς
ἐδίδασκεν ἐν τῷ Βαλὰκ βαλεῖν σκάνδαλον
ἐνώπιον τῶν Υἱῶν Ἰσραὴλ, φαγεῖν εἰδωλό-
θυτα, καὶ πορνεῦσαι.
15 Οὕτως ἔχεις καὶ σὺ κρατοῦντας τὴν διδα-
χὴν τῶν Νικολαϊτῶν, ὃ μισῶ.
16 Μετανόησον· εἰ δὲ μὴ, ἔρχομαί σοι
ταχὺ, καὶ πολεμήσω μετ' αὐτῶν ἐν τῇ ῥομ-
φαίᾳ τοῦ στόματός μου.
17 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις· Τῷ νικῶντι δώσω
αὐτῷ φαγεῖν ἀπὸ τοῦ μάννα τοῦ κεκρυμμένου,
καὶ δώσω αὐτῷ ψῆφον λευκὴν, καὶ ἐπὶ τὴν ψῆ-
φον ὄνομα καινὸν γεγραμμένον, ὃ οὐδεὶς ἔγνω
εἰ μὴ ὁ λαμβάνων.
18 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐν Θυατείροις ἐκ-
κλησίας γράψον· Τάδε λέγει ὁ Υἱὸς τοῦ
Θεοῦ, ὁ ἔχων τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ὡς φλόγα
πυρὸς, καὶ οἱ πόδες αὐτοῦ ὅμοιοι χαλκολιβάνῳ·
19 Οἶδά σου τὰ ἔργα, καὶ τὴν ἀγάπην,
καὶ τὴν διακονίαν, καὶ τὴν πίστιν, καὶ τὴν ὑπο-
μονήν σου, καὶ τὰ ἔργα σου, καὶ τὰ ἔσχατα πλείο-
να τῶν πρώτων.
20 Ἀλλ' ἔχω κατὰ σοῦ ὀλίγα, ὅτι ἐᾷς τὴν
γυναῖκα Ἰεζαβὴλ, τὴν λέγουσαν ἑαυτὴν

προφῆτιν, διδάσκειν ϗ πλανᾶσθαι ἐμοὺς δού-
λους, πορνεῦσαι, ϗ εἰδωλόθυτα φαγεῖν.
21 Καὶ ἔδωκα αὐτῇ χρόνον ἵνα μετανοήσῃ
ἐκ τῆς πορνείας αὐτῆς, ϗ οὐ μετενόησεν.
22 Ἰδοὺ, ἐγὼ βάλλω αὐτὴν εἰς κλίνην, ϗ
τοὺς μοιχεύοντας μετ' αὐτῆς εἰς θλίψιν μεγά-
λην, ἐὰν μὴ μετανοήσωσιν ἐκ τῶν ἔργων αὐτῶν.
23 Καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς ἀποκτενῶ ἐν θα-
νάτῳ, ϗ γνώσονται πᾶσαι αἱ ἐκκλησίαι ὅτι
ἐγώ εἰμι ὁ ἐρευνῶν νεφροὺς ϗ καρδίας· ϗ δώ-
σω ὑμῖν ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα ὑμῶν.
24 Ὑμῖν δὲ λέγω, καὶ λοιποῖς τοῖς ἐν
Θυατείροις, ὅσοι οὐκ ἔχουσι τὴν διδαχὴν ταύ-
την, ϗ οἵτινες οὐκ ἔγνωσαν τὰ βάθη τοῦ σα-
τανᾶ, ὡς λέγουσιν· οὐ βαλῶ ἐφ' ὑμᾶς ἄλλο
βάρος.
25 Πλὴν ὃ ἔχετε, κρατήσατε ἄχρις οὗ
ἂν ἥξω.
26 Καὶ ὁ νικῶν, ϗ ὁ τηρῶν ἄχρι τέλους τὰ
ἔργα μου, δώσω αὐτῷ ἐξουσίαν ἐπὶ τῶν ἐθνῶν.
27 Καὶ ποιμανεῖ αὐτοὺς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ,
ὡς τὰ σκεύη τὰ κεραμικὰ συντρίβεται, ὡς
κἀγὼ εἴληφα παρὰ τοῦ Πατρός μου·
28 Καὶ δώσω αὐτῷ τὸν ἀστέρα τὸν πρωϊνόν.
29 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Γ'. 3.

1 ΚΑὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐν Σάρδεσιν
ἐκκλησίας γράψον· Τάδε λέ-
γει ὁ ἔχων τὰ ἑπτὰ πνεύματα τοῦ Θεοῦ, ϗ τοὺς
ἑπτὰ ἀστέρας· Οἶδά σου τὰ ἔργα, ὅτι τὸ ὄ-
νομα ἔχεις ὅτι ζῇς, ϗ νεκρὸς εἶ.
2 Γίνου γρηγορῶν, ϗ στήριξον τὰ λοιπὰ ἃ
μέλ-

μέλλει ἀποθανεῖν· οὐ γὰρ εὕρηκά σου τὰ ἔργα
πεπληρωμένα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.
3 Μνημόνευε οὖν πῶς εἴληφας καὶ ἤκουσας,
καὶ τήρει, καὶ μετανόησον. Ἐὰν οὖν μὴ γρηγο-
ρήσῃς, ἥξω ἐπὶ σὲ ὡς κλέπτης, καὶ οὐ μὴ
γνῷς ποίαν ὥραν ἥξω ἐπὶ σέ.
4 Ἔχεις ὀλίγα ὀνόματα καὶ ἐν Σάρδεσιν,
ἃ οὐκ ἐμόλυναν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ περιπα-
τήσουσι μετ' ἐμοῦ ἐν λευκοῖς· ὅτι ἄξιοί εἰσιν.
5 Ὁ νικῶν, οὗτος περιβαλεῖται ἐν ἱμα-
τίοις λευκοῖς· καὶ οὐ μὴ ἐξαλείψω τὸ ὄνομα
αὐτοῦ ἐκ τῆς βίβλου τῆς ζωῆς, καὶ ἐξομολο-
γήσομαι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐνώπιον τοῦ Πατρός
μου καὶ ἐνώπιον τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ.
6 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις.
7 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐν Φιλαδελφείᾳ
ἐκκλησίας γράψον· Τάδε λέγει ὁ ἅγιος,
ὁ ἀληθινός, ὁ ἔχων τὴν κλεῖδα τοῦ Δα-
βίδ· ὁ ἀνοίγων, καὶ οὐδεὶς κλείει· καὶ κλείει,
καὶ οὐδεὶς ἀνοίγει.
8 Οἶδά σου τὰ ἔργα· ἰδοὺ δέδωκα ἐνώ-
πιόν σου θύραν ἀνεῳγμένην, καὶ οὐδεὶς δύνα-
ται κλεῖσαι αὐτήν· ὅτι μικρὰν ἔχεις δύνα-
μιν, καὶ ἐτήρησάς μου τὸν λόγον, καὶ οὐκ ἠρνή-
σω τὸ ὄνομά μου.
9 Ἰδού, δίδωμι ἐκ τῆς συναγωγῆς τοῦ σατα-
νᾶ τῶν λεγόντων ἑαυτοὺς Ἰουδαίους εἶναι, καὶ οὐκ
εἰσίν, ἀλλὰ ψεύδονται· ἰδού, ποιήσω αὐτοὺς
ἵνα ἥξωσι καὶ προσκυνήσωσιν ἐνώπιον τῶν πο-
δῶν σου, καὶ γνῶσιν ὅτι ἐγὼ ἠγάπησά σε.
10 Ὅτι ἐτήρησας τὸν λόγον τῆς ὑπομο-
νῆς μου, κἀγώ σε τηρήσω ἐκ τῆς ὥρας τοῦ πει-
ρασμοῦ τῆς μελλούσης ἔρχεσθαι ἐπὶ τῆς οἰκουμένης
ὅλης,

ὅλης, πειράσαι τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς.
11 Ἰδοὺ, ἔρχομαι ταχύ· κράτει ὃ ἔχεις,
ἵνα μηδεὶς λάβῃ τὸν στέφανόν σου.
12 Ὁ νικῶν, ποιήσω αὐτὸν στύλον ἐν τῷ
ναῷ τοῦ Θεοῦ μου, καὶ ἔξω οὐ μὴ ἐξέλθῃ ἔτι· καὶ
γράψω ἐπ' αὐτὸν τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ μου, καὶ τὸ
ὄνομα τῆς πόλεως τοῦ Θεοῦ μου τῆς καινῆς Ἱε-
ρουσαλὴμ, ἣ καταβαίνει ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἀπὸ τοῦ
Θεοῦ μου, καὶ τὸ ὄνομά μου τὸ καινόν.
13 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις.
14 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐκκλησίας Λαο-
δικέων γράψον· Τάδε λέγει ὁ Ἀμὴν, ὁ
μάρτυς ὁ πιστὸς καὶ ἀληθινὸς, ἡ ἀρχὴ τῆς
κτίσεως τοῦ Θεοῦ.
15 Οἶδά σου τὰ ἔργα, ὅτι οὔτε ψυχρὸς εἶ,
οὔτε ζεστός· ὄφελον ψυχρὸς εἴης ἢ ζεστός.
16 Οὕτως, ὅτι χλιαρὸς εἶ, καὶ οὔτε ψυ-
χρὸς, οὔτε ζεστὸς, μέλλω σε ἐμέσαι ἐκ τοῦ
στόματός μου·
17 Ὅτι λέγεις· Ὅτι πλούσιός εἰμι, καὶ
πεπλούτηκα, καὶ οὐδενὸς χρείαν ἔχω· Καὶ οὐκ
οἶδας ὅτι σὺ εἶ ὁ ταλαίπωρος, καὶ ἐλεεινὸς,
καὶ πτωχὸς, καὶ τυφλὸς, καὶ γυμνός.
18 Συμβουλεύω σοι ἀγοράσαι παρ' ἐμοῦ
χρυσίον πεπυρωμένον ἐκ πυρὸς, ἵνα πλουτή-
σῃς· καὶ ἱμάτια λευκὰ, ἵνα περιβάλῃ, καὶ
μὴ φανερωθῇ ἡ αἰσχύνη τῆς γυμνότητός σου:
καὶ κολλούριον ἔγχρισον τοὺς ὀφθαλμούς σου,
ἵνα βλέπῃς.
19 Ἐγὼ ὅσους ἐὰν φιλῶ, ἐλέγχω καὶ
παιδεύω· ζήλωσον οὖν καὶ μετανόησον.
20 Ἰδοὺ, ἕστηκα ἐπὶ τὴν θύραν, καὶ κρούω·
ἐάν τις ἀκούσῃ τῆς φωνῆς μου, καὶ ἀνοίξῃ τὴν
θύ-

θύραν, εἰσελεύσομαι πρὸς αὐτὸν, καὶ δει-
πνήσω μετ' αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς μετ' ἐμοῦ.
21 Ὁ νικῶν, δώσω αὐτῷ καθίσαι μετ'
ἐμοῦ ἐν τῷ θρόνῳ μου, ὡς κἀγὼ ἐνίκησα, καὶ
ἐκάθισα μετὰ τοῦ πατρός μου ἐν τῷ θρόνῳ αὐτοῦ.
22 Ὁ ἔχων οὖς, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα
λέγει ταῖς ἐκκλησίαις.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Δ'. 4.

1 ΜΕτὰ ταῦτα εἶδον, καὶ ἰδοὺ, θύρα
ἠνεῳγμένη ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἡ
φωνὴ ἡ πρώτη ἣν ἤκουσα ὡς σάλπιγγος λα-
λούσης μετ' ἐμοῦ, λέγουσα· Ἀνάβα ὧδε, καὶ
δείξω σοι ἃ δεῖ γενέσθαι μετὰ ταῦτα.
2 Καὶ εὐθέως ἐγενόμην ἐν Πνεύματι·
καὶ ἰδοὺ, θρόνος ἔκειτο ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τοῦ
θρόνου καθήμενος.
3 Καὶ ὁ καθήμενος ἦν ὅμοιος ὁράσει λί-
θῳ ἰάσπιδι καὶ σαρδίνῳ· καὶ ἶρις κυκλόθεν τοῦ
θρόνου ὁμοία ὁράσει σμαραγδίνῳ.
4 Καὶ κυκλόθεν τοῦ θρόνου θρόνοι εἴκοσι καὶ
τέσσαρες· καὶ ἐπὶ τοὺς θρόνους εἶδον τοὺς εἴκοσι
καὶ τέσσαρας πρεσβυτέρους καθημένους, περι-
βεβλημένους ἐν ἱματίοις λευκοῖς· καὶ ἔσχον
ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν στεφάνους χρυσοῦς.
5 Καὶ ἐκ τοῦ θρόνου πορεύονται ἀστραπαὶ καὶ
βρονταὶ καὶ φωναί· καὶ ἑπτὰ λαμπάδες πυ-
ρὸς καιόμεναι ἐνώπιον τοῦ θρόνου, αἵ εἰσι τὰ
ἑπτὰ πνεύματα τοῦ Θεοῦ.
6 Καὶ ἐνώπιον τοῦ θρόνου θάλασσα ὑαλίνη,
ὁμοία κρυστάλλῳ· καὶ ἐν μέσῳ τοῦ θρόνου καὶ κύ-
κλῳ τοῦ θρόνου τέσσαρα ζῶα γέμοντα ὀφθαλ-
μῶν ἔμπροσθεν καὶ ὄπισθεν.
7 Καὶ τὸ ζῶον τὸ πρῶτον ὅμοιον λέοντι,

καὶ

καὶ τὸ δεύτερον ζῶον ὅμοιον μόσχῳ, καὶ τὸ τρίτον ζῶον ἔχον τὸ πρόσωπον ὡς ἄνθρωπος, καὶ τὸ τέταρτον ζῶον ὅμοιον ἀετῷ πετωμένῳ.

8 Καὶ τέσσαρα ζῶα, ἓν καθ' ἑαυτὸ, εἶχον ἀνὰ πτέρυγας ἓξ κυκλόθεν, καὶ ἔσωθεν γέμοντα ὀφθαλμῶν· καὶ ἀνάπαυσιν οὐκ ἔχουσιν ἡμέρας καὶ νυκτὸς, λέγοντα· Ἅγιος ἅγιος ἅγιος Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὁ ἦν καὶ ὁ ὢν καὶ ὁ ἐρχόμενος.

9 Καὶ ὅταν δώσουσι τὰ ζῶα δόξαν καὶ τιμὴν καὶ εὐχαριστίαν τῷ καθημένῳ ἐπὶ τοῦ θρόνου, τῷ ζῶντι εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων,

10 Πεσοῦνται οἱ εἴκοσι καὶ τέσσαρες πρεσβύτεροι ἐνώπιον τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ θρόνου, καὶ προσκυνήσουσι τῷ ζῶντι εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, καὶ βαλοῦσι τοὺς στεφάνους αὐτῶν ἐνώπιον τοῦ θρόνου, λέγοντες·

11 Ἄξιος εἶ Κύριε λαβεῖν τὴν δόξαν καὶ τὴν τιμὴν καὶ τὴν δύναμιν· ὅτι σὺ ἔκτισας τὰ πάντα, καὶ διὰ τὸ θέλημά σου εἰσὶ, καὶ ἐκτίσθησαν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ε'. 5.

1 ΚΑὶ εἶδον ἐπὶ τὴν δεξιὰν τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ θρόνου βιβλίον γεγραμμένον ἔσωθεν καὶ ὄπισθεν, κατεσφραγισμένον σφραγῖσιν ἑπτά.

2 Καὶ εἶδον ἄγγελον ἰσχυρὸν κηρύσσοντα φωνῇ μεγάλῃ· Τίς ἐστιν ἄξιος ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, καὶ λῦσαι τὰς σφραγῖδας αὐτοῦ;

3 Καὶ οὐδεὶς ἠδύνατο ἐν τῷ οὐρανῷ, οὐδὲ ἐπὶ τῆς γῆς, οὐδὲ ὑποκάτω τῆς γῆς, ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, οὐδὲ βλέπειν αὐτό.

4 Καὶ ἐγὼ ἔκλαιον πολλὰ, ὅτι οὐδεὶς

ἄξιος εὑρέθη ἀνοῖξαι καὶ ἀναγνῶναι τὸ βι-
βλίον, οὔτε βλέπειν αὐτό.
5 Καὶ εἷς ἐκ τῶν πρεσβυτέρων λέγει μοι.
Μὴ κλαῖε· ἰδοὺ, ἐνίκησεν ὁ λέων ὁ ὢν ἐκ
τῆς φυλῆς Ἰούδα, ἡ ῥίζα Δαβὶδ, ἀνοῖ-
ξαι τὸ βιβλίον, καὶ λῦσαι τὰς ἑπτὰ σφραγῖ-
δας αὐτοῦ.
6 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ ἐν μέσῳ τοῦ θρόνου καὶ
τῶν τεσσάρων ζώων, καὶ ἐν μέσῳ τῶν πρεσβυ-
τέρων, ἀρνίον ἑστηκὸς ὡς ἐσφαγμένον, ἔχον
κέρατα ἑπτὰ, καὶ ὀφθαλμοὺς ἑπτά· οἵ εἰσι τὰ
ἑπτὰ τοῦ Θεοῦ πνεύματα τὰ ἀπεσταλμένα εἰς
πᾶσαν τὴν γῆν.
7 Καὶ ἦλθε καὶ εἴληφε τὸ βιβλίον ἐκ τῆς
δεξιᾶς τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ θρόνου.
8 Καὶ ὅτε ἔλαβε τὸ βιβλίον, τὰ τέσσαρα
ζῶα καὶ οἱ εἰκοσιτέσσαρες πρεσβύτεροι ἔπεσον
ἐνώπιον τοῦ ἀρνίου, ἔχοντες ἕκαστος κιθάρας καὶ
φιάλας χρυσᾶς, γεμούσας θυμιαμάτων, αἵ
εἰσιν αἱ προσευχαὶ τῶν ἁγίων.
9 Καὶ ᾄδουσιν ᾠδὴν καινὴν, λέγοντες·
Ἄξιος εἶ λαβεῖν τὸ βιβλίον, καὶ ἀνοῖξαι τὰς
σφραγῖδας αὐτοῦ, ὅτι ἐσφάγης, καὶ ἠγόρασας
τῷ Θεῷ ἡμᾶς ἐν τῷ αἵματί σου, ἐκ πάσης
φυλῆς καὶ γλώσσης καὶ λαοῦ καὶ ἔθνους.
10 Καὶ ἐποίησας ἡμᾶς τῷ Θεῷ ἡμῶν
βασιλεῖς καὶ ἱερεῖς· καὶ βασιλεύσομεν ἐπὶ
τῆς γῆς.
11 Καὶ εἶδον, καὶ ἤκουσα φωνὴν ἀγγέλων
πολλῶν κυκλόθεν τοῦ θρόνου καὶ τῶν ζώων καὶ
τῶν πρεσβυτέρων· καὶ ἦν ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν μυ-
ριάδες μυριάδων, καὶ χιλιάδες χιλιάδων,
12 Λέγοντες φωνῇ μεγάλῃ· Ἄξιόν ἐστι τὸ
ἀρνίον τὸ ἐσφαγμένον λαβεῖν τὴν δύναμιν

καὶ

ϗ πλȣ̃τον ϗ σοφίαν ϗ ἰσχὺν ϗ τιμὴν ϗ δό-
ξαν ϗ εὐλογίαν.
13 Καὶ πᾶν κτίσμα ὅ ἐστιν ἐν τῷ ȣ̓ρανῷ,
ϗ ἐν τῇ γῇ, ϗ ὑποκάτω τῆς γῆς, ϗ ἐπὶ τῆς
θαλάσσης ἅ ἐστι, ϗ τὰ ἐν αὐτοῖς πάντα, ἤ-
κȣσα λέγοντας· Τῷ καθημένῳ ἐπὶ τȣ̃ θρόνȣ,
ϗ τῷ ἀρνίῳ ἡ εὐλογία ϗ ἡ τιμὴ ϗ ἡ δόξα
ϗ τὸ κράτος εἰς τȣ̀ς αἰῶνας τῶν αἰώνων.
14 Καὶ τὰ τέσσαρα ζῶα ἔλεγον· Αʹμὴν·
ϗ οἱ εἰκοσιτέσσαρες πρεσβύτεροι ἔπεσαν, ϗ
προσεκύνησαν ζῶντι εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν
αἰώνων.

ΚΕΦΑʹΛΑΙΟΝ, ϛʹ. 6.

1 ΚΑὶ εἶδον ὅτε ἤνοιξε τὸ ἀρνίον μίαν
ἐκ τῶν σφραγίδων, ϗ ἤκȣσα ἑνὸς
ἐκ τῶν τεσσάρων ζώων λέγοντος, ὡς φωνῆς
βροντῆς· Εʹρχȣ ϗ βλέπε.
2 Καὶ εἶδον, ϗ ἰδȣ̀ ἵππος λευκός· ϗ
ὁ καθήμενος ἐπʼ αὐτῷ, ἔχων τόξον· ϗ ἐδό-
θη αὐτῷ στέφανος, ϗ ἐξῆλθε νικῶν, ϗ ἵνα
νικήσῃ.
3 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὴν δευτέραν σφραγίδα,
ἤκȣσα τȣ̃ δευτέρȣ ζώȣ λέγοντος· Εʹρχȣ ϗ
βλέπε.
4 Καὶ ἐξῆλθεν ἄλλος ἵππος πυῤῥός· ϗ
τῷ καθημένῳ ἐπʼ αὐτῷ ἐδόθη αὐτῷ λαβεῖν
τὴν εἰρήνην ἀπὸ τῆς γῆς, ϗ ἵνα ἀλλήλȣς
σφάξωσι· ϗ ἐδόθη αὐτῷ μάχαιρα μεγάλη.
5 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὴν τρίτην σφραγίδα,
ἤκȣσα τȣ̃ τρίτȣ ζώȣ λέγοντος· Εʹρχȣ ϗ βλέ-
πε. Καὶ εἶδον, ϗ ἰδȣ̀ ἵππος μέλας, ϗ ὁ
καθήμενος ἐπʼ αὐτῷ, ἔχων ζυγὸν ἐν τῇ
χειρὶ αὐτȣ̃.

6 Καὶ ἤκουσα φωνὴν ἐν μέσῳ τῶν τεσσάρων ζώων λέγουσαν· Χοῖνιξ σίτου δηναρίου, καὶ τρεῖς χοίνικες κριθῆς δηναρίου· ϗ τὸ ἔλαιον ϗ τὸν οἶνον μὴ ἀδικήσῃς.

7 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὴν σφραγῖδα τὴν τετάρτην, ἤκουσα φωνὴν τοῦ τετάρτου ζώου λέγουσαν· Ἔρχου ϗ βλέπε·

8 Καὶ εἶδον, ϗ ἰδοὺ ἵππος χλωρὸς, ϗ ὁ καθήμενος ἐπάνω αὐτοῦ ὄνομα αὐτῷ ὁ Θάνατος· ϗ ὁ ᾅδης ἀκολουθεῖ μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ ἐδόθη αὐτοῖς ἐξουσία ἀποκτεῖναι ἐπὶ τὸ τέταρτον τῆς γῆς, ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν λιμῷ ϗ ἐν θανάτῳ, ϗ ὑπὸ τῶν θηρίων τῆς γῆς.

9 Καὶ ὅτε ἤνοιξε τὴν πέμπτην σφραγῖδα, εἶδον ὑποκάτω τοῦ θυσιαστηρίου τὰς ψυχὰς τῶν ἐσφαγμένων διὰ τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ϗ διὰ τὴν μαρτυρίαν ἣν εἶχον.

10 Καὶ ἔκραζον φωνῇ μεγάλῃ, λέγοντες· Ἕως πότε ὁ δεσπότης ὁ ἅγιος ϗ ὁ ἀληθινὸς οὐ κρίνεις ϗ ἐκδικεῖς τὸ αἷμα ἡμῶν ἀπὸ τῶν κατοικούντων ἐπὶ τῆς γῆς;

11 Καὶ ἐδόθησαν ἑκάστοις στολαὶ λευκαὶ, ϗ ἐρρέθη αὐτοῖς ἵνα ἀναπαύσωνται ἔτι χρόνον μικρὸν, ἕως οὗ πληρώσονται ϗ οἱ σύνδουλοι αὐτῶν ϗ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν, οἱ μέλλοντες ἀποκτείνεσθαι ὡς ϗ αὐτοί.

12 Καὶ εἶδον ὅτε ἤνοιξε τὴν σφραγῖδα τὴν ἕκτην, ϗ ἰδοὺ σεισμὸς μέγας ἐγένετο, ϗ ὁ ἥλιος ἐγένετο μέλας ὡς σάκκος τρίχινος, ϗ ἡ σελήνη ἐγένετο ὡς αἷμα.

13 Καὶ οἱ ἀστέρες τοῦ οὐρανοῦ ἔπεσαν εἰς τὴν γῆν ὡς συκῆ βάλλει τοὺς ὀλύνθους αὐτῆς, ὑπὸ μεγάλου ἀνέμου σειομένη.

14 Καὶ οὐρανὸς ἀπεχωρίσθη ὡς βιβλίον

εἱλισ-

εἰλισσόμενον, καὶ πᾶν ὄρος καὶ νῆσος ἐκ τῶν
τόπων αὐτῶν ἐκινήθησαν.
15 Καὶ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ οἱ με-
γιστᾶνες, καὶ οἱ πλούσιοι, καὶ οἱ χιλίαρχοι,
καὶ οἱ δυνατοὶ, καὶ πᾶς δοῦλος καὶ πᾶς ἐλεύ-
θερος ἔκρυψαν ἑαυτοὺς εἰς τὰ σπήλαια καὶ εἰς
τὰς πέτρας τῶν ὀρέων·
16 Καὶ λέγουσι τοῖς ὄρεσι καὶ ταῖς πέτραις·
Πέσετε ἐφ' ἡμᾶς, καὶ κρύψατε ἡμᾶς ἀπὸ
προσώπου τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ θρόνου, καὶ ἀπὸ
τῆς ὀργῆς τοῦ ἀρνίου.
17 Ὅτι ἦλθεν ἡ ἡμέρα ἡ μεγάλη τῆς
ὀργῆς αὐτοῦ· καὶ τίς δύναται σταθῆναι;

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ζ'. 7.

1 ΚΑὶ μετὰ ταῦτα εἶδον τέσσαρας
ἀγγέλους ἑστῶτας ἐπὶ τὰς τέσσα-
ρας γωνίας τῆς γῆς, κρατοῦντας τοὺς τέσσα-
ρας ἀνέμους τῆς γῆς, ἵνα μὴ πνέῃ ἄνεμος
ἐπὶ τῆς γῆς, μήτε ἐπὶ τῆς θαλάσσης, μήτε
ἐπὶ πᾶν δένδρον.
2 Καὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον ἀναβάντα ἀ-
πὸ ἀνατολῆς ἡλίου, ἔχοντα σφραγίδα Θεοῦ
ζῶντος· καὶ ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ τοῖς τέσ-
σαρσιν ἀγγέλοις, οἷς ἐδόθη αὐτοῖς ἀδικῆ-
σαι τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν,
3 Λέγων· Μὴ ἀδικήσητε τὴν γῆν, μή-
τε τὴν θάλασσαν, μήτε τὰ δένδρα, ἄχρις
οὗ σφραγίσωμεν τοὺς δούλους τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐπὶ
τῶν μετώπων αὐτῶν.
4 Καὶ ἤκουσα τὸν ἀριθμὸν τῶν ἐσφραγισ-
μένων· ρμδ'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι ἐκ
πάσης φυλῆς Υἱῶν Ἰσραήλ.
5 Ἐκ φυλῆς Ἰούδα, ιβ'. χιλιάδες ἐσ-
φρα-

φραγισμένοι· ἐκ φυλῆς Ῥουβὴμ, ιβʹ χιλιάδες
ἐσφραγισμένοι· ἐκ φυλῆς Γὰδ, ιβʹ χιλιάδες
ἐσφραγισμένοι.
6 Ἐκ φυλῆς Ἀσὴρ, ιβʹ χιλιάδες ἐσφρα-
γισμένοι· ἐκ φυλῆς Νεφθαλεὶμ, ιβʹ χιλιά-
δες ἐσφραγισμένοι· ἐκ φυλῆς Μανασσῆ, ιβʹ
χιλιάδες ἐσφραγισμένοι.
7 Ἐκ φυλῆς Συμεὼν, ιβʹ χιλιάδες ἐσφρα-
γισμένοι· ἐκ φυλῆς Λευῒ, ιβʹ χιλιάδες ἐσ-
φραγισμένοι· ἐκ φυλῆς Ἰσσάχαρ, ιβʹ χιλιά-
δες ἐσφραγισμένοι.
8 Ἐκ φυλῆς Ζαβουλὼν, ιβʹ χιλιάδες ἐσφρα-
γισμένοι· ἐκ φυλῆς Ἰωσὴφ, ιβʹ χιλιάδες ἐσ-
φραγισμένοι· ἐκ φυλῆς Βενιαμὶν, ιβʹ χιλιά-
δες ἐσφραγισμένοι.
9 Μετὰ ταῦτα εἶδον, καὶ ἰδοὺ ὄχλος πολὺς,
ὃν ἀριθμῆσαι αὐτὸν οὐδεὶς ἠδύνατο, ἐκ παν-
τὸς ἔθνους καὶ φυλῶν καὶ λαῶν καὶ γλωσσῶν, ἑστῶ-
τες ἐνώπιον τοῦ θρόνου καὶ ἐνώπιον τοῦ ἀρνίου,
περιβεβλημένοι στολὰς λευκάς· καὶ φοίνικες ἐν
ταῖς χερσὶν αὐτῶν.
10 Καὶ κράζοντες φωνῇ μεγάλῃ, λέγον-
τες· Ἡ σωτηρία τῷ Θεῷ ἡμῶν τῷ καθημένῳ
ἐπὶ τοῦ θρόνου, καὶ τῷ ἀρνίῳ.
11 Καὶ πάντες οἱ Ἄγγελοι ἑστήκεσαν
κύκλῳ τοῦ θρόνου καὶ τῶν πρεσβυτέρων καὶ
τῶν τεσσάρων ζώων, καὶ ἔπεσον ἐνώπιον τοῦ
θρόνου ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν, καὶ προσεκύνη-
σαν τῷ Θεῷ,
12 Λέγοντες· Ἀμήν· ἡ εὐλογία καὶ ἡ
δόξα καὶ ἡ σοφία καὶ ἡ εὐχαριστία καὶ ἡ τιμὴ καὶ
ἡ δύναμις καὶ ἡ ἰσχὺς τῷ Θεῷ ἡμῶν εἰς τοὺς αἰῶ-
νας τῶν αἰώνων. ἀμήν.
13 Καὶ ἀπεκρίθη εἷς ἐκ τῶν πρεσβυτέρων,

λέγων μοι· Οὗτοι οἱ περιβεβλημένοι τὰς στο-
λὰς τὰς λευκὰς, τίνες εἰσὶ, καὶ πόθεν ἦλ-
θον;
14 Καὶ εἴρηκα αὐτῷ· Κύριε, σὺ οἶδας.
Καὶ εἶπέ μοι· Οὗτοί εἰσιν οἱ ἐρχόμενοι ἐκ
τῆς θλίψεως τῆς μεγάλης· καὶ ἐπλάτυναν
τὰς στολὰς αὐτῶν, καὶ ἐλεύκαναν στολὰς αὐτῶν
ἐν τῷ αἵματι τοῦ ἀρνίου.
15 Διὰ τοῦτό εἰσιν ἐνώπιον τοῦ θρόνου τοῦ
Θεοῦ, καὶ λατρεύουσιν αὐτῷ ἡμέρας καὶ νυκτὸς
ἐν τῷ ναῷ αὐτοῦ· καὶ ὁ καθήμενος ἐπὶ τοῦ θρόνου,
σκηνώσει ἐπ' αὐτούς.
16 Οὐ πεινάσουσιν ἔτι, οὐδὲ διψήσουσιν
ἔτι, οὐδὲ μὴ πέσῃ ἐπ' αὐτοὺς ὁ ἥλιος, οὐδὲ
πᾶν καῦμα·
17 Ὅτι τὸ ἀρνίον τὸ ἀνὰ μέσον τοῦ θρόνου
ποιμανεῖ αὐτοὺς, καὶ ὁδηγήσει αὐτοὺς ἐπὶ ζωῆς
πηγὰς ὑδάτων· καὶ ἐξαλείψει ὁ Θεὸς πᾶν
δάκρυον ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, Η'. 8.

1 ΚΑὶ ὅτε ἤνοιξε τὴν σφραγῖδα τὴν
ἑβδόμην, ἐγένετο σιγὴ ἐν τῷ
οὐρανῷ ὡς ἡμιώριον.
2 Καὶ εἶδον τοὺς ἑπτὰ ἀγγέλους, οἳ ἐνώ-
πιον τοῦ Θεοῦ ἑστήκασι· καὶ ἐδόθησαν αὐτοῖς
ἑπτὰ σάλπιγγες.
3 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἦλθε, καὶ ἐστάθη
ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, ἔχων λιβανωτὸν χρυσοῦν·
καὶ ἐδόθη αὐτῷ θυμιάματα πολλὰ, ἵνα δώ-
σῃ ταῖς προσευχαῖς τῶν ἁγίων πάντων, ἐπὶ
τὸ θυσιαστήριον τὸ χρυσοῦν τὸ ἐνώπιον τοῦ
θρόνου.
4 Καὶ ἀνέβη ὁ καπνὸς τῶν θυμιαμάτων

ταῖς προσευχαῖς τῶν ἁγίων, ἐκ χειρὸς τοῦ ἀγγέλου, ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

5 Καὶ εἴληφεν ὁ ἄγγελος τὸν λιβανωτὸν, καὶ ἐγέμισεν αὐτὸν ἐκ τοῦ πυρὸς τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ἔβαλεν εἰς τὴν γῆν· καὶ ἐγένοντο φωναὶ καὶ βρονταὶ καὶ ἀστραπαὶ καὶ σεισμός.

6 Καὶ οἱ ἑπτὰ ἄγγελοι ἔχοντες τὰς ἑπτὰ σάλπιγγας, ἡτοίμασαν ἑαυτοὺς ἵνα σαλπίσωσι.

7 Καὶ ὁ πρῶτος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ἐγένετο χάλαζα καὶ πῦρ μεμιγμένα αἵματι, καὶ ἐβλήθη εἰς τὴν γῆν· καὶ τὸ τρίτον τῶν δένδρων κατεκάη, καὶ πᾶς χόρτος χλωρὸς κατεκάη.

8 Καὶ ὁ δεύτερος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ὡς ὄρος μέγα πυρὶ καιόμενον ἐβλήθη εἰς τὴν θάλασσαν. καὶ ἐγένετο τὸ τρίτον τῆς θαλάσσης, αἷμα.

9 Καὶ ἀπέθανε τὸ τρίτον τῶν κτισμάτων τῶν ἐν τῇ θαλάσσῃ, τὰ ἔχοντα ψυχάς· καὶ τὸ τρίτον τῶν πλοίων διεφθάρη.

10 Καὶ ὁ τρίτος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ἔπεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἀστὴρ μέγας καιόμενος ὡς λαμπὰς, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ τὸ τρίτον τῶν ποταμῶν, καὶ ἐπὶ τὰς πηγὰς ὑδάτων.

11 Καὶ τὸ ὄνομα τοῦ ἀστέρος λέγεται Ἄψινθος· καὶ γίνεται τὸ τρίτον τῶν ὑδάτων εἰς ἄψινθον, καὶ πολλοὶ ἀνθρώπων ἀπέθανον ἐκ τῶν ὑδάτων, ὅτι ἐπικράνθησαν.

12 Καὶ ὁ τέταρτος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ἐπλήγη τὸ τρίτον τοῦ ἡλίου, καὶ τὸ τρίτον τῆς σελήνης, καὶ τὸ τρίτον τῶν ἀστέρων· ἵνα σκοτισθῇ τὸ τρίτον αὐτῶν, καὶ ἡ ἡμέρα μὴ φαίνῃ τὸ τρίτον αὐτῆς, καὶ ἡ νὺξ ὁμοίως.

13 Καὶ εἶδον, καὶ ἤκουσα ἑνὸς ἀγγέλου πε-
τωμένου ἐν μεσουρανήματι, λέγοντος φωνῇ με-
γάλῃ· Οὐαὶ οὐαὶ οὐαὶ τοῖς κατοικοῦσιν ἐπὶ
τῆς γῆς, ἐκ τῶν λοιπῶν φωνῶν τῆς σάλπιγ-
γος τῶν τριῶν ἀγγέλων τῶν μελλόντων σαλ-
πίζειν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Θ΄. 9.

1 ΚΑὶ ὁ πέμπτος ἄγγελος ἐσάλπι-
σε, καὶ εἶδον ἀστέρα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ
πεπτωκότα εἰς τὴν γῆν, καὶ ἐδόθη αὐτῷ ἡ
κλεὶς τοῦ φρέατος τῆς ἀβύσσου.
2 Καὶ ἤνοιξε τὸ φρέαρ τῆς ἀβύσσου· καὶ ἀνέ-
βη καπνὸς ἐκ τοῦ φρέατος ὡς καπνὸς καμίνου
μεγάλης· καὶ ἐσκοτίσθη ὁ ἥλιος καὶ ὁ ἀὴρ ἐκ τοῦ
καπνοῦ τοῦ φρέατος.
3 Καὶ ἐκ τοῦ καπνοῦ ἐξῆλθον ἀκρίδες εἰς
τὴν γῆν, καὶ ἐδόθη αὐταῖς ἐξουσία ὡς ἔχουσιν
ἐξουσίαν οἱ σκορπίοι τῆς γῆς.
4 Καὶ ἐῤῥέθη αὐταῖς ἵνα μὴ ἀδικήσωσι
τὸν χόρτον τῆς γῆς, οὐδὲ πᾶν χλωρὸν, οὐδὲ
πᾶν δένδρον, εἰ μὴ τοὺς ἀνθρώπους μόνους, οἵ-
τινες οὐκ ἔχουσι τὴν σφραγῖδα τοῦ Θεοῦ ἐπὶ
τῶν μετώπων αὐτῶν.
5 Καὶ ἐδόθη αὐταῖς ἵνα μὴ ἀποκτείνωσιν
αὐτοὺς, ἀλλ' ἵνα βασανισθῶσι μῆνας πέντε·
καὶ ὁ βασανισμὸς αὐτῶν ὡς βασανισμὸς σκορ-
πίου, ὅταν παίσῃ ἄνθρωπον.
6 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ζητήσουσιν
οἱ ἄνθρωποι τὸν θάνατον, καὶ οὐχ εὑρήσουσιν
αὐτόν· καὶ ἐπιθυμήσουσιν ἀποθανεῖν, καὶ φεύξε-
ται ὁ θάνατος ἀπ' αὐτῶν.
7 Καὶ τὰ ὁμοιώματα τῶν ἀκρίδων ὅμοια
ἵπποις ἡτοιμασμένοις εἰς πόλεμον· καὶ ἐπὶ

τὰς κεφαλὰς αὐτῶν ὡς στέφανοι ὅμοιοι χρυσῷ, καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν ὡς πρόσωπα ἀνθρώπων.
8 Καὶ εἶχον τρίχας ὡς τρίχας γυναικῶν, καὶ οἱ ὀδόντες αὐτῶν ὡς λεόντων ἦσαν.
9 Καὶ εἶχον θώρακας ὡς θώρακας σιδηροῦς· καὶ ἡ φωνὴ τῶν πτερύγων αὐτῶν ὡς φωνὴ ἁρμάτων ἵππων πολλῶν τρεχόντων εἰς πόλεμον.
10 Καὶ ἔχουσιν οὐρὰς ὁμοίας σκορπίοις, καὶ κέντρα ἦν ἐν ταῖς οὐραῖς αὐτῶν· καὶ ἡ ἐξουσία αὐτῶν ἀδικῆσαι τοὺς ἀνθρώπους μῆνας πέντε.
11 Καὶ ἔχουσιν ἐφ' αὐτῶν βασιλέα τὸν ἄγγελον τῆς ἀβύσσου· ὄνομα αὐτῷ Ἑβραϊστὶ Ἀβαδδὼν, καὶ ἐν τῇ Ἑλληνικῇ ὄνομα ἔχει Ἀπολλύων.
12 Ἡ οὐαὶ ἡ μία ἀπῆλθεν, ἰδοὺ ἔρχονται ἔτι δύο οὐαὶ μετὰ ταῦτα.
13 Καὶ ὁ ἕκτος ἄγγελος ἐσάλπισε, καὶ ἤκουσα φωνὴν μίαν ἐκ τῶν τεσσάρων κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου τοῦ χρυσοῦ τοῦ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ,
14 Λέγουσαν τῷ ἕκτῳ ἀγγέλῳ, ὃς εἶχε τὴν σάλπιγγα· Λῦσον τοὺς τέσσαρας ἀγγέλους τοὺς δεδεμένους ἐπὶ τῷ ποταμῷ τῷ μεγάλῳ Εὐφράτῃ.
15 Καὶ ἐλύθησαν οἱ τέσσαρες ἄγγελοι οἱ ἡτοιμασμένοι εἰς τὴν ὥραν καὶ ἡμέραν καὶ μῆνα καὶ ἐνιαυτὸν, ἵνα ἀποκτείνωσι τὸ τρίτον τῶν ἀνθρώπων.
16 Καὶ ὁ ἀριθμὸς στρατευμάτων τοῦ ἱππικοῦ, δύο μυριάδες μυριάδων· καὶ ἤκουσα τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν.
17 Καὶ οὕτως εἶδον τοὺς ἵππους ἐν τῇ ὁράσει, καὶ τοὺς καθημένους ἐπ' αὐτῶν ἔχοντας θώρα-

κας πυρίνους καὶ ὑακινθίους καὶ θειώδεις. καὶ αἱ
κεφαλαὶ τῶν ἵππων ὡς κεφαλαὶ λεόντων, καὶ
ἐκ τῶν στομάτων αὐτῶν ἐκπορεύεται πῦρ καὶ κα-
πνὸς καὶ θεῖον

18 Ὑπὸ τῶν τριῶν τούτων ἀπεκτάνθησαν τὸ
τρίτον τῶν ἀνθρώπων, ἐκ τοῦ πυρὸς καὶ ἐκ τοῦ
καπνοῦ καὶ ἐκ τοῦ θείου τοῦ ἐκπορευομένου ἐκ τῶν
στομάτων αὐτῶν.

19 Αἱ γὰρ ἐξουσίαι αὐτῶν ἐν τῷ στόματι
αὐτῶν εἰσιν· αἱ γὰρ οὐραὶ αὐτῶν ὅμοιαι ὄφε-
σιν, ἔχουσαι κεφαλάς· καὶ ἐν αὐταῖς ἀδι-
κοῦσι.

20 Καὶ οἱ λοιποὶ τῶν ἀνθρώπων οἳ οὐκ
ἀπεκτάνθησαν ἐν ταῖς πληγαῖς ταύταις, οὔ-
τε μετενόησαν ἐκ τῶν ἔργων τῶν χειρῶν αὐτῶν,
ἵνα μὴ προσκυνήσωσι τὰ δαιμόνια, καὶ εἴ-
δωλα τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ καὶ τὰ χαλ-
κᾶ καὶ τὰ λίθινα καὶ τὰ ξύλινα, ἃ οὔτε
βλέπειν δύναται, οὔτε ἀκούειν, οὔτε πε-
ριπατεῖν.

21 Καὶ οὐ μετενόησαν ἐκ τῶν φόνων αὐ-
τῶν, οὔτε ἐκ τῶν φαρμακειῶν αὐτῶν, οὔτε
ἐκ τῆς πορνείας αὐτῶν, οὔτε ἐκ τῶν κλεμ-
μάτων αὐτῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ι'. 10.

1 ΚΑὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον ἰσχυρὸν
καταβαίνοντα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, περι-
βεβλημένον νεφέλην· καὶ ἶρις ἐπὶ τῆς κεφαλῆς·
καὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος, καὶ οἱ πόδες
αὐτοῦ ὡς στῦλοι πυρός.

2 Καὶ εἶχεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ βιβλα-
ρίδιον ἀνεῳγμένον· καὶ ἔθηκε τὸν πόδα
αὐτοῦ τὸν δεξιὸν ἐπὶ τὴν θάλασσαν,

τὸν

τὸν δὲ εὐώνυμον ἐπὶ τὴν γῆν.
3 Καὶ ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ ὥσπερ λέων μυ-
κᾶται· καὶ ὅτε ἔκραξεν, ἐλάλησαν αἱ ἑπτὰ
βρονταὶ τὰς ἑαυτῶν φωνάς.
4 Καὶ ὅτε ἐλάλησαν αἱ ἑπτὰ βρονταὶ τὰς
φωνὰς ἑαυτῶν, ἔμελλον γράφειν· καὶ ἤκουσα
φωνὴν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ λέγουσάν μοι· Σφράγισον
ἃ ἐλάλησαν αἱ ἑπτὰ βρονταί, καὶ μὴ ταῦτα
γράψῃς.
5 Καὶ ὁ ἄγγελος, ὃν εἶδον ἑστῶτα ἐπὶ τῆς
θαλάσσης καὶ ἐπὶ τῆς γῆς, ἦρε τὴν χεῖρα αὐ-
τοῦ εἰς τὸν οὐρανόν,
6 Καὶ ὤμοσεν ἐν τῷ ζῶντι εἰς τοὺς αἰῶ-
νας τῶν αἰώνων, ὃς ἔκτισε τὸν οὐρανὸν καὶ τὰ
ἐν αὐτῷ, καὶ τὴν γῆν καὶ τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ τὴν
θάλασσαν καὶ τὰ ἐν αὐτῇ, ὅτι χρόνος οὐκ
ἔσται ἔτι.
7 Ἀλλ' ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς φωνῆς τοῦ ἑβ-
δόμου ἀγγέλου, ὅταν μέλλῃ σαλπίζειν, καὶ
τελεσθῇ τὸ μυστήριον τοῦ Θεοῦ, ὡς εὐηγγέλισε
τοῖς ἑαυτοῦ δούλοις τοῖς προφήταις.
8 Καὶ ἡ φωνὴ ἣν ἤκουσα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, πά-
λιν λαλοῦσα μετ' ἐμοῦ, καὶ λέγουσα· Ὕπα-
γε, λάβε τὸ βιβλαρίδιον τὸ ἠνεῳγμένον ἐν τῇ
χειρὶ ἀγγέλου τοῦ ἑστῶτος ἐπὶ τῆς θαλάσσης
καὶ ἐπὶ τῆς γῆς.
9 Καὶ ἀπῆλθον πρὸς τὸν ἄγγελον, λέ-
γων αὐτῷ· Δός μοι τὸ βιβλαρίδιον· Καὶ
λέγει μοι· Λάβε καὶ κατάφαγε αὐτό· καὶ πι-
κρανεῖ σου τὴν κοιλίαν, ἀλλ' ἐν τῷ στόματί
σου ἔσται γλυκὺ ὡς μέλι.
10 Καὶ ἔλαβον τὸ βιβλαρίδιον ἐκ τῆς χει-
ρὸς τοῦ ἀγγέλου, καὶ κατέφαγον αὐτό· καὶ ἦν ἐν
τῷ στόματί μου ὡς μέλι, γλυκύ· καὶ ὅτε ἔ-

φαγον αὐτὸ, ἐπικράνθη ἡ κοιλία μου·
11 Καὶ λέγει μοι· Δεῖ σε πάλιν προφη-
τεῦσαι ἐπὶ λαοῖς καὶ ἔθνεσι καὶ γλώσσαις καὶ
βασιλεῦσι πολλοῖς.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΑʹ. 11.

1 ΚΑὶ ἐδόθη μοι κάλαμος ὅμοιος
ῥάβδῳ· καὶ ὁ ἄγγελος εἱστήκει,
λέγων· Ἔγειραι, καὶ μέτρησον τὸν ναὸν τοῦ
Θεοῦ, καὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ τοὺς προσκυνοῦν-
τας ἐν αὐτῷ.
2 Καὶ τὴν αὐλὴν τὴν ἔξωθεν τοῦ ναοῦ ἔκβα-
λε ἔξω, καὶ μὴ αὐτὴν μετρήσῃς, ὅτι ἐδόθη
τοῖς ἔθνεσι· καὶ τὴν πόλιν τὴν ἁγίαν πατή-
σουσι μῆνας τεσσαράκοντα δύο.
3 Καὶ δώσω τοῖς δυσὶ μάρτυσί μου, καὶ
προφητεύσουσιν ἡμέρας χιλίας διακοσίας ἑξή-
κοντα, περιβεβλημένοι σάκκους.
4 Οὗτοί εἰσιν αἱ δύο ἐλαῖαι, καὶ δύο λυ-
χνίαι αἱ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ τῆς γῆς ἑστῶσαι.
5 Καὶ εἴ τις αὐτοὺς θέλῃ ἀδικῆσαι, πῦρ
ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ κατε-
σθίει τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν· καὶ εἴ τις αὐτοὺς
θέλῃ ἀδικῆσαι, οὕτω δεῖ αὐτὸν ἀποκτανθῆ-
ναι.
6 Οὗτοι ἔχουσιν ἐξουσίαν κλεῖσαι τὸν οὐρα-
νὸν, ἵνα μὴ βρέχῃ ὑετὸς ἐν ἡμέραις αὐτῶν τῆς
προφητείας· καὶ ἐξουσίαν ἔχουσιν ἐπὶ τῶν ὑδά-
των, στρέφειν αὐτὰ εἰς αἷμα, καὶ πατάξαι τὴν
γῆν πάσῃ πληγῇ, ὁσάκις ἐὰν θελήσωσι.
7 Καὶ ὅταν τελέσωσι τὴν μαρτυρίαν αὐ-
τῶν, τὸ θηρίον τὸ ἀναβαῖνον ἐκ τῆς ἀβύσσου
ποιήσει πόλεμον μετ' αὐτῶν, καὶ νικήσει αὐ-
τοὺς, καὶ ἀποκτενεῖ αὐτούς.

8 Καὶ

8 Καὶ τὰ πτώματα αὐτῶν ἐπὶ τῆς πλα-
τείας πόλεως τῆς μεγάλης, ἥτις καλεῖται
πνευματικῶς Σόδομα καὶ Αἴγυπτος, ὅπου
καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν ἐσταυρώθη.

9 Καὶ βλέψουσιν ἐκ τῶν λαῶν καὶ φυλῶν
καὶ γλωσσῶν καὶ ἐθνῶν τὰ πτώματα αὐτῶν ἡμέ-
ρας τρεῖς καὶ ἥμισυ, καὶ τὰ πτώματα αὐτῶν οὐκ
ἀφήσουσι τεθῆναι εἰς μνήματα.

10 Καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς χα-
ροῦσιν ἐπ' αὐτοῖς, καὶ εὐφρανθήσονται· καὶ
δῶρα πέμψουσιν ἀλλήλοις, ὅτι οὗτοι οἱ δύο
προφῆται ἐβασάνισαν τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ
τῆς γῆς.

11 Καὶ μετὰ τὰς τρεῖς ἡμέρας καὶ ἥμισυ,
πνεῦμα ζωῆς ἐκ τοῦ Θεοῦ εἰσῆλθεν ἐπ' αὐτούς·
καὶ ἔστησαν ἐπὶ τοὺς πόδας αὐτῶν, καὶ φό-
βος μέγας ἔπεσεν ἐπὶ τοὺς θεωροῦντας αὐ-
τούς.

12 Καὶ ἤκουσαν φωνὴν μεγάλην ἐκ τοῦ οὐ-
ρανοῦ, λέγουσαν αὐτοῖς· Ἀνάβητε ὧδε. Καὶ
ἀνέβησαν εἰς τὸν οὐρανὸν ἐν τῇ νεφέλῃ· καὶ ἐθεώ-
ρησαν αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν.

13 Καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ ἐγένετο σεισμὸς
μέγας, καὶ τὸ δέκατον τῆς πόλεως ἔπεσε, καὶ
ἀπεκτάνθησαν ἐν τῷ σεισμῷ ὀνόματα ἀνθρώ-
πων χιλιάδες ἑπτά· καὶ οἱ λοιποὶ ἔμφοβοι
ἐγένοντο, καὶ ἔδωκαν δόξαν τῷ Θεῷ τοῦ οὐ-
ρανοῦ.

14 Ἡ οὐαὶ ἡ δευτέρα ἀπῆλθεν, ἰδοὺ ἡ
οὐαὶ ἡ τρίτη ἔρχεται ταχύ.

15 Καὶ ὁ ἕβδομος ἄγγελος ἐσάλπισε,
καὶ ἐγένοντο φωναὶ μεγάλαι ἐν τῷ οὐρανῷ,
λέγουσαι· Ἐγένοντο αἱ βασιλεῖαι τοῦ κόσμου,
τοῦ Κυρίου ἡμῶν, καὶ τοῦ Χριστοῦ αὐτοῦ, καὶ

βασιλεύσει εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων.

16 Καὶ οἱ εἴκοσι καὶ τέσσαρες πρεσβύτεροι οἱ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ καθήμενοι ἐπὶ τοὺς θρόνους αὐτῶν, ἔπεσαν ἐπὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν τῷ Θεῷ.

17 Λέγοντες· Εὐχαριστοῦμέν σοι, Κύριε ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὁ ὢν, καὶ ὁ ἦν, καὶ ὁ ἐρχόμενος, ὅτι εἴληφας τὴν δύναμίν σου τὴν μεγάλην, καὶ ἐβασίλευσας.

18 Καὶ τὰ ἔθνη ὠργίσθησαν, καὶ ἦλθεν ἡ ὀργή σου· καὶ ὁ καιρὸς τῶν νεκρῶν, κριθῆναι, καὶ δοῦναι τὸν μισθὸν τοῖς δούλοις σου τοῖς προφήταις, καὶ τοῖς ἁγίοις καὶ τοῖς φοβουμένοις τὸ ὄνομά σου, τοῖς μικροῖς καὶ τοῖς μεγάλοις· καὶ διαφθεῖραι τοὺς διαφθείροντας τὴν γῆν.

19 Καὶ ἠνοίγη ὁ ναὸς τοῦ Θεοῦ ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ὤφθη ἡ κιβωτὸς τῆς διαθήκης αὐτοῦ ἐν τῷ ναῷ αὐτοῦ· καὶ ἐγένοντο ἀστραπαὶ καὶ φωναὶ καὶ βρονταὶ καὶ σεισμὸς καὶ χάλαζα μεγάλη.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΒ'. 12.

1 ΚΑὶ σημεῖον μέγα ὤφθη ἐν τῷ οὐρανῷ· γυνὴ περιβεβλημένη τὸν ἥλιον, καὶ ἡ σελήνη ὑποκάτω τῶν ποδῶν αὐτῆς, καὶ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτῆς στέφανος ἀστέρων δώδεκα.

2 Καὶ ἐν γαστρὶ ἔχουσα, κράζει ὠδίνουσα, καὶ βασανιζομένη τεκεῖν.

3 Καὶ ὤφθη ἄλλο σημεῖον ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἰδοὺ δράκων μέγας πυῤῥὸς, ἔχων κεφαλὰς ἑπτὰ καὶ κέρατα δέκα· καὶ ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτοῦ διαδήματα ἑπτά.

4 Καὶ

4 Καὶ ἡ οὐρὰ αὐτοῦ σύρει τὸ τρίτον τῶν ἀ-
στέρων τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἔβαλεν αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν.
καὶ ὁ δράκων ἕστηκεν ἐνώπιον τῆς γυναικὸς τῆς
μελλούσης τεκεῖν, ἵνα ὅταν τέκῃ, τὸ τέκνον
αὐτῆς καταφάγῃ.

5 Καὶ ἔτεκεν Υἱὸν ἄῤῥενα, ὃς μέλλει
ποιμαίνειν πάντα τὰ ἔθνη ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ·
καὶ ἡρπάσθη τὸ τέκνον αὐτῆς πρὸς τὸν Θεὸν καὶ
τὸν θρόνον αὐτοῦ.

6 Καὶ ἡ γυνὴ ἔφυγεν εἰς τὴν ἔρημον, ὅπου
ἔχει τόπον ἡτοιμασμένον ἀπὸ τοῦ Θεοῦ, ἵνα
ἐκεῖ τρέφωσιν αὐτὴν ἡμέρας χιλίας διακοσίας
ἑξήκοντα.

7 Καὶ ἐγένετο πόλεμος ἐν τῷ οὐρανῷ· ὁ
Μιχαὴλ καὶ οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ ἐπολέμησαν κα-
τὰ τοῦ δράκοντος, καὶ ὁ δράκων ἐπολέμησε, καὶ
οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ.

8 Καὶ οὐκ ἴσχυσαν, οὔτε τόπος εὑρέθη αὐτῶν
ἔτι ἐν τῷ οὐρανῷ.

9 Καὶ ἐβλήθη ὁ δράκων ὁ μέγας, ὁ ὄφις
ὁ ἀρχαῖος, ὁ καλούμενος διάβολος, καὶ ὁ σα-
τανᾶς, ὁ πλανῶν τὴν οἰκουμένην ὅλην, ἐβλή-
θη εἰς τὴν γῆν· καὶ οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ μετ' αὐ-
τοῦ ἐβλήθησαν.

10 Καὶ ἤκουσα φωνὴν μεγάλην λέγουσαν ἐν
τῷ οὐρανῷ· Ἄρτι ἐγένετο ἡ σωτηρία καὶ ἡ
δύναμις καὶ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ ἡ
ἐξουσία τοῦ Χριστοῦ αὐτοῦ· ὅτι κατεβλήθη ὁ
κατήγορος τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν, ὁ κατη-
γορῶν αὐτῶν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἡμέρας
καὶ νυκτός.

11 Καὶ αὐτοὶ ἐνίκησαν αὐτὸν διὰ τὸ
αἷμα τοῦ ἀρνίου, καὶ διὰ τὸν λόγον τῆς
μαρτυρίας αὐτῶν, καὶ οὐκ ἠγάπησαν τὴν

ψυχὴν αὐτῶν ἄχρι θανάτου.

12 Διὰ τοῦτο εὐφραίνεσθε οἱ οὐρανοὶ καὶ οἱ ἐν αὐτοῖς σκηνοῦντες· Οὐαὶ τοῖς κατοικοῦσι τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν, ὅτι κατέβη ὁ διάβολος πρὸς ὑμᾶς ἔχων θυμὸν μέγαν, εἰδὼς ὅτι ὀλίγον καιρὸν ἔχει.

13 Καὶ ὅτε εἶδεν ὁ δράκων ὅτι ἐβλήθη εἰς τὴν γῆν, ἐδίωξε τὴν γυναῖκα ἥτις ἔτεκε τὸν ἄῤῥενα.

14 Καὶ ἐδόθησαν τῇ γυναικὶ δύο πτέρυγες τοῦ ἀετοῦ τοῦ μεγάλου, ἵνα πέτηται εἰς τὴν ἔρημον εἰς τὸν τόπον αὐτῆς, ὅπου τρέφεται ἐκεῖ καιρὸν καὶ καιροὺς, καὶ ἥμισυ καιροῦ, ἀπὸ προσώπου τοῦ ὄφεως.

15 Καὶ ἔβαλεν ὁ ὄφις ὀπίσω τῆς γυναικὸς ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ ὕδωρ ὡς ποταμὸν· ἵνα ταύτην ποταμοφόρητον ποιήσῃ.

16 Καὶ ἐβοήθησεν ἡ γῆ τῇ γυναικὶ, καὶ ἤνοιξεν ἡ γῆ τὸ στόμα αὐτῆς, καὶ κατέπιε τὸν ποταμὸν, ὃν ἔβαλεν ὁ δράκων ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ.

17 Καὶ ὠργίσθη ὁ δράκων ἐπὶ τῇ γυναικὶ, καὶ ἀπῆλθε ποιῆσαι πόλεμον μετὰ τῶν λοιπῶν τοῦ σπέρματος αὐτῆς, τῶν τηρούντων τὰς ἐντολὰς τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐχόντων τὴν μαρτυρίαν τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

18 Καὶ ἐστάθην ἐπὶ τὴν ἄμμον τῆς θαλάσσης.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΓ΄. 13.

1 ΚΑὶ εἶδον ἐκ τῆς θαλάσσης θηρίον ἀναβαῖνον, ἔχον κεφαλὰς ἑπτὰ καὶ κέρατα δέκα· καὶ ἐπὶ τῶν κεράτων αὐτοῦ δέκα διαδήματα, καὶ ἐπὶ

τὰς

τὰς κεφαλὰς αὐτοῦ ὄνομα βλασφημίας.
2 Καὶ τὸ θηρίον ὃ εἶδον ἦν ὅμοιον παρδά-
λει, καὶ οἱ πόδες αὐτοῦ ὡς ἄρκτου, καὶ τὸ στόμα
αὐτοῦ ὡς στόμα λέοντος, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ δρά-
κων τὴν δύναμιν αὐτοῦ, καὶ τὸν θρόνον αὐτοῦ,
καὶ ἐξουσίαν μεγάλην.
3 Καὶ εἶδον μίαν τῶν κεφαλῶν αὐτοῦ ὡς ἐσ-
φαγμένην εἰς θάνατον· καὶ ἡ πληγὴ τοῦ θα-
νάτου αὐτοῦ ἐθεραπεύθη, καὶ ἐθαύμασεν ὅλη
ἡ γῆ ὀπίσω τοῦ θηρίου.
4 Καὶ προσεκύνησαν τὸν δράκοντα ὃς ἔδω-
κεν ἐξουσίαν τῷ θηρίῳ, καὶ προσεκύνησαν τὸ
θηρίον, λέγοντες· Τίς ὅμοιος τῷ θηρίῳ;
τίς δύναται πολεμῆσαι μετ' αὐτοῦ;
5 Καὶ ἐδόθη αὐτῷ στόμα λαλοῦν μεγάλα
καὶ βλασφημίας, καὶ ἐδόθη αὐτῷ ἐξουσία πό-
λεμον ποιῆσαι μῆνας τεσσαράκοντα δύο.
6 Καὶ ἤνοιξε τὸ στόμα αὐτοῦ εἰς βλασφη-
μίαν πρὸς τὸν Θεὸν, βλασφημῆσαι τὸ ὄνομα
αὐτοῦ, καὶ τὴν σκηνὴν αὐτοῦ, καὶ τοὺς ἐν τῷ οὐρα-
νῷ σκηνοῦντας.
7 Καὶ ἐδόθη αὐτῷ πόλεμον ποιῆσαι μετὰ
τῶν ἁγίων, καὶ νικῆσαι αὐτούς· καὶ ἐδόθη αὐ-
τῷ ἐξουσία ἐπὶ πᾶσαν φυλὴν καὶ γλῶσσαν καὶ
ἔθνος.
8 Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ πάντες οἱ κα-
τοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς, ὧν οὐ γέγραπται τὰ
ὀνόματα ἐν τῇ βίβλῳ τῆς ζωῆς τοῦ ἀρνίου ἐσ-
φαγμένου ἀπὸ καταβολῆς κόσμου.
9 Εἴ τις ἔχει οὖς, ἀκουσάτω.
10 Εἴ τις αἰχμαλωσίαν συνάγει, εἰς αἰχ-
μαλωσίαν ὑπάγει· εἴ τις ἐν μαχαίρᾳ ἀποκ-
τενεῖ, δεῖ αὐτὸν ἐν μαχαίρᾳ ἀποκτανθῆναι·
ὧδέ ἐστιν ἡ ὑπομονὴ καὶ ἡ πίστις τῶν ἁγίων.

11 Καὶ

11 Καὶ εἶδον ἄλλο θηρίον ἀναβαῖνον ἐκ τῆς γῆς, καὶ εἶχε κέρατα δύο ὅμοια ἀρνίῳ· καὶ ἐλάλει ὡς δράκων.

12 Καὶ τὴν ἐξουσίαν τοῦ πρώτου θηρίου πᾶσαν ποιεῖ ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ ποιεῖ τὴν γῆν καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ, ἵνα προσκυνήσωσι τὸ θηρίον τὸ πρῶτον, οὗ ἐθεραπεύθη ἡ πληγὴ τοῦ θανάτου αὐτοῦ.

13 Καὶ ποιεῖ σημεῖα μεγάλα, ἵνα καὶ πῦρ ποιῇ καταβαίνειν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ εἰς τὴν γῆν, ἐνώπιον τῶν ἀνθρώπων.

14 Καὶ πλανᾷ τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς, διὰ τὰ σημεῖα ἃ ἐδόθη αὐτῷ ποιῆσαι ἐνώπιον τοῦ θηρίου, λέγων τοῖς κατοικοῦσιν ἐπὶ τῆς γῆς, ποιῆσαι εἰκόνα τῷ θηρίῳ ὃ ἔχει τὴν πληγὴν τῆς μαχαίρας, καὶ ἔζησε.

15 Καὶ ἐδόθη αὐτῷ δοῦναι πνεῦμα τῇ εἰκόνι τοῦ θηρίου, ἵνα καὶ λαλήσῃ ἡ εἰκὼν τοῦ θηρίου, καὶ ποιήσῃ, ὅσοι ἂν μὴ προσκυνήσωσι τὴν εἰκόνα τοῦ θηρίου, ἵνα ἀποκτανθῶσι.

16 Καὶ ποιεῖ πάντας, τοὺς μικροὺς καὶ τοὺς μεγάλους, καὶ τοὺς πλουσίους καὶ τοὺς πτωχούς, καὶ τοὺς ἐλευθέρους καὶ τοὺς δούλους, ἵνα δώσῃ αὐτοῖς χάραγμα ἐπὶ τῆς χειρὸς αὐτῶν τῆς δεξιᾶς, ἢ ἐπὶ τῶν μετώπων αὐτῶν.

17 Καὶ ἵνα μή τις δύνηται ἀγοράσαι ἢ πωλῆσαι, εἰ μὴ ὁ ἔχων τὸ χάραγμα, ἢ τὸ ὄνομα τοῦ θηρίου, ἢ τὸν ἀριθμὸν τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ.

18 Ὧδε ἡ σοφία ἐστίν· ὁ ἔχων τὸν νοῦν, ψηφισάτω τὸν ἀριθμὸν τοῦ θηρίου· ἀριθμὸς γὰρ ἀνθρώπου ἐστί, καὶ ὁ ἀριθμὸς αὐτοῦ χξς΄.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΔ΄. 14.

1 ΚΑὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ ἀρνίον ἑστηκὸς
ἐπὶ τὸ ὄρος Σιὼν, καὶ μετ᾽ αὐτοῦ
ἑκατὸν τεσσαρακοντατέσσαρες χιλιάδες, ἔχου-
σαι τὸ ὄνομα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ γεγραμμένον
ἐπὶ τῶν μετώπων αὐτῶν.
2 Καὶ ἤκουσα φωνὴν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ὡς φω-
νὴν ὑδάτων πολλῶν, καὶ ὡς φωνὴν βροντῆς με-
γάλης· καὶ φωνὴν ἤκουσα κιθαρῳδῶν κιθαρι-
ζόντων ἐν ταῖς κιθάραις αὐτῶν.
3 Καὶ ᾄδουσιν ὡς ᾠδὴν καινὴν ἐνώπιον τοῦ
θρόνου, καὶ ἐνώπιον τῶν τεσσάρων ζώων, καὶ τῶν
πρεσβυτέρων· καὶ οὐδεὶς ἠδύνατο μαθεῖν τὴν
ᾠδὴν εἰ μὴ αἱ ἑκατὸν τεσσαράκοντα τέσσαρες
χιλιάδες, οἱ ἠγορασμένοι ἀπὸ τῆς γῆς.
4 Οὗτοί εἰσιν οἳ μετὰ γυναικῶν οὐκ ἐμο-
λύνθησαν· παρθένοι γάρ εἰσιν· οὗτοί εἰσιν
οἱ ἀκολουθοῦντες τῷ ἀρνίῳ ὅπου ἂν ὑπάγῃ·
οὗτοι ἠγοράσθησαν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, ἀπαρ-
χὴ τῷ Θεῷ καὶ τῷ ἀρνίῳ.
5 Καὶ ἐν τῷ στόματι αὐτῶν οὐχ εὑρέθη δό-
λος· ἄμωμοι γάρ εἰσιν ἐνώπιον τοῦ θρόνου
τοῦ Θεοῦ.
6 Καὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον πετώμενον
ἐν μεσουρανήματι, ἔχοντα εὐαγγέλιον αἰώ-
νιον, εὐαγγελίσαι τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τῆς
γῆς, καὶ πᾶν ἔθνος καὶ φυλὴν καὶ γλῶσσαν
καὶ λαόν.
7 Λέγοντα ἐν φωνῇ μεγάλῃ· Φοβήθητε
τὸν Θεὸν, καὶ δότε αὐτῷ δόξαν, ὅτι ἦλθεν
ἡ ὥρα τῆς κρίσεως αὐτοῦ· καὶ προσκυνήσατε
τῷ ποιήσαντι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ θά-
λασσαν καὶ πηγὰς ὑδάτων.

8 Καὶ

8 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἠκολούθησε, λέγων· Ἔπεσεν ἔπεσε Βαβυλὼν ἡ πόλις ἡ μεγάλη, ὅτι ἐκ τοῦ οἴνου τοῦ θυμοῦ τῆς πορνείας αὐτῆς πεπότικε πάντα ἔθνη.

9 Καὶ τρίτος ἄγγελος ἠκολούθησεν αὐτοῖς, λέγων ἐν φωνῇ μεγάλῃ· Εἴ τις τὸ θηρίον προσκυνεῖ καὶ τὴν εἰκόνα αὐτοῦ, καὶ λαμβάνει χάραγμα ἐπὶ τοῦ μετώπου αὐτοῦ, ἢ ἐπὶ τὴν χεῖρα αὐτοῦ.

10 Καὶ αὐτὸς πίεται ἐκ τοῦ οἴνου τοῦ θυμοῦ τοῦ Θεοῦ, τοῦ κεκερασμένου ἀκράτου ἐν τῷ ποτηρίῳ τῆς ὀργῆς αὐτοῦ· καὶ βασανισθήσεται ἐν πυρὶ καὶ θείῳ ἐνώπιον τῶν ἁγίων ἀγγέλων καὶ ἐνώπιον τοῦ ἀρνίου.

11 Καὶ ὁ καπνὸς τοῦ βασανισμοῦ αὐτῶν ἀναβαίνει εἰς αἰῶνας αἰώνων· καὶ οὐκ ἔχουσιν ἀνάπαυσιν ἡμέρας καὶ νυκτὸς οἱ προσκυνοῦντες τὸ θηρίον καὶ τὴν εἰκόνα αὐτοῦ, καὶ εἴ τις λαμβάνει τὸ χάραγμα τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ.

12 Ὧδε ὑπομονὴ τῶν ἁγίων ἐστίν· ὧδε οἱ τηροῦντες τὰς ἐντολὰς τοῦ Θεοῦ, καὶ τὴν πίστιν Ἰησοῦ.

13 Καὶ ἤκουσα φωνῆς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, λεγούσης μοι, γράψον· Μακάριοι οἱ νεκροὶ οἱ ἐν Κυρίῳ ἀποθνήσκοντες ἀπάρτι· Ναί, λέγει τὸ πνεῦμα, ἵνα ἀναπαύσωνται ἐκ τῶν κόπων αὐτῶν· τὰ δὲ ἔργα αὐτῶν ἀκολουθεῖ μετ᾽ αὐτῶν.

14 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ νεφέλη λευκή, καὶ ἐπὶ τὴν νεφέλην καθήμενος ὅμοιος Υἱῷ ἀνθρώπου, ἔχων ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ στέφανον χρυσοῦν, καὶ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ δρέπανον ὀξύ.

15 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ ναοῦ,

κρά-

κράζων ἐν μεγάλῃ φωνῇ τῷ καθημένῳ ἐπὶ τῆς
νεφέλης· Πέμψον τὸ δρέπανόν σου, καὶ θέρι-
σον· ὅτι ἦλθέ σοι ἡ ὥρα τοῦ θερίσαι· ὅτι ἐξη-
ράνθη ὁ θερισμὸς τῆς γῆς.
16 Καὶ ἔβαλεν ὁ καθήμενος ἐπὶ τὴν νε-
φέλην τὸ δρέπανον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἐθε-
ρίσθη ἡ γῆ.
17 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ
ναοῦ τοῦ ἐν τῷ οὐρανῷ, ἔχων καὶ αὐτὸς δρέπανον
ὀξύ.
18 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ
θυσιαστηρίου, ἔχων ἐξουσίαν ἐπὶ τοῦ πυρός·
καὶ ἐφώνησε κραυγῇ μεγάλῃ τῷ ἔχοντι τὸ δρέ-
πανον τὸ ὀξὺ, λέγων· Πέμψον σου τὸ δρέ-
πανον τὸ ὀξὺ, καὶ τρύγησον τοὺς βότρυας τῆς
ἀμπέλου τῆς γῆς, ὅτι ἤκμασαν αἱ σταφυλαὶ
αὐτῆς.
19 Καὶ ἔβαλεν ὁ ἄγγελος τὸ δρέπανον
αὐτοῦ εἰς τὴν γῆν, καὶ ἐτρύγησε τὴν ἄμπελον
τῆς γῆς, καὶ ἔβαλεν εἰς τὴν ληνὸν τοῦ θυμοῦ
τοῦ Θεοῦ τὴν μεγάλην.
20 Καὶ ἐπατήθη ἡ ληνὸς ἔξω τῆς πό-
λεως, καὶ ἐξῆλθεν αἷμα ἐκ τῆς ληνοῦ ἄχρι
τῶν χαλινῶν τῶν ἵππων, ἀπὸ σταδίων χι-
λίων ἑξακοσίων·

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΕ'. 15.

1 ΚΑὶ εἶδον ἄλλο σημεῖον ἐν τῷ οὐρανῷ
μέγα καὶ θαυμαστὸν, ἀγγέλους
ἑπτὰ, ἔχοντας πληγὰς ἑπτὰ τὰς ἐσχάτας, ὅτι
ἐν αὐταῖς ἐτελέσθη ὁ θυμὸς τοῦ Θεοῦ.
2 Καὶ εἶδον ὡς θάλασσαν ὑαλίνην μεμιγ-
μένην πυρί· καὶ τοὺς νικῶντας ἐκ τοῦ θηρίου καὶ
τῆς εἰκόνος αὐτοῦ, καὶ ἐκ τοῦ χαράγματος

αὐτοῦ, ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ, ἑστῶ-
τας ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν ὑαλίνην, ἔχοντας
κιθάρας τοῦ Θεοῦ.
3 Καὶ ᾄδουσι τὴν ᾠδὴν Μωσέως δούλου τοῦ
Θεοῦ, καὶ τὴν ᾠδὴν τοῦ ἀρνίου, λέγοντες·
Μεγάλα καὶ θαυμαστὰ τὰ ἔργα σου, Κύριε ὁ
Θεὸς ὁ παντοκράτωρ· δίκαιαι καὶ ἀληθιναὶ αἱ
ὁδοί σου, ὁ βασιλεὺς τῶν ἁγίων.
4 Τίς οὐ μὴ φοβηθῇ σε, Κύριε, καὶ δοξάσῃ
τὸ ὄνομά σου; ὅτι μόνος ὅσιος· ὅτι πάντα τὰ
ἔθνη ἥξουσι καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιόν σου· ὅτι
τὰ δικαιώματά σου ἐφανερώθησαν.
5 Καὶ μετὰ ταῦτα εἶδον, καὶ ἰδοὺ ἠνοίγη ὁ
ναὸς τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου ἐν τῷ οὐρανῷ.
6 Καὶ ἐξῆλθον οἱ ἑπτὰ ἄγγελοι ἔχοντες
τὰς ἑπτὰ πληγὰς, ἐκ τοῦ ναοῦ, ἐνδεδυμένοι
λίνον καθαρὸν καὶ λαμπρὸν, καὶ περιεζωσμέ-
νοι περὶ τὰ στήθη ζώνας χρυσᾶς.
7 Καὶ ἓν ἐκ τῶν τεσσάρων ζώων ἔδωκε τοῖς
ἑπτὰ ἀγγέλοις ἑπτὰ φιάλας χρυσᾶς, γεμού-
σας τοῦ θυμοῦ τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος εἰς τοὺς αἰῶ-
νας τῶν αἰώνων.
8 Καὶ ἐγεμίσθη ὁ ναὸς καπνοῦ ἐκ τῆς
δόξης τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐκ τῆς δυνάμεως αὐτοῦ·
καὶ οὐδεὶς ἠδύνατο εἰσελθεῖν εἰς τὸν ναὸν, ἄχρι
τελεσθῶσιν αἱ ἑπτὰ πληγαὶ τῶν ἑπτὰ ἀγ-
γέλων.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Ις΄. 16.

1 ΚΑὶ ἤκουσα φωνῆς μεγάλης ἐκ τοῦ
ναοῦ, λεγούσης τοῖς ἑπτὰ ἀγγέ-
λοις· Ὑπάγετε καὶ ἐκχέετε τὰς φιάλας τοῦ
Θεοῦ εἰς τὴν γῆν.
2 Καὶ ἀπῆλθεν ὁ πρῶτος, καὶ ἐξέχεε τὴν
φιά-

φιάλην αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐγένετο ἕλκος
κακὸν καὶ πονηρὸν εἰς τοὺς ἀνθρώπους τοὺς ἔχον-
τας τὸ χάραγμα τοῦ θηρίου, καὶ τοὺς τῇ εἰκόνι
αὐτοῦ προσκυνοῦντας.
3 Καὶ ὁ δεύτερος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν φιά-
λην αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἐγένετο αἷμα
ὡς νεκροῦ· καὶ πᾶσα ψυχὴ ζῶσα ἀπέθανεν ἐν
τῇ θαλάσσῃ.
4 Καὶ ὁ τρίτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν φιάλην
αὐτοῦ εἰς τοὺς ποταμοὺς καὶ εἰς τὰς πηγὰς τῶν
ὑδάτων· καὶ ἐγένετο αἷμα.
5 Καὶ ἤκουσα τοῦ ἀγγέλου τῶν ὑδάτων λέ-
γοντος. Δίκαιος, Κύριε, εἶ, ὁ ὤν, καὶ ὁ
ὅσιος, ὅτι ταῦτα ἔκρινας.
6 Ὅτι αἷμα ἁγίων καὶ προφητῶν ἐξέχεαν,
καὶ αἷμα αὐτοῖς ἔδωκας πιεῖν· ἄξιοι γάρ
εἰσι.
7 Καὶ ἤκουσα ἄλλου ἐκ τοῦ θυσιαστηρίου λέ-
γοντος· Ναὶ Κύριε ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ,
ἀληθιναὶ καὶ δίκαιαι αἱ κρίσεις σου.
8 Καὶ ὁ τέταρτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν φιά-
λην αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ἥλιον· καὶ ἐδόθη αὐτῷ καυ-
ματίσαι τοὺς ἀνθρώπους ἐν πυρί.
9 Καὶ ἐκαυματίσθησαν οἱ ἄνθρωποι καῦ-
μα μέγα, καὶ ἐβλασφήμησαν τὸ ὄνομα τοῦ
Θεοῦ τοῦ ἔχοντος ἐξουσίαν ἐπὶ τὰς πληγὰς ταύ-
τας· καὶ οὐ μετενόησαν δοῦναι αὐτῷ δόξαν.
10 Καὶ ὁ πέμπτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν
φιάλην αὐτοῦ ἐπὶ τὸν θρόνον τοῦ θηρίου· καὶ ἐγέ-
νετο ἡ βασιλεία αὐτοῦ ἐσκοτωμένη· καὶ ἐμασσῶν-
το τὰς γλώσσας αὐτῶν ἐκ τοῦ πόνου.
11 Καὶ ἐβλασφήμησαν τὸν Θεὸν τοῦ οὐρανοῦ
ἐκ τῶν πόνων αὐτῶν καὶ ἐκ τῶν ἑλκῶν αὐτῶν·
καὶ οὐ μετενόησαν ἐκ τῶν ἔργων αὐτῶν.

12 Καὶ

12 Καὶ ὁ ἕκτος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν φιάλην αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ποταμὸν τὸν μέγαν τὸν Εὐφράτην· καὶ ἐξηράνθη τὸ ὕδωρ αὐτοῦ, ἵνα ἑτοιμασθῇ ἡ ὁδὸς τῶν βασιλέων τῶν ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου.

13 Καὶ εἶδον ἐκ τοῦ στόματος τοῦ δράκοντος καὶ ἐκ τοῦ στόματος τοῦ θηρίου καὶ ἐκ τοῦ στόματος τοῦ ψευδοπροφήτου πνεύματα τρία ἀκάθαρτα ὅμοια βατράχοις.

14 Εἰσὶ γὰρ πνεύματα δαιμόνων ποιοῦντα σημεῖα, ἃ ἐκπορεύεται ἐπὶ τοὺς βασιλεῖς τῆς γῆς καὶ τῆς οἰκουμένης ὅλης, συναγαγεῖν αὐτοὺς εἰς πόλεμον τῆς ἡμέρας ἐκείνης τῆς μεγάλης τοῦ Θεοῦ τοῦ παντοκράτορος.

15 Ἰδοὺ, ἔρχομαι ὡς κλέπτης. Μακάριος ὁ γρηγορῶν, καὶ τηρῶν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, ἵνα μὴ γυμνὸς περιπατῇ, καὶ βλέπωσι τὴν ἀσχημοσύνην αὐτοῦ.

16 Καὶ συνήγαγεν αὐτοὺς εἰς τὸν τόπον τὸν καλούμενον Ἑβραϊστὶ Ἀρμαγεδδών.

17 Καὶ ὁ ἕβδομος ἄγγελος ἐξέχεε τὴν φιάλην αὐτοῦ εἰς τὸν ἀέρα· καὶ ἐξῆλθε φωνὴ μεγάλη ἀπὸ τοῦ ναοῦ τοῦ οὐρανοῦ, ἀπὸ τοῦ θρόνου, λέγουσα· Γέγονε.

18 Καὶ ἐγένοντο φωναὶ καὶ βρονταὶ καὶ ἀστραπαί· καὶ σεισμὸς ἐγένετο μέγας, οἷος οὐκ ἐγένετο ἀφ' οὗ οἱ ἄνθρωποι ἐγένοντο ἐπὶ τῆς γῆς, τηλικοῦτος σεισμὸς οὕτω μέγας.

19 Καὶ ἐγένετο ἡ πόλις ἡ μεγάλη εἰς τρία μέρη, καὶ αἱ πόλεις τῶν ἐθνῶν ἔπεσον· καὶ Βαβυλὼν ἡ μεγάλη ἐμνήσθη ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, δοῦναι αὐτῇ τὸ ποτήριον τοῦ οἴνου τοῦ θυμοῦ τῆς ὀργῆς αὐτοῦ.

20 Καὶ πᾶσα νῆσος ἔφυγε, καὶ ὄρη οὐχ εὑρέθησαν.

21 Καὶ χάλαζα μεγάλη ὡς ταλαντιαία
καταβαίνει ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους·
ϗ ἐβλασφήμησαν οἱ ἄνθρωποι τὸν Θεὸν ἐκ τῆς
πληγῆς τῆς χαλάζης· ὅτι μεγάλη ἐστὶν ἡ
πληγὴ αὐτῆς σφόδρα.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΖ'. 17.

1 ΚΑὶ ἦλθεν εἷς ἐκ τῶν ἑπτὰ ἀγγέ-
λων τῶν ἐχόντων τὰς ἑπτὰ φιά-
λας, ϗ ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ, λέγων μοι·
Δεῦρο, δείξω σοι τὸ κρῖμα τῆς πόρνης
τῆς μεγάλης, τῆς καθημένης ἐπὶ τῶν ὑδά-
των τῶν πολλῶν.
2 Μεθ' ἧς ἐπόρνευσαν οἱ βασιλεῖς τῆς
γῆς, ϗ ἐμεθύσθησαν ἐκ τοῦ οἴνου τῆς πορνείας
αὐτῆς οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν.
3 Καὶ ἀπήνεγκέ με εἰς ἔρημον ἐν πνεύμα-
τι· ϗ εἶδον γυναῖκα καθημένην ἐπὶ θηρίον
κόκκινον, γέμον ὀνομάτων βλασφημίας, ἔ-
χον κεφαλὰς ἑπτὰ ϗ κέρατα δέκα.
4 Καὶ ἡ γυνὴ, ἡ περιβεβλημένη πορφύρᾳ
ϗ κοκκίνῳ, ϗ κεχρυσωμένη χρυσῷ ϗ λίθῳ
τιμίῳ ϗ μαργαρίταις, ἔχουσα χρυσοῦν ποτή-
ριον ἐν τῇ χειρὶ αὐτῆς, γέμον βδελυγμάτων
ϗ ἀκαθάρτητος πορνείας αὐτῆς.
5 Καὶ ἐπὶ τὸ μέτωπον αὐτῆς ὄνομα γε-
γραμμένον· Μυστήριον· Βαβυλὼν ἡ μεγάλη
ἡ μήτηρ τῶν πορνῶν, καὶ τῶν βδελυγμάτων
τῆς γῆς.
6 Καὶ εἶδον τὴν γυναῖκα μεθύουσαν ἐκ τοῦ
αἵματος τῶν ἁγίων, ϗ ἐκ τοῦ αἵματος τῶν
μαρτύρων Ἰησοῦ· ϗ ἐθαύμασα, ἰδὼν αὐ-
τὴν, θαῦμα μέγα.
7 Καὶ εἶπέ μοι ὁ ἄγγελος· Διατί ἐθαύ-



μασας; ἐγώ σοι ἐρῶ τὸ μυστήριον τῆς γυναι-
κὸς καὶ τοῦ θηρίου τοῦ βαστάζοντος αὐτὴν,
τοῦ ἔχοντος τὰς ἑπτὰ κεφαλὰς καὶ τὰ δέκα κέ-
ρατα.
8 Θηρίον ὃ εἶδες, ἦν, καὶ οὐκ ἔστι· καὶ
μέλλει ἀναβαίνειν ἐκ τῆς ἀβύσσου, καὶ εἰς
ἀπώλειαν ὑπάγειν· καὶ θαυμάσονται οἱ κα-
τοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς, (ὧν οὐ γέγραπται
τὰ ὀνόματα ἐπὶ τὸ βιβλίον τῆς ζωῆς ἀπὸ κα-
ταβολῆς κόσμου) βλέποντες τὸ θηρίον ὅ, τι
ἦν, καὶ οὐκ ἔστι, καίπερ ἔστιν.
9 Ὧδε ὁ νοῦς ὁ ἔχων σοφίαν· Αἱ ἑπτὰ
κεφαλαὶ, ὄρη εἰσὶν ἑπτὰ, ὅπου ἡ γυνὴ κά-
θηται ἐπ' αὐτῶν.
10 Καὶ βασιλεῖς ἑπτά εἰσιν· οἱ πέντε
ἔπεσαν, καὶ ὁ εἷς ἔστιν, ὁ ἄλλος οὔπω ἦλθε·
καὶ ὅταν ἔλθῃ, ὀλίγον αὐτὸν δεῖ μεῖναι.
11 Καὶ τὸ θηρίον ὃ ἦν, καὶ οὐκ ἔστι, καὶ
αὐτὸς ὄγδοός ἐστι, καὶ ἐκ τῶν ἑπτά ἐστι, καὶ
εἰς ἀπώλειαν ὑπάγει.
12 Καὶ τὰ δέκα κέρατα ἃ εἶδες, δέκα
βασιλεῖς εἰσιν, οἵτινες βασιλείαν οὔπω ἔλα-
βον, ἀλλ' ἐξουσίαν ὡς βασιλεῖς μίαν ὥραν
λαμβάνουσι μετὰ τοῦ θηρίου.
13 Οὗτοι μίαν γνώμην ἔχουσι, καὶ τὴν
δύναμιν καὶ τὴν ἐξουσίαν ἑαυτῶν τῷ θηρίῳ
διαδιδώσουσιν.
14 Οὗτοι μετὰ τοῦ ἀρνίου πολεμήσουσι, καὶ
τὸ ἀρνίον νικήσει αὐτοὺς, ὅτι Κύριος κυρίων
ἐστὶ, καὶ βασιλεὺς βασιλέων· καὶ οἱ μετ' αὐ-
τοῦ, κλητοὶ καὶ ἐκλεκτοὶ καὶ πιστοί.
15 Καὶ λέγει μοι, τὰ ὕδατα ἃ εἶδες, οὗ
ἡ πόρνη κάθηται, λαοὶ καὶ ὄχλοι εἰσὶ, καὶ
ἔθνη καὶ γλῶσσαι.

16 Καὶ

16 Καὶ τὰ δέκα κέρατα ἃ εἶδες ἐπὶ τὸ θη-
ρίον, οὗτοι μισήσουσι τὴν πόρνην, καὶ ἠρημω-
μένην ποιήσουσιν αὐτὴν καὶ γυμνὴν, καὶ τὰς
σάρκας αὐτῆς φάγονται, καὶ αὐτὴν κατακαύ-
σουσιν ἐν πυρί.
17 Ὁ γὰρ Θεὸς ἔδωκεν εἰς τὰς καρδίας
αὐτοῦ ποιῆσαι τὴν γνώμην αὐτοῦ, καὶ ποιῆ-
σαι μίαν γνώμην, καὶ δοῦναι τὴν βασιλείαν αὐτῶν
τῷ θηρίῳ, ἄχει τελεσθῇ τὰ ῥήματα τοῦ Θεοῦ.
18 Καὶ ἡ γυνὴ ἣν εἶδες, ἔστιν ἡ πόλις ἡ
μεγάλη ἡ ἔχουσα βασιλείαν ἐπὶ τῶν βασι-
λέων τῆς γῆς.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΙΗ'. 18.

1 ΚΑὶ μετὰ ταῦτα εἶδον ἄγγελον κα-
ταβαίνοντα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ἔχοντα
ἐξουσίαν μεγάλην· καὶ ἡ γῆ ἐφωτίσθη ἐκ τῆς
δόξης αὐτοῦ.
2 Καὶ ἔκραξεν ἐν ἰσχύϊ, φωνῇ μεγάλῃ
λέγων· Ἔπεσεν ἔπεσε Βαβυλὼν ἡ μεγάλη,
καὶ ἐγένετο κατοικητήριον δαιμόνων, καὶ φυ-
λακὴ παντὸς πνεύματος ἀκαθάρτου, καὶ φυ-
λακὴ παντὸς ὀρνέου ἀκαθάρτου, καὶ μεμι-
σημένου.
3 Ὅτι ἐκ τοῦ οἴνου τοῦ θυμοῦ τῆς πορνείας
αὐτῆς πέπωκε πάντα τὰ ἔθνη· καὶ οἱ βασι-
λεῖς τῆς γῆς μετ' αὐτῆς ἐπόρνευσαν, καὶ οἱ
ἔμποροι τῆς γῆς ἐκ τῆς δυνάμεως τοῦ στρήνους
αὐτῆς ἐπλούτησαν.
4 Καὶ ἤκουσα ἄλλην φωνὴν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, λέ-
γουσαν· Ἐξέλθετε ἐξ αὐτῆς ὁ λαός μου, ἵνα
μὴ συγκοινωνήσητε ταῖς ἁμαρτίαις αὐτῆς, καὶ
ἵνα μὴ λάβητε ἐκ τῶν πληγῶν αὐτῆς.
5 Ὅτι ἠκολούθησαν αὐτῆς αἱ ἁμαρτίαι
ἄχει

ἄχει τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐμνημόνευσεν ὁ Θεὸς τὰ ἀδικήματα αὐτῆς.

6 Ἀπόδοτε αὐτῇ ὡς καὶ αὐτὴ ἀπέδωκεν ὑμῖν, καὶ διπλώσατε αὐτῇ διπλᾶ κατὰ τὰ ἔργα αὐτῆς ἐν τῷ ποτηρίῳ ᾧ ἐκέρασε, κεράσατε αὐτῇ διπλοῦν.

7 Ὅσα ἐδόξασεν ἑαυτὴν καὶ ἐστρηνίασε, τοσοῦτον δότε αὐτῇ βασανισμὸν καὶ πένθος· ὅτι ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς λέγει· Κάθημαι βασίλισσα, καὶ χήρα οὐκ εἰμὶ, καὶ πένθος οὐ μὴ ἴδω.

8 Διὰ τοῦτο ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ ἥξουσιν αἱ πληγαὶ αὐτῆς, θάνατος καὶ πένθος καὶ λιμός· καὶ ἐν πυρὶ κατακαυθήσεται, ὅτι ἰσχυρὸς Κύριος ὁ Θεὸς ὁ κρίνων αὐτήν.

9 Καὶ κλαύσονται αὐτὴν καὶ κόψονται ἐπ' αὐτῇ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, οἱ μετ' αὐτῆς πορνεύσαντες καὶ στρηνιάσαντες, ὅταν βλέπωσι τὸν καπνὸν τῆς πυρώσεως αὐτῆς.

10 Ἀπὸ μακρόθεν ἑστηκότες, διὰ τὸν φόβον τοῦ βασανισμοῦ αὐτῆς, λέγοντες· Οὐαὶ, οὐαὶ ἡ πόλις ἡ μεγάλη Βαβυλὼν, ἡ πόλις ἡ ἰσχυρὰ, ὅτι ἐν μιᾷ ὥρᾳ ἦλθεν ἡ κρίσις σου.

11 Καὶ οἱ ἔμποροι τῆς γῆς κλαίουσι καὶ πενθοῦσιν ἐπ' αὐτῇ, ὅτι τὸν γόμον αὐτῶν οὐδεὶς ἀγοράζει οὐκέτι.

12 Γόμον χρυσοῦ καὶ ἀργύρου καὶ λίθου τιμίου, καὶ μαργαρίτου, καὶ βύσσου, καὶ πορφύρας, καὶ σηρικοῦ, καὶ κοκκίνου· καὶ πᾶν ξύλον θύϊνον, καὶ πᾶν σκεῦος ἐλεφάντινον, καὶ πᾶν σκεῦος ἐκ ξύλου τιμιωτάτου, καὶ χαλκοῦ, καὶ σιδήρου, καὶ μαρμάρου.

13 Καὶ κινάμωμον, καὶ θυμιάματα, καὶ μύ-

μύρον, ϗ λίβανον, ϗ οἶνον, ϗ ἔλαιον, ϗ
σεμίδαλιν, ϗ σῖτον, ϗ κτήνη, ϗ πρόβα-
τα, ϗ ἵππων, ϗ ῥεδῶν, ϗ σωμάτων, καὶ
ψυχὰς ἀνθρώπων.
14 Καὶ ἡ ὀπώρα τῆς ἐπιθυμίας τῆς ψυ-
χῆς σου ἀπῆλθεν ἀπὸ σοῦ, καὶ πάντα τὰ λι-
παρὰ ϗ τὰ λαμπρὰ ἀπῆλθεν ἀπὸ σοῦ, καὶ
οὐκέτι οὐ μὴ εὑρήσῃς αὐτά.
15 Οἱ ἔμποροι τούτων οἱ πλουτήσαντες
ἀπ' αὐτῆς, ἀπὸ μακρόθεν στήσονται, διὰ
τὸν φόβον τοῦ βασανισμοῦ αὐτῆς, κλαίοντες
ϗ πενθοῦντες.
16 Καὶ λέγοντες· Οὐαὶ, οὐαὶ, ἡ πό-
λις ἡ μεγάλη, ἡ περιβεβλημένη βύσσινον ϗ
πορφυροῦν καὶ κόκκινον, καὶ κεχρυσωμένη ἐν
χρυσῷ ϗ λίθῳ τιμίῳ ϗ μαργαρίταις· ὅτι
μιᾷ ὥρᾳ ἠρημώθη ὁ τοσοῦτος πλοῦτος.
17 Καὶ πᾶς κυβερνήτης, ϗ πᾶς ἐπὶ τῶν
πλοίων ὁ ὅμιλος, καὶ ναῦται, ϗ ὅσοι τὴν
θάλασσαν ἐργάζονται, ἀπὸ μακρόθεν ἔστησαν.
18 Καὶ ἔκραζον, ὁρῶντες τὸν καπνὸν τῆς
πυρώσεως αὐτῆς, λέγοντες· Τίς ὁμοία τῇ
πόλει τῇ μεγάλῃ;
19 Καὶ ἔβαλον χοῦν ἐπὶ τὰς κεφαλὰς
αὐτῶν, ϗ ἔκραζον κλαίοντες ϗ πενθοῦντες,
λέγοντες· Οὐαὶ, οὐαὶ, ἡ πόλις ἡ μεγά-
λη, ἐν ᾗ ἐπλούτησαν πάντες οἱ ἔχοντες
πλοῖα ἐν τῇ θαλάσσῃ ἐκ τῆς τιμιότητος αὐ-
τῆς, ὅτι μιᾷ ὥρᾳ ἠρημώθη.
20 Εὐφραίνου ἐπ' αὐτὴν οὐρανὲ, ϗ οἱ ἅ-
γιοι Ἀπόστολοι ϗ οἱ Προφῆται, ὅτι ἔκρινεν ὁ
Θεὸς τὸ κρίμα ὑμῶν ἐξ αὐτῆς.
21 Καὶ ἦρεν εἷς Ἄγγελος ἰσχυρὸς λίθον
ὡς μύλον μέγαν, καὶ ἔβαλεν εἰς τὴν θά-

λασσαν, λέγων· Οὕτως ὁρμήματι βληθή-
σεται Βαβυλὼν ἡ μεγάλη πόλις, καὶ οὐ μὴ
εὑρεθῇ ἔτι.
22 Καὶ φωνὴ κιθαρῳδῶν καὶ μουσικῶν καὶ
αὐλητῶν, καὶ σαλπιστῶν, οὐ μὴ ἀκουσθῇ ἐν
σοὶ ἔτι· καὶ πᾶς τεχνίτης πάσης τέχνης οὐ
μὴ εὑρεθῇ ἐν σοὶ ἔτι· καὶ φωνὴ μύλου οὐ μὴ
ἀκουσθῇ ἐν σοὶ ἔτι·
23 Καὶ φῶς λύχνου οὐ μὴ φανῇ ἐν σοὶ
ἔτι· καὶ φωνὴ νυμφίου καὶ νύμφης οὐ μὴ ἀκου-
σθῇ ἐν σοὶ ἔτι· ὅτι οἱ ἔμποροί σου ἦσαν οἱ
μεγιστᾶνες τῆς γῆς, ὅτι ἐν τῇ φαρμακείᾳ σου
ἐπλανήθησαν πάντα τὰ ἔθνη.
24 Καὶ ἐν αὐτῇ αἷμα Προφητῶν καὶ ἁγίων
εὑρέθη, καὶ πάντων τῶν ἐσφαγμένων ἐπὶ
τῆς γῆς.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ, ΙΘ'. 19.

1 ΚΑὶ μετὰ ταῦτα ἤκουσα ὡς φωνὴν
ὄχλου πολλοῦ μεγάλην ἐν τῷ οὐ-
ρανῷ, λέγοντος· Ἀλληλούϊα ἡ σωτηρία,
καὶ ἡ δόξα, καὶ ἡ τιμὴ, καὶ ἡ δύναμις Κυρίῳ
τῷ Θεῷ ἡμῶν.
2 Ὅτι ἀληθιναὶ καὶ δίκαιαι αἱ κρίσεις
αὐτοῦ· ὅτι ἔκρινε τὴν πόρνην τὴν μεγάλην,
ἥτις ἔφθειρε τὴν γῆν ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς,
καὶ ἐξεδίκησε τὸ αἷμα τῶν δούλων αὐτοῦ ἐκ
τῆς χειρὸς αὐτῆς.
3 Καὶ δεύτερον εἴρηκαν· Ἀλληλούϊα·
Καὶ ὁ καπνὸς αὐτῆς ἀναβαίνει εἰς τοὺς αἰῶ-
νας τῶν αἰώνων.
4 Καὶ ἔπεσον οἱ Πρεσβύτεροι οἱ εἴκοσι καὶ
τέσσαρες, καὶ τὰ τέσσαρα ζῶα, καὶ προσεκύνη-
σαν

σαν τῷ Θεῷ τῷ καθημένῳ ἐπὶ τοῦ θρόνου,
λέγοντες· Ἀμὴν· Ἀλληλούϊα.
5 Καὶ φωνὴ ἐκ τοῦ θρόνου ἐξῆλθε, λέγου-
σα· Αἰνεῖτε τὸν Θεὸν ἡμῶν πάντες οἱ δοῦ-
λοι αὐτοῦ, καὶ οἱ φοβούμενοι αὐτὸν καὶ οἱ μικροὶ
καὶ οἱ μεγάλοι.
6 Καὶ ἤκουσα ὡς φωνὴν ὄχλου πολλοῦ, καὶ
ὡς φωνὴν ὑδάτων πολλῶν, καὶ ὡς φωνὴν βρον-
τῶν ἰσχυρῶν, λεγόντων· Ἀλληλούϊα· ὅτι
ἐβασίλευσε Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ·
7 Χαίρωμεν, καὶ ἀγαλλιώμεθα, καὶ δῶμεν
τὴν δόξαν αὐτῷ· ὅτι ἦλθεν ὁ γάμος τοῦ ἀρ-
νίου, καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἡτοίμασεν ἑαυτήν.
8 Καὶ ἐδόθη αὐτῇ ἵνα περιβάληται βύσ-
σινον καθαρὸν καὶ λαμπρόν· τὸ γὰρ βύσσινον,
τὰ δικαιώματά ἐστι τῶν ἁγίων.
9 Καὶ λέγει μοι· Γράψον· Μακάριοι οἱ
εἰς τὸ δεῖπνον τοῦ γάμου τοῦ ἀρνίου κεκλημένοι.
Καὶ λέγει μοι· Οὗτοι οἱ λόγοι ἀληθινοὶ
εἰσι τοῦ Θεοῦ·
10 Καὶ ἔπεσον ἔμπροσθεν τῶν ποδῶν αὐ-
τοῦ προσκυνῆσαι αὐτῷ· καὶ λέγει μοι· Ὅρα
μή· σύνδουλός σου εἰμὶ καὶ τῶν ἀδελφῶν σου
τῶν ἐχόντων τὴν μαρτυρίαν τοῦ Ἰησοῦ. τῷ
Θεῷ προσκύνησον· ἡ γὰρ μαρτυρία τοῦ Ἰησοῦ
ἐστι τὸ Πνεῦμα τῆς προφητείας.
11 Καὶ εἶδον τὸν οὐρανὸν ἀνεῳγμένον, καὶ
ἰδοὺ ἵππος λευκὸς, καὶ ὁ καθήμενος ἐπ᾽ αὐτὸν
καλούμενος πιστὸς καὶ ἀληθινὸς, καὶ ἐν δικαιο-
σύνῃ κρίνει καὶ πολεμεῖ.
12 Οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ὡς φλὸξ πυ-
ρὸς, καὶ ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ διαδήματα
πολλά· ἔχων ὄνομα γεγραμμένον ὃ οὐδεὶς
οἶδεν εἰ μὴ αὐτός.

13 Καὶ περιβεβλημένος ἱμάτιον βεβαμμένον αἵματι· καὶ καλεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ.

14 Καὶ τὰ στρατεύματα τὰ ἐν τῷ οὐρανῷ ἠκολούθει αὐτῷ ἐφ' ἵπποις λευκοῖς, ἐνδεδυμένοι βύσσινον λευκὸν καὶ καθαρόν·

15 Καὶ ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ ἐκπορεύεται ῥομφαία ὀξεῖα, ἵνα ἐν αὐτῇ πατάσσῃ τὰ ἔθνη· καὶ αὐτὸς ποιμανεῖ αὐτοὺς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ· καὶ αὐτὸς πατεῖ τὴν ληνὸν τοῦ οἴνου τοῦ θυμοῦ καὶ τῆς ὀργῆς τοῦ Θεοῦ τοῦ παντοκράτορος.

16 Καὶ ἔχει ἐπὶ τὸ ἱμάτιον καὶ ἐπὶ τὸν μηρὸν αὐτοῦ τὸ ὄνομα γεγραμμένον· Βασιλεὺς βασιλέων καὶ Κύριος κυρίων.

17 Καὶ εἶδον ἕνα Ἄγγελον ἑστῶτα ἐν τῷ ἡλίῳ. καὶ ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ, λέγων πᾶσι τοῖς ὀρνέοις τοῖς πετωμένοις ἐν μεσουρανήματι. Δεῦτε καὶ συνάγεσθε εἰς τὸ δεῖπνον τοῦ μεγάλου Θεοῦ,

18 Ἵνα φάγητε σάρκας βασιλέων, καὶ σάρκας χιλιάρχων, καὶ σάρκας ἰσχυρῶν, καὶ σάρκας ἵππων, καὶ τῶν καθημένων ἐπ' αὐτῶν, καὶ σάρκας πάντων ἐλευθέρων καὶ δούλων, καὶ μικρῶν καὶ μεγάλων.

19 Καὶ εἶδον τὸ θηρίον, καὶ τοὺς βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ τὰ στρατεύματα αὐτῶν συνηγμένα ποιῆσαι πόλεμον μετὰ τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ ἵππου καὶ μετὰ τοῦ στρατεύματος αὐτοῦ.

20 Καὶ ἐπιάσθη τὸ θηρίον, καὶ μετὰ τούτου ὁ ψευδοπροφήτης ὁ ποιήσας τὰ σημεῖα ἐνώπιον αὐτοῦ, ἐν οἷς ἐπλάνησε τοὺς λαβόντας τὸ χάραγμα τοῦ θηρίου, καὶ τοὺς προσκυνοῦντας τῇ εἰκόνι αὐτοῦ· ζῶντες ἐβλήθησαν οἱ δύο

εἰς τὴν λίμνην τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην ἐν
τῷ θείῳ.
21 Καὶ οἱ λοιποὶ ἀπεκτάνθησαν ἐν τῇ
ῥομφαίᾳ τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ ἵππου, τῇ ἐκ-
πορευομένῃ ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ· καὶ πάντα
τὰ ὄρνεα ἐχορτάσθησαν ἐκ τῶν σαρκῶν αὐτῶν.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, Κʹ. 20.

1 Καὶ εἶδον ἄγγελον καταβαίνοντα ἐκ
τοῦ οὐρανοῦ, ἔχοντα τὴν κλεῖδα
τῆς ἀβύσσου, καὶ ἅλυσιν μεγάλην ἐπὶ τὴν
χεῖρα αὐτοῦ.
2 Καὶ ἐκράτησε τὸν δράκοντα, τὸν ὄφιν
τὸν ἀρχαῖον, ὅς ἐστι διάβολος καὶ σατανᾶς·
καὶ ἔδησεν αὐτὸν χίλια ἔτη.
3 Καὶ ἔβαλεν αὐτὸν εἰς τὴν ἄβυσσον, καὶ
ἔκλεισεν αὐτὸν, καὶ ἐσφράγισεν ἐπάνω αὐτοῦ,
ἵνα μὴ πλανήσῃ τὰ ἔθνη ἔτι, ἄχρι τελεσθῇ
τὰ χίλια ἔτη· καὶ μετὰ ταῦτα δεῖ αὐτὸν λυ-
θῆναι μικρὸν χρόνον.
4 Καὶ εἶδον θρόνους, καὶ ἐκάθισαν ἐπ'
αὐτοὺς, καὶ κρῖμα ἐδόθη αὐτοῖς· καὶ τὰς ψυ-
χὰς τῶν πεπελεκισμένων διὰ τὴν μαρτυρίαν
Ἰησοῦ, καὶ διὰ τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, καὶ οἵτινες
οὐ προσεκύνησαν τῷ θηρίῳ, οὔτε τῇ εἰκόνι
αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἔλαβον τὸ χάραγμα ἐπὶ τὸ μέ-
τωπον αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὴν χεῖρα αὐτῶν· καὶ ἔ-
ζησαν, καὶ ἐβασίλευσαν μετὰ τοῦ Χριστοῦ τὰ
χίλια ἔτη.
5 Οἱ δὲ λοιποὶ τῶν νεκρῶν οὐκ ἀνέζησαν
ἕως τελεσθῇ τὰ χίλια ἔτη· Αὕτη ἡ Ἀνάστα-
σις ἡ πρώτη.
6 Μακάριος καὶ ἅγιος ὁ ἔχων μέρος ἐν τῇ

ἀναςάσει τῇ πρώτῃ· ἐπὶ τέτων ὁ θάνατος ὁ
δεύτερος ἐκ ἔχει ἐξεσίαν, ἀλλ᾽ ἔσονται ἱε-
ρεῖς τε Θεε καὶ τε Χριςε, καὶ βασιλεύσεσι
μετ᾽ αὐτε χίλια ἔτη.

7 Καὶ ὅταν τελεσθῇ τὰ χίλια ἔτη,
λυθήσεται ὁ Σατανᾶς ἐκ τῆς φυλακῆς
αὐτε.

8 Καὶ ἐξελεύσεται πλανῆσαι τὰ ἔθνη τὰ
ἐν ταῖς τέσαρσι γωνίαις τῆς γῆς, τὸν Γὼγ
καὶ τὸν Μαγὼγ, συναγαγεῖν αὐτὲς εἰς πό-
λεμον, ὧν ὁ ἀριθμὸς ὡς ἡ ἄμμος τῆς
θαλάσης.

9 Καὶ ἀνέβησαν ἐπὶ τὸ πλάτος τῆς γῆς,
καὶ ἐκύκλωσαν τὴν παρεμβολὴν τῶν ἁγίων,
καὶ τὴν πόλιν τὴν ἠγαπημένην· καὶ κατέβη
πῦρ ἀπὸ τε Θεε ἐκ τε ἐρανε, καὶ κατέφα-
γεν αὐτές·

10 Καὶ ὁ διάβολος ὁ πλανῶν αὐτὲς ἐ-
βλήθη εἰς τὴν λίμνην τε πυρὸς καὶ θείε,
ὅπε τὸ θηρίον καὶ ὁ ψευδοπροφήτης· καὶ βα-
σανισθήσονται ἡμέρας καὶ νυκτὸς εἰς τὲς αἰῶ-
νας τῶν αἰώνων.

11 Καὶ εἶδον θρόνον λευκὸν μέγαν, καὶ
τὸν καθήμενον ἐπ᾽ αὐτε, ἕ ἀπὸ προσώπε ἔ-
φυγεν ἡ γῆ καὶ ὁ ἐρανός· καὶ τόπος ἐχ εὑρέ-
θη αὐτοῖς.

12 Καὶ εἶδον τὲς νεκρὲς, μικρὲς καὶ με-
γάλες, ἑςῶτας ἐνώπιον τε Θεε, καὶ βιβλία
ἠνεῴχθησαν· καὶ βιβλίον ἄλλο ἠνεῴχθη, ὅ
ἐςι τῆς ζωῆς· καὶ ἐκρίθησαν οἱ νεκροὶ ἐκ
τῶν γεγραμμένων ἐν τοῖς βιβλίοις, κατὰ τὰ
ἔργα αὐτῶν.

13 Καὶ ἔδωκεν ἡ θάλασσα τὲς ἐν αὐτῇ
νεκρὲς, καὶ ὁ θάνατος καὶ ὁ ᾅδης ἔδωκαν τὲς

ἐν

ἐν αὐτοῖς νεκρούς· καὶ ἐκρίθησαν ἕκαστος κατὰ
τὰ ἔργα αὐτῶν.

14 Καὶ ὁ θάνατος καὶ ὁ ᾅδης ἐβλήθησαν
εἰς τὴν λίμνην τοῦ πυρός· οὗτός ἐστιν ὁ δεύ-
τερος θάνατος·

15 Καὶ εἴ τις οὐχ εὑρέθη ἐν τῇ βίβλῳ
τῆς ζωῆς γεγραμμένος, ἐβλήθη εἰς τὴν
λίμνην τοῦ πυρός.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΑ΄. 21.

1 ΚΑὶ εἶδον οὐρανὸν καινὸν καὶ γῆν
καινήν· ὁ γὰρ πρῶτος οὐρανὸς καὶ
ἡ πρώτη γῆ παρῆλθε, καὶ ἡ θάλασσα οὐκ
ἔστιν ἔτι.

2 Καὶ ἐγὼ Ἰωάννης εἶδον τὴν πόλιν τὴν
ἁγίαν Ἱερουσαλὴμ καινὴν, καταβαίνουσαν
ἀπὸ τοῦ Θεοῦ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ἡτοιμασμένην ὡς
νύμφην κεκοσμημένην τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς.

3 Καὶ ἤκουσα φωνῆς μεγάλης ἐκ τοῦ οὐρα-
νοῦ, λεγούσης· Ἰδοὺ ἡ σκηνὴ τοῦ Θεοῦ μετὰ
τῶν ἀνθρώπων, καὶ σκηνώσει μετ' αὐτῶν, καὶ
αὐτοὶ λαοὶ αὐτοῦ ἔσονται, καὶ αὐτὸς ὁ Θεὸς
ἔσται μετ' αὐτῶν, Θεὸς αὐτῶν·

4 Καὶ ἐξαλείψει ὁ Θεὸς πᾶν δάκρυον ἀ-
πὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν, καὶ ὁ θάνατος οὐκ
ἔσται ἔτι, οὔτε πένθος, οὔτε κραυγὴ, οὔτε
πόνος οὐκ ἔσται ἔτι, ὅτι τὰ πρῶτα ἀπῆλθον.

5 Καὶ εἶπεν ὁ καθήμενος ἐπὶ τοῦ θρόνου·
Ἰδοὺ, καινὰ πάντα ποιῶ. Καὶ λέγει μοι·
Γράψον· ὅτι οὗτοι οἱ λόγοι ἀληθινοὶ καὶ
πιστοί εἰσι.

6 Καὶ εἶπέ μοι· Γέγονε. ἐγώ εἰμι τὸ Α
καὶ τὸ Ω, ἡ ἀρχὴ καὶ τὸ τέλος. ἐγὼ τῷ δι-

ψῶντι δώσω ἐκ τῆς πηγῆς τῦ ὕδατος τῆς
ζωῆς δωρεάν.
7 Ο' νικῶν κληρονομήσει πάντα, καὶ
ἔσομαι αὐτῷ Θεὸς, καὶ αὐτὸς ἔςαι μοι ὁ
Υἱός.
8 Δειλοῖς δὲ ϗ ἀπίςοις ϗ ἐβδελυγμέ-
νοις ϗ φονεῦσι ϗ πόρνοις ϗ φαρμακεῦσι καὶ
εἰδωλολάτραις, καὶ πᾶσι τοῖς ψεύδεσι, τὸ
μέρος αὐτῶν ἐν τῇ λίμνῃ τῇ καιομένῃ πυρὶ ϗ
θείῳ, ὅ ἐςι δεύτερος θάνατος.
9 Καὶ ἦλθε πρός με εἷς τῶν ἑπτὰ ἀγγέ-
λων τῶν ἐχόντων τὰς ἑπτὰ φιάλας τὰς γεμέ-
σας τῶν ἑπτὰ πληγῶν τῶν ἐσχάτων· ϗ ἐλά-
λησε μετ' ἐμῦ, λέγων· Δεῦρο, δείξω σοι
τὴν νύμφην τῦ ἀρνίυ τὴν γυναῖκα.
10 Καὶ ἀπήνεγκέ με ἐν Πνεύματι ἐπ'
ὄρος μέγα ϗ ὑψηλὸν, ϗ ἔδειξέ μοι τὴν πό-
λιν τὴν μεγάλην, τὴν ἁγίαν Ἱερυσαλὴμ,
καταβαίνυσαν ἐκ τῦ ὐρανῦ ἀπὸ τῦ Θεῦ,
11 Ε'χυσαν τὴν δόξαν τῦ Θεῦ· ϗ ὁ φω-
ςὴρ αὐτῆς ὅμοιος λίθῳ τιμιωτάτῳ, ὡς λί-
θῳ ἰάσπιδι κρυςαλλίζοντι·
12 Ε'χυσάν τε τεῖχος μέγα ϗ ὑψηλὸν,
ἔχυσαν πυλῶνας δώδεκα, ϗ ἐπὶ τοῖς πυ-
λῶσιν Α'γγέλυς δώδεκα, ϗ ὀνόματα ἐπι-
γεγραμμένα, ἅ ἐςι τῶν δώδεκα φυλῶν τῶν
Υἱῶν Ἰσραήλ.
13 Α'π' ἀνατολῆς, πυλῶνες τρεῖς· ἀπὸ
βοῤῥᾶ, πυλῶνες τρεῖς· ἀπὸ νότυ, πυλῶνες
τρεῖς· ἀπὸ δυσμῶν, πυλῶνες τρεῖς.
14 Καὶ τὸ τεῖχος τῆς πόλεως ἔχον θεμε-
λίυς δώδεκα, καὶ ἐν αὐτοῖς ὀνόματα τῶν
δώδεκα ἀποςόλων τῦ ἀρνίυ.
15 Καὶ ὁ λαλῶν μετ' ἐμῦ, εἶχε κάλα-
μον

μον χρυσοῦν, ἵνα μετρήσῃ τὴν πόλιν καὶ τοὺς
πυλῶνας αὐτῆς καὶ τὸ τεῖχος αὐτῆς.
16 Καὶ ἡ πόλις τετράγωνος κεῖται, καὶ
τὸ μῆκος αὐτῆς τοσοῦτόν ἐστιν ὅσον καὶ τὸ πλά-
τος. καὶ ἐμέτρησε τὴν πόλιν τῷ καλάμῳ ἐπὶ
σταδίων δώδεκα χιλιάδων· τὸ μῆκος καὶ τὸ
πλάτος καὶ τὸ ὕψος αὐτῆς ἴσα ἐστί.
17 Καὶ ἐμέτρησε τὸ τεῖχος αὐτῆς ἑκατὸν
τεσσαρακοντατεσσάρων πηχῶν, μέτρον ἀνθρώ-
που, ὅ ἐστιν ἀγγέλου.
18 Καὶ ἦν ἡ ἐνδόμησις τοῦ τείχους αὐτῆς,
ἴασπις· καὶ ἡ πόλις χρυσίον καθαρὸν, ὁ-
μοία ὑάλῳ καθαρῷ·
19 Καὶ οἱ θεμέλιοι τοῦ τείχους τῆς πό-
λεως παντὶ λίθῳ τιμίῳ κεκοσμημένοι· ὁ
θεμέλιος ὁ πρῶτος, ἴασπις. ὁ δεύτερος,
σάπφειρος· ὁ τρίτος, χαλκηδών· ὁ τέταρ-
τος, σμάραγδος.
20 Ὁ πέμπτος, σαρδόνυξ· ὁ ἕκτος,
σάρδιος· ὁ ἕβδομος, χρυσόλιθος· ὁ ὄγ-
δοος, βήρυλλος· ὁ ἔννατος, τοπάζιον· ὁ
δέκατος, χρυσόπρασος· ὁ ἑνδέκατος, ὑά-
κινθος· ὁ δωδέκατος, ἀμέθυστος.
21 Καὶ οἱ δώδεκα πυλῶνες, δώδεκα
μαργαρῖται, ἀνὰ εἷς ἕκαστος τῶν πυλώνων
ἦν ἐξ ἑνὸς μαργαρίτου· καὶ ἡ πλατεῖα τῆς πό-
λεως, χρυσίον καθαρὸν, ὡς ὕαλος διαφανής.
22 Καὶ ναὸν οὐκ εἶδον ἐν αὐτῇ· ὁ γὰρ
Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ναὸς αὐτῆς
ἐστι, καὶ τὸ ἀρνίον.
23 Καὶ ἡ πόλις οὐ χρείαν ἔχει τοῦ ἡλίου
οὐδὲ τῆς σελήνης, ἵνα φαίνωσιν ἐν αὐτῇ. ἡ
γὰρ δόξα τοῦ Θεοῦ ἐφώτισεν αὐτὴν, καὶ ὁ
λύχνος αὐτῆς τὸ ἀρνίον.

24 Καὶ

24 Καὶ τὰ ἔθνη τῶν σωζομένων ἐν τῷ
φωτὶ αὐτῆς περιπατήσουσι· καὶ οἱ βασιλεῖς
τῆς γῆς φέρουσι τὴν δόξαν καὶ τὴν τιμὴν αὐ-
τῶν εἰς αὐτήν.
25 Καὶ οἱ πυλῶνες αὐτῆς οὐ μὴ κλεισθῶ-
σιν ἡμέρας· νὺξ γὰρ οὐκ ἔσται ἐκεῖ·
26 Καὶ οἴσουσι τὴν δόξαν καὶ τὴν τιμὴν
τῶν ἐθνῶν εἰς αὐτήν·
27 Καὶ οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐτὴν πᾶν κοι-
νοῦν, καὶ ποιοῦν βδέλυγμα, καὶ ψεῦδος· εἰ
μὴ οἱ γεγραμμένοι ἐν τῷ βιβλίῳ τῆς ζωῆς
τοῦ ἀρνίου.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ, ΚΒ΄. 22.

1 ΚΑὶ ἔδειξέ μοι καθαρὸν ποταμὸν
ὕδατος ζωῆς, λαμπρὸν ὡς κρύ-
σταλλον, ἐκπορευόμενον ἐκ τοῦ Θρόνου τοῦ Θεοῦ,
καὶ τοῦ ἀρνίου.
2 Ἐν μέσῳ τῆς πλατείας αὐτῆς, καὶ τοῦ
ποταμοῦ, ἐντεῦθεν καὶ ἐντεῦθεν, ξύλον ζωῆς,
ποιοῦν καρποὺς δώδεκα, κατὰ μῆνα ἕνα ἕκα-
στον ἀποδιδοῦν τὸν καρπὸν αὐτοῦ· καὶ τὰ φύλλα
τοῦ ξύλου εἰς θεραπείαν τῶν ἐθνῶν.
3 Καὶ πᾶν κατανάθεμα οὐκ ἔσται ἔτι· καὶ
ὁ θρόνος τοῦ Θεοῦ καὶ τοῦ ἀρνίου ἐν αὐτῇ ἔσται·
καὶ οἱ δοῦλοι αὐτοῦ λατρεύσουσιν αὐτῷ.
4 Καὶ ὄψονται τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ τὸ
ὄνομα αὐτοῦ ἐπὶ τῶν μετώπων αὐτῶν.
5 Καὶ νὺξ οὐκ ἔσται ἐκεῖ, καὶ χρείαν οὐκ ἔ-
χουσι λύχνου καὶ φωτὸς ἡλίου, ὅτι Κύριος ὁ
Θεὸς φωτίζει αὐτούς· καὶ βασιλεύσουσιν εἰς
τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων.
6 Καὶ εἶπέ μοι· Οὗτοι οἱ λόγοι πιστοὶ

καὶ

ϗ ἀληθινοί· ϗ Κύριος ὁ Θεὸς τῶν ἁγίων
προφητῶν ἀπέςειλε τὸν ἄγγελον αὐτȣ̃ δεῖξαι
τοῖς δȣ́λοις αὐτȣ̃ ἃ δεῖ γενέσθαι ἐν τάχει.
7 Ἰδȣ̀, ἔρχομαι ταχύ· μακάριος ὁ τη-
ρῶν τȣ̀ς λόγȣς τῆς Προφητείας τȣ̃ βιβλίου
τȣ́τȣ.
8 Καὶ ἐγὼ Ἰωάννης ὁ βλέπων ταῦτα ϗ
ἀκȣ́ων· ϗ ὅτε ἤκȣσα καὶ ἔβλεψα, ἔπεσον
προσκυνῆσαι ἔμπροσθεν τῶν ποδῶν τȣ̃ ἀγ-
γέλȣ τȣ̃ δεικνύοντός μοι ταῦτα.
9 Καὶ λέγει μοι· Ὅρα μή· σύνδȣλός
σȣ γάρ εἰμι, ϗ τῶν ἀδελφῶν σȣ τῶν προ-
φητῶν, ϗ τῶν τηρȣ́ντων τȣ̀ς λόγȣς τȣ̃ βιβλίȣ
τȣ́τȣ· τῷ Θεῷ προσκύνησον.
10 Καὶ λέγει μοι· Μὴ σφραγίσῃς τȣ̀ς
λόγȣς τῆς προφητείας τȣ̃ βιβλίȣ τȣ́τȣ· ὅτι
ὁ καιρὸς ἐγγύς ἐςιν.
11 Ὁ ἀδικῶν, ἀδικησάτω ἔτι· ϗ ὁ ῥυ-
πῶν, ῥυπωσάτω ἔτι· ϗ ὁ δίκαιος, δικαιω-
θήτω ἔτι· ϗ ὁ ἅγιος, ἁγιασθήτω ἔτι.
12 Καὶ ἰδȣ̀, ἔρχομαι ταχύ· ϗ ὁ μισθός
μȣ μετ' ἐμȣ̃, ἀποδȣ̃ναι ἑκάςῳ ὡς τὸ ἔργον
αὐτȣ̃ ἔςαι.
13 Ἐγώ εἰμι τὸ Α ϗ τὸ Ω, ἀρχὴ καὶ
τέλος, ὁ πρῶτος ϗ ὁ ἔσχατος.
14 Μακάριοι οἱ ποιȣ̃ντες τὰς ἐντολὰς αὐ-
τȣ̃, ἵνα ἔςαι ἡ ἐξȣσία αὐτῶν ἐπὶ τὸ ξύλον
τῆς ζωῆς, ϗ τοῖς πυλῶσιν εἰσέλθωσιν εἰς
τὴν πόλιν.
15 Ἔξω δὲ οἱ κύνες ϗ οἱ φαρμακοὶ ϗ οἱ
πόρνοι ϗ οἱ φονεῖς ϗ οἱ εἰδωλολάτραι, καὶ
πᾶς ὁ φιλῶν ϗ ποιῶν ψεῦδος.
16 Ἐγὼ Ἰησȣ̃ς ἔπεμψα τὸν Ἄγγελόν μȣ
μαρτυρῆσαι ὑμῖν ταῦτα ἐπὶ ταῖς Ἐκκλη-
σίαις·

σίαις· ἐγώ εἰμι ἡ ῥίζα καὶ τὸ γένος τοῦ Δαβίδ, ὁ ἀστὴρ ὁ λαμπρὸς καὶ ὀρθεινός.

17 Καὶ τὸ Πνεῦμα καὶ ἡ νύμφη λέγουσιν· Ἐλθέ. καὶ ὁ ἀκούων εἰπάτω· Ἐλθέ. καὶ ὁ διψῶν ἐλθέτω, καὶ ὁ θέλων λαμβανέτω τὸ ὕδωρ ζωῆς δωρεάν.

18 Συμμαρτυροῦμαι γὰρ παντὶ ἀκούοντι τοὺς λόγους τῆς προφητείας τοῦ βιβλίου τούτου, ἐάν τις ἐπιτιθῇ πρὸς ταῦτα, ἐπιθήσει ὁ Θεὸς ἐπ' αὐτὸν τὰς πληγὰς τὰς Γεγραμμένας ἐν βιβλίῳ τούτῳ·

19 Καὶ ἐάν τις ἀφαιρῇ ἀπὸ τῶν λόγων βίβλου τῆς Προφητείας ταύτης, ἀφαιρήσει ὁ Θεὸς τὸ μέρος αὐτοῦ ἀπὸ βίβλου τῆς ζωῆς, καὶ ἐκ τῆς πόλεως τῆς ἁγίας, καὶ τῶν γεγραμμένων ἐν βιβλίῳ τούτῳ.

20 Λέγει ὁ μαρτυρῶν ταῦτα· Ναὶ ἔρχομαι ταχύ· Ἀμήν· Ναὶ ἔρχου, Κύριε Ἰησοῦ.

21 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

ΤΕΛΟΣ.